अनुवादक डा० मदनलाल 'मधु'
चित्रकार यूरी कोपिलोव

Лев Толстой
АННА КАРЕНИНА
(части I-IV)
На языке хинди

Tolstoy L.,
Anna Karenina, I

Т 37301 732 / 014 (01)-81 665-81

4702010100

स्थापनाये उन्हे बुद्ध धर्म मे जोडती है। उदाहरणार्थ शरीर के लिये नही, बल्कि आत्मा के हेतु' जीने का तोलस्तोय का आह्वान बुद्ध धर्म के शरीर के लिये नही बल्कि 'कर्म' के अनुसार जीने के नियम के अनुरूप है।" अ० शीफमन ने आगे कहा है – 'बुद्ध धर्म की नैतिक नियमावली के सिद्धात, जैसे हत्या और हिसा का निषेध, अपने निकटवर्ती लोगो के प्रति प्यार, हिसा से बुराई का अप्रतिकार बाहरी जगत के प्रति उदासीनता और अपनी आत्मा को पहचानने की आवश्यकता तोलस्तोय के विचारो मे मेल खाते थे। निरन्तर भलाई की ओर उन्मुख रहने के प्रयत्न द्वारा प्राप्त होनेवाले निर्वाण अर्थात् परम आनन्द की बुद्ध धर्म की शिक्षा भी व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिये नैतिक उत्थान के तोलस्तोय के विचार के अनुरूप थी।"

कहना न होगा कि सबको प्यार करने, अहिसा और हिसा द्वारा बुराई के अप्रतिकार का जो जीवन-दर्शन तोलस्तोय ने अपनाया, उस पर बुद्ध धर्म और सर्व-कल्याण तथा सर्व-हित की भावना से ओत-प्रोत भारतीय दर्शन और चिन्तन की गहरी छाप पडी है। हा, उन्होने इनके निराशावादी तत्वो को बहुत हद तक त्याग दिया है। इसलिये यह समझना कठिन नही है कि तोलस्तोय के समकालीन भारतीय चिन्तको को वे क्यो अपने मनोभावो के अत्यधिक निकट प्रतीत हुए और जब मानवतावादी तोलस्तोय ने रूस के निरकुश शासन के अत्याचारो, दमन और उत्पीडन के विरुद्ध खुलकर आवाज उठाई और यह घोषणा की कि "मै मौन नही रह सकता", तो शोषण और उत्पीडन के शिकार हो रहे अनेक जनगण के प्रतिनिधि भी उनसे पत्र-व्यवहार करने, उनसे सलाह लेने और अपने देशो की समस्याओ के समाधान ढूढने मे सहायता देने के लिये उनसे अनुरोध करने लगे। तोलस्तोय से पत्र-व्यवहार करनेवाले ऐसे विदेशियो मे मोहनदास कर्मचन्द गाधी (बाद मे महात्मा गाधी) समेत कई भारतीय भी थे।

भारतीयो द्वारा तोलस्तोय के सम्मुख प्रस्तुत की गयी पराधीनता की विकट समस्या के समाधान के रूप मे ही १४ दिसम्बर, १६०८ को तोलस्तोय का प्रसिद्ध लेख 'भारतीय के नाम पत्र' सामने आया, जिसमे अनेक अन्य बातो के अलावा तोलस्तोय ने अग्रेजो की दासता से मुक्ति पाने के एक प्रमुख अस्त्र के रूप मे इस बात पर जोर दिया कि भारतीयो को अग्रेजो द्वारा की जानेवाली बुराइयो मे भाग नही लेना चाहिये। उन्होने लिखा था "बुराई का प्रतिकार न करे, किन्तु स्वय बुराई मे प्रशासन, न्यायालयो, कर-सचय और मुख्यत सेनाओ मे हिस्सा न ले और तब दुनिया मे कोई भी आपको अपने अधीन नही कर पायेगा।"

तोलस्तोय का ऐसा परामर्श सभी देशो की परिस्थितियो के लिये स्वीकार्य, उपयुक्त और व्यावहारिक नही माना जा सकता, किन्तु २० वी सदी के आरम्भ मे भारत की विशेष परिस्थितियो मे गाधी जी ने इस शिक्षा को असली शक्ल

कारेनिना समस्याओं की गंभीरता बताने और उनका विश्लेषण करनेवाली शुष्क और नीरस पुस्तक न बनकर महान कला-कृति बनी रहती है। उपन्यास में अनेक पात्र हैं, हर पात्र का अपना अलग व्यक्तित्व है और वह बिल्कुल सजीव बनकर हमारी आंखों के सामने तैरता-सा प्रतीत होता है। सुन्दर, मस्त गालावाला हंसमुख, मृदुलमिजाज और रंगीला ओब्लोन्स्की, गठे हुए शरीर वाला, आत्मविश्वासी व्रोन्स्की, गम्भीर, हर बात और हर शब्द को तोलने और बंधी लीक पर चलनेवाला नौकरशाह कारेनिन, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट, देहाती जीवन का अभ्यस्त और अत्यधिक चिन्तनशील लेविन, गदराये बदन की अति सुन्दर, भावुक, प्यार की भूखी और दुखी आन्ना तथा बहुत प्यारी, छरहरी कीटी और इसी तरह अन्य पात्र अपने सभी गुणों-अवगुणों सहित हमारे मन पर ऐसे अंकित हो जाते हैं कि भुलाये नहीं भूलते।

परिवेश और वातावरण का चित्रण करने में तो तोलस्तोय ने कमाल ही कर दिया है। उन्होंने कीटी के बॉल में जाने का दृश्य, घुड़दौड़, शिकार और देहाती जीवन के ऐसे जीते-जागते चित्र खींचे हैं कि पाठक अपने को मानो रजत-पट के सामने बैठा अनुभव करता है। यथार्थ जीवन के कुशल चित्रकार तोलस्तोय ने घटनाओं और समस्याओं के गिर्द ऐसा अनूठा कथात्मक ताना-बाना बुना है कि उपन्यास का कथानक अपने सहज, स्वाभाविक ढंग से आगे बढ़ता जाता है, उसमें पाठक की रुचि तब भी पहले जैसी बनी रहती है, जब नायिका अर्थात् आन्ना आत्म-हत्या कर लेती है और क्षण भर को ऐसा लगता है कि अब उपन्यास समाप्त हो गया या हो जाना चाहिये। किन्तु नहीं, पाठक लेविन (जो बहुत सीमा तक तोलस्तोय का ही रूप है) की आगे जारी रहने-वाली कथा, जीवन और मृत्यु की उलझी हुई समस्या पर उसके चिन्तन, तुर्कों के विरुद्ध लड़ाई और युद्ध के प्रति तोलस्तोय की प्रतिक्रिया से सम्बन्धित विचारों को भी दिलचस्पी से पढ़ता जाता है।

यह उपन्यास महान चिन्तक और उससे भी अधिक एक सजग युग-चेता और मेधावी कलाकार की बड़ी उपलब्धि था। और यह उनके कड़े श्रम तथा अपने से अत्यधिक माग करने के उनके स्वभाव का सुफल था। चार वर्षों के दौरान लिखे गये इस उपन्यास को लेकर न जाने कितनी बार उनके हाथ-पांव फूले, उन्होंने इसे अधूरा ही छोड़ देना चाहा और एक बार तो प्रारम्भिक भाग के छपे हुए बहुत-से पृष्ठ भी नष्ट कर डाले। कितनी भयानक होती है सच्चे सृजन की प्रसव-पीड़ा! इसलिये इस उपन्यास को पढ़ने के बाद यदि तुर्गेनेव यह कह उठे कि कैसे कोई इतना अच्छा लिख सकता है, और दोस्तोयेव्स्की ने यह मत प्रकट किया कि कलाकृति के रूप में 'आन्ना कारेनिना' एक उत्कृष्टतम रचना है, हमारे समय का कोई भी यूरोपीय उपन्यास इसके कहीं निकट भी नहीं आता, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।

उपन्यास के मुख्य पात्रों, उनके चारित्रिक लक्षणों तथा उपन्यास में प्रस्तुत

की गयी समस्याओं की विस्तृत चर्चा करना मैं अनावश्यक समझता हू। यही अधिक अच्छा होगा कि पाठक स्वय उनके बारे मे अपनी धारणाये बनाये और अपनी समझ के अनुसार निष्कर्ष निकाले।

हा, इस उपन्यास के अनुवाद के बारे मे कुछ शब्द लिख देना अनुचित नही होगा। बात यह है कि अनुवाद कैसे किया जाये यह बहुत विवादग्रस्त विषय है। इसकी विस्तृत चर्चा हो सकती है। किन्तु इस उपन्यास के अनुवाद के बारे मे मैं केवल इतना ही निवेदन करना पर्याप्त समझता हू कि यह अग्रेजी से नही, बल्कि मूल रूसी पाठ का उल्था है और शाब्दिक अनुवाद से बचते हुए तोलस्तोय की शैली को अक्षुण्ण रखने का प्रयास किया गया है। चिन्तन प्रधान होने के कारण तोलस्तोय की शैली सामान्यत जटिल है और वे मानो विचारो की ईंटे सी जोडते हुए लम्बे-लम्बे वाक्यो के रूप मे अपने मुख्य भावो की विशाल इमारत खडी करते प्रतीत होते हैं। इन वाक्यो को तोडकर छोटे छोटे वाक्यो मे बदलना और उन्हे हिन्दी पाठक के लिये सरल और प्रवाहपूर्ण बनाना सम्भव है, किन्तु ऐसा करने से महान लेखक के चिन्तन और उन विचारो की क्षति हो सकती है, जिन पर वे बल देना चाहते है या जिन्हे वे तार्किक चरम-बिन्दु पर पहुचाना चाहते हैं। इसलिये हिन्दी पाठक भी इस उपन्यास को लगभग वैसे ही पढे जैसे रूसी पाठक उसे रूसी मे पढते हैं।

मैं आशा करता हू कि भारत के बडे मित्र गाधी जी के गुरु, महान चिन्तक और महान कलाकार की यह उत्कृष्टतम कृति हिन्दी पाठको को रुचेगी।

डा० 'मधु

मुख्य नाम सूची

प्रिंस श्चेर्बात्स्की, अलेक्सान्द्र द्मीत्रियेविच
प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया – उनकी पत्नी
दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना (डौली) }
नताल्या अलेक्सान्द्रोव्ना (नताली) } उनकी बेटियां
येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना (कीटी) }
कारेनिन, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच
कारेनिना, आन्ना अर्कादियेव्ना – उसकी पत्नी
सेर्योझा – उनका बेटा
ओब्लोन्स्की, स्तेपान अर्कादियेविच (स्तीवा) – आन्ना का भाई
डौली – उसकी पत्नी
लेविन, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच (कोस्त्या)
लेविन, निकोलाई द्मीत्रियेविच – उसका बड़ा भाई
कोज्निशेव, सेर्गेई इवानोविच – लेविन का सहोदर भाई
काउंट व्रोन्स्की, अलेक्सेई किरील्लोविच (अल्योशा)
प्रिंसेस त्वेर्स्काया, येलिजावेता फ्योदोरोव्ना (बेत्सी)
काउंटेस लीदिया इवानोव्ना

पलटा लेना मेरा काम है,
मैं ही बदला दूंगा।

बाइबल से

पहला भाग

(१)

सभी सुखी परिवार एक जैसे है और हर दुखी परिवार अपने ढग मे दुखी है।

ओब्लोन्स्की के घर मे सब कुछ गडबड हो गया था। पत्नी को यह पता चल गया था कि बच्चो की भूतपूर्व शिक्षिका, फ्रासीसी महिला के साथ पति के *अनुचित सम्बन्ध थे।* उसने पति से कह दिया कि वह उसके साथ एक ही घर मे नही रह सकती। तीन दिन से यह किस्सा चल रहा था और स्वय दम्पति, परिवार के सभी सदस्य और घर के बाकी सभी लोग भी बडे दुखी थे। सभी यह महसूस करते थे कि उनके एक साथ रहने मे कोई तुक नही है, कि किसी सराय मे सयोग से इकट्ठे हो जानेवाले लोगो मे भी ओब्लोन्स्की परिवार और उसके घर के सभी लोगो की तुलना मे अधिक निकटता होती है। पत्नी अपने कमरो से बाहर नही निकली थी और पति तीन दिन से घर पर नही था। परेशान-से बच्चे सारे घर मे दौडते रहते थे, अग्रेज शिक्षिका का गृह-प्रबन्धिका से झगडा हो गया था और उसने अपनी सहेली को कोई दूसरी जगह ठीक कर देने का पत्र लिख दिया था। बावर्ची तो पिछले दिन के दोपहर के खाने के वक्त ही चला गया था और रसोई के काम-काज मे सहायता करनेवाली नौकरानी तथा कोचवान ने हिसाब चुकता कर देने को कह दिया था।

झगडे के तीसरे दिन प्रिस स्तेपान अर्कादियेविच ओब्लोन्स्की, जिसे ऊची सोसाइटी मे स्तीवा के नाम से पुकारा जाता था, अपने हर दिन

"ओह, ओह! आह!" जो कुछ हुआ था उसे याद करके वह दुखी मन से कराह उठा। उसके मानस-पट पर पत्नी के साथ हुए झगडे की सभी तफसीलें, अपनी स्थिति की सारी लाचारी फिर से उभर उठी और सबसे अधिक यातना तो उसे अपने अपराध के कारण अनुभव हुई।

"हा। वह मुझे माफ नही करेगी और कर भी नही सकती। सबसे बुरी बात तो यह है कि इस सारी चीज के लिये मैं ही दोषी हूं, मेरा ही कसूर है, लेकिन फिर भी मैं कसूरवार नहीं हू। यही तो सारा ड्रामा है," वह सोच रहा था। "ओह, ओह!" अपने लिये इस झगडे के सबसे दुखद प्रभावों को याद करते हुए वह हताशा से कहता रहा।

उसके लिये सबसे अप्रिय तो वह पहला क्षण था, जब वह पत्नी के लिये बडी-सी नाशपाती हाथ मे थामे बहुत खुश, बहुत ही रग में थियेटर से घर लौटा था और पत्नी दीवानखाने मे नही मिली थी। बडी हैरानी की बात थी कि वह अध्ययन-कक्ष मे भी नहीं थी। आखिर सोने के कमरे मे दिखाई दी थी और उसके हाथ मे मुसीबत का मारा हुआ वह रुक्का था, जिसने सारा पर्दाफाश कर दिया था।

वही डौली, जो हमेशा काम-काज मे उलझी और दौड-धूप करती रहती थी और जिसे वह कम समझ रखनेवाली औरत मानता था, हाथ मे रुक्का थामे निश्चल बैठी थी और चेहरे पर भय, हताशा और क्रोध का भाव लिये उसकी तरफ देख रही थी।

"यह क्या है? यह?" रुक्के की तरफ इशारा करते हुए उसने पूछा था।

यह याद आने पर, जैसा कि अक्सर होता है, ओब्लोन्स्की को इस घटना से इतनी यातना नही हो रही थी, जितनी उस जवाब से, जो उसने उस वक्त पत्नी को दिया था।

उस क्षण उसके साथ वही हुआ था, जो लोगो के साथ तब होता है, जब उन्हे कोई बहुत ही शर्मनाक काम करते हुए अचानक पकड लिया जाता है। वह अपने चेहरे को उस स्थिति के अनुरूप, जिसमें अपराध का भडाफोड हो जाने पर उसने अपने को पत्नी के सामने पाया था, तैयार नही कर सका था। बुरा मानने, इन्कार करने, अपनी सफाई देने, माफी मागने, यहा तक कि उदासीन रहने के बजाय – यह
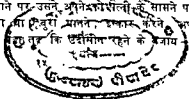
सभी कुछ उससे बेहतर होता, जो उसने किया – उसका चेहरा अनचाहे ही (शरीर-विज्ञान को पसन्द करनेवाले ओब्लोन्स्की ने इसे "मस्तिष्क की सहज प्रतिक्रिया" माना), बिल्कुल अचानक ही अपनी सामान्य, उदारतापूर्ण और इसलिये मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ खिल उठा।

इस मूर्खतापूर्ण मुस्कान के लिये वह अपने को क्षमा नहीं कर सकता था। यह मुस्कान देखकर डौली ऐसे सिहरी मानो उसे बड़ी शारीरिक पीड़ा हुई हो और अपने गर्ममिजाज के मुताबिक कटु शब्दों की बौछार करके कमरे से बाहर चली गयी। तब से वह अपने पति की सूरत नहीं देखना चाहती थी।

"यह मूर्खतापूर्ण मुस्कान ही इस सारी मुसीबत के लिये जिम्मेदार है," ओब्लोन्स्की सोच रहा था।

"तो क्या किया जाये? क्या किया जाये?" हताश मन से वह अपने से यह पूछ रहा था और उसे कोई जवाब नहीं मिल रहा था।

(२)

ओब्लोन्स्की खुद अपने प्रति ईमानदार आदमी था। वह अपने आपको इस बात का धोखा नहीं दे सकता था कि उसे अपनी करतूत का अफसोस है। वह अब इस बात के लिये पश्चाताप नहीं कर सकता था कि वह, चौंतीस साल का सुन्दर और रसिक प्रवृत्ति का व्यक्ति, पांच जीवित और भगवान को प्यारे हो गये दो बच्चों की मां और उससे केवल एक साल छोटी अपनी बीवी को प्यार नहीं करता था उसे सिर्फ इस बात का अफसोस था कि बीवी से अपने इस गुनाह को ज्यादा अच्छी तरह नहीं छिपा पाया था। किन्तु वह अपनी स्थिति की सारी विकटता को अनुभव करता था और उसे पत्नी, बच्चों और खुद अपने पर तरस आ रहा था। यदि उसे ऐसी सम्भावना की चेतना होती कि इस समाचार का पत्नी पर इतना गहरा असर होगा, तो शायद उसने अपने गुनाहों को उससे अधिक अच्छी तरह छिपा लिया होता। जाहिर था कि इस सवाल पर उसने कभी सोच-विचार नहीं किया था, लेकिन उसे धुंधला-सा आभास अवश्य था कि पत्नी बहुत पहले से ही उसकी बेवफ़ादारी का अनुमान लगाती थी और उसकी

तरफ से आगे मुड़े हुए थी। उसे तो ऐसा भी लगा कि दुबली-पतली हो जाने और बूढ़ा दीखनेवाली इस नारी को, जो सुन्दर भी नहीं रही थी, बड़ी साधारण थी और जिसमें कोई खास गुण नहीं था और जो केवल परिवार की दयालु माँ ही थी, न्याय भावना के अनुसार उदार भी होना चाहिये। लेकिन स्थिति इसके बिल्कुल प्रतिकूल सिद्ध हुई।

"आह, बड़ी भयानक स्थिति है! ओह, ओह! बड़ी ही भयानक!" ओब्लोन्स्की मन ही मन दोहरा रहा था और उसे कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। "इसके पहले सब कुछ कितना अच्छा था, कितने मजे में हम सब जी रहे थे! वह बच्चों में मग्न थी, उनके साथ खुश रहती थी। मैं उसके मामलों में कोई दखल नहीं देता था, जैसे चाहती थी वैसे ही बच्चों और घर-गिरस्ती में उलझी रहती थी। बेशक यह अच्छा नहीं है कि 'वह' हमारे घर में बच्चों की शिक्षिका थी। बिल्कुल अच्छी बात नहीं है! बच्चों की शिक्षिका से इश्क लड़ाने में कुछ ओछापन, कुछ घटियापन है। लेकिन क्या गजब थी वह शिक्षिका! (M-lle Roland की मुस्कान और काली शरारत भरी आँखें उसकी स्मृति में सजीव हो उठीं।) लेकिन जब तक वह हमारे यहाँ रही मैंने इस तरह की कोई हरकत नहीं की। सबसे बुरी बात तो यह है कि अब तो वह... इस मुसीबत को तो जैसे जान-बूझकर आना ही था! हाय, हाय, हाय! क्या किया जाये, क्या किया जाये?"

जिन्दगी सबसे पेचीदा और हल न हो सकनेवाले सवालों का जो जवाब देती है, इसका उसके सिवा कोई जवाब नहीं था। वह जवाब यही था – अपनी हर दिन की जिन्दगी चलाते जाओ, यानी अपने को भूल जाओ। लेकिन चूंकि ऐसा करना सम्भव नहीं था, कम से कम रात होने तक तो ऐसा नहीं हो सकता था, सुराही रूपी औरतों के गानों की दुनिया में भी नहीं लौटा जा सकता था, इसलिये जीवन के स्वप्न से ही मस्त रहना जरूरी था।

"जो होगा, सो देखा जायेगा," ओब्लोन्स्की ने अपने आपसे कहा, उठकर आसमानी रंग के रेशमी अस्तरवाला भूरा ड्रेसिंग गाउन पहना, फुंदों वाली डोरी की गांठ लगायी, मजबूत फेफड़ों से जोरदार सांस ली और उन टांगों से, जो उसके स्थूल शरीर का भार आसानी से वहन करती थीं, आदत के मुताबिक उत्साहपूर्वक, पंजों को फैलाकर

डग भरता हुआ खिड़की के करीब गया और भारी पर्दा ऊपर उठाकर जोर से घण्टी बजायी। घण्टी बजते ही उसका पुराना दोस्त और नौकर मात्वेई मालिक की पोशाक, घुटनों तक के बूट और एक तार लिये हुए भीतर आया। उसके पीछे-पीछे हजामत का सामान लिये हुए नाई भी पहुंच गया।

"दफ्तर के कोई कागज-पत्र है?" ओब्लोन्स्की ने तार लेकर दर्पण के पास बैठते हुए पूछा।

"मेज पर रखे है," मात्वेई ने जवाब दिया, सहानुभूति के साथ प्रश्नसूचक दृष्टि से मालिक की तरफ देखा और तनिक रुकने के बाद चालाकी भरी मुस्कान चेहरे पर लाकर इतना और कह दिया: "घोड़ा-गाड़ी के मालिक का आदमी आया था।"

ओब्लोन्स्की ने कोई जवाब नहीं दिया और केवल दर्पण में मात्वेई पर नजर डाली। दर्पण में मिलनेवाली उनकी नजरों से स्पष्ट था कि वे एक-दूसरे को खूब अच्छी तरह समझते हैं। ओब्लोन्स्की की नजर मानो पूछ रही थी – "किसलिये तुम मुझ से यह कह रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि क्या हो रहा है?"

मात्वेई ने अपनी जाकेट की जेबों में हाथ डाल लिये, पांव के जरा दूर खिसका लिया और चुपचाप, खुशमिजाजी से तथा कुछ कुछ मुस्कराते हुए अपने मालिक की तरफ देखा।

"मैंने उससे अगले इतवार को आने के लिये और यह भी कह दिया है कि तब तक आपको और अपने को बेकार परेशान न करे," उसने सम्भवत पहले से सोचा हुआ वाक्य कह दिया।

ओब्लोन्स्की समझ गया कि मात्वेई मजाक करना और अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करना चाहता है। उसने तार खोला और जैसा कि हमेशा होता है, शब्दों के गलत हिज्जों को अनुमान से ठीक करते हुए पढ़ा और उसका चेहरा खिल उठा।

"मात्वेई, बहन आन्ना अर्कादियेव्ना कल यहा पहुच रही है," क्षण भर को नाई का नर्म और गुदगुदा हाथ रोकते हुए, जो घुघराले गलमुच्छों के बीच की गुलाबी जगह साफ कर रहा था, उसने कहा।

"शुक्र है भगवान् का," मात्वेई ने कहा। इन शब्दों से उसने यह स्पष्ट कर दिया कि अपने मालिक की भांति वह भी आन्ना

अर्कादियेव्ना के आने का महत्त्व समझता है, यानी ओब्लोन्स्की की प्यारी बहन आन्ना पति-पत्नी की सुलह कराने में सहायक हो सकती है। "अकेली आ रही हैं या पति के साथ?" मात्वेई ने पूछा।

ओब्लोन्स्की कोई जवाब नहीं दे सका, क्योंकि नाई ऊपर वाले ओठ पर कुछ कर रहा था। इसलिये उसने एक उंगली ऊपर उठा दी। मात्वेई ने दर्पण में ही सिर झुका दिया।

"अकेली ही आ रही है। तो क्या उनके लिये ऊपर वाले कमरे में प्रबन्ध कर दिया जाये?"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना को बता दो। जहां वे कहें, वहीं प्रबन्ध कर देना।"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना को?" मात्वेई ने मानो सन्देह प्रकट करते हुए इन शब्दों को दोहराया।

"हां, उन्हें बता दो। लो यह तार ले जाकर दे दो और वे जो कहें, मुझे बताना।"

"टोहना चाहते हैं," मात्वेई समझ गया, लेकिन जवाब में सिर्फ इतना ही कहा

"जो हुक्म।"

ओब्लोन्स्की हाथ-मुंह धोकर बाल संवार चुका था और कपड़े पहनने ही वाला था, जब मात्वेई अपने चरमराते जूतों से धीरे-धीरे डग भरता और हाथ में तार लिये हुए कमरे में वापस आया। नाई जा चुका था।

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने आपसे यह कहने का आदेश दिया है कि वे जा रही हैं। वे यानी आप जैसा चाहें, वैसा करें" उसने केवल आंखों में हंसते हुए कहा और जेबों में हाथ डाले तथा सिर को एक ओर को झुकाये हुए अपने मालिक पर नज़र टिका दी।

ओब्लोन्स्की चुप रहा। कुछ देर बाद उसके सुन्दर चेहरे पर दयालुतापूर्ण और कुछ कुछ दयनीय मुस्कान दिखाई दी।

"देखा, मात्वेई?" उसने सिर हिलाते हुए कहा।

"कोई बात नहीं, हुजूर, सब ठीक-ठाक हो जायेगा," मात्वेई ने कहा।

"ठीक-ठाक हो जाये...
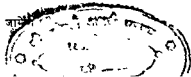
"जरूर सब ठीक-ठाक हो जायेगा, हुजूर।"

"तुम ऐसा मानते हो? यह वहा कौन है?" ओब्लोन्स्की ने दरवाजे के बाहर किसी नारी के फ्राक की सरसराहट सुनकर पूछा।

"यह मैं हू, मालिक," दृढ़ और मधुर नारी स्वर मे उत्तर मिला तथा दरवाजे के पीछे से बच्चो की आया मात्र्योना फिलिमोनोव्ना का कठोर तथा चेचकरू चेहरा सामने आया।

"क्या बात है, मात्र्योना?" दरवाजे पर उसके पास जाकर ओब्लोन्स्की ने पूछा।

इस चीज के बावजूद कि ओब्लोन्स्की पूरी तरह से अपनी पत्नी के सामने दोषी था और खुद भी ऐसा महसूस करता था, फिर भी घर के सभी लोग, यहा तक कि दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना की सबसे बडी मित्र यानी बच्चो की आया मात्र्योना भी ओब्लोन्स्की के पक्ष मे थी।

"क्या बात है?" उसने उदासी से पूछा।

"मालिक, आप उनके पास जाइये, अपने कसूर के लिये फिर से क्षमा माग लीजिये। शायद भगवान मदद करेंगे। बहुत दुखी हैं वे, देखकर जी को कुछ होता है और फिर घर मे भी सब कुछ गडबड हो गया है। मालिक, बच्चों पर रहम करना चाहिये। माफी माग ले, हुजूर। और कोई चारा भी तो नही। जो करता है, वही भरता है "

"लेकिन वे तो मुझसे मिलेगी नही "

"आप अपना जोर लगा लीजिये। भगवान दयालु हैं, भगवान का नाम लीजिये, मालिक, भगवान का नाम लीजिये।"

"अच्छी बात है, अब तुम जाओ," ओब्लोन्स्की ने अचानक अरुणाभ होते हुए कहा। "तो लाओ, पहनाओ कपडे," उसने मात्वेई को सम्बोधित किया और एक झटके से ड्रेसिंग गाउन उतार फेंका।

मात्वेई किसी अदृश्य चीज को फूक मारकर उड़ाते हुए पहले से ही तैयार की गयी कमीज को स्पष्ट प्रसन्नता के साथ अपने मालिक के बड़े स्वस्थ शरीर पर पहनाने लगा।

कपड़े पहनने के बाद ओब्लोन्स्की ने अपने ऊपर इत्र छिड़का, कमीज़ की आस्तीनें ठीक कीं, अभ्यस्त ढंग से सिगरेटों, बटुए, दियासलाई की डिबिया और दोहरी ज़ंजीर तथा मुहरों वाली घड़ी को विभिन्न जेबों में डाला। इसके बाद उसने रूमाल को झटककर झाड़ा, खुद को साफ़-सुथरा, इत्र से महकता तथा बड़ी मुसीबत के बावजूद स्वस्थ तथा प्रसन्नचित्त अनुभव करते हुए और टांगों को तनिक डोलाते हुए खाने के कमरे में चला गया। वहां कॉफ़ी और कॉफ़ी के करीब ही खत और दफ़्तर के कागज़ात उसकी राह देख रहे थे।

ओब्लोन्स्की ने खत पढ़े। उनमें से एक बहुत ही अप्रिय था। यह पत्र उस सौदागर का था, जो बीवी की जागीर पर जंगल खरीदनेवाला था। इस जंगल को बेचना ज़रूरी था, लेकिन अब बीवी के साथ सुलह होने तक ऐसा करने का सवाल ही नहीं पैदा होता था। इसमें सबसे अप्रिय बात तो यह थी कि पैसों का मामला बीवी के साथ सुलह करने के किस्से के साथ जुड़ गया था। और यह ख्याल कि पैसों के सवाल को ध्यान में रखते हुए, कि जंगल को बेचने के लिए ही वह बीवी से सुलह करना चाहेगा, यह ख्याल उसे अपमानजनक लग रहा था।

खत पढ़ने के बाद ओब्लोन्स्की ने दफ़्तर के कागज़ात अपने नज़दीक खींच लिये। उसने जल्दी-जल्दी दो मामलों की फ़ाइलों को उलटा-पलटा, बड़ी-सी पेंसिल से कुछ निशान लगाये और फ़ाइलों को दूर हटाकर कॉफ़ी पीने लगा। कॉफ़ी पीते हुए उसने सुबह का, अभी कुछ *कुछ गीला अखबार भी खोल लिया और उसे पढ़ने लगा।*

ओब्लोन्स्की उदार विचारों वाला, सो भी अति उदार विचारों वाला नहीं, बल्कि ऐसे झुकाव का अखबार मंगवाता और पढ़ता था, जो बहुमत के विचारों को अभिव्यक्त करता था। इस चीज़ के बावजूद कि न तो विज्ञान, न कला और न राजनीति में ही उसको कोई खास दिलचस्पी थी, वह इन सब विषयों के बारे में दृढ़तापूर्वक वही दृष्टिकोण रखता था, जो बहुमत और उसके अखबार के थे। इन दृष्टिकोणों को वह तभी बदलता था, जब बहुमत ऐसा करता

था, या यह कहना अधिक नहीं होगा कि वह उन्हें नहीं बदलता था, बल्कि उनमें अनजाने और अपने आप ही परिवर्तन हो जाता था।

ओब्लोन्स्की न तो विचारधारात्मक झुकाव और न दृष्टिकोण ही चुनता था। ये झुकाव और दृष्टिकोण उसे अपने आप उसी तरह मिलते थे जैसे प्रचलित फैशन का टोप और फ्राककोट। वह इनके रूप चुनता नहीं था, बल्कि जो दूसरे पहनते थे, वही ले लेता था। जाने-माने समाज में रहने के कारण और हमेशा परिपक्व आयु में विकसित हो जानेवाली चिन्तन शक्ति की अपेक्षाओं की पूर्ति के लिये भी उसका कोई दृष्टिकोण रखना उतना ही जरूरी था, जितना कि उसके पास टोप का होना। अगर वह उदारतावादी प्रवृत्ति को रूढ़िवादी धारा से बेहतर मानता था, जिसका उसके सामाजिक क्षेत्र में बहुत से लोग अनुकरण करते थे, तो इसका कारण यह नहीं था कि उसे उदारतावादी प्रवृत्ति अधिक समझ-बूझ वाली लगती थी, बल्कि इसलिये कि यह प्रवृत्ति उसके जीवन-ढंग के अधिक अनुरूप थी। उदारपंथी पार्टी यह कहती थी कि रूस में सब कुछ बहुत बुरा है, और सचमुच ओब्लोन्स्की के सिर पर कर्ज का बहुत भारी बोझ था और पैसों की जबरदस्त तंगी थी। उदारपंथी पार्टी का कहना था कि शादी की संस्था बीते जमाने की कहानी बन चुकी है और उसे नया रूप दिया जाना चाहिये। और सचमुच पारिवारिक जीवन में ओब्लोन्स्की को कोई बहुत खुशी नहीं मिलती थी। वह उसे झूठ बोलने और ढोंग करने को विवश करता था और उसे इन चीजों से नफरत थी। उदारपंथी पार्टी कहती थी या यों कहना बेहतर होगा कि उसका ऐसा आशय था कि धर्म आबादी के बर्बर भाग के लिये ही लगाम है और सचमुच छोटी-सी प्रार्थना के समय खड़े रहने पर भी ओब्लोन्स्की की टांगों में दर्द होने लगता था और वह किसी तरह भी यह नहीं समझ पाता था कि दूसरी दुनिया के बारे में इतने भयानक और भारी-भरकम शब्द किसलिये कहे जाते हैं, जबकि इस दुनिया में ही बड़े मजे की जिन्दगी बितायी जा सकती थी। साथ ही खुशी भरा मजाक पसन्द करनेवाले ओब्लोन्स्की को किसी भोले-भाले आदमी को कभी यह कहकर परेशान करने में सुख आता था कि अगर नसल का ही अभिमान करना है, तो

गये गेंडी के कण भाड़े चौड़ा सीना सीधा किया और प्रसन्नता में मुस्कराया। उसकी मुस्कान का कारण यह नहीं था कि दिन में कोई खास खुशी थी नहीं, नाश्ते के अच्छी तरह हज़म होने से ही यह प्रफुल्ल मुस्कान झलक उठी थी।

किन्तु इस खुशी भरी मुस्कान ने उसे सभी चीज़ों की याद दिला दी और वह सोच में डूब गया।

दरवाज़े के पार दो बच्चों की आवाज़ें सुनाई दीं। ओब्लोन्स्की ने छोटे बेटे ग्रीशा और बड़ी बेटी तान्या की आवाज़ें पहचान लीं। वे कोई चीज़ ले जा रहे थे जो गिर गयी थी।

"मैंने कहा था न कि मुसाफ़िरों को छत पर नहीं बिठाना चाहिये," लड़की अंग्रेज़ी में चिल्ला रही थी, "अब उठाओ इन्हें!"

"सब कुछ गड़बड़ हो गया," ओब्लोन्स्की ने सोचा, "बच्चे अकेले भागते फिर रहे हैं।" दरवाज़े के पास आकर उसने उन्हें पुकारा। उन्होंने उस डिब्बे को फेंक दिया, जिसे रेलगाड़ी बना रखा था और पिता के पास आये।

लड़की, जो अपने पिता की सबसे अधिक लाड़ली थी, बेधड़क भागती हुई कमरे में चली गयी, उसने हंसते हुए पिता के गले में बाहें डाल दीं, गर्दन से लटक गयी और उसे पिता की गलमुच्छों से आनेवाली इत्र की सुगन्ध से सदा की भांति खुशी हुई। आखिर गर्दन झुकाने के कारण लाल और स्नेह से चमकते हुए पिता के चेहरे को चूमने के बाद उसने गले से बाहें हटायीं और वापस भाग जाना चाहा। लेकिन पिता ने उसे रोक लिया।

"मां कैसी है?" बेटी की चिकनी और नाज़ुक गर्दन पर हाथ फेरते हुए उसने पूछा। "नमस्ते," उसने मुस्कराते हुए बेटे के अभिवादन का जवाब दिया।

उसे इस बात की चेतना थी कि वह बेटे को बेटी से कम प्यार करता है, फिर भी हमेशा अपने को एक जैसा ज़ाहिर करने की कोशिश करता था। लेकिन लड़का यह महसूस करता था और इसलिये वह पिता की उत्साहहीन मुस्कान के जवाब में मुस्कराया नहीं।

"मां? वे जाग गयी हैं," बेटी ने जवाब दिया।

ओब्लोन्स्की ने गहरी सांस ली। "इसका मतलब है कि फिर सारी रात नहीं सोई," उसने सोचा।

"वे खुश तो हैं न?"

लड़की जानती थी कि पिता और मां के बीच झगड़ा हुआ है कि मां खुश नहीं हो सकती और पिता जी को यह मालूम होना चाहिये कि ऐसे हल्के-फुल्के ढंग से इस बारे में पूछते हुए वे ढोंग कर रहे हैं। वह पिता के कारण शर्म से लाल हो गयी। ओब्लोन्स्की फौरन यह समझ गया और बेटी की तरह खुद भी शर्म से लाल हो गया।

"मालूम नहीं," उसने जवाब दिया। "मां ने आज पढ़ने को मना कर दिया है और मिस गुल के साथ नानी के यहां घूमने-फिरने के लिये जाने को कहा है।"

"तो जाओ, मेरी प्यारी बिटिया तान्या। हां, ज़रा रुको," पिता ने फिर भी उसे रोकते और उसके छोटे-से कोमल हाथ को सहलाते हुए कहा।

ओब्लोन्स्की ने आतिशदान की कार्निस पर से मिठाइयों का डिब्बा उठाया, जो उसने पिछले दिन वहां रखा था, और चाकलेट तथा क्रीम वाली उसकी मनपसन्द दो मिठाइयां उसे दीं।

"यह ग्रीशा के लिये है?" बेटी ने चाकलेट वाली मिठाई की तरफ संकेत करते हुए पूछा।

"हां, हां।" और एक बार फिर से उसके नाजुक-से कंधे को सहलाकर, बालों तथा गर्दन को चूमकर उसे जाने दिया।

"बग्घी तैयार है," मात्वेई ने कहा। "हां, एक औरत मिलने के लिये आई है," उसने इतना और जोड़ दिया।

"बहुत देर से है यहां?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"आध घण्टे से।"

"तुमसे कितनी बार कहा है कि फौरन मुझे इसकी खबर दिया करो!"

"आपको कम से कम कॉफ़ी तो पी लेने देना चाहिये," मात्वेई ने ऐसे मैत्रीपूर्ण और गंवारू अन्दाज़ में जवाब दिया कि उस पर बिगड़ा नहीं जा सकता था।

"तो बुलाओ जल्दी से," परेशानी से माथे पर बल डालते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा।

यह औरत छोटे कप्तान कालीनिन की पत्नी थी और एक बिल्कुल

अलमारी के सामने खडी थी और उसमें से कुछ निकाल रही थी। पति के कदमो की आहट पाकर उसने दरवाजे की तरफ देखते हुए काम बन्द कर दिया और अपने चेहरे पर व्यर्थ ही कठोरता तथा तिरस्कार का भाव लाने का यत्न किया। वह अनुभव कर रही थी कि पति और कुछ ही क्षण बाद उसके साथ होनेवाली भेट से घबराती है। अभी-अभी वह वही करने की कोशिश कर रही थी, जिसके लिये पिछले तीन दिनो मे दसियो बार प्रयास कर चुकी थी यानी अपनी और बच्चो की वे चीजे अलग कर ले, जो अपने साथ मा के घर ले जायेगी। इस बार भी वह ऐसा इरादा नही बना पायी। पहले की भाति इस बार भी उसने अपने आप से यही कहा कि यह सब ऐसे ही नही रह सकता, कि उसे कुछ न कुछ तो करना चाहिये, उसे दण्ड देना, कलकित करना चाहिये, उसने उसे जो पीडा दी है, उसका कुछ तो बदला लेना चाहिये। वह अभी भी खुद से यह कह रही थी कि उसे छोडकर चली जायेगी, लेकिन दिल मे महसूस कर रही थी कि ऐसा करना असम्भव है। ऐसा इसलिये असम्भव था कि वह उसे अपना पति मानना और उसे प्यार करना नही छोड सकती थी। इसके अलावा वह यह भी अनुभव करती थी कि अगर यहा, अपने घर मे ही वह बडी मुश्किल से अपने पाच बच्चो की देख-भाल कर पाती है तो वहा, जहा वह उन्हे लेकर जायेगी, उनका और भी बुरा हाल होगा। इन तीन दिनो के दौरान ही छोटा बेटा इसलिये बीमार हो गया था कि उसे खराब हो चुका शोरवा खिला दिया गया था और बाकी बच्चो को पिछले दिन खाना ही नही मिला था। वह अनुभव करती थी कि जाना सम्भव नही है, फिर भी अपने को धोखा देती हुई चीजे छाट रही थी और यह ढोग कर रही थी कि यहा से चली जायेगी।

पति को देखकर उसने अलमारी के खाने मे हाथ डाल दिया मानो कुछ ढूढ रही हो और उसकी तरफ तभी मुडी, जब वह उसके बिल्कुल करीब आ गया। किन्तु उसका चेहरा, जिस पर वह कठोरता और दृढ निर्णय का भाव लाना चाहती थी, अनिश्चय और व्यथा की झलक दे रहा था।

"डौली!" ओब्लोन्स्की ने धीमी और सहमी-सी आवाज़ मे कहा। उसने अपना सिर कधो के बीच धसा लिया था और वह अपने को

[illegible] लेकिन फिर भी उसके चेहरे पर ताजगी और तन्दुरुस्ती झलक रही थी।

डौली ने ताजगी और तन्दुरुस्ती से दमकते हुए उसके व्यक्तित्व को सिर से पांव तक गहरी नजर से निहारा। 'हां, वह सुखी और प्रसन्न है!' उसने सोचा, 'लेकिन मैं? और उसकी यह [illegible] जिसके लिये सभी उसे इतना चाहते हैं और उसकी इतनी प्रशंसा करते हैं, मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती।' उसने मन ही मन सोचा। उसने होंठ भींच लिये और [illegible] चेहरे के दायें भाग की एक मांसपेशी फड़कने लगी।

"क्या चाहिये आपको?" उसने जल्दी-जल्दी, गहरी और रूखी-सी आवाज में पूछा।

"डौली!" उसने पुनः कांपती-सी आवाज में उत्तर दिया। "अन्ना आज आ जायेगी।"

"तो मुझे इससे क्या? मैं उससे नहीं मिल सकती!" वह चिल्ला उठी।

"फिर भी मिलना तो चाहिये, डौली..."

"जाइये, जाइये, जाइये यहां से!" पति की ओर देखे बिना वह ऐसे चीखी, मानो यह चीख शारीरिक पीड़ा का परिणाम हो।

ओब्लोन्स्की जब पत्नी के बारे में सोचता था, तो शान्त रह सकता था, मात्वेई के शब्दों के मुताबिक यह आशा कर सकता था कि "सब ठीक-ठाक हो जायेगा", चैन से अखबार पढ़ और कॉफ़ी पी सकता था। लेकिन जब उसने उसका बहुत ही व्यथित और पीड़ायुक्त चेहरा देखा, भाग्य और हताशा के सामने घुटने टेकती-सी उसकी यह आवाज सुनी, तो उसके लिये सांस लेना कठिन हो गया, गले में फांस-सी अनुभव हुई और आंखों में आंसू चमक उठे।

"हे भगवान, यह क्या कर डाला मैंने! डौली! भगवान के लिये!.. आखिर सोचो तो..." वह अपनी बात जारी न रख सका, सिसकियों से उसका गला रुंध गया।

डौली ने फटाक-से अलमारी बन्द कर दी और पति की तरफ देखा।

"डौली, मैं कह ही क्या सकता हूं? बस, इतना ही – माफ कर दो, मुझे माफ कर दो... ध्यान करो, क्या हमारे

कहा। "वह खाना तैयार कर देगा। नही तो कल की तरह बच्चे आज भी शाम के छ बजे तक भूखे रहेंगे।"

"अच्छी बात है, मैं अभी बाहर आकर सब कुछ तय कर दूगी। ताजा दूध के लिये तो किसी को भेज दिया न?"

और डौली दिन भर की घरेलू चिन्ताओं में खो गयी और वक्ती तौर पर उसने अपने दुख को उनमें डुबो दिया।

(५)

जन्मजात योग्यता की बदौलत ओब्लोन्स्की स्कूल की पढ़ाई में अच्छा था, लेकिन काहिल और शरारती होने के कारण पिछड़े हुओ में रह गया। फिर भी अपनी सदा की रग-रलियो वाली जिन्दगी छोटे रुतबे और बुजुर्ग न होने के बावजूद मास्को के एक दफ्तर में सचालक के प्रतिष्ठित पद पर काम करता था और अच्छा वेतन पाता था। यह नौकरी उसे अपने बहनोई यानी आन्ना के पति अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच कारेनिन की सहायता से मिली थी। कारेनिन उस मन्त्रालय में, जिसके अधीन यह दफ्तर था, बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान पर नियुक्त था। अगर कारेनिन अपने साले को यह जगह न भी दिल-वाता, तो भी स्तीवा ओब्लोन्स्की सैकडो अन्य लोगो, भाइयो, बहनो, सगे-सम्बन्धियो, दूर के रिश्ते के चाचाओ-मामाओ और बूआओ-मौसियो की मदद से यही या छ हजार वार्षिक आय वाली ऐसी कोई दूसरी नौकरी पा लेता। इतना वेतन तो उसे चाहिये ही था, क्योकि बीबी की काफी सम्पत्ति के बावजूद उसकी माली हालत खासी पतली थी।

मास्को और पीटर्सबर्ग के आधे लोग ओब्लोन्स्की के रिश्तेदार या यार-दोस्त थे। उसका उन लोगो के बीच जन्म हुआ था, जो इस पृथ्वी के बडे लोग थे या बन गये थे। सरकारी लोगो का एक तिहाई भाग यानी बुजुर्ग उसके पिता के दोस्त थे और उसे बचपन से जानते थे। दूसरी तिहाई के लोग उसके यार-दोस्त थे और तीसरी तिहाई वाले अच्छे परिचित। इसलिये जाहिर है कि नौकरियो, ठेको और रियायतो आदि के रूप में दौलत बाटनेवाले सभी लोग उसके दोस्त थे और अपने आदमी की अवहेलना नही कर सकते थे। ओब्लोन्स्की को

अच्छी जगह हासिल करने के लिये खास कोशिश करने की जरूरत नही थी। उसे तो सिर्फ इन्कार और ईर्ष्या नही करनी चाहिये थी, झगड़ना और बुरा नही मानना चाहिये था और वह अपनी स्वाभाविक उदारता के फलस्वरूप कभी ऐसा करता भी नही था। अगर उससे यह कहा जाता कि जिस नौकरी की उसे जरूरत है, वह उसे नहीं मिलेगी, तो उसे यह बात हास्यास्पद लगती। खास तौर पर इसलिये कि वह किसी असाधारण चीज की माग नही कर रहा था। वह तो उतना ही चाहता था, जितना कि उसके हमउम्र पा रहे थे और ऐसी नौकरी के फर्ज भी वह दूसरो की तरह ही निभा सकता था।

ओब्लोन्स्की को जाननेवाले सभी लोग उसे उसके दयालु, हसोड़ स्वभाव और सन्देहहीन ईमानदारी के लिये प्यार ही नही करते थे, बल्कि उसमे, उसके बाहरी सुन्दर और मधुर व्यक्तित्व, चमकती आखो, काली भौहो, गोरे-चिट्टे और गालो पर खिले गुलाबो वाले चेहरे मे कुछ ऐसा भी था, जो उससे मिलनेवाले लोगो पर मैत्रीपूर्ण तथा सुखद प्रभाव डालता था। "अहा! स्तीवा! ओब्लोन्स्की! यह रहा वह!" उससे मुलाकात होने पर लगभग हमेशा ही खुशीभरी मुस्कान के साथ लोग कहते। अगर कभी ऐसा हो भी जाता कि उसके साथ बातचीत करने के बाद ऐसा प्रतीत होता कि कोई खास खुशी की बात नही हुई, तो भी अगले दिन या उसके अगले दिन उससे भेट होने पर फिर सभी उसी भाति खुश होते।

मास्को के एक कार्यालय मे तीन सालो से सचालक के पद पर काम करते हुए ओब्लोन्स्की ने प्यार के अतिरिक्त अपने सहयोगियो, अपने अधीन काम करनेवालो और अपने से बड़े अधिकारियो अर्थात् उन सभी का आदर भी प्राप्त कर लिया था, जिनका उससे वास्ता पड़ता था। दफ्तर मे सभी का आदर प्राप्त करने मे जिन गुणो ने उसकी सहायता की थी, उनमे सबसे पहला तो लोगो के प्रति अत्यधिक विनयशीलता थी, जो अपनी त्रुटियों की चेतना का परिणाम थी। दूसरा गुण था – उसकी उदारता की भावना। यह वह उदारता नही थी, जिसके बारे मे वह अखबारो मे पढ़ता था, बल्कि वह, जो उसके खून मे थी और जिसके फलस्वरूप वह अमीर-गरीब और छोटे-बड़े यानी सभी लोगों के साथ समान व्यवहार करता था। तीसरा और

मुख्य गुण था – उस काम के प्रति, जिसे वह करता था, पूर्ण अनासक्ति का भाव। इसके परिणामस्वरूप वह उसमे कभी डूबता-खोता नही था और इसलिये गलतिया भी नही करता था।

ओब्लोन्स्की के दफ्तर पहुचने पर दरबान ने उसका सादर स्वागत किया और वह थैला लिये हुए अपने छोटे-से कमरे मे गया, उसने वर्दी पहनी और दफ्तर मे दाखिल हुआ। मुशी और दूसरे सभी कर्मचारी उठकर खडे हो गये और सभी ने खुशमिजाजी तथा आदर से सिर झुकाया। ओब्लोन्स्की सदा की भाति जल्दी-जल्दी कदम बढाता अपनी जगह पर चला गया और सदस्यो से हाथ मिलाकर बैठ गया। जितना मुनासिब था, उसने हसी-मजाक किया और बातचीत की तथा काम शुरू कर दिया। ओब्लोन्स्की आजादी, सादगी और औपचारिकता की उस हद को बहुत अच्छी तरह जानता था, जो दफ्तर के काम को दिलचस्प ढग से चलाने के लिये जरूरी होती है। जैसा कि अन्य सभी लोग भी ओब्लोन्स्की की उपस्थिति मे करते थे, सेक्रेटरी भी खुशमिजाजी और आदर से, कागजात लिये हुए उसके पास आया और बेतकल्लुफ तथा खुले अन्दाज मे, जिसकी ओब्लोन्स्की ने ही परम्परा डाली थी, बात करने लगा।

"आखिर तो हमने पेन्ज़ा गुबेर्नियां के दफ्तर से जरूरी सूचना हासिल कर ली है। देखना चाहेंगे न "

"*आखिर तो हासिल कर ली?*" कागज़ पर उगली रखते हुए ओब्लोन्स्की कह उठा। "तो महानुभावो " और कार्रवाई शुरू हो गयी।

"*काश इन्हे मालूम होता कि आध घण्टा पहले इनका अध्यक्ष कैसा कसूरवार लड़का-सा बना हुआ था,*" उसने रिपोर्ट सुनते हुए एक ओर को सिर झुकाकर तथा चेहरे पर गम्भीरता का भाव लाते हुए मन ही मन सोचा। और रिपोर्ट पढे जाने के वक्त उसकी आखे हस रही थी। दिन के दो बजे तक ऐसी कार्रवाई चलती थी और इसके बाद कुछ खाने-पीने के लिये अन्तराल होता था।

अभी दो नही बजे थे कि दफ्तर के बडे हॉल के शीशे के दरवाजे अचानक खुले और कोई भीतर आया। सभी सदस्यो ने इस मनबहलाव की सम्भावना से खुश होते हुए दरवाजे की तरफ मुडकर देखा, जिसके

सामने डर का दर्शनिक लगा था। लेकिन दरवाजे के करीब खड़े चौकीदार ने आगन्तुक को फौरन बाहर करते हुए शीशे का दरवाजा बन्द कर दिया।

जब रिपोर्ट पढ़ी जा चुकी ओब्लोन्स्की उठकर खड़ा हुआ, उसने अंगड़ाई ली अपने जमाने की उदारतावादी प्रवृत्ति के अनुरूप दफ्तर में ही सिगरेट निकाली और अपने कमरे में चला गया। उसके दो साथी, अर्से से यही काम करनेवाला निकीतिन और कैमरजंकर ग्रिनेविच भी उसके साथ बाहर आ गये।

"नाश्ते-पानी के बाद इस मामले को खत्म कर लेंगे," ओब्लोन्स्की ने कहा।

"ज़रूर कर लेंगे!" निकीतिन ने पुष्टि की।

"यह फोमीन बड़ा धूर्त होगा," ग्रिनेविच ने विचाराधीन मामले से सम्बन्धित एक व्यक्ति के बारे में कहा।

ग्रिनेविच के इन शब्दों को सुनकर ओब्लोन्स्की के माथे पर बल पड़ गये। इस तरह उसने यह ज़ाहिर कर दिया कि वक्त से पहले कोई नतीजा निकालना अच्छी बात नहीं है और जवाब में खुद कुछ नहीं कहा।

"कौन भीतर आया था?" उसने चौकीदार से पूछा।

"कोई अजनबी था, हुज़ूर। मेरा मुह दूसरी तरफ होते ही पूछे बिना घुस गया। आपके बारे में पूछ रहा था। मैंने कहा कि जब सदस्य बाहर आयेंगे, तब "

"कहा है वह?"

"अभी-अभी ड्योढ़ी मे चला गया है, नहीं तो लगातार यहीं पर इधर-उधर टहल रहा था। वह रहा," चौकीदार ने मज़बूत और चौड़े-चकले कंधों तथा घुंघराली दाढ़ीवाले व्यक्ति की तरफ इशारा करके कहा। यह व्यक्ति भेड़ की खाल की टोपी उतारे बिना ही पत्थर के ज़ीने की घिसी हुई पैड़ियों पर जल्दी-जल्दी और फुर्ती से ऊपर चढ रहा था। थैला हाथ मे लिये नीचे उतरते हुए एक दुबले-पतले कर्मचारी ने रुककर ऊपर भागे जाते इस व्यक्ति की टांगों को भर्त्सनापूर्वक देखा और फिर ओब्लोन्स्की पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली।

। जीने के सिरे पर खड़ा था। वर्दी के सुनहरी पट्टीवाले

कालर के ऊपर गुमामिजाजी से मिला हुआ उसका चेहरा सीढ़िया चढ़ते आदमी को पहचानकर और भी अधिक खिल उठा।

"वही है! आखिर तो लेविन आ गया!" नजदीक आते लेविन को गौर से देखते हुए उसने मैत्री और तनिक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कहा। "इस गड़बड़-झाले मे मुझे ढूढते हुए तुम्हे नफरत नही महसूस हुई?" हाथ मिलाकर ही सन्तुष्ट न होते हुए उसने अपने दोस्त को चूमा। "बहुत देर हो गयी क्या तुम्हें यहा आये?"

"मैं अभी आया हू और तुमसे मिलने को बहुत ही उत्सुक था," लेविन ने शर्माते, साथ ही झल्लाते और बेचैनी से इधर-उधर नजर दौड़ाते हुए जवाब दिया।

"तो आओ, मेरे कमरे मे चले," अपने दोस्त की आत्मसम्मानी और खीझभरी सकोचशीलता से परिचित ओब्लोन्स्की ने कहा। और उसका हाथ थामकर अपने पीछे-पीछे ऐसे ले चला मानो उसे खतरो के बीच से बचाकर ले जा रहा हो।

अपने लगभग सभी परिचितो के साथ ओब्लोन्स्की की "तुम" के स्तर पर बेतकल्लुफी थी। इन परिचितो मे साठ साल के बूढे, बीस साला छोकरे, अभिनेता, मन्त्री, व्यापारी और जार के जनरल-एडजुटेट भी थे। इस तरह "तुम" के स्तर पर उससे घनिष्ठता रखने वाले सामाजिक सीढ़ी के दो सिरो पर खड़े थे और उन्हे यह जानकर बहुत हैरानी होती कि ओब्लोन्स्की के माध्यम से उनके बीच कोई तार जुड़ा हुआ है। वह जिन लोगो के साथ शैम्पेन पीता था, और शैम्पेन वह बहुतो के साथ पीता था, उन सभी को "तुम" कहता था। इसलिये अपने अधीन काम करनेवालो की उपस्थिति मे जब "तुम" की श्रेणी मे आनेवाले इन "लज्जाजनक यार-दोस्तो" से, जैसे वह मजाक मे ऐसे अधिकतर लोगो को कहता था, उसकी भेट होती तो अपनी नीति-कुशलता के अनुसार अपने मातहतो के लिये इस प्रभाव की अप्रियता को कम करने मे समर्थ रहता था। लेविन "लज्जाजनक यार-दोस्तो" मे से नही था, लेकिन ओब्लोन्स्की अपनी नीतिकुशलता से लेविन के मन का भाव भाप गया। उसने महसूस किया कि लेविन समझता है कि मैं अपने मातहतो के सामने उसके साथ अपनी निकटता नही जाहिर करना चाहूगा और इसलिये जल्दी से उसे अपने कमरे मे ले गया।

लेविन और ओब्लोन्स्की लगभग हमउम्र थे और उनके बीच केवल शेम्पेन की वजह से ही "तुम" के स्तर पर सम्बन्ध नहीं थे। लेविन उसका साथी और चढ़ती जवानी के दिनों का दोस्त था। स्वभावों और रुचियों के अन्तर के बावजूद वे एक-दूसरे को वैसे ही प्यार करते थे, जैसा चढ़ती जवानी के दिनों में मिल जानेवाले लोगों के बीच हो जाता है। किन्तु इसके बावजूद, जैसाकि विभिन्न किस्म की गतिविधियां चुननेवाले लोगों के साथ अक्सर होता है, इनमें से हरेक चाहे दूसरे के कार्य पर सोच-विचार कर उसकी सफाई पेश करता था, फिर भी दिल में उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। प्रत्येक को ऐसा प्रतीत होता था कि जो जीवन वह बिता रहा है, वही वास्तविक है और उसके मित्र का जीवन छलना है। लेविन से मुलाकात होते ही ओब्लोन्स्की के चेहरे पर हल्की व्यंग्यपूर्ण मुस्कान आये बिना नहीं रहती थी। लेविन [illegible] गांव से आता था जहां वह कुछ करता था, लेकिन क्या [illegible] ओब्लोन्स्की [illegible] नहीं समझ सका और न ही वह इस [illegible] में कोई गहरी दिलचस्पी लेता था। लेविन हमेशा ही उत्तेजित, [illegible] कुछ घबराया और इस घबराहट के कारण झल्लाया हुआ और [illegible] के बारे में सदा नया अप्रत्याशित दृष्टिकोण लेकर मास्को [illegible]। ओब्लोन्स्की इस पर हंसता और उसे यह अच्छा लगता। [illegible] लेविन अपने मित्र के शहरी जीवन और उसके काम [illegible] को [illegible] मानता था, मन ही मन तिरस्कार की दृष्टि से देखता और इसका मजाक उड़ाता। लेकिन फर्क यह था कि ओब्लोन्स्की [illegible] करते हुए जो सभी करते हैं, आत्मविश्वास और [illegible] के [illegible], जबकि लेविन आत्मविश्वास के बिना और [illegible] हुए।

"[illegible] तुम्हारी राह देख रहे थे," ओब्लोन्स्की [illegible] और लेविन का हाथ छोड़ने तथा इस [illegible] कहा कि अब मसला खत्म हो गया। [illegible] बढ़ता गया। "तो [illegible] है तुम्हारा? कब आये हो?"

ओब्लोन्स्की [illegible] अपरिचित चेहरा और [illegible] देखता हुआ लेविन खामोश

रहा। ग्रिनेविच के हाथो की ऐसी गोरी और लम्बी उगलिया थी, उनके सिरो पर ऐसे लम्बे, पीले और मुडे हुए नाखून थे, कमीज़ के कफो में ऐसे चमकते और बडे-बडे कफ-लिक लगे हुए थे कि सम्भवत इन हाथो ने ही उसका सारा ध्यान अपनी तरफ खीच लिया था और वे उसे स्वतन्त्रता से सोचने नही दे रहे थे। ओब्लोन्स्की ने फौरन यह ताड लिया और मुस्कराया।

"अरे हा, मैं आपका परिचय तो करा दू," उसने कहा। "मेरे साथी फिलीप इवानोविच निकीतिन और मिखाईल स्तनिस्लावोविच ग्रिनेविच।" इसके बाद लेविन की ओर इशारा करते हुए बोला, "ज़ेम्सत्वो-परिषद का कार्यकर्त्ता, इस प्रणाली का एक नया व्यक्ति, मेरा कसरती दोस्त कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच लेविन, जो एक हाथ से एक सौ किलोग्राम वज़न उठा लेता है, पशुपालक और शिकारी है तथा सेर्गेई इवानोविच कोज़्निशेव का छोटा भाई।"

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई," बूढे निकीतिन ने कहा।

"मुझे आपके भाई सेर्गेई इवानोविच से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त है," लम्बे नाखूनोवाला पतला-सा हाथ लेविन की तरफ बढाते हुए ग्रिनेविच ने कहा।

लेविन के माथे पर बल पड गये, उसने रुखाई से हाथ मिलाया और इसी क्षण ओब्लोन्स्की की तरफ देखा। यह सही है कि सारे रूस मे लेखक के नाते प्रसिद्ध अपने भाई के लिये उसके दिल मे बडी इज़्ज़त थी, फिर भी जब उसे कोन्स्तान्तीन लेविन के रूप मे नही, बल्कि विख्यात कोज़्निशेव के भाई के रूप मे सम्बोधित किया जाता था, तो उसे बहुत बुरा लगता था।

"नही, मैं अब ज़ेम्सत्वो-परिषद का कार्यकर्त्ता नही रहा। मेरा सबसे झगडा हो गया और अब मैं परिषद की बैठको मे नही जाता," उसने ओब्लोन्स्की को सम्बोधित करते हुए कहा।

"इतनी जल्दी ही!" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर कहा। "लेकिन कैसे? क्या हुआ?"

"यह लम्बी कहानी है। फिर कभी सुनाऊगा," लेविन ने कहा, लेकिन उसी वक्त सुनाने लगा। "थोडे मे, मुझे यह यकीन हो गया कि ज़ेम्सत्वो-परिषद न तो कुछ करती है और न कर ही सकती है,"

उसने ऐसे कहना शुरू किया मानो किसी ने इसी वक्त उसे नाराज कर दिया हो। "एक तरफ तो यह खिलौना है, संसद में होने का खेल खेला जाता है। लेकिन मैं न तो इतना जवान हू और न इतना बूढ़ा ही कि खिलौनो से खेलू। दूसरी तरफ (वह हकलाया) यह जिले के coterie* के लिये पैसा निचोड़ने का साधन है। पहले सरक्षण-सस्थाये और अदालते थी और अब ये परिषदे रिश्वत के रूप में नही, बल्कि अनुचित वेतन के रूप मे पैसा पाती हैं," उसने ऐसे जोश मे कहा मानो उपस्थित लोगो मे से कोई उसके मत का खण्डन कर रहा हो।

"अरे! मैं देख रहा हू कि तुम फिर से एक नये, रूढ़िवादी रग में सामने आये हो," ओब्लोन्स्की ने कहा। "खैर, इसकी हम बाद मे चर्चा करेगे।"

"हा, बाद मे। लेकिन मेरे लिये तुमसे मिलना जरूरी था," लेविन ने ग्रिनेविच के हाथ की ओर घृणा से देखते हुए कहा।

ओब्लोन्स्की के चेहरे पर हल्की मुस्कान दिखाई दी।

"तुमने तो कहा था कि अब कभी तुम यूरोपीय पोशाक नहीं पहनोगे?" लेविन के नये, सम्भवत फ्रासीसी दर्जी के हाथ से सिले सूट को ध्यान से देखते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा। "तो मैं देख रहा हूं कि यह भी एक नया रग है।"

लेविन अचानक शर्मा गया। लेकिन ऐसे नही, जैसे बालिग जरा-सा शर्माते है और उन्हे इसका एहसास भी नही होता। वह तो लड़को की तरह शर्माया, जो यह अनुभव करते है कि अपने शर्मीलेपन के कारण वे हास्यास्पद प्रतीत होते है और इसलिये और भी ज्यादा शर्माते तथा लाल होते जाते हैं और लगभग आसुओ की अवस्था तक पहुच जाते है। लेविन के बुद्धिमत्ता और साहसपूर्ण चेहरे को बालको जैसी स्थिति में देखना इतना अजीब लग रहा था कि ओब्लोन्स्की ने नजर दूसरी तरफ कर ली।

"तो कहा मिलेगे हम? मुझे तो तुमसे बहुत ही जरूरी बात करनी है," लेविन ने कहा।

ओब्लोन्स्की मानो सोचने लगा

---

* गिरोह। (फ्रासीसी)

"तो ऐसा करते है – गूरिन के पास नाश्ता-पानी करने चलते है और वही बातचीत कर लेगे। मुझे तीन बजे तक फुरसत है।"

"नही," कुछ सोचकर लेविन ने जवाब दिया, "मुझे अभी कही और जाना है।"

"तो हम शाम का खाना एक साथ खा लेगे।"

"शाम का खाना? देखो न, मुझे कुछ खास तो कहना नहीं, सिर्फ दो शब्द कहने हैं, कुछ पूछना है और बाकी बाते हम बाद मे कर लेगे।"

"तो अभी कह दो वे दो शब्द और बाकी बातचीत खाने के वक्त कर लेगे।"

"दो शब्द ये हैं," लेविन ने कहा, "वैसे, कोई खास बात नही है।"

उसके चेहरे पर सहसा झल्लाहट झलक उठी। यह अपने शर्मीलेपन पर काबू पाने की उसकी कोशिश का परिणाम थी।

"श्चेर्बात्स्की परिवारवालो का क्या हालचाल है? सब कुछ पहले की तरह ही है?" उसने पूछा।

ओब्लोन्स्की को बहुत अर्से से यह मालूम था कि लेविन उसकी साली कीटी को प्यार करता है। इसलिये अब वह तनिक मुस्कराया और उसकी आंखे खुशमिजाजी से चमक उठी।

"तुमने कहा 'दो शब्द', लेकिन मैं दो शब्दो मे जवाब नही दे सकता, क्योकि   एक मिनट के लिये माफ करना।"

बेतकल्लुफी और साथ ही आदर का भाव तथा दफ्तरी मामलो के बारे मे सचालक की तुलना मे अपनी जानकारी की श्रेष्ठता की चेतना के साथ, जो सभी सेक्रेटरियो का सामान्य लक्षण है, ओब्लोन्स्की का सेक्रेटरी कागजात लिये हुए करीब आया और सवाल पूछने का बहाना करते हुए कोई कठिनाई स्पष्ट करने लगा। ओब्लोन्स्की ने अन्त तक उसकी बात सुने बिना ही स्नेहपूर्वक अपना हाथ सेक्रेटरी की आस्तीन पर रख दिया।

"नही, आप वैसा ही करे, जैसा कि मैंने कहा था," मुस्कराकर अपनी टिप्पणी को नर्म बनाते और सक्षेप मे इस मामले के बारे मे अपने विचार स्पष्ट करते हुए उसने कागजात अपने सामने से हटा दिये और कहा, "वैसे ही कीजिये, ज़ाख़ार निकीतिच! कृपया वैसे ही कीजिये।"

"ओह, इसकी भी बाद में चर्चा करेंगे," फिर शर्म से बुरी तरह लाल होते हुए लेविन ने उत्तर दिया।

"अच्छी बात है। समझ गया," ओब्लोन्स्की ने कहा। "वैसे तो मैंने तुम्हें घर पर बुला लिया होता, लेकिन मेरी बीवी की तबीयत अच्छी नहीं है। अच्छा सुनो–अगर तुम उनसे मिलना चाहते हो, तो सम्भवतः वे लोग चार से पांच बजे तक चिड़ियाघर वाले बाग में मिलेंगे। कीटी वहां स्केटिंग करती है। तुम वहां चले जाओ, बाद में मैं भी वहीं आ जाऊंगा और हम कहीं एकसाथ खाना खा लेंगे।"

"अच्छी बात है, तो नमस्ते।"

"लेकिन तुम याद रखना। मैं तुम्हें जानता हूं, तुम भूल जाओगे या अचानक गांव चले जाओगे!" ओब्लोन्स्की ने हंसते हुए चिल्लाकर कहा।

"नहीं, ऐसा नहीं होगा।"

लेविन ओब्लोन्स्की के साथियों को नमस्ते किये बिना ही बाहर चला गया। केवल दरवाज़े तक पहुंचने पर ही उसे यह याद आया कि ऐसा करना भूल गया है।

"बड़ा उत्साही श्रीमान लगता है यह," लेविन के जाने पर ग्रिनेविच ने कहा।

"हां, दोस्त," ओब्लोन्स्की ने सिर हिलाते हुए कहा। "ऐसे को कहते हैं खुशकिस्मत! लगभग आठ हज़ार एकड़ ज़मीन है कराज़ीन्स्की ज़िले में, अभी सब कुछ आगे है और कितनी ताज़गी है! कोई हम जैसा थोड़े ही है!"

"आप क्यों शिक्वा-शिकायत करते हैं, स्तेपान अर्कादियेविच?"

"बड़ी मुश्किल का सामना है, बुरा हाल है," ओब्लोन्स्की ने गहरी सांस लेकर कहा।

(६)

ओब्लोन्स्की ने लेविन से जब यह पूछा कि वह किसलिये आया है, तो लेविन शर्म से लाल हो गया और उसे अपने पर इसलिये गुस्सा आया कि ऐसे शर्मा गया। कारण कि वह उसे यह जवाब तो नहीं दे

सकता था "मैं तुम्हारी साली के सामने अपने साथ विवाह का प्रस्ताव रखने आया हूं" यद्यपि वह आया तो सिर्फ इसीलिये था।

लेविन और श्चेर्बात्स्की परिवार मास्को के पुराने कुलीन परिवार थे और उनके बीच हमेशा घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहे थे। लेविन के विद्यार्थी-जीवन के समय में ये सम्बन्ध और भी दृढ़ हो गये थे। उसने डौली और कीटी के भाई, नौजवान प्रिंस श्चेर्बात्स्की के साथ ही विश्वविद्यालय में दाखिला पाने की तैयारी की और वे दोनों एक साथ ही दाखिल हुए। उस वक्त लेविन श्चेर्बात्स्की परिवार में अक्सर आता था और उसे इस परिवार से प्यार हो गया। बेशक यह कितना ही अजीब क्यों न लगे, फिर भी कोन्स्तान्तीन लेविन इस घर, इस पूरे परिवार को, खास तौर पर श्चेर्बात्स्की परिवार के आधे भाग यानी औरतों को प्यार करता था। लेविन को अपनी मां की याद तक नहीं थी और उसकी एकमात्र बहन उससे बड़ी थी। इस तरह श्चेर्बात्स्की परिवार में उसे पहली बार पुराने, सुशिक्षित और भले लोगों का वह वातावरण देखने को मिला, जिससे माता-पिता की मृत्यु हो जाने के कारण वह वंचित रहा था। इस परिवार के सभी लोग, विशेषकर औरतें, उसे किसी रहस्यपूर्ण और काव्यमय आवरण में लिपटी हुई-सी लगती थीं, उसे इनमें न सिर्फ कोई कमी ही नहीं महसूस होती थी, बल्कि इस काव्यमय आवरण की बदौलत वह उनमें उच्चतम भावनाओं और सभी तरह की पूर्णता की कल्पना करता था। किसलिए [illegible] एक दिन फ्रांसीसी और दूसरे दिन अंग्रेजी में बातची[illegible] समय पर बारी-बारी से पियानो बजा[illegible] के कमरे में [illegible] लड़के पढ़ते थे [illegible] साहित्य, संगीत, चित्रक[illegible] [illegible] तीनों युवतियां [illegible] लबादा और कोई [illegible] हुई उनकी टांगें [illegible] बग्घी में बैठकर [illegible] सुनहरी [illegible]

या, लेकिन इतना जानता था कि वहा जो कुछ भी होता था, अद्भुत था और वह यहां होनेवाली चीजो की रहस्यपूर्णता को प्यार करता था।

अपने विद्यार्थी-जीवन मे उसे सबसे बड़ी बहन यानी डौली से लगभग प्यार हो चला था। लेकिन उसकी जल्द ही ओब्लोन्स्की से शादी कर दी गयी। इसके बाद वह दूसरी बहन की ओर खिचने लगा। वह मानो यह महसूस करता था कि उसे इन तीनो मे से किसी एक बहन को प्यार करना चाहिये, लेकिन किससे, इतना समझ नही पा रहा था। नताली भी ज्योही ऊचे समाज मे लोगो के सामने आई, त्योही कूटनीतिज्ञ ल्वोव के साथ उसकी शादी हो गयी। लेविन ने जब विश्वविद्यालय की पढाई समाप्त की, तो कीटी बालिका ही थी। नौजवान श्चेर्बात्स्की जहाज़ी बेड़े मे चला गया, बाल्टिक सागर मे डूब गया और ओब्लोन्स्की के साथ लेविन की दोस्ती के बावजूद श्चेर्बात्स्की परिवार मे उसका आना-जाना कम हो गया। लेकिन इस साल के जाड़े के आरम्भ मे लेविन जब एक साल गाव मे बिताकर मास्को आया और श्चेर्बात्स्की परिवार मे गया, तो यह बात उसकी समझ मे आ गयी कि तीनो बहनो मे से किसके साथ उसके भाग्य मे प्यार करना बदा था।

ऐसा प्रतीत हो सकता है कि बत्तीस साल के, अच्छे घराने के और धनी लेविन के लिये प्रिसेस श्चेर्बात्स्काया के सामने अपने साथ विवाह करने के प्रस्ताव से और अधिक आसान बात क्या हो सकती है। सम्भवतः उसे तत्काल अच्छा वर-पक्ष मान लिया जायेगा। किन्तु लेविन कीटी को प्यार करता था और इसलिये उसे लगता था कि वह हर दृष्टि से इतनी पूर्ण है, धरती की हर चीज से इतनी ऊपर है और वह खुद इतना तुच्छ तथा सामान्य है कि अन्य लोग और स्वय कीटी भी उसे अपने योग्य मान ले, इसकी कल्पना तक नही की जा सकती।

स्वप्न की भाति मास्को मे दो महीने बिताकर और लगभग हर दिन ऊचे समाज मे कीटी से मिलकर, जहा वह केवल उसी से मिलने के उद्देश्य से जाता था, लेविन ने अचानक यह फैसला कर लिया कि ऐसा होना असम्भव है और गाव चला गया।

कीटी के साथ उसके विवाह के असम्भव होने का लेविन का विश्वास इस बात पर आधारित था कि उसके रिश्तेदारो की नज़रो मे वह

बहुत ही प्यारी कीटी के लिये बढ़िया और उपयुक्त वर नहीं है और खुद कीटी उससे प्यार कर नही सकती। रिश्तेदारों की नजर में वह कोई ढंग का और निश्चित काम नहीं कर रहा था और ऊंचे समाज मे कोई स्थान भी नही रखता था, जबकि बत्तीस साल की उम्रवाले उसके साथियो मे से इस वक्त कोई कर्नल और जार का एड्-डी-कैम्प, कोई प्रोफेसर, कोई बैंक या रेलवे कम्पनी का डायरेक्टर या ओब्लोन्स्की की तरह किसी सरकारी दफ्तर का अध्यक्ष था। लेकिन वह खुद (वह अच्छी तरह से जानता था कि दूसरों को कैसा प्रतीत होना होगा) जमीदार था, जो गउए पालता था, कुनालो का शिकार करता था, खेतीबारी से सम्बन्धित इमारते बनवाने के काम मे लगा था। दूसरे शब्दो मे किसी काम-काज का आदमी नही था और वही कुछ करता था, जो ऊंचे समाज की दृष्टि मे, किसी भी चीज के योग्य न होनेवाले लोग करते हैं।

ऐसी प्यारी और रहस्यमयी कीटी उस जैसे बदसूरत आदमी को, जैसा कि वह अपने को मानता था, और मुख्यत तो ऐसे साधारण तथा किसी भी तरह से कोई विशेष महत्व न रखनेवाले आदमी को खुद तो प्यार कर नही सकती थी। इसके अलावा कीटी के प्रति उसका पहले का रवैया, जो उसके भाई के साथ दोस्ती के परिणामस्वरूप वयस्क का बच्चे के प्रति रवैया था, उसे प्यार के रास्ते मे नयी बाधा प्रतीत हुआ। उसका ख्याल था कि उस जैसे असुन्दर और भले आदमी को दोस्त की तरह तो प्यार किया जा सकता था, लेकिन जैसे वह कीटी को प्यार करता था, वैसा ही प्यार पाने के लिये आदमी को बहुत ही खूबसूरत, और मुख्यत तो कोई खास हस्ती होना चाहिये।

उसने यह सुना था कि औरते अक्सर असुन्दर और सीधे-सादे लोगो को प्यार करती हैं, लेकिन वह इस पर यकीन नही करता था। कारण कि वह अपने ही मापदण्ड से इसका निर्णय करता था। वह खुद भी तो सिर्फ सुन्दर, रहस्यमयी और कोई खास बात रखनेवाली औरतो का ही प्यार कर सकता था।

लेकिन दो महीने तक गाव मे अकेले रहने के बाद उसे यह विश्वास हो गया कि यह वैसा ही प्यार नहीं है, जैसा उसने चढ़ती जवानी के दिनो मे अनुभव किया था, कि यह भावना उसे पल भर को चैन नही

लेने देती, कि वह इस प्रश्न को हल किये बिना जिन्दा नही रह सकता कि कीटी उसकी बीवी बनेगी या नही, कि उसकी हताशा उसकी कल्पना का परिणाम है, कि उसे इन्कार कर दिया जायेगा, उसके पास इसका कोई प्रमाण नही है। इसलिये अब वह विवाह का प्रस्ताव करने का पक्का इरादा बनाकर मास्को आया था और अगर उसका प्रस्ताव मान लिया गया, तो वह शादी कर लेगा। या फिर वह यह सोच नही पाता था कि अगर उसे इन्कार कर दिया गया, तो उसके साथ क्या बीतेगी।

(७)

सुबह की गाड़ी से मास्को पहुचकर लेविन अपने बडे भाई कोज्निशेव के यहां ठहरा। इन दोनो की मां एक, पर पिता अलग-अलग थे। कपड़े बदलकर वह इस इरादे से भाई के कमरे मे गया कि उसे अपने आने का कारण बताये और उसकी सलाह ले। लेकिन भाई अकेला नही था। उसके पास दर्शनशास्त्र का एक प्रसिद्ध प्रोफेसर बैठा था। प्रोफेसर विशेष रूप से इसलिये खार्कोव से आया था कि उस गलतफहमी को दूर कर सके, जो दर्शन-सम्बन्धी एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न पर उनके बीच पैदा हो गयी थी। प्रोफेसर भौतिकवादियो के विरुद्ध पत्र-पत्रिकाओ मे बहुत ज़ोरदार बहस चला रहा था और सेर्गेई कोज्निशेव इस वाद-विवाद मे बडी दिलचस्पी ले रहा था। प्रोफेसर का अन्तिम लेख पढकर उसने एक ख़त मे अपनी आपत्तिया लिख भेजी। कोज्निशेव ने भौतिकवादियो को बहुत बडी रियायते देने के लिये प्रोफेसर की भर्त्सना की थी। इसलिये प्रोफेसर मामले पर विचार-विमर्श करने के लिए तुरत यहा आ पहुचा था। बातचीत उस समय के प्रचलित प्रश्न पर हो रही थी कि मानव की मनोवैज्ञानिक और शारीरिक गतिविधियो के बीच कोई सीमा है और वह सीमा कहा है।

कोज्निशेव ने अपनी सामान्य, उत्साहहीन और स्नेही मुस्कान के साथ भाई का स्वागत किया और प्रोफेसर से [illegible] बातचीत जारी रखी।

नाटे, कम चौडे माथे, पीले [illegible] और [illegible] प्रोफेसर ने

अभिवादन का उत्तर देने के लिये क्षणभर को अपने विषय की चर्चा बन्द की और फिर लेविन की तरफ कोई ध्यान दिये बिना उसे जारी रखा। लेविन बैठकर प्रोफ़ेसर के जाने का इन्तज़ार करने लगा, लेकिन जल्द ही खुद उसे भी बातचीत के विषय में दिलचस्पी महसूस होने लगी।

लेविन ने पत्र-पत्रिकाओं में वे लेख देखे थे, जिनकी चर्चा चल रही थी। उसने उनमें दिलचस्पी ली थी और वह उन्हें प्रकृतिविज्ञान के, जिसके मूलभूत नियमों से वह विश्वविद्यालय में परिचित हो चुका था, विकास के रूप में पढ़ता था। लेकिन उसने पशु के रूप में मानव के उद्भव, उसकी सहज प्रतिक्रिया, जीवविज्ञान और समाजविज्ञान से निकाले गये निष्कर्षों को खुद अपने लिये जीवन और मृत्यु के महत्व से सम्बन्धित उन प्रश्नों के साथ कभी नहीं जोड़ा था, जो अधिकाधिक बार उसके दिमाग़ में आने लगे थे।

प्रोफ़ेसर के साथ अपने भाई की बातचीत सुनते हुए उसने इस चीज़ की ओर ध्यान दिया कि वे वैज्ञानिक प्रश्नों को निजी प्रश्नों से जोड़ देते हैं। कई बार वे इन प्रश्नों के लगभग निकट तक पहुंचे, लेकिन हर बार वे उस चीज़ के निकट पहुंचते थे, जो उसे मुख्यतम प्रतीत होती थी, अक्सर उससे दूर हट जाते और फिर से सूक्ष्म भेदों, शर्तों, उद्धरणों, संकेतों, अधिकारी नामों के उल्लेखों के क्षेत्र में गहरे उतर जाते और वह मुश्किल से समझ पाता कि वे किस बात की चर्चा कर रहे हैं।

"मैं केवल यही मान सकता," कोज्निशेव ने अभिव्यक्ति की अपनी सामान्य स्पष्टता और सुस्पष्टता तथा उच्चारण की सुन्दरता के साथ कहा। "मैं किसी हालत में भी कैस के साथ सहमत नहीं हो सकता कि बाहरी जगत के बारे में मेरी सारी धारणा प्रभावों का फल होती है। मूल अस्तित्व की मूल धारणा इंद्रियानुभव से प्राप्त नहीं होती, क्योंकि इस धारणा को ग्रहण करने के लिए कोई विशेष इंद्रिय नहीं है।"

"यह ठीक है, लेकिन वूर्स्ट, क्नाउस्ट और प्रीपासोव आपको उत्तर देंगे कि अस्तित्व की आपकी चेतना सभी इंद्रियानुभवों के संयोजन से उत्पन्न होती है, कि अस्तित्व की यह चेतना इंद्रियानुभवों का परिणाम है। वूर्स्ट तो साफ़ ही कहते हैं कि अगर इंद्रियानुभव नहीं है, तो अस्तित्व की धारणा भी नहीं हो सकती।"

"मैं इसके उलट कहूंगा," कोज्निशेव ने कहना शुरू किया

लेकिन यही पर लेविन को फिर से ऐसा प्रतीत हुआ कि वे मुख्य बात तक आकर फिर उससे दूर हट रहे हैं और इसलिये उसने प्रोफेसर से यह सवाल पूछने का फैसला किया।

"तो ऐसा मानना चाहिये कि अगर मेरी ज्ञानेन्द्रिया नष्ट हो गयी है, अगर मेरा शरीर निर्जीव हो गया है, तो किसी तरह का कोई अस्तित्व सम्भव नही हो सकता?"

प्रोफेसर ने हताशा से, मानो इस बाधा के कारण बौद्धिक पीडा नुभव करते हुए इस अजीब प्रश्नकर्ता की तरफ देखा, जो दर्शनशास्त्री : बजाय बजरे खीचनेवाला अधिक प्रतीत होता था। इसके बाद प्रोफेसर : कोज्निशेव की ओर नजर घुमाई मानो पूछ रहा हो – क्या जवाब : कोई ऐसे सवाल का? लेकिन कोज्निशेव, जो प्रोफेसर की तरह हुत जोर देकर तथा एकपक्षी बात नही कर रहा था और जिसके दिमाग मे प्रोफेसर को जवाब देने तथा साथ ही उस सीधे-सादे और स्वाभाविक दृष्टिकोण को समझने के लिये, जिससे यह प्रश्न किया गया था, स्थान रह गया था, मुस्कराया और बोला –

"इस सवाल को हल करने का अभी हमे हक नही है "

"हमारे पास आवश्यक तथ्य नही हैं," प्रोफेसर ने पुष्टि की और अपनी दलीलो की चर्चा जारी रखी। "नही," उसने कहा, "मैं इस बात की ओर सकेत करता हू कि अगर, जैसा कि प्रीपासोव साफ कहते है, अनुभूति ही हमारे इद्रियानुभव का आधार है, तो हमें इन दोनो धारणाओ के बीच बहुत ही स्पष्ट भेद करना चाहिये।"

लेविन अब और अधिक नही सुन रहा था तथा प्रोफेसर के जाने की राह देख रहा था।

(८)

प्रोफेसर के चले जाने पर कोज्निशेव ने भाई को सम्बोधित करते हुए कहा

"मुझे बहुत खुशी है कि तुम आये हो। क्या बहुत दिनों के लिये? खेतीबारी का क्या हाल है?"

लेविन जानता था कि खेतीबारी में बड़े भाई की बहुत कम दिल-

समझी है और उसने सिर्फ उसका लिहाज करते हुए ही उससे इसके बारे मे पूछा है। इसलिये उसने केवल गेहूं की बिक्री और पैसों की ही चर्चा की।

लेविन बड़े भाई से अपने शादी करने के इरादे की चर्चा करना और उसकी सलाह भी लेना चाहता था। उसने तो इसका पक्का फैसला भी कर लिया था। लेकिन जब वह भाई से मिला, प्रोफेसर के साथ उसकी बातचीत सुनी जब उसे अनजाने ही उस सरपरस्ती के अन्दाज मे बोलते सुना जिससे उसने खेतीबारी के बारे मे पूछताछ की (मां की जागीर साझी थी और लेविन दोनो भागो की देख-भाल करता था) तो लेविन ने महसूस किया कि किसी कारणवश वह भाई के साथ अपने शादी करने के इरादे की चर्चा नही कर सकता। उसे अनुभव हुआ कि उसका भाई इस मामले को वैसे ही नही देखता है, जैसे कि वह चाहता था।

"तो तुम्हारे यहां जेम्स्त्वो का क्या हाल है?" कोज्निशेव ने पूछा। वह जेम्स्त्वो मे बड़ी रुचि लेता था और उसे बड़ा महत्त्व देता था।

"मुझे कुछ मालूम नही"

"यह कैसे हो सकता है? तुम तो उसके संचालन-मण्डल के सदस्य हो?"

"नहीं, मैं सदस्य नही हूं। संचालन-मण्डल से अलग हो चुका हूं," लेविन ने जवाब दिया। "मैं अब उसकी सभाओं मे नही जाता हूं।"

"अफसोस की बात है!" कोज्निशेव ने माथे पर बल डालते हुए कहा।

लेविन अपनी [illegible] देते हुए यह बताने लगा कि उसके [illegible] मे क्या [illegible] था।

[illegible] कोज्निशेव ने [illegible] बीच मे [illegible] कहा। [illegible] ही करते हैं। हो सकता है [illegible] कि हम अपनी [illegible] को [illegible] हैं। [illegible] हम इसमे अति कर रहे हैं। [illegible]

[illegible]

को दे दिये जाते, तो वे इन्हे आज़ादी मे बदल डालते। लेकिन हम इनका सिर्फ मज़ाक ही उडाते है।"

"मगर क्या किया जाये?" लेविन ने अपराधी की तरह कहा। "यह मेरा आखिरी तजरबा था। मैने जी-जान से कोशिश की, लेकिन सफल नही हो सका। इसके योग्य नही हू।"

"योग्य नही हो," कोज्निशेव ने कहा। "इस मामले को जैसे देखना चाहिये, वैसे देखते नही हो।"

"हो सकता है," लेविन ने उदासी से जवाब दिया।

"*जानते हो, भाई निकोलाई फिर यहा है।*"

निकोलाई लेविन का सगा, बडा भाई और सेर्गेई इवानोविच कोज्निशेव का एक ही मा की कोख से जन्मा भाई था। वह तबाहहाल आदमी था, जिसने सभी तरह की अटपटी और बुरी सगत मे पडकर अपनी सम्पत्ति का बहुत बडा हिस्सा उडा दिया था और भाइयो से झगडा कर चुका था।

"यह तुम क्या कह रहे हो?" लेविन घबराकर चिल्ला उठा "तुमको कैसे मालूम है?"

"प्रोकोफी ने उसे सडक पर देखा है।"

"यहा, मास्को मे? कहा है वह? तुम्हें मालूम है?" लेवि कुर्सी से ऐसे उठ खडा हुआ मानो इसी वक्त उसके पास जाना चाहता ह

"मुझे दुख है कि मैने तुमसे यह कह दिया," छोटे भाई उत्तेजना पर सिर हिलाते हुए कोज्निशेव ने कहा। मैने यह जा के लिये एक नौकर को भेजा कि वह कहा रहता है और उसकी हुडी भी भेजी, जो उसने त्रूबिन को दी थी और जिसका मैने भुग किया है। उसने मुझे जो जवाब भेजा, वह यह है।

इतना कहकर कोज्निशेव ने पेपर-वेट के नीचे से एक र निकालकर उसकी तरफ बढा दिया।

लेविन ने अजीब और अपने लिये प्यारी लिखावट मे लिखा यह रुक्का पढा

"बडी नम्रता से अनुरोध करता हू कि मुझे चैन से रहने अपने मेहरबान भाइयो से मै सिर्फ [illegible] निकोलाई लेविन।"

•

लेविन ने यह पढ़ा और सिर झुकाये तथा हाथ में रुक्का लिये कोज्निशेव के सामने खड़ा रहा।

उसकी आत्मा में इस बदकिस्मत भाई को फिलहाल भूल जाने की इच्छा और इस बात की चेतना के बीच संघर्ष हो रहा था कि ऐसा करना बुरा होगा।

"वह सम्भवतः मेरा अपमान करना चाहता है," कोज्निशेव ने अपनी बात जारी रखी। "लेकिन वह मेरा अपमान नहीं कर सकता मैं दिल से उसकी मदद करना चाहता हूं, लेकिन जानता हूं कि ऐसा नहीं किया जा सकता।"

"यह ठीक है, यह ठीक है," लेविन ने दोहराया। "उसके प्रति तुम्हारे रवैये को मैं समझता हूं और उसकी प्रशंसा करता हूं, लेकिन मैं उससे मिलने जाऊंगा।"

"अगर तुम चाहते हो, तो जा सकते हो, मगर मैं ऐसी सलाह नहीं दूंगा," कोज्निशेव ने कहा। "मेरा मतलब यह है कि अपने बारे में तो मुझे कोई डर नहीं है। वह मेरा और तुम्हारा झगड़ा नहीं करवा सकता। पर तुम्हारे लिये ही मैं यह कहता हूं कि तुम उसके पास न जाओ। उसकी मदद करना मुमकिन नहीं। फिर भी जैसा तुम ठीक समझो, वैसा करो।"

"शायद मदद नहीं की जा सकती, लेकिन मैं खास तौर पर इस वक्त यह महसूस करता हूं—हां, यह दूसरी बात है—ऐसा महसूस करता हूं कि मुझे चैन नहीं मिल सकेगा।"

"यह मेरी समझ से बाहर की बात है," कोज्निशेव ने कहा। "इतना मैं जरूर समझता हूं," उसने इतना और जोड़ दिया, "यह नम्रता का पाठ है। भाई निकोलाई जैसा अब बन गया है, उसके बाद से मैं वैसे ही उस चीज को दूसरी, अधिक कृपालु नजर से देखने लग गया हूं, जिसे कमीनापन कहते हैं... तुम्हें मालूम है कि उसने क्या किया है..."

"ओह, यह बड़ी भयानक बात है, बड़ी भयानक बात है!" लेविन ने कहा।

कोज्निशेव के नौकर से भाई का पता लेकर लेविन उसी वक्त उससे मिलने जाने को तैयार हो गया। किन्तु कुछ विचार करने के बाद

उसने इसे शाम तक स्थगित कर दिया। मुख्यत तो उसने ऐसा किया कि उसका मानसिक चैन बना रहे। उस मामले करना जरूरी था, जिसके लिये वह मास्को आया था। लेवि भाई के यहा से ओब्लोन्स्की के दफ्तर में गया और श्चेर्बात्स्की के बारे में जानकारी पाकर वहा पहुचा, जहा, जैसा कि उसे गया था, कीटी से उसकी मुलाकात हो सकती थी।

(६)

दिन के चार बजे लेविन धड़कते दिल से चिड़ियाघर के सामने बग्घी से उतरा और सकरे रास्ते से बर्फ ढके टीलो और रिक की तरफ चल दिया। उसे यकीन था कि कीटी उसे जायेगी, क्योकि दरवाजे के पास उसने श्चेर्बात्स्की परिवार देख ली थी।

पालेवाला ठडा और उजला दिन था। दरवाजे के पास स्लेजो, कोचवानो और जेनदार्मो की कतारे थी। प्रवेश-द्वार और नक्काशीदार सजावट वाले छोटे-छोटे रूसी घरो के बी बुहारे रास्तो पर धूप मे चमकते टोपोवाले साफ-सुथरे लोगो थी। बाग के पुराने, घुघराले भोज वृक्ष जो बर्फ के भार सारी टहनिया झुकाये हुए थे, ऐसे प्रतीत होते थे मानो वे नये परिधान पहनकर सज-धज गये हो।

लेविन सकरे रास्ते से सकेटिग-रिक की तरफ जा रहा अपने आपसे कह रहा था "उत्तेजित नही होना चाहिये, श चाहिये। क्या परेशानी है तुझे, क्या हुआ है तुझे? शान्त रह लेविन अपने दिल को समझा रहा था। जितना अधिक वह शान्त करने की कोशिश करता था, उसके लिये सास लेना अधिक मुश्किल होता जा रहा था। रास्ते में एक परिचित और उसने लेविन को पुकारा भी, किन्तु लेविन उसे पहचान पाया। वह उन टीलों के पास पहुचा, जिन पर नीचे आती जाती स्लेजो की जजीरे खनखना रही थी, नीचे फिसलती शोर और ठहाके गूज रहे थे। कुछ कदम और चलने पर उ

रिंग दिखाई दिया और स्केटिंग करनेवालों में उसने फौरन 'उसे' पहचान लिया।

लेविन के हृदय को जिस भय और खुशी ने जकड़ लिया था, उसी से उसने यह जान लिया कि कीटी यहां है। वह स्केटिंग-रिंक के सामनेवाले सिरे पर खड़ी हुई एक महिला से बातचीत कर रही थी। कहा जा सकता है कि न तो उसकी पोशाक और न ही मुद्रा में कोई विशेष बात थी, फिर भी लेविन के लिये इस भीड़ में उसे जान लेना उतना ही आसान था जितना बिच्छूबूटी की भाड़ियों में गुलाब को। वह हर चीज को आलोकित कर रही थी। वह ऐसी मुस्कान थी, जो अपने इर्द-गिर्द की हर चीज को लौ प्रदान कर रही थी। "क्या यह सम्भव है कि मैं वहां, बर्फ पर उसके निकट जा सकता हूं?" वह सोच रहा था। कीटी जहां खड़ी थी, लेविन को वह जगह ऐसी पावन लगी, जहां कदम नहीं रखा जा सकता। ऐसा भी क्षण आया, जब वह वहां से लगभग चला ही गया होता। इतनी घबराहट अनुभव हुई उसे। उसे अपने आपको वश में करना और यह समझाना पड़ा कि सभी तरह के लोग उसके पास आ-जा रहे हैं, कि वह खुद भी स्केटिंग करने के लिये वहां जा सकता है। लेविन नीचे उतर आया था, देर तक उसकी ओर देखने से ऐसे ही नजर बचा रहा था, जैसे कोई सूरज से नजर बचाता है, लेकिन वह उसकी ओर देखे बिना ही उसे सूरज की तरह देख रहा था।

सप्ताह के इस दिन और इस समय स्केटिंग-रिंक पर एक ही तरह के तथा आपसी जान-पहचान वाले लोग जमा होते थे। यहां स्केटिंग के फन के माहिर भी थे, जो अपनी कला की छटा दिखा रहे थे, कुर्सियों का सहारा लेकर अटपटी और डरी-सहमी चेष्टायें करते हुए नौसिखुआ भी थे, लड़के और बूढ़े लोग भी थे, जो स्वास्थ्य के लिये स्केटिंग करते थे। लेविन को ये सभी बड़े भाग्यशाली प्रतीत हुए, क्योंकि वे वहां, उसके करीब थे। स्केटिंग करनेवाले सभी लोग मानो किसी भी तरह की दिलचस्पी के बिना उसके बराबर होते थे, उससे आगे निकलते थे, यहां तक कि उससे बात भी करते थे और उसकी तरफ कोई ध्यान दिये बिना ही बढ़िया बर्फ और अच्छे मौसम का लाभ उठाते हुए मौज मना रहे थे।

कीटी का चचेरा भाई निकोलाई श्चेर्बात्स्की ऊची जाकेट और तग पतलून पहने तथा टागो पर स्केट्स चढाये बेच पर बैठा था। लेविन को देखकर वह चिल्लाया

"अरे, रूस के सबसे बढिया स्केटर! कब आये? बर्फ बहुत बढिया है, झटपट स्केट्स पहन लो।"

"मेरे पास तो स्केट्स है ही नही," लेविन ने कीटी की उपस्थिति मे ऐसी दिलेरी और बेतकल्लुफी से हैरान होते तथा क्षणभर को भी उसे नजर से ओझल न करते, बेशक उसकी तरफ न देखते हुए, कहा। उसे लग रहा था कि सूरज उसके निकट आ रहा है। कीटी एक कोने मे थी और ऊचे बूटो मे अपने छोटे-छोटे पैरो से गति को धीमी करती, सम्भवत घबराती हुई उसकी तरफ स्केटिग करती आ रही थी। रूसी पोशाक पहने, बहुत जोर से बाहे हिलाता और झुकता हुआ एक लडका उससे आगे निकल गया। कीटी तनिक डगमगाती हुई स्केटिग कर रही थी। उसने डोरी के साथ लटकते फर के छोटे-से मफ से अपने हाथ बाहर निकालकर ऐसे तैयार कर रखे थे कि गिरने पर उनका सहारा ले सके और लेविन की तरफ देखते हुए, जिसे उसने पहचान लिया था, उसका अभिवादन करने के लिये और अपने भय पर मुसकराई। मोड खत्म हो जाने पर उसने पाव की लोच के साथ अपने को ठेला और स्केटिग करती हुई सीधी अपने चचेरे भाई श्चेर्बात्स्की के पास आयी तथा उसकी आस्तीन थामकर उसने मुस्कराते हुए लेविन को सिर झुकाया। लेविन उसकी जैसी कल्पना करता था, वह उससे कही अधिक सुन्दर थी।

लेविन जब कीटी के बारे मे सोचता था, तो वह सारी की सारी मानो जीती-जागती उसकी मन की आखो के सामने सजीव हो उठती थी। बाल-सुलभ स्पष्टता और दयालुता के भाव के साथ उसका चेहरा और तरुणी के सुघड कधो पर टिका हुआ सुनहरे बालो वाला छोटा-सा सिर — इस लालित्य को तो वह विशेष रूप से देख पाता था। उसके नाजुक शरीर की सुन्दरता और उसके साथ उसके चेहरे का बाल-सुलभ भाव उसे विशेष आकर्षण प्रदान करते थे जो उसके हृदय पर अकित होकर रह गया था। लेकिन जो चीज उसे हमेशा अप्रत्याशित ही चकित करती, वह थी उसकी विनम्र, शान्त और निश्छल आखो का भाव

तथा खास तौर पर वह मुस्कान, जो लेविन को किसी जादुई दुनिया में ले जाती थी, जहां वह अपने को अत्यधिक स्नेहशील और नर्मदिल अनुभव करता था। छुटपन में ही उसे कभी-कभार ऐसी अनुभूति होने की याद थी।

"बहुत समय से मास्को में हैं क्या आप?" लेविन से हाथ मिलाते हुए कीटी ने पूछा। "धन्यवाद," उसने इतना और जोड़ दिया, जब लेविन ने मफ़ से गिर जानेवाला उसका रूमाल उठाकर उसे दिया।

"मैं? नहीं, बहुत समय से नहीं, मैं कल ... मेरा मतलब आज... आया हूं," लेविन ने अचानक घबराहट के कारण उसका प्रश्न न समझते हुए उत्तर दिया। "मैं आपके यहां जाना चाहता था," उसने कहा और इसी वक़्त यह याद करके कि किस इरादे से वह कीटी को ढूंढ रहा था, परेशान हो उठा और उसके चेहरे पर सुर्खी दौड़ गयी। "मुझे मालूम नहीं था कि आप स्केटिंग करती हैं और सो भी इतनी अच्छी तरह।"

कीटी ने बहुत ध्यान से लेविन की तरफ़ देखा मानो उसकी परेशानी का कारण समझना चाहती हो।

"आपकी प्रशंसा सचमुच बहुत महत्त्व रखती है। यहां लोगों से ऐसा सुनने को मिलता है कि स्केटिंग में आपका जवाब ही नहीं है," कीटी ने मफ़ पर गिर पड़े पाले को काला दस्ताना पहने छोटे से हाथ से झाड़ते हुए कहा।

"हां, मैं कभी तो बड़े जोश के साथ स्केटिंग करता था। मैं इसमें पूर्णता पाना चाहता था।"

"लगता है कि आप सभी कुछ जोश के साथ करते हैं," कीटी ने मुस्कराते हुए कहा। "मैं यह देखने को बहुत उत्सुक हूं कि आप कैसे स्केटिंग करते हैं। स्केट्स पहन लीजिये और आइये हम साथ-साथ स्केटिंग करें।"

"साथ-साथ स्केटिंग करें। क्या यह सम्भव है?" कीटी की ओर देखते हुए लेविन ने सोचा।

"अभी पहन आता हूं," उसने कहा।

और वह स्केट्स पहनने चला गया।

"बहुत दिनों से आप नहीं आये, हुजूर," पांव थामे और एड़ी

का पेच कसते हुए स्केट्स पहनानेवाले ने कहा। "आपके बाद तो बड़े लोगों में से कोई भी तो ऐसा नहीं आया, जिसे आप जैसा कमाल हासिल हो। ऐसे ठीक रहेगा न?" उसने पेटी कसते हुए पूछा।

"ठीक है, ठीक है, कृपया जल्दी कीजिये," लेविन ने चेहरे पर बरबस झलक उठने की बेचैन सुखद मुस्कान पर बड़ी मुश्किल से काबू पाते हुए कहा। "हां, यह है ज़िंदगी," वह सोच रहा था, "यह है खुशकिस्मती! साथ-साथ, यही कहा है उसने, आइये साथ-साथ स्केटिंग करें। तो क्या अब उससे अपने दिल की बात कह दूं? लेकिन मैं इसी कारण यह कहते हुए डरता हूं कि इस वक्त मैं सुखी हूं, बेशक आशा के आधार पर ही सुखी हूं मगर बाद में? फिर भी कहना तो चाहिये। कहना तो चाहिये ही! बस, काफ़ी हो चुकी यह भीरुता!"

लेविन स्केट्स पहनकर अपने पैरों पर खड़ा हुआ, उसने ओवरकोट उतारा और घर के करीब वाली खुरदरी बर्फ पर भागने के बाद जमी हुई चिकनी बर्फ पर पहुंच गया और ऐसे सहजता से स्केटिंग करने लगा मानो इच्छा शक्ति से ही अपनी गति को घटा, बढ़ा और निर्देशित कर रहा हो। वह घबराता हुआ सा कीटी के पास पहुंचा, लेकिन उसकी मुस्कान ने उसे फिर शान्त कर दिया।

कीटी ने उसे अपना हाथ थमा दिया और वे रफ्तार बढ़ाते हुए साथ-साथ चल दिये। स्केटिंग की रफ्तार जितनी बढ़ती जाती थी, कीटी उतने ही अधिक ज़ोर से उसके हाथ को थामती जाती थी।

"आपके साथ मैं कहीं अधिक जल्दी स्केटिंग करना सीख जाती। न जाने क्यों, मैं आप पर भरोसा करती हूं," कीटी ने लेविन से कहा।

"और जब आप मेरा सहारा लेती हैं, तो मैं अपने पर भरोसा करने लगता हूं," लेविन ने कहा, लेकिन उसी क्षण अपने ही शब्दों से भयभीत उठा और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी। और सचमुच जैसे ही उसने ये शब्द कहे कि [illegible] मानो सू[illegible]बादलों की ओट में हो गया हो, कीटी के [illegible] पर से मैत्री-भाव [illegible] हो गया। लेविन उसके चेहरे के [illegible] परिचित [illegible]

हुई सिसकियां, उसकी अजीब-अजीब बातों की चर्चा करने के बाद कीटी ने लेविन से उसके जीवन के बारे में पूछ-ताछ की।

"क्या जाड़े में देहात में आपका मन उदास नहीं होता?" कीटी ने पूछा।

"नहीं, उदास नहीं होता। मैं बहुत व्यस्त रहता हूं," उसने यह महसूस करते हुए कि वह उसे अपने इस शान्त अन्दाज़ के अधीन कर रही है, जवाब दिया। वह जानता था कि इस अन्दाज़ के प्रभाव से मुक्त नहीं हो पायेगा, जैसा कि जाड़े के आरम्भ में हुआ था।

"बहुत दिनों के लिये आये हैं क्या आप?" कीटी ने उससे पूछा।

"मालूम नहीं," उसने ये सोचे बिना ही कि क्या कह रहा है जवाब दिया। उसके दिमाग में यह ख्याल आया कि अगर वह उसके इस मैत्रीपूर्ण शान्त अन्दाज़ के प्रभाव में आ गया तो कुछ भी तय किये बिना फिर वैसे ही लौटा जायेगा। इसलिये उसने जूझने का निर्णय कर लिया।

"जानते कैसे नहीं?"

"नहीं जानता। यह आप पर निर्भर करता है," उसने कहा और उसी क्षण अपने इन शब्दों से भयभीत हो उठा।

कीटी ने उसके शब्द नहीं सुने या उन्हें सुनना नहीं चाहा, लेकिन उसने मानो ठोकर-सी खाई और दो बार बर्फ पर पांव मारकर जल्दी-जल्दी उससे दूर हट गयी। वह स्केटिंग करती हुई m-lle Linon के पास गयी, उससे कुछ कहा और उस घर की तरफ चली गयी, जहां महिलायें स्केट्स उतारती थीं।

"हे भगवान, यह मैंने क्या कर डाला! हे भगवान! मेरी मदद करो, मुझे राह दिखाओ," लेविन ने भगवान को याद किया और साथ ही जोरदार गतिविधि की आवश्यकता अनुभव करते हुए वह तेज़ी से दौड़ने लगा और उसने छोटे-बड़े कई चक्कर लगाये।

इसी समय नये स्केटरों में सबसे श्रेष्ठ एक नौजवान स्केट्स पहने और मुंह में सिगरेट दबाये कॉफी के कमरे से बाहर निकला और दौड़ लगाकर पैड़ियों पर स्केट्स से ज़ोर की आवाज़ पैदा करता और उछलता हुआ नीचे की तरफ चल दिया। वह तो जैसे नीचे की ओर उड़ा जा

रहा था और हाथ की ढीली-ढाली स्थिति को बदले बिना ही बर्फ़ प पहुंच कर स्केटिंग करने लगा।

"अहा, यह तो नई चीज है!" लेविन ने कहा और इस नयं चीज को इसी वक्त खुद करने के लिये ऊपर भाग गया।

"कहीं गर्दन नहीं तोड लीजियेगा, इसके लिये अभ्यास जरूरं है!" निकोलाई श्चेर्बात्स्की ने पुकारकर कहा।

लेविन पैडियों पर चढ़ा, जितना सम्भव हुआ ऊपर से दौडत हुआ नीचे आया और इस अनभ्यस्त गतिविधि में हाथों से अपना सन्तुलन बनाये रहा। आखिरी पैडी पर वह फिसला, उसने हाथ से बर्फ़ को तनिक छुआ, जोर लगाकर सम्भला और हंसता हुआ आगे स्केटिंग करता चला गया।

"कितना भला, कैसा प्यारा आदमी है," कीटी ने इसी वक्त m-lle Linon के साथ घर से बाहर निकलते और प्यारे भाई की तरह हल्की, स्नेहपूर्ण मुस्कान के साथ उसकी तरफ़ देखते हुए मन में सोचा। 'क्या सचमुच मैं अपराधी हूं, क्या सचमुच मैंने कोई बुरी बात की है? लोग कहते हैं – यह चपलता है। मैं जानती हूं कि मैं उसी को प्यार नहीं करती हूं। लेकिन उसके साथ होने पर मुझे खुशी हासिल होती है और वह इतना भला है। लेकिन उसने यह क्यों कहा?..' वह सोच रही थी।

कीटी और उसकी मा को जाते देखकर, जो पैडियों पर बेटी से मिल गयी थी, तेज स्केटिंग के कारण लाल हुआ लेविन रुका और क्षणभर को कुछ सोचता रहा। इसके बाद उसने स्केट्स उतारे और दरवाजे पर मा-बेटी के पास पहुंच गया।

"आपको देखकर बहुत खुशी हुई," मा ने कहा। "हमेशा की तरह हम बृहस्पतिवार को मेहमानों का स्वागत करते हैं।"

"इसका मतलब है कि आज?"

"आपके आने से बहुत खुशी होगी," बूढ़ी प्रिंसेस ने रुखाई से कहा।

कीटी को मा का यह स्वागत अखरा और वह इस बुरे प्रभाव को दूर करने की अपनी इच्छा पर काबू न पा सकी। वह मुड़ी और मुस्कराकर कहने

पाच मिनट बाद मुली सीपियो वाले ओयेस्टरो की तश्तरी और उग-
लियो के बीच बोतल लिये हुए आ गया।

ओब्लोन्स्की ने कलफ लगे नेप्किन को मोडा उसे अपनी जाकेट के नीचे खोसा और इत्मीनान से हाथ टिकाकर ओयेस्टर खाने लगा।

"सचमुच बुरे नही है," चादी के काटे से सीपियो मे से लसलसे ओयेस्टर निकालते और एक के बाद एक को निगलते हुए उसने कहा। "बुरे नही है," अपनी नम और चमकती आखो से कभी लेविन तो कभी तातार बैरे की तरफ देखते हुए उसने दोहराया।

लेविन ओयेस्टर खा रहा था, यद्यपि पनीर के साथ रोटी उसे अधिक अच्छी लगती। लेकिन वह मुग्ध होकर ओब्लोन्स्की की तरफ देख रहा था। यहा तक कि तातार बैरे ने भी बोतल का कार्क खोलकर चौडे मुहवाले पतले जामो मे शराब ढालते हुए खुशी की स्पष्ट मुस्कान के साथ, अपनी सफेद टाई ठीक करके ओब्लोन्स्की को गौर से देखा।

"तुम्हे ओयेस्टर बहुत पसन्द नही क्या?" ओब्लोन्स्की ने अपना जाम पीते हुए कहा। "या तुम किसी चिन्ता मे डूबे हुए हो? क्यो?"

ओब्लोन्स्की चाहता था कि लेविन रग मे आये। लेविन रग मे न हो, ऐसा नही था, लेकिन वह अपने को कुछ घुटा-घुटा-सा महसूस कर रहा था। उसकी आत्मा मे जो कुछ था, उसके कारण उसे इस रेस्त्रा के कक्षो के बीच, जहा महिलाओ के साथ बैठे लोग खा-पी रहे थे, लोगो की हलचल और उनका आना-जाना, कासे की सजावटी चीजो – लैम्पो, दर्पणो और तातार बैरो की उपस्थिति – यह सब कुछ बेहूदा लग रहा था। उसकी आत्मा जिस प्यार से सराबोर थी, उसे डर था कि कही उस पर कोई धब्बा न लग जाये।

"मैं? हा, मैं चिन्ता मे डूबा हुआ हू। लेकिन इसके अलावा मुझे इन सब चीजो से परेशानी होती है," उसने कहा। "तुम तो कल्पना भी नही कर सकते कि मुझ, देहात के रहनेवाले आदमी के लिये, यह सब कितना बेहूदा लगता है, महाशय के नाखूनो की तरह, जिसे मैंने तुम्हारे यहा

"हा, मैंने ध्यान दिया था के नाखूनो मे
तुम बहुत ते हुए कहा।
"यह दिया। "तुम

मेरे भीतर घुसने, देहात में रहनेवाले एक आदमी के दृष्टिकोण से इसे देखने की कोशिश करो। हम गांव में अपने हाथों को ऐसे रखने की कोशिश करते हैं कि उनसे काम करने में आसानी रहे। इसके लिये नाखून काटते और कभी-कभी आस्तीनें भी ऊपर चढ़ा लेते हैं। और यहां लोग जान-बूझकर अपने नाखूनों को जिस हद तक मुमकिन हो, ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चले जाते हैं। इसके अलावा तश्तरियों जैसे बड़े-बड़े कफलिंक लगा लेते हैं, ताकि हाथों से कुछ भी न किया जा सके।"

ओब्लोन्स्की मज़ा लेता हुआ मुस्कराया।

"यह इस बात का लक्षण है कि उसे घटिया किस्म की मेहनत क की जरूरत नहीं है। वह दिमागी काम करता है .."

"हो सकता है। लेकिन मुझे तो फिर भी यह बड़ा बेहूदा लग है। ठीक वैसे ही, जैसे इस वक्त यह हमारा खाना खाने का ढंग। ह गांववाले जल्दी-जल्दी खाना खत्म करने की कोशिश करते हैं तां उसके बाद अपने काम में जुट सकें। मगर हम-तुम इस कोशिश में कि ज्यादा से ज्यादा देर तक हमारा खाना चलता रहे और इसलि ओयेस्टर खा रहे हैं "

"सो तो जाहिर है," ओब्लोन्स्की ने बात को आगे बढ़ाया यही तो उद्देश्य है पढ़ने-लिखने का – हर चीज से मज़ा हासिल किय जाये।"

"अगर यही उद्देश्य है, तो मैं जंगली रहना पसन्द करूंगा।

"तुम तो जंगली हो ही। तुम सभी लेविन जंगली हो।"

लेविन ने गहरी सांस ली। उसे अपने निकोलाई भाई की याद आ गयी, उसकी आत्मा ने उसे धिक्कारा और उसे दुख हुआ। उसने नाक-भौंह सिकोड़ी। लेकिन ओब्लोन्स्की ने एक ऐसे विषय की चर्चा शुरू कर दी, जिससे लेविन का ध्यान फौरन दूसरी तरफ चला गया।

"तो क्या आज रात को हमारे लोगों यानी श्चेर्बात्स्की परिवार वालों के यहां जाओगे?" उसने आंखों में अर्थपूर्ण चमक लिये, ओयेस्टरों की खुरदरी खालों सीपियों को दूर हटाने और पनीर की ओर हाथ बढ़ाते हुए पूछा।

"हां, ज़रूर जाऊंगा," लेविन ने जवाब दिया। "बेशक मुझे

मेरे भीतर घुसने, देहात में रहनेवाले एक आदमी के दृष्टिकोण से इसे देखने की कोशिश करो। हम गांव में अपने हाथों को ऐसे रखने की कोशिश करते हैं कि उनसे काम करने में आसानी रहे। इसके लिये नाखून काटते और कभी-कभी आस्तीनें भी ऊपर चढ़ा लेते हैं। और यहां लोग जान-बूझकर अपने नाखूनों को जिस हद तक मुमकिन हो, ज्यादा से ज्यादा बढ़ाते चले जाते हैं। इसके अलावा तश्तरियों जैसे बड़े-बड़े कफलिंक लगा लेते हैं, ताकि हाथों से कुछ भी न किया जा सके।"

ओब्लोन्स्की मज़ा लेता हुआ मुस्कराया।

"यह इस बात का लक्षण है कि उसे घटिया किस्म की मेहनत करने की जरूरत नहीं है। वह दिमागी काम करता है ..."

"हो सकता है। लेकिन मुझे तो फिर भी यह बड़ा बेहूदा लगता है। ठीक वैसे ही जैसे इस वक्त यह हमारा खाना खाने का ढंग। हम गांववाले जल्दी-जल्दी खाना खत्म करने की कोशिश करते हैं ताकि उसके बाद अपने काम में जुट सकें। मगर हम-तुम इस कोशिश में हैं कि ज्यादा से ज्यादा देर तक हमारा खाना चलता रहे और इसलिये [illegible] कर रहे हैं"

"सो तो जाहिर है," ओब्लोन्स्की ने बात को आगे बढ़ाया। "यही तो उद्देश्य है [illegible] का – हर चीज़ से मज़ा हासिल किया जाए।"

"अगर यही उद्देश्य है तो मैं जंगली रहना पसन्द करूंगा।"

"तुम तो जंगली हो ही। तुम सभी लेविन जंगली हो।"

लेविन ने गहरी सांस ली। उसे अपने निकोलाई भाई की याद [illegible] उसकी [illegible] ने उसे धिक्कारा और उसे दुख हुआ। उसने [illegible] और [illegible]। लेकिन ओब्लोन्स्की ने तब ऐसे विषय की चर्चा शुरू कर दी जिससे लेविन का ध्यान फौरन दूसरी तरफ चला गया।

"[illegible] हमारे साथी यानी श्चेर्बात्स्की परिवार [illegible]," उसने [illegible] में अर्थपूर्ण ढंग से [illegible], ओयेस्टरों [illegible] को दूर हटाते और पनीर की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"[illegible]" लेविन ने जवाब दिया। "बेशक मुझे

ऐसा प्रतीत हुआ कि प्रिंसेस ने मुझे मन मारकर बुलाया है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो! बिल्कुल बेतुकी बात है! यह तो उनका ऐसा अन्दाज ही है तो भाई शोरबा ले आओ! यह तो उनका grande dame* का अन्दाज है," ओब्लोन्स्की ने कहा। "मैं भी आऊंगा, लेकिन मुझे रिहर्सल के लिये काउंटेस बानिना के यहा जाना है। तुम्हारे जगली होने के बारे में भला कैसे शक हो सकता है? तुम इसकी क्या सफाई दोगे कि अचानक मास्को से गायब हो गये? श्चेर्बात्स्की परिवार वाले मुझसे लगातार तुम्हारे बारे में पूछते रहे, जैसे कि मुझे मालूम होना ही चाहिये। लेकिन मैं तुम्हारे बारे में सिर्फ इतना ही जानता हू कि तुम हमेशा वह करते हो, जो दूसरा कोई नही करता।"

"हा," लेविन ने धीरे-धीरे और बेचैन होते हुए कहा। "तुम्हारा कहना ठीक है, मैं जगली हू। लेकिन मेरा जगलीपन इसमें नही है कि मैं चला गया था, बल्कि इसमे कि मैं अब आ गया हू। अब मैं इसलिये आया हू कि "

"ओह, कितने खुशकिस्मत हो तुम!" लेविन की आखो मे झाकते हुए ओब्लोन्स्की ने उसकी बात पूरी की।

"किसलिये खुशकिस्मत हू मैं?"

"घोड़े की तेजी पहचानता हू उसके खास निशानों से, जवान प्रेमियो को पहचानता हू उनके *नयन-बाणो* से," ओब्लोन्स्की ने यह पक्ति सुना दी। "तुम्हारे लिये तो अभी सब कुछ आगे है।"

"और तुम्हारे लिये क्या सब कुछ पीछे रह गया है?"

"नही, बेशक पीछे तो नही रह गया, मगर तुम्हारे सामने भविष्य है और मेरे सामने वर्तमान और वह भी धुधला-सा।"

"क्यो क्या मामला है?"

"मामला कुछ अच्छा नही है। पर खैर, मैं अपनी चर्चा नहीं करना चाहता और इसके अलावा सब कुछ समझाया भी तो नहीं जा सकता," ओब्लोन्स्की ने कहा। "तो तुम किसलिये मास्को आए हो? अरे, यह ले जाओ!" उसने तातार बैरे को आवाज दी

---

* महत्त्वपूर्ण महिला। (फ्रासीसी)

लड़कियां दो किस्मों में बंटी हुई हैं। एक किस्म तो वह है,
"उसे" छोड़कर दुनिया की सारी लड़कियां शामिल हैं। इन
में सभी मानवीय दुर्बलतायें है और वे बहुत ही सामान्य लड़कि
दूसरी किस्म में वह अकेली ही है, उसमें किसी तरह की कोई
नहीं और वह मानव की हर चीज से ऊपर है।

"यह क्या कर रहे हो, चटनी ले लो," लेविन का हाथ
हुए, जो चटनी को परे हटा रहा था, ओब्लोन्स्की ने कहा।

लेविन ने चुपचाप चटनी ले ली, लेकिन ओब्लोन्स्की
जारी नहीं रखने दिया।

"नहीं, तुम रुको, ज़रा रुको," वह बोला। "तुम इतना
लो कि मेरे लिये यह ज़िन्दगी और मौत का सवाल है। मैंने
किसी से भी इसकी चर्चा नहीं की। और अन्य किसी के साथ
वैसे ही चर्चा कर भी नहीं सकता, जैसे तुम्हारे साथ। यों
दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं – हमारी रुचियां भिन्न है, दृष्टिको
अलग हैं, कुछ भी तो एक जैसा नहीं। लेकिन मैं जानता हू
मुझे प्यार करते और समझते हो। इसीलिये मैं तुम्हें बेहद प्या
हू। लेकिन भगवान के लिये मुझसे बिल्कुल साफ़-साफ़ बात

"मैं जैसा समझता हू, तुमसे वैसा ही कह रहा हू," ओ
ने मुस्कराते हुए कहा। "मैं तुमसे इतना और भी कहूंगा –
अद्भुत नारी है " पत्नी के साथ अपने सम्बन्धों की याद
ओब्लोन्स्की ने गहरी सांस ली और क्षण भर चुप रहने के ब
बात आगे बढ़ायी। "उसमें चीज़ों को पहले से ही देखने,
लेने का गुण है। वह लोगों को आर-पार देख लेती है। लेकि
ही नहीं, भविष्य में जो होनेवाला है, खास तौर पर शादी
मामले में, वह उसे भी पहले से ही जान जाती है। मिसाल
पर उसने भविष्यवाणी की थी कि शाखोव्स्काया की ब्रेनतेल्न
शादी होगी। कोई इसे मानने को ही तैयार नहीं था, लेकिन
हुआ। और मेरी बीवी ...

यह कहते हुए बेलोगोलोव्स्की व्यंग्य से मुस्कराया। नेदिन भी मुस्कराये बिना न रह सका।

"और मजाक को हटाओ," बेलोगोलोव्स्की कहता गया। "तुम इस बात को समझो कि प्यारी सोनेच्की जो बाद में बाल्डेनेवी मादाम और ल्युब्की बनी ने तुम पर अपना सब कुछ न्योछावर कर डाला। अब जब तुमने अपना मतलब निकाल लिया — तुम मेरी बात को समझो — तो क्या उसे उसके हाल पर छोड़ दिया जाये? मान लो कि उससे नाता तोड़ना होगा, ताकि परिवार नष्ट न हो, तो क्या उस पर तरस न खाया जाये, उसे किसी किनारे न लगाया जाये, उसके दर्द को कुछ कम न किया जाये?"

"तुम मुझे माफ करना, पर तुम्हें मालूम ही है कि मेरे लिये सभी औरतें दो किस्मों में बटी हुई हैं — सही ऐसे नहीं — शायद यह कहना अधिक सही होगा कि एक तो महिलायें हैं और दूसरी — मुझे तो पास में गिरजेवाली अच्छी महिलायें न तो कभी देखने को मिली हैं और न मिल ही सकेंगी। और ऐसी औरतें, जैसी कि वह पुराने वालों वाली रंगी-पुती फ्रांसीसी महिला, जो काउंटर पर बैठी है, मेरे लिये कुतियों जैसी हैं। सभी पतितायें ऐसी ही हैं।"

"और मरियम मगदलीनी?"*

"ओह, हटाओ! ईसा मसीह ने उसके बारे में कभी वे अच्छे शब्द न कहे होते, यदि उन्हें यह मालूम होता कि उनका इतना अधिक दुरुपयोग किया जायेगा। इंजील के केवल यही शब्द याद हैं सब को। वैसे, मैं वह नहीं कह रहा हूं, जो सोचता हूं, बल्कि जो अनुभव करता हूं। मुझे पतित नारियों से घृणा है। तुम मकड़ियों से डरते हो और मैं इन नागिनों से। सम्भवतः तुमने मकड़ियों का अध्ययन नहीं किया और तुम उनके रंग-ढंग से परिचित नहीं हो। ऐसी औरतों के बारे में मेरा यही हाल है।"

"तुम्हारे लिये ऐसे कहना बहुत आसान है — यह तो डिकेंस के उस पात्र वाली ही बात है, जो हर मुश्किल मसले को चालाकी से टाल

---

* इंजील में वर्णित एक पतिता। ईसा मसीह ने उससे घृणा नहीं की, उसे स्नेह दिया और वह कुपथ से सुपथ पर आ गयी। — अनु०

देता है। किन्तु तथ्य से इन्कार करना तो प्रश्न का उत्तर नही माना जा सकता। तुम मुझे यह बताओ कि क्या किया जाये, क्या करना चाहिये? पत्नी बुढाती जा रही है और तुम मे जिन्दगी हिलोरे ले रही है। तुम्हे पता भी नही चलता और तुम यह महसूस करने लगते हो कि अपनी प्यारी बीवी को, चाहे उसकी कितनी ही इज्जत क्यो न करते हो, प्यार नही कर सकते। इसी वक्त अचानक तुम्हारे जीवन मे प्यार सामने आ जाता है और बस, तुम कही के नही रहे, मारे गये!" ओब्लोन्स्की ने उदासी भरी हताशा के साथ कहा।

लेविन व्यग्यपूर्वक मुस्कराया।

"हा, मारे गये," ओब्लोन्स्की कहता गया। "लेकिन किया क्या जाये?"

"केक न चुराये जाये।"

ओब्लोन्स्की खिलखिलाकर हस दिया।

"ओ नैतिकता के पुजारी! लेकिन तुम बात को समझो तो। तुम्हारे सामने दो औरते हैं – एक केवल अपने अधिकारो की माग करती है और ये अधिकार हैं तुम्हारा वह प्रेम, जो तुम उसे दे नहीं सकते। लेकिन दूसरी औरत तुम्हारे लिये सब कुछ कुर्बान कर देती है और किसी चीज की माग नही करती। ऐसी हालत मे तुम क्या करोगे? क्या करना चाहिये तुम्हे? यहा बडा भयानक ड्रामा शुरू हो जाता है।"

"अगर तुम इस मामले मे मेरे दिल की बात जानना चाहते हो, तो मैं कहूगा कि इसमें किसी तरह का ड्रामा नही है। इसका कारण बताता हू। इसलिये कि प्रेम दोनो तरह के प्रेम, जैसा कि तुम्हे याद होगा, अफलातून जिनकी अपने 'सिम्पोजियम' मे चर्चा करता है, लोगो के लिए कसौटी का काम देते हैं। कुछ लोग केवल एक प्रेम को समझते हैं और दूसरे दूसरे को। और वे लोग, जो दुनियावी प्रेम को समझते हैं, वे तो बेकार ही ड्रामे की बात करते हैं। ऐसी मुहब्बत मे कोई ड्रामा-व्रामा नही हो सकता। 'मजा देने के लिये तुम्हारा बहुत-बहुत शुक्रिया' – बस, खत्म ड्रामा। भावनात्मक प्रेम के लिये इस वजह से कोई ड्रामा नही हो सकता कि ऐसे प्रेम मे सब कुछ स्पष्ट और निर्मल होता है ... क्योकि .."

इसी वक्त लेविन को अपने पापो और उस मानसिक सघर्ष की

याद आ गयी, जिसे वह अनुभव कर चुका था। उसने अचानक इतना और कह डाला

"वैसे, शायद तुम्हारी बात ही ठीक हो। बहुत सम्भव है.. किन्तु मैं नही जानता, बिल्कुल नही जानता।"

"देखा न तुम ने," ओब्लोन्स्की बोला, "तुम पूरी तरह एक ही साचे के आदमी हो। यह तुम्हारा गुण भी है और अवगुण भी खुद तुम मे दोरगापन नही है और चाहते हो कि पूरे जीवन का ऐसा ही ढग हो। मगर ऐसा तो होना नही। तुम सार्वजनिक कार्यालयो की गतिविधियो का इसलिये मुह चिढाते हो कि उनकी करनी हमेशा ध्येय के अनुरूप होनी चाहिये, किन्तु ऐसा होता नही। इसी तरह तुम चाहते हो कि व्यक्ति की गतिविधियो का भी हमेशा कोई लक्ष्य होना चाहिये, ताकि प्यार और पारिवारिक जीवन सदा एक ही हो। मगर ऐसा होता नही। जीवन की सारी विविधता, सारी मधुरता और सारी सुन्दरता छाया और प्रकाश का परिणाम होती है।"

लेविन ने गहरी सास ली और कोई जवाब नही दिया। वह अपने ही ममलो मे खोया हुआ था और ओब्लोन्स्की की बातो की ओर कोई ध्यान नही दे रहा था।

अचानक दोनो ने यह महसूस किया कि बेशक वे दोस्त हैं, बेशक उन्होने साथ-साथ खाना खाया और शराब पी है, जिससे उन्हे एक-दूसरे के और अधिक निकट आ जाना चाहिये था, फिर भी हर कोई अपने मे ही उलझा हुआ है और एक को दूसरे से कोई मतलब नहीं है। ओब्लोन्स्की खाने के बाद निकटता के बजाय इस अत्यधिक अलगाव को कई बार अनुभव कर चुका था और जानता था कि ऐसी हालत मे उसे क्या करना चाहिये।

"बिल लाओ!" उसने बैरे को पुकारकर कहा और पास के कमरे मे चला गया। वहा एक परिचित एड-डी-कैम्प से फौरन उसकी भेट हो गयी और वह उसके साथ एक अभिनेत्री और उसके अन्नदाता के बारे मे बातचीत करने लगा। एड-डी-कैम्प के साथ बातचीत करके ओब्लोन्स्की को उसी क्षण लेविन से हुई बातचीत से राहत और चैन मिला। लेविन के साथ बातचीत से वह हमेशा दिल-दिमाग पर बड़ा तनाव महसूस करता था।

तातार बैरा कुछ देर बाद छब्बीस रूबल और कुछ कोपेक का बिल
र आया। टिप के पैसे इसके अलावा थे। कोई और वक्त होता
देहात में रहनेवाले किसी भी व्यक्ति की तरह अपने हिस्से के चौदह
बलों का बिल देखकर लेविन सन्नाटे में आ जाता। लेकिन इस वक्त
सने इसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया, बिल चुकाया और श्चेर्बात्स्की
रिवार के यहां जाने के लिये, जहां उसके भाग्य का निर्णय होने वाला
ा, कपड़े बदलने को अपने घर चल दिया।

(१२)

प्रिंसेस कीटी श्चेर्बात्स्काया अठारह साल की थी। इस जाड़े में वह पहली बार दावतों-महफ़िलों में जाने लगी थी। ऊंचे समाज में उसे अपनी दोनों बड़ी बहनों की तुलना में तथा उसकी मां की आशा से भी अधिक सफलता मिल रही थी। न केवल यह कि मास्को के बॉलों में नाचनेवाले लगभग सभी तरुण कीटी पर जान छिड़कते थे, बल्कि पहले ही जाड़े में विवाह का प्रस्ताव कर सकने वाले ढंग के दो व्यक्ति – लेविन, और उसके जाने के फ़ौरन बाद काउंट व्रोन्स्की – सामने आये।

जाड़े के शुरू में लेविन के प्रकट होने, उसके अक्सर श्चेर्बात्स्की परिवार में आने और कीटी के प्रति साफ़ तौर पर प्यार जाहिर करने के फलस्वरूप कीटी के भविष्य के बारे में उसके मां-बाप के बीच पहली गम्भीर बातचीत और प्रिंस तथा प्रिंसेस में वाद-विवाद हुआ। प्रिंस लेविन के पक्ष में थे और उनका कहना था कि कीटी के लिये वे लेविन से बढ़कर और किसी की कामना नहीं कर सकते। प्रिंसेस मामले से दामन बचाकर निकल जाने की नारी-सुलभ अपनी आदत के मुताबिक़ यह कहती रहीं कि कीटी अभी बहुत छोटी उम्र की है, कि लेविन किसी तरह भी यह जाहिर नहीं करता कि इस सिलसिले में उसका कोई संजीदा इरादा है, कि कीटी उसके प्रति कोई अनुराग नहीं रखती तथा उन्होंने इसी तरह के कई दूसरे बहाने पेश किये। लेकिन प्रिंसेस ने मुख्य बात नहीं कही कि वे बेटी के लिये बेहतर वर की राह देख रही हैं, कि लेविन उनके मन को नहीं छूता, कि वे उसे समझ नहीं

पाती। जब लेविन अचानक ही चला गया, तो प्रिंसेस बहुत खुश हुईं और बडी शान से अपने पति से बोली: "देखा, मैं ठीक कहती थी न।" जब व्रोन्स्की सामने आया, तो वे और भी ज्यादा खुश हुईं और उनका यह विचार और भी अधिक पुष्ट हो गया कि कीटी को केवल अच्छा ही नही, बल्कि बहुत बढिया वर मिलना चाहिये।

मा के मतानुसार तो व्रोन्स्की और लेविन के बीच कोई तुलना ही नही हो सकती थी। मा को लेविन के अजीब और उग्र विचार, ऊचे समाज मे उसका अटपटापन, जो उनके अनुसार घमण्ड का नतीजा था, तथा, जैसा कि वे समझती थी, पशुओ और किसानो से सम्बन्धित गाव का जगली-सा जीवन पसन्द नही था। उन्हे तो यह भी बहुत अच्छा नही लगता था कि उनकी बेटी के प्रेम मे डूबा हुआ वह डेढ महीने तक घर मे आता रहा, मानो किसी चीज की प्रतीक्षा करता रहा, ऐसे इधर-उधर देखता रहा मानो यह सोचकर डरता हो कि विवाह का प्रस्ताव करके वह बहुत बडा सम्मान प्रदान कर देगा, इतना भी नही समझता था कि अक्सर उस घर मे आने पर, जहा ब्याह-शादी के लायक लडकी हो, उसे अपने मन का भाव प्रकट करना चाहिये। और फिर कुछ भी कहे-सुने बिना अचानक चला गया। "यही गनीमत है कि वह कुछ खास आकर्षक नही है, कि कीटी उससे प्रेम नही करने लगी है," मा सोचती थी।

व्रोन्स्की कीटी की मा की सभी इच्छाओ के अनुरूप था। वह बहुत धनी था, समझदार था, खानदानी था, राज-दरबार के शानदार फौजी रुतबे की ओर बढ रहा था तथा बडा मनमोहक व्यक्तित्व था उसका। उससे बेहतर किसी बात की कामना नही की जा सकती थी।

बालो मे व्रोन्स्की स्पष्टत कीटी के प्रति अपना लगाव दिखाता था, उसी के साथ नाचता था और कीटी के घर आता था। ऐसा मानना सम्भव था कि उसके इरादे की सजीदगी के बारे मे कोई शक ही नही हो सकता। किन्तु इसके बावजूद मा इस पूरे जाडे मे बहुत बेचैन और विह्वल रही।

खुद प्रिंसेस की तो तीस साल पहले मौसी की मार्फत शादी हुई थी। वर, जिसके बारे मे पहले से ही सब कुछ स्पष्ट था, लडकी के घर

पाती। जब लेविन अचानक ही चला गया, तो प्रिंसेस बहुत खुश हुई और बड़ी शान से अपने पति से बोली: "देखा, मैं ठीक कहती थी न।" जब व्रोन्स्की सामने आया, तो वे और भी ज्यादा खुश हुईं और उनका यह विचार और भी अधिक पुष्ट हो गया कि कीटी को केवल अच्छा ही नहीं, बल्कि बहुत बढ़िया वर मिलना चाहिये।

मां के मतानुसार तो व्रोन्स्की और लेविन के बीच कोई तुलना ही नहीं हो सकती थी। मां को लेविन के अजीब और उग्र विचार, ऊंचे समाज में उसका अटपटापन, जो उनके अनुसार घमण्ड का नतीजा था, तथा, जैसा कि वे समझती थीं, पशुओं और किसानों से सम्बन्धित गांव का जंगली-सा जीवन पसन्द नहीं था। उन्हें तो यह भी बहुत अच्छा नहीं लगता था कि उनकी बेटी के प्रेम में डूबा हुआ वह डेढ़ महीने तक घर में आता रहा, मानो किसी चीज की प्रतीक्षा करता रहा, ऐसे इधर-उधर देखता रहा मानो यह सोचकर डरता हो कि विवाह का प्रस्ताव करके वह बहुत बड़ा सम्मान प्रदान कर देगा, इतना भी नहीं समझता था कि अक्सर उस घर में आने पर जहां ब्याह-शादी के लायक लड़की हो, उसे अपने मन का भाव प्रकट करना चाहिये। और फिर कुछ भी कहे-सुने बिना अचानक चला गया। "यही गनीमत है कि वह कुछ [illegible] नहीं है कि कीटी उससे प्रेम नहीं करने लगी है," मां सोचती थीं।

व्रोन्स्की कीटी की मां की सभी इच्छाओं के अनुरूप था। वह बहुत धनी था, समझदार था, खानदानी था, राजदरबार के [illegible] ओर बढ़ रहा था तथा बड़ा मनमोहक व्यक्तित्व का [illegible]। इससे बेहतर किसी बात की कामना नहीं की जा सकती थी।

[illegible] में व्रोन्स्की [illegible] कीटी के प्रति अपना लगाव दिखाता था, [illegible] के साथ [illegible] था और कीटी के घर आता था। ऐसा [illegible] था कि उसके इरादों की गंभीरता के बारे में कोई शक [illegible] ही [illegible]। किन्तु इसके बावजूद मां इस पूरे जाड़े में बहुत [illegible] और [illegible] रहीं।

[illegible] प्रिंसेस [illegible] मौसी की मार्फत शादी हुई थी, [illegible] पहले से ही सब कुछ [illegible] था, लड़की के घर

पाती। जब लेविन अचानक ही चला गया, तो प्रिंसेस बहुत खुश हुईं और बडी शान से अपने पति से बोली: "देखा, मैं ठीक कहती थी न।" जब व्रोन्स्की सामने आया, तो वे और भी ज़्यादा खुश हुईं और उनका यह विचार और भी अधिक पुष्ट हो गया कि कीटी को केवल अच्छा ही नही, बल्कि बहुत बढ़िया वर मिलना चाहिये।

मा के मतानुसार तो व्रोन्स्की और लेविन के बीच कोई तुलना ही नही हो सकती थी। मा को लेविन के अजीब और उग्र विचार, ऊंचे समाज मे उसका अटपटापन, जो उनके अनुसार घमण्ड का नतीजा था, तथा, जैसा कि वे समझती थी, पशुओ और किसानों से सम्बन्धित गाव का जगली-सा जीवन पसन्द नही था। उन्हे तो यह भी बहुत अच्छा नहीं लगता था कि उनकी बेटी के प्रेम मे डूबा हुआ वह डेढ़ महीने तक घर मे आता रहा, मानो किसी चीज की प्रतीक्षा करता रहा, ऐसे इधर-उधर देखता रहा मानो यह सोचकर डरता हो कि विवाह का प्रस्ताव करके वह बहुत बडा सम्मान प्रदान कर देगा, इतना भी नहीं समझता था कि अक्सर उस घर मे आने पर, जहा ब्याह-शादी के लायक लड़की हो, उसे अपने मन का भाव प्रकट करना चाहिये। और फिर कुछ भी कहे-सुने बिना अचानक चला गया। "यही गनीमत है कि वह कुछ खास आकर्षक नही है, कि कीटी उससे प्रेम नही करने लगी है," मा सोचती थी।

व्रोन्स्की कीटी की मा की सभी इच्छाओ के अनुरूप था। वह बहुत धनी था, समझदार था, खानदानी था, राज-दरबार के शानदार फौजी रुतबे की ओर बढ़ रहा था तथा बडा मनमोहक व्यक्तित्व था उसका। उससे बेहतर किसी बात की कामना नही की जा सकती थी।

बालों मे व्रोन्स्की स्पष्टत कीटी के प्रति अपना लगाव दिखाता था, उसी के साथ नाचता था और कीटी के घर आता था। ऐसा मानना सम्भव था कि उसके इरादे की संजीदगी के बारे मे कोई शक ही नही हो सकता। किन्तु इसके बावजूद मा इस पूरे जाड़े मे बहुत बेचैन और विह्वल रही।

खुद प्रिंसेस की तो तीस साल पहले मौसी की मार्फत शादी हुई थी। वर, जिसके बारे मे पहले से ही सब कुछ स्पष्ट था, लड़की के घर

सकते हैं और इस कसूर को कितना कम महत्त्व देते हैं। पिछले हफ्ते कीटी ने मा को माजूर्का नाच के वक्त व्रोन्स्की से हुई अपनी बातचीत बताई। इस बातचीत ने मा को कुछ हद तक तो शान्त कर दिया, केन वे पूरी तरह से शान्त नही हो सकती थी। व्रोन्स्की ने कीटी कहा कि वे दोनो भाई सभी बातो मे मा का हुक्म बजाने के ऐसे दी हो गये है कि उससे सलाह किये बिना कभी कोई महत्त्वपूर्ण नर्णय नही कर सकते। "अब मैं एक विशेष सौभाग्य के रूप में पीटर्स-र्ग से मा के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा हू," व्रोन्स्की ने कहा था।

कीटी ने इन शब्दो को कोई विशेष महत्त्व दिये बिना मा के सामने इन्हे दोहराया था। लेकिन मा ने इसे दूसरे ही ढग से समझा। मा को मालूम था कि बुढिया का हर दिन इन्तजार हो रहा है, जानती थी कि बुढिया बेटे के चुनाव मे खुश होगी और उन्हे यह बात अजीब-सी लगती थी कि व्रोन्स्की मा को नाराज करने के डर से कीटी के साथ अपना भाग्य जोडने का प्रस्ताव नही करता था। फिर भी वे इस रिश्ते के हो जाने और इससे भी ज्यादा, अपनी आशकाओ से मुक्ति पाने को इतनी उत्सुक थीं कि वे इस बात पर विश्वास करती थी कि व्रोन्स्की अवश्य प्रस्ताव करेगा। बेटी दार्या का बहुत अधिक दुख होने पर भी, जो अपने पति को छोडने का इरादा बना रही थी, छोटी बेटी के भाग्य-निर्णय से सम्बन्धित बेचैनी उनकी सारी भावनाओ पर छाई हुई थी। आज लेविन के प्रकट होने पर प्रिसेस के लिये एक नयी परे-शानी बढ गयी। उन्हे इस बात का डर था कि कीटी, जिसके मन , जैसा कि मा को लगता था, कभी लेविन के प्रति कुछ भावना थी, ही जरूरत से ज्यादा ईमानदारी बरतते हुए व्रोन्स्की को इन्कार न र दे, कि वैसे भी लेविन के आने से यह मामला उलझ न जाये, म, सिरे चढते-चढते अटक न जाये।

"बहुत दिन हो गये क्या उसे यहा आये हुए?" घर लौटने पर मा ने बेटी से पूछा।

"आज ही आया है, maman."

"मैं एक बात कहना चाहती हू " मा ने कहना शुरू किया और उनके चेहरे पर गम्भीरता और सजीवता की झलक से कीटी ने फौरन यह अनुमान लगा लिया कि मा क्या कहेगी।

"मा," कीटी ने लज्जारुण होते और जल्दी से उनकी ओर मुड़ते हुए कहा, "कृपया इस बारे में कुछ भी, कुछ भी नहीं कहिये। मैं जानती हू, सब कुछ जानती हू।"

कीटी भी वही चाहती थी, जो मा चाहती थी। लेकिन मां की इच्छा के पीछे छिपी भावनाओं से उसके दिल को ठेस लगती थी।

"मैं सिर्फ इतना कहना चाहती हू कि एक को उम्मीद बधाकर "

"मा, प्यारी मा, भगवान के लिये कुछ नहीं कहिये। बहुत भयानक लगता है इस बारे में बात करना।"

अच्छी बात है, नहीं कहूंगी, नहीं कहूंगी," बेटी की आंखों में आसू देखकर मा ने कहा। "लेकिन सिर्फ इतना ही, मेरी प्यारी, कि तुमने मुझसे अपनी कोई भी बात न छिपाने का वादा किया है। नहीं छिपाओगी न?"

कभी, और कोई भी बात नहीं छिपाऊगी," कीटी ने पुन लज्जारुण होते और मा से नजर मिलाते हुए जवाब दिया। "लेकिन अभी तो मुझे [illegible] बताने को कुछ नहीं है। मैं मैं अगर मैं चाहती, मुझे मालूम नहीं कि क्या और कैसे कहू मैं नहीं जानती."

[illegible] ऐसी आंखों के साथ वह झूठ नहीं बोल सकती," बेटी की [illegible] और सुख पर मुस्कराते हुए मा ने सोचा। [illegible] इस बात पर मुस्कराई कि [illegible] बेटी की आत्मा में जो उथल-पुथल हो रही है, उस [illegible] को वह [illegible] बड़ी और महत्त्वपूर्ण प्रतीत होती है।

(?३)

[illegible] के [illegible] शाम होने तक कीटी ने कुछ वैसे ही [illegible] युद्ध के पहले [illegible] और [illegible] किसी [illegible]

[illegible] कि [illegible] की शाम [illegible] और [illegible] निर्णायक होनी चाहिये। [illegible] था — कभी [illegible] [illegible] के बारे में सोचती

कीटी खुद यह जाने बिना कि उसके होठ क्या कह रहे है कहती जा रही थी और उसकी मिन्नत करती तथा स्नेह-स्निग्ध दृष्टि उसके चेहरे पर जमी हुई थी।

लेविन ने कीटी की तरफ देखा। कीटी के चेहरे पर लज्जा की लाली दौड़ गयी और वह खामोश हो गयी।

"मैंने आपसे कहा था न कि मैं बहुत देर के लिये आया हू या नही   कि यह आप पर निर्भर है   "

यह न समझ पाते हुए कि बहुत जल्द ही सामने आनेवाले सवाल का क्या जवाब देगी, वह अपने सिर को अधिकाधिक नीचे झुकाती जाती थी।

"कि यह आप पर निर्भर है," लेविन ने इन शब्दो को दोहराया। "मैं कहना चाहता था   मैं यह कहना चाहता था   मैं इसीलिये आया हू   कि   आप मेरी पत्नी बन जाये।" खुद यह न जानते हुए कि उसने क्या कहा है, किन्तु यह महसूस करते हुए कि सबसे भयानक बात कही जा चुकी है, वह रुका और उसने कीटी की तरफ देखा।

कीटी उसकी ओर देखे बिना हाफ-सी रही थी। उसे अपार हर्ष की अनुभूति हुई। उसका हृदय गद्गद हो रहा था। उसने कभी ऐसी आशा नही की थी कि लेविन की प्रेम-स्वीकृति का उसके मन पर इतना गहरा सुखद प्रभाव पडेगा। किन्तु ऐसी स्थिति तो केवल क्षण भर रही। उसे व्रोन्स्की का ध्यान आया। उसने अपनी हल्के रग की निर्मल आखे लेविन की ओर उठाई और उसके हताश चेहरे पर जल्दी से नजर डालकर यह जवाब दे दिया

"ऐसा नही हो सकता   क्षमा चाहती हू   "

एक मिनट पहले कीटी उसके हृदय के कितनी निकट थी, उसके जीवन के लिये कितना अधिक महत्व था उसका! और अब वह कितनी परायी तथा उससे कितनी दूर हो गयी थी!

"मुझे ऐसी ही उम्मीद थी," कीटी की ओर देखे बिना ही लेविन ने कहा।

उसने सिर झुकाया और जाना चाहा।

है – खुद उसी से सम्बन्ध नही है, बल्कि इसी क्षण उसे उस व्यक्ति का अपमान करना होगा, जिसे वह प्यार करती है। और बड़ी कठोरता से अपमान करना होगा सो भी किसलिये ? इसलिये कि वह मधुर व्यक्ति है, उसे प्यार करता है, उसके प्यार मे डूबा हुआ है। लेकिन दूसरा कुछ हो ही नही सकता, ऐसा करना ही जरूरी है, ऐसा ही होना चाहिये।

"हे भगवान, क्या खुद मुझे ही उसे यह कहना होगा ?" कीटी ने सोचा। "लेकिन क्या कहूगी मैं उसे ? क्या मैं उससे यह कहूगी कि उसे प्यार नही करती ? यह झूठ होगा। तो क्या कहूगी मैं उसे? यह कहूगी कि किसी दूसरे को प्यार करती हू ? नही, यह सम्भव नही। मैं यहा से चली जाती हू, चली जाती हू।"

कीटी दरवाजे के पास पहुच चुकी थी, जब लेविन के पैरो की आहट मिली। "नही, यह बेईमानी होगी ! किस बात का डर है मुझे ? मैंने कुछ भी तो बुरा नही किया। जो कुछ होना है, सो हो जाये ! सचाई कह दूगी। हा, उसके मामले मे घबराने की कोई बात नही। लो वह आ गया," लेविन की चमकती और अपने चेहरे पर जमी आखो, उसकी हृष्ट-पुष्ट और सहमी-सी आकृति को देखकर उसने अपने आपसे कहा। कीटी ने सीधे नजर मिलाते हुए उसकी तरफ देखा मानो उससे दया करने की मिन्नत कर रही हो, और हाथ बढ़ाया।

"लगता है कि मैं समय से बहुत पहले आ गया हू," खाली मेहमानखाने मे नजर दौड़ाकर लेविन ने कहा। जब उसने यह देखा कि जैसा उसने सोचा था, वैसा ही है कि किसी भी तरह की बाधा के बिना अपनी बात कह सकता है तो उसके चेहरे पर मुर्दनी सी छा गयी।

"नही नही, ऐसी कोई बात नही है," कीटी ने कहा और मेज के पास बैठ गयी।

"लेकिन मैं यही चाहता था कि आप मुझे अकेली ही मिल जायें," लेविन ने बैठे बिना और उसकी तरफ देखे बिना ही ताकि उसका साहस जवाब न दे जाये, कहना शुरू किया।

"मां अभी आ जायेंगी। वे कल बहुत थक गयी थीं। कल

कीटी खुद यह जाने बिना कि उसके होंठ क्या कह रहे है कहती जा रही थी और उसकी मिन्नत करती तथा स्नेह-स्निग्ध दृष्टि उसके चेहरे पर जमी हुई थी।

लेविन ने कीटी की तरफ देखा। कीटी के चेहरे पर लज्जा की लाली दौड गयी और वह खामोश हो गयी।

"मैंने आपसे कहा था न कि मैं बहुत देर के लिये आया हू या नही कि यह आप पर निर्भर है "

यह न समझ पाते हुए कि बहुत जल्द ही सामने आनेवाले सवाल का क्या जवाब देगी, वह अपने सिर को अधिकाधिक नीचे झुकाती जाती थी।

"कि यह आप पर निर्भर है," लेविन ने इन शब्दो को दोहराया। "मैं कहना चाहता था मैं यह कहना चाहता था मैं इसीलिये आया हू कि आप मेरी पत्नी बन जाये!" खुद यह न जानते हुए कि उसने क्या कहा है, किन्तु यह महसूस करते हुए कि सबसे भयानक बात कही जा चुकी है, वह रुका और उसने कीटी की तरफ देखा।

कीटी उसकी ओर देखे बिना हाफ-सी रही थी। उसे अपार हर्ष की अनुभूति हुई। उसका हृदय गद्‌गद हो रहा था। उसने कभी ऐसी आशा नही की थी कि लेविन की प्रेम-स्वीकृति का उसके मन पर इतना गहरा सुखद प्रभाव पडेगा। किन्तु ऐसी स्थिति तो केवल क्षण भर रही। उसे व्रोन्स्की का ध्यान आया। उसने अपनी हल्के रग की निर्मल आखे लेविन की ओर उठाई और उसके हताश चेहरे पर जल्दी मे नजर डालकर यह जवाब दे दिया

"ऐसा नही हो सकता क्षमा चाहती हू "

एक मिनट पहले कीटी उसके हृदय के कितनी निकट थी, उसके जीवन के लिये कितना अधिक महत्व था उसका! और अब वह कितनी परायी तथा उससे कितनी दूर हो गयी थी!

"मुझे ऐसी ही उम्मीद थी," कीटी की ओर देखे बिना ही लेविन ने कहा।

उसने सिर झुकाया और जाना चाहा।

(१४)

किन्तु ठीक इसी समय प्रिंसेस बाहर आ गयीं। उन्होंने जब इन दोनो को अकेले और उनके चेहरो पर परेशानी देखी, तो उनके चेहरे का रग उड गया। लेविन ने सिर झुकाकर अभिवादन किया और कुछ भी नही कहा। कीटी नजर झुकाये खामोश रही। "भला हो भगवान का, इसने इन्कार कर दिया," मा ने सोचा और उनके चेहरे पर वही सामान्य मुस्कान खिल उठी, जिससे वे बृहस्पतिवार को मेहमानो का स्वागत करती थी। वे बैठकर लेविन से उसके गाव के जीवन के बारे मे पूछ-ताछ करने लगी। लेविन भी मेहमानो के आने की राह देखते हुए, ताकि चुपचाप यहा से खिसक सके, फिर से बैठ गया।

पाच मिनट बाद कीटी की सहेली काउटेस नोर्डस्टोन आ गयी। पिछले जाडे मे ही उसकी शादी हुई थी।

यह दुबली-पतली, पाण्डुवर्णी, काली चमकती आखो वाली अस्वस्थ तथा चिडचिडी-सी औरत थी। यह कीटी को प्यार करती थी और उसके प्रति उसका प्यार वैसा ही था जैसा कि विवाहित नारियो का हमेशा अविवाहित लडकियो के प्रति होता है यानी वह सुख के अपने आदर्श के अनुसार उसकी शादी करवाना चाहती थी, इसलिये कीटी को व्रोन्स्की की पत्नी देखने को ही उत्सुक थी। लेविन, जिससे वह जाडे के शुरू मे इस घर मे अक्सर मिलती रही थी, उसे कभी भी अच्छा नही लगा था। उससे मुलाकात होने पर उसकी हमेशा और यही मनोरंजक दिलचस्पी रहती थी कि उसका मजाक उडाये।

"जब वह अपनी महानता की ऊचाई से मेरी ओर देखता है या मेरे साथ अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण बाते बन्द कर देता है, क्योकि मैं बुद्धू हू, या मेरे स्तर पर उतरने की कृपा करता है, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। बहुत अच्छा लगता है और इस बात की बडी खुशी है कि मैं उसे फूटी आखो नही सुहाती हू," वह उसके बारे मे कहती।

काउटेस नोर्डस्टोन की बात सही थी, क्योंकि लेविन को वह सचमुच ही फूटी आखो नही सुहाती थी और काउटेस अपने जिस [illegible] और हर दिन के जीवन के खुरदरेपन के प्रति उदासीनता तथा तिरस्कार की भावना पर गर्व करती थी, इन्हे अपने लिये

कोई खास बात है क्या इसके सिवा [illegible]
लेविन के कंधे और मामूली चेहरे को गौर से देखते हुए [illegible]
करने वाले [illegible] बात का [illegible] नहीं [illegible] के [illegible] में ही [illegible]
लेविन से पूछे लेने जाने नहीं दूंगी। कीटी के बारे में इतनी [illegible]
मुझे बहुत अच्छा लगता है और मैं [illegible] करने की [illegible]।

कोन्स्तान्तीन द्मित्रियेविच, काउंटेस नोर्डस्टोन बोली, "इस एक मामले पर रोशनी डालिये – क्या यह सच है कि – हमारे कालूगा प्रदेश के एक गांव के किसानों और उन की औरतों ने सब सभी कुछ पी डाला जो उनके पास था और अब हम को कुछ भी नहीं देते। क्या मतलब है ऐसी हरकत का ? आप हमेशा किसानों की इतनी तारीफ करते रहते हैं।

इसी वक्त एक अन्य महिला कमरे में आई और लेविन उठकर खड़ा हो गया।

"माफी चाहता हूं, काउंटेस, लेकिन सचमुच मुझे ऐसा कुछ मालूम नहीं है और इस बारे में मैं कुछ भी नहीं कह सकता," लेविन ने कहा और महिला के पीछे-पीछे कमरे में दाखिल होनेवाले फौजी अफसर की तरफ मुड़कर देखा।

"यही व्रोन्स्की होना चाहिए," लेविन ने सोचा और इस बात का पक्का यकीन कर लेने के लिये उसने कीटी पर नजर डाली। कीटी ने तो व्रोन्स्की को देख भी लिया था और अब उसने लेविन की ओर दृष्टि घुमायी। कीटी की इस एक नजर, अपने आप ही चमक उठनेवाली उसकी आखो से ही लेविन यह समझ गया कि वह इस व्यक्ति को प्यार करती है। वह उतनी ही अच्छी तरह यह समझ गया, जितना कि खुद कीटी द्वारा यही कह देने पर समझा होता। लेकिन किस किस्म का आदमी है यह ?"

अब अच्छा हो या बुरा – लेकिन यहा रुके बिना नही रह सकता था। उसके लिये यह जानना जरूरी था कि वह किस किस्म का आदमी है, जिसे कीटी प्यार करती है।

ऐसे लोग है, जो हर मामले मे अपने से अधिक सौभाग्यशाली प्रतिद्वन्द्वी के सामने आने पर उसकी सभी अच्छाइयो की ओर से फौरन आख मूद लेने और उसमे केवल बुराइया ही देखने को तैयार होते हैं।

सरी ओर, ऐसे भी लोग है, जो अपने इस भाग्यशाली प्रतिद्वन्द्वी
वे खूबियां ढूढने की कोशिश करते है, जिनकी बदौलत उसने उन्हे
मात दी और टीसते हुए दिल से उसमे सिर्फ गुण ही गुण खोजते हैं।
लेविन दूसरी श्रेणी के लोगो मे से था। किन्तु उसे व्रोन्स्की मे अच्छाई
तथा आकर्षण ढूढ पाने मे कोई कठिनाई नही हुई। फौरन ही उसे यह
नजर आ गया। मझोला कद, काले बाल और तगडी-मजबूत काठी,
सुशील, सुन्दर तथा बहुत ही शान्त और दृढ चेहरा – ऐसा था व्रोन्स्की।
उसके चेहरे और आकृति, छोटे-छोटे कटे काले बालो और ताजा बनायी
गयी दाढ़ी से लेकर चुस्त-दुरुस्त नयी वर्दी तक हर चीज मे सादगी
के साथ-साथ नफासत भी थी। कमरे मे दाखिल हो रही महिला को
रास्ता देकर व्रोन्स्की प्रिंसेस और फिर कीटी के पास गया।

व्रोन्स्की जब कीटी के पास गया, तो उसकी सुन्दर आखे विशेष
स्नेह से चमक उठी और वह तनिक प्रत्यक्ष सुखद तथा विनयी-विजयी
मुस्कान (लेविन को ऐसा ही लगा) के साथ बडे आदर तथा सावधानी
से उसके ऊपर झुका और उसने अपना छोटा, किन्तु चौडा हाथ उसकी
तरफ बढाया।

सभी से हाथ मिलाने और कुछ शब्द कहने के बाद व्रोन्स्की अपने
को टकटकी बाधकर देखते हुए लेविन की तरफ एक बार देखे बिना ही
बैठ गया।

"आइये, आपका परिचय करा दू," लेविन की ओर सकेत करते
हुए प्रिंसेस ने कहा। "कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच लेविन, काउट
अलेक्सेई किरील्लोविच व्रोन्स्की।"

व्रोन्स्की उठा और मैत्रीपूर्ण ढग से लेविन की आखो मे झाकते
हुए उसने उससे हाथ मिलाया।

"लगता है कि इस जाडे मे मुझे आपके साथ खाना खाना था,"
अपनी सरल और निश्छल मुस्कान के साथ उसने कहा, "लेकिन आप
अचानक गाव चले गये।"

"कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच शहर और हम शहरी लोगो को
तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखते है," काउटेस नोर्डस्टोन ने
चुटकी ली।

"लगता है कि मेरे शब्द आप पर इतना ज्यादा असर डालते हैं कि

आप उन्हें इतनी अच्छी तरह से याद रखती हैं," लेविन ने कहा और यह याद करके कि वह पहले भी यही कह चुका है, शर्म से लाल हो गया।

व्रोन्स्की ने लेविन, फिर काउंटेस नोर्डस्टोन की तरफ देखा और मुस्करा दिया।

"आप हमेशा गाव मे ही रहते हैं?" व्रोन्स्की ने पूछा। "मेरे ख्याल मे जाडे मे वहा ऊब महसूस होती होगी।"

"अगर करने को कोई काम हो, तो ऊब महसूस नही होती और फिर अपने साथ भी ऊब का सवाल नही पैदा होता," लेविन ने उग्रता से जवाब दिया।

"मुझे गाव अच्छा लगता है," व्रोन्स्की ने लेविन के अन्दाज को महसूस करते, किन्तु ऐसा दिखाते हुए मानो उसने कुछ महसूस नही किया, जवाब दिया।

"लेकिन काउंट, मैं यह उम्मीद करती हू कि हमेशा गाव मे रहने को आप कभी राजी न होते," काउंटेस नोर्डस्टोन ने कहा।

"मालूम नही, मैंने बहुत दिनों तक रहकर देखा नही। मुझे एक बार एक अजीब-सी अनुभूति हुई थी," व्रोन्स्की कहता गया। "साल भर मा के साथ नीस मे रहने पर मुझे गाव, छाल के जूतो और किसानो वाले रूसी गाव की जितनी याद आई, उतनी कभी और कही नही आई थी। आप जानते ही हैं, नीस तो खुद ऊब पैदा करनेवाली जगह है। वास्तव मे नेपल्स तथा सोरेन्टो भी थोडे समय के लिये ही अच्छे लगते हैं। वहा खास तौर पर बडी रूसी गाव की बडी याद आती है। वे तो बिल्कुल ऐसे हैं कि ..."

वह काउंटेस और लेविन को सम्बोधित करते तथा अपनी शान्त और मैत्रीपूर्ण दृष्टि कभी एक तो कभी दूसरे की ओर घुमाता हुआ सम्भवतः वह सब कुछ कहता जाता था, जो उसके दिमाग मे आ रहा था।

यह देखकर कि काउंटेस नोर्डस्टोन कुछ कहना चाहती है, वह बीच मे ही चुप हो गया और बहुत ध्यान से उसकी बात सुनने लगा।

बातचीत क्षण भर को भी बन्द नही हुई। इसलिए बूढी प्रिंसेस को अपने तरकश मे [illegible] हुए विषयो के रूप मे दो भारी तोपो – क्लासिकल

विज्ञानो सम्बन्धी शिक्षा और अनिवार्य व्यापक सैनिक सेवा — मे किसी को नही चलाना पडा तथा काउटेस नोर्डस्टोन को लेविन को ने का अवसर नही मिला।

लेविन आम बातचीत मे हिस्सा लेना चाहता था, लेकिन ऐसा कर पा रहा था। हर क्षण अपने से यह कहते हुए "मैं अब जा ता हू," वह मानो किसी चीज की प्रतीक्षा करता हुआ गया नही। घूमनेवाली मेज़ो और भूत-प्रेतो के बारे मे बातचीत चल पडी र प्रेतविद्या मे विश्वास रखनेवाली काउटेस नोर्डस्टोन उन अजूबो चर्चा करने लगी, जो उसने देखे थे।

"ओ, काउटेस, भगवान के लिये अवश्य ही मुझे उनसे मिला जिये! मैने कभी और कही भी कुछ ऐसा असाधारण नही देखा, यपि हर जगह उसे ढूढता रहता हू," व्रोन्स्की ने मुस्कराते हुए कहा।

"अच्छी बात है, अगले शनिवार को," काउटेस नोर्डस्टोन ने जवाब दिया। और आप कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, क्या आप इनमे विश्वास करते हैं?" उसने लेविन से पूछा।

"किसलिये पूछ रही हैं आप मुझसे? आप तो जानती ही हैं कि मेरा क्या जवाब होगा।"

"मगर मैं आपका मत जानना चाहती हू।"

"मेरा मत तो सिर्फ यही है कि घूमनेवाली मेजे यह साबित करती हैं," लेविन ने जवाब दिया, "कि हमारे पढे-लिखे समाज के लोग किसानो से बेहतर नही हैं। किसान नजर लगने, शाप देने और जादू-टोना करने मे यकीन करते हैं और हम ..."

"तो आप विश्वास नही करते?"

"नही कर सकता, काउटेस।"

"लेकिन अगर मैंने अपनी आखो से देखा हो, तो?"

"देहाती औरते भी ऐसा कहती हैं कि उन्होने घर मे रहनेवाले बौने भूतो को देखा है।"

"तो आप यह समझते है कि मैं झूठ बोल रही हू?"

और वह उदासी से हस दी।

"नही, यह बात नही है, माशा। कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच तो यह कह रहे है कि वे विश्वास नही कर सकते," कीटी ने लेविन के

लिये लज्जित होते हुए कहा। लेविन यह समझ गया और पहले से भी अधिक चिढ़कर उसने इसका जवाब देना चाहा, किन्तु व्रोन्स्की ने अपनी निश्छल और खुली मुस्कान से उस बातचीत को सम्भाल लिया, जो सम्भवतः कटु होने जा रही थी।

"आप इसकी सम्भावना को बिल्कुल स्वीकार नहीं करते?" व्रोन्स्की ने पूछा। "भला क्यों? हम बिजली के अस्तित्व की सम्भावना को स्वीकार करते हैं, जिसके बारे में कुछ नहीं जानते हैं। भला ऐसी नई शक्ति क्यों नहीं हो सकती, जिससे हम अनजान हैं और जो..."

"बिजली जब खोजी गयी," लेविन ने जल्दी से उसे टोका, "तो केवल एक प्राकृतिक व्यापार का पता चलाया गया था। तब यह मालूम नहीं था कि बिजली कहां से पैदा होती है और वह क्या पैदा करती है। उसका व्यावहारिक उपयोग करने की बात सोचने के पहले सदियां बीत गयीं। इसके विपरीत, भूत-प्रेतों की बात तो यहां से शुरू हुई कि मेजें लोगों के लिये लिखती हैं और उनके पास आत्मायें आती हैं, इसके बाद ही ऐसा कहा जाने लगा कि यह अनजानी शक्ति है।"

हमेशा की तरह व्रोन्स्की बहुत ध्यान से, स्पष्टतः बड़ी दिलचस्पी लेते हुए लेविन की बात सुन रहा था।

"हां, लेकिन भूतों-प्रेतों में विश्वास करनेवाले कहते हैं: अभी हमें इतना मालूम नहीं कि यह कौन-सी शक्ति है, लेकिन ऐसी शक्ति है जरूर और वह इस तरह की परिस्थितियों में क्रियाशील होती है। यह पता लगाना वैज्ञानिकों का काम है कि इस शक्ति का क्या रूप है। नहीं, मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्यों कोई नई शक्ति नहीं हो सकती अगर..."

"इसीलिये नहीं हो सकती," लेविन ने उसे टोका, "कि बिजली के मामले में जब भी हम सूखी राल को ऊन से रगड़ते हैं, तो हर बार एक खास नतीजा सामने आता है, मगर यहां हर बार ऐसा नहीं होता। इसलिये कहा जा सकता है कि यह प्राकृतिक व्यापार नहीं है।"

सम्भवतः ऐसा अनुभव करते हुए कि मेहमानखाने की दृष्टि से यह बातचीत कुछ ज्यादा ही गम्भीर होती जा रही है, व्रोन्स्की ने कोई आपत्ति नहीं की और बातचीत का विषय बदलने के लिये उसने खुशमिजाजी से मुस्कराकर महिलाओं को सम्बोधित किया।
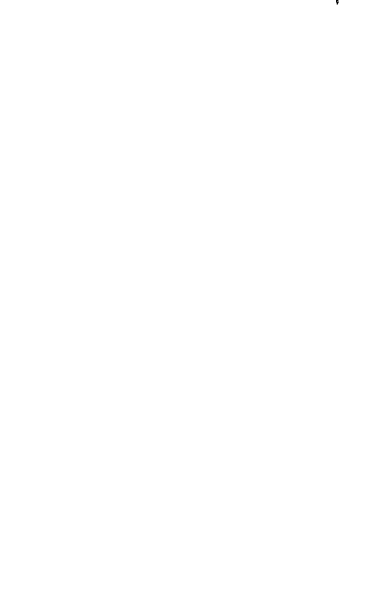
नही था कि तुम यहा हो। बहुत खुशी हुई आपके आने से।"

बूढे प्रिंस लेविन को कभी "तुम" और कभी "आप" कहकर सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने उसे गले लगाया और उससे बात करते हुए व्रोन्स्की की तरफ कोई ध्यान नही दिया, जो खडा होकर शान्ति से इस बात का इन्तजार कर रहा था कि प्रिंस कब उसकी तरफ़ ध्यान देते हैं।

कीटी महसूस कर रही थी कि जो कुछ हो चुका था, उसके बाद पिता के स्नेह-प्रदर्शन से लेविन के मन पर कितनी भारी गुज़र रही होगी। उसने यह भी देखा कि उसके पिता ने कैसी रुखाई से आखिर व्रोन्स्की के अभिवादन का उत्तर दिया और कैसे व्रोन्स्की मैत्रीपूर्ण असमजस के साथ उसके पिता की ओर देखता हुआ यह समझने की कोशिश कर रहा था और समझ नही पा रहा था कि उसके प्रति क्यो और किस कारण ऐसी रुखाई हो सकती है। कीटी इसी वजह से लज्जारुण हो गयी।

"प्रिंस, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच को हमारे पास आ जाने दीजिये," काउटेस नोर्डस्टोन ने कहा। "हम तजरबा करना चाहते हैं।"

"कैसा तजरबा? मेज़े घुमाने का? देवियो और सज्जनो, क्षमा चाहता हू, लेकिन मेरे ख्याल मे तो अगूठी का खेल खेलना कही ज्यादा रोचक है," बूढे प्रिंस ने व्रोन्स्की की ओर देखते तथा यह अनुमान लगाते हुए कहा कि ऐसा विचार उसी के दिमाग की उपज है। "अगूठी का खेल तो फिर भी कोई माने रखता है।"

व्रोन्स्की ने हैरान होते हुए नजर टिकाकर प्रिंस की तरफ देखा और तनिक मुस्कराकर उसी क्षण काउटेस नोर्डस्टोन के साथ अगले सप्ताह होनेवाले एक बडे बॉल की चर्चा करने लगा।

"मै आशा करता हू कि आप वहा आयेगी?" उसने कीटी से कहा।

बूढे प्रिंस का ज्योही दूसरी तरफ ध्यान हुआ, त्योही लेविन चुपके से बाहर चला गया। इस शाम की जो अन्तिम छाप वह अपने साथ ले गया, वह थी बॉल के बारे मे व्रोन्स्की के सवाल के जवाब में कीटी का खुशी से मुस्कराता हुआ चेहरा।

चिल्ला रहे थे। "हुआ यह है कि आपमें आत्मसम्मान नहीं है,
गौरव की भावना नहीं है, कि आप ऐसे घटिया और कमीने ढं
रिश्ता करने की कोशिश से बेटी की इज्ज़त कम कर रही हैं,
बरबाद कर रही हैं!"

"भगवान के लिये दया करो, प्रिंस, मैंने क्या किया है?" प्रि
लगभग रोते हुए कह रही थी।

कीटी की मा बेटी के साथ अपनी बातचीत के बाद बहुत खु
और खुश होती हुई पति को सामान्य ढंग से शुभ रात्रि कहने आ
यद्यपि वे पति को लेविन के विवाह-प्रस्ताव और कीटी के इनकार
बारे में बताने का कोई इरादा नहीं रखती थीं, तथापि उन्होंने इत
संकेत ज़रूर कर दिया कि व्रोन्स्की के साथ कीटी का मामला सम
सिरे चढ़ चुका है, कि जैसे ही उसकी मा मास्को आयेगी, वैसे
सब कुछ तय हो जायेगा। बस, ये शब्द सुनते ही प्रिंस अचानक भ
उठे और अशिष्ट शब्द कहते हुए चिल्लाने लगे।

"क्या किया है आपने? आपने सबसे पहले तो यह किया है कि
आप बेटी के लिये वर को फुसलाती हैं। सारा मास्को ऐसा कहेग
और बिल्कुल सही कहेगा। अगर आप महफ़िल जमाती हैं तो सभी क
बुलाइये, सिर्फ़ ऐसे चुने हुओं को नहीं जो आपकी बेटी के लिये व
हो सकते हैं। उन सभी बांके-छैलों (प्रिंस ने मास्को के नौजवान
ऐसी संज्ञा दी) को बुलाइये, पियानो वादक को आमन्त्रित कीजि
और नाचने दीजिये सब को। ऐसा नहीं कीजिये जैसा आज किया गया
र का शिकार किया जाये। मुझे देखकर घिन आती है, नफ़रत होत
है और आपने अपने मन की बात पूरी कर ली, बच्ची के दिमा
को चक्कर में डाल दिया। लेविन हज़ार गुना बेहतर आदमी है। औ
यह पीटर्सबर्ग का बांका छैला, ये सभी तो एक ही सांचे में ढले
गये हैं, सभी एक साथ में ढले हैं और सभी दो कौड़ी के हैं। अग
वह शाही खानदान का शहज़ादा भी होता, तो भी मेरी बेटी को उसक
ज़रूरत नहीं है।"

"लेकिन मैंने क्या किया है?"

"यह किया है कि..." प्रिंस गुस्से से चिल्लाये।

"मैं जानती हूं कि अगर मैं तुम्हारी बातों पर कान दूंगी, तो..."

की तरह ही अज्ञात भविष्य से भयभीत होते हुए कई बार मन ही मन यह दोहराया – "हे भगवान, दया करें, दया करें, दया करें, हे भगवान!"

(१६)

व्रोन्स्की का पारिवारिक जीवन से कभी वास्ता नहीं रहा था। अपनी जवानी के दिनों में उसकी मां ऊंचे समाज में खूब चमकती रही थी और दाम्पत्य जीवन तथा विशेषकर पति की मृत्यु के बाद उसके इश्क-मुहब्बत के बहुत से किस्से हुए थे, जिन्हें ऊंचे समाज के सभी लोग जानते थे। व्रोन्स्की को अपने पिता की लगभग याद नहीं थी और शाही सैनिक स्कूल में ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी।

सैनिक स्कूल से बहुत जवान और बढ़िया फौजी अफसर बनकर निकलते ही वह पीटर्सबर्ग के अमीर फौजी अफसरों के दायरे में शामिल हो गया। पीटर्सबर्ग के कुलीन-समाज की महफिलों में बेशक वह कभी-कभार जाता था, फिर भी उसकी इश्क-मुहब्बत की सारी दिलचस्पियां इस घेरे के बाहर थीं।

पीटर्सबर्ग के ऐश्वर्यपूर्ण और अश्लील जीवन के बाद मास्को में उसने पहली बार ऊंचे समाज की एक प्यारी और भोली-भाली उस लड़की की निश्छलता का सुख अनुभव किया, जो उससे प्यार करने लगी थी। उसके दिमाग में तो यह ख्याल तक नहीं आया कि कीटी के साथ उसके सम्बन्धों में कोई बुरी बात भी हो सकती थी। बॉलों में वह मुख्यतः उसके साथ नाचता था और उसके घर आता था। उसके साथ वह उसी तरह की बेतुकी बातें करता था, जैसी कि ऊंचे समाज में आम तौर पर की जाती हैं, किन्तु अनजाने ही उन्हें कीटी के लिये विशेष अर्थ प्रदान कर देता था। इस बात के बावजूद कि उसने कीटी से ऐसा कुछ भी नहीं कहा था, जो सभी की उपस्थिति में न कह सकता हो, वह ऐसा महसूस करता था कि कीटी उस पर अधिकाधिक निर्भर होती जा रही है। वह जितना अधिक यह अनुभव करता था, उसे इससे उतनी ही अधिक खुशी होती थी और कीटी के प्रति उसकी भावना अधिक कोमल होती जा रही थी। उसे यह मालूम

का नया भाव भी उसके मन को छू रहा था। "यही बड़ी मधुर बा
है कि न तो मैंने और न उसने ही कुछ कहा, किन्तु नज़रों और स्व
के अन्दाज़ की इस अदृश्य बातचीत में हम एक-दूसरे को ऐसे समझ
जाने हैं कि पहले की तुलना में आज यह कहीं अधिक स्पष्ट हो ग
कि वह मुझे प्यार करती है। और कितना माधुर्य, कितनी सरल
और सबसे बड़ी बात यह कि विश्वास है इसमें! मैं खुद अपने को ए
में अच्छा और निर्मल अनुभव करता हूं। मैं महसूस करता हूं कि मे
सीने में दिल है और मुझमें बहुत कुछ अच्छा है। वे प्यारी और प्रे
में डूबी हुई आंखें! जब उसने कहा—और बहुत..

"तो क्या बात है इसमें? कोई खास बात नहीं। मेरे लिये य
सुखद है और उसके लिये भी।" और व्रोन्स्की यह सोचने लगा कि
आज की बाकी शाम को कहां बिताये।

उसने अपनी कल्पना में उन जगहों के बारे में सोचा, जहां श
शाम बिता सकता था। "क्लब चला जाये? ताश की बाज़ी खे
इग्नातोव के साथ शैम्पेन पी जाये? नहीं, नहीं जाऊंगा। Château
des fleurs* वहां ओब्लोन्स्की मिल जायेगा, फ्रांसीसी गाने होंगे
cancan नाच होगा। नहीं, ऊब गया हूं इन सब चीज़ों से। श्चेर्बात्स्की
परिवार को इसलिये प्यार करता हूं कि खुद बेहतर हो जाता हूं। घर
जाता हूं।" वह सीधा द्यूस्सो के होटल में अपने कमरे में चला गया
खाना लाने का आदेश दिया और इसके बाद कपड़े उतारकर तकिये
पर सिर रखते ही सदा की भांति गहरी और चैन की नींद सो गया।

(१७)

अगले दिन सुबह के ग्यारह बजे व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग के स्टेशन पर माँ
से मिलने गया। बड़े जीने की सीढ़ियों पर जिस पहले आदमी से उसकी
मुलाकात हुई, वह ओब्लोन्स्की था जो इसी गाड़ी से अपनी बहन के
आने का इन्तज़ार कर रहा था।

---

* [illegible]

का नया भाव भी उसके मन को छू रहा था। "कही बड़ी मधुर बा
है कि न तो मैंने और न उसने ही कुछ कहा, किन्तु नज़रों और बा
के अन्दाज़ की इस अटूट बातचीत में हम एक-दूसरे को ऐसे सम
जाते हैं कि पहले की तुलना में आज यह कहीं अधिक स्पष्ट हो ग
कि वह मुझे प्यार करती है। और कितना माधुर्य, कितनी सादग
और सबसे बड़ी बात यह कि विश्वास है इसमें! मैं खुद अपने को क
में अच्छा और निर्मल अनुभव करता हूं। मैं महसूस करता हूं कि मे
सीने में दिल है और मुझमें बहुत कुछ अच्छा है। वे प्यारी और स्
में डूबी हुई आंखें! जब उसने कहा — और बहुत

"तो क्या बात है इसमें? कोई खास बात नहीं। मेरे लिये य
सुखद है और उसके लिये भी।" और व्रोन्स्की यह सोचने लगा कि
आज की बाकी शाम को कहां बिताये।

उसने अपनी कल्पना में उन जगहों के बारे में सोचा, जहां व
शाम बिता सकता था। "क्लब चला जाये? ताश की बाज़ी हो,
इग्नातोव के साथ शेम्पेन पी जाये? नहीं, नहीं जाऊंगा। Château
des fleurs*, वहां ओब्लोन्स्की मिल जायेगा, फ्रांसीसी गाने होंगे,
cancan नाच होगा। नहीं, ऊब गया हूं इन सब चीज़ों से। श्चेर्बात्स्की
परिवार को इसलिये प्यार करता हूं कि खुद बेहतर हो जाता हूं। घ
चलता हूं।" वह सीधा द्यूस्सो के होटल के अपने कमरे में चला ग
खाना लाने का आदेश दिया और उसके बाद कपड़े उतारकर तकिये
पर सिर रखते ही सदा की भांति गहरी और चैन की नींद सो गया।

(१७)

अगले दिन सुबह के ग्यारह बजे व्रोन्स्की पीटर्सबर्ग के स्टेशन पर म
को लिवाने गया। बड़े ज़ीने की पैड़ियों पर जिस पहले आदमी से उसकी
मुलाकात हुई, वह ओब्लोन्स्की था, जो इसी गाड़ी से अपनी बहन के
आने की राह देख रहा था।

---

* पेरिसी ढंग के अश्लील मनोरंजन का स्थान।

है लेकिन तुम्हें मालूम ही है कि वह मेरी रुचि के... not in my line*" व्रोन्स्की ने कहा।

"हां, वह बहुत बढ़िया आदमी है, कुछ रूढ़िवादी, मगर बढ़िया आदमी है," ओब्लोन्स्की ने कहा, "बढ़िया आदमी है।"

"बढ़िया है, तो अच्छी बात है," व्रोन्स्की ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "ओ, तुम आ गये," व्रोन्स्की ने मां के बूढ़े और लम्बे नौकर को सम्बोधित किया, जो दरवाजे के पास खड़ा था, "यहां, नौकर आ जाओ।"

ओब्लोन्स्की से सभी को प्राप्त होनेवाली सामान्य खुशी के अलावा व्रोन्स्की पिछले कुछ समय से उसके प्रति इसलिये भी विशेष लगाव महसूस करने लगा था कि वह कीटी का बहनोई था।

"तो क्या इतवार को उस सुन्दरी की दावत करेंगे?" व्रोन्स्की ने मुस्कराते हुए ओब्लोन्स्की की बांह में बांह डालते हुए पूछा।

"जरूर। मैं चन्दे जमा कर लूंगा। अरे हां, कल मेरे दोस्त लेविन से तुम्हारी जान-पहचान हुई न?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"सो तो जाहिर ही है। लेकिन वह कुछ जल्दी चला गया।"

"वह बहुत भला आदमी है," ओब्लोन्स्की ने कहा। "ठीक है न?"

"मैं कुछ कह नहीं सकता," व्रोन्स्की ने जवाब दिया, "मालूम नहीं क्यों सभी मास्कोवालों में, जाहिर है उनको छोड़कर, जिनसे बात कर रहा हूं," उसने मजाक में इतना और जोड़ दिया, "कुछ तुनकमिजाजी पाता हूं। वे मानो दुलत्तियां चलाते हैं, झल्लाते हैं, मानो हर वक्त कुछ महसूस करवाना चाहते हैं..."

"हां, यह तो है, सच, ऐसा तो है..." ओब्लोन्स्की ने खुशी से मुस्कराते हुए कहा।

"क्या जल्द ही आ रही है गाड़ी?" व्रोन्स्की ने एक रेलवे कर्मचारी से पूछा।

"गाड़ी पिछले स्टेशन से चल चुकी है," कर्मचारी ने जवाब दिया।

स्टेशन पर हो रही तैयारी और हलचल, कुलियों के इधर-उधर

---

* मेरी पसन्द के मुताबिक नहीं है। (अंग्रेजी)

उसकी इच्छा के विरुद्ध तनिक नजर आनेवाली मुस्कान में चमकती रही।

व्रोन्स्की डिब्बे मे दाखिल हुआ। काली आंखो और घुंघराले बालो वाली उसकी बहुत ही दुबली-पतली मा ने बेटे को गौर से देखते हुए आखे सिकोडी और अपने पतले होंठों मे जरा मुस्कराई। सोफे से उठने और नौकरानी को छोटा-सा थैला पकड़ाने के बाद उसने अपना छोटा-सा और सूखा हुआ हाथ बेटे की तरफ बढा दिया और फिर उसके सिर को अपने हाथ से उठाकर उसका मुह चूमा।

"तार मिल गया? ठीक-ठाक हो? भला हो भगवान का।"

"रास्ते मे कोई तकलीफ तो नही हुई?" बेटे ने उसके पास बैठते और अनचाहे ही दरवाजे के बाहर नारी-स्वर को सुनते हुए पूछा। उसे मालूम था कि यह उसी महिला की आवाज है, जिससे दरवाजे के करीब उसकी मुलाकात हुई थी।

"फिर भी मैं आपसे सहमत नही हू," महिला कह रही थी।

"पीटर्सबर्गी दृष्टि ठहरी, श्रीमती जी।"

"पीटर्सबर्गी नही, केवल नारी की दृष्टि," महिला ने जवाब दिया।

"अपना हाथ चूमने की अनुमति देने की कृपा करे।"

"नमस्ते, इवान पेत्रोविच। हा, और जरा देखिये, मेरा भाई भी यही कही होगा। उसे मेरे पास भेज दीजियेगा," महिला ने दरवाजे के करीब से कहा और फिर डिब्बे मे आ गयी।

"मिल गया आपका भाई?" व्रोन्स्की की बूढी मा ने महिला से पूछा।

व्रोन्स्की को अब तो याद आ गया कि यह कारेनिना है।

"आपका भाई यही है," व्रोन्स्की ने उठते हुए कहा। "माफी चाहता हू, मैं आपको पहचान नही सका। हा, और हमारी जान-पहचान भी तो इतनी थोडी-सी थी," व्रोन्स्की ने सिर झुका कर अभिवादन करते हुए कहा, "कि आपको निश्चय ही मेरा ध्यान नही होगा।"

"हा," महिला ने जवाब दिया, "लेकिन फिर भी मैंने आपको पहचान लिया होता, क्योंकि लगता है कि आपकी मा के साथ हम रास्ते भर आपकी ही चर्चा करती रही है," महिला ने कहा और

जितने साफ बात करने और खुश रहने में भी गुण मिलता है। हां, और अपने बेटे के बारे में परेशान नहीं हों – कभी तो उससे अलग भी होना चाहिये।

आन्ना निश्चल और बिल्कुल सीधी खड़ी थी और उसकी आंखें मुस्करा रही थी।

"आन्ना अर्काद्येव्ना का आठ साल का बेटा है," काउंटेस ने बेटे को बात साफ करते हुए बताया, "वह उससे कभी अलग नहीं हुई और इसीलिये परेशान है कि उसे वहां छोड़ आई।"

"हां, मैं रास्ते भर अपने बेटे और काउंटेस अपने बेटे की बातें करती रही हैं," कारेनिना ने कहा और फिर मुस्कान से – स्नेहपूर्ण मुस्कान से, जो व्रोन्स्की के लिये थी – उसका चेहरा चमक उठा।

"सम्भवत आपको इससे बहुत ऊब महसूस हुई होगी," व्रोन्स्की ने चुहलपन का यह गेंद, जो कारेनिना ने उसकी ओर फेंका था, फौरन लोकते हुए कहा। किन्तु वह स्पष्टत इसी अन्दाज में बातचीत जारी नहीं रखना चाहती थी और इसलिये बूढ़ी काउंटेस से बोली

"बहुत, बहुत धन्यवाद। मुझे तो पता भी नहीं चला कि कल का दिन कैसे बीत गया। नमस्ते, काउंटेस।"

"नमस्ते, मेरी प्यारी," काउंटेस ने जवाब दिया। "अपना यह प्यारा-सा मुखड़ा तो चूमने दीजिये। बड़ी-बूढ़ी के नाते साफ-साफ कहती हू कि मुझे तो आपसे प्यार हो गया है।"

यह वाक्य चाहे औपचारिक ही था, कारेनिना ने स्पष्टत इस पर सच्चे दिल से विश्वास कर लिया और खुश हुई। उसके चेहरे पर लाज की लाली दौड गयी, वह थोडा झुकी, अपना चेहरा काउंटेस के होठो के निकट ले गयी, फिर से सीधी हुई और उसी मुस्कान के साथ, जो होठो और आंखों के बीच थिरक रही थी, उसने व्रोन्स्की की ओर हाथ बढा दिया। व्रोन्स्की ने अपनी ओर बढे हुए छोटे-से हाथ से हाथ मिलाया और कारेनिना ने जिस उत्साह, ज़ोर तथा साहस के साथ उससे हाथ मिलाया, उससे उसे एक विशेष प्रकार की खुशी हुई। वह अपने खासे गदराये शरीर के बावजूद आश्चर्यचकित करनेवाली फुर्ती और हल्की चाल से बाहर चली गयी।

"बडी प्यारी है," बुढ़िया ने कहा।

के लिये वे गाडी के डिब्बे के करीब आकर खडे हो गये।

महिलाये डिब्बे मे चली गयी और व्रोन्स्की तथा ओब्लोन्स्की दुर्घटना का ब्योरा जानने के लिये लोगो के पीछे-पीछे हो लिये।

चौकीदार नशे मे धुत्त था या बहुत ज्यादा ठण्ड के कारण मुह-सिर को लपेटे हुए था और इसलिये उसने पीछे हटती गाडी की आवाज नही सुनी और वह उसके नीचे आकर कुचला गया।

व्रोन्स्की और ओब्लोन्स्की के लौटने के पहले ही महिलाओ ने बटलर मे ये सारी तफसीले जान ली थी।

ओब्लोन्स्की और व्रोन्स्की, दोनो ने ही बहुत बुरी तरह कुचली गयी वह लाश देखी थी। ओब्लोन्स्की साफ तौर पर बहुत दुखी था। उसके माथे पर बल पडे हुए थे और मानो रोने को तैयार था।

"ओह, कैसी भयानक बात हो गयी है! ओह, आन्ना, अगर तुमने देखी होती वह लाश! ओह, कैसी बुरी हालत है उसकी!" ओब्लोन्स्की ने कहा।

व्रोन्स्की चुप था और उसका सुन्दर चेहरा गम्भीर, किन्तु बिल्कुल शान्त था।

"ओह, अगर आपने उसे देखा होता, काउटेस," ओब्लोन्स्की बोला "और उसकी बीवी भी वहा है उसे देखकर तो दिल को कुछ होता है वह उसकी लाश पर जा गिरी। कहते है कि बहुत बडे परिवार का वही एक अन्नदाता था। है न यह भयानक बात?"

"क्या उसकी बीवी की कुछ मदद नही की जा सकती?" व्यथित फुसफुसाहट के साथ कारेनिना ने कहा।

व्रोन्स्की ने कारेनिना की तरफ देखा और उसी क्षण डिब्बे से बाहर चला गया।

"मै अभी आता हू maman," व्रोन्स्की ने दरवाजे पर पीछे मुडकर कहा।

व्रोन्स्की जब कुछ मिनट बाद लौटा, तो ओब्लोन्स्की काउटेस से नयी गायिका की चर्चा कर रहा था और काउटेस अपने बेटे की प्रतीक्षा करती हुई बेचैनी से दरवाजे की तरफ देख रही थी।

"तो आइये, अब चले," व्रोन्स्की ने डिब्बे मे लौटते हुए कहा।

साथ आगे-आगे चल रहा था और इनके पीछे कारेनिना और उसका भाई आ रहे थे। ये स्टेशन से बाहर निकल रहे थे, जब स्टेशन-मास्टर भागता हुआ व्रोन्स्की के पास पहुंचा।

"आपने मेरे सहायक को दो सौ रूबल दिये हैं। कृपया यह बता दीजिये कि वे किसके लिये हैं?"

"विधवा के लिये," व्रोन्स्की ने कंधे झटकते हुए जवाब दिया। "मेरी समझ मे नही आ रहा कि इसमे पूछने की बात ही क्या है।"

"आपने दिये हैं?" ओब्लोन्स्की ने पूछा और बहन का हाथ दबाकर इतना और जोड़ दिया "बहुत नेक काम किया, बहुत नेक! सच, बहुत भला आदमी है न यह? नमस्ते, काउंटेस।"

और बहन की नौकरानी को ढूंढते हुए ये दोनो यही रुक गये।

जब ये बाहर आये, तो व्रोन्स्की परिवार की बग्घी जा चुकी थी। स्टेशन से बाहर आते हुए लोग अभी भी दुर्घटना की चर्चा कर रहे थे।

"कैसी भयानक मौत हुई यह!" नजदीक से गुजरते हुए एक साहब ने कहा। "कहते हैं कि दो टुकड़े हो गये।"

"मेरे ख्याल मे तो यह सबसे आसान मौत थी, आन की आन मे काम तमाम," दूसरे व्यक्ति ने राय जाहिर की।

"ये लोग सावधानी क्यो नही बरतते," तीसरे ने कहा।

कारेनिना बग्घी मे बैठ गयी और ओब्लोन्स्की को यह देखकर हैरानी हुई कि आन्ना के होंठ कांप रहे हैं और बड़ी मुश्किल से वह अपने आंसुओं पर काबू पा रही है।

"क्या बात है आन्ना?" कुछ दूर जाने पर भाई ने पूछा।

"यह बहुत बुरा शगुन है," बहन ने जवाब दिया।

"कैसी बेकार की बाते कर रही हो!" ओब्लोन्स्की ने कहा। "तुम आ गयीं, यही सबसे बड़ी बात है। तुम तो कल्पना भी नही कर सकती कि मैं तुम पर कितनी उम्मीद लगाये हूं।"

"क्या बहुत अर्से से जानते हो तुम व्रोन्स्की को?" आन्ना ने पूछा।

"हां। जानती हो, हमें आशा है कि वह कीटी से शादी कर लेगा।"

"अच्छा?" आन्ना ने धीरे से कहा। "आओ, अब तुम्हारे बारे

कहा। "जरूर जानती है," आन्ना के चेहरे पर सहानुभूति का भाव देखकर डौली ने सोचा। "चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे में पहुंचा आऊं," डौली ने मामले के स्पष्टीकरण के क्षण को यथासम्भव टालने का यत्न करते हुए अपनी बात जारी रखी।

'यह ग्रीशा है क्या? हे भगवान, कितना बड़ा हो गया!' आन्ना ने कहा और उसे चूमा। उसकी नजर डौली के चेहरे पर ही जमी हुई थी। वह रुकी और लज्जारुण होते हुए बोली "नहीं, कृपया, तुम मुझे अभी कहीं भी जाने को न कहो।"

आन्ना ने अपना दुपट्टा और टोपी उतारी और अपने सभी ओर लहराती बालों बालों की लटें उसमें उलझ जाने पर सिर को इधर-उधर हिलाते-डुलाते हुए उन्हें टोपी से छुड़ाया।

"तुम तो सुख और स्वास्थ्य से चमचमा रही हो!" डौली ने लगभग ईर्ष्या से कहा।

"मैं? हां," आन्ना ने जवाब दिया। "हे भगवान, यह तान्या है! मेरे सेर्योभा की हमउम्र," भागकर कमरे में आनेवाली बालिका को सम्बोधित करते हुए उसने इतना और जोड़ दिया। आन्ना ने बालिका को गोद में ले कर चूमा। "बहुत अच्छी, बहुत ही प्यारी बच्ची है! मुझे सभी बच्चे दिखाओ।"

आन्ना ने केवल उनके नाम ही नहीं लिये, बल्कि उनके जन्म के सालों, महीनों, उनके स्वभावों और इस बात का भी जिक्र किया कि उन्हें कब और कौन-सा रोग हुआ था और डौली उसकी ऐसी दिलचस्पी के लिये आभारी हुए बिना न रह सकी।

"तो आओ, उनके कमरे में चलें," डौली ने कहा। "अफसोस की बात है कि वास्या इस वक्त सो रहा है।"

बच्चों से मिलने के बाद वे दोनों अकेली ही मेहमानखाने में आ बैठीं। उनके सामने कॉफी थी। आन्ना ने ट्रे को अपनी ओर खींचा, मगर फिर परे खिसका दिया।

"डौली," वह बोली, "उसने मुझे सब कुछ बता दिया है।"

डौली ने रूखेपन से आन्ना की तरफ देखा। उसे उम्मीद थी कि अब वह सहानुभूति के ढोंग भरे वाक्य कहेगी, लेकिन आन्ना ने ऐसा कुछ नहीं किया।

अर्कादयेविच ने मुझे कुछ भी नही बताया। तुम विश्वास नहीं करोगी, लेकिन मैं अभी तक ऐसा सोचती थी कि मेरे सिवा और किसी औरत से उसका निकट सम्बन्ध नही रहा। मैं आठ साल तक ऐसे ही जीती रही। तुम इस बात को समझो कि मैं न सिर्फ बेवफ़ाई के बारे में शक तक नही करती थी, बल्कि इसे असम्भव मानती थी। और तुम कल्पना करो कि इस तरह के विचार रखते हुए अचानक ऐसी भयानक बात, ऐसी गन्दगी का पता चले, तो तुम मुझे समझो। किसी को पूरी तरह से अपने सुख का विश्वास हो और अचानक. ." अपनी सिसकियो पर काबू पाते हुए डौली कहती गयी, —"...खत मिले.. उसकी प्रेमिका, मेरे बच्चों की शिक्षिका के नाम लिखा हुआ उसका खत मिले। नही, यह तो बहुत ही भयानक बात है!" उसने जल्दी से रूमाल निकाला और उससे अपना मुह ढक लिया। "मैं क्षणिक दीवानगी को भी समझ सकती हू," तनिक चुप रहने के बाद वह कहती गयी, "लेकिन सोच-समझकर और चालाकी से मुझे धोखा देना सो भी किसके फेर मे पडकर? फिर उसके साथ-साथ मेरा पति भी बने रहना वडी भयानक बात है यह! तुम इसे नही समझ सकती ."

"ओह, समझती क्यो नही, समझती हू! समझती हूं, मेरी प्यारी डौली, समझती हू," उसका हाथ दबाते हुए आन्ना ने कहा।

"और तुम्हारे ख्याल मे वह मेरी स्थिति की सारी भयानकता को समझता है?" डौली कहती गयी। "जरा भी नही! वह सुखी है, मजे मे है।"

"ओह, नही!" आन्ना ने जल्दी से उसे टोका। "वह बहुत दुखी है, पश्चाताप से कुचला हुआ है..."

"वह पश्चाताप कर भी सकता है?" ननद के चेहरे को बहुत गौर से देखते हुए डौली ने उसकी बात काटी।

"हा, मैं उसे जानती हू। उसे देखकर मुझे बरबस दया आती थी। हम दोनों ही उसे जानती हैं। वह दयालु, किन्तु गर्वीला है और अब इतना तिरस्कृत है . मुख्य बात तो वह है, जिसने मेरे दिल को सबसे ज्यादा छू लिया (यहा आन्ना ने उस मुख्य बात का अनुमान लगा लिया, जो डौली के मन को छू सकती थी) . दो चीजे उसे

इतनी मुसीबत उठाती हू ? क्या लेना-देना है मुझे बच्चो से ? सबसे भयानक बात तो यह है कि मेरी आत्मा मे आमूल परिवर्तन हो गया है और उसके लिये प्यार तथा कोमलता की जगह मेरे दिल मे केवल क्रोध हां, क्रोध ही रह गया है। मैंने तो उसकी हत्या कर दी होती और "

'मेरी प्यारी डौली, मैं सब कुछ समझती हू, लेकिन तुम अपने को ऐसे यातना नही दो। तुम्हे इतनी ठेस लगी है, तुम इतनी ज्यादा परेशान हो कि बहुत कुछ सही रूप मे नही देख पा रही हो।"

डौली शान्त हो गयी और ये दोनो कोई दो मिनट तक खामोश रही।

क्या किया जाये, तुम सोचो मदद करो, आन्ना। मैं तो बहुत सोच चुकी हू और मुझे तो कुछ भी नही सूझता।"

आन्ना को भी कोई रास्ता नजर नही आ रहा था, मगर भाभी का हर शब्द उसके चेहरे का हर भाव उसके मन को छू रहा था।

मैं एक बात कहूगी " आन्ना ने कहना शुरू किया, "मैं उसकी बहन हू मैं उसका स्वभाव जानती हू, जानती हू कि वह सब कुछ, हर चीज को भूल सकता है (उसने माथे की ओर सकेत किया), पूरी तरह किसी चीज मे डूब सकता है लेकिन पूरी तरह पछता भी सकता है। अब वह विश्वास ही नही करता, यह समझ नही पाता कि जो कुछ उसने किया है वह कैसे कर पाया।"

नही वह समझता है तब भी समझता था!" डौली ने उसकी बात काटी। 'लेकिन मैं तुम मुझे भूल जाती हो क्या मुझ पर भारी नही गुजर रही है ?"

'बस बस। मैं तुम्हारे सामने स्वीकार करती हू कि जब उसने मुझसे यह चर्चा की थी तो मैं तुम्हारी स्थिति की पूरी भयानकता को [illegible] नहीं समझ पायी थी। सब सिर्फ वही मेरे सामने था और यह कि परिवार टूटा जा रहा है। मुझे उस पर तरस आता था, लेकिन तुमसे बात करने पर मैं नारी के नाते दूसरी चीज देख रही हू। मैं तुम्हारा [illegible] देख रही हू और कह नही सकती कि कितना अफसोस [illegible] है मुझे तुम्हारे लिए। मेरी प्यारी डौली, मैं तुम्हारे दुख को [illegible] समझती हू लेकिन एक बात मैं नही जानती – मैं

दिया होता और ऐसे क्षमा कर दिया होता मानो कुछ हुआ ही न हो, बिल्कुल ही कुछ न हुआ हो।"

"सो तो जाहिर ही है," डौली ने झटपट बात का तार जोड़ा, मानो वही बात कह रही हो, जो अनेक बार सोच चुकी हो, "नहीं तो यह क्षमा करना ही न होता। अगर क्षमा किया जाये, तो पूरी तरह, पूरी तरह। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे में पहुंचा आऊं," डौली ने उठते हुए कहा और रास्ते में आन्ना को बांहों में भरकर बोली "कितनी खुश हूं मैं, मेरी प्यारी कि तुम आ गयी। मेरा मन हल्का हो गया, बहुत हल्का हो गया।"

(२०)

आन्ना ने यह सारा दिन घर पर यानी ओब्लोन्स्की परिवार में ही बिताया और किसी से भी नहीं मिली, यद्यपि उसके कुछ परिचित उसके आने की खबर सुनकर इसी दिन मिलने चले आये थे। आन्ना ने पूरी सुबह डौली और बच्चों के साथ बितायी। हां, उसने अपने भाई को केवल यह रुक्का लिख भिजवाया कि वह दोपहर का खाना जरूर घर पर ही खाये। "आओ, भगवान कृपा करेंगे," उसने लिखा था।

ओब्लोन्स्की ने घर पर ही खाना खाया। आम बातचीत होती रही, बीवी उसे "तुम" कहते हुए बात करती रही, जैसा कि पिछले दिनों में नहीं होता था। पति-पत्नी के सम्बन्धों में पहले जैसा परायापन बना रहा, लेकिन अब अलग होने की चर्चा नहीं रही थी और इसलिये ओब्लोन्स्की को अपनी सफाई पेश करने और सुलह होने की सम्भावना दिखाई देती थी।

दोपहर के खाने के फौरन बाद ही कीटी आ गयी। वह आन्ना को जानती थी, लेकिन बहुत कम और दिल में यह डर लिये हुए बहन के घर आई थी कि पीटर्सबर्ग के ऊंचे समाज की यह महिला, जिसकी सभी तारीफ करते थे, उसके साथ कैसे पेश आयेगी। लेकिन वह आन्ना को पसन्द आई, कीटी ने यहां आते ही यह अनुभव कर लिया। स्पष्टतः आन्ना कीटी के सौन्दर्य और जवानी पर मुग्ध थी तथा कीटी को तो पता भी नहीं चला और उसने अपने को न केवल आन्ना

"उसी तरह सब उसी तरह है, जैसे हम चाहते हैं," आन्ना ने धीमे स्वर में बैठे हुए कहा।

कीटी ने फिर से अपना सिर उसके हाथ के नीचे रख दिया और उसके कन्धे के पास सिर सटाकर नई तरह खुशी से खिल उठा।

"तो बॉल कब है?" आन्ना ने कीटी से पूछा।

"अगले हफ्ते और सो भी बहुत शानदार। उन बॉलों में से एक जिनमें हमेशा बड़ा मजा रहता है।"

"ऐसे बॉल भी हैं, जिनमें हमेशा बड़ा मजा रहता है?" कुछ मधुर व्यंग्य के साथ आन्ना ने कहा।

"बड़ी अजीब बात है, फिर भी ऐसे बॉल हैं। बोब्रीश्चेव के यहां हमेशा खुशी से झिलमिलाता बॉल होता है, निकीतिन के यहां भी, लेकिन मेज्कोव के यहां नीरस मामला रहता है। आपने ऐसा महसूस नहीं किया?"

"नहीं, मेरी प्यारी, मेरे लिये अब ऐसे बॉल नहीं रहे, जहां मुझे मजा आये," आन्ना ने कहा और कीटी को उसकी आंखों में उस विशेष दुनिया की झलक मिली, जो उसके लिये अभी तक खुली नहीं थी। "मेरे लिये ऐसे बॉल तो जरूर हैं, जहां मुझे परेशानी और ऊब अनुभव होती है..."

"आपको बॉल में ऊब कैसे अनुभव हो सकती है?"

"क्यों मुझे ऊब अनुभव नहीं हो सकती?" आन्ना ने पूछा।

कीटी ने ताड़ लिया कि इसका क्या जवाब होना चाहिये, आन्ना यह जानती है।

"इसलिये कि आप हमेशा सबसे बढ़-चढ़कर होती हैं।"

आन्ना शर्म से लाल होना जानती थी। वह लज्जारुण हो गयी और बोली

"पहली बात तो यह है कि ऐसा कभी नहीं होता। दूसरे, अगर ऐसा होता भी, तो क्या जरूरत है मुझे इसकी?"

"आप इस बॉल में जायेंगी न?" कीटी ने पूछा।

"मेरे ख्याल में तो न जाना ठीक नहीं होगा। लो, यह ले लो," उसने तान्या से कहा, जो आन्ना की गोरी और सिरे पर पतली उंगली से आसानी से निकलनेवाली अंगूठी निकाल रही थी।

गयी, "व्रोन्स्की से मेरी रेलवे स्टेशन पर मुलाकात हुई थी।
"ओह, तो वह वहा गया था?" कीटी ने शर्म से लाल हो
हुए पूछा। "स्तीवा ने क्या बताया है आपसे?"
"स्तीवा ने मुझे सब कुछ बता दिया है। मुझे तो बहुत ही खु
होगी। मैं कल व्रोन्स्की की मा के साथ ही गाडी में आई थी," आ
ने अपनी बात जारी रखी, "और मा लगातार उसी की चर्चा कर
रही। वह उसका चहेता बेटा है। बेशक मैं यह जानती हूं कि मात
कितनी पक्षपातपूर्ण होती हैं, लेकिन "
"उसकी मा ने क्या बताया आपको?"
"ओह, बहुत कुछ! मैं जानती हू कि वह मा का चहेता
है, फिर भी यह साफ नजर आता है कि उसमे एक सूरमा के स
है मिसाल के लिये, उसकी मा ने बताया कि उसने अपनी स
सम्पत्ति भाई को देनी चाही थी, कि उसने बचपन मे ऐसा ही
दूसरा असाधारण कारनामा किया था, किसी औरत को डूबने
बनाया था। थोडे मे यह कि हीरो है," आन्ना ने मुस्कराते और
दो सौ रूबलों के बारे में याद करते हुए कहा, जो उसने स्टेशन
दिये थे।
लेकिन इन दो सौ रूबलों का उसने जिक्र नही किया। न
क्यों उसे यह याद आने पर कुछ बुरा-सा महसूस हुआ। उसे अ
हुआ कि इस किस्से में उससे सम्बन्ध रखनेवाला भी कुछ था और
भी ऐसा जो नहीं होना चाहिये था।
उसकी मा ने मुझसे अपने यहा आने का बहुत अनुरोध
था आन्ना कहती गयी, "मुझे बुढ़िया से मिलकर बहुत खुशी
और मैं कल उसके पास जाऊगी। लेकिन खैर, भला हो भगवान
स्तीवा देर तक डौली के कमरे म ही रुका हुआ है," आन्ना ने,
कि कीटी को लगा किसी कारणवश असन्तोष से उठते और बा
का विषय बदलते हुए कहा।
"नहीं, मैं पहले! नहीं, मैं!" चाय खत्म करके दूध पी
भागते हुए बच्चे चिल्ला रहे थे।
"सभी एक साथ!" आन्ना ने कहा और हसती हुई
तरफ भाग चली, सबको लिये बाहें फैला दी और खुशी

गुड़ पत्ते जाओगे और यह सब कुछ गड़बड़ भला कर देगा," डौली जब यह कह रही थी तो उसके होंठों के कोनों पर आदत के मुताबिक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान झलक उठी।

पूरी पूरी सुलह हो गयी, ' आन्ना ने सोचा, "सुड है सुड का!" और इस बात से खुश होते हुए कि वह इस सुलह का आधार है उसने डौली के करीब जाकर उसे चूम लिया।

कतई ऐसी बात नहीं है। तुम मुझे और माल्वेई को इतना गया-बीता क्यों मानती हो? ओब्लोन्स्की ने हल्की मुस्कान के साथ पत्नी को सम्बोधित करते हुए जवाब दिया।

हमेशा की तरह डौली सारी शाम पति के सामने में हल्की चुटकियां लेती रही और ओब्लोन्स्की खुश तथा रंग में बना रहा, किन्तु उस हद तक ही, जिससे यह जाहिर न हो कि अब माफ कर दिये जाने पर वह अपना कसूर भूल गया है।

ओब्लोन्स्की परिवार में चाय की मेज के गिर्द चल रही शाम की बहुत ही सुखद और मनोरंजक पारिवारिक बातचीत में एक अत्यन्त साधारण घटना से बाधा पड़ गयी। किन्तु न जाने क्यों, यह साधारण घटना सभी को बड़ी अजीब-सी लगी। पीटर्सबर्ग के साझे परिचितों की चर्चा करते हुए आन्ना जल्दी से उठी।

"उसका फोटो मेरे एल्बम में है," वह बोली, "हां, और साथ ही मैं अपना सेर्योझा भी आपको दिखा दूंगी," उसने मां की गर्वीली मुस्कान के साथ इतना और जोड़ दिया।

आन्ना आम तौर पर रात के दस बजे के करीब बेटे से रात भर के लिये जुदा होती थी और खुद बॉल में जाने के पहले अक्सर उसे सोने के लिये बिस्तर पर लिटा देती थी। आज इसी वक्त उसका मन उदास हो गया, क्योंकि वह उससे इतनी दूर थी और चाहे कोई भी बात क्यों न होती रहती, वह मन ही मन घुंघराले बालों वाले अपने सेर्योझा के बारे में ही सोचने लगती। उसका मन हुआ कि बेटे का फोटो देखे और उसकी चर्चा करे। इसकी सम्भावना मिलते ही वह उठी और अपनी फुर्तीली तथा दृढ़ चाल से एल्बम लाने चल दी। उसके कमरे की ओर ऊपर जानेवाला जीना घर के बड़े गर्म जीने के चबूतरे से शुरू होता था।

इसमे कोई असाधारण या अजीब बात नही थी कि कोई व्यक्ति रात के साढे नौ बजे अगले दिन की जानेवाली दावत की तफ़सील जानने के लिये दोस्त के यहा चला आया और भीतर आने को राज़ी नहीं हुआ। लेकिन सभी को यह अजीब-सा प्रतीत हुआ। आन्ना को ही यह सबसे ज्यादा अजीब और अटपटा लगा।

(२२)

अपनी मा के साथ कीटी जब फूलो से सजे और रोशनी से नहाये बडे जीने पर पहुची, जिसके दोनो ओर पाउडर लगाये और लाल कुर्ते पहने नौकर खडे थे, तो बॉल शुरू ही हुआ था। कमरो से चलने-फिरने की मक्खी के छत्ते जैसी समलय की सरसराहट सुनायी दे रही थी। जब तक मा-बेटी ने जीने के निकट वृक्षो के बीच दर्पण के सामने खडे होकर अपना केश-विन्यास और पोशाके ठीक की, हॉल से आर्केस्ट्रा की वायलिनो की सधी-स्पष्ट आवाज सुनाई दी और पहला वाल्ज़ नृत्य शुरू हुआ। एक नाटा-सा गैरफौजी बूढा, जो दूसरे दर्पण के सामने खडा हुआ अपनी पकी कनपटियो को ठीक कर रहा था और इत्र से महक रहा था, सम्भवत अपरिचित कीटी को मुग्ध होकर देखता हुआ जीने पर इनसे टकराया और एक ओर को हट गया। बिना दाढी के एक तरुण, ऊचे समाज के उन तरुणो मे से एक ने, जिन्हे बूढे प्रिंस श्चेर्बात्स्की ने "बाके-छैलो" की सज्ञा दी थी, बहुत ही खुली वास्केट पहने और चलते-चलते ही अपनी सफेद टाई को ठीक करते हुए इन दोनो का अभिवादन किया, पास से भागता हुआ निकल गया, लौटा और कीटी को काड्रिल नाच नाचने के लिये आमन्त्रित किया। पहला काड्रिल नाचने का वचन तो वह व्रोन्स्की को दे चुकी थी और इसलिये इस तरुण के साथ उसने दूसरा काड्रिल नाचने का वादा किया। दस्ताने के बटन बन्द करता हुआ फौजी अफसर दरवाजे के करीब एक तरफ को हट गया और मूछो पर हाथ फेरता हुआ गुलाब की तरह खिली कीटी को मुग्ध होकर देखता रहा।

इस बात के बावजूद कि बॉल के लिये पोशाक, केश-विन्यास और बाकी सारी तैयारी के काम मे कीटी को बडी मेहनत करनी पडी थी,

बहुत गुभ-बूझ से काम लेना पड़ा था, अब यह गुलाबी अस्तर और रेशम की जाली वाले अपने मर्ज़ीले फ्राक में ऐसी स्वाभाविकता और सरलता से बॉल में जा रही थी मानों गुलाब के आकृतिवाले आभूषणों, लैसों, पोशाक की सभी छोटी-मोटी चीज़ों पर उसने और उसके घर के सभी लोगों ने ज़रा भी वक्त न सर्फ किया हो, मानो वह रेशम की जाली वाली इस पोशाक और लैसों में, चोटी पर गुलाब तथा दो पत्तियों वाले ऊंचे केश-विन्यास में ही जन्मी हो।

हॉल में दाखिल होने के पहले बूढ़ी प्रिंसेस ने जब कीटी की पेटी का तनिक मुड़ जानेवाला फीता ठीक करना चाहा, तो वह ज़रा एक तरफ को हट गयी। वह अनुभव कर रही थी कि उसके शरीर पर हर चीज़ अपने आप ही सुन्दर और मनोरम होनी चाहिये तथा कुछ भी ठीक-ठाक करने की ज़रूरत नहीं है।

कीटी के लिये यह एक सबसे सुखद दिन था। फ्राक कहीं पर भी तंग नहीं था, लैस कहीं पर ढीली नहीं थी, पोशाक के सजावटी गुलाब कहीं भी मुड़े-मुड़ाये नहीं थे, टूटकर गिरे नहीं थे, वक्ररेखा वाली ऊंची एड़ी के सेंडल पांव नहीं दबाते थे, बल्कि चैन दे रहे थे। सुनहरे बालों का घना जूड़ा छोटे-से सिर पर स्वाभाविक लग रहा था। उसके हाथ पर चढ़े हुए लम्बे दस्ताने के तीनों बटन बन्द हो गये थे, टूटे नहीं थे और दस्ताने से उसके हाथ की बनावट में अन्तर नहीं आया था। लॉकेट का काला मखमली फीता तो विशेष रूप से गर्दन की शोभा बढ़ा रहा था। बहुत ही प्यारा था यह फीता और घर पर दर्पण में अपनी गर्दन को देखते हुए उसे लगा था मानो यह फीता बोलता हो। बाकी सभी चीज़ों के बारे में तो सन्देह हो सकता था, लेकिन फीता बहुत ही प्यारा था। यहां बॉल में भी इसे दर्पण में देखकर कीटी मुस्करा दी। कीटी अपने उघाड़े कंधों और बांहों पर संगमरमर की सी ठण्डक महसूस कर रही थी। यह अनुभूति कीटी को विशेषतः बहुत प्रिय थी। आंखें चमक रही थीं और लाल होंठ अपने आकर्षण की चेतना से मुस्कराये बिना नहीं रह सकते थे। उसके हॉल में दाखिल होते ही और नृत्य के निमन्त्रण की प्रतीक्षा कर रही रेशम की जाली, फीता और लैसों वाली महिलाओं की रंग-बिरंगी भीड़ (कीटी कभी इस भीड़ में खड़ी नहीं होती थी) तक पहुंचने के पहले ही उसे वाल्ज़ नाच

लिये आमन्त्रित कर लिया गया। उसे निमन्त्रित भी किया नाच के सर्वश्रेष्ठ साथी, बॉलों के प्रमुख नायक, बॉलो के जाने-माने निदेशक, कार्यक्रम के सचालक, विवाहित, सुन्दर और सुडौल मर्द येगोर कोर्सून्स्की ने। काउटेस बानिना के साथ अभी-अभी वाल्ज नृत्य का पहला चक्र समाप्त करने के बाद उसने अपने साम्राज्य यानी नाच के लिये मैदान मे आ चुके कुछ जोडो पर नजर डाली, हॉल मे दाखिल होती कीटी की तरफ देखा और उस विशेष चुस्त-फुर्तीली चाल से उसकी ओर भागकर गया, जो बॉलो के निदेशको का ही विशेष लक्षण है, सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और यह पूछे बिना ही कि वह नाचना चाहती है या नही, उसकी पतली कमर के गिर्द डालने के लिये अपनी बाह बढा दी। कीटी ने इधर-उधर नजर घुमाई कि अपना पखा किसे दे और गृह-स्वामिनी ने उसकी ओर मुस्कराकर पखा ले लिया।

"कितनी अच्छी बात है कि आप वक्त पर आ गयीं," कीटी की कमर के गिर्द बाह डालते हुए उसने कहा, "वरना यह भी क्या ढग है लोगो का देर से आने का।"

कीटी ने अपना बाया हाथ उसके कधे पर रख दिया और गुलाबी सेडलो मे उसके छोटे-छोटे पाव तख्तो के चिकने फर्श पर सगीत की लय के साथ तेजी, फुर्ती और नपी-तुली गति से थिरकने लगे।

"आपके साथ वाल्ज नाचते हुए तो बडा चैन मिलता है," वाल्ज के आरम्भिक कदम उठाते हुए उसने कीटी से कहा। "कमाल है, कितना हल्का-फुल्कापन है, कितनी précision* है," उसने कीटी से भी वही कहा, जो अपने साथ नाचनेवाली सभी अच्छी परिचितो से कहा करता था।

कीटी उसकी प्रशसा से मुस्करा दी और उसके कधे के ऊपर से हॉल मे नजर दौडाती रही। वह बॉल मे पहली बार आनेवाली नहीं थी, जिसके लिये सभी चेहरे एक जादुई प्रभाव का रूप ले लेते हैं, वह बॉलो मे इतनी अधिक जा चुकनेवाली लडकी भी नहीं थी कि बॉल के सभी चेहरो से उसका मन ऊब गया हो। वह इन दोनो के बीच

---

* अचूकता। (फ्रासीसी)

की थी। वह उत्तेजित भी थी और साथ ही अपने पर इतना नियन्त्रण भी कर सकती थी कि इधर-उधर देख सके। हॉल के बायें कोने में उसे समाज के सबसे महत्त्वपूर्ण लोग जमा दिखाई दिये। वहा कोर्सून्स्की की बीवी, औचित्य की सीमा से कही अधिक उघाड़े अंगो वाली बहुत सुन्दर लिदी थी, गृह-स्वामिनी थी, क्रीविन भी जो हमेशा समाज के सब से महत्त्वपूर्ण घेरे में रहता था, अपनी चांद की चमक दिखा रहा था। तरुण लोग उधर देख रहे थे, किन्तु उनके निकट जाने की हिम्मत नही कर पा रहे थे। वही उसने नज़रो से स्तीवा को ढूढ लिया और उसके बाद वही उसे काले मखमली फ्राक में आन्ना की सुन्दर आकृति तथा सिर दिखाई दिया। 'वह' भी वही था। कीटी ने उस शाम के बाद, जब उसने लेविन का प्रस्ताव ठुकराया था उसे नही देखा था। अपनी तेज़ नज़र से कीटी ने उसे फौरन पहचान लिया और यह भी देख लिया कि वह उसकी तरफ देख रहा है।

"क्या ख्याल है, एक और चक्र हो जाये? आप थकी तो नही?" कोर्सून्स्की ने थोड़ा हाफते हुए पूछा।

"नही, धन्यवाद।"

"तो कहा पहुचा दू आपको?"

"लगता है कि कारेनिना यही है उसी के पास पहुचा दीजिये मुझे।"

"जैसा चाहें।"

और कोर्सून्स्की अपनी गति धीमी करके नाच जारी रखता तथा "pardon, mesdames, pardon, pardon, mesdames"* कहता हुआ हॉल के बाये कोने की भीड की ओर बढ चला तथा लैसों, रेशम की जालीवाली पोशाको और फीतो के बीच से रास्ता बनाता और कही भी अटके-भटके बिना उसने अपनी नृत्य-सगिनी को ऐसे ज़ोर से घुमाया कि जालीदार जुर्राबो मे उसकी टागे झलक उठी तथा पोशाक के लटकते हुए दामन ने फहरकर क्रीविन के घुटनो को ढक दिया। कोर्सून्स्की ने सिर झुकाया, सीधा हुआ और कीटी का हाथ थाम लिया ताकि उसे आन्ना के पास पहुचा दे। गालो पर लालिमा लिये कीटी ने अपनी पोशाक का लटकता दामन क्रीविन के घुटनो

---

* [illegible] करे, श्रीमती। ([illegible]

लिये आमन्त्रित कर लिया गया। उसे निमन्त्रित भी किया नाच के सर्वश्रेष्ठ साथी, बॉलो के प्रमुख नायक, बॉलो के जाने-माने निदेशक, कार्यक्रम के संचालक, विवाहित, सुन्दर और सुडौल मर्द येगोर कोर्सून्स्की ने। काउंटेस बानिना के साथ अभी-अभी वाल्ज नृत्य का पहला चक्र समाप्त करने के बाद उसने अपने साम्राज्य यानी नाच के लिये मैदान में आ चुके कुछ जोड़ों पर नज़र डाली, हॉल में दाखिल होती कीटी की तरफ़ देखा और उस विशेष चुस्त-फुर्तीली चाल से उसकी ओ भागकर गया, जो बॉलो के निदेशकों का ही विशेष लक्षण है, सि झुकाकर उसका अभिवादन किया और यह पूछे बिना ही कि व नाचना चाहती है या नहीं, उसकी पतली कमर के गिर्द डालने के लि अपनी बांह बढ़ा दी। कीटी ने इधर-उधर नज़र घुमाई कि अपन पंखा किसे दे और गृह-स्वामिनी ने उसकी ओर मुस्कराकर पंखा ले लिया।

"कितनी अच्छी बात है कि आप वक़्त पर आ गयीं," कीटी की कमर के गिर्द बांह डालते हुए उसने कहा, "वरना यह भी क्या ढंग है लोगों का देर से आने का।"

कीटी ने अपना बायां हाथ उसके कंधे पर रख दिया और गुलाबी सैंडलों में उसके छोटे-छोटे पांव तख़्तों के चिकने फ़र्श पर संगीत की लय के साथ तेज़ी, फुर्ती और नपी-तुली गति से थिरकने लगे।

"आपके साथ वाल्ज नाचते हुए तो बड़ा चैन मिलता है," वाल्ज के आरम्भिक क़दम उठाते हुए उसने कीटी से कहा। "कमाल है, कितना हल्का-फुल्कापन है, कितनी précision* है," उसने कीटी से भी वही कहा, जो अपने साथ नाचनेवाली सभी अच्छी परिचितों से कहा करता था।

कीटी उसकी प्रशंसा से मुस्करा दी और उसके कंधे के ऊपर से हॉल में नज़र दौड़ाती रही। वह बॉल में पहली बार आनेवाली नहीं थी, जिसके लिये सभी चेहरे एक जादुई प्रभाव का रूप ले लेते हैं, वह बॉलों में इतनी अधिक जा चुकनेवाली लड़की भी नहीं थी कि बॉल के सभी चेहरों से उसका मन ऊब गया हो। वह इन दोनों के बीच

---

* अचूकता। (फ्रांसीसी)

की थी। वह उत्तेजित भी थी और साथ ही अपने पर इतना नियन्त्रण भी कर सकती थी कि इधर-उधर देख सके। हॉल के बाये कोने मे उसे समाज के सबसे महत्त्वपूर्ण लोग जमा दिखाई दिये। वहा कोर्सून्स्की की बीवी, औचित्य की सीमा से कही अधिक उघाडे अगो वाली बहुत सुन्दर लिदी थी, गृह-स्वामिनी थी, क्रीविन भी जो हमेशा समाज के सब से महत्त्वपूर्ण घेरे मे रहता था, अपनी चाद की चमक दिखा रहा था। तरुण लोग उधर देख रहे थे, किन्तु उनके निकट जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। वही उसने नज़रो से स्तीवा को ढूढ लिया और उसके बाद वही उसे काले मखमली फ्राक मे आन्ना की सुन्दर आकृति तथा सिर दिखाई दिया। 'वह' भी वही था। कीटी ने उस शाम के बाद, जब उसने लेविन का प्रस्ताव ठुकराया था उसे नही देखा था। अपनी तेज़ नज़र से कीटी ने उसे फौरन पहचान लिया और यह भी देख लिया कि वह उसकी तरफ देख रहा है।

"क्या ख्याल है, एक और चक्र हो जाये? आप थकी तो नही?" कोर्सून्स्की ने थोडा हाफते हुए पूछा।

"नही, धन्यवाद।"

"तो कहा पहुचा दू आपको?"

"लगता है कि कारेनिना यही है... उसी के पास पहुचा दीजिये मुझे।"

"जैसा चाहे।"

और कोर्सून्स्की अपनी गति धीमी करके नाच जारी रखता तथा "pardon, mesdames, pardon, pardon, mesdames"* कहता हुआ हॉल के बाये कोने की भीड़ की ओर बढ चला तथा रेशम की जालीवाली पोशाको और फ़ीतो के बीच मे रास्ता बनाता और कही भी अटके-भटके बिना उसने अपनी नृत्य-सगिनी को इसे ज़ोर से घुमाया कि जालीदार जुर्राबो मे उसकी टागे झलक उठी तथा पोशाक के लटकते हुए दामन ने फहराकर क्रीविन के घुटनो को ढक दिया। कोर्सून्स्की ने सिर झुकाया, सीधा हुआ और कीटी का हाथ थाम लिया ताकि उसे आन्ना के पास पहुचा दे। [illegible] लिये कीटी ने अपनी पोशाक का लटकता दामन क्रीविन के घुटने [illegible]

---

* क्षमा कीजिये, श्रीमती, क्षमा करे, क्षमा करे [illegible]

से हटाया और सिर को तनिक चकराता-सा अनुभव करते हुए आन्ना को खोजने के लिये इधर-उधर नजर दौड़ाई। आन्ना बैगनी पोशाक में नही थी, जैसा कि कीटी बहुत चाहती थी। वह गले की नीची काटवाला काला मखमली फ्राक पहने थी, जिसमे उसके मानो पुराने हाथी दांत को काटकर बनाये गये सुघड और गदराये हुए कंधे तथा उरोज, पतली, छोटी-सी कलाई और गोल हाथ नजर आ रहे थे। सारा फ्राक वेनिस की लैस से सजा हुआ था। उसके काले बालों में, जिनमे किसी तरह के दूसरे बालो की मिलावट नही थी, पेन्सी फूलो का छोटा-सा हार सजा था और ऐसा ही एक हार सफेद लैसों के बीच पेटी की काले फ़ीते की शोभा बढा रहा था। उसका केश-विन्यास ऐसा नहीं था, जो नजर मे आये, मगर दूसरो का ध्यान खीचती थी घुंघराले बालो की वे धृष्ठ लटे, जो गुद्दी तथा कनपटियो पर हमेशा लहराती रहती थीं। उसकी मजबूत और सुघड गर्दन मे मोतियों की लडी थी।

कीटी हर दिन आन्ना को देखती रही थी, उसे प्यार करती थी और अनिवार्य रूप मे बैगनी पोशाक मे ही उसकी कल्पना करती थी। किन्तु अब उसे काली पोशाक मे देखकर उसने यह महसूस किया कि उसकी पूरी मनोरमता को वह नही समझती थी। कीटी ने उसे अब एकदम नये और अप्रत्याशित रूप मे देखा। वह अब यह समझ गयी कि आन्ना बैगनी पोशाक मे नही आ सकती थी और उसकी मनोरमता इसी बात मे निहित थी कि वह हमेशा अपनी पोशाक से उभरकर सामने दिखाई देती थी, कि पोशाक कभी भी उस पर विशेष रंग नहीं जमाती थी। लैसों से सजा हुआ काला फ्राक भी उस पर हावी नहीं हो रहा था। वह तो केवल चौखटा था और नजर आ रही थी केवल आन्ना, सीधी-सरल, स्वाभाविक, बडी सजीली और साथ ही खुश तथा सजीव।

आन्ना हमेशा की भांति तनकर सीधी खडी थी और कीटी जब इस भीड के पास पहुंची, तो आन्ना गृह-स्वामी की ओर थोडा सिर घुमाकर उससे बातचीत कर रही थी।

"नहीं, मैं पीटरबर्गी नही बनूगी," उसने गृह-स्वामी की किसी बात का जवाब देते हुए कहा, 'यद्यपि मैं यह समझती नही हूं," वह कंधे झटककर कहती गयी और इसी समय कोमल, कृपालु मुस्कान के साथ कीटी की ओर घूमी। कीटी की पोशाक पर उड़ती-सी नारी-

सुलभ दृष्टि डालकर उसने सिर के हल्के-से झटके से, जो बहुत प्रकट न होते हुए भी कीटी की समझ में आ गया, कीटी की पोशाक तथा सुन्दरता की प्रशंसा की। "आप तो हॉल में भी मानो नाचती हुई दाखिल होती है," आन्ना ने इतना और कह दिया।

"ये मेरी एक ऐसी सहायिका हैं, जिन पर मैं भरोसा कर सकता हू," आन्ना के सामने, जिसे उसने अभी तक नहीं देखा था, सिर झुकाते हुए कोर्सून्स्की ने कहा। "प्रिंसेस बॉल को खुशी भरा और बहुत बढ़िया बना देती है। आन्ना अर्कादियेव्ना, वाल्ज का एक चक्र हो जाये आपके साथ," बहुत झुकते हुए उसने कहा।

"आप इनसे परिचित है?" गृह-स्वामी ने पूछा।

"हम किससे परिचित नहीं है? मैं और मेरी बीवी तो सफेद भेड़ियों जैसे है, हमें सभी जानते है," कोर्सून्स्की ने जवाब दिया। 'वाल्ज का एक चक्र हो जाये, आन्ना अर्कादियेव्ना।"

"जब नाचे बिना काम चल सकता हो, तब मैं नहीं नाचती हू," वह बोली।

"लेकिन आज तो नाचना ही होगा," कोर्सून्स्की ने उत्तर दिया।

इसी वक्त व्रोन्स्की निकट आ गया।

"अगर आज नाचना ही होगा, तो चलिये," उसने कहा और व्रोन्स्की के अभिवादन की ओर ध्यान दिये बिना जल्दी से कोर्सून्स्की के कधे पर हाथ रख दिया।

"किस कारण वह इस से नाखुश है?" कीटी ने यह देखकर सोचा कि आन्ना ने व्रोन्स्की के अभिवादन का उत्तर नहीं दिया। व्रोन्स्की कीटी के पास आ गया, उसने उसे अपने साथ पहला काड्रिल नाचने की याद दिलायी और इस बात के लिये अफसोस जाहिर किया कि पिछले दिनो में उसे उससे मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। कीटी वाल्ज नाचती हुई आन्ना को मुग्ध दृष्टि से देख रही थी और व्रोन्स्की की बाते सुन रही थी। वह प्रतीक्षा मे थी कि व्रोन्स्की उसे वाल्ज नाचने को कहेगा, किन्तु उसने ऐसा नहीं किया और कीटी ने हैरानी से उसकी तरफ देखा। वह शर्म से लाल हो गया और झटपट उसे वाल्ज नाचने को निमन्त्रित किया। किन्तु उसने कीटी की पतली कमर मे बाह पहला कदम उठाया ही था कि अचानक सगीत रुक गया। कीटी

वाले एक तरुण के साथ, जिसे इन्कार करना सम्भव नहीं था, अन्तिम काड्रिल नाचते समय कीटी के लिये व्रोन्स्की और आन्ना के vis-à-vis* होने का सयोग हुआ। बॉल मे आने के समय से कीटी आन्ना के निकट नही हो पायी थी और अब अचानक उसने उसे फिर से एक बिल्कुल नये तथा अप्रत्याशित रूप मे देखा। उसने सफलता के कारण उत्पन्न होनेवाली उत्तेजना का वही लक्षण आन्ना मे देखा, जिससे वह स्वय बहुत अच्छी तरह परिचित थी। उसने देखा कि आन्ना अपनी प्रशसा की शराब के नशे मे मस्त है। कीटी इस भावना और इसके लक्षणो को जानती थी और उन्हे आन्ना मे देख पा रही थी – आखो मे सिहरती और भड़कती चमक तथा उत्तेजना और सुख की मुस्कान, अनचाहे-अनजाने ही मुड़ जानेवाले होठ, अत्यधिक स्पष्ट सजीलापन, चाल-ढाल मे विश्वास और फुर्तीलापन।

"किसकी प्रशसा से?" कीटी अपने आपसे पूछ रही थी। "एक या सभी की प्रशसा से?" और नाच के यातनाग्रस्त अपने तरुण साथी की बातचीत मे मदद किये बिना, जिसका सूत्र वह खो बैठा था और जोड़ नही पा रहा था, तथा बाहरी तौर पर कोर्सून्स्की के ऊचे, खुशीभरे आदेशो का पालन करते हुए, जो कभी तो सभी को grand rond** और कभी chaîne*** बनाने को कहता था, वह ध्यान से उन दोनो की तरफ देख रही थी और उसका दिल डूबता जाता था। "नही, सभी लोगो की मुग्ध नज़रो से नही, बल्कि एक की प्रशसा से ही वह नशे मे आयी है। और यह एक? क्या यह वही है?" हर बार जब वह आन्ना से बात करता, उसकी आखो मे खुशी की लौ जल उठती और सुखद मुस्कान से उसके लाल होठ मुड जाते। आन्ना मानो पूरा ज़ोर लगाती कि उल्लास के ये लक्षण प्रकट न हो, किन्तु वे अपने आप ही उसके चेहरे पर झलक उठते थे। "और उसका क्या हाल है?" कीटी ने व्रोन्स्की की तरफ गौर से देखा और सन्नाटे मे आ

---

* आमने-सामने। (फ्रासीसी)
** बडा घेरा। (फ्रासीसी)
*** पात। (फ्रासीसी)

गयी। कीटी को आन्ना के चेहरे के दर्पण में जो कुछ साफ तौर पर दिखाई दिया था, वही उसे व्रोन्स्की के चेहरे पर भी नज़र आया। उसका हमेशा शान्तिपूर्ण और दृढ़ अन्दाज़ और चेहरे पर लापरवाही तथा शान्ति का भाव कहां गया? नहीं, अब वह हर बार ही जब उससे बात करता था तो अपने सिर को तनिक झुका लेता था मानो उसके सामने बिछ जाना चाहता हो और उसकी नज़र में केवल अधीनता और भय का भाव था। "मैं आपको नाराज़ नहीं करना चाहता," उसकी नज़र मानो हर बार यही कहती थी, "किन्तु अपने को बचाना चाहता हूं और नहीं जानता कि कैसे।" व्रोन्स्की के चेहरे पर ऐसा भाव था जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उन दोनों के बीच साझे परिचितों के बारे में बातचीत हो रही थी, वे बहुत ही मामूली बातों की चर्चा कर रहे थे, किन्तु कीटी को ऐसा लग रहा था कि उनके द्वारा कहा जानेवाला हर शब्द उन दोनों तथा उसके भाग्य का भी फैसला कर रहा था। और यह अजीब बात थी कि वे बेशक इस बात की चर्चा कर रहे थे कि अपनी फ्रांसीसी भाषा के साथ इवान इवानोविच कितना हास्यास्पद है और यह कि येलेत्स्काया को अधिक अच्छा पति मिल सकता था, फिर भी ये शब्द उनके लिये कुछ विशेष महत्त्व रखते थे और वे भी कीटी की तरह ही यह अनुभव कर रहे थे। पूरा बॉल, सभी लोग, सभी कुछ उस कुहासे से ढक गया, जो कीटी की आत्मा पर छा गया था। केवल कठोर पालन-शिक्षण ने ही उसे सहारा दिया और उससे जो अपेक्षा की जाती थी, उसे करने को विवश किया, यानी वह नाचती रही, प्रश्नों के उत्तर देती रही, बातचीत करती रही, यहां तक कि मुस्कराती भी रही। लेकिन माज़ूर्का शुरू होने के पहले, जब कुर्सियों को ढंग से रखा जाने लगा और कुछ जोड़े छोटे हॉल से बड़े हॉल में आ गये, कीटी हताश और बुरी तरह से परेशान हो उठी। वह पांच लोगों को इन्कार कर चुकी थी और अब माज़ूर्का नाच में शामिल नहीं हो रही थी। अब तो इस बात की आशा भी नहीं की जा सकती थी कि कोई उसे आमन्त्रित करेगा, क्योंकि ऐसी महफ़िलों में लोग उसे हाथों हाथ लेते थे और किसी के दिमाग़ में यह ख्याल तक भी नहीं आ सकता था कि उसे अभी तक आमन्त्रित नहीं किया गया। उसे मां से यह कहना

चाहिये था कि उसकी तबीयत अच्छी नही है और वह घर जाना चाहती है, लेकिन ऐसा कर पाने की शक्ति उसमे नही थी। वह अपने को बेजान-सी अनुभव कर रही थी।

वह छोटे-से मेहमानखाने के कोने मे जाकर आराम-कुर्सी में ढह पडी। फ्राक का हवाई स्कर्ट उसकी दुबली-पतली आकृति के गिर्द बादल की तरह ऊपर को उठ गया। दस्ताने के बिना एक कमज़ोर-सा, तरुणी-सुलभ कोमल हाथ, जो निर्जीव-सा नीचे लटक गया था, गुलाबी रग के लबादे की चुनटो मे डूब गया। उसके दूसरे हाथ मे पखा था, जिससे वह हल्के-हल्के, किन्तु जल्दी-जल्दी अपने तमतमाये चेहरे को शान्ति दे रही थी। घास पर अभी-अभी बैठ और अपने रग-बिरगे पखो को फैलाकर उडने को तैयार तितली जैसी प्रतीत होनेवाली कीटी के हृदय को भारी हताशा कचोट रही थी।

"हो सकता है कि मुझसे भूल हो रही है, मुमकिन है कि ऐसा न हुआ हो?"

और उसे फिर से वह सब कुछ याद हो आया, जो उसने देखा था।

"कीटी, यह क्या मामला है?" कालीन पर आहट किये बिना उसके पास आकर काउटेस नोर्डस्टोन ने कहा। "मेरी समझ मे यह नही आ रहा।"

कीटी का अधर कापा। वह जल्दी से उठकर खडी हो गयी।

"कीटी, तुम माज़ूर्का नही नाच रही हो?"

"नही, नही," कीटी ने आसुओ के कारण कापती आवाज़ मे जवाब दिया।

"उसने मेरे सामने उसे *माज़ूर्का नाचने को आमन्त्रित किया,*" नोर्डस्टोन ने यह जानते हुए कि कीटी समझ जायेगी कि वह किनका ज़िक्र कर रही है, कहा। "उसने पूछा 'क्या आप कीटी श्चेर्बात्स्काया के साथ नही नाच रहे हैं?'"

"ओह, मेरी बला से!" कीटी ने जवाब दिया।

स्वय कीटी के अतिरिक्त कोई भी उसकी स्थिति को नहीं समझता था, कोई भी तो यह नही जानता था कि कल उसने उस आदमी को, जिसे शायद वह प्यार करती थी, इसलिये इन्कार कर दिया था कि किसी दूसरे पर भरोसा करती थी।

गयी। कीटी को अन्ना के चेहरे के दर्पण में जो कुछ साफ और स्पष्ट दिखाई दिया था, वही उसे व्रोन्स्की के चेहरे पर भी नजर आया। उसका हमेशा शान्तिपूर्ण और दृढ़ अन्दाज़ और चेहरे पर लापरवाही तथा शान्ति का भाव कहां गया? नहीं, अब वह हर बार ही जब उससे बात करता था, तो अपने सिर को तनिक झुका लेता था मानो उसके सामने झुक जाना चाहता हो और उसकी नजर में केवल अधीनता और भय का भाव था। 'मैं आपको नाराज नहीं करना चाहता,' उसकी नजर मानो हर बार यही कहती थी, "किन्तु अपने को बचाना चाहता हूं और नहीं जानता कि कैसे।" व्रोन्स्की के चेहरे पर ऐसा भाव था, जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उन दोनों के बीच साझे परिचितों के बारे में बातचीत हो रही थी। वे बहुत ही मामूली बातों की चर्चा कर रहे थे, किन्तु कीटी को ऐसा लग रहा था कि उनके द्वारा कहा जानेवाला हर शब्द उन दोनों तथा उसके भाग्य का भी फैसला कर रहा था। और यह अजीब बात थी कि वे बेशक इस बात की चर्चा कर रहे थे कि अपनी फ्रांसीसी भाषा के साथ इवान इवानोविच कितना हास्यास्पद है और यह कि येलेत्स्काया को अधिक अच्छा पति मिल सकता था, फिर भी ये शब्द उनके लिये कुछ विशेष महत्त्व रखते थे और वे भी कीटी की तरह ही यह अनुभव कर रहे थे। पूरा बॉल, सभी लोग, सभी कुछ उस कुहासे से ढक गया, जो कीटी की आत्मा पर छा गया था। केवल कठोर पालन-शिक्षण ने ही उसे सहारा दिया और उससे जो अपेक्षा की जाती थी, उसे करने को विवश किया, यानी वह नाचती रही, प्रश्नों के उत्तर देती रही, बातचीत करती रही, यहां तक कि मुस्कराती भी रही। लेकिन माज़ूर्का शुरू होने के पहले, जब कुर्सियों को ढंग से रखा जाने लगा और कुछ जोड़े छोटे हॉल से बड़े हॉल में आ गये, कीटी हताश और बुरी तरह से परेशान हो उठी। वह पांच लोगों को इन्कार कर चुकी थी और अब माज़ूर्का नाच में शामिल नहीं हो रही थी। अब तो इस बात की आशा भी नहीं की जा सकती थी कि कोई उसे आमन्त्रित करेगा, क्योंकि ऐसी महफिलों में लोग उसे हाथों हाथ लेते थे और किसी के दिमाग में यह ख्याल तक भी नहीं आ सकता था कि उसे अभी तक आमन्त्रित नहीं किया गया। उसे मां से यह कहना

काउंटेस नोर्डस्टोन ने कोर्सून्स्की को ढूंढा, जिसके साथ उसे माजूर्का नाचना था, और उसे कीटी को आमन्त्रित करने को कहा।

कीटी पहले जोड़े में नाच रही थी और यह उसकी खुशकिस्मती ही कहिये कि उसे बातचीत करने की जरूरत नहीं पड़ रही थी, क्योंकि कोर्सून्स्की अपने प्रबन्ध-क्षेत्र में व्यवस्था करने के लिये लगातार इधर-उधर भागता रहता था। व्रोन्स्की और आन्ना उसके लगभग सामने बैठे थे। अपनी तेज नजर से उसने उन्हें दूर से देखा, जोड़ों के रूप में बिल्कुल सामने आने पर निकट से देखा और जितना अधिक वह उन्हें देखती थी, उतना अधिक ही उसे यह विश्वास होता जाता था कि उसकी किस्मत का तारा डूब गया है। उसने देखा कि लोगों से भरे हुए इस हॉल में वे दोनों अपने को एकान्त में अनुभव कर रहे हैं। व्रोन्स्की के सदा दृढ़ और आत्मविश्वासी चेहरे पर कीटी को चकित करनेवाले खोयेपन तथा अधीनता का वैसा ही भाव नजर आया, जो दोषी होने पर समझदार कुत्ते के चेहरे पर दिखाई देता है।

आन्ना मुस्कराती, तो वह भी मुस्कराता। आन्ना कुछ सोचने लगती, तो व्रोन्स्की भी गम्भीर हो जाता। कोई दैवी शक्ति कीटी की आंखों को आन्ना के चेहरे की तरफ खींच रही थी। वह अपने साधारण, काले फ्राक में बहुत सुन्दर लग रही थी, बाजूबन्दों से सुशोभित उसकी गदरायी बाहें भी बहुत सुन्दर थीं, मोतियों की लड़ी से सजी उसकी मजबूत गर्दन भी बहुत सुन्दर थी, उसके बिखरे घुंघराले बाल भी बहुत सुन्दर लग रहे थे, उसके छोटे-छोटे हाथों-पैरों की हल्की-फुल्की और सजीली गतिविधि भी बहुत सुन्दर थी, अपनी सजीवता के साथ उसका प्यारा चेहरा भी बहुत सुन्दर लग रहा था, मगर उसके इस सारे सौन्दर्य में कुछ भयानक और कठोर भी था।

कीटी पहले से भी अधिक मुग्ध होकर आन्ना को निहार रही थी और अधिकाधिक व्यथित हो रही थी। कीटी अनुभव कर रही थी मानो उसे कुचल दिया गया है और उसका चेहरा यह व्यक्त कर रहा था। माजूर्का नाचते हुए व्रोन्स्की ने जब निकट आने पर कीटी को देखा, तो पहली नजर में उसे पहचान नहीं पाया – इतनी बदल गयी थी वह।

"गजब का बॉल है!" व्रोन्स्की ने उससे कुछ कहने के लिये कहा।

"हा," कीटी ने जवाब दिया।

माजूर्का नाच के दौरान कोर्सून्स्की द्वारा सोची गयी नयी जटिल मुद्रा को दोहराते हुए आन्ना घेरे के बीच आ गयी . दो नर्तक-साथियों को उसने अपने साथ ले लिया तथा एक महिला और कीटी को अपने पास बुला लिया। कीटी उसके करीब आते हुए कातर दृष्टि से उसे देख रही थी। आन्ना ने आंखें सिकोड़ कर उसे देखा और उसका हाथ दबाते हुए मुस्करा दी। किन्तु अपनी मुस्कान के जवाब में कीटी के चेहरे पर केवल हताशा और हैरानी का भाव देखकर उसने कीटी की ओर से मुंह मोड़ लिया और खुशमिज़ाजी से दूसरी महिला के साथ बात करने लगी।

"हां, इसमें कुछ अजीब, शैतानी और अद्भुत चीज़ है," कीटी ने अपने आपसे कहा।

आन्ना खाने के लिये नहीं रुकना चाहती थी, लेकिन गृह-स्वामी उससे बहुत अनुरोध करने लगा।

"मान भी जाइये, आन्ना अर्कादयेव्ना," कोर्सून्स्की ने बिना दस्ताने के आन्ना का हाथ अपने फ्राक-कोट की आस्तीन के नीचे लेते हुए कहा। "कातिल्योन नाच के बारे में कितना बढ़िया विचार है मेरे दिमाग़ में! Un bijou!*"

और आन्ना को अपने साथ ले जाने की कोशिश करते हुए वह थोड़ा आगे बढ़ा। गृह-स्वामी अनुमोदन करते हुए मुस्कराया।

"नहीं, मैं नहीं रुकूंगी," आन्ना ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। किन्तु मुस्कान के बावजूद कोर्सून्स्की और गृह-स्वामी आन्ना के जवाब देने के दृढ़ अन्दाज़ से यह समझ गये कि वह नहीं रुकेगी।

"नहीं, मैं तो आपके यहां मास्को के इस एक बॉल में उससे कहीं ज़्यादा नाची हूं, जितना सारे जाड़े में पीटर्सबर्ग में," आन्ना ने अपने पास खड़े व्रोन्स्की की ओर देखते हुए कहा। "सफ़र से पहले आराम करना ज़रूरी है।"

"और आप निश्चय ही कल जा रही हैं?" व्रोन्स्की ने पूछा।

"हां, ख्याल तो ऐसा ही है," आन्ना ने मानो उसके प्रश्न की

---

* बस, कमाल है! (फ्रांसीसी)

रखे पुर्जे पर लिखा था और उसने एक बग्घी बुला ली। भाई के घर तक के लम्बे रास्ते मे लेविन ने अपने भाई निकोलाई के जीवन की उन सभी घटनाओ को अपने स्मृति-पट पर सजीव किया, जिनसे वह परिचित था। उसे याद आया कि कैसे उसका भाई विश्वविद्यालय मे और विश्वविद्यालय के एक साल बाद साथियो के व्यग्य-उपहासो के बावजूद साधु का सा जीवन बिताता रहा, बड़े उत्साह से सभी धार्मिक रीति-रिवाजो का पालन और गिरजे मे जाकर पूजा-पाठ करता रहा, व्रत रखता रहा और सभी तरह के मनोरजन-खुशियो, विशेषकर नारियो से मुह मोडे रहा और फिर अचानक मानो उसके भीतर कुछ फट गया, बहुत ही घटिया लोगो के साथ उसकी यारी-दोस्ती हो गयी और वह बुरी तरह ऐयाशी मे डूब गया। इसके बाद उसे उस लडके का किस्सा याद आया, जिसे पालन-शिक्षण के लिये वह गाव से लाया था और फिर गुस्से के दौरे मे उसने उसे ऐसे पीटा था कि बच्चे के अग-भग के अपराध मे उस पर मुकदमा चल गया था। इसके पश्चात उसे एक पत्तेबाज के साथ घटी घटना याद आई, जिसे वह जुए मे काफी पैसे हार गया था, उसके नाम हुडी लिख दी थी और फिर खुद ही यह साबित करते हुए, कि पत्तेबाज ने उसे धोखा दिया है, उसके खिलाफ नालिश कर दी थी। (कोज्निशेव ने यही रकम चुकाई थी।) इसके बाद उसे याद आया कि कैसे मार-पीट के लिये वह एक रात कोतवाली मे रहा था। उसे याद आया भाई कोज्निशेव के विरुद्ध इस आधार पर लज्जाजनक मुकदमा चलाना मानो उसने मा की जागीर से उसे उसका हिस्सा न दिया हो। आखिरी किस्सा भी उसे याद आया, जब वह पश्चिमी इलाके मे सरकारी नौकरी के लिये गया था और गाव के मुखिया को पीट डालने के जुर्म मे उस पर मुकदमा चलाया गया था.. यह सब कुछ बहुत बुरा था, लेकिन लेविन को इतना बुरा प्रतीत नही होता था जितना उन्हे प्रतीत होना चाहिये था, जो निकोलाई लेविन को नही जानते थे, उसके बारे मे सारी सचाई को नही जानते थे, उसके दिल को नही जानते थे।

लेविन को याद था कि कैसे उस वक्त जब निकोलाई भगवान की पूजा करता था, व्रत रखता था, साधुओ के पास और [illegible] की प्रार्थनाओ मे जाता था, जब वह धर्म मे सहारा ढूढता था,

आवेशपूर्ण स्वभाव के लिये लगाम खोजना था, न केवल यह कि किसी ने उसकी पीठ नही ठोंकी, बल्कि सभी ने, खुद उसने भी, उसका मज़ाक उडाया था। सब उसे चिढाते थे, उसे साधु और हजरत नूह कहते थे। और जब उसका बांध टूटा, तब भी किसी ने उसकी मदद नही की, सभी ने सन्नाटे मे आकर नफरत से मुह फेर लिया।

लेविन महसूस कर रहा था कि अपने जीवन की सभी ऊट-पटांग हरकतो के बावजूद उसका भाई निकोलाई अपनी आत्मा मे, आत्मा की गहराई मे उन लोगो से कुछ अधिक गलत या बुरा नहीं था, जो उसको तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। इसके लिये वह तो दोषी नहीं था कि उग्र स्वभाव और मस्तिष्क मे कुछ सूझ-बूझ लेकर पैदा हुआ था। लेकिन वह हमेशा अच्छा बनना चाहता था। "सब कुछ कहूगा उससे, उसे भी सब कुछ कहने को विवश करूगा और उसे यह स्पष्ट कर दूगा कि मैं उसे प्यार करता हू और इसलिये उसे समझता हू," लेविन ने रात के दस बजे के बाद पते मे लिखे होटल के पास पहुचते हुए मन ही मन यह तय किया।

"ऊपर बारहवा और तेरहवा कमरा," दरबान ने लेविन के प्रश्न का उत्तर दिया।

"घर पर है?"

"घर पर ही होना चाहिये।"

बारह नम्बर के कमरे का दरवाजा अधखुला था और वहां से प्रकाश-रेखा में घटिया और हल्के तम्बाकू का घना धुआ बाहर आ रहा था तथा एक अपरिचित स्वर सुनाई पड रहा था। किन्तु लेविन तुरत ही यह जान गया कि उसका भाई वही है – उसे उसकी खांसी सुनाई दे गयी थी।

लेविन जब दरवाजे मे दाखिल हुआ, तो अपरिचित व्यक्ति को यह कहते सुना

"सब कुछ इस बात पर निर्भर है कि धंधे को कितनी समझदारी और लगन से चलाया जायेगा।"

कोन्स्तान्तीन लेविन ने दरवाजे मे से झांककर देख लिया कि बहुत ही घने बालो वाला एक जवान आदमी, जो देहाती कोट पहने

है, बोल रहा है और कालर तथा आस्तीनों के बिना ऊनी फ्राक पहने हुए एक जवान, चेचकरू औरत सोफे पर बैठी है। भाई दिखाई नही दे रहा था। यह ख्याल आने पर लेविन का दिल टीस उठा कि उसका भाई किस तरह के अजनबी लोगो के बीच रहता है। किसी को भी उसकी आहट नही मिली और कोन्स्तान्तीन अपने गैलोश उतारते हुए वह सुनता रहा, जो देहाती कोट पहने व्यक्ति कह रहा था। वह किसी उद्यम की चर्चा कर रहा था।

"बेड़ा गर्क हो जाये इन विशेषाधिकारी वाले वर्गों का " लेविन के भाई ने खासते हुए कहा। "माशा! तुम हमारे लिये खाने का प्रबन्ध करो और अगर बच रही हो तो शराब भी ले आओ। नही तो, मगवा लो।"

नारी उठी, पर्दे के पीछे से सामने आई और उसने लेविन को देखा।

"निकोलाई द्मीत्रियेविच, कोई साहब आया है," औरत ने कहा।

"किससे मिलना है?" निकोलाई लेविन ने भल्लाये हुए स्वर मे पूछा।

"यह मैं हू," कोन्स्तान्तीन लेविन ने रोशनी मे सामने आते हुए जवाब दिया।

"कौन, मैं?" निकोलाई ने और भी अधिक खीझ के साथ पूछा। वह जल्दी से उठा, उसने किसी चीज के साथ ठोकर खाई और अगले क्षण लेविन के सामने दरवाजे पर थी बहुत ही जानी-पहचानी, बड़ी-बड़ी भयभीत आखो और अपने उजड्डपन और बीमारी से चकित करने-वाली भाई की लम्बी, दुबली-पतली और भुकी हुई आकृति।

कोन्स्तान्तीन लेविन ने अपने भाई को तीन साल पहले जैसा देखा था, वह अब उससे भी अधिक दुबला हो गया था। वह जाकेट पहने था। उसके हाथ और शरीर की बड़ी-बड़ी हड्डिया और भी बड़ी लग रही थीं। बाल बहुत कम रह गये थे, पहले जैसी सीधी मूछे होठो पर लटक रही थी, वही परिचित आखे आगन्तुक को अजीब ढग और भोलेपन से ताक रही थी।

"अरे, कोस्त्या!" भाई को पहचानकर वह अचानक कह उठा और उसकी आखे खुशी से चमक उठी। किन्तु इसी क्षण उसने नौजवान मेहमान की तरफ घूमकर देखा और लेविन के लिये

परिचित ढग से सिर तथा गर्दन को ऐसे ऐंठन के साथ घुमाया मानो टाई उसे परेशान कर रही हो और उसके दुबले-पतले चेहरे पर एक अन्य भयानक, यातनापूर्ण और कठोर भाव अकित हो गया।

"मैंने आपको और सेर्गेई इवानोविच को लिखा था कि मैं आपको नही जानता हू और जानना नही चाहता हूं। तुम्हें, आपको क्या चाहिये?"

लेविन ने जिस रूप मे उसकी कल्पना की थी, वह बिल्कुल वैसा नही था। उसके स्वभाव का सबसे बुरा और भयानक लक्षण, जो उसके साथ मिलना-जुलना इतना कठिन बना देता था, लेविन ने तब भुला दिया था, जब उसने उसके बारे में सोचा था। किन्तु अब, जब उसने उसका चेहरा और विशेषत ऐंठन के साथ सिर को हिलाते देखा तो उसे यह सब कुछ याद आ गया।

"मुझे किसी काम के लिये तुमसे नही मिलना है," लेविन ने कातरता से उत्तर दिया। "मैं तो ऐसे ही तुमसे मिलने आ गया।"

भाई की कातरता ने स्पष्टत निकोलाई को नर्म कर दिया। उसने होंठो को सिकोडा।

"ओह, तुम ऐसे ही आये हो?" वह बोला। "तो भीतर आ जाओ, बैठो। खाना खाओगे? माशा, तीन लोगो के लिये खाना ले आओ। नही, रुको। जानते हो, ये कौन हैं?" देहाती कोट पहने महानुभाव की ओर सकेत करते हुए उसने भाई से पूछा। "ये कीयेव के वक्त से ही मेरे दोस्त, श्रीमान क्रीत्स्की हैं, बहुत बढिया आदमी है। जाहिर है कि पुलिस इन्हे तग करती है, क्योकि ये नीच नही हैं।"

और उसने अपनी आदत के मुताबिक कमरे मे उपस्थित सभी लोगों पर दृष्टि डाली। यह देखकर कि दरवाजे के पास खडी नारी ने जाने के लिये कदम बढाया है, उसने उसे आवाज दी: "रुको, कह चुका हू न।" और बातचीत के पहले जैसे अटपटे और भद्दे ढग से, जिसमे लेविन इतनी अच्छी तरह परिचित था, फिर सभी पर नजर डालकर वह भाई को क्रीत्स्की की कहानी सुनाने लगा। उसने बताया कि कैसे क्रीत्स्की को गरीब विद्यार्थियो की मदद करने का सगठन बनाने और रविवारीय विद्यालयों का आयोजन करने के लिये विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया, कैसे इसके बाद वह जन-विद्यालय

में अध्यापक बना और वहां से उसको छुट्टी कर दी गयी तथा इसके बाद किसी न किसी चीज के लिये उस पर मुकदमा चलाया गया।

"आप कीयेव विश्वविद्यालय में पढ़ते रहे है?" लेविन ने अटपटी खामोशी को तोड़ने के लिये पूछा।

"हां, कीयेव विश्वविद्यालय में," क्रीत्स्की ने नाक-भौंह सिकोड़कर भल्लाहट के साथ उत्तर दिया।

"और यह औरत," निकोलाई ने क्रीत्स्की को टोकते और नारी की ओर सकेत करते हुए कहा, "यह मेरी जीवन-मित्र मारीया निकोलायेव्ना है। मैं इसे चकले से लाया हू," उसने यह कहते हुए गर्दन को झटका दिया। "लेकिन इसे प्यार और इसका आदर करता हू और जो कोई भी मुझसे वास्ता रखना चाहता है," आवाज को ऊंची करते और त्यौरी चढ़ाते हुए उसने इतना और जोड़ दिया, "उससे इसे प्यार तथा इसका आदर करने का अनुरोध करता हू। वह मेरी बीवी जैसी ही है, बिल्कुल वैसी है। तो अब तुम जानते हो कि किसके साथ तुम्हारा वास्ता है। और अगर तुम यह समझते हो कि इससे तुम्हारी हेठी होती है, तो तुम्हारा भला करे खुदा और जाओ अपनी राह।"

फिर से उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से सबकी ओर देखा।

"मेरी किसलिये हेठी होगी, मेरी समझ में नहीं आ रहा।"

"तो माशा, खाना लाने को कह दो-तीन आदमियों के लिये, वोद्का और शराब भी   नहीं, रुको   नहीं   जाओ।"

(२५)

"देखो, न," निकोलाई लेविन ने यत्नपूर्वक माथे पर बल डालकर और गर्दन को झटका देते हुए कहा। सम्भवत उसके लिये यह समझ पाना कठिन हो रहा था कि वह क्या कहे और क्या करे। "देखो न," उसने कमरे के कोने में रखी हुई रस्सियों से बधी लोहे की छड़ों की ओर सकेत किया। "देख रहे हो न उन्हें? यह नया धधा है, ... हम शुरू कर रहे हैं। एक उत्पादन-सघ "

लेविन भाई की बात लगभग नहीं सुन रहा था। वह उसके

से उसके चेहरे को ध्यान से देख रहा था. उसे इस पर झल्लाहट हो रही थी और भाई उदासीनता के भाव से जो कुछ कह रहा था, वह उसे सुनने के लिये भाने को किसी तरह भी विवश नहीं कर पा रहा था। वह समझ रहा था कि यह उदासीनता उसके प्रति तिरस्कार-भावना से बचने का ही एक साधन है। निकोलाई कहता गया –

'तुम्हें मालूम है कि पूंजी कामगार को कुचलती है, हमारे यहां कामगार और किसान श्रम का सारा बोझ सहन करते हैं और उनकी स्थिति ऐसी है कि वे चाहे जितनी भी मेहनत क्यों न करें, अपनी जानवरों जैसी हालत से मुक्ति नहीं पा सकते। उत्पादन से जितना नफ़ा होता है, जिससे वे अपनी हालत सुधार सकते हैं, उन्हें कुछ फ़ुरसत मिल सकती है और इसके परिणामस्वरूप वे शिक्षा पा सकते हैं, वह सारा नफ़ा उनसे पूंजीपति छीन लेते हैं। इस तरह हमारे समाज का कुछ ऐसा ढांचा बन गया है कि वे जितनी अधिक मेहनत करेंगे, व्यापारी और भूमिपति उतने ही अधिक धनी होते जायेंगे और वे हमेशा काम करनेवाले जानवर बने रहेंगे। इस व्यवस्था को बदलना चाहिये," उसने अपनी बात ख़त्म करते हुए भाई की तरफ़ प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा।

"हां, सो तो ज़ाहिर ही है," लेविन ने भाई के गालों की बड़ी हड्डियों के नीचे उभर आनेवाली लाली की तरफ़ देखते हुए कहा।

"और हम धातुकर्म का धंधा शुरू कर रहे हैं, जहां सारा उत्पादन और मुनाफ़ा और सबसे बढ़कर यह कि उत्पादन के उपकरण, सभी कुछ साझा होगा।"

"यह उत्पादन-संघ होगा किस जगह?" लेविन ने पूछा।

"कज़ान गुबेर्निया के वोज़्द्रेम गांव में।"

"गांव में किसलिये? मुझे लगता है कि गांव में तो वैसे ही बहुत काम है। गांव में धातुकर्म के संघ की क्या ज़रूरत है?"

"इसलिये कि किसान आज भी पहले जैसे ही दास हैं और उन्हें इस दासता से मुक्ति दिलाने की कोशिश ही तुम्हें और सेर्गेई इवानोविच को अच्छी नहीं लगती," निकोलाई लेविन ने भाई की आपत्ति से चिढ़कर कहा।

"इसलिये कि उस पर अपना वक्त बरबाद करने की जरूरत नही समझता।"

"यह भी खूब रही, आपको कैसे मालूम है कि आप अपना वक्त बरबाद करेगे? बहुतों के लिये तो यह लेख उनकी पहुंच के बाहर है, यानी उनकी समझ में नही आता। लेकिन मेरी बात दूसरी है। मैं तो उसके विचारो को आर-पार देख सकता हूं और जानता हूं कि वह लेख क्यो कमजोर है।"

सभी खामोश हो गये। क्रीत्स्की धीरे से उठा और उसने अपनी टोपी ले ली।

"खाना नही खायेगे? अच्छी बात है, जाइये। कल फ़िटर को साथ लेकर आ जाइयेगा।"

क्रीत्स्की के बाहर निकलते ही निकोलाई लेविन मुस्कराया और आख मारकर बोला

"यह भी किसी काम का नही है। मैं देख रहा हूं..."

लेकिन क्रीत्स्की ने इसी वक्त उसे दरवाजे पर से आवाज दी।

"और किस चीज की जरूरत है आपको?" निकोलाई लेविन ने कहा और बाहर बरामदे में चला गया। मारीया निकोलायेव्ना के साथ अकेला रह जाने पर लेविन ने उससे पूछा:

"क्या बहुत अर्से से हैं आप मेरे भाई के साथ?"

"दूसरा साल चल रहा है। उनकी सेहत बहुत खराब हो गयी है। ये बहुत ज्यादा पीते हैं," उसने कहा।

"क्या मतलब?"

"वोद्का पीते हैं और वह उनके लिये बुरी है।"

"बहुत पीते है क्या?" लेविन फुसफुसाया।

"हा," घबराहट से दरवाजे की ओर देखते हुए, जहा निकोलाई लेविन की झलक मिल रही थी, उसने कहा।

"किस बात की चर्चा कर रहे थे तुम?" निकोलाई लेविन ने नाक-भौह सिकोड़ते और डरी-सी आखे एक के बाद दूसरे की तरफ घुमाते हुए पूछा। "किस बात की?"

"किसी भी बात की नही," कोन्स्तान्तीन ने परेशान होते हुए जवाब दिया।

निकोलाई ने शरीर को झटका दिया और विचारों में डूब गया।

"हाँ, तुम मुझे बताओ कि पोक्रोव्स्कोये में क्या हो रहा है? घर अभी भी खड़ा है, भोजवृक्ष भी हैं और हमारा पढ़ाई का कमरा भी? क्या माली फिलिप भी जिन्दा है? कितनी अच्छी तरह याद है मुझे कुंज और सोफ़ा! देखो, घर में कोई तब्दीली नहीं करना, लेकिन जल्दी से शादी कर लो और पहले की तरह ही रहने लगो। अगर तुम्हारी बीवी अच्छी होगी, तो मैं तुमसे मिलने आऊंगा।"

"तो तुम अभी मेरे पास आ जाओ," लेविन ने कहा। "कितने अच्छे ढंग से हम तुम रहते!"

"अगर मैं यह जानता कि सेर्गेई इवानोविच से वहाँ मेरी मुलाकात नहीं होगी, तो तुम्हारे पास आ गया होता।"

"तुम्हारी उनसे वहाँ मुलाकात नहीं होगी। मैं उनसे पूरी तरह स्वतन्त्र जीवन बिताता हूँ।"

"हाँ, लेकिन तुम चाहे कुछ भी क्यों न कहो, तुम्हें हम दोनों में से एक को चुनना होगा," भीरुता से भाई की आँखों में झाँकते हुए उसने कहा। उसकी इस भीरुता ने कोन्स्तान्तीन के हृदय को छू लिया।

"अगर इस मामले में तुम ईमानदारी से मेरी राय जानना चाहते हो, तो मैं तुमसे यही कहूँगा कि सेर्गेई इवानोविच के साथ तुम्हारे झगड़े में मैं न तुम्हारा और न उनका पक्ष लेता हूँ। तुम दोनों ही गलत हो। तुम बाहरी तौर पर अधिक गलत हो और वह भीतरी तौर पर।"

"तो, तो तुम यह समझ गये, तुम यह समझ गये!" निकोलाई खुशी से चिल्ला उठा।

"लेकिन अगर तुम जानना चाहते हो, तो सुनो कि व्यक्तिगत रूप से मैं तुम्हारे साथ अपनी दोस्ती को ज्यादा वज़न देता हूँ, क्योंकि..."

"क्यों? क्यों?"

कोन्स्तान्तीन यह नहीं कह सका कि वह इसलिये इस दोस्ती को ज्यादा वज़न देता है कि निकोलाई किस्मत का मारा हुआ है और उसे इस दोस्ती की ज़रूरत है। लेकिन निकोलाई समझ गया कि भाई यही कहना चाहता था और नाक-भौंह सिकोड़कर फिर से वोद्का ढालने लगा।

सुन्दरी जबान से चाटने लगी। बछड़े ने थनो को ढूंढते हुए अपनी थूथनी मां के पेट के नीचे घुसेड़ दी और पूछ हिलाई।

"हां, इधर रोशनी करो, फ्योदोर, इधर लालटेन बढ़ाओ," लेविन ने बछड़े को ध्यान से देखते हुए कहा। "मा पर गया है। रंग बाप का पाया है। बहुत ही सुन्दर है। बड़े आकार का, चौड़े पुट्ठे वाला। वसीली फ्योदोरोविच, है न बढ़िया?" लेविन ने बछड़े की खुशी के प्रभाव में कोटू की बात को पूरी तरह भूलकर कारिन्दे से पूछा।

"बुरा क्यों होने लगा था? सिम्योन ठेकेदार आपके जाने के अगले दिन ही आ गया था। उसके साथ मामला तय करना होगा, कोन्स्तान्तीन दमीत्रियेविच," कारिन्दे ने कहा। "मैं तो मशीन के बारे में आपसे पहले ही कह चुका हू।"

एक इसी सवाल से अपने बड़े और जटिल धधे की सारी तफ़सीलें लेविन के सामने उभर आई और वह पशुशाला से सीधा अपने दफ़्तर में गया, वहा कारिन्दे तथा ठेकेदार के साथ बातचीत करके घर लौटा और ऊपर, मेहमानखाने में चला गया।

(२७)

मकान बड़ा और पुराना था और यद्यपि लेविन अकेला था, फिर भी सारे घर को गर्म करवाता था और उसने पूरे घर पर अधिकार जमा रखा था। वह जानता था कि यह मूर्खता है, कि उसकी नयी योजनाओ को ध्यान में रखते हुए ऐसा करना बुरा और उनके विरुद्ध भी है, लेकिन उसके लिये यह घर एक पूरी दुनिया के समान था। यह वह दुनिया थी, जिसमें उसके माता-पिता रहे और पूरे हुए थे। उन्होंने ऐसा जीवन बिताया था, जो लेविन को पूर्णता का आदर्श प्रतीत होता था और जिसे वह अपनी पत्नी, अपने परिवार के साथ पुनर्जीवित करने का सपना देखता था।

लेविन मा की बहुत ही कम याद थी। मां के बारे में उसकी स्मृति के रूप में थी और उसकी कल्पना में को नारी के उसी श्रेष्ठ और पावन आदर्श का

आ गया कि उसके पास दार्शनिक दृष्टिकोण की कमी है। अचानक यह खुशी भरा ख्याल उसके दिमाग में कौंध गया: "दो साल बाद मेरे पशुओं के झुण्ड में दो हालैंडी गऊएं होंगी, हो सकता है कि मुद पावा भी तब तक जीती रहे, बेर्कूत की बारह बेटियां और यह तीन भी इस झुण्ड में शामिल हो जायेंगी – कमाल हो जायेगा!" वह फिर से किताब पढ़ने लगा।

"चलो, मान लिया कि विद्युत और ताप एक ही चीज हैं। किन्तु क्या प्रश्न को हल करने के लिये समीकरण में एक की जगह पर दूसरा परिमाण रखा जा सकता है? नहीं। तो बात क्या बनी? प्रकृति की सभी शक्तियों के बीच सम्बन्ध की तो सहज ज्ञान से ही अनुभूति होती है यह बात तो विशेष रूप से सुखद है कि जब पावा की लाल-चितकबरी बछिया गाय बन जायेगी, तो इन तीनों के साथ मेरा पशु-झुण्ड कैसा होगा बहुत ही बढ़िया! पशुओं के लौटने के समय मैं अपनी पत्नी और मेहमानों के साथ बाहर जाऊंगा पत्नी कहेगी: 'इस बछिया को तो मैंने और कोस्त्या ने बच्चे की तरह पाला-पोसा है।' कोई मेहमान पूछेगा: 'आपको भला इसमें इतनी दिलचस्पी कैसे हो सकती है?' वह जवाब देगी 'जो कोस्त्या को अच्छा लगता है, मुझे भी अच्छा लगता है।' लेकिन 'वह' कौन होगी?" और उसे वह याद आ गया, जो उसके साथ मास्को में हुआ था "लेकिन हो ही क्या सकता है? मेरा तो कोई कसूर नहीं है। हां, अब सब कुछ नये ढंग से होगा। यह बकवास है कि जीवन ऐसा नहीं होने देगा, कि अतीत वर्तमान को बदलने नहीं देगा। आदमी को बेहतर, पहले से कहीं अच्छी जिन्दगी बिताने के लिये संघर्ष करना चाहिये." लेविन ने अपना सिर ऊपर उठाया और विचारों में डूब गया। बूढ़ी शिकारी कुतिया लास्का, जो अभी तक मालिक के लौटने की खुशी को पूरी तरह पचा नहीं पाई थी, अहाते में इधर-उधर दौड़ने और भौंकने के बाद लौट आई, बाहर की ताजा हवा की गंध लिये और दुम हिलाती हुई लेविन के पास गयी, अपना सिर उसके हाथ के नीचे घुसेड़ दिया और शिकायती अन्दाज में कूं-कूं करते हुए यह मांग करने लगी कि वह उसे सहलाये, प्यार करे।

"बस, बोल नहीं सकती," अगाफ्या मिखाइलोव्ना ने कहा। "लेकिन

वादा किया कि शाम के सात बजे बहन को विदा करने आ जायगा।

कीटी भी दोपहर के खाने के वक्त नही आई और उसने यह रुक्का लिख भेजा कि उसके सिर मे दर्द है। डौली और आन्ना ने बच्चो तथा उनकी अंग्रेज शिक्षिका के साथ खाना खाया। या तो इस कारण कि बच्चो के व्यवहार मे स्थिरता नही होती या इसलिये कि वे हर चीज को बहुत जल्दी भाप जाते हैं और इसी वजह से उन्होंने य महसूस कर लिया कि आन्ना आज वैसी ही नही थी, जैसी कि अप मास्को आने के दिन थी, जब उन्हे उससे इतना अधिक प्यार हो गय था, कि अब उसे उनमे कोई दिलचस्पी नही है—कारण कुछ भी हो लेकिन उन्होंने बूआ के साथ अचानक ही अपना खेल और उसके प्रति प्यार भी खत्म कर दिया। उन्हे इस बात की जरा भी परवाह नहं थी कि वह जा रही है। आन्ना सारी सुबह जाने की तैयारियो मे व्यस्त रही। उसने मास्को के परिचितो को रुक्के लिखे, अपना हिसाब नोट किया और सामान बाधा। डौली को लगा कि आन्ना मन मे बहुत बेचैन है, कि वह ऐसी चिन्ताओ-परेशानियो मे डूबी हुई है, जिन्हे डौली अपने अनुभव से बहुत अच्छी तरह जानती थी, जो अकारण ही नही होतीं और जिनमे अक्सर अपने प्रति असन्तोष और खीझ का भाव छिपा रहता है। दोपहर के खाने के बाद आन्ना कपडे बदलने के लिये अपने कमरे मे गयी और डौली भी उसके पीछे-पीछे वहा जा पहुची।

"आज तुम कैसी अजीब-अजीब-सी हो!" डौली ने उससे कहा।

"मैं? तुम्हे ऐसा लगता है? मैं अजीब-अजीब-सी नही हू, लेकिन मेरा मूड बहुत खराब है। मेरे साथ कभी-कभी ऐसा होता है। जी चाहता है कि खूब रोऊ। यह निरा पागलपन है, लेकिन जल्द ही यह दूर हो जाता है," आन्ना ने जल्दी से कहा और अपने लाल हुए चेहरे को उस छोटी-सी थैली मे छिपा लिया, जिसमे वह अपनी रात की टोपी और महीन रूमाल रख रही थी। उसकी आखे विशेष रूप से चमक रही थी और उनमे लगातार आसू उमड़ते आ रहे थे। "ऐसे ही मैं पीटर्सबर्ग से नही आना चाहती थी और अब यहा से जाने को मन नही होता।"

"तुमने यहा आकर एक नेक काम किया है," बहुत ध्यान से आन्ना को देखते हुए डौली ने कहा।

आन्ना ने आंसुओं से भीगी हुई आंखों से उसकी तरफ देखा।
"ऐसा नहीं कहो, डौली। मैंने कुछ नहीं किया और कुछ भी
ी कर सकती थी। मैं अक्सर यह सोचकर हैरान होती रहती हूं
 लोगों ने मुझे बिगाड़ने की साजिश-सी क्यों कर रखी है। मैंने क्या
या है और कर ही क्या सकती थी? यह तो तुम्हारे दिल में ही
ना प्यार बाकी था कि तुम उसे माफ कर सकीं "

"भगवान ही जानता है कि तुम्हारे बिना क्या होता। तुम कितनी
शक्तिस्मत हो, आन्ना!" डौली ने कहा। "तुम्हारी आत्मा में सब
छ स्पष्ट और अच्छा है।"

"हर किसी की आत्मा में, जैसा कि अंग्रेज कहते हैं, अपने
keletons* होते हैं।"

"तुम्हारी आत्मा में कैसे skeletons हो सकते हैं? तुम्हें सब
छ स्पष्ट है।"

"हैं, skeletons हैं," आन्ना ने अचानक कहा और आंसुओं
 बाद बिल्कुल अप्रत्याशित ही उसके होंठों पर धूर्तता और उपहासपूर्ण
स्कान झलक उठी।

"तो तुम्हारे ये skeletons मनोरंजक हैं, दुःखद नहीं," डौली
 मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, दुःखद हैं। जानती हो कि मैं कल के बजाय आज क्यों
ा रही हूं? यह वह स्वीकारोक्ति है, जो मेरे मन पर बोझ बनी
ई थी। मैं उसे तुम्हारे सामने मानना चाहती हूं," आन्ना ने कुर्सी
र सीधे बैठते और डौली से आंखें मिलाते हुए दृढ़तापूर्वक कहा।

डौली ने बहुत हैरान होते हुए देखा कि आन्ना शर्म से बिल्कुल
लाल हो गयी है, कि यह लाली उसकी गर्दन पर लहराते काले केश-
ुण्डलों तक जा पहुंची है।

"तो सुनो," आन्ना ने कहना जारी रखा। "तुम जानती हो कि
कीटी दोपहर के खाने पर क्यों नहीं आई? वह मुझसे ईर्ष्या करती
है। मैंने सब गड़बड़ कर दिया मैं ही इसका कारण थी कि बॉल
उसके लिये खुशी न होकर यातना बन गया। लेकिन यह सच है,

* पंजर यानी परेशानियां। (अंग्रेजी)

बिल्कुल सच है कि इसके लिये मैं दोषी नहीं हूं या थोड़ी-सी दोषी हूं," उसने पतली-सी आवाज़ में "थोड़ी-सी" शब्दों को खींचते हुए कहा।

"ओह, कैसे स्तीवा की तरह ही तुमने यह कहा है!" डौली हंसते हुए कह उठी।

आन्ना को बुरा लगा।

"ओह नहीं, ओह नहीं! मैं स्तीवा जैसी नहीं हूं," वह नाक-भौंह सिकोड़ते हुए बोली। "मैं इसलिये तुमसे कह रही हूं कि मैं एक क्षण के लिये भी स्वयं को सशय का शिकार नहीं होने देती," आन्ना ने कहा।

लेकिन वह जब ये शब्द कह रही थी, तो उसने अनुभव किया कि वे सही नहीं हैं। उसे अपने मन में न केवल सशय की ही अनुभूति हो रही थी, बल्कि व्रोन्स्की का विचार आने पर बेचैनी भी महसूस करती थी और सिर्फ़ इसीलिये वक्त से पहले यहां से जा रही थी कि उससे फिर भेंट न हो।

"हां, स्नोवा ने मुझे बताया था कि तुम उसके साथ मासूकी नाच नाची थीं और यह कि वह..."

"तुम तो कल्पना भी नहीं कर सकतीं कि यह सारा किस्सा कितना [illegible] था। मैं तो उन दोनों की शादी मिलानी चाहती और अचानक [illegible] उलटा ही मामला हो गया। हो सकता है कि मैंने अनचाहे ही..."

आन्ना के चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसने अपनी बात पूरी नहीं की।

"ओह, वे ऐसी बातें फ़ौरन भांप जाते हैं!" डौली ने कहा।

"अगर उसकी तरफ़ से कुछ ऐसा इरादा ज़ाहिर करना चाहा, तो मुझे बहुत दुख होगा," आन्ना ने डौली की बात बीच में ही काट दी। "मुझे विश्वास है कि यह सब आयी-गयी बात हो जायेगी और कीटी मुझसे नफ़रत करना बन्द कर देगी।"

"मैं [illegible] तुमसे सच कहूं, मैं तो चाहती भी नहीं कि इसके [illegible] हो। अगर वह यानी व्रोन्स्की एक ही दिन में [illegible] सकता है, तो मैं तो यही चाहूंगी कि यह [illegible]।"

(२६)

"तो सब किस्सा खत्म हो गया, भला हो भगवान का," तीसरी घण्टी बजने पर भी डिब्बे का रास्ता रोककर खड़े हुए अपने भाई से अन्तिम बार विदा लेने पर उक्त विचार ही आन्ना के दिमाग में सबसे पहले आया। वह अपनी नौकरानी आन्नुश्का के करीब सोफे पर बैठ गयी और मद्धिम रोशनी में डिब्बे में नजर दौड़ाने लगी। "शुक्र है खुदा का, कल अपने बेटे सेर्योझा और अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच को देख सकूगी और पहले की तरह मेरा अच्छा तथा अभ्यस्त जीवन आरम्भ हो जायेगा।"

आन्ना दिन भर जिस चिन्ताकुल मानसिक स्थिति में रही थी, उसी स्थिति में उसने बड़ी खुशी और अच्छे ढग से यात्रा के लिये सब कुछ ठीक-ठाक किया। अपने छोटे-छोटे और फुर्तीले हाथों से उसने लाल रग का बैग खोला और बन्द किया, उसमें से छोटा-सा तकिया निकाला, उसे घुटनों पर रख लिया और पैरों को अच्छी तरह से ढककर चैन से बैठ गयी। एक बीमार महिला सोने के लिये लेट गयी थी। दूसरी दो महिलाओं ने आन्ना से बातचीत शुरू कर दी और एक मोटी बुढ़िया ने अपने पैरों को अच्छी तरह से ढकते हुए गर्माहट की कमी की शिकायत की। आन्ना ने महिलाओं को जवाब में कुछ शब्द कहे और उनकी बातचीत में कोई दिलचस्पी न महसूस करते हुए आन्नुश्का से टार्च निकालने को कहा, उसे कुर्सी के हत्थे पर जमाया और अपने पर्स में से कागज काटने का छोटा-सा चाकू और एक अंग्रेजी उपन्यास निकाल लिया। शुरू में उसका पढ़ने में मन नहीं लग सका। पहले तो हलचल और लोगों के आने-जाने से बाधा पड़ी, इसके बाद गाड़ी के चलने पर सभी तरह की आवाजों को सुने बिना नहीं रह जा सकता था, इसके पश्चात बर्फ ने बाधा डाली, जो बायीं ओर की खिड़की पर जोर से टकराकर शीशे पर चिपकती जा रही थी, इसके बाद कपड़ों से लदा-फदा और एक पहलू बर्फ से बुरी तरह ढका हुआ कण्डक्टर पास से गुजरा और फिर इस बातचीत ने भी किताब में उसका ध्यान नहीं लगने दिया कि इस वक्त बाहर कितना भयानक बर्फ का तूफान चल रहा है। बाद में बार-बार यही सब कुछ होता रहा – पहियों की वही

जगह पर, यानी जब उसने व्रोन्स्की को याद किया, उससे कहा: "नहीं, यही शर्म की बात है"। "तो क्या हुआ?" उसने आरामकुर्सी में दूसरे ढंग से बैठते हुए दृढ़तापूर्वक अपने से यह पूछा। "क्या मतलब है इसका? क्या मैं इस बात से आंख नहीं मिला सकती? क्या बात है इसमें? क्या मेरे और इस अफसर-छोकरे के बीच उन सम्बन्धों के अतिरिक्त जो अन्य सभी परिचितों के साथ हैं, क्या कोई दूसरे सम्बन्ध हैं या हो सकते हैं?" वह तिरस्कारपूर्वक मुस्कराई और उसने फिर से किताब हाथ में ले ली। किन्तु अब जो कुछ पढ़ती थी, वह बिल्कुल उसकी समझ में नहीं आ रहा था। उसने कागज काटने के चाकू को खिड़की के शीशे से लगाया और फिर उसकी ठण्डी और चिकनी सतह को अपने गाल से छुआया और अचानक अकारण ही हावी हो जाने वाली खुशी से हंसते-हंसते रह गयी। उसने अनुभव किया कि उसके स्नायु किन्हीं घूमनेवाली खूंटियों पर तारों की भांति अधिकाधिक ज़ोर से कसे जा रहे हैं। उसने महसूस किया कि उसकी आंखें अधिकाधिक विस्फारित होती जा रही हैं कि हाथों और पैरों की उंगलियां घबराहट से ऐंठ रही हैं कि भीतर से कोई चीज उसका दम घोंट रही है और इस हिलते-डुलते झुटपुटे में सभी बिम्ब तथा ध्वनियां असाधारण आकार और रूप धारण करके उसे चकित कर रही हैं। रह-रहकर यह शंका उसके मन में सिर उठाती कि गाड़ी आगे जा रही है या पीछे या वह रुक ही नहीं रही है। उसके करीब आन्नुश्का है या कोई पराई औरत? "वहां, खूंटी के हत्थे पर फर का कोट है या कोई जंगली जानवर? मैं खुद भी यहां पर हूं? मैं खुद ही हूं या यह कोई दूसरी है?" विस्मृति की इस स्थिति के सामने घुटने टेकते हुए उसे भय अनुभव हुआ। लेकिन कोई चीज़ उसे उसकी तरफ खींच रही थी और वह अपनी इच्छा के मुताबिक उसके सामने झुक भी सकती थी और इसका विरोध भी कर सकती थी। वह सम्भलने के लिए उठी और उसने कम्बल तथा [illegible] उतार दिया। क्षण भर को वह सम्भली और समझ गयी कि पतला-दुबला किसान, लम्बा नानकिन ओवरकोट पहने, जिसका एक बटन गायब था, अंगीठी जलानेवाला [illegible] था, कि उसने थर्मामीटर को देखा था, कि हवा और बर्फ उसके साथ अन्दर घुस आई थी, लेकिन इसके बाद उसकी चेतना में फिर से सब कुछ गड्डमड्ड हो गया

(३०)

बर्फ का भयानक तूफान चल रहा था और रेल के डिब्बों के पहियों के बीच से तथा स्टेशन के कोने के पीछे खड़े खभों के गिर्द साय-साय कर रहा था। डिब्बे, खभे, लोग और अन्य जो कुछ भी नजर आ रहा था एक तरफ से बर्फ से ढका हुआ था तथा अधिकाधिक ढकता चला जा रहा था। तूफान क्षण भर को शान्त हो गया, किन्तु फिर इतने जोर से चलने लगा कि उसके सामने खड़े रहना असम्भव-सा प्रतीत होता था। फिर भी कुछ लोग हंसी-खुशी से आपस में बातें करते, प्लेटफार्म के तख्तों को चरमराते और बड़े-बड़े दरवाजों को लगातार खोलते तथा बन्द करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे। किसी झुके हुए आदमी की छाया उसके पैरों के पास से निकल गयी और लोहे पर हथौड़े की चोट की आवाज़ सुनाई दी। "तार इधर दो!" अंधेरे में दूसरी ओर से किसी का खीझा हुआ स्वर सुनाई दिया। "कृपया इधर आइये! २८ नम्बर!" दूसरी ऊंची-ऊंची आवाजें सुनाई दे रही थीं और कपड़ों से लदे-फदे तथा बर्फ से ढके विभिन्न लोग भागते दिखाई दे रहे थे। सिगरेट पीते हुए कोई दो महानुभाव आन्ना के पास से गुजरे। आन्ना ने ताजा हवा के लिये फिर लम्बी सांस ली और डिब्बे का हैंडल पकड़ने के लिये फर के मफ से हाथ बाहर निकाला ही था कि फौजी ओवरकोट पहने एक अन्य व्यक्ति ने उसके करीब आकर लालटेन के हिलते-डुलते प्रकाश को अपनी ओट में कर दिया। आन्ना ने मुड़कर देखा और फौरन व्रोन्स्की का चेहरा पहचान लिया। छज्जेदार फौजी टोपी पर हाथ रखकर उसने आन्ना का अभिवादन किया और पूछा कि उसे किसी चीज की जरूरत तो नहीं, कि क्या वह उसकी कोई खिदमत कर सकता है? आन्ना कोई जवाब दिये बिना देर तक उसे देखती रही और व्रोन्स्की के अंधेरे में खड़े होने के बावजूद उसने उसके चेहरे और आंखों का भाव देख लिया या फिर उसे ऐसा प्रतीत हुआ। यह सम्मानपूर्ण मुग्धता का वही भाव था, जिसने एक दिन पहले उस पर इतना अधिक प्रभाव डाला था। इन पिछले दिनों में और अभी कुछ ही समय पहले आन्ना ने अनेक बार अपने आपसे यह कहा था कि उसके लिए व्रोन्स्की निरन्तर और सभी जगह मिलने

अनुभव की मानो वह उसे दूसरे ही रूप मे देखने की आशा करती हो। अपने प्रति असन्तोष की भावना ने, जो पति से भेंट होने पर उसने महसूस की, खास तौर पर उसे हैरान किया। असन्तोष की यह भावना उसमें बहुत पहले से थी, जानी-पहचानी थी, ढोंग से मिलती-जुलती थी, जो वह पति के साथ अपने सम्बन्धो में अनुभव करती थी। पहले इस भावना की ओर उसका ध्यान नही गया था, किन्तु अब उसे इसकी स्पष्ट और पीडायुक्त अनुभूति हो रही थी।

"तो, जैसा कि तुम देख रही हो, मैं तो प्यार करनेवाला पति हूँ, वैसा ही प्यार करनेवाला, जैसा कि शादी के पहले साल में होता है, तुमसे मिलने को बेक़रार हो रहा था," उसने अपनी पतली-सी आवाज़ और उस धीमे-धीमे अन्दाज़ में कहा, जिसका वह हमेशा उससे बातचीत करते हुए उपयोग करता था। यह अन्दाज़ ऐसे कल्पित व्यक्ति का उपहास करने का अन्दाज़ था, जो वास्तव में ही उससे ऐसे शब्द कह सकता था।

"सेर्योझा ठीक-ठाक है?" आन्ना ने पूछा।

"बस, यही पुरस्कार है मेरी व्यग्रता-व्याकुलता का?" पति ने कहा। "ठीक-ठाक है, ठीक-ठाक है "

(३१)

व्रोन्स्की ने पिछली रात को सोने की कोशिश ही नही की। वह अपनी आरामकुर्सी में बैठे हुए कभी तो अपने सामने की ओर देखता रहता और कभी बाहर जाने तथा भीतर आनेवाले लोगों को। अगर पहले वह अपरिचित यात्रियों को अपनी दृढ़तापूर्ण शान्त मुद्रा से आश्चर्य-चकित और परेशान करता रहा था, तो अब और भी अधिक घमण्डी तथा आत्मतुष्ट प्रतीत होता था। लोगो को वह चीज़ों की तरह ही देखता था। ज़िला-कचहरी में काम करनेवाला एक चिड़चिड़ा-सा नौजवान, जो उसके सामने बैठा था, उसकी ऐसी अकड़ के कारण उससे नफ़रत करने लगा। इस जवान आदमी ने व्रोन्स्की से दियासलाई लेकर सिगरेट जलाई, उससे बातचीत की, यहा तक कि उसे कोहनी भी मारी ताकि उसे यह महसूस करवाये कि वह कोई वस्तु नही, बल्कि

अनुभव की मानो वह उसे दूसरे ही रूप में देखने की आशा करती हो। अपने प्रति असन्तोष की भावना ने, जो पति से भेट होने पर उसने महसूस की, खास तौर पर उसे हैरान किया। असन्तोष की यह भावना उसमें बहुत पहले से थी, जानी-पहचानी थी, ढोंग से मिलती-जुलती थी, जो वह पति के साथ अपने सम्बन्धों में अनुभव करती थी। पहले इस भावना की ओर उसका ध्यान नही गया था, किन्तु अब उसे इसकी स्पष्ट और पीड़ायुक्त अनुभूति हो रही थी।

"तो, जैसा कि तुम देख रही हो, मैं तो प्यार करनेवाला पति हूं, वैसा ही प्यार करनेवाला, जैसा कि शादी के पहले साल में होता है, तुमसे मिलने को बेकरार हो रहा था," उसने अपनी पतली-सी आवाज़ और उस धीमे-धीमे अन्दाज़ में कहा, जिसका वह हमेशा उससे बातचीत करते हुए उपयोग करता था। यह अन्दाज़ ऐसे कल्पित व्यक्ति का उपहास करने का अन्दाज़ था, जो वास्तव में ही उससे ऐसे शब्द कह सकता था।

"सेर्योझा ठीक-ठाक है?" आन्ना ने पूछा।

"बस, यही पुरस्कार है मेरी व्यग्रता-व्याकुलता का?" पति ने कहा। "ठीक-ठाक है, ठीक-ठाक है..."

(३१)

व्रोन्स्की ने पिछली रात को सोने की कोशिश ही नही की। वह अपनी आरामकुर्सी में बैठे हुए कभी तो अपने सामने की ओर देखता रहता और कभी बाहर जाने तथा भीतर आनेवाले लोगों को। अगर पहले वह अपरिचित यात्रियों को अपनी दृढ़तापूर्ण शान्त मुद्रा से आश्चर्य-चकित और परेशान करता रहा था, तो अब और भी अधिक घमण्डी तथा आत्मतुष्ट प्रतीत होता था। लोगो को वह चीज़ो की तरह ही देखता था। ज़िला-कचहरी में काम करनेवाला एक चिड़चिड़ा-सा नौ-जवान, जो उसके सामने बैठा था, उसकी ऐसी अकड़ के कारण उससे नफ़रत करने लगा। इस जवान आदमी ने व्रोन्स्की से दियासलाई लेकर सिगरेट जलाई, उससे बातचीत की, यहा तक कि उसे कोहनी भी [illegible] यह महसूस करवाये कि वह कोई वस्तु नही, बल्कि

इन्सान है, किन्तु व्रोन्स्की उसकी तरफ वैसे ही देखता रहा मानो वह लालटेन का खम्भा हो। युवा व्यक्ति मुह बनाते हुए यह अनुभव करता रहा कि व्रोन्स्की द्वारा उसे मानव न मानने के कारण वह अपना मानसिक सन्तुलन खोता जा रहा है।

व्रोन्स्की किसी को और कुछ भी नही देख रहा था। वह अपने को मानो ज़ार महसूस कर रहा था। सो भी इसलिये नही कि उसे आन्ना पर अपनी छाप डाल लेने का विश्वास था, उसे यह विश्वास नहीं था, बल्कि इसलिये कि आन्ना ने उसके दिल पर जो छाप छोडी थी, उससे उसे सुख और गर्व की अनुभूति हो रही थी।

इस सब का क्या नतीजा होगा, वह यह नही जानता था और उसने इसके बारे मे सोचा भी नही था। उसे महसूस हो रहा था कि अब तक विसर्जित और बिखरी-बिखरायी उसकी सारी शक्तिया एक ही बिन्दु पर केन्द्रित हो गयी है और बडे ज़ोर से एक सुखद लक्ष्य की प्राप्ति मे जुटा दी गयी है। उसे इससे सुख मिल रहा था। वह तो सिर्फ इतना जानता था कि उसने आन्ना से सच्ची बात कह दी है, कि वह वहा जा रहा है, जहा वह होगी, कि उसके जीवन का सारा सुख, उसके जीवन का एकमात्र प्रयोजन अब इसी मे निहित है कि उसे देखे, उसकी आवाज़ सुने। और जब वह बोलोगोये के स्टेशन पर खनिज जल पीने के लिये डिब्बे से बाहर निकला और उसने आन्ना को देखा, तो अपने आप ही उसके मुह से निकले पहले शब्द ने उससे वही कह दिया, जो वह मन मे सोचता रहा था। उसे इस बात की खुशी थी कि उसने उससे यह कह दिया था, कि अब वह यह जानती है और इसके बारे मे सोचती है। व्रोन्स्की रात भर नही सोया। अपने डिब्बे मे लौटकर वह लगातार उन रूपो को, जिनमे उसने आन्ना को देखा था, तथा उसके सभी शब्दो को याद करता रहा, और उसकी कल्पना मे सम्भव भविष्य के ऐसे चित्र उभरते रहे, जिनसे बरबस दिल काप उठता था।

रात भर जागते रहने के बावजूद जब वह पीटर्सबर्ग के स्टेशन पर डिब्बे से बाहर निकला, तो अपने को ऐसा सजीव और ताज़ादम महसूस कर रहा था मानो ठण्डे पानी से नहा कर बाहर आया हो। वह अपने डिब्बे के पास खडा होकर आन्ना के बाहर निकलने की राह

"लेकिन वह तो सभी कुछ तफसील मे जानना चाहती है
प्यारी, अगर बहुत नहीं थक गयी हो, तो उसके यहा हो
कोन्द्राती तुम्हारे लिये बग्घी का प्रबन्ध कर देगा और मैं कमे
जा रहा हू। आज मुझे अकेले ही खाना नहीं खाना पड़ेगा," क
ने अब मजाक के बिना अपनी बात जारी रखी, "तुम तो सो
नही सकती कि मेरे लिये तुम "

और उसने देर तक प्यार से उसका हाथ दबाते हुए विशेष म
के साथ उसे बग्घी मे बिठा दिया।

(३२)

घर पर बेटे से ही आन्ना की सबसे पहले भेट हुई। शि
के चीखने-चिल्लाने के बावजूद वह बहुत खुशी से "मा! म
पुकारता हुआ सीढियो से नीचे भागा आया। मा के पास पहुचक
उसके गले से लिपट गया।

"मैंने कहा था न आपसे कि मा है!" उसने चिल्लाकर शि
से कहा। "मै जानता था!"

और पति की भाति बेटे को देखकर आन्ना को कुछ निराश
हुई। वह वास्तव मे जैसा था, उसने कुछ बेहतर रूप मे उसकी क
की थी। वह जैसा था, उसे उसी रूप मे देखकर खुश होने के
जरूरी था कि वह वास्तविकता के धरातल पर उतरे। किन्तु
इस रूप मे भी, सुनहरे घुघराले बालों, नीली आखों और जुराबो
कसी हुई गदरायी, सुघड टागो के साथ वह बहुत प्यारा था। आ
को उसकी निकटता और प्यार से लगभग शारीरिक आनन्द की अनु
हुई और उसकी निश्छल, विश्वासपूर्ण और प्यार भरी दृष्टि से दे
मिलने तथा उसके भोले-भाले सवाल सुनने से उसे नैतिक चैन मि
आन्ना ने उसे वे उपहार दिये जो डौली के बच्चो ने भेजे थे
बेटे को यह बताया कि मास्को मे तान्या नाम की एक लड़की है,
यह तान्या पढ़ना जानती है और दूसरे बच्चो को भी पढ़ाती है।

"तो क्या मै उससे बुरा हू?" सेर्योझा ने पूछा।

"मेरे लिये तो तुम दुनिया मे सबसे बढ़कर हो।"

के बारे में बातचीत की और उपहासपूर्ण मुस्कान के साथ ओब्लोन्स्की के बारे में पूछा। किन्तु वैसे तो पीटर्सबर्ग के सरकारी दफ़्तरों और सामाजिक मामलों के सम्बन्ध में आम बातचीत ही चलती रही। खाना ख़त्म होने के बाद उसने मेहमानों के साथ आध घण्टा बिताया और फिर मुस्कराते हुए प्यार से पत्नी का हाथ दबाकर परिषद में चला गया। इस शाम को आन्ना न तो प्रिंसेस बेत्सी त्वेरस्काया के यहां गयी, जिसे उसके मास्को से लौटने की ख़बर मिल गयी थी और जिसने उसे बुलाया था, और न ही थियेटर गयी, जहां उस शाम के लिये उसका अलग बोक्स था। मुख्यत: तो वह इसलिये नहीं गयी कि उसने जिस पोशाक की आशा की थी, वह तैयार नहीं हुई थी। मेहमानों के जाने पर जब उसने अपनी कपड़ों की तरफ़ ध्यान दिया तो बहुत परेशान हो उठी। आन्ना ने, जो कम महंगे कपड़े पहनने की कला जानती थी, मास्को जाने से पहले अपनी तीन पोशाकें दर्ज़िन को नये रूप में ढालने के लिये दे दी थीं। इन पोशाकों को ऐसे बदलना चाहिये था कि वे पहचानी न जा सकें और तीन दिन पहले ही उन्हें तैयार हो जाना चाहिये था। अब पता चला कि दो पोशाकें तैयार ही नहीं हुई थीं और तीसरी को वैसे नहीं बदला गया था, जैसे आन्ना चाहती थी। दर्ज़िन अपनी सफ़ाई देने आयी और उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि पोशाक इसी रूप में ज़्यादा अच्छी रहेगी। आन्ना इतनी अधिक बिगड़ उठी कि बाद में इस बात का ख़्याल करके उसे अपने पर शर्म आई। अपने को पूरी तरह शान्त करने के लिये वह बेटे के कमरे में चली गयी और उसने सारी शाम उसी के साथ बितायी। उसने ख़ुद ही उसे सोने के लिये बिस्तर पर लिटाया, उसके ऊपर सलीब का निशान बनाया और कम्बल ओढ़ाया। वह ख़ुश थी कि कहीं भी नहीं गयी और उसने इतने अच्छे ढंग से शाम बितायी। उसका मन इतना हल्का था, इतना चैन अनुभव कर रहा था और इतने स्पष्ट रूप से वह यह महसूस कर पा रही थी कि रेलगाड़ी में सफ़र करते हुए उसे जो कुछ इतना महत्त्वपूर्ण प्रतीत हो रहा था, वह ऊंचे समाज के जीवन की एक आम तुच्छ घटना थी, कि उसके लिये किसी दूसरे या ख़ुद अपने सामने लज्जित होने की कोई बात नहीं थी। आन्ना अंग्रेज़ी का कोई उपन्यास लेकर अंगीठी के सामने बैठ गयी और पति के आने की

राह देखने लगी। रात के ठीक साढ़े नौ बजे दरवाजे पर घण्टी बजी और कुछ क्षण बाद पति उसके कमरे में आया।

"आखिर तो तुम्हारा घर आना हुआ," उसकी ओर अपना हाथ बढाते हुए आन्ना ने कहा।

पति ने उसका हाथ चूमा और उसके करीब बैठ गया।

"कुल मिलाकर मैं देख रहा हू कि तुम्हारी मास्को-यात्रा सफल रही," उसने पत्नी से कहा।

"हा, बहुत सफल रही," आन्ना ने जवाब दिया और उसे शुरू से ही सब कुछ बताने लगी – कैसे श्रीमती व्रोन्स्काया के साथ उसने यात्रा की, मास्को पहुची और कैसे वहा स्टेशन पर एक दुर्घटना हुई। इसके बाद उसने यह बताया कि कैसे पहले तो उसे अपने भाई और फिर डौली पर दया आई।

"मैं यह मानने को तैयार नही हू कि ऐसे व्यक्ति को चाहे वह तुम्हारा भाई ही हो, क्षमा किया जा सकता है," कारेनिन ने कहा।

आन्ना मुस्कराई। वह समझ गयी थी कि उसने यह जाहिर करने को ये शब्द कहे थे कि रिश्तेदारी को ध्यान मे रखते हुए भी वह ईमानदारी की बात कहे बिना नही रह सकता। आन्ना अपने पति के चरित्र के इस लक्षण से परिचित थी और इसे पसन्द करती थी।

"मैं खुश हू कि सब कुछ अच्छे ढग से समाप्त हो गया और तुम आ गयी," वह कहता गया। "हा, यह तो बताओ कि उस नये प्रस्ताव के बारे मे, जो मैंने परिषद मे स्वीकार करवाया है, लोगो की क्या राय है?"

आन्ना ने इस प्रस्ताव के बारे मे कुछ भी नही सुना था और उसे इस बात से शर्म महसूस हुई कि उसने इतनी आसानी से उस चीज को भुला दिया, जो उसके पति के लिये इतना अधिक महत्त्व रखती थी।

"यहा तो उसने खासी हलचल पैदा कर डाली," पति ने आत्मतुष्ट मुस्कान के साथ कहा।

आन्ना ने महसूस किया कि कारेनिन इस मामले को लेकर अपने बारे में उससे कुछ सुखद बात कहना चाहता था और उसने प्रश्न पूछ-पूछकर उसे बताने को प्रेरित किया। पति ने उसी आत्मतुष्ट मुस्कान के साथ उस प्रशसा की चर्चा की, जो इस प्रस्ताव को स्वीकार करवाने पर उसे परिषद में मिली थी।

पुत्र बहुत [illegible] खुशी हुई थी। यह इस बात का प्रमाण है कि हमारे यहाँ [illegible] [illegible] उस [illegible] में [illegible] और [illegible] [illegible] बनने लगा है।

[illegible] और [illegible] गयी के साथ बात का [illegible] [illegible] खत्म होने के बाद कारेनिन उठा और अपने अध्ययन-कक्ष की ओर चल दिया।

"तुम कहीं भी नहीं गयी? तुम्हें तो ऊब महसूस होती रही होगी?" पति ने कहा।

"ओह, नहीं!" आन्ना ने उसके पीछे-पीछे उठते और हाल में से उसे अध्ययन-कक्ष तक पहुँचाने के लिए उसके साथ जाते हुए कहा। "क्या पढ़ रहे हो आजकल तुम?" आन्ना ने पूछा।

"आजकल मैं Duc de Lille, *Poesie des enfers** पढ़ रहा हूँ," पति ने जवाब दिया। "बहुत ही बढ़िया किताब है।"

आन्ना ऐसे मुस्करा दी, जैसे प्रिय व्यक्तियों की दुर्बलताओं पर मुस्कराया जाता है और उसकी बाँह में अपनी बाँह डालकर उसे अध्ययन-कक्ष के दरवाज़े तक पहुँचा दिया। आन्ना मानो से पहले पति की पढ़ने की आदत से, जो एकदम अनिवार्य बात हो गयी थी, परिचित थी। वह जानती थी कि सरकारी नौकरी की ज़िम्मेदारियों में लगभग हर वक्त डूबे रहने के बावजूद बौद्धिक क्षेत्र में सामने आनेवाली हर बढ़िया रचना से परिचित होना वह अपना कर्तव्य मानता था। वह यह भी जानती थी कि राजनीति, दर्शन और धर्म सम्बन्धी पुस्तकों में उसकी वास्तविक रुचि थी, कि कला उसके स्वभाव के लिये बिल्कुल परायी चीज़ थी, लेकिन इसके बावजूद या यह कहना ज़्यादा बेहतर होगा कि इसी कारण से कारेनिन इस क्षेत्र में हलचल पैदा कर देनेवाली किसी भी रचना को नज़र से ओझल नहीं होने देता था और ऐसी सभी चीज़ों को पढ़ना अपना कर्त्तव्य मानता था। वह जानती थी कि राजनीति, दर्शन और धर्म के क्षेत्र में कारेनिन के मन में कुछ सन्देह और संशय थे या वह कुछ खोजता रहता था, किन्तु कला और काव्य, विशेषत संगीत के मामले में, जिसकी उसे तनिक भी समझ नहीं थी, उसके बहुत ही सुनिश्चित और दृढ़ विचार थे। उसे शेक्सपीयर, राफायल और बिथोविन तथा कविता और संगीत की नई धाराओं

* ड्यूक दे लील, 'नरक-काव्य'। (फ़ासीसी)

नहीं था और अमीर होने की बात तो दूर रही, बुरी तरह कर्ज़ में दबा हुआ था। शाम को वह हमेशा नशे में धुत होता था और तरह-तरह के मज़ाकों तथा गन्दे किस्सा-घटनाओं के कारण अक्सर थाने-चौकी में पहुंचाया जाता था, लेकिन यार-दोस्त और बड़े अफ़सर भी उसे चाहते थे। सुबह के ग्यारह बजे के बाद स्टेशन से अपने घर आने पर व्रोन्स्की ने इमारत के सामने अपनी जानी-पहचानी किराए की बग्घी देखी। घण्टी बजाते समय ही उसे भीतर से मर्दों के ठहाके, एक नारी कण्ठ की चहक-चहक और पेत्रीत्स्की का चिल्लाकर यह कहना सुनाई दिया, "अगर कोई बदमाश हो, तो उसे भीतर नहीं आने दिया जाये।" व्रोन्स्की ने नौकर को अपने बारे में खबर देने से मना कर दिया और दबे पांव पहले कमरे में गया। पेत्रीत्स्की की दोस्त, बैरोनेस शिल्तोन बैंगनी रंग की रेशमी पोशाक और अपने गुलाबी गालोंवाले प्यारे चेहरे तथा सुनहरे बालों की छटा दिखाती और कैनरी चिड़िया की तरह पेरिसी फ्रांसीसी बोली से कमरे को गुंजाती हुई गोल मेज़ के सामने बैठी कॉफ़ी बना रही थी। पेत्रीत्स्की ओवरकोट और रिसाले का कप्तान कामेरोव्स्की पूरी वर्दी पहने (सम्भवतः दोनों ड्यूटी से लौटे थे) उसके गिर्द बैठे थे।

"हुर्रा! व्रोन्स्की!" पेत्रीत्स्की उछलकर खड़ा हुआ और कुर्सी को ज़ोर से पीछे घसीटता हुआ चिल्लाया। "गृह मालिक! बैरोनेस, इसे नये कॉफ़ीदान से कॉफ़ी पिलाओ। हमने तुम्हारी आने की तो कल्पना भी नहीं की थी। उम्मीद करता हूं कि अपने कमरे की सजावट से तुम खुश हो," उसने बैरोनेस की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "तुम तो एक-दूसरे से परिचित हो न?"

"बेशक परिचित हैं!" व्रोन्स्की ने खुशी से मुस्कराते और बैरोनेस के हाथ से हाथ मिलाते हुए कहा। "वास्तव में ही पुराने दोस्त हैं।"

"आप तो सफ़र से आ रहे हैं," बैरोनेस ने कहा, "तो मैं भाग चली। अगर मेरी वजह से कोई परेशानी हो, तो मैं इसी वक्त चली जाती हूं।"

"बैरोनेस, आप जहां भी हैं, वही घर पर है," व्रोन्स्की ने कहा। "नमस्ते, कामेरोव्स्की," उदासीनता से कामेरोव्स्की के साथ हाथ मिलाते हुए उसने इतना और कह दिया।

"देखा, आप कभी ऐसी प्यारी बातें नही कह सकते हैं," बैरोनेस ने पेत्रीत्स्की से कहा।

"कह क्यो नही सकता? खाने के बाद मैं इससे उन्नीस नही रहूगा।"

"खाने के बाद तो यह कोई खूबी नही रहती! तो, मैं आपके लिये कॉफी बनाती हू, आप जाकर हाथ-मुह धो लीजिये और कपडे बदल आइये," बैरोनेस ने फिर से बैठते और बडे ध्यान से नये कॉफ़ीदान का हैंडल घुमाते हुए रहा। "पियेर, कॉफी दीजिये," उसने पेत्रीत्स्की को सम्बोधित किया, जिसे वह उसके पेत्रीत्स्की कुलनाम के आधार पर पियेर कहती थी। वह उसके साथ अपने सम्बन्धो की घनिष्ठता को नही छिपाती थी। "मैं कुछ कॉफी और डालना चाहती हू।"

"बिगाड देगी।"

"नही, नहीं बिगाडूगी! अरे हा, और आपकी बीवी?" बैरोनेस ने व्रोन्स्की और उसके साथी की बातचीत मे खलल डालते हुए अचानक पूछा। "हमने तो यहा आपकी शादी कर डाली है। अपनी बीवी को लाये?"

"नही, बैरोनेस। मैं बजारे की तरह बेघरबार ही पैदा हुआ हू और ऐसे ही मरूगा।"

"यह और भी अच्छी बात है, बहुत अच्छी बात है। लाइये, अपना हाथ दीजिये।"

और बैरोनेस व्रोन्स्की को ऐसे ही रोके हुए तरह-तरह के मज़ाको के साथ उसे अपने जीवन की नवीनतम योजनाये बताने और उसकी सलाह लेने लगी।

"वह मुझे किसी तरह भी तलाक नही देना चाहता। तो मैं क्या करू? ('वह' उसका पति था।) मैं अब मुकदमा शुरू करना चाहती हू। आपकी क्या राय है? कामेरोव्स्की, कॉफी का ध्यान कीजिये — उफन रही है, आप देख रहे हैं न कि मैं व्यस्त हू! मैं मुकदमा चलाना चाहती हू, क्योकि अपनी सम्पत्ति की मुझे जरूरत है। आप इस बेतुकी बात को समझते है न, यह मानते हुए कि मैंने उसके साथ बेवफाई की है," उसने तिरस्कार के साथ कहा, "वह इसके आधार पर मेरी जागीर हड़प जाना चाहता है।"

व्रोन्स्की बड़े मजे मे इस प्यारी औरत की यह चुलबुली बक-बक

सुन रहा था, उसकी हां में हां मिला रहा था, मजाक के पुट के साथ कुछ सलाह देता जाता था और उस ढंग की औरतों से बातचीत करने के अपने अभ्यस्त अन्दाज को फौरन अपना लिया था। उसकी पीटर्सबर्गी दुनिया में सभी लोग एक दूसरे के बिल्कुल विपरीत दो किस्मों में विभाजित थे। एक घटिया किस्म तो वह थी, जिसमें ऐसे तुच्छ, मूर्ख और सबसे बढ़कर तो यह कि वे हास्यास्पद लोग शामिल थे, जो ऐसा मानते हैं कि पति को अपनी विवाहिता पत्नी के साथ ही रहना चाहिये, कि लड़की को पाकीजा और औरत को शर्म-लिहाजवाली होना चाहिये, मर्द को साहसी, संयत और दृढ़ होना चाहिये, बच्चों का पालन-पोषण करना, अपनी रोजी-रोटी कमानी और ऋण चुकाना चाहिये तथा इसी तरह की दूसरी बेहूदा बातें करनी चाहिये। ये पुराने ढर्रे और हास्यास्पद किस्म के लोग थे। किन्तु एक दूसरी, बढ़िया किस्म भी थी, जिसमें ये सभी शामिल थे। इसके मुख्य लक्षण ये थे कि आदमी ठाट-बाट से रहे, वह सुन्दर, उदारमना, दिलेर और खुशमिजाज हो, किसी भी तरह की शर्म-झेंप के बिना सब तरह की मौज मनाये और बाकी सब चीजों की खिल्ली उड़ाये।

मास्को की, बिल्कुल दूसरी ही दुनिया से लायी गयी छापों के कारण व्रोन्स्की शुरू में कुछ क्षण तक ही स्तम्भित रहा, किन्तु उसी समय, मानो पुराने जूतों में पांव डालते ही वह अपनी प्यारी और हंसी-खुशी से भरपूर दुनिया में लौट आया।

कॉफी तो तैयार ही नहीं हुई, वह सभी पर छींटे डालकर उड़ गयी और उसने वह काम कर दिखाया, जिसकी जरूरत थी, यानी उसने हंसी-मजाक और ठहाकों का मौका दिया और कीमती कालीन तथा बैरोनेस की पोशाक पर धब्बे डाल दिये।

"तो अब विदा, नहीं तो आप कभी नहाये-धोयेंगे नहीं और एक भले आदमी के सबसे बड़े अपराध यानी साफ-सुथरा न होने के लिये मुझे दोषी बनना पड़ेगा। तो आप मुझे उसके गले पर छुरी रखने की सलाह देते हैं?"

"निश्चित रूप से। सो भी ऐसे कि आपका छोटा-सा हाथ उसके होंठों के बिल्कुल निकट हो। वह आपका हाथ चूमेगा और सब कुछ बढ़िया ढंग से खत्म हो जायेगा," व्रोन्स्की ने जवाब दिया।

"तो आज शाम को फ्रांसीसी थियेटर में!" और वह अपनी पोशाक को सरसराती हुई ग़ायब हो गयी।

कामेरोव्स्की भी उठ खड़ा हुआ, व्रोन्स्की ने उसके जाने की प्रतीक्षा किये बिना उससे हाथ मिलाया और हाथ-मुह धोने चला गया। जब वह ऐसा कर रहा था, पेत्रीत्स्की ने व्रोन्स्की के जाने के बाद अपनी स्थिति में हुए परिवर्तन का संक्षिप्त वर्णन किया। उसने व्रोन्स्की को बताया कि उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। पिता ने कह दिया है कि वह पैसे नहीं देगा और कर्ज़ नहीं चुकायेगा। उसका दर्ज़ी उसे जेल भिजवाना चाहता है और एक अन्य भी ऐसा ही करने की धमकी दे रहा है। रेजिमेन्ट के कमांडर ने एलान कर दिया है कि अगर ये सब किस्से खत्म नहीं होंगे, तो रेजिमेन्ट से उसकी छुट्टी कर दी जायेगी। बैरोनेस से भी वह बुरी तरह उकता गया है खास तौर पर इसलिये कि हमेशा पैसे देने की ही बात करती रहती है। लेकिन एक और है जिसे वह व्रोन्स्की को दिखायेगा, बहुत ही कमाल की, बहुत प्यारी बिल्कुल पूर्वी ढग की, "दासी रिबेका जैसी, समझे?" बेर्कोशेव से भी कल गाली-गलौज हो गयी और वह द्वन्द्व-युद्ध के लिये अपने साक्षी भेजना चाहता है, मगर ज़ाहिर है ऐसा कुछ भी नहीं होगा। कुल मिलाकर यह कि सब कुछ बहुत बढ़िया है, खूब मज़े की चल रही है उसकी जिन्दगी। दोस्त को अपनी परिस्थितियों की तफ़सीलों की गहराई में डूबने का मौक़ा न देते हुए पेत्रीत्स्की उसे तरह-तरह की दिलचस्प खबरें सुनाने लगा। अपने घर के इतने जाने-पहचाने वातावरण में, जहां वह तीन साल बिता चुका था, पेत्रीत्स्की के इतने सुपरिचित किस्से सुनकर व्रोन्स्की को पीटर्सबर्ग के अभ्यस्त और मस्ती भरे जीवन में लौटने की अनुभूति होने लगी।

"यह असम्भव है!" वह वाश-बेसिन के पैडल से पांव हटाकर, जहा वह अपनी लाल और मज़बूत गर्दन धो रहा था चिल्ला उठा। "यह असम्भव है!" वह यह खबर सुनकर चिल्ला उठा कि लोरा फ़ेर्तिनगोफ़ को छोडकर मिलेयेव के साथ रहने लगी है। "और फ़ेर्तिनगोफ़ वैसा ही बुद्धू तथा खुश है? और बुज़ुलूकोव का क्या हाल है?"

"अहा, बुज़ुलूकोव के साथ क्या बढ़िया किस्सा हुआ – बस मज़ा ही आ गया!" पेत्रीत्स्की चिल्ला उठा। "बॉलों का तो वह

दीवाना है और दरबारी बॉलों में तो वह ज़रूर ही जाता है। सो वह नया शिरस्त्राण पहन कर बड़े बॉल में चला गया। तुमने देखे हैं नये शिरस्त्राण? बहुत अच्छे हैं, बड़े हल्के हैं। तो वह खड़ा था.. नहीं, तुम मेरी बात सुनो।

"हां, मैं सुन रहा हूं," मोटे तौलिये से हाथ-मुंह पोंछते हुए व्रोन्स्की ने जवाब दिया।

"ग्रैंड डचेस किसी राजदूत के साथ उसके पास से गुज़री और उसकी बदकिस्मती से उनके बीच नये शिरस्त्राणों की चर्चा चल पड़ी। ग्रैंड डचेस ने राजदूत को यह नया शिरस्त्राण दिखाना चाहा . देखा कि हमारा यह सूरमा खड़ा है। (पेत्रीत्स्की ने मुद्रा बनाकर दिखाई कि कैसे वह शिरस्त्राण पहने खड़ा था।) ग्रैंड डचेस ने उससे शिरस्त्राण दिखाने का अनुरोध किया, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। यह क्या मामला है? सभी उसे आंखों और सिरों से शिरस्त्राण देने के इशारे करें, माथे पर बल डालें। दे दो। उसने नहीं दिया। बुत बना खड़ा रहा। तुम कल्पना करो तो तब उसने.. कौन था वह.. उसने शिरस्त्राण लेना चाहा. फिर भी नहीं दिया! उसने झपट लिया और ग्रैंड डचेस को दे दिया। 'यह है नया शिरस्त्राण,' ग्रैंड डचेस ने कहा। उसने शिरस्त्राण को उल्टा किया और अब तुम कल्पना करो, उसमें से धम की आवाज़ करते हुए एक नाशपाती और टाफ़ियां, दो पौण्ड टाफ़ियां नीचे जा गिरीं! उसने, हमारे इस यार ने चुपके से शिरस्त्राण में यह सब कुछ भर लिया था!"

व्रोन्स्की हंसते-हंसते लोट-पोट हो गया। बाद में किसी दूसरी बात की चर्चा करते हुए भी शिरस्त्राण वाली घटना को याद करके वह अपने सुन्दर और मज़बूत दांतों की चमक दिखाता हुआ देर तक ज़िन्दादिली से ठहाके लगाकर लोट-पोट होता रहा।

सारी खबरें सुनने के बाद नौकर की मदद से व्रोन्स्की ने अपनी वर्दी पहनी और अपने आने की रिपोर्ट देने चला गया। इसके बाद उसका अपने भाई और बेत्सी तथा कुछ दूसरे लोगों के यहां जाने का इरादा था, ताकि उस सामाजिक हलके में आने-जाने के लिये ज़मीन तैयार करे, जहां कारेनिना से उसकी भेंट हो सके। जैसा कि पीटर्सबर्ग में हमेशा होता था, वह रात को काफ़ी देर से घर लौटा।

दूसरा भाग

(१)

जाड़े के अन्त में यह तय करने के लिये कि कीटी की सेहत का क्या हाल है और उसके गिरते स्वास्थ्य को ठीक करने की खातिर क्या किया जाये श्चेर्बात्स्की परिवार में डाक्टरों को मशविरे के लिये बुलाया गया। कीटी बीमार रहती थी और वसन्त के निकट आने पर उसकी सेहत और भी ज्यादा खराब हो गयी थी। परिवार के डाक्टर ने उसे काड लिवर आयल पिलाया, उसके बाद आयरन खिलाया और इसके पश्चात चांदी का घोल पीने को दिया, किन्तु किसी भी दवाई से कोई लाभ नहीं हुआ। चूंकि उसने वसन्त में विदेश जाने की सलाह दी, इसलिये एक जाने-माने डाक्टर से सलाह लेने का निर्णय किया गया। इस प्रसिद्ध डाक्टर ने, जो अभी जवान और खासा खूबसूरत मर्द था, रोगी का पूरी तरह मुआयना करना चाहा। वह तो मानो विशेष आनन्द के साथ इस बात पर जोर देता था कि लडकी की लाज-शर्म बीते जमाने की असभ्यता का अवशेष है और इससे अधिक स्वाभाविक कुछ नहीं हो सकता कि वह मर्द, जो अभी खुद भी बूढ़ा नहीं हुआ, जवान नंगी लडकी के शरीर को जांच-परखे। वह इसलिये इसे स्वाभाविक मानता था कि हर दिन ही ऐसा करता था और ऐसा करते हुए न तो कुछ महसूस करता था और, जैसा कि उसे प्रतीत होता था, न कोई बुरा विचार ही उसके मन में आता था। इसलिये लडकी के लजाने-शर्माने को वह न केवल जहालत का अवशेष, बल्कि अपना अपमान भी मानता था।

इस डाक्टर की इच्छा के सामने झुकना जरूरी था। कारण कि यद्यपि सभी डाक्टरों ने एक ही विद्यालय में, एक ही जैसी किताबों से पढाई की थी, वे एक जैसी ही विद्या जानते थे और यद्यपि कुछ ऐसा भी कहते थे कि यह किसी काम का डाक्टर नहीं है तथापि प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया के घर और उनकी जान-पहचान के लोगों में ऐसा माना जाता था कि यह विख्यात डाक्टर कोई खास चीज जानता है और सिर्फ वही कीटी को बचा सकता है। परेशान और शर्म से बेहाल हुई कीटी की अच्छी तरह से जाच करने और उसकी पसलियों पर उगलिया बजाने तथा खूब अच्छी तरह से हाथ धोने के बाद प्रसिद्ध डाक्टर मेहमानखाने में खडा हुआ प्रिंस से बातचीत कर रहा था। प्रिंस डाक्टर की बातें सुनते हुए तनिक खासते थे और नाक-भौंह सिकोड रहे थे। वे काफी जिन्दगी देख चुके थे, खासे समझदार और स्वस्थ व्यक्ति थे, चिकित्साशास्त्र में विश्वास नहीं करते थे और मन ही मन इस सारे तमाशे पर झल्ला रहे थे। खास तौर पर इसलिये कि वे अकेले ही तो कीटी की बीमारी के कारण को अच्छी तरह से जानते थे। "बातूनी कहीं का," बेटी की बीमारी के लक्षणों के बारे में उसकी बक-बक को सुनते हुए वे मन ही मन इस प्रसिद्ध डाक्टर की तुलना खाली हाथ लौटने, किन्तु बढ-चढकर बातें बनानेवाले शिकारी के साथ कर रहे थे। दूसरी तरफ डाक्टर भी बडी मुश्किल से इस बूढे कुलीन के प्रति अपनी तिरस्कार भावना पर काबू पा रहा था और कठिनाई से ही उनकी समझ के नीचे स्तर पर बातचीत कर रहा था। वह अच्छी तरह से जानता था कि बूढे से बात करने में कोई तुक नहीं और घर में मा ही सब कुछ हैं। वह उन्हीं के सामने अपने कीमती मोती बिखेरना चाहता था। इसी समय प्रिंसेस परिवार के डाक्टर के साथ मेहमानखाने में आई। प्रिंस इस बात को छिपाने की कोशिश करते हुए कि उन्हें यह सारा तमाशा कितना हास्यास्पद लग रहा है, परे हट गये। प्रिंसेस बहुत परेशान थी और समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे। वे अपने को कीटी के सामने दोषी अनुभव करती थी।

"तो डाक्टर कीजिये हमारी किस्मत का फैसला," प्रिंसेस ने कहा। "मुझे सब कुछ बताइये।" "कोई उम्मीद है या

नही?" उन्होंने कहना चाहा, किन्तु उनके होठ काप गये और वे यह सवाल नही पूछ पाई। "हा, तो डाक्टर?"

"प्रिंसेस, मैं जरा अपने सहयोगी के साथ बात कर लू और तब आपकी सेवा मे अपनी राय पेश करूगा।"

"तो हम आपको अकेले छोड़ दे?"

"जैसा ठीक समझें।"

प्रिंसेस निश्वास छोडकर बाहर चली गयी।

जब दोनो डाक्टर ही कमरे मे रह गये, तो परिवार का डाक्टर अपना यह मत बताने लगा कि तपेदिक की शुरुआत है, लेकिन इत्यादि। प्रसिद्ध डाक्टर ने उसकी बात सुनते हुए बीच मे ही अपनी सोने की बडी-सी घडी पर नज़र डाली।

"हा," प्रसिद्ध डाक्टर ने कहा। "लेकिन "

परिवार का डाक्टर आदरपूर्वक बीच मे ही चुप हो गया।

"जैसा कि आप जानते है, तपेदिक की शुरुआत को हम निश्चित तो कर नही सकते, कैविटी के प्रकट होने तक कुछ भी स्पष्ट नही हो सकता। किन्तु हम ऐसा सन्देह कर सकते है। इसके लिये आधार भी है—भूख की कमी, चिडचिडापन, आदि। तो हमारे सामने सवाल यह है—तपेदिक की प्रक्रिया के आरम्भ का सन्देह होने पर भूख को बढाने के लिये क्या किया जाये?"

"किन्तु, जैसा कि आप जानते हैं, इसके पीछे हमेशा नैतिक और मानसिक कारण छिपे रहते है," परिवार के डाक्टर ने हल्की-सी मुस्कान के साथ इतना तो कह ही दिया।

"हा, सो तो है ही," नामी डाक्टर ने फिर से अपनी घडी पर नज़र डालकर जवाब दिया। "माफी चाहता हू, लेकिन क्या याउज़ा पुल बन गया या अभी तक बडा चक्कर काटकर जाना पडता है?" उसने पूछा। "अच्छा, बन गया! तब तो मैं बीस मिनट मे पहुच सकता हू। हा, हम कह रहे थे कि हमारे सामने सवाल यह है कि भूख बढाई जाये और चिडचिडापन दूर किया जाये। ये दोनों चीजें एक-दूसरी से सम्बन्धित हैं और हमें दोनों की ओर ध्यान देना चाहिये।"

"किन्तु विदेश जाने के बारे में आपकी क्या राय है?" परिवार के डाक्टर ने पूछा।

"मैं विदेश जाने का बड़ा विरोधी हू। आप इस बात पर ध्यान दे कि अगर तपेदिक की प्रक्रिया का आरम्भ ही है, जो हम निश्चित नही कर सकते, तो विदेश-यात्रा से कोई लाभ नही होगा। ऐसे इलाज की जरूरत है, जिससे भूख बढे और हानि किसी तरह की न हो।"

नामी डाक्टर ने सोडेन खनिज जल से इलाज करने की योजना बताई। ऐसे इलाज का सुझाव देने का सम्भवत मुख्य कारण यही था कि इससे किसी तरह की हानि नही होगी।

परिवार का डाक्टर बहुत ध्यान और बड़े आदर से उसकी बात सुन रहा था।

"किन्तु विदेश-यात्रा के पक्ष मे मैं यह कहना चाहूगा कि उसमे अभ्यस्त जीवन मे कुछ परिवर्तन होगा, यादो को ताजा करनेवाला वातावरण नही रहेगा। इसके अलावा उसकी मा ऐसा चाहती भी है " उसने कहा।

"समझा! अगर ऐसा है, तो जायें, लेकिन ये जर्मन नीम-हकीम नुकसान ही पहुचायेंगे जरूरत इस बात की है कि वे मेरी बातो पर कान दे।"

उसने फिर से घड़ी पर नजर डाली।

"ओह! जाने का वक्त हो गया," – और दरवाजे की तरफ चल दिया।

नामी डाक्टर ने प्रिंसेस से कहा (शायद शिष्टतावश ऐसा करना जरूरी था) कि उसके लिये रोगी को फिर से देखना जरूरी है।

"क्या मतलब! फिर से देखना जरूरी है?" प्रिंसेस घबराकर चिल्लायी।

"नही नही मेरा मतलब यह है कि कुछ तफसील जानना जरूरी है।"

इतना पर्याप्त।

और मा डाक्टर को मेहमानखाने मे कीटी के पास ले गयी। दुबलाई और दहकते गालो तथा आखो मे उस शर्म के कारण, जो उसे सहन करनी पड़ी थी, विशेष प्रकार की चमक लिये कीटी कमरे के मध्य मे खड़ी थी। डाक्टर के कमरे मे दाखिल होने पर वह लाल सुर्ख हो गयी और उसकी आखे छलछला आई। उसे अपनी सारी

बीमारी और उसका इलाज एक बेवकूफी, यहा तक कि हास्यास्पद भी लग रहा था। उसे अपना इलाज टूटे हुए फूलदान के टुकडो को जोडने के समान बेहूदा प्रतीत हो रहा था। उसके दिल के टुकडे हो गये थे। तो क्या वे दवाई की गोलियो और पाउडरो से उसका इलाज करना चाहते है? लेकिन वह मा के दिल को ठेस नही लगा सकती थी, खास तौर पर जबकि मा अपने को दोषी अनुभव करती थी।

"प्रिंसेस, जरा बैठ जाने की कृपा करे," नामी डाक्टर ने कहा।

डाक्टर मुस्कराता हुआ उसके सामने बैठ गया, उसने नब्ज हाथ मे ले ली और फिर से ऊब भरे सवाल पूछने लगा। कीटी ने उत्तर दिये और अचानक नाराज होकर खडी हो गयी।

"क्षमा चाहती हू, डाक्टर, किन्तु इस सबसे कोई लाभ नही होगा। आप मुझसे वही बात तीसरी बार पूछ रहे है।"

नामी डाक्टर ने बुरा नही माना।

"यह चिडचिडापन बीमारी के कारण है," कीटी के बाहर चली जाने पर उसने मा से कहा। "वैसे, मैं अपना काम पूरा कर चुका हू"

डाक्टर ने एक असाधारण सूझ-बूझ वाली नारी के रूप मे मा के सामने बेटी की हालत को वैज्ञानिक ढग से स्पष्ट किया और अन्त मे यह बताया कि कैसे वह खनिज जल पिया जाये, जिसे पीने की कोई आवश्यकता नही थी। यह पूछा जाने पर कि विदेश जाये या नहीं, डाक्टर ऐसे गहरी सोच मे डूब गया मानो कोई मुश्किल सवाल हल कर रहा हो। आखिर उसने अपना यह फैसला सुनाया – जाये किन्तु नीम-हकीमो पर विश्वास न करे और हर बात के लिये उसकी सलाह ले।

डाक्टर के जाने के बाद मानो खुशी-सी छा गयी। बेटी के पास लौटने पर मा खुश-खुश-सी दिखाई दी और बेटी ने भी यह ढोग किया कि वह अच्छे मूड मे है। कीटी को अकसर, लगभग हर समय ही अब ढोग करना पडता था।

"सच कहती हू कि मैं भली-चगी हू, maman किन्तु यदि आप चाहती है, तो हम विदेश चल सकती हैं," कीटी ने कहा और य

दिमाग को कोशिश करते हुए कि किसी प्रकार अपने दुःखदायी उस से उसको छिपा सके ... उसकी बेटी को नहीं करती रही।

(२)

डाक्टर के जाने के कोई देर बाद डौली आ गयी। उसे मालूम था कि उस दिन डाक्टरों का परामर्श किया जायेगा और इस बात के बावजूद कि उसने कुछ ही दिन पहले प्रसूति से मुक्ति पाई थी (जाड़े के अन्त में उसने एक और बच्ची को जन्म दिया था), और इस बात की भी परवाह न करते हुए कि खुद उसे भी कुछ कम परेशानियाँ और चिन्तायें नहीं थीं, वह अपनी दुधमुँही बच्ची और दूसरी बीमार बालिका को छोड़कर कीटी के भाग्य-निर्णय के बारे में जानने को, जो आज तय हो रहा था, यहाँ आई थी।

"तो क्या कहा डाक्टरों ने?" उसने टोपी उतारे बिना ही मेहमानखाने में दाखिल होते हुए पूछा। "आप सभी खुश नज़र आ रहे हैं। सब कुछ ठीक-ठाक है न?"

मामी डाक्टर ने जो कुछ कहा था, उन्होंने उसे वह बताने की कोशिश की। किन्तु यद्यपि डाक्टर बहुत सुन्दर ढंग से और देर तक अपनी बात कहता रहा था, वे किसी तरह भी डौली को यह न बता सकी कि उसने क्या कहा था। दिलचस्प बात सिर्फ इतनी ही थी कि विदेश जाने का निर्णय कर लिया गया था।

डौली ने अनचाहे ही गहरी सांस ली। उसकी सबसे अच्छी मित्र, उसकी बहन विदेश जा रही थी। और डौली का अपना जीवन सुखी नहीं था। सुलह के बाद ओब्लोन्स्की के साथ उसके सम्बन्ध अपमानजनक हो गये थे। आन्ना ने जो सन्धि करवायी थी, वह बहुत पक्की साबित नहीं हुई और पारिवारिक मेल-मिलाप में उसी जगह फिर से दरार पड़ गयी थी। खास बात तो नहीं हुई थी, किन्तु ओब्लोन्स्की घर पर लगभग कभी नहीं रहता था, घर में पैसे भी लगभग कभी नहीं होते थे, पति की बेवफाई के सन्देह डौली को निरन्तर यातना देते रहते थे और डौली ईर्ष्या भाव की पीड़ा से डरती हुई इन सन्देहों को अपने से दूर भगाती रहती थी। ईर्ष्या का जो पहला विस्फोट वह

सहन कर चुकी थी, अब उसकी पुनरावृत्ति नही हो सकती थी और बेवफाई की जानकारी होने पर भी अब उस पर वैसा ही असर न होता, जैसा पहली बार हुआ था। ऐसी जानकारी होने पर उसका केवल अभ्यस्त पारिवारिक जीवन ही गडबडा जाता और वह उसे तथा इस दुर्बलता के लिये अपने से और भी अधिक घृणा करती हुई अपने को धोखा देने देती। इस परेशानी के अलावा बडे कुनबे की चिन्तायें उसे निरन्तर घेरे रहती थी – कभी तो बच्चो को दूध पिलाने मे कठिनाई होती, फिर आया चली गयी और फिर कभी कोई बच्चा बीमार हो जाता, जैसा आज था।

"तुम्हारे बच्चो का क्या हालचाल है?" मा ने पूछा।

"ओह maman, आपको अपनी परेशानिया ही बहुत है। लिली बीमार हो गयी है और मुझे डर है कि उसे लाल बुखार है। मैं कीटी के बारे मे जानने को अभी चली आयी नही तो, भगवान न करे अगर उसे लाल बुखार होगा, तो मेरा घर से निकलना ही नही हो सकेगा।"

बूढे प्रिंस भी डाक्टर के जाने के बाद अपने कमरे से बाहर निकल आये और डौली से अपने गाल पर चुम्बन पाने तथा उससे बातचीत करने के बाद पत्नी से बोले

"तो क्या जाने का फैसला कर लिया? मेरे बारे मे क्या विचार है?"

"मैं समझती हू कि तुम्हे यही रहना चाहिये, अलेक्सान्द्र," बीवी ने जवाब दिया।

"जैसा ठीक समझो।"

"Maman, पापा भी क्यो न चले हमारे साथ?" कीटी ने कहा। "ये भी खुश रहेगे और हम भी।"

बूढे प्रिंस उठे और उन्होने कीटी के बाल सहलाये। कीटी ने मुह ऊपर को किया और यत्नपूर्वक मुस्करा कर पापा की तरफ देखा। कीटी को हमेशा ऐसा लगता था कि यद्यपि पापा उससे बहुत कम बात करते थे, वही उसे परिवार मे सबसे ज्यादा अच्छी तरह समझते थे। सबसे छोटी होने के नाते वह पापा की लाडली थी और कीटी को ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रति पापा के प्यार ने उन्हे सूक्ष्मदर्शी बना दिया है। उसे एकटक देखती हुई पापा को नीली और दयालु

आखों से जब उसकी आखें मिली तो उसे लगा कि पापा उसे आर-पार देख रहे हैं और उसकी आत्मा की हर बेचैनी को समझते हैं। कीटी लज्जारुण होते हुए इस आशा से पापा की ओर झुकी कि वे उसे चूमेगे, किन्तु उन्होने केवल उसके बाल थपथपा दिये और बोले.

"ये मूर्खतापूर्ण पराये बाल! अपनी बिटिया के बाल सहलाने के बजाय किन्ही मृत बुढियाओ के बालों को ही सहला पाता हू। हा, तो डौली," उन्होने बडी बेटी का सम्बोधित किया, "तुम्हारा वह तुरुप का इक्का क्या तीर मार रहा है?"

"ठीक है, पापा," डौली ने यह समझते हुए कि उसके पति की चर्चा हो रही है, जवाब दिया। "हमेशा बाहर ही रहता है, मैं तो उसे लगभग घर मे नही देख पाती," वह व्यग्यपूर्ण मुस्कान के साथ इतना और कहे बिना न रह सकी।

"तो क्या वह अभी तक जगल बेचने के लिये गाव नही गया?"

"नही, सोच रहा है जाने की।"

"अच्छा!" प्रिंस ने कहा। "तो क्या मुझे भी जाने की तैयारी करनी चाहिये? मैं हुक्म बजाने को तैयार हू," उन्होने बैठते हुए अपनी बीवी से कहा। "और कीटी, तुम ऐसा करो," वे छोटी बेटी से बोले, "किसी एक शुभ दिन तुम आख खोलते ही अपने आपसे कहना – मैं बिल्कुल स्वस्थ और खूब मजे मे हू और फिर से पापा के साथ तडके ही जाडे-पाले मे सैर को जाया करूगी। क्या ख्याल है?"

पापा ने जो कुछ कहा था, वह यो तो बहुत सीधा-सादा प्रतीत होता था, किन्तु ये शब्द सुनकर कीटी एक अपराधी की तरह बेचैन और परेशान हो उठी। "हा, पापा सब कुछ जानते, सब कुछ समझते हैं और इन शब्दों द्वारा मुझसे यह कह रहे हैं कि बेशक तुम्हे शर्मिन्दगी का सामना करना पड रहा है, फिर भी तुम्हें उससे निजात पानी चाहिये।" वह उन्हे जवाब देने की हिम्मत नही बटोर पायी। उसने कुछ कहना शुरू किया, लेकिन अचानक रो पडी और कमरे से बाहर भाग गयी।

"यह नतीजा होता है तुम्हारे मजाकों का!" प्रिंसेस पति पर बरस पडी। "तुम हमेशा " उन्होने पति को डाट पिलानी शुरू

प्रिंस देर तक पत्नी की डाट सुनते हुए चुप रहे, किन्तु उनके तेवर चढ़ते चले गये।

"वह इतनी ज्यादा दुखी है, इतनी ज्यादा दुखी है, बेचारी, लेकिन तुम यह महसूस नही करते कि उसे असली वजह की तरफ ज़रा-सा इशारा करने पर भी कितनी ठेस लगती है। आह! कितना धोखा खा जाते है हम लोगो के बारे मे!" प्रिंसेस ने कहा और उनका अन्दाज बदलने से डौली तथा प्रिंस समझ गये कि अब वे व्रोन्स्की की चर्चा कर रही हैं। "मेरी समझ मे नही आता कि ऐसे दुष्ट और बुरे लोगो के खिलाफ कोई कानून-कायदे क्यो नही है?"

"आह, यह तुम क्या कह रही हो!" प्रिंस ने दुखी होते और मानो बाहर जाने की इच्छा जाहिर करते हुए कहा। लेकिन वे दरवाज़े के पास जाकर रुक गये। "कानून तो हैं और अब अगर तुमने मुझे ज़बान खोलने को मजबूर कर ही दिया है, तो सुनो कि इस सबके लिये तुम, और केवल तुम ही दोषी हो। ऐसे छैल-छबीलो के विरुद्ध कानून सदा थे, और हैं! हा, अगर वैसा न होता, जैसा कि नही होना चाहिये था, तो मैं, बूढ़ा होते हुए भी, उस शैतान को द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती देता। और अब इसका इलाज करवाइये, इन ढोगी नीम-हकीमो के फेर मे पड़िये!"

प्रिंस सम्भवत और भी बहुत कुछ कहना चाहते थे, किन्तु प्रिंसेस ने जैसे ही उनका बात कहने का यह अन्दाज देखा, वैसे ही, जैसे कि हमेशा सभी गम्भीर मामलो मे होता था, फौरन झुक गयी और पश्चा-ताप करने लगीं।

"अलेक्सान्द्र, अलेक्सान्द्र," पति की ओर बढ़ती हुई प्रिंसेस फुसफुसायी और रो पड़ी।

पत्नी के रो पड़ते ही प्रिंस चुप हो गये। वे पत्नी के पास जाकर बोले:

"बस, बस करो! मैं जानता हू कि तुम्हारे मन पर भी भारी गुज़र रही है। किया क्या जाये? कोई बड़ी मुसीबत नही है। भगवान दयालु है..." खुद यह न समझते हुए कि वे क्या कह रहे है तथा हाथ पर पत्नी के आसू भीगे चुम्बन को अनुभव करके और धन्यवाद देकर वे कमरे से बाहर चले गये।

...

कीटी जैसे ही आंखों में आंसू भरे हुए कमरे से निकली, डौली ने स्वयं मां और पारिवारिक जीवन की अभ्यस्त होने के नाते फौरन यह समझ लिया कि अब नारी के रूप में उसे कुछ करना चाहिये और उसने अपने को इसके लिये तैयार कर लिया। उसने अपनी टोपी उतार दी और मन ही मन मानो आस्तीनें चढ़ाकर मैदान में उतरने को तत्पर हो गयी। मां जब पिता पर बरस रही थी, तो उसने बेटी के नाते जहां तक उचित था, मां को रोकने की कोशिश की। पिता के फट पड़ने पर वह खामोश रही। उसे मां के लिये शर्म और पिता के प्रति, उनकी उसी क्षण लौट आनेवाली दयालुता के कारण प्यार की अनुभूति हो रही थी। किन्तु पिता के बाहर चले जाने पर वह सबसे महत्त्वपूर्ण चीज यानी कीटी के पास जाकर उसे शान्त करने की सोचने लगी।

"Maman, मैं बहुत दिनों से आपको एक बात कहना चाहती थी – आपको यह मालूम है या नहीं कि लेविन जब आखिरी बार यहां था, तो वह कीटी से विवाह का प्रस्ताव करना चाहता था? उसने स्तीवा से यह कहा था।"

"तो क्या हुआ? तुम्हारी बात मेरी समझ में नहीं आ रही..."

"हो सकता है कि कीटी ने उसे इन्कार कर दिया हो? उसने आपसे नहीं कहा?"

"नहीं, उसने दोनों में से किसी के बारे में भी कुछ नहीं कहा, वह बड़ी गर्वीली है। लेकिन मैं जानती हूं कि यह सब कुछ इसी बात के कारण है..."

"हां, आप कल्पना करें कि अगर उसने लेविन को इन्कार कर दिया है, किन्तु वह उसे कभी इन्कार न करती अगर वह दूसरा न होता। मैं जानती हूं... और बाद में इसने इसे [illegible] धोखा दिया।"

[illegible] के लिये यह सोचना बड़ा भयानक था कि कीटी के [illegible] है और [illegible] ।

"ओह, मेरी समझ में अब कुछ नहीं आ रहा! आजकल सब [illegible] चाहते हैं और मां को कुछ भी नहीं बताती। [illegible]"

"Maman, मैं [illegible] जाती हूं।"

"जाओ। मैं क्या तुम्हे मना कर रही हूं?" मा ने जवाब दिया।

(३)

कीटी के सुन्दर, गुलाबी रग वाले और मैक्सोनी चीनी मिट्टी की गुडियाओ सहित छोटे-से कमरे मे दाखिल होने पर, जो दो महीने पहले की कीटी के समान ही ताजगी, गुलाबीपन और प्रफुल्लता लिये हुए था, डौली को यह याद हो आया कि पिछले साल कैसे दोनो बहनो ने मिलकर कितनी खुशी और प्यार से इस कमरे को सजाया-सवारा था। उसने जब कीटी को दरवाजे के करीब नीची-सी कुर्सी पर बैठे और कालीन के एक कोने पर निश्चल दृष्टि जमाये देखा, तो उसका दिल बैठ गया। कीटी ने अपनी बहन की तरफ नजर उठाई और उसके चेहरे पर रुखाई, बल्कि कुछ कठोरता का भाव नही बदला।

"मैं अभी चली जाऊगी, फिर घर से निकल नही सकूगी और तुम मेरे पास आ नही सकोगी," डौली ने कीटी के निकट बैठते हुए कहा। "मैं तुम्हारे साथ कुछ बातचीत करना चाहती हू।"

"किस बारे मे?" घबरा कर सिर ऊचा करते हुए कीटी ने झटपट पूछा।

"अगर तुम्हारे दुख के बारे मे नही तो और किस बारे मे।"

"मुझे कोई दुख नही है।"

"हटाओ, कीटी। क्या तुम यह सोचती हो कि मुझसे यह सब छिपा रह सकता है? मैं सब कुछ जानती हू। और मुझ पर यकीन करो कि यह इतनी तुच्छ चीज है हम सभी को इसका अनुभव हुआ है।"

कीटी खामोश रही और उसके चेहरे पर कठोरता का भाव बना रहा।

"वह इसके लायक नही है कि तुम उसके लिये अपना मन दुखाओ," डौली ने सीधे-सीधे मतलब की बात कह दी।

"हा, क्योकि उसने मेरी उपेक्षा कर दी है," कीटी कापती आवाज मे कह उठी। "कुछ नही कहो! कृपया इस बारे मे कुछ नही कहो!"

बकसुआ जमीन पर दे मारा और हाथो को तेज़ी से हिलाते-डुलाते हुए कह उठी :

"लेविन का यहा क्या सवाल पैदा होता है? समझ मे नही आता कि तुम किसलिये मुझे सताना चाहती हो? मैं कह चुकी हू और दोहराती हू कि मुझ मे आत्माभिमान है और कभी, कभी भी वह नही करूगी, जो तुम करती हो – उस आदमी के पास कभी नही लौटूगी, जिसने मेरे साथ बेवफाई की है और किसी दूसरी नारी को प्यार करने लगा है। यह मेरी समझ मे नही आता, नही आता। तुम ऐसा कर सकती हो, मैं नही कर सकती!"

ये शब्द कहकर उसने बहन पर नज़र डाली और यह देखकर कि डौली सिर झुकाये हुए खामोश है, कीटी कमरे से बाहर जाने के बजाय, जैसा कि उसका इरादा था, दरवाज़े के पास बैठ गयी और मुह को रूमाल से ढककर उसने सिर झुका लिया।

कोई दो मिनट तक खामोशी बनी रही। डौली अपने बारे मे सोच रही थी। अपना यही अपमान, जो वह हमेशा अनुभव करती थी, बहन के याद दिलाने पर विशेषत ज़ोर से टीस उठा। उसने बहन से ऐसी निर्ममता की आशा नही की थी और वह उससे नाराज हो गयी। किन्तु अचानक उसे पोशाक की सरसराहट और साथ ही दबी-घुटी सिसकियो की आवाज सुनाई दी और किसी ने नीचे की तरफ से उसके गले मे बाहे डाल दी। कीटी उसके सामने घुटने टेके हुए थी।

"प्यारी डौली, मैं इतनी दुखी हू, इतनी अधिक दुखी हू!" वह दोषी की तरह फुसफुसाई।

कीटी ने आसुओ से तर अपना प्यारा चेहरा डौली के स्कर्ट मे छिपा लिया।

आसू तो मानो उस ज़रूरी तेल के समान थे, जिनके बिना दोनो बहनो के आपसी मेल-मिलाप की गाड़ी सफलतापूर्वक नही चल सकती थी। आसुओ के बाद बहनो ने उस बात की चर्चा नही की, जिसमें उन दोनो की दिलचस्पी थी। किन्तु दूसरी बातो की चर्चा करते हुए भी वे एक-दूसरी को समझ गयी। कीटी समझ गयी कि उसने गुस्से मे डौली के पति की बेवफाई और उसके अपमान के बारे मे जो कुछ कहा था, उससे बेचारी बहन के दिल को गहरी ठेस लगी है, मगर उसने उसे

कीटी झिझक गयी। वह आगे यह कहना चाहती थी कि जिस समय से उसमे यह परिवर्तन हुआ है, स्तेपान अर्काद्येविच उसकी नज़र मे बुरी तरह खटकने लगा है और वह बहुत ही बुरे और घिनौने विचारो के बिना उसकी कल्पना नही कर सकती।

"हा, सब कुछ बहुत बुरे और घिनौने रूप मे मेरे सामने आता है," वह कहती गयी। "यही मेरी बीमारी है। शायद यह दूर हो जायेगी "

"तुम सोचा न करो "

'मैं ऐसा नही कर पाती। सिर्फ बच्चो के साथ, सिर्फ तुम्हारे यहा ही मैं खुश रहती हू।"

"दुख की बात है कि तुम मेरे यहा नही आ सकती।"

"नही, मैं आऊगी। मुझे लाल बुखार हो चुका है और मैं maman से तुम्हारे यहा जाने की अनुमति ले लूगी।"

कीटी ने अपनी बात मनवा ली, बहन के यहा चली गयी और लाल बुखार के दौरान, जो सचमुच ही प्रकट हो गया था, बच्चो की देखभाल करती रही। दोनो बहनो ने छ के छ बच्चो को इस रोग के सकट से सही-सलामत उबार लिया, किन्तु कीटी का स्वास्थ्य बेहतर नही हुआ। लेन्ट पर्व के अवसर पर श्चेर्बात्स्की परिवार विदेश चला गया।

(४)

पीटर्सबर्ग का ऊचा सामाजिक हलका वास्तव मे एक ही है – सभी एक-दूसरे को जानते हैं, एक-दूसरे के यहा आते-जाते भी है। किन्तु इस बड़े हलके मे अपने छोटे-छोटे दायरे भी हैं। आन्ना अर्काद्येव्ना कारेनिना के तीन विभिन्न दायरो के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध थे और वहा उसकी सहेलिया और मित्र थे। एक दायरा तो उसके पति का सरकारी और औपचारिक दायरा था, जिसमे उसके साथ काम करने-वाले तथा उसके मातहत लोग शामिल थे। ये लोग अत्यधिक विविधता-पूर्ण और अजीब ढग से सामाजिक सम्बन्धों मे बधे या बटे हुए थे। आन्ना अब मुश्किल से ही उस लगभग पावन सम्मान की भावना को याद कर सकती थी, जो शुरू मे वह इन लोगो के प्रति अनुभव करती

थी। अब तो वह उन सभी को वैसे ही जानती थी, जैसे छोटे-से शहर मे सब एक-दूसरे को जानते हैं। उसे मालूम था कि किसकी कैसी आदतें और कमज़ोरियां हैं, किसको किसके कारण परेशानी होती है, एक-दूसरे और मुख्य केन्द्र के प्रति उनके रवैये से परिचित थी। उसे पता था कि कौन किसका, कैसे और किस चीज़ के बल पर दामन थामे है और कौन किस चीज़ से सहमत और असहमत है। लेकिन काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के समझाने-बुझाने के बावजूद इन सरकारी हितों वाले मर्दों का यह दायरा उसे कभी अच्छा नहीं लगता था, और वह उससे कतराती थी।

आन्ना के मेल-जोल का दूसरा दायरा वह था, जिसके ज़रिये उसके पति कारेनिन ने अपनी नौकरी में तरक्की की थी। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना इस दायरे का केन्द्र-बिन्दु थी। यह बूढ़ी, बदसूरत, सदाचारी और धर्म-कर्म में डूबी हुई औरतों और समझदार, विद्वान तथा महत्वाकांक्षी मर्दों का दायरा था। इस दायरे से सम्बन्ध रखनेवाले एक बुद्धिमान व्यक्ति ने इसे "पीटर्सबर्ग के समाज की आत्मा" की संज्ञा दी थी। कारेनिन इस दायरे को बहुत महत्त्व देता था और सबके साथ निबाह कर लेनेवाली आन्ना ने पीटर्सबर्ग के अपने प्रारम्भिक जीवन में इस दायरे में भी मित्र बना लिये थे। अब मास्को से लौटने पर यह दायरा उसे बहुत ही बुरी तरह से अखरने लगा। उसे प्रतीत होता कि वह खुद और बाकी सभी लोग भी ढोंग करते हैं। इसलिये इस दायरे में वह बड़ी ऊब तथा अटपटापन अनुभव करने और काउंटेस लीदिया इवानोव्ना के यहां कम से कम जाने लगी।

तीसरा, आखिरी दायरा, जिसके साथ उसके सम्बन्ध थे, बॉलों, दावतों और शानदार पोशाकों का दायरा था। यह वह कुलीन समाज था, जो एक हाथ से दरबार को थामे रहता था, ताकि अपने से नीचे के समाज में न खिसक जाये। इस कुलीन समाज के लोग अपने ख़्याल में इस नीचेवाले समाज को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे, किन्तु उनके साथ उनकी रुचियां न केवल मिलती-जुलती ही, बल्कि एकदम समान थीं। इस दायरे के साथ प्रिंसेस बेत्सी त्वेरस्काया के द्वारा उसका सम्बन्ध बना हुआ था। प्रिंसेस बेत्सी उसके चचेरे भाई की पत्नी थी। उसकी एक लाख बीस हजार की आमदनी थी, और आन्ना के

लीन समाज में प्रकट होते ही उसे उससे विशेष अनुराग हो गया था। ह आन्ना की बहुत खातिरदारी करती थी और काउंटेस लीदिया वानोव्ना के दायरे का मजाक उड़ाते हुए उसे अपने दायरे में खींच गई थी।

"बूढ़ी-खूसट और बदसूरत होने पर मैं भी उसके जैसी ही हो जाऊंगी," बेत्सी कहती, "लेकिन आपके जैसी जवान और सुन्दर नारी के लिये अभी उन बूढ़ी औरतों के आश्रम में जाने का वक्त नहीं आया।"

पहले कुछ समय में तो आन्ना ने प्रिंसेस बेत्सी त्वेरस्काया के दायरे से यथासम्भव दूर रहने का प्रयास किया, क्योंकि इसके लिये जितने खर्च की जरूरत थी, वह उसके साधनों से बाहर की बात थी और वैसे दिल से भी वह पहले दायरे को ही तरजीह देती थी। लेकिन मास्को से लौटने के बाद उसका रुख बिल्कुल दूसरा हो गया। वह अपने नैतिक भुकाववाले मित्रों में कन्नी काटती और ऊंचे कुलीन-समाज में जाती। वहां व्रोन्स्की से उसकी भेंट होती और ऐसी भेंट उसे उत्तेजनापूर्ण खुशी प्रदान करती। बेत्सी के यहां तो विशेषतः उसकी व्रोन्स्की से अक्सर मुलाक़ात होती। बेत्सी भी व्रोन्स्की परिवार में ही जन्मी थी और उसकी चचेरी बहन थी। व्रोन्स्की हर उस जगह पर पहुंचता, जहां उसे आन्ना से मिलने की आशा होती और जब भी सम्भव होता, उससे अपने प्यार की चर्चा करता। वह उसे किसी भी तरह का बढ़ावा न देती, किन्तु उससे होनेवाली हर मुलाक़ात के समय उसे वैसी ही सजीवता की अनुभूति होती, जैसी उसने उस दिन रेलगाड़ी में व्रोन्स्की को पहली बार देखने पर अनुभव की थी। आन्ना ने खुद यह महसूस किया था कि उसे देखते ही उसकी आंखों में खुशी की चमक आ जाती है, होंठों पर मुस्कान खिल उठती है और अपनी खुशी की इस अभिव्यक्ति को वह किसी तरह भी छिपा नहीं पाती है।

शुरू-शुरू में आन्ना सच्चे मन से यह विश्वास करती थी कि व्रोन्स्की का हर जगह उसके पीछे-पीछे पहुंच जाना उसे अच्छा नहीं लगता है। किन्तु मास्को से लौटने के कुछ ही दिन बाद जब वह एक समारोह में गयी, जहां उसे उससे मिलने की आशा थी, किन्तु वह वहां नहीं आया था, तो उस पर हावी हो जानेवाले निराशा भाव से वह स्पष्टतः

...ह समझ गयी कि अन्ना की चर्चा हो रही है कि व्रोन्स्की इस
...र बात [illegible] सकता है, लेकिन उसके
जीवन का सबसे बड़ा सुख है।

प्रसिद्ध गायिका दूसरी बार गा रही थी और सारा ऊँचा समाज थियेटर में था। पहली कतार में बैठे व्रोन्स्की ने चचेरी बहन बेत्सी नाट्यशाला के बॉक्स में बैठे देख लिया और अन्तराल की प्रतीक्षा किये बिना ही उसके पास चला गया।

"आप डिनर पर क्यों नहीं आये?" बेत्सी ने पूछा। "प्रेमियों के दिलों में [illegible] से हैरानी होती है," उसने मुस्कराकर ऐसे धीरे से कि केवल व्रोन्स्की को ही सुनाई दे, इतना और जोड़ दिया। "वह भी नहीं आई। लेकिन ऑपेरा के बाद आ जाइये।"

व्रोन्स्की ने प्रश्नसूचक दृष्टि से बेत्सी की ओर देखा। उसने सिर झुकाया। व्रोन्स्की ने मुस्कराकर आभार प्रकट किया और उसके निकट बैठ गया।

"मुझे याद आता है कि कैसे आप दूसरों का मजाक उड़ाया करते थे," प्रिंसेस बेत्सी ने कहा, जिसे इस प्रेम-लीला की प्रगति की चर्चा में विशेष सुख मिलता था। "कहाँ हवा हो गया अब वह सब कुछ! मेरे प्यारे, तुम जाल में फंस गये हो।"

"मैं सिर्फ यही तो चाहता हूं कि जाल में फंस जाऊं," व्रोन्स्की ने अपनी शान्त और खुशमिजाजी की द्योतक मुस्कान के साथ कहा। अगर सच कहूं, तो मुझे सिर्फ यही शिकायत है कि जाल में बहुत कम फंसा हूं। मैं तो निराश होने लगा हूं।"

"आप आशा ही कैसे कर सकते हैं?" बेत्सी ने अपनी सहेली के लिये बुरा मानते हुए कहा। "Entendons nous ...*" लेकिन उसकी आंखों में ऐसी लौ थी, जो कह रही थी कि वह बहुत अच्छी तरह, ठीक वैसे ही जैसे व्रोन्स्की, यह समझती है कि उसे क्या आशा हो सकती है।

---

* एक-दूसरे को समझ लें। (फ्रांसीसी)

"कुछ भी नही," व्रोन्स्की ने हसते और अपने सुन्दर दातो की रक दिखाते हुए कहा। "माफी चाहता हू" बेत्सी के हाथ से बीन लेते और उसके उघाडे कधे के ऊपर से सामनेवाले बाक्सो पर ी केन्द्रित करते हुए व्रोन्स्की ने इतना और जोड दिया। "मुझे लगता कि मैं उपहास-पात्र बनता जा रहा हू।"

व्रोन्स्की बहुत अच्छी तरह से यह जानता था कि बेत्सी और उसके यरे के अन्य सभी लोगो की नजरो मे उसके उपहास-पात्र बनने का ोई खतरा नही था। उसे बहुत अच्छी तरह से यह मालूम था कि इन ोगो की दृष्टि मे किसी युवती या किसी आजाद नारी के बदकिस्मत मी की भूमिका उपहासजनक हो सकती है किन्तु उस व्यक्ति की ूमिका, जो किसी विवाहिता पर बुरी तरह लट्टू हो और हर कीमत ार उसे अपने प्रेम-पाश मे बाधना चाहता हो सुन्दर और गरिमापूर्ण ूमिका है और कभी भी उपहासजनक नही हो सकती। इसीलिये अपनी मूछो के नीचे होठो पर गर्वीली और सुखद मुस्कान के साथ उसने दूरबीन नीचे की और अपनी चचेरी बहन की ओर देखा।

"तो आप दोपहर के खाने पर क्यो नही आये?" मुग्ध भाव से उसे देखते हुए उसने फिर पूछा।

"यह तो मुझे आपको बताना ही चाहिये। मैं व्यस्त था। और जानती है किस चीज मे? आप सौ बार, एक हजार बार कोशिश कर लीजिये, फिर भी अनुमान नही लगा सकेगी। मैं एक पत्नी का अपमान करनेवाले के साथ उसके पति की सुलह करवा रहा था। हा बिल्कुल सच कहता हू!"

"तो करवा दी सुलह?"

9327

"लगभग।"

"आपको यह तो सारा किस्सा मुझे सुनाना चाहिये" प्रिंसेस बेत्सी ने उठते हुए कहा। "अगले अन्तराल मे आ जाइयेगा।

"यह मुमकिन नही। मैं फ्रासीसी थियेटर मे जा रहा हू।

"निल्सोन को छोडकर?" बेत्सी ने स्तब्ध होते हुए पूछा यद्यपि वह निल्सोन और किसी मामूली महगान-गायिका मे किसी तरह भी अन्तर नहीं कर सकती थी।

"लेकिन किया क्या जाये? मुझे अपने सुलह-सफाई के इसी काम के सिलसिले मे वहा किसी से मिलना है।"

कौंसिलर कुछ नर्म होने लगा, लेकिन वह भी अपनी भावनाएं व्यक्त करना चाहता था। ज्योंही वह उन्हें व्यक्त करना आरम्भ करता, आग-बबूला होने और भला-बुरा कहने लगता। मुझे फिर से अपनी व्यवहार-कुशलता दिखानी पड़ती। 'मैं मानता हूं कि यह बुरी हरकत है, लेकिन आपसे इस बात को ध्यान में रखने का अनुरोध करता हूं कि गलतफ़हमी हो गयी, जवानी ठहरी। इसके अलावा जवान लोग नाश्ता करते ही घर से निकले थे। आप समझते हैं न! वे सच्चे दिल से माफ़ी चाहते हैं, कसूर माफ़ करने की प्रार्थना करते हैं!' कौंसिलर फिर से नर्म पड़ जाता – मैं सहमत हूं, काउंट, और माफ़ करने को तैयार हूं। लेकिन आप इस बात को समझिये कि मेरी बीवी, मेरी शरीफ़ औरत है, मेरी बीवी का पीछा किया जाता है, उसे किन्हीं छोकरों के बुरे बर्ताव और बेहूदा हरकतों का सामना करना पड़ता है, कमीने कहीं के... आप ज़रा ख्याल करें कि एक बेहूदा छोकरा वहीं खड़ा था। और मुझे उनकी सुलह करवानी थी। मैं फिर से अपनी व्यवहार-कुशलता दिखाता और जैसे ही मामला खत्म होने को आता, कौंसिलर फिर से गर्म हो उठता, लाल हो जाता, उसकी सासेजें ऊपर को उठतीं और मैं फिर से व्यवहार-कुशलता की बारीकियों का जाल बुनने लगता।"

"आह, यह किस्सा तो आपको ज़रूर सुनना चाहिये," बेत्सी ने हंसते हुए अपने बाक्स में आनेवाली महिला को सम्बोधित करके कहा। "इन्होंने मुझे ऐसे हंसाया है कि कुछ न पूछो।"

"तो bonne chance*, हाथ में थामे हुए पंखे से मुक्त एक उंगली व्रोन्स्की की ओर बढ़ाते हुए उसने कहा और कंधे को ऐसे हिलाया कि उसके फ़्राक की ऊपर को उठी हुई चोली नीचे हो जाये, ताकि जब वह स्टेज लाइटों और गैस की रोशनी में आगे जाये और सब की नज़रों के सामने आये, तो पूरी तरह से नग्न दिखाई दे।

व्रोन्स्की फ़्रांसीसी थियेटर में चला गया, जहां उसे सचमुच ही रेजिमेन्ट के कमांडर से मिलना था, जो हर फ़्रांसीसी तमाशा ज़रूर देखता था। व्रोन्स्की उससे अपने उस सुलह-सम्बन्धी काम की चर्चा करना

---

* सफलता की कामना करती हूं। (फ़्रांसीसी)

चाहता था, जिसमे वह पिछले तीन दिनो से व्यस्त रहा था और जिससे उसका काफी मनोरजन हुआ था। इस किस्से मे एक तो पेत्रीत्स्की उलभा हुआ था, जिसे वह प्यार करता था और दूसरा अफसर था जवान बडा प्यारा तथा बहुत अच्छा साथी प्रिंस केद्रोव, जो कुछ ही समय पहले इनकी रेजिमेन्ट मे आया था। सबसे बडी बात तो यह थी कि रेजिमेन्ट की इज्जत का सवाल था।

ये दोनो अफसर व्रोन्स्की के दस्ते मे थे। सरकारी अधिकारी कौसिलर वेन्देन रेजिमेन्ट के कमाडर से इन दोनो की, जिन्होने उसकी पत्नी का अपमान किया था, शिकायत करने आया था। वेन्देन ने बताया था कि केवल छ महीने पहले ही उसने शादी की है और उसकी जवान बीवी अपनी मा के साथ गिरजाघर गयी थी। वहा अचानक उसकी तबीयत खराब हो गयी, क्योकि वह गर्भवती है और अधिक देर तक खडी रहने मे असमर्थ थी। इसलिये किराये की पहली बग्घी सामने आते ही वह उसमे बैठकर घर को चल दी। अफसरो ने उसका पीछा किया, वह डर गयी और पहले से भी ज्यादा बुरी तबीयत के साथ भागती हुई सीढिया चढकर घर पहुची। खुद वेन्देन दफ्तर से लौटा और दरवाजे पर घण्टी तथा कुछ आवाजे सुनकर बाहर निकला और पत्र लिये हुए नशे मे धुत्त अफसरो को देखकर उसने उन्हे बाहर धकेल दिया। उसने कमाडर से अनुरोध किया कि इन दोनो अफसरो को कडी सजा दी जाये।

"नही, आप चाहे कुछ भी क्यो न कहे," रेजिमेन्ट के कमाडर ने व्रोन्स्की को अपने पास बुलाकर कहा, "पेत्रीत्स्की तो बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा है। हर हफ्ते ही कोई न कोई बखेडा खडा कर देता है। यह कौसिलर मामले को यही नही छोडेगा, ऊपर तक ले जायेगा।"

व्रोन्स्की इस किस्से के सभी मुमकिन बुरे नतीजो को समझ रहा था – कि द्वन्द्व-युद्ध नहीं हो सकता, कि कौसिलर को ठण्डा और मामले को रफा-दफा करने के लिये पूरा जोर लगाना चाहिये। रेजिमेन्ट के कमाडर ने व्रोन्स्की को इसीलिये बुलाया था कि वह उसे नेक और समझदार आदमी मानता था और मुख्यत तो इसलिये कि व्रोन्स्की अपनी रेजिमेन्ट के नाम को बहुत महत्त्व देता था। इन दोनो ने इस मसले पर

१४*

गौर करके यह फैसला किया कि पेत्रीत्स्की और केद्रोव को व्रोन्स्की के साथ जाकर कौसिलर से माफ़ी मागनी चाहिये। रेजिमेन्ट का कमांडर और व्रोन्स्की दोनो ही यह समझते थे कि व्रोन्स्की के नाम और ज़ार के एड-डी-कैम्प के रूप मे उसके पद-चिह्न से कौसिलर को शान्त करने मे बडी सहायता मिलेगी। वास्तव मे ही इन दोनो बातो का प्रभाव पडा, लेकिन सुलह करवाने का नतीजा साफ नही हो पाया था, जैसा कि व्रोन्स्की ने बताया था।

फ्रासीसी थियेटर मे व्रोन्स्की रेजिमेन्ट-कमाडर के साथ लाबी में चला गया और उसने उसे अपनी सफलता या असफलता के बारे में बताया। मामले पर सभी पहलुओ से विचार करने के बाद रेजिमेन्ट-कमाडर ने उसे जहा का तहा छोड देने का फैसला किया। लेकिन बाद मे महज़ मजा लेने के लिये वह व्रोन्स्की से कौसिलर के साथ हुई बातचीत की तफ़सीलें पूछने लगा और व्रोन्स्की से यह सुनकर देर तक हसता रहा कि कुछ शान्त होनेवाला कौसिलर मामले के सभी ब्योरो को याद करके फिर-फिर भडक उठता था और कैसे व्रोन्स्की ने सुलह के अन्तिम शब्द कहकर अपनी होशियारी दिखाते हुए पेत्रीत्स्की को आगे को तरफ धकेला और खुद पीछे हट गया था।

"बडा बेहूदा, मगर मजेदार किस्सा है यह। केद्रोव उस कौसिलर महोदय से द्वन्द्व-युद्ध तो नही कर सकता न। तो इतना अधिक नाराज़ हो उठा था वह?" कमाडर ने हसते हुए पूछा। "और क्लैर आज कैसी लग रही है? अद्भुत!" उसने नयी फ्रासीसी अभिनेत्री के बारे मे कहा। "बेशक कितनी बार ही देखो, हर बार नयी दिखाई देती है। सिर्फ़ फ्रासीसी ही ऐसा कर सकते है।"

(६)

अन्तिम अंक की समाप्ति की प्रतीक्षा किये बिना ही प्रिंसेस बेत्सी थियेटर से चली गयी। श्रृंगार-कक्ष में जाकर उसने अपने लम्बोतरे पीले चेहरे पर पाउडर लगाया, [illegible] ठीक किया और बड़े मेहमानखाने में चाय का प्रबन्ध करने का आदेश दिया ही था कि बोल्शाया मोर्स्काया सड़क पर उसके बड़े घर के सामने एक के बाद

enfant terrible* कहते थे। प्रिंसेस म्यागकाया दोनों दलों के बी
बैठी थी और दोनों तरफ़ कान लगाये हुए कभी इस, तो कभी उ
दल की बातों में हिस्सा लेती थी। "काउन्टेस वाला वाक्य मुन
आज तीन आदमी कह चुके हैं, मानो उन्होंने आपस में यह तय क
रखा हो। समझ में नहीं आता कि उन्हें यह वाक्य किसलिये इत
पसन्द आया है।"

इस टिप्पणी से बातचीत का तार टूट गया और अब फिर
नया विषय ढूंढना जरूरी था।

"हमें कोई दिलचस्प बात सुनाओ, लेकिन वह निन्दा-चुगली नहीं
होनी चाहिये," राजदूत की बीवी ने कूटनीतिज्ञ को सम्बोधित कर
हुए कहा, जिसे ऐसी सुन्दर बातें करने में, जिन्हें अंग्रेज़ी में small
talk कहा जाता है, कमाल हासिल था। कूटनीतिज्ञ की समझ में
भी नहीं आ रहा था कि वह क्या बात शुरू करे।

"कहते हैं कि यह बहुत मुश्किल काम है, कि सिर्फ़ निन्दा-चुगली
ही मजेदार होती है," कूटनीतिज्ञ ने मुस्कराते हुए कहना शुरू किया।
"लेकिन मैं कोशिश करता हूं। कोई विषय सुझाइये। असली बात तो
विषय ही है। विषय बना देने पर उसके इर्द-गिर्द ताना-बाना बुनना
आसान हो जाता है। मेरे दिमाग में अक्सर ऐसा ख्याल आता है कि
पिछली सदी के जाने-माने बातूनियों के लिये अब कोई अक्लमन्दी की
बात कहना मुश्किल होता। अक्लमन्दी की सभी बातों से लोग बुरी
तरह ऊब चुके हैं..."

"यह तो बहुत पहले कही जा चुकी है," राजदूत की बीवी ने
हंसते हुए उसे टोक दिया।

प्यारी बातचीत शुरू हुई, लेकिन चूंकि वह बहुत ही प्यारी थी,
इसलिये फिर से बीच में ही बन्द हो गयी। सबसे ज़्यादा भरोसे के
साधन का ही, जो कभी धोखा नहीं देता था, उपयोग जरूरी था।
यह साधन था – निन्दा-चुगली।

"आपको ऐसा नहीं लगता कि तुश्केविच में लुई १५ वें जैसा कुछ
है?" उसने मेज़ के करीब खड़े सुनहरे बालों वाले सुन्दर नौजवान की
तरफ़ आंखों से इशारा करके कहा।

* हुल्लड़बाज़। (फ़्रांसीसी)

"जानती है, तो सिगार? लेकिन आप कुछ जानती तो है नहीं।"

"सिगार्स। मैंने उनसे, क्या कहते है उन्हें, बैंको में कुछ सीख लिया है। उनके यहां रेशमकीटों के बहुत बढ़िया नमूने हैं। उन्होंने हमें दिखाये थे।"

"तो क्या आप शुल्सबुर्ग के यहां गयी थी?" समोवार के पास बैठी गृह-स्वामिनी ने पूछा।

"हां, ma chere, उन्होंने हम पति-पत्नी को खाने पर बुलाया था। मुझे बताया गया कि उनके खाने में परोसी गयी चटनी पर एक हजार रूबल खर्च हुआ है," म्याग्काया ने यह महसूस करते हुए कि सभी उसकी बात सुन रहे हैं, ऊंचे स्वर में कहा, "और बहुत ही बेहूदा थी वह चटनी, हरी-सी। हमारे लिये भी उन्हें बुलाना जरूरी था। मैंने पचासी कोपेक की चटनी बनायी और सबने खुश होकर खाई। मैं तो एक हजार रूबलोंवाली चटनियां नहीं बना सकती।"

"इसकी कोई मिसाल नहीं!" गृह-स्वामिनी ने कहा।

"अद्भुत है!" किसी अन्य ने राय जाहिर की।

प्रिंसेस म्याग्काया की बातें हमेशा एक जैसा ही प्रभाव पैदा करती थी और उसके द्वारा पैदा किये जानेवाले असर का राज इस बात में छिपा था कि वह बेशक मौके के मुताबिक बात नहीं कहती थी, जैसा कि इस वक्त हुआ था, लेकिन वह समझदारी की और सीधी-सादी होती थी। वह जिस सामाजिक हलके में रहती थी, उसमें ऐसे शब्द सूझ-बूझवाले मज़ाकों का प्रभाव पैदा करते थे। प्रिंसेस म्याग्काया यह समझने में असमर्थ थी कि ऐसा क्यों होता था, लेकिन इतना जानती थी कि ऐसा असर होता है और वह इसका फायदा उठाती थी।

चूंकि प्रिंसेस म्याग्काया के बात करने के वक्त सभी उसे सुन रहे थे और राजदूत की पत्नी के आस-पास बातचीत बन्द हो गयी थी, इसलिये गृह-स्वामिनी ने सभी लोगों को एक ही जगह पर एकत्रित करने की इच्छा से राजदूत की पत्नी को सम्बोधित किया

"आप सचमुच बिल्कुल चाय नहीं पीना चाहती? आप भी यहां, हमारे पास ही आ जाइये।"

"नहीं, हम यहां मज़े में हैं," राजदूत की बीवी ने मुस्कराकर जवाब दिया और शुरू की हुई बातचीत जारी रखी।

बातचीत बहुत दिलचस्प थी। कारेनिन दम्पति पर टीका-टिप्पणी हो रही थी।

"अपनी मास्को यात्रा के बाद आन्ना बहुत बदल गयी है। उसमे कुछ अजीब-सा प्रतीत होता है," उसकी एक सहेली ने कहा।

"सबसे बड़ी तब्दीली यह है कि वह अपने साथ अलेक्सेई व्रोन्स्की की छाया लेकर आई है," राजदूत की बीवी ने कहा।

"तो क्या हुआ? ग्रीम का एक किस्सा है – छाया के बिना, छाया से वंचित व्यक्ति। और यह उसके लिये किसी चीज का दण्ड होता है। मेरी समझ मे कभी नही आया कि यह दण्ड क्या है। लेकिन औरत को तो छाया के बिना बुरा लगना चाहिये।"

"हा, लेकिन छायावाली औरतो का अक्सर बुरा अन्त होता है," आन्ना की सहेली ने कहा।

"आपकी जबान जल जाये," इन शब्दो को सुनकर प्रिसेस म्यागकाया ने अचानक कहा। "आन्ना बहुत ही बढ़िया औरत है। उसका पति मुझे अच्छा नही लगता, लेकिन उसे मैं बहुत प्यार करती हू।"

"उसका पति क्यो अच्छा नही लगता आपको? बहुत अच्छा आदमी है वह," राजदूत की बीवी ने कहा। "मेरे पति का कहना है कि यूरोप मे उस जैसे राजकीय कार्यकर्त्ता बहुत कम हैं।"

"मेरा पति भी मुझसे ऐसा ही कहता है, लेकिन मुझे यकीन नही होता," प्रिसेस म्यागकाया ने कहा। "अगर हमारे पति यह सब न कहते, तो हम वह देख लेती, जो वास्तव मे है। मेरे ख्याल मे तो अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच बुद्धू है। मैं फुसफुसाकर यह कह रही हू सच है न कि ऐसा करने से सब कुछ स्पष्ट हो जाता है? पहले जब मुझसे उसमे समझदारी देखने को कहा जाता था, तो मैं खोजती रहती और यह महसूस करती कि मैं खुद बुद्धू हू, क्योकि उसकी अक्ल को नही देख पाती हू। लेकिन ज्योही मैंने फुसफुसाकर कहा – वह बुद्धू है – तो सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट हो गया। सच है न?"

"कैसी जली-कटी बाते कर रही हैं आज आप!"

"जरा भी नहीं! मेरे लिये और कोई चारा ही नही। हम दोनो मे से एक तो बुद्धू है ही। लेकिन आप यह जानती है कि अपने बारे मे आदमी यह कभी नही कह सकता।"

"अपनी दौलत से कोई सुश नही, मगर अक्ल से हर कोई सुश है," कूटनीतिज्ञ ने फ्रांसीसी कविता की पंक्ति सुनाई।

"बिल्कुल, बिल्कुल यही बात है," प्रिंसेस म्याग्काया जल्दी से उसकी ओर मुडी। "लेकिन यह जान लीजिये कि आन्ना पर मैं आपको उंगली नही उठाने दूंगी। वह इतनी अच्छी, इतनी प्यारी है। वह कर ही क्या सकती है, अगर सभी उसे प्यार करते हैं और उसके इर्द-गिर्द छायाओ की तरह मडराते हैं?"

"मैं उस पर उंगली उठाने की सोच ही कब रही हू," आन्ना की सहेली ने अपनी सफाई पेश की।

"अगर हमारे पीछे-पीछे कोई छाया की तरह नही घूमता तो इसका यह मतलब नही है कि हमे दूसरो पर छींटे फेकने का हक हासिल है।"

आन्ना की सहेली की अच्छी तरह से तबीयत साफ करने के बाद प्रिंसेस म्याग्काया उठी और राजदूत की बीवी के साथ उस मेज पर जा बैठी, जहा प्रशा के बादशाह के बारे मे आम बातचीत हो रही थी।

"वहा आप लोगो ने किस की निन्दा-चुगली की?" बेत्सी ने पूछा।

"कारेनिन दम्पति की। प्रिंसेस ने अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच का बढ़िया खाका खीचा," राजदूत की बीवी ने मेज पर बैठते हुए मुस्कराकर जवाब दिया।

"अफसोस की बात है कि हम नही सुन सकी," घर की मालकिन ने दरवाजे की तरफ देखते हुए कहा। "आखिर आप आ ही गये," उसने भीतर आते व्रोन्स्की को सम्बोधित करते हुए मुस्कराकर कहा।

व्रोन्स्की यहा उपस्थित सभी लोगो को न सिर्फ जानता था, बल्कि इनसे हर दिन मिलता था। इसलिए वह ऐसे इतमीनान से अन्दर आया, जैसे आदमी उन लोगो के पास आता है जिन्हे छोड़कर अभी बाहर गया हो।

"मैं कहा से आया हू?" उसने राजदूत की बीवी के सवाल के जवाब मे कहा। "क्या हो सकता है, बताना ही पड़ेगा। बुफ थियेटर से। शायद सौवीं बार, फिर भी नया मजा लेकर। कमाल है! मैं जानता हू कि यह शर्म की बात है, फिर भी मानना पड़ता कि

मे मुझे नीद आ जाती है, लेकिन बुफ थियेटर मे अन्तिम क्षण तक बडे मजे से बैठा रहता हू। आज . "

उसने फ्रासीसी अभिनेत्री का नाम लिया और उसके बारे मे कुछ कहना चाहा, लेकिन राजदूत की बीवी ने मजाकिया ढग से घबराहट जाहिर करते हुए उसे रोक दिया

"कृपया, ये भयानक बाते नही सुनाइये।"

"अच्छी बात है, नही सुनाऊगा, खास तौर पर जबकि सभी ये भयानक बाते जानते हैं।"

"और अगर उसे भी ओपेरा की भाति माना जाता तो सभी वहा जाते," प्रिसेस म्याग्काया ने इतना और जोड दिया।

(७)

दरवाजे पर पैरो की आहट सुनाई दी और प्रिसेस बेत्सी ने यह जानते हुए कि आन्ना आई है, व्रोन्स्की पर नजर डाली। वह दरवाजे की तरफ देख रहा था और उसके चेहरे पर अजीब, नया-सा भाव था। वह खुशी से, टकटकी बाधे और साथ ही सहमा हुआ सा भीतर आती आन्ना को देख रहा था और धीरे-धीरे उठकर खडा हो गया। आन्ना मेहमानखाने मे दाखिल हुई। हमेशा की भाति बिल्कुल सीधी तनी हुई और अपनी तेज, दृढ और हल्की-फुल्की चाल से, जो उसे ऊंचे समाज की दूसरी महिलाओ से अलग करती थी, और अपनी दृष्टि को एक ही दिशा मे रखते हुए वह कुछ कदम बढाकर गृह-स्वामिनी के पास पहुची और उससे हाथ मिलाया, मुस्करायी और इसी मुस्कान के साथ उसने व्रोन्स्की की ओर देखा। व्रोन्स्की ने सिर झुकाया और उसकी तरफ कुर्सी बढा दी।

आन्ना ने सिर्फ सिर ही झुकाया, लज्जारुण हो गयी और भौहे सिकोड़ ली। किन्तु उसी समय जल्दी से परिचितो को सिर झुकाकर और अपनी ओर बढे हाथों से हाथ मिलाकर उसने गृह-स्वामिनी को सम्बोधित किया.

"मैं काउटेस लीदिया के यहा गयी थी और जल्दी ही यहा आ जाना चाहती थी, मगर ज्यादा देर तक बैठी रही। उसके

यहा सर जॉन आया हुआ था। बहुत दिलचस्प आदमी है वह।"

"अरे, वही मिशनरी?"

"हा, वह रेड इडियनो के जीवन के बारे मे बहुत दिलचस्प बाते सुनाता रहा।"

आन्ना के आने से बातचीत का तार टूटा गया था, मगर अब उसमे बुझाये जाते लैम्प की फड़फड़ा उठनेवाली लौ की तरह फिर से जान आ गयी।

"सर जॉन! हा, सर जॉन। मैने उसे देखा है। उसका बयान करने का अन्दाज बहुत अच्छा है। व्लास्येवा तो उस पर जान छिड़कती है।"

"क्या यह सच है कि छोटी व्लास्येवा तोपोव से शादी कर रही है?"

"हा, कहते है कि यह बिल्कुल तय हो चुका है।"

"मुझे तो मा-बाप पर हैरानी होती है। सुनते हैं कि यह प्रेम-विवाह होगा।"

"प्रेम-विवाह? कैसे बाबा आदम के जमाने के ख्याल हैं तुम्हारे! आजकल कौन प्रेम की चर्चा करता है?" राजदूत की बीवी ने कहा।

"क्या हो सकता है? यह बेवकूफी भरा पुराना फैशन अभी तक खत्म होने का नाम नही लेता," व्रोन्स्की ने कहा।

"यह उनके लिये और भी बुरा है, जो इस फैशन के फेर मे पड़े हुए है। मैं तो केवल ऐसे सुखी विवाह ही जानती हू, जो भौतिक लाभ के लिये किये गये है।"

"हा, लेकिन दूसरी तरफ भौतिक लाभ के लिये किये गये विवाह अक्सर इसीलिये धूल की तरह हवा मे उड़ जाते है कि वही प्रेम प्रकट हो जाता है जिसकी अवहेलना की गयी थी," व्रोन्स्की ने कहा।

"लेकिन हम भौतिक लाभवाले विवाह उन्हे कहते हैं, जब दोनो अपने जुनून से निजात पा चुके है। यह तो वैसे लाल बुखार है, जिसको भुगतना ही पड़ता है।"

"तब तो प्रेम से बचने के लिये चेचक की तरह कृत्रिम ढग से टीका लगवाना सीखना चाहिए।"

"अपनी जवानी के दिनों में मैं एक क्लर्क को प्यार करती थी," प्रिंसेस म्याग्काया ने कहा। "मालूम नहीं, मुझे इससे कोई फायदा हुआ या नहीं।"

"मैं मज़ाक के बिना ऐसा सोचती हू कि प्यार को जानने के लिये भूल करना और फिर उसे सुधारना जरूरी है," प्रिंसेस बेत्सी ने कहा।

"शादी के बाद भी?" राजदूत की पत्नी ने मज़ाक किया।

"भूल जब सुधार ली जाये तभी अच्छा है," कूटनीतिज्ञ ने एक अंग्रेज़ी कहावत का हवाला दिया।

"बिल्कुल सही," बेत्सी ने झटपट पुष्टि की, "भूल करना और फिर उसे सुधारना जरूरी है। आपका इस बारे मे क्या ख्याल है?" उसने आन्ना से पूछा, जो तनिक दिखाई देनेवाली विश्वासपूर्ण मुस्कान के साथ इस बातचीत को चुपचाप सुन रही थी।

"मैं सोचती हू," आन्ना ने हाथ से उतारे हुए दस्ताने के साथ खिलवाड करते-करते कहा, "मैं सोचती हू कि जितने सिर हैं उतनी ही अक्ले, तो जितने दिल है, उतनी ही किस्म के प्रेम है।"

व्रोन्स्की आन्ना को देख रहा था और धडकते दिल से उसके जवाब का इन्तज़ार कर रहा था। आन्ना के जवाब के बाद उसने ऐसे राहत की सास ली मानो खतरा टल गया हो।

आन्ना ने अचानक उसे सम्बोधित किया

"मेरे पास मास्को से पत्र आया है। उसमे लिखा है कि कीटी श्चेर्बात्स्काया बहुत बीमार है।"

"सच?" व्रोन्स्की ने माथे पर बल डालकर कहा।

आन्ना ने कडी नज़र से उसकी तरफ देखा।

"आपको इसमे कोई दिलचस्पी नही?"

"उल्टे, बेहद दिलचस्पी है। अगर मैं पूछ सकता हू, तो बताइये कि क्या लिखा है उन्होने आपको?" उसने कहा।

आन्ना उठी और बेत्सी के पास चली गयी।

"मुझे चाय की प्याली दीजिये," उसकी कुर्सी के पीछे खडे होकर वह बोली।

प्रिंसेस बेत्सी ने जब तक चाय डाली, इसी बीच व्रोन्स्की आन्ना के पास आ गया।

"क्या लिखा है उन्होने आपको?" व्रोन्स्की ने दोहराया।

"मैं अक्सर ऐसा सोचती हू कि भोडी हरकत किसे कहते है,

मर्द लोग यह नहीं समझते, तो वे इसकी बहुत चर्चा करते हैं," आन्ना ने व्रोन्स्की को जवाब दिये बिना कहा। "मैं बहुत दिनों से आपसे यह कहना चाहती थी" उसने इतना और कहा तथा कुछ कदम चलकर कोनेवाली उस मेज के पास जा बैठी, जिस पर एल्बम रखे थे।

"मैं आपके शब्दों का अर्थ पूरी तरह नहीं समझ पा रहा हूं," चाय की प्याली उसे देते हुए व्रोन्स्की ने कहा।

आन्ना ने अपने पासवाले सोफे की तरफ देखा और वह फ़ौरन वहां बैठ गया।

"हां, मैं आपसे यह कहना चाहती थी," व्रोन्स्की की तरफ देखे बिना आन्ना ने कहा। "आपने बुरा व्यवहार किया, बुरा, बहुत बुरा व्यवहार किया।"

"क्या मैं यह नहीं जानता हूं कि मैंने बुरा व्यवहार किया है? लेकिन मेरे ऐसा व्यवहार करने का कारण कौन है?"

"आप मुझसे यह क्यों कह रहे हैं?" कड़ाई से उसकी ओर देखते हुए आन्ना ने कहा।

"आप जानती हैं कि क्यों कह रहा हूं," व्रोन्स्की ने आन्ना से नजरें मिलाते और उन्हें झुकाये बिना दिलेरी तथा खुशी से जवाब दिया।

व्रोन्स्की नहीं, आन्ना परेशान हो उठी।

"इससे सिर्फ इसी बात का सबूत मिलता है कि आपके सीने में दिल नहीं है," आन्ना ने कहा। लेकिन उसकी नज़र कह रही थी कि वह जानती है कि उसके पास दिल है और इसीलिये वह उससे डरती है।

"वह जिसकी आपने अभी चर्चा की है, प्रेम नहीं था, भूल थी।"

"याद है न कि मैंने आपको यह शब्द, यह घिनौना शब्द मुंह से निकालने की मनाही कर दी थी," आन्ना ने सिहरते हुए कहा। किन्तु इसी क्षण उसने यह अनुभव किया कि केवल इस एक "मनाही" शब्द से उसने यह जाहिर कर दिया है कि उसे उस पर कुछ विशेष अधिकार प्राप्त है और इसी से वह उसे प्रेम के बारे में चर्चा करने को प्रोत्साहित करती है। "मैं बहुत पहले ही आपसे यह कहना चाहती थी," वह दृढ़ता से उससे नज़र मिलाते हुए कहती गयी और उसका चेहरा तम-तमा[illegible] होता जा रहा था, "और आज तो मैं यह जानते हुए

इस किस्से का कोई अन्त नहीं होगा — जो यह सच है! यह
पेश करती है! यह इसे स्वीकार करती है!'

तो मेरे लिए इतना काफ़ी है कि कभी तो मुझसे ये शब्द
कहिये और हम अच्छे मित्र बने रहेंगे,' उसने कहा, किन्तु
नज़र कुछ दूसरा ही कह रही थी।

मित्र हम नहीं बनेंगे यह तो आप स्वयं जानती हैं। ि
हम या तो सबसे सुखी अथवा दुखी लोग होंगे — यह आपके हाथ में है

आन्ना ने कुछ कहना चाहा मगर व्रोन्स्की ने उसे इसका अ
नहीं दिया।

मैं केवल एक चीज़ ही चाहता हूं जैसे कि इस समय, वैसे
आशा करने का यातना सहने का अधिकार चाहता हूं। लेकिन अ
यह भी मुमकिन नहीं तो मुझे गायब हो जाने का हुक्म दीजिये अ
मैं गायब हो जाऊंगा। अगर मेरी उपस्थिति आपको बोझिल महसू
होती है, तो आप मुझे फिर कभी नहीं देखेंगी।"

"मैं आपको कहीं भी भगाना नहीं चाहती।"

"केवल कुछ भी तब्दील नहीं। जैसा है, सब कुछ वैसा ही रह
दीजिये," उसने कांपती आवाज़ में कहा। "लीजिये, आपके पति
आ गये।"

सचमुच इसी समय अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच अपनी शान्त और
अटपटी चाल से मेहमानखाने में दाखिल हुआ।

अपनी पत्नी और व्रोन्स्की पर नज़र डालकर वह गृह-स्वामिनी
के पास गया और चाय का प्याला लेकर बैठने के बाद उसने अपने
धीमे-धीमे, किन्तु सदा सुनाई देनेवाले और किसी को निशाना बनाते
हुए मज़ाकिया अन्दाज़ में बोलना शुरू किया।

"आपकी राम्बुल्ये* तो खूब अच्छी तरह जमी हुई है," उसने
लोगों पर दृष्टि दौड़ाते हुए कहा, "रूप का निखार और कला का
शृंगार भी है।"

किन्तु प्रिंसेस बेत्सी उसके इस sneering** लहजे को, जैसा वह

---

* महफ़िल।
** फबतियां कसने का। (अंग्रेज़ी)

था और अपने आपसे कहता था कि उसे यकीन करना चाहिये। यद्यपि उसकी यह आस्था कि बीवी पर शक करना एक लज्जाजनक भावना है और उसे उस पर यकीन करना चाहिये, अभी तक खंडित नही हुई थी, फिर भी अब वह यह अनुभव करता था कि उसे एक बेतुकी और समझ मे न आनेवाली परिस्थिति का सामना करना पड रहा है और यह नही जानता था कि क्या करे। कारेनिन को जीवन का सामना करना पड रहा था, उसे यह सम्भावना दिखाई दे रही थी कि उसकी बीवी उसके सिवा किसी और से भी प्यार कर सकती है, और यह उसे बेहद उलझी तथा समझ मे न आनेवाली बात प्रतीत हो रही थी, क्योकि यह तो खुद जिन्दगी थी। कारेनिन ने अपना सारा जीवन सरकारी काम-काज के क्षेत्रो मे, जिनका केवल जीवन की परछाइयो से सम्बन्ध था, बिता दिया था। और जब कभी उसे जीवन से दो-चार होना पडता था, वह दामन बचाकर निकल जाता था। अब उसे कुछ ऐसा महसूस हो रहा था, जैसा कि वह आदमी अनुभव कर सकता है, जो बडे चैन से पुल पर चलता हुआ खड्ड पार कर लेता है और फिर अचानक यह देखता है कि वहा पुल नही रहा और नीचे खड्ड है। स्वय जीवन ही वह खड्ड था और पुल था वह अवास्तविक जीवन, जो कारेनिन ने बिताया था। उसकी बीवी के किसी दूसरे आदमी को प्यार कर सकने की सम्भावना के सवाल पहली बार उसके सामने आये थे और वह स्तब्ध रह गया था।

कपडे उतारे बिना वह केवल एक लैम्प से प्रकाशित भोजन कक्ष के आवाज पैदा करते तख्तो के फर्श पर, अंधेरे मेहमानखान के कालीन पर, जिसमे कुछ ही समय पहले बनाये गये और सोफे के ऊपर लटके हुए उसके अपने बडे चित्र पर रोशनी पड रही थी, और फिर आन्ना के कमरे मे जहा दो मोमबत्तिया आन्ना के रिश्तेदारो और सहेलियो के चित्रो तथा लिखने की मेज पर रखी हुई उसकी सुन्दर और चिर-परिचित छोटी-मोटी चीजो को रोशन कर रही थी, सधे हुए कदमो से जाता। आन्ना के कमरे मे वह सोने के कमरे तक जाकर वापस लौट आता।

अपने हर चक्कर मे और अधिकतर रोशन भोजन-कक्ष के लकडीवाले फर्श पर वह रुकता और अपने आपसे कहता "हा, इस

यह ख्याल कि उसका कोई अपना अलग जीवन हो सकता है और होना चाहिये, उसे इतना भयानक प्रतीत हुआ कि उसने उसे जल्दी से दूर भगा दिया। यह वही खड्ड था, जिसमें झांकते हुए उसका दिल डरता था। विचार और भावना में अपने को किसी अन्य व्यक्ति की आत्मा में ले जाना एक ऐसी आत्मिक क्रिया थी, जिससे कारेनिन अनजान था। वह ऐसी आत्मिक क्रिया को हानिकारक और कल्पना की खतरनाक उडान मानता था।

"और सबसे बुरी बात तो यह है," वह सोच रहा था, "कि इस वक्त, जब मेरा काम खत्म होने को आ रहा है (वह उस परियोजना के बारे में सोच रहा था, जिसे इस समय अमली शक्ल दे रहा था), जब मुझे पूरी शान्ति और मानसिक शक्ति की आवश्यकता है, इस बेहूदा परेशानी ने मुझे आ घेरा है। लेकिन क्या हो सकता है? मैं तो उन लोगों में से नही हू, जो परेशानी और चिन्ता को बर्दाश्त करते हैं तथा उनका सामना करने की हिम्मत नही रखते?"

"मुझे अच्छी तरह सोच-विचार करना, निर्णय पर पहुचना और इस चीज़ को दिमाग से निकाल फेकना चाहिये," उसने ऊचे-ऊचे कहा।

"उसकी भावनाओं के प्रश्नों और इस बात का मुझसे कोई वास्ता नही है कि उसकी आत्मा मे क्या हुआ है या हो रहा है। यह उसकी आत्मा का मामला है और धर्म के अन्तर्गत आता है," उसने इस चेतना से राहत महसूस करते हुए अपने आपसे कहा कि उसे नैतिक नियमावली का वह बिन्दु मिल गया है, जिसके अन्तर्गत इस समय पैदा होनेवाली यह परिस्थिति आती है।

"तो," कारेनिन ने अपने आपसे कहा, "उसकी भावनाओं आदि के प्रश्न उसकी आत्मा के ही प्रश्न हैं और मुझे उनसे कुछ मतलब नही। मेरा उत्तरदायित्व बिल्कुल स्पष्ट है। परिवार के मुखिया के नाते मैं वह व्यक्ति हू, जिसे उसका निदेशन करना चाहिये और इसलिये मैं वह व्यक्ति हू, जो कुछ हद तक उसके लिये ज़िम्मेदार हू। मुझे उस खतरे की तरफ इशारा करना चाहिये, जो मुझे नज़र आ रहा है, उसे सावधान और यहा तक कि अपने प्रभाव का भी उपयोग करना चाहिये। मुझे उससे साफ-साफ कह देना चाहिये।"

और कारेनिन के दिमाग में वह सब कुछ स्पष्ट हो गया, जो अब

यह उल्लासमूर्ण दीप्ति नहीं थी। यह अंधेरी रात में आग की भयानक चमक की याद दिलाती थी। पति को देखकर आन्ना ने सिर ऊपर किया और मानो नींद से जागते हुए मुस्कराई।

"तुम बिस्तर में नहीं गये? यह भी कमाल है!" आन्ना ने कहा, हुड उतार फेंका और रुके बिना अपने शृंगार-कक्ष की ओर आगे बढ़ गयी। "सोने का वक्त हो गया, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," उसने दरवाजे के पीछे से कहा।

"आन्ना, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

"मुझसे?" उसने हैरान होते हुए कहा और दरवाजे के पीछे से सामने आकर उसकी तरफ देखा। "क्या बात है? किस बारे में?" आन्ना ने बैठते हुए पूछा। "अगर जरूरी है, तो आओ कर लें बात। लेकिन शायद बेहतर होगा कि सोया जाये।"

आन्ना के मुंह में जो कुछ आ रहा था, वह वही कहती जा रही थी और अपने को सुनते हुए उसे झूठ बोलने की अपनी क्षमता पर आश्चर्य हो रहा था। कितने सीधे-सादे और स्वाभाविक थे उसके शब्द तथा कितना अधिक ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह सोना चाहती है! वह ऐसा अनुभव कर रही थी मानो झूठ का अभेद्य कवच पहने हो। उसे लग रहा था मानो कोई अदृश्य शक्ति उसकी मदद कर रही है, उसे सहारा दे रही है।

"आन्ना, मेरे लिये तुम्हें सावधान करना जरूरी है," पति ने कहा।

"सावधान करना?" उसने पूछा। "किस बात के लिये?"

वह ऐसी सादगी से, ऐसी खुशमिजाजी से उसकी तरफ देख रही थी कि जो व्यक्ति उसे उसके पति की भांति अच्छी तरह नहीं जानता पहचानता था, न तो उसके शब्दों और न ही उसके शब्दों के अर्थ में कोई अस्वाभाविकता महसूस कर सकता था। लेकिन उसके लिये, जो उसे अच्छी तरह से जानता था, जो यह जानता था कि अगर वह पांच मिनट भी देर से बिस्तर पर जाता था, तो आन्ना का इस ओर ध्यान जाता था और वह उसका कारण पूछती थी, उसके लिये, जो यह जानता था कि अपनी सभी खुशियों, सभी मजाकों और दुख-दर्दों को वह फौरन उससे कहा करती थी — उसके लिये

यह उल्लासपूर्ण दीप्ति नहीं थी। यह अंधेरी रात में आग की भयं
चमक की याद दिलाती थी। पति को देखकर आन्ना ने सिर ऊपर
और मानो नींद से जागते हुए मुस्कराई।

"तुम बिस्तर में नहीं गये? यह भी कमाल है!" आन्ना ने
हुड उतार फेंका और रुके बिना अपने शृंगार-कक्ष की ओर च
गयी। "सोने का वक्त हो गया, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच,
दरवाज़े के पीछे से कहा।

"आन्ना, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।"

"मुझसे?" उसने हैरान होते हुए कहा और दरवा
से सामने आकर उसकी तरफ़ देखा। "क्या बात है? कि
आन्ना ने बैठते हुए पूछा। "अगर ज़रूरी है, तो आओ
लेकिन शायद बेहतर होगा कि सोया जाये।"

आन्ना के मुंह से जो कुछ आ रहा था, वह वह
थी और अपने को सुनते हुए उसे झूठ बोलने की
से आश्चर्य हो रहा था। कितने सीधे-सादे और
शब्द तथा कितना अधिक ऐसा प्रतीत हो रहा था
रही है! वह ऐसा अनुभव कर रही थी मानो
पहने हो। उसे लग रहा था मानो कोई अदृश्य
रही है, उसे सहारा दे रही है।

"आन्ना, मेरे लिये तुम्हें सावधान कर
कहा।

"सावधान करना?" उसने पूछा।

वह ऐसी मासूमियत, ऐसी खुशमिज़ा
थी कि जो व्यक्ति उसे उसके पति की भ
पहचानता था, न तो उसके अन्दाज़
में कोई बनावटीपन महसूस कर
उसे अच्छी तरह से जानता था
मिनट भी देर से बिस्तर
ओर ध्यान जाता
जो यह जानता
दुख-मुसीबतों

अगर तुम खुद यह महसूस करो कि कहीं जरा-सा भी आधार है, तो मैं तुमसे अनुरोध करूंगा कि तुम सोचो-विचारो और अगर तुम्हारा मन ऐसा करना चाहे, तो मुझसे कहो .."

कारेनिन ने जो कुछ सोचा था, वह उससे बिल्कुल भिन्न बात कह रहा था और ऐसा अनुभव भी नहीं कर रहा था।

"मुझे कुछ भी तो नहीं कहना। और फिर..." मुश्किल से अपनी मुस्कान पर काबू पाते हुए आन्ना अचानक तेजी से कह उठी, "सच, सोना चाहिये।"

कारेनिन ने गहरी उसास छोड़ी और इसके बाद और कुछ भी कहे बिना सोने के कमरे की तरफ चल दिया।

आन्ना जब सोने के कमरे में आई, तो कारेनिन बिस्तर पर लेट चुका था। वह अपने होंठ कसकर भींचे था और उसने आन्ना की तरफ नहीं देखा। आन्ना अपने पलंग पर जाकर लेट गयी और हर क्षण यह आशा कर रही थी कि वह उसके साथ फिर बातचीत करने लगेगा। आन्ना इससे घबरा भी रही थी और ऐसा चाह भी रही थी। मगर वह खामोश रहा। आन्ना हिले-डुले बिना देर तक इन्तजार करती रही और फिर उसके बारे में भूल गयी। वह अब दूसरे के बारे में सोच रही थी, उसे अपनी कल्पना में देख और यह अनुभव कर रही थी कि उसके ख्याल से कैसे उसका मन बेचैनी और अपराधपूर्ण हर्ष से भर उठता था। अचानक उसे स्थिर और शान्त ढंग से नाक बजाती सुनाई दी। पहले क्षण में कारेनिन मानो अपनी नाक बजाने से डर गया और यह आवाज बन्द हो गयी। किन्तु दो सांसों के बाद वह फिर से शान्त लय में लगातार बजने लगी।

"देर हो चुकी है, देर हो चुकी है, देर हो चुकी है," आन्ना मुस्कराते हुए फुसफुसायी। वह हिले-डुले बिना देर तक आंखें खोले लेटी रही और उसे लगा कि मानो अंधेरे में वह खुद अपनी आंखों की चमक देख रही है।

(१०)

इस शाम से कारेनिन और उसकी पत्नी का एक नया जीवन आरम्भ हुआ। कोई खास बात नहीं हुई थी। आन्ना हमेशा की तरह

हो गयी थी। व्रोन्स्की का चेहरा पीला था, उसकी ठोडी काँप रही थी और वह आन्ना के पास खड़ा हुआ उससे शान्त होने का अनुरोध कर रहा था, मगर स्वयं यह नहीं जानता था कि वह क्यों और कैसे शान्त हो।

"आन्ना! आन्ना!" वह काँपती हुई आवाज़ में कह रहा था। "आन्ना, भगवान के लिये..."

व्रोन्स्की का स्वर जितना अधिक ऊँचा होता था, आन्ना का कभी गर्वीला, उल्लासमय और अब लज्जित सिर उतना ही अधिक नीचे झुकता जाता था। वह अधिकाधिक नीचे को धसकती और जिस सोफ़े पर बैठी थी, उससे फ़र्श पर व्रोन्स्की के पैरों की ओर गिरती जा रही थी। अगर व्रोन्स्की ने उसे थाम न लिया होता, तो वह कालीन पर गिर पड़ती।

लाश पर झपटता है, उसे घसीटकर ले जाता है और उसके टुकड़े कर डालता है, वैसे ही व्रोन्स्की ने उसके चेहरे और कधों को चुम्बनों से ढक दिया। आन्ना उसका हाथ थामे थी, निश्चल थी। हां, ये चुम्बन ही तो है, जो शर्म की कीमत देकर खरीदे गये हैं। हां, और यह हाथ भी, जो हमेशा मेरा होगा – मेरे सहपराधी का हाथ है। उसने इस हाथ को ऊपर उठाकर चूमा। व्रोन्स्की घुटनों के बल हो गया और उसने आन्ना का चेहरा देखना चाहा, लेकिन उसने उसे छिपा लिया और खामोश रही। आखिर मानो मन मारकर वह उठी और उसने व्रोन्स्की को परे धकेल दिया। उसका चेहरा पहले की तरह सुन्दर था, किन्तु इसीलिये अधिक दयनीय भी।

"सब कुछ खत्म हो गया," उसने कहा। "तुम्हारे सिवा मेरे पास कुछ भी नही रहा। यह याद रखना।"

"जो मेरी जिन्दगी ही है, उसे मैं कैसे भूल सकता हू। सुख के इस क्षण के लिये "

"कैसा सुख!" आन्ना ने घृणा और वितृष्णा से कहा और यह वितृष्णा अपने आप ही व्रोन्स्की को सप्रेषित हो गयी। "भगवान के लिये एक भी शब्द, एक भी और शब्द नही कहना।'

वह जल्दी से उठी और उससे दूर हट गयी।

"एक भी और शब्द नही कहना," आन्ना ने दोहराया और चेहरे पर व्रोन्स्की को अजीब लगनेवाला रुखाई भरी हताशा का भाव लिए हुए चली गयी। वह अनुभव कर रही थी कि इस नये जीवन की दहलीज पर पाव रखने से उसे लज्जा, खुशी और भय की जो अनुभूति हुई है, उसे इसी क्षण शब्दो मे व्यक्त करने मे असमर्थ थी, वह इसकी चर्चा नही करना चाहती थी, अनुपयुक्त शब्दो के उपयोग से इस भावना को भ्रष्ट नही करना चाहती थी। किन्तु बाद मे, दूसरे और तीसरे दिन भी, उसे न केवल वे शब्द ही नही मिले, जिनसे वह इन भावनाओ की सारी जटिलता को व्यक्त कर सकती, बल्कि वे विचार तक नही ढूढ सकी, जिनसे जो कुछ उसकी आत्मा मे था, उस पर अपने आप चिन्तन ही कर पाती।

वह उस ग्राम को दूसरों का प्रतीत हुआ होगा, शामिल हो गयी थी लेकिन समय और काम ने अपना रंग दिखाया। ग्राम-जीवन की साधारण किन्तु महत्त्वपूर्ण घटनायें कटु स्मृतियों को अधिकाधिक धुंधली बनाती चली गयीं। बीतनेवाले हर सप्ताह में कीटी की याद कम होती जाती थी। वह बड़ी बेचैनी से इस खबर का इन्तज़ार कर रहा था कि कीटी की शादी हो गयी है या कुछ दिनों में होनेवाली है और उसे आशा थी कि ऐसी खबर दुखता हुआ दांत निकलवा देने की भांति उसे पूरी तरह शान्त कर देगी।

इसी बीच वसन्त आ गया था, सुन्दर और मधुर, वसन्त की प्रत्याशाओं और छल-कपटों के बिना वसन्त, कभी-कभार आनेवाला ऐसा वसन्त जिसमें वनस्पतियों, जानवरों और इन्सानों को समान रूप से खुशी होती है। ऐसा प्यारा वसन्त लेविन को और अधिक उत्प्रेरित करता था और उसके इस इरादे को और ज्यादा पक्का बनाता था कि वह पहले के सब मंसूबों को त्याग कर अपने एकाकी जीवन को दृढ़ और स्वतंत्र रूप दे। यह सही है कि वह जो इरादे बनाकर गांव लौटा था, उनमें से अनेक को अमली शक्ल नहीं दे पाया था, फिर भी सबसे मुख्य बात यानी जीवन को पवित्र ढंग से बिताने का निश्चय बनाये रहा था। उसे वह लज्जा अनुभव नहीं होती थी, जो पतन के बाद उसे यातना देती थी और वह बेझिझक लोगों से आंखें मिला सकता था। फरवरी में ही उसे मारीया निकोलायेव्ना का इस आशय का पत्र मिला था कि भाई निकोलाई की सेहत ज्यादा बिगड़ती जा रही है, लेकिन वह इलाज नहीं करवाना चाहता। यह पत्र पाने के बाद लेविन अपने भाई के पास मास्को गया और उसे इस बात के लिये राज़ी करने में कामयाब हो गया कि वह किसी डाक्टर की सलाह ले और विदेश के किसी खनिज जल-केन्द्र में इलाज करवाने जाये। भाई को राज़ी करने और उसे नाराज़ किये बिना खर्च के लिये कर्ज देने में उसे इतनी अधिक सफलता मिली कि इस दृष्टि से उसने अपने प्रति बड़ा सन्तोष अनुभव किया। अध्ययन और खेतीबारी के अलावा, जो वसन्त में विशेष ध्यान की मांग करती है, लेविन ने इस जाड़े में खेतीबारी पर एक निबन्ध भी लिखना शुरू कर दिया था, जिसका मुख्य भाव यह था कि खेतीबारी में मज़दूर के चरित्र को जलवायु और भूमि की भांति अभिन्न अंग के

बाहर आनेवाली मधुमक्खी भिनभिना उठी। खेतों की हरी मखमल और बर्फ ढके डंठलों वाले मैदानों के ऊपर अदृश्य लवा पक्षियों के तराने गूंजने लगे। नदियों के ढालू स्थानों तथा दलदलों के ऊपर, जो पानी से भरपूर थे, टिटिहरियां शोर मचा रही थीं और सारस तथा हंस वसन्त के दिनों की अपनी आवाजें गुंजाते हुए आकाश में बहुत ऊंचे उड़ रहे थे। जाड़े में अपने रोयें बदल देने और कहीं-कहीं पर रोयों के बिना हो जानेवाली गउएं चरागाहों में रम्भा रही थीं, टेढ़ी-मेढ़ी कमज़ोर टांगोंवाले मेमने अपनी मिमियाती और ऊन गिराती माओं के गिर्द फुदक रहे थे, तेज़ दौड़नेवाले बालक पद-चिह्नों वाली सूखी जाती पगडंडियों पर दौड़ रहे थे, पोखर पर लिनन धोती देहाती औरतों के हंसी-खुशी से बोलने-बतियाने की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं और अहातों में हलों और हेंगों की मरम्मत कर रहे किसानों के हथौड़े बज रहे थे। सचमुच वसन्त आ गया था।

(१३)

लेविन ने घुटनों तक के बूट चढ़ाये और पहली बार फ़र के कोट के बजाय बनाती अंगरखा पहनकर अपने फ़ार्म का चक्कर लगाने चल दिया, धूप में आंखों को चकाचौंध करती जल-धाराओं में से कदम बढ़ाते हुए कभी तो बर्फ़ पर और कभी चिपचिपे कीचड़ में उसका पांव पड़ता।

वसन्त – यह योजनाओं और सम्भावनाओं के अनुमान का समय होता है। उस पेड़ की भांति, जिसे वसन्त में यह मालूम नहीं होता कि उसके फूले अंकुरों में छिपी हुई नई नसें और शाखायें किस दिशा में तथा कैसे बढ़ेंगी, लेविन को भी अहाते में आने पर इस बात का स्पष्ट ज्ञान नहीं था कि अपने प्यारे फ़ार्म में अब वह किस काम को शुरू करेगा। किन्तु वह अनुभव कर रहा था कि उसके दिमाग़ में ढेरों योजनाएं और बहुत ही बढ़िया ख़्याल हैं। सबसे पहले तो वह पशुशाला की तरफ़ गया। गउओं को बाहर अहाते में छोड़ दिया गया था और वे अपनी मुलायम खाल को चमका-दिखाती तथा धूप में गर्माती हुई रम्भा रही थीं, चरागाह में जाना चाह रही थीं। मुग्ध होकर अपनी

ढूढ़ने चल दिया। इस दिन अन्य सभी चीज़ों की भांति चमकता हुआ कारिन्दा मेमने के फ़र से सजा भेड़ की खाल का कोट पहने और घास को हाथों में मरोड़ता हुआ खलिहान में चला आ रहा था।

"माड़ने की मशीन पर बढ़ई क्यों नहीं है?"

"मैं कल आपको यह बताना चाहता था कि हेंगों की मरम्मत करना ज़रूरी है। जुताई का वक्त तो आ भी गया है।"

"लेकिन जाड़े में क्या होता रहा?"

"आपको बढ़ई की किसलिये ज़रूरत है?"

"बछड़े-बछियों के अहाते के भावे कहां हैं?"

"मैंने उन्हें उनकी जगह पर रख देने को कह दिया था। कैसे निपटे कोई इन लोगों से!" कारिन्दे ने हाथ झटक कर कहा।

"इन लोगों से नहीं, बल्कि इस कारिन्दे से!" लेविन ने भड़कते हुए कहा। "आखिर तुम किस मर्ज़ की दवा हो!" वह चिल्ला उठा। लेकिन यह ध्यान आने पर कि इससे कोई फ़ायदा नहीं होगा, उसने इस बात को बीच में ही छोड़ दिया और केवल गहरी सांस ली। "तो बुवाई शुरू की जा सकती है?" उसने कुछ क्षण चुप रहकर पूछा।

"तुर्कीनो के परे कल या परसों शुरू कर सकते हैं।"

"और तिपतिया घास?"

"वसीली और मीशा को भेज दिया है, बो रहे हैं, मालूम नहीं वे जा भी सकेंगे या नहीं – बेहद कीचड़ है।"

"कितने देसियातीना* में?"

"छ में।"

"सारी ज़मीन में क्यों नहीं?" लेविन चिल्लाया।

तिपतिया घास बीस के बजाय केवल छ देसियातीना में बोयी जा रही है, यह और भी ज़्यादा खीझ पैदा करनेवाली बात थी। सैद्धान्तिक ज्ञान और व्यक्तिगत अनुभव से लेविन यह जानता था कि तिपतिया घास की बुवाई केवल तभी अच्छी होती थी, जब उसे यथासम्भव जल्दी, लगभग बर्फ़ में ही बोया जाता था। किन्तु

---

* देसियातीना – रूस में भूमि की पुरानी नाप, जो १.०६ हेक्टर के बराबर है।

लेविन को ऐसा कर पाने में कभी कामयाबी नहीं मिली थी।

"लोग नहीं हैं। क्या करे कोई इन लोगों का? तीन आये नहीं। सेम्योन को ही लीजिये "

"आप छप्पर डालने के काम से कुछ को रोक लेते।"

"वही तो मैने किया है।"

"कहां हैं लोग?"

"पांच खाद बना रहे है, चार जई को पलट रहे हैं नहीं तो वह फूटने लग सकती है, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच।

लेविन बहुत अच्छी तरह से जानता था कि जई फूटने लग सकती है" का मतलब यह था कि बुवाई के लिये रखी गयी अंग्रेजी जई का सत्यानास हो चुका है, यानी फिर उसके आदेश को पूरा नहीं किया गया।

"मैंने तो लेण्ट के वक्त ही कहा था न कि पाइपों से हवा भरो।" वह चिल्लाया।

"कोई फ़िक्र नहीं करें, सब कुछ वक्त पर कर देंगे।"

लेविन ने गुस्से से हाथ झटका जई को देखने के लिये खत्ती में गया और फिर अस्तबल की ओर चला गया। जई अभी खराब नहीं हुई थी। लेकिन मज़दूर उसे फावड़ों से पलट रहे थे जबकि उसे निचली खत्ती में ही सीधे डाला जा सकता था। ऐसा करने का आदेश देकर और दो मज़दूरों को तिपतिया घास की बुवाई के लिये यहां से भेजने के बाद कारिन्दे के खिलाफ लेविन का गुस्सा ठण्डा हो गया। फिर दिन भी तो इतना प्यारा था कि नाराज होना सम्भव नहीं था।

"इग्नात!" उसने सईस को आवाज दी जो आस्तीनें ऊपर चढ़ाये हुए कुए के पास बग्घी को धो रहा था। मेरे लिये घोड़े पर ज़ीन कस दो "

"किस पर, हुज़ूर?"

"कोल्पिक पर ही सही।"

"जो हुक्म।"

जब तक घोड़े पर ज़ीन कसा गया तब तक लेविन ने आंखों के सामने इधर-उधर चक्कर काटते हुए कारिन्दे को फिर से अपने पास

में किये जानेवाले कामों तथा खेतीबारी की योजनाओं की चर्चा करने लगा।

खाद को ले जाने का काम कुछ पहले शुरू किया जाना चाहिये ताकि प्रारम्भिक घास काटने के वक्त तक यह काम पूरा हो जाये। साथ ही दूर के खेत को हलों से जोता जाना चाहिये और उसे [illegible] के बिना छोड़ दिया जाये। घास को आधे लोगों की मदद से नहीं, जो आधी घास ले लेंगे, बल्कि मजदूरों की सहायता से [illegible] जाना चाहिये।

इलाके या चालीस से ज्यादा मजदूरों को ठीक मजदूरी पर हासिल ही कर सकते थे। चालीस रखे जा चुके थे और इससे अधिक ही मिल रहे थे। फिर भी वह संघर्ष किये बिना नहीं रह सकता था।

"सूरी और चेफीरोव्का गावों में किसी को भेजिये। मजदूरों को ढूंढना चाहिये।"

"भेजने को तो भेज दूगा," वसीली फ्योदोरोविच ने मरी-सी आवाज में कहा। "लेकिन घोड़े भी तो मरियल हो गये है।"

"और खरीद लेंगे। मैं तो जानता हूं," लेविन ने हसकर इतना और जोड़ दिया, "आप तो बस, कम और घटिया के फेर में ही रहते है। लेकिन इस साल मैं आपको मनमानी नहीं करने दूगा। सब कुछ खुद करूगा।"

"मेरे ख्याल में आप अभी भी पूरी तरह नहीं सोते है। मालिक के सामने रहने पर हमें तो खुशी ही होती है"

"तो भोज-घाटी के परे तिपतिया घास बोयी जा रही है न? जाकर देखता हूं," लेविन ने *साईस द्वारा लाये गये छोटे-से कुम्मैत* घोड़े पर सवार होते हुए कहा।

"नाले में से नहीं जा सकेगे, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच," साईस ने पुकारकर कहा।

"तो जगल में से चला जाऊगा।"

और तेज दुगामा चाल से चलनेवाले अपने अच्छे-से घोड़े पर, जो देर तक अस्तबल में ही बधा रहा था और डबरो पर भर्राटा लेता तथा लगाम की छूट चाहता था, लेविन अहाते के कीचड़ से फाटक पर पहुचा और फिर खेत को चल दिया।

लेविन को अगर पशुओ के बाड़े और खलिहान में जाकर खुशी हुई थी, तो खेत में उसे और भी ज्यादा अच्छा लग रहा था। दुगामा चाल वाले अपने अच्छे घोड़े पर *समगति से* डोलते, जगल लाघते समय गुनगुनी बर्फ तथा हवा की ताजगी लिये गध को सासो में भरते और कहीं-कहीं रह गयी टूटती, धसती और पिघलते चिह्नोवाली बर्फ पर से गुजरते हुए वह फूले अकुरो और छाल पर सजीव हो उठी काईवाले अपने हर वृक्ष को देखकर खुश हो रहा था। जगल से बाहर आने पर

उसे बहुत बड़े विस्तार में खाली जगह के एक भी धब्बे के बिना मखम
कालीन की तरह हरियाली फैली दिखाई दी। केवल कहीं-कहीं गड्
में ही पिघलती बर्फ के धब्बे बाकी रह गये थे। न तो किसान के घो
और बछेड़े को देखकर ही, जो उसकी नयी, हरी फसल को कुच
रहे थे (उसने सामने आ जानेवाले एक किसान को उन्हें खदेड़ देने क
आदेश दिया) और न ही इपात नाम के किसान से मुलाकात हो
जाने तथा यह पूछने पर "तो इपात, जल्द ही बुवाई होगी?" औ
उसके हास्यास्पद तथा मूर्खतापूर्ण यह जवाब देने पर ही—"पहले तो
जुताई करनी चाहिये, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच", उसे गुस्सा आया
वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता जा रहा था, उसका मन त्यों-त्यों और अधिक
खिलता जाता था तथा खेतीबारी सम्बन्धी एक से एक बढ़िया योजना
उसके दिमाग में आती जा रही थी। सभी खेतों में मध्याह्न-रेखाओं पर
बेत के वृक्ष उगा दिये जायें, ताकि उनके नीचे बहुत देर तक बर्फ न
पड़ी रहे, खेतों को विभाजित कर दे—छ में खाद डाली जाये और
तीन पर तिपतिया घास उगायी जाये, खेत के दूरस्थ सिरे पर पशुशाला
और एक तालाब बनाया जाये तथा खाद के लिये पशुओं के वहनशील
बाड़े बनाये जायें। तब तीन सौ देसियातीना जमीन में गेहूं, सौ में
आलू और डेढ़ सौ में तिपतिया घास उगायी जाये और इस तरह एक
देसियातीना भूमि का भी उपजाऊपन नष्ट नहीं हो पायेगा।

इस तरह के सपने देखते और बड़ी सावधानी से मेड़ों के बीच घोड़े को मोड़ते हुए, ताकि अपनी हरी फसल को न कुचल दे, वह तिपतिया घास बोनेवाले मजदूरों के पास पहुंचा। बीजोंवाली गाड़ी मेड़ पर नहीं, बल्कि जुती हुई जमीन पर खड़ी थी और गेहूं की रबी की फसल गाड़ी के पहियों तथा घोड़े के सुमों से रौंदी हुई थी। दोनों मजदूर मेड़ पर बैठे हुए सम्भवतः एक ही पाइप से तम्बाकू के कश खींच रहे थे। गाड़ी में पड़ी बीज-मिश्रित मिट्टी मली हुई नहीं थी, बल्कि टिकिया या जमकर ढेलों का रूप लिये थी। मालिक को देखकर खेत-मजदूर वसीली गाड़ी की तरफ चल दिया और मीशा बुवाई करने लगा। यह कोई अच्छी बात तो नहीं थी, मगर लेविन मजदूरों पर बहुत कम ही बिगड़ता था। वसीली के निकट आने पर लेविन ने उसे घोड़े को मेड़ पर ले आने को कहा।

मुझे बुरा काम करना पसन्द नहीं और दूसरों को भी नहीं करने देता। मालिक का भला तो हमारा भला। वैसे ही उधर नज़र जाती है," वसीली ने खेत की तरफ इशारा करते हुए कहा, "दिल खुश हो जाता है।

"यह वसन्त बहुत प्यारा है, वसीली।"

"ऐसा वसन्त तो बड़े बूढ़ों को याद ही नहीं। मैं घर होकर आया हूँ, वहाँ हमारे बूढ़े ने भी एक एकड़ ज़मीन में गेहूँ बोया है। उसका कहना है कि उसमें और राई में भेद नहीं किया जा सकता।"

"बहुत अर्से से गेहूँ बो रहे हैं क्या आप लोग?"

"पार साल की गर्मी में आप ही ने तो यह सिखाया था। आप ही ने तो दो बोरी गेहूँ दिया था, जिसका एक-चौथाई हमने बेच दिया और बाकी बो दिया।"

"तो देखो, ढेलों को तोड़ देना," लेविन ने घोड़े के पास जाते हुए कहा। "और मीशा का भी ध्यान रखना। अगर घास अच्छी हुई, तो हर देसियातीना के पीछे तुम्हें पचास कोपेक मिलेंगे।"

"बहुत, बहुत शुक्रिया। आपकी तो हम पर योंही बड़ी मेहरबानी है।"

लेविन घोड़े पर सवार होकर उस खेत में गया, जहां पिछले साल की तिपतिया घास थी और इसके बाद उस खेत में, जिसे खरीफ़ का गेहूं बोने के लिये जोता जा चुका था।

डंठलों वाले खेत में तिपतिया घास खूब बढ़िया ढंग से बढ़ रही थी। वह काफी मजबूत थी और पिछले वर्ष के गेहूं की टूटी खूंटियों के बीच बहुत हरी दिख रही थी। घोड़ा टखने तक धंस जाता था और आधी पिघली हुई जमीन में से उसके सुम बाहर निकालने पर छप की आवाज होती। जोते हुए खेत को लांघना तो बिल्कुल असम्भव था – घोड़ा सिर्फ वहीं चल सकता था, जहां बर्फ की सख्त सतह थी, लेकिन पिघली हुई हल-रेखाओं में तो घोड़े की टांग टखने से ऊपर तक धंस जाती थी। जुताई बहुत कमाल की हुई थी, दो दिन में हेंगा फेरना और बुवाई करना सम्भव होगा। सब कुछ बहुत बढ़िया था, सब कुछ मन को खुश करनेवाला था। लेविन यह आशा करते हुए कि नाले में पानी उतर गया होगा वापसी पर उसी में से लौटा। सचमुच ऐसा ही था और नाले को पार करते हुए उसने दो बत्तखों को डरा दिया।

और वसन्त के इस अद्भुत दिन में उसे लगा कि उसकी स्मृति उसे तनिक भी नहीं खटकी।

"तुमने ऐसी उम्मीद नहीं की होगी?" ओब्लोन्स्की ने स्लेज से बाहर निकलते हुए कहा। उसकी नाक की नोक, गाल और भौंहों पर कीचड़ के छींटे पड़े हुए थे, मगर वह खुशी तथा स्वास्थ्य से चमक रहा था। "तुम से मिलने आया हूं – एक बात," उसने लेविन को गले लगाते और चूमते हुए कहा, "कुछ शिकार कर लूं – दो, और येर्गुशोवो गांव का जंगल बेच दूं – तीन।"

"बहुत खूब! वसन्त तो कितना प्यारा है! लेकिन स्लेज में यहां कैसे पहुंच गये?"

"पहियों वाली गाड़ी में और भी बुरा हाल होता, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच," परिचित कोचवान ने जवाब दिया।

"तुम्हारे आने से बहुत बहुत ही खुश हूं मैं," लेविन ने निश्छल और बाल-सुलभ खुशी भरी मुस्कान के साथ कहा।

लेविन अपने मेहमान को अतिथियों के ठहरने के कमरे में ले गया। उसका सामान – बड़ा थैला, गिलाफ़ चढ़ी बन्दूक और सिगार केस वहां पहुंचा दिये गये। उसे नहाने-धोने और कपड़े बदलने के लिये छोड़कर लेविन जुताई तथा तिपतिया घास के बारे में बताने को अपने कार्यालय की ओर चल दिया। अगाफ्या मिखाइलोव्ना, जिसे घर की इज्जत का हमेशा बहुत ध्यान रहता था, उससे खाने के बारे में पूछ-ताछ करने के लिये ड्योढ़ी में मिली।

"जो भी चाहे पका लें, लेकिन जल्दी से," उसने कहा और कारिन्दे की तरफ़ चल दिया।

जब वह लौटा, तो ओब्लोन्स्की नहाने-धोने और बाल सवारने के बाद मुस्कान बिखराता हुआ अपने कमरे से बाहर निकल रहा था। वे दोनों एक साथ ऊपर गये।

"ओह, कितना खुश हूं मैं कि तुम्हारे यहां आ पहुंचा। तुम [illegible] जो रहस्यपूर्ण चीजें करते रहते हो, अब मैं उन्हें समझ जाऊंगा। [illegible] कहता हूं, मुझे तुमसे ईर्ष्या होती है। कितना अच्छा घर है, कित[illegible] बढ़िया है सब कुछ। कितना उजला, कितना खुशी में डूबा हुआ[illegible] ओब्लोन्स्की यह भूलकर कि न तो हमेशा वसन्त होता है और न आ[illegible]

और यह दम किया हुआ हंस का मांस, शुम्पिना, किशमिश की शराब मक्खन चटनी के साथ मुर्गी और खुम्बियों की तरह अनूठा नाश्ता – बहुत शानदार और अद्भुत प्रतीत हो रहा था।

"बहुत बढ़िया, बहुत ही बढ़िया," रसा हुआ मांस खाने के बाद मोटी-मोटी सिगरेट के कश खींचते हुए उसने कहा। "तुम्हारे यहां तो मैं बिल्कुल ऐसा महसूस कर रहा हूं मानो जहाज के शोर-शराबे और झटकों के बाद शान्त तट पर आ उतरा हूं। तो तुम्हारा कहना है कि खेतीबारी के तरीकों का चुनाव और फैसला करते समय मजदूर का एक स्वतन्त्र कारक के रूप में अध्ययन किया जाना चाहिये। मैं तो इन मामलों में बिल्कुल कोरा हूं, लेकिन मुझे लगता है कि सिद्धान्त और उसके व्यावहारिक उपयोग का मजदूर पर भी असर होना चाहिये।

"तुम जरा रुको – मैं राजनीतिक अर्थशास्त्र की नहीं, बल्कि कृषिविज्ञान की बात कर रहा हूं। उसे प्राकृतिक विज्ञान के समान होना चाहिये और विशेष परिस्थितियों तथा मजदूर का उसके आर्थिक तथा नृवंशीय दृष्टिकोण से निरीक्षण..."

अगाफ्या मिखाइलोव्ना उसी समय मुरब्बा लेकर आ गयी।

"ओह अगाफ्या मिखाइलोव्ना," ओब्लोन्स्की ने अपनी मोटी-मोटी उंगलियों के सिरों को चूमते हुए कहा, "कितना बढ़िया है दम किया हुआ हंस का मांस, कितनी बढ़िया है जड़ी-बूटियों की ब्रांडी! कोस्त्या, क्या हमारे चलने का वक्त नहीं हो गया?" उसने इतना और जोड़ दिया।

लेविन ने खिड़की में से निपते जंगल की फुनगियों के पीछे डूबते सूरज पर नज़र डाली।

"हां, हो गया, चलने का वक्त हो गया," उसने कहा। "कुज्मा, छोटी गाड़ी तैयार करो!" और यह कहकर नीचे भाग गया।

ओब्लोन्स्की ने नीचे जाकर पालिश किये हुए डिब्बे पर से गिलाफ को बहुत सावधानी से खुद उतारा और डिब्बे को खोलकर अपनी कीमती, नवीनतम माडल की बन्दूक को व्यवस्थित करने लगा। कुज्मा, जिसने यह भांप लिया था कि उसे ओब्लोन्स्की से वोद्का पीने के लिये बड़ी बख्शीश मिलने वाली है, उसके पास से हटता ही नहीं

था और उसने उसे सुद ही मोजे तथा घुटनों तक के बूट पहनाये और ओब्लोन्स्की ने खुशी से उसे ऐसा करने दिया।

"कोस्त्या, कह दो कि अगर व्यापारी रियाबीनिन आये – मैंने उसे आज आने को कहा है – तो वह यहां बैठकर इन्तज़ार करे।"

'तो तुम क्या रियाबीनिन को जंगल बेच रहे हो?'

"हां, क्या तुम उसे जानते हो?"

"बेशक जानता हूं। मैंने उसके साथ धंधा किया है – 'पक्का और मुकम्मल तौर पर'।"

ओब्लोन्स्की हंस पड़ा। "पक्का और मुकम्मल तौर पर" – ये शब्द व्यापारी के तकिया-कलाम थे।

"हां, वह बहुत ही मज़ेदार ढंग से बातें करता है। समझ गई कि मालिक किधर जा रहा है!" उसने कुतिया लास्का को थपथपाते हुए कहा, जो कूं-कूं करती हुई लेविन के आस-पास उछल रही थी और कभी उसके हाथ, कभी बूटों और कभी बन्दूक को चाट रही थी।

छोटी-सी घोड़ा-गाड़ी बाहर खड़ी थी।

"बेशक दूर तो नहीं है, फिर भी मैंने गाड़ी जोतने को कह दिया था। शायद हम पैदल चलेंगे?"

"नहीं, सवारी ही बेहतर रहेगी," ओब्लोन्स्की ने गाड़ी के करीब जाकर कहा। वह गाड़ी में बैठ गया, चीते की खाल से उसने अपने पैर ढक लिये और सिगार सुलगा लिया। "अजीब बात है कि तुम तम्बाकू-नोशी नहीं करते। सिगार – यह तो खुशी नहीं, बल्कि खुशी का ताज, उसका प्रतीक है। इसे कहते हैं *ज़िन्दगी*! *कितना मज़ा है*! *काश*, मैं भी ऐसे ही जी सकता!"

"कौन मना करता है तुम्हें ऐसे जीने से?" लेविन ने मुस्कराते हुए कहा।

"सच, तुम बहुत खुशकिस्मत आदमी हो। तुम्हें जो पसन्द है, सब कुछ तुम्हारे पास है। घोड़े पसन्द हैं – वे हैं, कुत्ते पसन्द हैं – वे हैं, शिकार – सो भी है, खेतीबारी – वह भी है।"

"शायद इसलिये कि मेरे पास जो कुछ है उसमें खुश हूं और जो नहीं है, उसके अभाव से दुखी नहीं होता," लेविन ने कीटी का ध्यान आने पर कहा।

ओब्लोन्स्की समझ गया, उसने लेविन की तरफ देखा, मगर कहा कुछ नही।

लेविन ने इस बात के लिये ओब्लोन्स्की के प्रति कृतज्ञता अनुभव की कि उसने अपनी सदा की सी व्यवहारकुशलता से यह भापकर कि वह श्चेर्बात्स्की परिवार की चर्चा से घबराता है, उनके बारे में कुछ भी नही कहा। मगर लेविन अब उस बारे में जानना चाहता था, जो उसे इतनी यातना दे रहा था, मगर यह चर्चा चलाने की उसको हिम्मत नही हुई।

"तो यह बताओ कि तुम्हारा कैसा हाल-चाल है?" लेविन ने यह सोचकर कि उसके लिये केवल अपनी ही चिन्ता करना अच्छी बात नही है, पूछा।

ओब्लोन्स्की की आखे खुशी से चमक उठी।

"तुम तो यह मानने को तैयार नही हो कि अपनी रोटी होने पर आदमी को केक अच्छे लग सकते हैं। तुम्हारे मुताबिक तो यह गुनाह है, मगर मैं प्यार-मुहब्बत के बिना जिन्दगी को स्वीकार नही करता हू," लेविन के प्रश्न को अपने ढग से समझते हुए उसने कहा। "लेकिन हो ही क्या सकता है मै ऐसी ही मिट्टी का बना हुआ हू। और सच, इससे किसी को कोई विशेष हानि नही होती और स्वय को इतनी खुशी मिलती है"

"वही मामला है या कुछ नया है?" लेविन ने जानना चाहा।

"है दोस्त नया है! देखो न, ओसियान ढग की औरतो को तुम जानते ही हो ऐसी औरते, जिन्हे हम सपनो मे ही देखते है लेकिन ये वास्तविक जीवन मे भी होती है और बडी भयानक है ये औरते। बात यह है कि औरत तो एक ऐसी चीज है कि उसका चाहे कितना भी अध्ययन क्यो न किया जाये, वह हमेशा नयी ही बनी रहती है।

"तब तो अध्ययन न करना ही बेहतर होगा।"

नही। किसी गणितज्ञ ने कहा था कि सचाई जानने मे नही, बल्कि उसकी खोज मे खुशी मिलती है।"

लेविन चुपचाप सुन रहा था और बहुत कोशिश करने पर भी वह अपने मित्र की आत्मा मे घुसने और ऐसी औरतो के अध्ययन के

बारे में उसकी भावनाओं तथा उसके आनन्द को समझने में असमर्थ रहा।

(१५)

शिकार की जगह करीब ही थी – नदी किनारे एस्प के नौउम्र वृक्षों के छोटे-से जंगल में। वहां पहुंच कर लेविन गाड़ी से उतरा और ओब्लोन्स्की को काई और कीचड़वाले वन-प्रांगन के कोने में ले गया जो बर्फ से मुक्त हो चुका था। वह खुद दूसरे सिरे पर दोहरे भोज वृक्ष की तरफ चला गया और नीचेवाली सूखी शाखा के सहारे बन्दूक टिकाकर उसने अपना चोगे जैसा लम्बा कोट उतारा, पेटी कसी और हाथों को हिला-डुलाकर यह जांच लिया कि गतिविधि में किसी तरह की बाधा तो नहीं पड़ती।

बूढ़ी, पके बालोंवाली लास्का कुतिया, जो उसके पीछे-पीछे आ रही थी, सावधानी से उसके सामने बैठ गयी और उसने अपने कान खड़े कर लिये। बड़े जंगल के पीछे सूरज डूब रहा था और डूबते सूरज की रोशनी में एस्प वृक्षों के जंगल में जहां-तहां बिखरे, झुकी हुई शाखाओं और फूटने के लिये तैयार अंकुरोंवाले भोज वृक्ष बिल्कुल साफ नज़र आ रहे थे।

घने जंगल में से, जहां अभी भी बर्फ बाकी थी, मुश्किल से सुनाई देनेवाली आवाज़ पैदा करता हुआ पानी टेढ़ी-मेढ़ी और पतली धाराओं के रूप में बह रहा था। छोटे-छोटे पक्षी चहचहा रहे थे और कभी-कभी एक वृक्ष से उड़कर दूसरे पर जा बैठते थे।

पूर्ण निस्तब्धता के क्षणों में भूमि के पिघलने और घास के बढ़ने के कारण हिलनेवाले पिछले वर्ष के पत्तों की सरसराहट सुनाई देती।

"अरे वाह! घास का उगना सुनाई पड़ रहा है और दिखाई दे रहा है!" लेविन ने एस्प के सलेटी रंग के [illegible] को घास की नयी पत्ती के पास हिलते-डुलते देखकर [illegible]। वह कान लगाये खड़ा था, कभी तो नीचे गीली [illegible] तथा चौकन्नी लास्का को, [illegible] में जंगल की पातहीन [illegible] बादलों की

सफ़ेद धारियों से सजे धूमर आकाश को देखता। इसीदरम्यान मे
हिनाना और बहुत ऊंचा उड़ता हुआ एक बाज़ दूरस्थ वमन के
से गुज़रा। दूसरा भी इसी तरह और उसी दिशा में उड़ता हुआ
से ओझल हो गया। घने जंगल में पक्षी अधिकाधिक ज़ोर से और
उत्तेजना के साथ चहचहा रहे थे। कुछ ही फ़ासले पर
आवाज़ सुनाई दी लाम्का ने चौंककर सावधानी से कुछ कदम
और एक ओर को सिर झुकाकर ध्यान से सुनने लगी। नदी के पार
कोयल की कूक सुनाई दी। यह दो बार सामान्य रूप से कूकी,
बाद उसकी आवाज़ थरथरी हो गयी जल्दी-जल्दी कूकने लगी
फिर तो कोई क्रम ही नहीं रहा।

आता पक्षी दिखाई दिया। वह सीधा उसी की तरफ उडा आ रहा था। खीचकर फाडे जानेवाले कपडे की आवाज जैसी निकट आती खरखरी चीख बिल्कुल कानो के ऊपर गूजी। पक्षी की लम्बी चोच और गर्दन नजर आ रही थी और उसी क्षण, जब लेविन ने निशाना साधा, उस भाडी के पीछे से, जहा ओब्लोन्स्की था, लाल बिजली-सी कौधी। पक्षी तीर की तरह नीचे लपका और फिर ऊपर चढ गया। बिजली फिर से कौधी, आघात की आवाज सुनाई दी और पखो को फडफडाते, मानो हवा मे बने रहने की कोशिश करते हुए पक्षी रुका, घडी भर को ऐसे ही वहा रहा और फिर धम से कीचड वाली जमीन पर जा गिरा।

"क्या निशाना चूक गया?" ओब्लोन्स्की ने, जिसे धुए के कारण कुछ दिखाई नही दे रहा था, चिल्लाकर पूछा।

"यह रहा!" लेविन ने लास्का की ओर इशारा करते हुए कहा, जो एक कान उठाये और भबरीली दुम के सिरे को ऊचा हिलाते-डुलाते, धीरे-धीरे, मानो अपने आनन्द को लम्बा करना चाहती हो और मानो मुस्कराते हुए गोली का निशाना बने पक्षी को मालिक के पास ला रही थी। "मैं खुश हू कि तुम कामयाब रहे," लेविन ने कहा, मगर साथ ही उसने इस बात की ईर्ष्या भी महसूस की कि उसे यह कुनाल मार गिराने का मौका नही मिला।

"दायीं नली का निशाना तो बुरी तरह चूका," ओब्लोन्स्की ने अपनी बन्दूक मे कारतूस भरते हुए जवाब दिया। "शी... और आ रहा है।"

सचमुच ही एक के बाद एक जल्दी-जल्दी कई तेज सीटिया सुनाई दीं। दो कुनाल मानो खेलते, एक-दूसरे का पीछा करते, खरखरी आवाज मे चीख बिना केवल सीटिया बजाते हुए ही ठीक शिकारियो के सिरो के ऊपर उड़ते आये। चार गोलिया दगीं, कुनाल जल्दी मे अबाबीलो की तरह घूमे और नजर से ओभल हो गये।

शिकार बहुत बढिया रहा। ओब्लोन्स्की ने दो पक्षी और मार लिये तथा लेविन भी दो का शिकार करने मे सफल रहा, जिनमे से

एक भी मार नहीं पाया। अंधेरा होने लगा। निर्मल और रुपहला शुक्र तारा पश्चिम में भोज वृक्षों के पीछे निचाई पर अपनी प्यारी चमक दिखाने लगा था और पूरब में मलिन स्वाति तारा काफ़ी ऊंचाई पर अपनी लाल रोशनी बिखेर रहा था। लेविन अपने सिर के ऊपर सप्तर्षि तारों को पाता और खो देता था। कुनालों ने उड़ान भरना बन्द कर दिया था, किन्तु लेविन ने भोज वृक्ष की टहनी के नीचे नज़र आनेवाले शुक्र तारे के टहनी के ऊपर आ जाने तथा सप्तर्षियों के साफ़ दिखाई देने तक रुकने का निर्णय किया। शुक्र तारा टहनी के ऊपर आ चुका था और सप्तर्षि के सभी तारे काले-नीले आकाश में बिल्कुल साफ़ दिखाई देने लगे थे, किन्तु लेविन फिर भी प्रतीक्षा कर रहा था।

शायद चलना चाहिये?' ओब्लोन्स्की ने कहा।

जंगल में बिल्कुल खामोशी थी और कहीं कोई पक्षी भी हिल-डुल नहीं रहा था।

"कुछ देर और रुकेंगे,' लेविन ने जवाब दिया।

"जैसा चाहो।"

वे अब एक-दूसरे से पन्द्रह कदमों की दूरी पर खड़े थे।

"स्तीवा!" लेविन ने अचानक कहा, "तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि तुम्हारी साली की शादी हो गयी या कब होने जा रही है?"

लेविन अपने को इतना दृढ़ और शान्त अनुभव कर रहा था कि उसे पूरा विश्वास था कि किसी भी जवाब से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। किन्तु ओब्लोन्स्की ने जो जवाब दिया, उसकी तो उसने बिल्कुल उम्मीद नहीं की थी।

"उसका न तो ऐसा इरादा था और न है। हां, वह सख्त बीमार है और डाक्टरों ने उसे इलाज के लिये विदेश भेज दिया है। उसकी तो जान तक ख़तरे में है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो!" लेविन चिल्ला उठा। "सख्त बीमार है? क्या हुआ है उसे? कैसी है ..."

इसी समय, जब ये दोनों बातें कर रहे थे, लास्का ने कान खड़े करके ऊपर आसमान और फिर भर्त्सना से इन दोनों की तरफ़ देखा।

"बातें करने का भी ख़ूब वक़्त चुना है," लास्का सोच रही थी।

बहुत पहले जब [illegible] अधिक [illegible] हुआ था, अब उसने ही पूरा कर लिया था।

"तुम रियाबीनिन से जंगल की बात पूरी तरह तय कर चुके हो?" लेविन ने पूछा।

"हाँ, तय कर चुका हूँ। कीमत बहुत अच्छी मिली है – अड़तीस हजार। आठ पेशगी और बाकी छः साल में। मैं बहुत दिन तक इस चक्कर में पड़ा रहा। कोई भी इससे ज्यादा देने को तैयार नहीं हुआ।"

"मतलब यह कि जंगल मुफ्त दे डाला," लेविन ने उदासी से कहा।

"मुफ्त क्यों?" ओब्लोन्स्की यह जानते हुए कि लेविन को अब सब कुछ बुरा प्रतीत होगा, सौजन्यता से मुस्कराया।

"इसलिये कि जंगल की कम से कम पांच सौ रूबल प्रति देसियातीना कीमत है," लेविन ने जवाब दिया।

"ओह, तुम देहातों में रहनेवाले जमींदार लोग!" ओब्लोन्स्की ने मजाक में कहा। "हम शहर वालों के लिये तुम्हारा तिरस्कारपूर्ण यह अन्दाज! लेकिन जब धंधे की बात होती है, तो हम हमेशा तुम लोगों से बेहतर रहते हैं। यकीन करो, मैंने सभी बातों को ध्यान में रखा है," वह कहता गया, "और जंगल इतनी अच्छी कीमत पर बिका है कि मुझे डर है, वह कहीं इन्कार न कर दे। आखिर वह पक्की लकड़ी का जंगल तो है नहीं," लेविन को यह विश्वास दिलाने की इच्छा से कि उसके सन्देह बिल्कुल अनुचित हैं उसने 'पक्की लकड़ी' शब्दों का उपयोग किया, "बल्कि ज्यादातर तो ईंधन ही है। हर देसियातीना से तीस साजेन* से अधिक लकड़ी नहीं मिलेगी और वह हर देसियातीना के लिये दो सौ रूबल दे रहा है।"

लेविन तिरस्कारपूर्वक मुस्कराया। "जानता हूं मैं," वह सोच रहा था, "केवल इसी का नहीं, सभी शहरियों का ऐसा ही ढंग है। दस सालों में एक-दो बार गांव आते हैं, गांव के दो-तीन शब्द याद कर लेते हैं और इस पक्के विश्वास के साथ कि वे सब कुछ जानते हैं, उनका उचित-अनुचित उपयोग करते हैं। 'पक्की लकड़ी, हर

* साजेन – पुरानी रूसी माप, जो २,१३ मीटर के बराबर है।

मझौली गाड़ी खड़ी थी और उसमें चौड़े पट्टों से कसा मोटा-तगड़ा घोड़ा जुता हुआ था। गाड़ी में रियाबीनिन का पेटी कसा हुआ, लाल-लाल गालों वाला कारिन्दा बैठा था, जो उसका कोचवान भी था। खुद रियाबीनिन घर में जा चुका था और ड्योढ़ी में दोनों मित्रों से मिला। लम्बे कद, दुबले-पतले शरीर, मूछों और सफाचट बड़ी ठोड़ी तथा फूली-फूली, धुधली आखों वाला रियाबीनिन अधेड़ उम्र का आदमी था। वह लम्बा नीला फ्राककोट, जिसके पिछले बटन बहुत नीचे थे, तथा घुटनों तक के बूट पहने था। इन बूटों पर टखनों के पास सिकनें पड़ी हुई थीं और पिंडलियों पर वे सीधे थे। बूटों पर बड़े-बड़े गैलोश चढ़े हुए थे। उसने सारे मुह पर रूमाल फेरकर उसे पोंछा, अपने फ्राककोट को, जो वैसे ही उस पर खूब फिट था, शरीर पर और अच्छी तरह से फिट कर लिया, मुस्कराकर दोनों का स्वागत किया और स्तेपान अर्कादियेविच की ओर ऐसे हाथ बढ़ाया मानों कुछ पकड़ना चाहता हो।

"तो आप आ गये," ओब्लोन्स्की ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा। "बहुत अच्छा किया।"

"हुजूर, बेशक रास्ता तो बहुत खराब है, मगर आपके हुक्म की तामील न करने की जुर्रत कैसे कर सकता था। मुकम्मल तौर पर रास्ते भर पैदल चला, मगर वक्त पर आ पहुचा। कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, आपको नमस्कार करता हू," उसने लेविन का भी हाथ पकड़ पाने की कोशिश करते हुए उसे सम्बोधित किया। किन्तु लेविन ऐसा जाहिर करते हुए कि उसके हाथ की तरफ उसका ध्यान नहीं गया है थैले में से कुनाल निकालने लगा। "तो शिकार का मजा लेने रहे? कौन-सा परिन्दा है यह?" कुनालों की ओर तिरस्कार से देखते हुए उसने अपनी बात जारी रखी। "मजेदार होगा।" और उसने ऐसे नापसन्दगी से सिर हिलाया मानो इस तुच्छ परिन्दे को पकाने के लिये साफ करने में भी कोई तुक हो सकती है।

"मेरे अध्ययन-कक्ष में जाना चाहते हो?" लेविन ने उदासी से नाक-भौंह सिकोड़ते हुए ओब्लोन्स्की से फ्रांसीसी में कहा। "मेरे अध्ययन-कक्ष में चले जाइये वहा आप मामला तय कर सकते हैं।"

"जहा भी चाहे जनाब," रियाबीनिन ने ऐसी तिरस्कारपूर्ण

तौर पर मुनाफ़ा नहीं। आजकल तो सब कुछ मुकम्मल तौर पर ईमान-दारी के मुताबिक होता है, सब कुछ भले ढंग से किया जाता है। चोरी का सवाल ही नहीं उठता। अच्छे लोगों की तरह हमने सब कुछ तय किया है। बात बहुत सस्ते पर तय रहा है, ताकि जी दुखी नहीं होगी। बेशक थोड़ा ही, मगर कुछ जरूर कम कर दीजिये।"

"मामला तय हो चुका या नहीं? अगर तय हो चुका है तो मोलभाव बेकार है, लेकिन अगर तय नहीं हुआ, तो," लेविन ने कहा, "मैं खरीदता हूं जंगल।"

रियाबीनिन के चेहरे से मुस्कान एकदम गायब हो गयी। उसके चेहरे पर बाज जैसा हिंसक और कठोर भाव आ गया। उसने अपनी पतली हड्डियों वाली उंगलियों से फटाफट फ्राककोट के बटन खोले, जिससे उसकी कमीज, वास्कट के तांबे के बटनों और घड़ी की जंजीर की झलक मिली, और उसने जल्दी से पुराना, फूला हुआ बटुआ निकाला।

"जनाब, जंगल मेरा है," जल्दी से सलीब बनाते और हाथ बढ़ाते हुए उसने कहा। "पैसे ले लीजिये, जंगल मेरा है। रियाबीनिन ऐसे धंधा करता है, कोपेक गिनने के फेर में नहीं पड़ता," नाक-भौंह सिकोड़ते और बटुए को लहराते हुए उसने कहा।

"तुम्हारी जगह मैं तो ऐसी जल्दबाजी न की होती," लेविन बोला।

"लेकिन सुनो," ओब्लोन्स्की ने हैरानी से कहा, "मैं तो वचन दे चुका हूं।"

लेविन फटाक से दरवाजा बन्द करके बाहर चला गया। रियाबीनिन ने दरवाजे की तरफ देखते हुए मुस्कराकर सिर हिलाया।

"यह सब जवानी है, मुकम्मल तौर पर बचपना है। ईमानदारी से कहता हूं, सिर्फ इसीलिये, इस नाम की खातिर खरीद रहा हूं कि और किसी ने नहीं, रियाबीनिन ने ही ओब्लोन्स्की का जंगल खरीदा है। रहा नफा तो वह तो भगवान देगा। भगवान पर भरोसा करना चाहिये। लीजिये, मेहरबानी करके करारनामे पर दस्तखत कर दीजिये..."

एक घण्टे बाद व्यापारी रियाबीनिन करारनामे को जेब में डाले हुए ढंग से अपना चोगा लपेटकर, फ्राककोट की हुकें बन्द करके

लोहे से अच्छी तरह मढ़ी हुई अपनी गाड़ी में जा बैठा औ
तरफ रवाना हो गया।

"ओह, ये कुलीन लोग!" उसने अपने कारिन्दे से क
भी खास नमूने ही हैं।"

"सो तो है ही," कारिन्दे ने उसे लगाम थमाते
के पेशबन्द के बटन बन्द करते हुए जवाब दिया। "तो सौ
रहा, मिखाईल इग्नात्येविच?"

"ठीक है, ठीक है "

(१७)

नोटों से फूली हुई जेब के साथ, जो व्यापारी ने उसे
पहले ही दे दिये थे, ओब्लोन्स्की ऊपर गया। जंगल का सौद
था, पैसे जेब में थे, शिकार बहुत अच्छा रहा था और वह
में था। इसीलिये वह खास तौर पर लेविन के उस बुरे मू
करने को इच्छुक था, जो उस पर हावी हो गया था।
था कि रात के खाने के साथ आज का दिन उसी तरह खत्म
जैसे वह शुरू हुआ था।

लेविन सचमुच ही बुरे मूड में था और अपने प्यारे
प्रति बहुत स्नेहशील और मधुर होने की हार्दिक इच्छा
अपने को ऐसा करने के लिये वश में नहीं कर पा रहा था।
का नशा कि कीटी की शादी नहीं हुई उस पर धीरे-धीरे
दिखाने लगा था।

कीटी की शादी नहीं हुई और वह बीमार है, उस
प्रति प्रेम के कारण बीमार है, जिसने उसे ठुकरा दिया। इ
की छाया तो मानो उस पर भी पड़ती थी। व्रोन्स्की ने कीटी
और कीटी ने उसे यानी लेविन को। इसलिये व्रोन्स्की को उसक
करने का अधिकार था और इस कारण वह उसका दुश्मन
लेविन ने यह सब कुछ नहीं सोचा। उसे धुंधला-सा आभा
था कि इस मामले में उसके लिये कुछ अपमानजनक बा

हुआ था। दिमाग में आनेवाली हर बात का ज़हर भुनभुना रहा था। जंगल की मूर्खतापूर्ण बिक्री, ओब्लोन्स्की का इस धोखे का शिकार होना और सो भी उसके घर में, उसे इससे बड़ी खीझ महसूस हो रही थी।

"तो खत्म कर आये?" ओब्लोन्स्की के ऊपर आने पर उसने पूछा। "भोजन करना चाहोगे?"

"हां, इन्कार नहीं करूंगा। गांव में कितनी भूख लगती है मुझे, कमाल है! तुमने रियाबीनिन से खाने को क्यों नहीं कहा?"

"भाड़ में जाये वह!"

"लेकिन कुछ अजीब ही बर्ताव करते हो तुम उसके साथ," ओब्लोन्स्की ने कहा। "तुमने तो उससे हाथ भी नहीं मिलाया। किसलिये तुमने ऐसा किया?"

"इसलिये कि मैं अपने नौकर से हाथ नहीं मिलाता और नौकर उससे सौ गुना बेहतर है।"

"ओह, कितने पुरानपंथी हो तुम! और श्रेणियों का विलय?" ओब्लोन्स्की ने पूछा।

"जिसे अच्छा लगता है, वह करे विलय, मगर मुझे तो नफ़रत है इससे।"

"मैं देख रहा हूं कि तुम बिल्कुल पुरानपंथी हो।"

"वास्तव में मैंने इस पर कभी विचार नहीं किया कि मैं कौन हूं। मैं कोन्स्तान्तीन लेविन हूं, इससे अधिक कुछ नहीं।"

"और वह कोन्स्तान्तीन लेविन, जिसका मूड बहुत खराब है," ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर कहा।

"हां, मेरा मूड खराब है। जानते हो क्यों? तुम मुझे माफ़ करना, जंगल की तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बिक्री के कारण।"

ओब्लोन्स्की ने उस व्यक्ति की भांति, जिसे किसी कसूर के बिना ही अपराधी ठहराया और परेशान किया जा रहा हो, खुशमिज़ाजी से नाक-भौंह सिकोड़ी।

"हटाओ भी!" उसने कहा। "क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी ने कुछ बेचा हो और उसके फ़ौरन बाद ही उससे यह न कहा गया -यह तो कहीं ज़्यादा कीमत का था। लेकिन जब कोई बेच रहा

होता है, तो ज्यादा कीमत देनेवाला सामने नहीं आता मैं देख रहा हू कि उस बदकिस्मत रियाबीनिन के खिलाफ तुम खार खाये बैठे हो।"

"शायद ऐसा ही हो। लेकिन तुम जानते हो कि क्यों? तुम फिर से मेरे लिये पुरानपंथी या इससे भी अधिक किसी बुरे शब्द का उपयोग करोगे। लेकिन फिर भी कुलीनों को जिनका मैं अग हू और श्रेणियों के विलय के बावजूद खुश हू कि उनका अग हू चारों तरफ से खस्ताहाल होते देखकर मुझे दुख होता है मेरे दिल को चोट लगती है। यह खस्ताहाली ऐश-इशरत का नतीजा नहीं है – ऐसा होता तो कोई बात नहीं थी। ठाठ से जीना तो कुलीनों का काम है और वही ऐसा कर सकते है। अब किसान लोग हमारे आस-पास जमीन खरीदते है, मुझे इससे भी कोई दुख नहीं होता। रईस कुछ भी नहीं करता किसान पसीना बहाता है और काहिल को छुट्टी कर देता है। ऐसा ही होना चाहिये। मुझे किसान के लिये बहुत खुशी होती है। लेकिन समझ मे नहीं आता कि कैसे बहू बुद्धूपन के कारण कुलीनों को खस्ताहाल होते देखकर मुझे दुख होता है। यहा पट्टे पर जमीन लेनेवाले एक पोलैंडी ने अब नीस मे रहनेवाली एक रूसी कुलीना से आधी कीमत पर बहुत ही बढ़िया जागीर खरीद ली। यहा किसी व्यापारी को एक रूबल प्रति देसियातीना के हिसाब से जमीन ठेके पर दे दी जाती है जिसके दस रूबल लिये जाने चाहिये। तुमने ही बेमतलब उस बदमाश को तीस हजार रूबल भेट कर दिये।"

"तो तुम क्या चाहते हो? हर वृक्ष को गिना जाये?"

"जरूर गिना जाये। तुमने नहीं गिना, लेकिन रियाबीनिन ने ऐसा किया। रियाबीनिन के बच्चों के पास जीने और पढ़ने-लिखने के साधन होगे, जबकि तुम्हारे बच्चों के पास सम्भवत यह सब नहीं होगा।"

"तुम मुझे माफ करना, लेकिन इस गिनती मे कुछ घटियापन है। हमारे अपने काम है और उनके अपने। उन्हें तो नफा चाहिये खैर, सौदा हो चुका और मामला खत्म। लो, मेरे मनपसन्द तले हुए अडे आ गये। अगाफ्या मिखाइलोव्ना हमे जडी-बूटियों की वह अद्भुत वोडी भी दे देगी "

ओब्लोन्स्की मेज पर जा बैठा और अगाफ्या मिखाइलोव्ना

मजाक करने तथा उसे यह यकीन दिलाने लगा कि दिन और
का इतना बढ़िया खाना उसने एक अर्से से नही खाया।

"आप कम से कम तारीफ तो करते हैं," अगाफ्या मिखाइलो
ने कहा, "मगर कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच को तो चाहे कुछ भी
दो, बेशक रोटी का टुकड़ा ही, खाया और चल दिये।"

लेविन अपने को वश मे करने की बेशक बहुत कोशिश कर
था, मगर उदास और गुमसुम ही बना रहा। वह ओब्लोन्स्की से
सवाल पूछना चाहता था, लेकिन ऐसा कर नही पा रहा था। किस
मे और किस वक्त, कैसे और कब ऐसा करे, उसकी समझ में न
आ रहा था। ओब्लोन्स्की अपने कमरे मे नीचे जा चुका था, क
उतारकर उसने फिर से हाथ-मुह धोया, रात की झालरदार कमी
पहन ली और बिस्तर पर लेट गया। किन्तु लेविन उसके कमरे से ज
का नाम नही ले रहा था, इधर-उधर की बातें कर रहा था और
पूछना चाहता था, उसे पूछने की हिम्मत नही कर पा रहा था।

"कितना बढ़िया बनाते है यह साबुन," साबुन की खुशबूदा
टिकिया का कागज उतारते और उसे गौर से देखते हुए उसने कहा
अगाफ्या मिखाइलोव्ना ने मेहमान के लिये यह टिकिया रखी थी
मगर उसने इसका इस्तेमाल नही किया था। "तुम देखो तो, यह तो
कला-कृति है।"

"हा, आजकल हर चीज को बढ़िया से बढ़िया बनाया जा रहा
है," ओब्लोन्स्की ने नम और आनन्दपूर्ण जम्हाई लेते हुए कहा।
"मिसाल के लिये थियेटर और ये दिल बहलाने की जगहें... आ-
आ-आ!" उसने जम्हाई ली। "हर जगह पर बिजली की रोशनी है...
आ-आ!"

"हा, बिजली की रोशनी," लेविन ने कहा। "हां! और व्रोन्स्की
अब कहां है?" उसने साबुन रखकर अचानक पूछा।

"व्रोन्स्की?" ओब्लोन्स्की ने जम्हाई लेना बन्द करते हुए दोहराया।
"वह पीटर्सबर्ग में है। तुम्हारे जाने के फौरन बाद ही चला गया और
इसके पश्चात एक बार भी मास्को नहीं आया। सुनो कोस्त्या, मैं
तुमसे सच्ची बात कहता हूं," उसने मेज पर कोहनियां और एक हाथ
पर अपना सुन्दर लाल गालोंवाला चेहरा टिकाते हुए, जिसमें आंखें,

ानु और अलसायी आखो की सितारो जैसी चमक आ रही थी, नी बात जारी रखी। "तुम्हारा ही कसूर है। तुम प्रतिद्वन्द्वी से डर ो। लेकिन जैसा कि मैंने तब कहा था, मुझे मालूम नही कि किसकी फलता की अधिक सम्भावना थी। तुमने सीधे टक्कर क्यो नही ली? ने तुमसे तब कहा था कि..." उसने मुह खोले बिना सिर्फ जबडो ही जम्हाई ली।

"इसे मालूम है या नही कि मैंने कीटी से अपने साथ विवाह करने ा प्रस्ताव किया था?" उसने उसकी ओर देखते हुए सोचा। "हा, सके चेहरे पर चालाकी और कूटनीति की झलक है," और यह नुभव करते हुए कि खुद झेप रहा है, उसने चुपचाप सीधे ओब्लोन्स्की ी आखो मे झाका।

"अगर उस वक्त कीटी किसी बात से खिची तो वह सिर्फ शक्ल-सूरत का बाहरी आकर्षण था," ओब्लोन्स्की कहता गया। "उसकी स परिष्कृत रईसी और आगे चलकर ऊचे समाज मे उसके दर्जे का उस पर नही, मा पर असर पडा था।"

लेविन के माथे पर बल पड गये। ठुकराये जाने का अपमान, जिसे उसने सहा था, एक ताजा, अभी-अभी लगे घाव की तरह उसके दिल मे बुरी तरह टीस उठा। इस वक्त वह अपने घर मे था और घर पर तो दीवारे भी आदमी की मदद करती हैं।

"रुको, रुको," उसने ओब्लोन्स्की को टोकते हुए कहा, "तुम रईसी की बात कर रहे हो। तुम मुझे यह पूछने की अनुमति दो कि व्रोन्स्की या किसी अन्य की भी यह रईसी क्या है, जिसके लिये मुझे ठुकराया जाये? तुम व्रोन्स्की को रईस मानते हो, लेकिन मैं नही। यह वह आदमी है, जिसका बाप तिकडमबाजी से ऊपर उठा, उसकी मा की न जाने किस-किसके साथ आशनाई रही ... नही, तुम मुझे माफ करना, लेकिन मैं खुद को और अपने जैसे लोगो को रईस मानता हू, जिनके पीछे उच्चतम शिक्षा वाली (प्रतिभा और समझ-बूझ ये दूसरी चीजे हैं) तीन-चार ईमानदार पीढिया रही है, जिन्होने कभी नीचता से काम नही लिया, कभी किसी के सामने हाथ नही फैलाया, जो मेरे बाप-दादा की तरह रहे। मैं ऐसे बहुत-से लोगो को जानता हू। तुम्हें यह घटियापन लगता है कि मैं जगल के वृक्ष गिनता हू, जबकि

तुमने रियाबीनिन को तीस हज़ार रूबल भेंट कर दिये। लेकिन मु
लगान और इसके अलावा जाने क्या-क्या मिलता है, जो मुझे न
मिलता। इसलिये मैं उसे सहेजता हूं, जो मुझे बाप-दादों या अ
मेहनत से मिला है... हम रईस हैं, वे नहीं, जो बड़े लोगों के टु
पर पलते हैं या जिन्हें दो टके देकर ख़रीदा जा सकता है।"

"किस पर बरस रहे हो तुम? मैं तुम्हारे साथ सहमत हूं,
ओब्लोन्स्की ने निश्छलता और खुशी से कहा, यद्यपि वह यह अनुभ
कर रहा था कि जिन्हें दो टके में ख़रीदा जा सकता है, लेविन उन
उसकी गिनती भी कर रहा है। लेविन का ऐसे भड़क उठना उसे सचमु
ही अच्छा लग रहा था। "किस पर बरस रहे हो तुम? यह सच
कि व्रोन्स्की के बारे में तुम जो कह रहे हो, उसमें बहुत कुछ सही नहीं
है। लेकिन मैं इस वक़्त उसकी चर्चा नहीं कर रहा हूं। तुमसे साफ़
कहता हूं कि तुम्हारी जगह मैं फिर मास्को चला गया होता..."

"नहीं, मुझे मालूम नहीं कि तुम जानते हो या नहीं जानते हो,
लेकिन मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मैं तुम्हें बताता हूं कि मैं
विवाह का प्रस्ताव कर चुका हूं और उसे ठुकराया जा चुका है। येकाते-
रीना अलेक्सान्द्रोव्ना अब मेरे लिये एक बोझिल और लज्जाजनक
स्मृति ही रह गयी है।"

"वह किसलिये? कैसी बेतुकी बात है!"

"लेकिन हम इस मामले पर और बातचीत नहीं करेंगे। अगर
मैं तुम्हारे साथ बदतमीज़ी से पेश आया हूं, तो माफ़ करना," लेविन
ने कहा। अब सब कुछ कहने के बाद वह फिर वैसा ही हो गया था,
जैसा कि सुबह के वक़्त था। "तुम मुझसे नाराज़ तो नहीं हो न,
स्तीवा? कृपया नाराज़ नहीं होना," उसने कहा और मुस्कराकर
उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"अरे नहीं, ज़रा भी नाराज़ नहीं, और फिर उसका कोई कारण
भी तो नहीं। मैं खुश हूं कि हमने बात साफ़ कर ली। सुनो, सुबह
के वक़्त शिकार करना अच्छा रहता है। कैसा रहे, अगर हम सुबह
ही चलें? मैं तो घर भी उसके बाद नहीं जाऊंगा और शिकार से सीधे
ही स्टेशन को चल दूंगा।"

"बहुत खूब।"

बारे में "मुचरित्रा" का विशेषण मुनते-मुनते कभी की तग आ चुकी थीं, इसलिये खुश थीं कि उनके अनुमान सही निकले थे और इसी बात का इन्तजार कर रही थी कि आन्ना के बारे में लोगों की राय बदले और तब वे अपनी पूरी घृणा से उस पर टूट पड़ेंगी। उन्होंने तो कीचड़ के ऐसे गोले भी तैयार कर लिये थे, जो वक़्त आने पर वे उस पर फेंकेंगी। अधिकतर बुजुर्ग और ऊंचे रुतबों वाले लोग निकट भविष्य में हो सकनेवाले इस लज्जापूर्ण हंगामे के कारण नाखुश थे।

व्रोन्स्की की मा इस सम्बन्ध के बारे में जानकारी पाकर शुरू में तो खुश हुई। वह इसलिये कि उसके मतानुसार ऊंचे समाज में ऐसे प्रेम-सम्बन्ध से बढ़कर कोई भी चीज़ बढ़िया नौजवान को इतना अच्छा अन्तिम निखार प्रदान नहीं करती, और इस कारण भी कि उसको इतनी अच्छी लगने और अपने बेटे की इतनी ज्यादा चर्चा करनेवाली आन्ना भी आखिर सभी सुन्दर तथा, उसकी धारणा के अनुसार, ढंग की औरतों जैसी थी। किन्तु पिछले कुछ समय में उसे यह पता चला था कि बेटे ने उसकी भावी प्रगति के लिये बहुत महत्व रखनेवाली नौकरी से केवल इसलिये इन्कार कर दिया है कि वह रेजिमेन्ट में ही बना रहे, जिसकी बदौलत वह आन्ना से मिल-जुल सकता था, कि इस कारण ऊंचे अधिकारी उससे नाखुश हैं और इसलिये उसने अपनी राय बदल ली। उसे यह भी अच्छा नहीं लगा कि इस सम्बन्ध के बारे में प्राप्त सारी जानकारी के अनुसार यह बहुत बढ़िया और शानदार सोसाइटी वाला वह सम्बन्ध नहीं था, जिसका उसने अनुमोदन किया होता, बल्कि बहुत ही भावुकतापूर्ण तथा दीवानों जैसा लगाव था, जो, जैसा कि उसे बताया गया था, उसके बेटे से कोई मूर्खता करवा सकता था। व्रोन्स्की के मास्को से अचानक चले जाने के बाद से उसकी उससे मुलाकात नहीं हुई थी और इसलिये उसने अपने बड़े बेटे के ज़रिये उससे यह मांग की कि वह उसके पास आये।

बड़ा भाई भी छोटे से नाखुश था। उसे इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि यह किस तरह का प्यार था – बड़ा या छोटा, बहुत तीव्र या कम तीव्र, पक्का या कच्चा (बच्चों का बाप होते हुए उसकी एक नर्तकी रखैल थी और इसलिये वह इस मामले में नर्मदिल था), लेकिन इतना जानता था कि यह प्यार उन लोगों को पसन्द नहीं है,

तरह वह यह मालूम करे। पिछली बार वह अपनी चचेरी बहन बेत्सी के देहातवाले बंगले पर आन्ना से मिला था। कारेनिन परिवार के बंगले पर वह यथासम्भव बहुत कम जाता था। अब वह वहा जाना चाहता था और इस सवाल पर गौर कर रहा था कि किस तरह ऐसा करे।

"जाहिर है मैं यह कह सकता हू कि बेत्सी ने मुझे यह जानने के लिये भेजा है कि वह घुड़दौड़ मे आयेगी या नहीं। हा, तो मैं जाऊगा" उसने पुस्तक से नजर ऊपर उठाते हुए मन ही मन तय कर लिया। उससे मिलने की खुशी की सजीव कल्पना से उसका चेहरा खिल उठा।

"किसी को मेरे घर यह कहने को भेज दो कि जल्दी से त्रोइका घोड़ा-गाड़ी तैयार कर दी जाये" उसने चादी की गर्म तश्तरी मे बीफस्टीक लानेवाले बैरे से कहा और तश्तरी को अपनी तरफ खीचकर खाने लगा।

बगल के बिलियार्डवाले कमरे मे गेंदो के टकराने की आवाजे, बातचीत और ठहाके सुनाई दे रहे थे। भीतर आने के दरवाजे पर दो अफसर दिखाई दिये – एक तो नौउम्र, कमजोर और पतले चेहरेवाला था तथा कुछ ही समय पहले शाही सैनिक स्कूल से उनकी रेजिमेन्ट मे आया था, दूसरा हाथ मे कगन पहने छोटी-छोटी फूली आखो और गदराये जिस्म वाला बुजुर्ग अफसर था।

व्रोन्स्की ने उन पर नजर डाली, नाक-भौह सिकोडी और ऐसा जाहिर करते हुए मानो उन्हे देखा ही न हो, कनखी से पुस्तक पर नजर टिकाकर एकसाथ ही खाने और पढने लगा।

"कहो? काम के लिये अपने को मजबूत कर रहे हो?" गदराये अफसर ने उसके पास बैठते हुए पूछा।

"देख ही रहे हो," व्रोन्स्की ने माथे पर बल डालते और मुह पोछते हुए तथा उसकी तरफ देखे बिना जवाब दिया।

"मोटा होने से नही डरते?" नौउम्र अफसर के लिये कुर्सी को बढ़ाते हुए उसने पूछा।

"क्या?" व्रोन्स्की ने नापसन्दगी से मुह बनाते और अपने मजबूत दात दिखाते हुए गुस्से से कहा।

"मोटा होने से नही डरते?"

जुआरी, लपट और न सिर्फ़ उसूलों के बिना, बल्कि अनैतिक उसूलोंवाला याश्विन रेजिमेन्ट में व्रोन्स्की का सबसे अच्छा दोस्त था। व्रोन्स्की उसे उसकी असाधारण शारीरिक शक्ति के लिये, जो वह अक्सर पीपे-भर शराब पीने, सोये बिना ताज़ादम बने रहने के रूप में प्रकट करता था, नैतिक शक्ति के लिये, जो अपने अफ़सरों और साथियों के सामने भी दिखाता था और जिससे उसके प्रति भय और आदर पैदा होता था, तथा जिसे जुआ खेलते हुए भी ज़ाहिर करता था, जहां हज़ारों की बाज़ी लगाता था और बेहद पी लेने के बावजूद इतनी दक्षता तथा बारीकी से खेलता था कि अंग्रेज़ी क्लब का सबसे अच्छा खिलाड़ी माना जाता था, पसन्द करता था। व्रोन्स्की ख़ास तौर पर तो याश्विन को इसलिये पसन्द तथा उसका आदर करता था कि वह उसे उसके नाम तथा दौलत के लिये नहीं, बल्कि खुद उसी के रूप में चाहता था। अपनी जान-पहचान के सभी लोगों में से व्रोन्स्की केवल उसी के साथ अपने प्यार की चर्चा करना चाहता था। वह महसूस करता था कि ऐसा प्रतीत होने के बावजूद कि याश्विन किसी भी तरह की भावना को तिरस्कार की दृष्टि से देखता है, वही एक ऐसा व्यक्ति है, जो अब उसके समूचे जीवन पर छा जानेवाली तीव्र अनुराग-भावना को समझ सकता है। इसके अलावा उसे इस बात का भी पूरा यक़ीन था कि याश्विन अफ़वाहें फैलाने और बदनामी करने के काम में कोई दिलचस्पी नहीं लेता, बल्कि इस भावना को वैसे ही समझता है, जैसे समझना चाहिए, यानी यह जानता और विश्वास करता है कि मुहब्बत कोई मज़ाक या मनबहलाव न होकर कहीं अधिक गम्भीर तथा महत्त्वपूर्ण चीज़ है।

व्रोन्स्की ने उसके साथ अपने प्यार की चर्चा नहीं की, लेकिन उसे मालूम था कि याश्विन सब कुछ जानता है और सब कुछ वैसे ही समझता है, जैसे समझना चाहिए और उसकी आंखों में ही यह पढ़कर उसे खुशी हुई।

"अरे, हां!" उसने इस बात के जवाब में कहा कि व्रोन्स्की त्वेर्स्कोय के पास बैठा रहा था, और बायीं मूंछ को पकड़कर अपनी बुरी आदत के मुताबिक बायीं मूंछ को मुंह में ठूंसने लगा।

"और तुमने कल शाम को क्या किया? कैसे जीते?"
ा पूछा।

"आठ हजार। तीन हजार तो कच्चे है, जिनके मिलने
कम उम्मीद है।"

"तो अब तुम मुझ पर हार सकते हो," व्रोन्स्की ने
कहा। (याश्विन ने उस पर बडी रकम की शर्त लगा रखी
"किसी हालत मे भी नही हारूगा। सिर्फ मखोतिन से ख

बातचीत अपने आप ही आज होनेवाली घुड़दौड की
गयी। व्रोन्स्की अब केवल उसी के बारे मे सोच सकता था।

"आओ चले, मैं खाना खत्म कर चुका हू," व्रोन्स्की
और उठकर दरवाजे की तरफ बढ गया। अपनी लम्बी
लम्बी पीठ को सीधे करते हुए याश्विन भी उठकर खडा

"मेरा खाने का वक्त तो अभी नही हुआ, मगर कुछ
चाहिये। मैं अभी आता हू! शराब लाओ!" उसने परेड
मे मशहूर अपनी उस जोरदार आवाज मे बैरे को पुका
खिडकियो के शीशे काप उठते थे। "नही रहने दो,"
वक्त फिर से ऊची आवाज मे कहा। "तुम घर जा रहे
भी तुम्हारे साथ चलता हू।"

और वे दोनो चल दिये।

(२०)

व्रोन्स्की फिन्नी ढग के एक बडे और साफ-सुथरे झो
था। झोपडे को बीच मे दीवार डालकर दो भागो मे वि
दिया गया था। पेत्रीत्स्की शिविरो मे भी व्रोन्स्की के सा
था। व्रोन्स्की और याश्विन जब झोपडे मे आये, तो
रहा था।

"उठो, बहुत सो लिये," याश्विन ने बीच की दी

पेत्रीत्स्की अचानक उछलकर घुटनों के बल हो गया और उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई।

"तुम्हारा भाई यहा आया था," उसने व्रोन्स्की से कहा। "मुझे ा दिया, शैतान उसका बुरा करे, और कह गया है कि फिर आयेगा।" ने फिर से कम्बल अपने ऊपर खीचा और तकिये पर जा गिरा। "परेशान नही करो, याश्विन," उसने याश्विन पर झल्लाते हुए कहा, जो उसका कम्बल खीच रहा था। "ऐसे नही करो!" वह घूमा और उसने आखे खोली "बेहतर होगा, तुम यह बताओ कि मैं क्या पिऊ, मुह का जायका इतना बिगडा-बिगडा-सा है कि "

"वोद्का सबसे अच्छी चीज है" याश्विन ने जोरदार आवाज मे कहा। "तेरेश्चेन्को! अपने साहब के लिये वोद्का और खीरे लाओ," उसने चिल्लाकर कहा। स्पष्टत उसे अपनी आवाज सुनना अच्छा लगता था।

"तुम्हारे ख्याल मे वोद्का ही? वही ठीक रहेगी क्या?" पेत्रीत्स्की ने बुरा-सा मुह बनाते और आखे मलते हुए पूछा। "तुम भी पियोगे न? तो एक साथ पियेंगे! व्रोन्स्की, तुम भी पियोगे?" पेत्रीत्स्की ने उठने और बगलो के नीचे से चीते की खाल के कम्बल मे अपने को लपेटते हुए कहा।

वह बीच की दीवार के दरवाजे मे बाहर निकला, उसने हाथ ऊपर उठाये और फ़ासीसी मे गाने लगा "एक बादशाह था तू-ऊ-ऊ-ले मे। व्रोन्स्की, पियोगे?"

"भागो यहा से," व्रोन्स्की ने नौकर द्वारा दिया गया फ़ाककोट पहनते हुए कहा।

"किधर चल दिये?" याश्विन ने व्रोन्स्की से पूछा। "लो, वोद्का भी आ गयी," उसने झोपडे के करीब आती तीन घोड़ो वाली बग्घी को देखकर कहा।

"अस्तबल को। इसके अलावा मुझे घोडो के सिलसिले मे ब्रियान्स्की के यहा भी जाना है" व्रोन्स्की ने कहा।

व्रोन्स्की ने सचमुच ब्रियान्स्की के यहा जाने और उसे घोड़े की कीमत चुकाने का वादा किया था। ब्रियान्स्की पीटरहोफ़ से कोई पन्द्रह किलोमीटर दूर रहता था और व्रोन्स्की चाहता था कि वहा हो आये।

अपना टोप ऊपर उठाते हुए उसने इतना और जोड दिया। "मैंने उसे मुहबन्द पहना दिया है और वह बेचैन है। वहा न जाना ही अच्छा होगा, इससे घोडी परेशान होती है।"

"नही, मैं तो जाऊंगा। मैं उसे देखना चाहता हू।"

"तो चलिये," पहले की तरह मुह खोले बिना तथा नाक-भौंह सिकोडकर अग्रेज़ ने कहा और कोहनिया भुलाता हुआ अपनी ढीली-ढाली चाल मे आगे-आगे चल दिया।

वे बैरक के सामने छोटे से अहाते में पहुचे। साफ-सुथरी जाकेट पहने सजा-धजा नौजवान, जो यहा ड्यूटी पर था, हाथ मे झाडू लिये इनसे मिला और इनके पीछे-पीछे हो लिया। बैरक मे पाच घोडे अपने अलग-अलग स्टाल मे खडे थे। व्रोन्स्की को मालूम था कि उसके मुख्य प्रतिद्वन्द्वी मखोतिन का ऊचा लाल घोडा ग्लादियातर भी आज यही लाया जानेवाला था और यही खडा है। व्रोन्स्की अपनी घोडी से भी कही ज्यादा ग्लादियातर को देखना चाहता था, जिसे उसने नही देखा था। किन्तु व्रोन्स्की जानता था कि घुडदौड की शिष्टता के नियमो के अनुसार उसे उस घोडे को न केवल देखना ही नही चाहिये, बल्कि उसके बारे मे पूछ-ताछ करना भी अनुचित है। जिस वक्त वह बैरक के गलियारे में से जा रहा था, उस वक्त लडके ने बायी ओर के दूसरे स्टाल का दरवाजा खोला और व्रोन्स्की को सफेद टागो वाले लाल रग के तगडे घोडे की झलक मिली। उसे मालूम था कि यह ग्लादियातर है, लेकिन किसी का खुला हुआ पत्र सामने पडा देखकर मुह मोड लेनेवाले व्यक्ति जैसी भावना के साथ उसने मुह फेर लिया और फ्रू-फ्रू के स्टाल के पास गया।

"यहा घोडा है माक... माक... का... कभी यह नाम नही बोल पाता," अग्रेज ट्रेनर ने गन्दे नाखूनवाली लम्बी उगली से ग्लादियातर के स्टाल की ओर सकेत करते हुए कधे के ऊपर से कहा।

"मखोतिन? हा, वही मेरा एक गम्भीर प्रतिद्वन्द्वी है," व्रोन्स्की ने कहा।

"अगर आप इस घोडे पर दौड मे हिस्सा लेते होते," अग्रेज ने कहा, "तो मैं पूरी तरह आपके पक्ष मे होता।"

"फ्रू-फ्रू ज्यादा तेज मिजाज है और वह ज्यादा ताकतवर,"

अपनी घुड़सवारी की प्रशंसा सुनकर व्रोन्स्की ने मुस्कराते हुए कहा।

"बाधाओंवाली घुड़दौड़ में सब कुछ अच्छी घुड़सवारी और pluck पर निर्भर करता है," अंग्रेज ने कहा।

जहां तक pluck, यानी जोश और दिलेरी का सम्बन्ध था तो उनका तो व्रोन्स्की न केवल पर्याप्त मात्रा में अनुभव करता था बल्कि जो और भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण था, उसे इस बात का भी पक्का यकीन था कि दुनिया में उससे बढ़कर pluck और किसी में नहीं हो सकता था।

"आपको पूरा यकीन है कि इसे और ज्यादा अभ्यास कराने की जरूरत नहीं थी?"

"हां, नहीं थी," अंग्रेज ने जवाब दिया। "कृपया ऊंचे नहीं बोलिये। घोड़ी घबरायी हुई है," उसने बन्द स्टाल की तरफ, जिसके सामने वे खड़े थे और जहां से फूस पर पांव बदलने की आवाज आ रही थी, इशारा करते हुए इतना और कह दिया।

उसने दरवाजा खोला और व्रोन्स्की स्टाल में गया, जहां एक छोटे-से झरोखे से छननेवाली मद्धिम-सी रोशनी थी। स्टाल में ताजा फूस पर पांव बदलती हुई काली घोड़ी खड़ी थी, जिसकी थूथनी पर मुहबन्द चढ़ा हुआ था। स्टाल की धुंधली रोशनी का अभ्यस्त हो जाने पर व्रोन्स्की ने एक ही नजर में अपनी प्यारी घोड़ी की सारी सुन्दरता को एक बार फिर अनुभव कर लिया। फ़ू-फ़ू मझोले कद की थी और आकृति के लक्षणों की दृष्टि से पूरी तरह दोषहीन नहीं थी। वह पूरी की पूरी कम चौड़ी काठी की थी। यद्यपि उसकी छाती की हड्डी आगे की ओर काफी उभरी हुई थी फिर भी छाती चौड़ी नहीं थी। पीछे का भाग कुछ झुका हुआ था और आगे की, तथा खास तौर पर पीछे की टांगों में काफी टेढ़ापन था। उसकी अगली और पिछली टांगों की मांस-पेशियां विशेषतः बड़ी नहीं थीं, लेकिन दूसरी तरफ जीनवाले स्थान पर उसकी पीठ असाधारण रूप में चौड़ी थी और यह चीज उसके कड़े अभ्यास तथा पेट के बहुत पतले हो जाने से अब खास तौर पर हैरान करती थी। घुटनों से नीचे उसकी टांगों की हड्डियां सामने से देखने पर उंगली से ज्यादा मोटी नहीं लगती थीं, लेकिन बगल से देखने पर असाधारण रूप से चौड़ी थीं। पसलियों को छोड़कर वह अगल-बगल से मानो दबा दी गयी थी और लम्बाई में फैला दी गयी

थी। किन्तु उसमे एक बहुत बड़ा गुण था, जो उसकी सभी त्रु
को भुला जाने को विवश करता था। वह गुण था उसका खून,
अंग्रेजी भाषा की एक कहावत के अनुसार अपना रंग दिखाता
पतली, गतिशील और मखमल की तरह चिकनी त्वचा में फैली
शिराओं के जाल के नीचे से साफ नजर आनेवाली मास-पेशिया
उसकी हड्डियों की तरह ही मजबूत प्रतीत होती थीं। फूली-फू
चमकती और खुशीभरी आखो सहित उसका पतला-सा सिर थूथनी
पास आकर आगे को बढ़ी हुई नासिकाओं के रूप मे जिनके भी
लाल झिल्लिया थी, चौड़ा हो गया था। घोडी की पूरी आकृ
विशेषत उसके सिर की बनावट मे एक निश्चित उत्साह और
ही कोमलता लक्षित होती थी। वह उन पशुओ मे से थी, जो
लगता है, केवल इसीलिये नही बोलते कि उनके मुह की रचना
ऐसा नही करने देती।

कम से कम व्रोन्स्की को तो ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने वह
कुछ समझ लिया, जो उसे देखते हुए वह इस वक्त अनुभव कर रहा

व्रोन्स्की ज्यो ही स्टाल मे दाखिल हुआ घोडी ने गहरी सास
और अपनी फूली-सी आख को कनखी से ऐसे घुमाया कि उसमे स
की जगह लाली आ गयी तथा मुहबन्द को झटकते और लचीले
से पाव बदलते हुए उसने दूसरी दिशा मे भीतर आनेवालो को
देखा।

"देख रहे हैं न, कितनी उत्तेजित है घोडी" अंग्रेज ने क

"ओ, मेरी प्यारी, ओ!" व्रोन्स्की ने घोडी के पास जाते
उसे तसल्ली देते हुए कहा।

किन्तु व्रोन्स्की उसके जितना अधिक निकट जा रहा था,
उतनी ही ज्यादा उत्तेजित होती जा रही थी। हा जब वह उ
सिर के नजदीक पहुच गया, तो घोडी अचानक शान्त हो गयी
उसकी पतली तथा कोमल चमडी के नीचे उसकी मास-पेशिया
उठी। व्रोन्स्की ने उसकी मजबूत गर्दन सहलायी, दूसरी ओर को वि
हुई अयालो की एक लट को ठीक किया और चमगादड के पखो
पतले, फैले हुए नथुनो वाली थूथनी की ओर अपना मुह किया। घो
ने तने हुए नथुनो से आवाज निकालते हुए गहरी सास ली और छो

सिहर कर नुकीले कान को दबाया और अपने मज़बूत काले होंठ को व्रोन्स्की की तरफ़ ऐसे बढ़ाया मानो उसकी आस्तीन पकड़ना चाहती हो। किन्तु मुहबन्द का ध्यान आने पर उसने उसे झटका और फिर से अपनी सुघड टांगो को बदलने लगी।

"शान्त हो जाओ, मेरी प्यारी, शान्त हो जाओ!" उसने घोडी के पुट्ठे को फिर सहलाते हुए कहा और इस सुखद चेतना के साथ कि घोडी बहुत अच्छी हालत मे है, स्टाल से बाहर आ गया।

घोड़ी की उत्तेजना ने व्रोन्स्की को भी प्रभावित कर दिया। उसने अनुभव किया कि उसके दिल की धड़कन तेज़ हो गयी है और घोडी की भांति वह भी हिलना-डुलना, किसी को काटना चाहता है। उसे इससे खुशी भी अनुभव हो रही थी और डर भी।

"तो मैं आप पर भरोसा करता हू," उसने अंग्रेज से कहा। "साढे छ. बजे वहा पहुच जाइये।"

"बिल्कुल इतमीनान रखिये," अंग्रेज़ ने कहा। "लेकिन आप कहा जा रहे हैं, मी लार्ड?" उसने अचानक my-Lord का यह सम्बोधन इस्तेमाल करते हुए, जैसा कि वह लगभग कभी नही करता था, पूछा।

व्रोन्स्की ने हैरानी मे सिर ऊपर उठाया और उसके सवाल की दिलेरी से चकित होते हुए ऐसे, जैसे कि वह देखना जानता था, उसकी आखो मे न देखकर माथे पर नज़र डाली। किन्तु यह समझकर कि उसने मालिक से नहीं, बल्कि घुड-सवार व्रोन्स्की से यह सवाल पूछा है, उत्तर दिया

"मुझे ब्रियान्स्की के यहा कुछ काम है। एक घण्टे बाद मैं घर पहुच जाऊगा।"

"कितनी बार मुझसे आज यह सवाल पूछा गया है!" उसने अपने आपसे कहा और शर्मा गया, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था। अंग्रेज़ ने उसे बहुत ग़ौर से देखा और मानो यह जानते हुए कि व्रोन्स्की कहा जा रहा है, उसने इतना और जोड दिया

"घुड़दौड से पहले शान्तचित्त होना तो सबसे ज़रूरी बात है," उसने कहा। "आपको किसी भी हालत मे परेशान और बुरे मूड मे नही होना चाहिये।"

"All right,"
मे बैठकर
बग्घी कुछ ही
धमकी दे रहे थे
यह कुछ
सोना। यों ही
हो जायेगा। उ
भाई का सदका नि
हां यह सब
मां उसका भाई
देना जरूरी समझ
था – गुस्से की इस
था। "उन्हें क्या
करना अपना कर्तव्
इसलिये कि वे देख
के बाहर है। अग
होना, तो वे मुझे
दूसरी ही बात है,
भी ज्यादा प्यारी
उन्हें झल्लाहट होती
भाग्य, हमने खुद
करते हैं," वह अप
को अपने साथ जो
जरूरी है कि हमें
कल्पना तक नहीं
हमारे लिये न सुख
रहा था।
व्रोन्स्की को इस
आत्मा में वह अनु
अनुभव करता था
वह क्षणिक आकर्षण

व्रोन्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया और बग्घी
चलने को कहा।
हुए गयी थी कि बादल, जो सुबह से ही बरसने की
ट पड़े और मूसलधार बारिश शुरू हो गयी।
था!" बग्घी का हुड ऊपर करते हुए व्रोन्स्की ने
कीचड़ था और अब तो बिल्कुल दलदल जैसा हाल
बग्घी में अकेले बैठे हुए उसने मां का खत और
ला तथा उन्हें पढ़ा।
कुछ वही था, उसी मामले के बारे में था। उसकी
सभी उसके दिल से सम्बन्धित मामलों में दखल
थे। उनकी इस दखलदाजी से उसे गुस्सा आता
भावना को वह बहुत कम ही महसूस किया करता
मतलब है इस मामले में? क्यों हर कोई मेरी चिन्ता
मानता है? किसलिये मेरे पीछे पड़ते हैं ये सब?
है कि यह कुछ ऐसा मामला है, जो उनकी समझ
यह ऊंचे समाज का तुच्छ और साधारण सम्बन्ध
परेशान न करते। वे अनुभव करते हैं कि यह कुछ
कि यह खिलवाड़ नहीं, कि यह औरत मुझे जान से
है। यही उनकी समझ में नहीं आता और इसीलिये
है। चाहे जैसा भी है, और जैसा भी होगा हमारा
से बनाया है और हम उसकी कोई शिकायत नहीं
ने आपसे कह रहा था। "हम" शब्द से उसने आन्ना
लिया था। "नहीं, उनके लिये हमें यह सिखाना
से जीना चाहिये। सुख क्या होता है, वे तो इसकी
र सकते। वे नहीं जानते कि इस प्यार के बिना
है, न दुख है–जिन्दगी ही नहीं है," वह सोच

दखलदाजी पर इसलिये खीझ आती थी कि अपनी
भव करता था कि ये, सभी लोग, सही थे। वह
कि आन्ना के साथ उसे जोड़नेवाला प्यार
नहीं था, जो वैसे ही समाप्त हो जायेगा, जैसे

किसी भी तरह की भूल के बिना यह जवाब दे सकती थी – एक ही चीज के बारे में – अपने सुख और अपने दुख के बारे में। व्रोन्स्की के आने के समय वह सोच रही थी कि क्यों दूसरे लोगों के लिये, मसलन बेत्सी के लिये (आन्ना ऊंचे समाज की नज़र से छिपे हुए तुश्केविच के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में जानती थी) यह सब कुछ इतना *आसान था, जबकि उसके लिये इतना यातनाप्रद?* कुछ कारणों से यह विचार आज उसे खास तौर पर यातना दे रहा था। आन्ना ने उससे घुड़दौड़ों के बारे में पूछा। व्रोन्स्की ने उसे जवाब दिया और यह देखते हुए कि आन्ना परेशान है, उसका ध्यान बटाने के लिये वह बहुत ही साधारण अन्दाज़ में उसे घुड़दौड़ की तैयारियों के बारे में बताने लगा।

"बताऊं या न बताऊं?" व्रोन्स्की की शान्त और प्यार भरी आंखों में झांकते हुए वह सोच रही थी। "वह इतना खुश है, अपनी घुड़दौड़ों में इतना व्यस्त है कि इस बात को जैसे समझना चाहिये, नहीं समझेगा, हमारे लिये इस घटना के पूरे महत्त्व को नहीं समझ पायेगा।"

"लेकिन आपने यह नहीं बताया कि जब मैं आया, तो आप किस बारे में सोच रही थीं," अपनी बात को अधूरी छोड़ते हुए उसने कहा, "कृपया, बताइये!"

आन्ना ने जवाब नहीं दिया और थोड़ा सिर झुकाकर तथा भौंह चढ़ाकर लम्बी-लम्बी बरौनियों के पीछे चमकती आंखों से उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। तोड़े हुए पत्ते से खिलवाड़ करता हुआ उसका हाथ कांप रहा था। व्रोन्स्की ने यह देखा और उसके चेहरे पर आज्ञाकारिता, दासतापूर्ण अनुराग का वह भाव आ गया था, जो आन्ना को मुग्ध कर लेता था।

"मैं देख रहा हूं कि कोई बात हो गयी है। यह जानते हुए कि आप किसी ऐसी मुसीबत में हैं, जिसका मैं भागीदार नहीं हूं, क्या मैं क्षण भर को भी चैन अनुभव कर सकता हूं? भगवान के लिये बताइये!" उसने मिन्नत करते हुए दोहराया।

"हां, अगर वह इस बात के पूरे महत्त्व को नहीं समझेगा, तो मैं इसे क्षमा नहीं कर सकूंगी। न बताना ही बेहतर होगा, फिर क्यों

वह अब शान्त हो चुकी थी और उसके चेहरे पर स्निग्ध मुस्कान की चमक थी।

"पति को छोड़ दो और हम दोनों बन्धन में बंध जायें।"

"हम तो वैसे ही बंधे हुए हैं," मुश्किल से सुनाई देनेवाली धीमी आवाज में उसने जवाब दिया।

"हां, लेकिन पूरी तरह, बिल्कुल पूरी तरह।"

"मगर अलेक्सेई, यह बताओ कि कैसे?" अपनी स्थिति की लाचारी पर उदासी भरी व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ उसने कहा। "क्या ऐसी परिस्थिति में भी कोई रास्ता है? क्या मैं अपने पति की पत्नी नहीं हूं?"

"हर परिस्थिति से निकलने का कोई न कोई रास्ता होता है। हमें निर्णय करना चाहिये," उसने कहा। "उस परिस्थिति से, जिसमें तुम जी रही हो, सभी कुछ बेहतर होगा। क्या मैं यह नहीं देख रहा हूं कि कैसे तुम सभी बातों के बारे में, ऊंचे समाज, बेटे और पति के सिलसिले में यातना सह रही हो?"

"आह, पति के बारे में नहीं," उसने सरल मुस्कान के साथ कहा। "मैं उसे नहीं जानती, मैं उसके बारे में नहीं सोचती। मेरे लिये उसका अस्तित्व ही नहीं है।"

"तुम दिल की बात नहीं कह रही हो। मैं तुम्हें जानता हूं। तुम उसके बारे में भी यातना सहती हो।"

"वह तो कुछ जानता ही नहीं," उसने कहा और अचानक उसके चेहरे पर गहरी सुर्खी छाने लगी—उसके गालों, माथे और गर्दन पर। आंखों में शर्म के आंसू छलछला आये। "हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे।"

(२३)

[illegible] कई बार [illegible] था, यद्यपि इस समय [illegible] कि [illegible] को अपनी [illegible] पर विचार करने को [illegible] करता रहा था [illegible] उसकी [illegible] के जवाब में उसने [illegible] उसने अपना कुछ [illegible] था, फिर वह बातें

होगा। वह इन्सान नहीं, मशीन है, और जब गुस्से में हो, तो क्रूर मशीन है." उसने कारेनिन की आकृति, बातचीत के ढंग और स्वभाव की सभी तफसीलों को याद करके और उसमें जो कुछ भी बुरा मिल सकता था, उसके मत्थे मढ़कर तथा उसके सम्मुख अपने भयानक अपराध के लिये उसे कुछ भी क्षमा न करते हुए उक्त शब्द और जोड़ दिये।

'लेकिन आन्ना,' व्रोन्स्की ने उसे शान्त करते हुए आग्रहपूर्ण और कोमल आवाज में कहा, "फिर भी उसे बताना और वह जो कदम उठायेगा उसके मुताबिक कुछ करना होगा।"

"तो क्या भाग चलें?"

"क्यों न भागा जाये? मैं ऐसी स्थिति को बनाये रखना सम्भव नहीं समझता। सो भी सवाल मेरा नहीं है – मैं देख रहा हूं कि आप यातना सहती हैं।"

"हां, भाग जायें और मैं आपकी रखैल बन जाऊं?" उसने द्वेषपूर्वक कहा।

"आन्ना!" व्रोन्स्की ने प्यार से उसकी भर्त्सना की।

"हां," वह कहती गयी, "आपकी रखैल बन जाऊं और सब कुछ तबाह कर डालूं..."

आन्ना ने फिर से "बेटा" कहना चाहा, मगर यह शब्द उसके मुंह से निकल नहीं सका।

व्रोन्स्की यह नहीं समझ पा रहा था कि अपने इतने दृढ़ और निष्कपट स्वभाव के बावजूद वह छल-फरेब की इस स्थिति को कैसे बर्दाश्त कर सकती थी और इससे मुक्त नहीं होना चाहती थी। लेकिन वह यह नहीं भांप सका कि इसका मुख्य कारण वह "बेटा" शब्द था जिसे आन्ना कह नहीं पाती थी। जब वह बेटे और उसके बाप को छोड़ देनेवाली मां के प्रति उसके भावी रुख के बारे में सोचती थी, तो अपने किये के लिये उसे इतना डर महसूस होता था कि वह विचार करने के बजाय नारी की भांति अपने को झूठे तर्कों और शब्दों से ढाढ़स बंधाने की कोशिश करती कि सभी कुछ पहले की तरह ही बना रहे और इस भयानक प्रश्न को भुलाया जा सके कि बेटे का क्या होगा।

"मैं तुमसे अनुरोध, तुम्हारी मिन्नत करती हूं," अचानक [illegible]

उतावली किये बिना (व्रोन्स्की कभी उतावली नहीं करता और आत्मसंतुलन नहीं खोता था) उसने कपड़े बदले और बैरक की ओर चलने का आदेश दिया। बैरकों में उसे रेस-कोर्स की ओर जाते हुए बग्घियों, पैदल लोगों और सैनिकों का सागर तथा दर्शक-मण्डपों में ठसाठस भरे लोग दिखाई दे रहे थे। सम्भवतः दूसरी घुड़दौड़ चल रही थी, क्योंकि जब वह बैरक में दाखिल हुआ, तो उसे घण्टी सुनाई दी। अस्तबल के निकट पहुँचने पर उसे रेस-कोर्स की ओर से आनेवाला मखोतिन का सफ़ेद टाँगों वाला लाल घोड़ा, ग्लादियातर दिखाई दिया। उस पर नारंगी-नीले रंग का झूल बिछा था और उसके कान नीली झालर के कारण बड़े-बड़े लग रहे थे।

"कोर्ड कहाँ है?"

"अस्तबल में, ज़ीन कस रहे हैं।"

फ़्रू-फ़्रू के स्टाल का दरवाज़ा खुला था। उस पर ज़ीन कसा जा चुका था और वह बाहर लायी जाने वाली ही थी।

"मुझे देर तो नहीं हो गयी?"

"All right! All right! सब ठीक है, सब ठीक है," अंग्रेज़ ने कहा, "उत्तेजित नहीं होइयेगा।"

व्रोन्स्की ने सिर से पाँव तक काँपती घोड़ी की सुन्दर आकृति पर एक बार फिर दृष्टि डाली और मुश्किल से नज़र हटाकर अस्तबल से बाहर निकला। इस दृष्टि से कि उसकी ओर किसी का ध्यान न जाये, वह बहुत अनुकूल समय पर दर्शक-मण्डपों के पास पहुँचा। दो किलोमीटर की घुड़दौड़ ख़त्म हो रही थी और सभी की नज़रें घुड़सवारों के गार्ड अफ़सर, जो आगे था, और शाही हुस्सार पर, जो उसके पीछे था, लगी हुई थीं। वे दोनों अपने घोड़ों को पूरी ताक़त से [illegible] पर और डालते हुए उन्हें समाप्ति-स्तम्भ की ओर दौड़ा रहे थे। [illegible] के बीच और बाहर से सभी लोग समाप्ति-स्तम्भ के निकट जमा हो [illegible] और [illegible] के गार्ड के [illegible] अफ़सर अपने अफ़सर और [illegible] अपना [illegible] हुए ऊँचे-ऊँचे चिल्लाकर अपनी ख़ुशी [illegible] कर रहे थे। व्रोन्स्की किसी की नज़र में आए बिना चुपके से [illegible] में घुस गया। तब दौड़ की समाप्ति की घण्टी बजी और [illegible] अफ़सर [illegible] था और [illegible]

"मैं इस बात के लिये परेशान हू कि अभी मुझे यह बताया गया कि तुम यहा नही आये और यह कि सोमवार को तुम्हें पीटरहोफ़ में देखा गया।"

"कुछ ऐसे मामले होते है जिन पर प्रत्यक्ष सम्बन्ध रखनेवाले लोगो को ही विचार-विनिमय करना चाहिये और तुम जिस मामले के बारे में चिन्तित हो रहे हो, ऐसा ही है "

"हा, लेकिन तब सेना से भी अलग हो जाना चाहिये, तब . "

"मैं तुमसे इस मामले में दखल न देने का अनुरोध करता हू, बस इतना ही।"

तनी हुई भौंहो वाले अलेक्सेई व्रोन्स्की का चेहरा पीला पड गया और उसका आगे को निकला हुआ निचला जबडा कांप उठा, जैसा कि उसके साथ बहुत कम होता था। बहुत दयालु हृदयवाले व्यक्ति के नाते उसे बहुत कम गुस्सा आता था, लेकिन जब उसे गुस्सा आता था और उसकी ठोडी कांपने लगती थी, तो, जैसा कि अलेक्सान्द्र जानता था, वह खतरनाक आदमी होता था। अलेक्सान्द्र व्रोन्स्की खुश-मिजाजी से मुस्करा दिया।

"मैं तो सिर्फ मा का खत तुम्हें देना चाहता था। उसे जवाब लिख भेजना और घुडदौड से पहले अपना मूड खराब नही करो। Bonne chance*," उसने मुस्कराकर इतना और कहा तथा उससे दूर हट गया।

लेकिन उसके फौरन बाद ही दोस्ताना ढग की सलाम-दुआ ने उसे फिर रोक लिया।

"यार-दोस्तो को पहचानना नही चाहते! नमस्ते, mon cher**!" ओब्लोन्स्की ने कहा और यहा, पीटर्सबर्ग की चमक-दमक मे भी उसका लाल-लाल गालोवाला चेहरा तथा ढग से सवारी हुई लम्बी-मोटी, चमकीली कलमे मास्को की तुलना में कुछ कम लौ नही दे रही थी। "मैं कल आया था और मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि तुम्हारी जीत का झण्डा लहराया जाता देखूगा। कब मुलाकात होगी?"

"कल हमारे सैनिक भोजनालय मे आ जाना," व्रोन्स्की ने कहा

---

*सफलता की कामना करता हू। (फ़ासीसी)

** मेरे प्यारे। (फ़ासीसी)

स्थिति में, जिसमें श्वास और पग उसकी गतिविधि धीमी और स्पन्द हो जाती थी, अपनी घोड़ी के करीब आया। कोई घुड़दौड़ के मसखरे के सम्मान में खूब बना-ठना हुआ था। वह बटन-बन्द काला ओवरकोट, कलफ लगा अकड़ा हुआ कालर, जो उसके गालों को छू रहा था, गोल काला टोप और घुटनों तक के बूट पहने था। वह हमेशा की भांति शान्त और धीर-गम्भीर था और स्वयं ही घोड़ी की दोनों लगामों को थामकर उसके सामने खड़ा था। फ्रू-फ्रू ऐसे ही कांपती जा रही थी मानो उसे जूड़ी आ रही हो। उसने निकट आते व्रोन्स्की को अपनी दहकती-सी आग की कनखी से देखा। व्रोन्स्की ने जीन की पेटी के नीचे उंगली घुमेड़ी। घोड़ी ने उस पर और अधिक तिरछी नज़र डाली, दांत दिखाये और कान दाबे। अंग्रेज़ ने होंठों पर बल डाल लिये और इस बात पर मुस्कराना चाहा कि उसके कसे हुए जीन को भी कोई जांचने की ज़रूरत महसूस कर सकता है।

"सवार हो जाइये, कम उत्तेजना अनुभव करेंगे।"

व्रोन्स्की ने अपने प्रतिद्वन्द्वियों की ओर अन्तिम बार दृष्टि घुमायी। वह जानता था कि दौड़ के समय उन्हें नहीं देख पायेगा। उनमें से दो अपने घोड़ों पर सवार दौड़ शुरू होने की जगह की तरफ़ जा भी रहे थे। व्रोन्स्की का दोस्त और एक खतरनाक प्रतिद्वन्द्वी गालत्सिन अपने कुम्मैत घोड़े के इर्द-गिर्द, जो उसे सवार नहीं होने दे रहा था, चक्कर काट रहा था। तंग बिरजिस पहने नाटा हुस्सार अफ़सर अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता और अंग्रेज़ों के ढंग की नक़ल करने की इच्छा से बिल्ले की भांति उसके पुट्ठे पर झुका हुआ था। प्रिंस कुज़ोव्लेव बढ़िया, ग्राबोव्स्की नसल की घोड़ी पर ज़र्द चेहरा लिये बैठा था और एक अंग्रेज़ लगामें थामे उसे ले जा रहा था। व्रोन्स्की और उसके सभी साथी कुज़ोव्लेव तथा उसकी "कमज़ोर स्नायुओं" और अत्यधिक अहमन्यता की विशेषता से परिचित थे। उन्हें मालूम था कि वह सभी चीज़ों से डरता है, फ़ौजी घोड़े पर सवारी करते हुए घबराता है, लेकिन अब इसीलिये कि यह खतरनाक था, कि लोग अपनी गर्दन तोड़ लेते थे और हर बाधा के पास डाक्टर था, रेडक्रास के निशान वाली एम्बुलेन्स गाड़ी और नर्स खड़ी थी, उसने घुड़दौड़ में हिस्सा लेने का निर्णय किया था। उनकी नज़रें मिलीं और व्रोन्स्की ने स्नेहपूर्वक तथा उसकी हिम्मत

बढाया और दो बार उछली तथा कसी हुई लगामो पर झुझलाते हुए सवार को झकझोरनेवाले झटको की दुलकी चाल मे दौडने लगी। कोर्ड की भी त्योरी चढ गयी और लगभग दुगामा चाल मे ही वह व्रोन्स्की के पीछे-पीछे दौडने लगा।

(२५)

कुल सत्रह अफसर घुडदौड मे भाग ले रहे थे। घुडदौड कोई पाच किलोमीटर के बडे अण्डाकार घेरे मे दर्शक-मण्डप के सामने होनेवाली थी। इस घेरे मे नौ बाधाये बनायी गयी थी – नदी, दर्शक-मण्डप के सामने कोई डेढ मीटर ऊचा अवरोध, सूखी खाई, पानी से भरी खाई, ढाल, आयरलैडी बैक (एक सबसे कठिन बाधा), जिसमे टहनियो से ढका हुआ पुश्ता, और उसके पीछे घोडे को नजर न आनेवाली एक अन्य खाई थी, जहा घोडे को या तो दोनो बाधाओ को लाघना या अपनी जान गवानी थी, उसके बाद पानी से भरी हुई दो अन्य खाइया और एक सूखी खाई थी। घुडदौड को दर्शक-मण्डप के सामने खत्म होना था। लेकिन घुडदौड घेरे से नही, बल्कि उससे दो सौ मीटर से कुछ अधिक की दूरी पर शुरू होनेवाली थी। इस फासले मे पहली बाधा थी – दो मीटर से अधिक चौडी बाधवाली नदी। घुडसवार अपनी इच्छानुसार नदी के पार घोडे को कुदा सकते थे या उसे पानी मे से ले जा सकते थे।

घुडसवार तीन बार कतार मे खडे हुए, लेकिन हर बार किसी का घोडा दौड शुरू करने के सकेत से पहले ही आगे बढ गया और उन्हे फिर से कतार मे खडे होना पडा। दौड का माहिर कर्नल सेस्त्रीन झल्लाने भी लगा और आखिर जब चौथी बार उसने "शुरू करो!" कहा, तो दौड आरम्भ हुई।

घुडसवार जब कतार मे खडे थे, तो सभी की नजरे और सभी दूरबीने उन्ही पर केद्रित थी।

"दौड शुरू हो गयी! बढे आ रहे है!" प्रतीक्षा की निस्तब्धता के बाद सभी ओर से यह सुनाई दिया।

लोगो के जमघट या अकेले-दुकेले लोग दौड को अच्छी तरह से

देख पाने के लिये एक जगह से दूसरी जगह भागने लगे। पहले मिनट में ही घुड़सवार फैल गये और यह साफ नजर आने लगा कि वैसे वे दो-दो, तीन-तीन और एक के बाद एक नदी के करीब पहुच रहे हैं। दर्शकों को तो ऐसे प्रतीत हुआ था कि उन सभी ने एक ही समय पर घुड़दौड़ शुरू की है, लेकिन घुड़सवारों के लिये कुछ सेकण्डों का अन्तर था, जो बहुत अधिक महत्त्व रखता था।

बहुत अधिक उत्तेजित और घबरायी हुई फ़्रू-फ़्रू ने पहला क्षण गंवा दिया और कुछ घोड़े उससे आगे निकल गये। लेकिन नदी तक पहुंचने के पहले ही व्रोन्स्की पूरी ताकत से घोड़ी की लगामें खींचते हुए आसानी से तीन को पीछे छोड़ गया और मख़ोतिन का लाल ग्लादियातर, जिसके पुट्ठे हल्की-फुल्की और समगति से व्रोन्स्की के बिल्कुल सामने हिल-डुल रहे थे, तथा सबसे आगे जानेवाली सुन्दर डायना ही रह गयी, जिस पर सवार कुज़ोव्लेव की सास गले में अटकी हुई थी।

पहले क्षणों में व्रोन्स्की न खुद को और न अपनी घोड़ी को ही वश में कर पाया। पहली बाधा यानी नदी तक वह अपनी घोड़ी की गतिविधि को निर्देशित करने में असमर्थ रहा।

ग्लादियातर और डायना एकसाथ, लगभग एक ही क्षण में नदी के ऊपर से कूदे और दूसरे किनारे पहुच गये। उनके पीछे-पीछे फ़्रू-फ़्रू ऐसे हल्के-फुल्के ढग से, मानो हवा में उड रही हो, उछली। किन्तु उसी समय, जब व्रोन्स्की ने अपने को हवा में महसूस किया, उसने अचानक लगभग अपनी घोड़ी के पैरों के नीचे कुज़ोव्लेव को देखा, जो डायना के साथ नदी के दूसरी ओर लुढ़कता चला जा रहा था (कुज़ोव्लेव ने छलाग के बाद लगामें छोड़ दी और घोड़ी के साथ वह भी कलाबाजी खाते हुए नीचे जा गिरा था)। ये तफ़सीलें व्रोन्स्की को बाद में मालूम हुईं, लेकिन इस समय तो वह यही देख रहा था कि जहा फ़्रू-फ़्रू के पाव ज़मीन को छुएंगे, ठीक वहीं डायना की टाग या सिर हो सकता है। लेकिन नीचे जाती हुई फ़्रू-फ़्रू ने बिल्ली की भांति अपनी छलाग में टागों और पीठ का ज़ोर लगाया तथा डायना से बचकर आगे निकल गयी।

"ओ, मेरी प्यारी!" व्रोन्स्की ने सोचा।

नदी के बाद व्रोन्स्की ने घोड़ी को पूरी तरह अपने वश में कर लिया

बढ़ाया और दो बार उछली तथा कसी हुई लगामों पर झुंझलाते हुए सवार को झकझोरनेवाले झटकों की दुलकी चाल में दौड़ने लगी। कोर्ड की भी त्योरी चढ़ गयी और लगभग दुगामा चाल से ही वह व्रोन्स्की के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

(२५)

कुल सत्रह अफसर घुड़दौड़ में भाग ले रहे थे। घुड़दौड़ कोई पाव किलोमीटर के बड़े अण्डाकार घेरे में दर्शक-मण्डप के सामने होनेवाली थी। इस घेरे में नौ बाधायें बनायी गयी थीं – नदी, दर्शक-मण्डप के सामने कोई डेढ़ मीटर ऊंचा अवरोध, सूखी खाई, पानी से भरी खाई, ढाल, आयरलैंडी बैंक (एक सबसे कठिन बाधा), जिसमें टहनियों से ढका हुआ पुश्ता, और उसके पीछे घोड़े को नज़र न आनेवाली एक अन्य खाई थी, जहां घोड़े को या तो दोनों बाधाओं को लांघना या अपनी जान गंवानी थी, उसके बाद पानी से भरी हुई दो अन्य खाइयां और एक सूखी खाई थी। घुड़दौड़ को दर्शक-मण्डप के सामने ख़त्म होना था। लेकिन घुड़दौड़ घेरे से नहीं, बल्कि उससे दो सौ मीटर से कुछ अधिक की दूरी पर शुरू होनेवाली थी। इस फ़ासले में पहली बाधा थी – दो मीटर से अधिक चौड़ी बांधवाली नदी। घुड़सवार अपनी इच्छानुसार नदी के पार घोड़े को कुदा सकते थे या उसे पानी में से ले जा सकते थे।

घुड़सवार तीन बार कतार में खड़े हुए, लेकिन हर बार किसी का घोड़ा दौड़ शुरू करने के संकेत से पहले ही आगे बढ़ गया और उन्हें फिर से कतार में खड़े होना पड़ा। दौड़ का माहिर कर्नल सेस्त्रीन झल्लाने भी लगा और आखिर जब चौथी बार उसने "शुरू करो!" कहा, तो दौड़ आरम्भ हुई।

घुड़सवार जब कतार में खड़े थे, तो सभी की नज़रें और सभी दूरबीनें उन्हीं पर केंद्रित थीं।

"दौड़ शुरू हो गयी! बढ़े आ रहे हैं!" प्रतीक्षा की नि

के बाद सभी ओर से यह सुनाई दिया।

लोगों के जमघट

और इस इरादे से उसे तेज़ होने से रोकने लगा कि मखोतिन के पीछे रहते हुए बड़े अवरोध को लांघे तथा अगले, लगभग ४०० मीटर लम्बे बाधाहीन फ़ासले में उससे आगे निकलने की कोशिश करे।

बड़ा अवरोध ज़ार के मण्डप के बिल्कुल सामने था। जब वे शैतान (बड़े अवरोध का यही नाम था) के करीब पहुंचे, तो ज़ार, सभी दरबारियो और आम लोगो की भीड़ की नज़रें इन दोनों यानी व्रोन्स्की और उससे कुछ आगे मखोतिन पर जमी हुई थी। व्रोन्स्की सभी दिशाओं से अपने पर केन्द्रित इन नज़रों को अनुभव कर रहा था, किन्तु अपनी घोड़ी के कानों और गर्दन, अपनी तरफ़ भागी आती ज़मीन तथा तेज़ी से आगे दौड़ते और एक जैसा फ़ासला बनाये रखते हुए ग्लादियातर के पुट्ठे और सफ़ेद टांगों के सिवा वह और कुछ नहीं देख रहा था। ग्लादियातर उछला, किसी भी चीज़ के साथ नहीं टकराया, उसने अपनी छोटी-सी पूछ हिलाई और व्रोन्स्की की नज़र से ओझल हो गया।

"शाबाश!" एक आवाज़ सुनाई दी।

इसी क्षण व्रोन्स्की की आंखों के सामने, खुद उसके सम्मुख अवरोध के तख्ते झलक उठे। अपनी गति में तनिक परिवर्तन किये बिना ही घोड़ी उसके ऊपर उछली, तख्ते गायब हो गये और केवल पीछे किसी चीज़ के टकराने की आवाज़ सुनाई दी। आगे जा रहे ग्लादियातर के कारण जोश में आयी घोड़ी ने अवरोध के पहले कुछ अधिक जल्दी ही छलांग लगा दी और इसलिये उसका पिछला सुम तख्तों से टकरा गया। लेकिन उसकी गति में कोई अन्तर नहीं हुआ, व्रोन्स्की के मुंह पर कीचड़ का गोला आ लगा और वह समझ गया कि ग्लादियातर पहले जितने फ़ासले पर ही है। उसका पुट्ठा, छोटी-सी पूछ और तेज़ी से हिलती-डुलती सफ़ेद टांगें फिर से उसी फ़ासले पर दिखाई दीं।

व्रोन्स्की ने जिस क्षण यह सोचा कि अब मखोतिन से आगे निकलना चाहिये, फ़्रू-फ़्रू खुद ही उसके मन की बात को भाप गयी, किसी तरह के बढ़ावे के बिना उसने अपनी चाल काफ़ी तेज़ कर दी और सबसे अधिक अनुकूल यानी रस्सेवाली दिशा से मखोतिन के निकट होने लगी। मखोतिन उसे ऐसा नहीं करने दे रहा था। व्रोन्स्की ने यह सोचा ही था कि बाहर की ओर से भी आगे निकला जा सकता है कि फ़्रू-फ़्रू ने रास्ता बदल लिया और इसी ढंग से आगे निकलने लगी। पसीने से

काला होता हुआ फ्रू-फ्रू का कन्धा ग्लादियातर के पुट्ठे के बराबर हो गया। कुछ देर तक वे एक-दूसरे के करीब दौड़ते रहे। लेकिन उस बाधा के पहले, जिसके निकट वे पहुंच रहे थे, व्रोन्स्की यह चाहते हुए कि बड़ा चक्कर न काटने पड़े, लगामो से काम लेने लगा और तेजी से ढाल पर ही मखोतिन से आगे निकल गया। व्रोन्स्की को मखोतिन के चेहरे की, जिस पर कीचड के छींटे पड़े हुए थे, हल्की झलक मिली। उसे लगा कि वह मुस्कराया भी है। व्रोन्स्की उससे आगे तो निकल गया, किन्तु उसे अपने निकट ही पीछे अनुभव करता रहा और अपनी पीठ के पीछे उसे ग्लादियातर की लयबद्ध टापे और तनिक रुक-रुककर, अभी भी ताज़ा सासे भी लगातार सुनाई दे रही थी।

अगली दो बाधाये – खाई और अवरोध – आसानी से पार कर ली गयी, लेकिन व्रोन्स्की को ग्लादियातर की टापे और सासे अधिक नज़दीक सुनाई देने लगी। उसने घोड़ी को कुछ और तेज़ किया और उसे इस बात की ख़ुशी हुई कि घोड़ी ने आसानी से अपनी गति और बढ़ा ली तथा ग्लादियातर की टापे फिर से पहले जितने फासले पर ही सुनाई देने लगी।

व्रोन्स्की घुड़दौड़ मे सबसे आगे जा रहा था – वह यही तो करना चाहता था और कोर्ड ने भी उसे यही सलाह दी थी। अब उसे अपनी सफलता का विश्वास हो गया था। उसकी उत्तेजना, ख़ुशी और फ्रू-फ्र के प्रति उसका प्यार बढ़ता जा रहा था। उसका पीछे मुड़कर देखने को मन हो रहा था, लेकिन वह ऐसा करने की हिम्मत नही कर सकता था। उसने अपने को शान्त करने की कोशिश की और घोड़ी की रफ्तार नहीं बढ़ाई, ताकि उसमे उतनी ही शक्ति बची रहे, जितनी वह ग्लादियातर मे बाकी रह गयी अनुभव करता था। एक, और सबसे मुश्किल बाधा बाकी थी। अगर वह दूसरो से पहले उसे लाघ लेगा, तो वही प्रथम रहेगा। उसकी घोड़ी आयरलैंडी बैंक के करीब पहुंच रही थी। फ्रू-फ्रू के साथ उसने दूर से ही इस बैंक को देखा और एक साथ ही, उसके तथा घोड़ी के दिमाग मे घड़ी भर को सन्दे[illegible] ने सिर उठाया। उसने घोड़ी के कानो मे [illegible] देखी [illegible] ावुक ऊपर उठाया। [illegible] धार था – घोड़ी [illegible]

और बहुत ही सधे-तुले ढंग से, जैसी कि व्रोन्स्की ने आशा की थी, पांव मारकर ऊपर उछली और अपने को छलांग की बाहर-शक्ति के सुपुर्द कर दिया, जो उसे खाई से कहीं दूर ले गयी। उसी रफ्तार से, किसी प्रयास के बिना और पहले वाली चाल से ही फ़ू-फ़ू ने दौड़ जारी रखी।

"शाबाश, व्रोन्स्की!" उसे कुछ लोगों की आवाजें सुनाई दीं - उसे मालूम था कि ये उसकी रेजिमेन्ट के लोग और यार-दोस्त हैं, जो इस बाधा के निकट खड़े थे। उसने याश्विन की आवाज़ पहचान ली, लेकिन उसे देख नहीं पाया।

"ओ, मेरी बांकी!" व्रोन्स्की ने फ़ू-फ़ू के बारे में मन ही मन सोचा। साथ ही इस बात पर कान लगाये रहा कि उसके पीछे क्या हो रहा है। "लांघ गया!" उसने अपने पीछे ग्लादियातर की टापें सुनकर सोचा। पानी से भरी हुई कोई डेढ़ मीटर चौड़ी एक खाई ही बाकी रह गयी थी। व्रोन्स्की ने उसकी तरफ तो कोई ध्यान ही नहीं दिया और बहुत पहले ही समाप्ति-रेखा पर पहुंचने की इच्छा से लगामों को चक्राकार ढंग से सचालित करने तथा घोड़ी की छलांगों की गति के साथ उसका सिर ऊपर उठाने तथा नीचे झुकाने लगा। वह अनुभव कर रहा था कि घोड़ी अपनी अन्तिम शक्ति का उपयोग कर रही है - न केवल उसकी गर्दन और कंधे ही पसीने से भीगे हुए थे, बल्कि उसकी गर्दन, सिर और नुकीले कानों पर भी पसीने की बूंदें उभर आई थीं और वह बहुत तेज़ी से तथा छोटी-छोटी सांसें ले रही थी। लेकिन व्रोन्स्की जानता था कि उसकी बची हुई शक्ति बाकी रह गये चार सौ मीटर के फासले को तय करने के लिये बहुत काफ़ी होगी। केवल इसलिये कि व्रोन्स्की अपने को भूमि के निकट और घोड़ी की गति में विशेष समलयता अनुभव कर रहा था, वह जानता था कि उसकी घोड़ी ने अपनी चाल कितनी अधिक बढ़ा दी है। खाई की मानो परवाह किये बिना ही वह उसे लांघ गयी। परिन्दे की भांति वह उसके ऊपर से कूद गयी, मगर इसी वक्त व्रोन्स्की ने घबराकर यह अनुभव किया कि घोड़ी की गति का साथ न देते और खुद भी न समझ पाते हुए उसने ज़ीन पर बैठते समय एक बड़ी बेहूदा और अक्षम्य हरकत कर दी थी। अचानक उसकी स्थिति बदल गयी और वह समझ गया कि कोई

का जवाब नही दे सका, किसी से भी बातचीत नही कर सका। वह मुडा और जमीन पर जा गिरी टोपी को उठाये बिना और यह न जानते हुए कि किधर जा रहा है, रेस-कोर्स से चल दिया। बहुत ही दुखी मन था उसका। जिन्दगी में पहली बार उसे बहुत गहरे और ऐसे दुर्भाग्य की अनुभूति हुई, जिस पर किसी तरह भी काबू पाना सम्भव नही था और जिसके लिये वह खुद दोषी था।

टोपी लिये हुए याश्विन उसके पास पहुचा, उसने व्रोन्स्की को घर तक पहुचा दिया। आध घण्टे बाद व्रोन्स्की के होश-हवास ठिकाने हुए। लेकिन घुडदौड की स्मृति उसकी आत्मा में बहुत समय तक उसके जीवन की सबसे कटु और यातनाप्रद स्मृति बनी रही।

(२६)

आन्ना के साथ कारेनिन के सम्बन्ध बाहरी तौर पर पहले जैसे ही बने रहे। सिर्फ इतना ही फर्क पडा कि वह पहले से भी ज्यादा व्यस्त रहने लगा। अन्य सालो की भाति इस साल भी वह वसन्त आ जाने पर जल-चिकित्सा द्वारा अपने स्वास्थ्य को सुधारने के लिये, जो हर जाडे में बढते श्रम के कारण बिगड जाता था, विदेश गया। हमेशा की तरह वह जुलाई में घर लौटा और उसी समय अधिक उत्साह के साथ अपने सामान्य काम में जुट गया। हमेशा की तरह उसकी बीवी गर्मियो के लिये देहाती बगले में रहने चली गई और वह पीटर्सबर्ग में ही रह गया।

प्रिसेस त्वेरस्काया की पार्टी के बाद हुई बातचीत के समय से उसने अपने सन्देहो और ईर्ष्या की आन्ना से कभी चर्चा नही की और किसी का मजाक उडाता हुआ-सा सामान्य अन्दाज बीवी के प्रति उसके वर्तमान रवैये के लिये बहुत उपयुक्त था। पत्नी के प्रति उसमें कुछ रुखाई आ गयी थी। उस रात को बीवी के साथ हुई पहली बातचीत के कारण, जिससे उसने बचने की कोशिश की थी, वह उससे मानो थोडा-सा नाराज था। पत्नी के प्रति उसके रवैये में थोडी-सी खीझ के सिवा और कुछ नही था। "तुमने मेरे साथ खुलकर बात नही करनी चाही," वह मानो मन ही मन उसे सम्बोधित करते हुए कहता, "यह तुम्हारे

लिये ही बुरा है। अब तुम मुझसे ऐसा करने का अनुरोध करोगी, मगर मैं ऐसा नही करूगा। यह तो तुम्हारे लिये ही और अधिक बुरा है," वह अपने दिल मे उस आदमी की तरह कहता, जिसने आग बुझाने की बेसूद कोशिश की हो, अपनी इस नाकाम कोशिश पर झल्ला उठा हो और फिर बोला हो: "तुम इसी लायक हो! तो जल जाओ!"

सरकारी काम-काज मे बहुत ही समझदार और सूक्ष्म दृष्टि रखने वाला यह व्यक्ति अपनी पत्नी के प्रति ऐसे रवैये के सारे पागलपन को समझने मे असमर्थ था। वह इसलिये यह नही समझता था कि अपनी वर्तमान स्थिति को समझना उसके लिये बहुत ही भयानक था और उसने अपनी आत्मा के उस डिब्बे को, जिसमे परिवार यानी पत्नी और बेटे के प्रति उसकी भावनाये सचित थी, बन्द करके उसमे ताला लगा दिया था, उसे मुहरबन्द कर दिया था। वह, जो बहुत ही चिन्ताशील पिता था, इस जाडे के अन्त से बेटे के प्रति विशेषत उदासीन हो गया और पत्नी की भाति उसके प्रति भी उसका खिल्ली-सी उडाने का रवैया हो गया। "अहा! नौजवान!" वह उसे इस तरह से सम्बोधित करता।

कारेनिन ऐसा सोचता और कहता भी था कि अन्य किसी भी साल मे उसके पास इतना अधिक काम नही था, जितना इस साल मे। उसे इस बात की चेतना नहीं थी कि इस साल उसने खुद अपने लिये काम ढूढ निकाले थे और यह उस डिब्बे को बन्द रखने का एक उपाय था, जिसमे पत्नी और परिवार के बारे मे उसकी भावनाये और विचार बन्द थे, और वे जितनी ज्यादा देर तक वहा पडे रह रहे थे, उतने ही अधिक भयानक होते जाते थे। अगर किसी को कारेनिन से यह पूछने का अधिकार होता कि अपनी पत्नी की गतिविधि के बारे मे उसकी क्या राय है, तो विनम्र और शान्त कारेनिन कुछ भी जवाब न देता, लेकिन ऐसा सवाल करनेवाले व्यक्ति से बेहद नाराज हो गया होता। इसीलिये जब उससे पत्नी के स्वास्थ्य के बारे मे पूछा जाता, तो उसके चेहरे पर हठ और कठोरता का सा भाव आ जाता। कारेनिन अपनी पत्नी की गतिविधियो और भावनाओ के बारे मे कुछ भी नही सोचना चाहता था और वास्तव मे ही वह इस [illegible] मे कुछ नही सोचता था।

कारेनिन का स्थायी देहाती बंगला पीटरहोफ़ में था और काउंटेस लीदिया इवानोव्ना भी आम तौर पर पड़ोस में तथा आन्ना के साथ निरन्तर सम्पर्क रखते हुए वहीं गर्मी बिताती थी। इस साल काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने पीटरहोफ़ में रहने से इन्कार कर दिया, एक बार भी आन्ना से मिलने नहीं आई और कारेनिन को बेत्सी तथा व्रोन्स्की के साथ आन्ना की घनिष्ठता के अनौचित्य के बारे में संकेत किया। कारेनिन ने यह विचार व्यक्त करके कि उसकी पत्नी किसी भी तरह के सन्देह से ऊपर है, कड़ाई से उसकी जबान बन्द कर दी और उस समय से काउंटेस लीदिया इवानोव्ना से कन्नी काटने लगा। वह यह नहीं देखना चाहता था और देखता भी नहीं था कि ऊंचे समाज में बहुत-से लोग उसकी पत्नी को बुरी नज़र से देखने थे। वह यह समझना नहीं चाहता था और समझता भी नहीं था कि उसकी पत्नी त्सारस्कोये सेलो में रहने के लिये क्यों ज़ोर दे रही थी, जहां बेत्सी रहती थी और जहां से व्रोन्स्की की रेजिमेन्ट का शिविर भी बहुत दूर नहीं था। वह अपने को यह सोचने नहीं देता था और सोचता भी नहीं था, लेकिन इसके साथ ही किसी तरह के प्रमाणों या सन्देहों के न होते हुए भी अपनी आत्मा की गहराई में निश्चित रूप से यह जानता था कि उसके साथ बेवफ़ाई की गयी है और इसलिये दिल में बहुत ही दुखी था।

अपनी पत्नी के साथ आठ साल के सुखी जीवन में उसने अनेक बार पराई बेवफ़ा पत्नियों और धोखे के शिकार होनेवाले पतियों को देखते हुए अपने दिल में यह सोचा था "कैसे मामले को इस हद तक जाने दिया गया? इस बेहूदा स्थिति को ठीक क्यों नहीं किया जाता?" लेकिन अब जब खुद उसके सिर पर मुसीबत आई थी तो वह न केवल यह नहीं सोचता था कि इस स्थिति को कैसे ठीक करे बल्कि इसे जानना तक नहीं चाहता था। इसलिये जानना नहीं चाहता था कि वह बहुत ही भयानक बहुत ही अस्वाभाविक स्थिति थी।

विदेश से लौटने के बाद कारेनिन दो बार अपने देहातवाले बंगले पर गया था। एक बार उसने दोपहर का खाना वहां खाया और दूसरी बार मेहमानों के साथ शाम बिताई। लेकिन एक बार भी वह रात को वहां नहीं सोया, जैसा कि पिछले सालों में आम तौर पर करता था।

घुडदौडो वाला दिन कारेनिन के लिये बहुत व्यस्त दिन था। लेकिन सुबह ही अपनी दिन भर की कार्य-सूची बनाते हुए उसने यह तय कर लिया कि दोपहर का खाना हमेशा से कुछ पहले खाने के बाद वह देहातवाले बगले मे बीवी के पास और वहां से घुडदौड देखने जायेगा, जहा राजदरबार के सभी लोग होगे और जहा उसे भी होना चाहिये। बीवी के पास वह इसलिये जायेगा कि उसने जग-दिखावे के लिये सप्ताह मे एक बार वहा जाने का निर्णय किया था। इसके अलावा उस दिन उसे निश्चित व्यवस्था के अनुसार खर्च के लिये पैसे भी देने थे।

पत्नी के बारे मे यह सब सोचने के बाद उसने अपने विचारो पर सामान्य नियत्रण के अनुसार उससे सम्बन्धित अन्य किसी बात की ओर अपने विचारो को नही बढने दिया।

कारेनिन की यह सुबह बहुत व्यस्त थी। काउटेस लीदिया इवानोव्ना ने पिछली शाम को चीन-यात्रा के बाद पीटर्सबर्ग आनेवाले एक प्रसिद्ध यात्री की पुस्तिका के साथ एक पत्र भी भेजा था, जिसमे यह अनुरोध किया था कि विभिन्न कारणो से बहुत दिलचस्प और बहुत ही काम के इस व्यक्ति से वह खुद भी मिले। कारेनिन इस पूरी पुस्तिका को रात को नही पढ सका और उसे सुबह खत्म किया। इसके बाद प्रार्थी आ गये, रिपोर्टें पेश की जाने लगी, मिलनेवाले आये, नियुक्तियो और कार्य से हटाने के निर्णय किये गये, पुरस्कारो, पेशनो और वेतनो पर विचार किया गया, पत्र पढे गये – मतलब यह कि उसने हर दिन का वह काम निवटाया, जो उसका इतना अधिक वक्त ले लेता था। इसके बाद कुछ निजी काम भी था – डाक्टर और कारिन्दा आया। कारिन्दे ने बहुत समय नही लिया। उसने कारेनिन को उसकी जरूरत की रकम दी और सक्षेप मे हिसाब-किताब समझा दिया, जिससे यह पता चला कि इस साल सफर पर ज्यादा खर्च हो गया था और आमदनी से खर्च अधिक था। लेकिन पीटर्सबर्ग के प्रसिद्ध डाक्टर ने, जिसका कारेनिन के साथ दोस्ताना सम्बन्ध था, बहुत वक्त लिया। कारेनिन ने उसके आज आने की आशा नही की थी और उसके आने तथा इस बात से वह और भी ज्यादा हैरान हुआ कि डाक्टर ने बहु[illegible] ध्यान से कारेनिन [illegible] की। जाच की, मे उसकी तबीयत के [illegible]। कारेनिन उंगलिया

को मालूम नही था कि उसकी मित्र लीदिया इवानोव्ना ने यह देखकर कि इस साल कारेनिन की सेहत अच्छी नही है, डाक्टर से अनुरोध किया था कि वह जाकर उसकी जाच करे। "मेरी खातिर यह कीजिये," काउटेस लीदिया इवानोव्ना ने उससे कहा था।

"मैं रूस के लिये ऐसा करूगा, काउटेस," डाक्टर ने जवाब दिया था।

"हीरा आदमी है!" काउटेस लीदिया इवानोव्ना ने राय जाहिर की थी।

कारेनिन की जाच के बाद डाक्टर बहुत असन्तुष्ट था। उसने पाया कि उसका जिगर बहुत काफी बड़ा हुआ है, भूख और खुराक कम हो गयी है और जल-चिकित्सा का कोई प्रभाव नही हुआ है। उसने बताया कि जितना भी मुमकिन हो ज्यादा शारीरिक श्रम और जितना भी सम्भव हो सके, कम मानसिक श्रम किया जाये तथा सबसे प्रमुख चीज तो यह है कि किसी भी तरह की चिन्ता मे न घुला जाये, जो अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के लिये वैसे ही असम्भव था, जैसे कि सास न लेना। डाक्टर चला गया और कारेनिन के मन मे यह अप्रियो-सी चेतना रह गयी कि उसके अन्दर कही कुछ गड़बड़ है, जिसे ठीक करना सम्भव नही।

कारेनिन के यहा से बाहर निकलते हुए डाक्टर की कारेनिन के निजी सेक्रेटरी स्लूदिन से, जिसे डाक्टर बहुत अच्छी तरह जानता था, भेट हो गयी। वे दोनो विश्वविद्यालय के जमाने के साथी थे और यद्यपि कभी-कभार ही मिलते थे, फिर भी एक-दूसरे की इज्जत करते थे और अच्छे दोस्त थे। जाहिर है कि स्लूदिन से अधिक अच्छा और कौन आदमी हो सकता था, जिसके सामने डाक्टर रोगी के बारे मे अपनी साफ-साफ राय जाहिर करता।

"मै बहुत खुश हू कि आप उनकी जाच करने आये," स्लूदिन ने कहा। "उनकी तबीयत अच्छी नही है और मुझे लगता है हा, तो आपका क्या ख्याल है?"

"मेरा ख्याल यह है," डाक्टर ने स्लूदिन के सिर के ऊपर से हाथ हिलाकर अपने कोचवान को गाड़ी लाने का इशारा करते हुए मेरा ख्याल यह है," डाक्टर ने अपने मुलायम दस्ताने की बार-बार हाथों में लेने और उसे ऊपर खीचते हुए कहा,

[illegible] नहीं था कि उनकी फिर मीटिंग [illegible]
कि इस समय कारेनिन की सेहत अच्छी नहीं है, [illegible]
लिया था कि वह जाकर उनकी जांच करे। "मेरी खातिर
काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उनसे कहा था।

"मैं रूस के लिये ऐसा करूंगा, काउंटेस," डा

दिया था।

"कितना अच्छा है!" काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने [illegible]

की थी।

कारेनिन की जांच के बाद डाक्टर बहुत असन्तुष्ट था। उस
कि उनका जिगर बहुत ज्यादा बढ़ा हुआ है, भूख और खुराक [illegible]
गयी है और जल चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं हुआ है। उसने [illegible]
कि जितना भी मुमकिन हो ज्यादा शारीरिक श्रम और जितना
सम्भव हो सके, कम मानसिक श्रम किया जाये तथा सबसे प्रमुख [illegible]
तो यह है कि किसी भी तरह की चिन्ता में न घुला जाये, जो अलेक्से[ई]
अलेक्सान्द्रोविच के लिये वैसे ही असम्भव था, जैसे कि सांस न लेना [illegible]
डाक्टर चला गया और कारेनिन के मन में यह अप्रिय-सी चेतना [illegible]
गयी कि उसके अन्दर कहीं कुछ गड़बड़ है जिसे ठीक करना सम्भव नहीं [illegible]

कारेनिन के यहां से बाहर निकलते हुए डाक्टर की कारेनिन [illegible]
निजी सेक्रेटरी स्लूदिन से, जिसे डाक्टर बहुत अच्छी तरह जान[ता]
था, भेंट हो गयी। वे दोनों विश्वविद्यालय के जमाने के साथी थे और
यद्यपि कभी-कभार ही मिलते थे, फिर भी एक-दूसरे की इज्जत कर[ते]
थे और अच्छे दोस्त थे। जाहिर है कि स्लूदिन से अधिक अच्छा और
कौन आदमी हो सकता था, जिसके सामने डाक्टर रोगी के बारे [में]
अपनी साफ़-साफ़ राय जाहिर करता।

"मैं बहुत खुश हूं कि आप उनकी जांच करने आये," स्लूदि[न]
ने कहा। "उनकी तबीयत अच्छी नहीं है और मुझे लगता है [illegible]
तो आपका क्या ख्याल है?"

"मेरा ख्याल यह है," डाक्टर ने स्लूदिन के सिर के ऊपर [से]
हाथ हिलाकर अपने कोचवान को बग्घी लाने का इशारा करते [हुए]
कहा, "मेरा ख्याल यह है," डाक्टर ने अपने मुलायम दस्ताने [की]
उंगली [illegible] हाथों में लेने और उसे ऊपर खींचते हुए [illegible]

सोचियेगा," उसकी नजर इतना और कहती लगती, "कि मैं जबर्दस्ती आपसे जान-पहचान करना चाहती हूं। मैं तो केवल मुग्ध होकर आपको देखती और आपसे प्यार करती हूं।" "मैं भी आपको प्यार करती हूं और आप बहुत, बहुत ही प्यारी हैं। अगर मेरे पास फुरसत या वक्त होता, तो आपको और भी ज्यादा प्यार करती," इस अज्ञात लड़की की नजर जवाब देती। वास्तव में ही कीटी देखती कि वह हमेशा बहुत व्यस्त रहती है – या तो किसी रूसी परिवार के बच्चों को खनिज जल के स्रोतों से ले जाती होती, या किसी बीमार औरत के लिये कम्बल लाती और उसे अच्छी तरह से ओढ़ाती दिखाई देती, या खीझ उठनेवाले किसी रोगी का ध्यान किसी दूसरी ओर करने की कोशिश में लगी दिखती, या फिर किसी के लिये बिस्कुट चुनती और खरीदती होती।

श्चेर्बात्स्की परिवार के आने के जल्द बाद ही सुबह के समय जल-स्रोतों पर दो और व्यक्ति दिखाई देने लगे, जिनको ओर सभी अप्रिय भावना से देखते थे। इनमें से एक बहुत ही लम्बा-तडंगा और कुछ झुकी हुई पीठ तथा बहुत ही बड़े-बड़े हाथोंवाला पुरुष था। उसकी आंखें काली, भोली-भाली और साथ ही भयानक थी और वह अपने कद की तुलना में छोटा और पुराना-सा ओवरकोट पहने रहता था। उसके साथ एक चेचकरू तथा प्यारी-सी नारी थी, जो बहुत ही भद्दे तथा कुरुचिपूर्ण कपड़े पहने थी। इन दोनों को रूसियों के रूप में पहचानकर कीटी अपनी कल्पना में उनके बारे में बहुत बढ़िया और मर्मस्पर्शी प्रेम-कथा भी रचने लगी थी। किन्तु प्रिंसेस श्चेर्बात्स्काया ने आगन्तुक-सूची से यह मालूम करके कि ये दोनों निकोलाई लेविन और मारीया निकोलायेव्ना थे, कीटी को बताया कि यह लेविन कितना बुरा आदमी है और इन दोनों के बारे में उसकी सारी कल्पनायें हवा हो गयी। मां की बातों के कारण तो इतना अधिक ऐसा नहीं हुआ, जितना इस वजह से कि वह कोन्स्तान्तीन लेविन का भाई था। कीटी के लिये ये दोनों व्यक्ति सहसा अत्यधिक अप्रिय हो गये। सिर को झटकने की अपनी आदत के कारण यह लेविन अब कीटी के हृदय में अदम्य घृणा-भाव पैदा करता।

कीटी को लगता कि उसकी बड़ी-बड़ी और भयानक आंखें, जो

उसे एकटक देखती रहती थीं, नफ़रत और व्यंग्य का भाव व्यक्त करती हैं और वह इस कोशिश में रहती कि उससे मुलाक़ात न हो।

(३१)

बुरे मौसम का दिन था, सुबह से पानी बरस रहा था और छतरियां लिये हुए रोगी गैलरी में जमा थे।

कीटी अपनी मां और मास्कोवासी कर्नल के साथ, जो फ़्रैंकफ़ुर्ट में ख़रीदे गये सिले-सिलाये यूरोपीय ढंग के फ़्राक-कोट की बड़ी ख़ुशी से नुमाइश कर रहा था, गैलरी में टहल रही थी। ये तीनों गैलरी के एक ओर टहल रहे थे और इस तरह दूसरी ओर चल रहे लेविन से बचने की कोशिश करते थे। वारेन्का अपना काला फ़्राक और नीचे की ओर मुड़े हुए किनारोंवाली काली टोपी पहने एक अंधी फ़्रांसीसी नारी के साथ सारी गैलरी का चक्कर लगाती थी और हर बार ही जब कीटी सामने आती, तो वे मैत्रीपूर्ण दृष्टि से एक-दूसरी को देखतीं।

"मां, मैं इससे बात कर सकती हूं?" अपनी अपरिचिता की ओर देखती और यह महसूस करती हुई कि वह जल-स्रोत के पास आ रही है और वहां वे मिल सकती हैं, उसने पूछा।

"हां, अगर तुम ऐसा चाहती हो, तो मैं ख़ुद उसके बारे में पहले जानकारी प्राप्त करके बात कर लेती हूं," मां ने उत्तर दिया। "क्या ख़ास चीज़ पा ली है तुमने उसमें? कोई सहचरी ही होगी। यदि चाहती हो, तो मैं मदाम श्ताल से परिचय कर लेती हूं। मैं उसकी belle soeur* को जानती थी," मां ने गर्व से सिर ऊपर उठाते हुए इतना और कह दिया।

कीटी को मालूम था कि उसकी मां इस बात से नाराज़ है कि मदाम श्ताल मानो उससे परिचय करने से कतराती है। कीटी ने अपनी बात पर ज़ोर नहीं दिया।

"कितनी अद्भुत, कैसी प्यारी है!" उसने वारेन्का की ओर देखते हुए कहा, जो उस समय फ़्रांसीसी नारी को पानी से भरा

---

* भाभी। (फ़्रांसीसी)

गिलास दे रही थी। "देखिये तो कितनी सादगी और मधुरता है उसमें।"

"तुम्हारे ऐसे engouements* पर मुझे हंसी आती है," प्रिंसेस ने कहा। "यही अच्छा होगा कि वापस चलें," अपनी भगिनी और एक जर्मन डाक्टर के साथ लेविन को अपनी तरफ आते देखकर उसने कहा। लेविन डाक्टर को ऊंची और झल्लाई हुई आवाज में कुछ कह रहा था।

वे वापस जाने के लिये मुड़े ही थे कि अचानक ऊंची बातचीत नहीं, बल्कि चिल्लाहट सुनाई दी। लेविन वहीं रुककर चिल्ला रहा था और डाक्टर भी गुस्से से लाल-पीला हो रहा था। उनके गिर्द लोगों की भीड़ जमा होने लगी थी। प्रिंसेस और कीटी जल्दी से खिसक चलीं, लेकिन कर्नल यह जानने के लिये कि क्या मामला है, भीड़ में जा खड़ा हुआ।

कुछ मिनट बाद कर्नल उनसे आ मिला।

"क्या हुआ था वहां?" प्रिंसेस ने पूछा।

"बहुत शर्म और बेइज्जती की बात है!" कर्नल ने जवाब दिया। "एक ही चीज से डर लगता है – विदेश में कहीं रूसी से मुलाकात न हो जाये। उस लम्बे महाशय ने डाक्टर को भला-बुरा और यह कहने की हिम्मत की कि वह उसका ढंग से इलाज नहीं करता और उसे अपनी छड़ी तक उठाकर दिखाई। डूब मरने की बात है!"

"ओह, कितना बुरा हुआ यह!" प्रिंसेस ने कहा। "तो क्या अन्त हुआ इस किस्से का?"

"यही शुक्र समझिये कि इसी वक्त उस लड़की ने आकर दखल दे दिया क्या नाम है उसका वह जो खुमी जैसी टोपी पहने रहती है। रूसी लगती है," कर्नल ने कहा।

"M-lle वारेन्का?" कीटी ने खुश होते हुए पूछा।

"हां, हां। उसी ने सबसे पहले स्थिति को सम्भाला, उस महाशय की बांह थामकर वह उसे दूर ले गयी।"

"देखा, अम्मा," कीटी ने मां से कहा, "आप हैरान होती हैं कि मैं उस पर मुग्ध हुआ करती हूं।"

---

* आकर्षण। (फ्रांसीसी)

अगले दिन से अपनी इस अपरिचित सहेली की ओर ध्यान देते हुए कीटी ने देखा कि m-lle वारेन्का के लेविन और उसकी पत्नी के साथ भी वैसे ही सम्बन्ध हो गये हैं, जैसे अन्य protégés वालों उन लोगों के साथ थे, जिनकी वह चिन्ता करती थी। वह उनके पास जाती, उनसे बातचीत करती और उस नारी के लिये, जो कोई भी विदेशी भाषा नहीं जानती थी, दुभाषिये की भूमिका निभाती।

कीटी अपनी मां से वारेन्का के साथ जान-पहचान करने की अनुमति देने के लिये और अधिक अनुरोध करने लगी। प्रिंसेस को मदाम श्ताल के साथ, जो कुछ घमण्ड दिखा रही थीं, परिचय करने के मामले में पहले कदम उठाना बेशक नापसन्द था, फिर भी उन्होंने वारेन्का के बारे में जान-पड़ताल की और सारी तफसीलें मालूम करके इस नतीजे पर पहुंचीं कि उससे जान-पहचान करने में यदि कोई खास अच्छाई नहीं, तो कुछ बुराई भी नहीं है। इसके बाद उन्होंने स्वयं वारेन्का के पास जाकर उससे परिचय किया।

कीटी जब जल-स्रोत पर गयी थी और वारेन्का नानबाई की दुकान के सामने अकेली खड़ी थी, तो यह अच्छा मौका देखकर प्रिंसेस उसके करीब पहुंचीं।

"मैं आपसे परिचय करना चाहती हूं," प्रिंसेस ने अपनी गौरवमयी मुस्कान के साथ कहा। "मेरी बेटी तो आप पर लट्टू है," वह बोलीं। "शायद आप मुझे नहीं जानतीं। मैं ..."

"मैं खुद भी उन्हें बहुत चाहती हूं, प्रिंसेस," वारेन्का ने भटपट जवाब दिया।

"हमारे दयनीय हमवतन के लिये कितना भला काम किया कल आपने!" प्रिंसेस ने कहा।

वारेन्का लज्जारुण हो गयी।

"मुझे तो कुछ याद नहीं, लगता है कि मैंने तो कुछ नहीं किया," वारेन्का ने जवाब दिया।

"किया कैसे नहीं। आपने उस लेविन को कटु परिणामों से बचा लिया।"

"हां, sa compagne* ने मुझे पुकारा और मैंने लेविन को शान्त

---

* उसकी संगिनी। (फ्रांसीसी)

रने का यत्न किया। वह बहुत ज्यादा बीमार हैं और डाक्टर से बहुत नाराज़ थे। मुझे तो इन रोगियों की चिन्ता करने की आदत है।"

"हां, मैंने सुना है कि आप मेन्तोन में अपनी मौसी सम्भवत, मदाम श्ताल के साथ रहती है। मैं उनकी belle soeur को जानती थी।"

"नहीं, वह मेरी मौसी नहीं है। मैं उन्हें maman कहती हूं, लेकिन सगी बेटी नहीं हूं। उन्होंने मुझे पाला है," फिर से लज्जारुण होते हुए वारेन्का ने उत्तर दिया।

यह इतनी सादगी से कहा गया था और उसके चेहरे का भाव इतना सच्चा और निश्छल था कि प्रिंसेस को यह समझते देर न लगी कि कीटी वारेन्का को क्यों प्यार करने लगी थी।

"तो उस लेविन का क्या हुआ?" प्रिंसेस ने पूछा।

"वह यहां से जा रहे हैं," वारेन्का ने उत्तर दिया।

इसी समय इस खुशी से बाग-बाग होते हुए कि मां ने उसकी अज्ञात सहेली से जान-पहचान कर ली है, कीटी जल-स्रोत से इनके पास आई।

"तो कीटी, पूरी हो गयी तुम्हारी जान-पहचान करने की अति तीव्र इच्छा m-lle ..."

"वारेन्का से," वारेन्का ने मुस्कराकर प्रिंसेस की बात पूरी की, "मुझे सब ऐसे ही बुलाते हैं।"

कीटी का चेहरा खुशी से लाल हो गया और वह कुछ कहे बिना देर तक अपनी नई सहेली का हाथ दबाती रही। वारेन्का ने जवाब में कीटी का हाथ नहीं दबाया। उसका हाथ हिले-डुले बिना कीटी के हाथ में पड़ा रहा। हाथ ने तो हाथ का जवाब नहीं दिया, लेकिन m-lle वारेन्का का चेहरा शान्तिमय, प्रसन्नतापूर्ण, यद्यपि कुछ उदासी भरी मुस्कान के साथ खिल उठा और उसके बड़े-बड़े किन्तु सुन्दर दांतों की झलक मिली।

"मैं तो खुद बहुत अर्से से यही चाहती थी," वारेन्का ने कहा।

"लेकिन आप तो इतनी व्यस्त रहती है ..."

"अरे नहीं, इसके विपरीत मैं तो बिल्कुल व्यस्त नहीं रहती हूं," वारेन्का ने कहा, मगर इसी समय उसे अपने नये परिचितों

को छोड़कर जाना पड़ा, क्योंकि एक रूसी रोगी की ऊँची-ऊँची बच्चियाँ उसके पास आयी थीं।

"वारेन्का, माँ बुला रही हैं," किटी ने चिल्लाकर कहा।

और वारेन्का उसके पीछे-पीछे चल दी।

(३२)

प्रिंस श्चेर्बात्स्काया ने वारेन्का के अतीत और मदाम श्ताल के साथ उसके सम्बन्धों तथा खुद मदाम श्ताल के बारे में जो तफ़सीलें मालूम कीं, वे निम्न थीं।

मदाम श्ताल, जिसके बारे में कुछ लोगों का यह कहना था कि उसने अपने पति को बुरी तरह सताया था, मगर दूसरे यह कहते थे कि पति ने अपनी बदचलनी से उसके नाक में दम कर डाला था, हमेशा से ही बीमार तथा सनकी किस्म की औरत रही थी। पति से तलाक लेने के बाद ही उसने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा उसी वक्त मर गया और मदाम श्ताल के रिश्तेदारों ने, जो उसके अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव से परिचित थे और डरते थे कि इस खबर से कहीं उसकी मौत ही न हो जाये, उसी रात को पीटर्सबर्ग के उसी घर में शाही बावर्ची के परिवार में पैदा हुई बेटी को लाकर मरे हुए बच्चे की जगह लिटा दिया। यह वारेन्का थी। मदाम श्ताल को बाद में पता चल गया कि वारेन्का उसकी बेटी नहीं है, मगर वह उसका पालन-पोषण करती रही, खास तौर पर इसलिये भी कि जल्द ही वारेन्का का अपना कोई सगा-सम्बन्धी इस दुनिया में नहीं रह गया था।

मदाम श्ताल दस साल से अधिक समय से लगातार विदेश में दक्षिण में ही रह रही थी और उसने कभी अपना बिस्तर नहीं छोड़ा था। कुछ लोगों का कहना था कि मदाम श्ताल ने अपने को बहुत नेक और अत्यधिक धार्मिक नारी प्रकट करके ऊंची सामाजिक स्थिति प्राप्त कर ली है और दूसरों का यह मत था कि वह वास्तव में ही बहुत ऊंची नैतिकता वाली नारी है, जो अपने आस-पास के लोगों की भलाई करने के लिये ही जीती है, जैसा कि वह जाहिर करती है। कोई भी यह नहीं जानता था कि किस धर्म से उसका सम्बन्ध है, वह कैथोलिक,

प्रोटेस्टेन्ट या आर्थोडाक्स धर्म की अनुयायी है। मगर एक बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि सभी धर्मों और सम्प्रदायों के सबसे बड़े लोगो के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।

वारेन्का स्थायी रूप से उसके साथ विदेश मे रहती थी और जो लोग भी मदाम श्ताल को जानते थे, m-lle वारेन्का को भी, जैसा कि सभी उसे कहते थे, जानते और प्यार करते थे।

इन सभी तफसीलो को जानने पर प्रिंसेस को वारेन्का के साथ अपनी बेटी के दोस्ती करने मे कोई बुराई नजर नही आई। विशेष रूप से इसलिये भी कि वारेन्का बहुत ही अच्छा आचार-व्यवहार जानती थी और उसका बहुत अच्छा पालन-शिक्षण हुआ था – वह बढिया फ्रासीसी और अंग्रेजी बोलती थी तथा सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसने मदाम श्ताल की ओर से यह सन्देश दिया कि बीमारी के कारण वह प्रिंसेस से परिचित होने का सुख पाने मे असमर्थ है।

वारेन्का से जान-पहचान होने के बाद कीटी अपनी सहेली पर अधिकाधिक मुग्ध होती गयी और हर दिन ही उसे उसमे कोई नयी खूबी दिखाई देती।

यह मालूम होने पर कि वारेन्का अच्छा गाती है, प्रिंसेस ने उससे शाम को अपने यहा आकर गाना सुनाने का अनुरोध किया।

"कीटी पियानो बजाती है, हमारे यहा पियानो भी है, बहुत अच्छा तो नहीं, किन्तु हम बहुत आनन्दित होगी," प्रिंसेस ने अपनी बनावटी मुस्कान के साथ कहा, जो कीटी को इस वक्त खास तौर पर अच्छी नही लगी, क्योकि उसने महसूस किया कि वारेन्का की गाने की इच्छा नही थी। फिर भी वारेन्का स्वर-लिपियो की कापी लिये हुए शाम को आई। प्रिंसेस ने मारीया येव्गेन्येव्ना, उसकी बेटी और कर्नल को भी बुला लिया था।

वारेन्का ने इस बात की बिल्कुल परवाह नही की कि वहा कुछ अपरिचित लोग थे और फौरन पियानो के पास चली गयी। वह पियानो पर खुद अपनी संगत नही कर सकती थी, लेकिन स्वर-लिपि को देखकर अच्छा गा लेती थी। कीटी ने, जो अच्छा पियानो बजाती थी, उसके साथ संगत की।

"आप मे तो असाधारण प्रतिभा है," वारेन्का के बहुत

को छोड़कर जाना पड़ा, क्योंकि उस अभागे रोगी की नन्ही-नन्ही बच्चियां उसके पास भागी आई थीं।

"वारेन्का, माँ बुला रही है," किटी ने चिल्लाकर कहा।

और वारेन्का उसके पीछे-पीछे चल दी।

(३२)

किटी श्चेर्बात्स्काया ने वारेन्का के अतीत और मदाम श्ताल के साथ उसके सम्बन्धों तथा खुद मदाम श्ताल के बारे में जो बातें मालूम की वे निम्न थीं।

मदाम श्ताल, जिसके बारे में कुछ लोगों का यह कहना था कि उसने अपने पति को बुरी तरह सताया था, मगर दूसरे यह कहते थे कि पति ने अपनी बदचलनी से उसके नाक में दम कर डाला था, हमेशा से ही बीमार तथा सनकी किस्म की औरत रही थी। पति से तलाक लेने के बाद ही उसने अपने पहले बच्चे को जन्म दिया। यह बच्चा उसी वक्त मर गया और मदाम श्ताल के रिश्तेदारों ने, जो उसके अत्यधिक संवेदनशील स्वभाव से परिचित थे और डरते थे कि इस खबर से कहीं उसकी मौत ही न हो जाये, उसी रात को पीटर्सबर्ग के उसी घर में शाही बावर्ची के परिवार में पैदा हुई बेटी को लाकर मरे हुए बच्चे की जगह लिटा दिया। यह वारेन्का थी। मदाम श्ताल को बाद में पता चल गया कि वारेन्का उसकी बेटी नहीं है, मगर वह उसका पालन-पोषण करती रही, खास तौर पर इसलिये भी कि जल्द ही वारेन्का का अपना कोई सगा-सम्बन्धी इस दुनिया में नहीं रह गया था।

मदाम श्ताल दस साल से अधिक समय से लगातार विदेश में दक्षिण में ही रह रही थी और उसने कभी अपना बिस्तर नहीं छोड़ा था। कुछ लोगों का कहना था कि मदाम श्ताल ने अपने को बहुत नेक और अत्यधिक धार्मिक नारी प्रकट करके ऊंची सामाजिक स्थिति प्राप्त कर ली है और दूसरों का यह मत था कि वह वास्तव में ही बहुत ऊंची नैतिकता वाली नारी है, जो अपने आस-पास के लोगों की भलाई करने के लिये ही जीती है, जैसा कि वह जाहिर करती है। कोई भी यह नहीं जानता था कि किस धर्म से उसका सम्बन्ध है, वह कैथोलिक,

प्रोटेस्टेन्ट या आर्थोडाक्स धर्म की अनुयायी है। मगर एक बात बिल्कुल स्पष्ट थी कि सभी धर्मों और सम्प्रदायो के सबसे बडे लोगो के साथ उसके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे।

वारेन्का स्थायी रूप से उसके साथ विदेश मे रहती थी और जो लोग भी मदाम श्ताल को जानते थे, m-lle वारेन्का को भी, जैसा कि सभी उसे कहते थे, जानते और प्यार करते थे।

इन सभी तफसीलो को जानने पर प्रिसेस को वारेन्का के साथ अपनी बेटी के दोस्ती करने मे कोई बुराई नज़र नही आई। विशेष रूप से इसलिये भी कि वारेन्का बहुत ही अच्छा आचार-व्यवहार जानती थी और उसका बहुत अच्छा पालन-शिक्षण हुआ था – वह बढिया फ्रासीसी और अग्रेजी बोलती थी तथा सबसे बडी बात तो यह थी कि उसने मदाम श्ताल की ओर से यह सन्देश दिया कि बीमारी के कारण वह प्रिसेस से परिचित होने का सुख पाने मे असमर्थ है।

वारेन्का से जान-पहचान होने के बाद कीटी अपनी सहेली पर अधिकाधिक मुग्ध होती गयी और हर दिन ही उसे उसमे कोई नयी खूबी दिखाई देती।

यह मालूम होने पर कि वारेन्का अच्छा गाती है, प्रिसेस ने उससे शाम को अपने यहा आकर गाना सुनाने का अनुरोध किया।

"कीटी पियानो बजाती है, हमारे यहा पियानो भी है, बहुत अच्छा तो नही, किन्तु हम बहुत आनन्दित होगी," प्रिसेस ने अपनी बनावटी मुस्कान के साथ कहा, जो कीटी को इस वक्त खास तौर पर अच्छी नही लगी, क्योकि उसने महसूस किया कि वारेन्का की गाने की इच्छा नही थी। फिर भी वारेन्का स्वर-लिपियो की कापी लिये हुए शाम को आई। प्रिसेस ने मारीया येव्गेन्येव्ना, उसकी बेटी और कर्नल को भी बुला लिया था।

वारेन्का ने इस बात की बिल्कुल परवाह नही की कि वहा कुछ अपरिचित लोग थे और फौरन पियानो के पास चली गयी। वह पियानो पर खुद अपनी सगत नही कर सकती थी, लेकिन स्वर-लिपि को देखकर अच्छा गा लेती थी। कीटी ने, जो अच्छा पियानो बजाती थी साथ सगत की।

"आप में तो

ही अच्छे ढंग से पहला गाना गाने के बाद प्रिमेस ने कहा।

मारीया येव्गेन्येव्ना और उसकी बेटी ने वारेन्का को धन्यवाद दिया और उसकी प्रशंसा की।

"देखिये तो," कर्नल ने खिड़की में से झांकते हुए कहा, "आपको सुनने के लिये कितने लोग जमा हो गये हैं।" वास्तव में खिड़की के नीचे काफी भीड़ जमा हो गयी थी।

"मैं बहुत खुश हूं कि आपको अच्छा लग रहा है," वारेन्का ने सरलता से कहा।

कीटी ने अपनी सहेली की ओर गर्व से देखा। वह उसकी कला, उसकी आवाज और उसके चेहरे पर मुग्ध हो रही थी, लेकिन सबसे ज्यादा तो उसके इस अन्दाज से कि वारेन्का स्पष्टतः अपने गायन को कोई विशेष महत्व नहीं देती थी और अपनी प्रशंसा के प्रति सर्वथा उदासीन थी। वह तो मानो सिर्फ यही पूछ रही थी – और गाऊं या इतना ही काफी है?

"अगर इसकी जगह मैं होती," कीटी अपने बारे में सोच रही थी, "तो कितना नाज होता मुझे अपने पर! खिड़कियों के नीचे जमा भीड़ को देखकर कितनी खुशी हुई होती मुझे! मगर इसे कोई फर्क नहीं पड़ा। उसकी सिर्फ इतनी ही इच्छा है कि इन्कार न करे और maman को खुशी प्रदान करे। ऐसी क्या चीज है इसमें? क्या चीज इसे सभी चीजों की अवहेलना करने, ऐसे आत्मनिर्भर ढंग से शान्त रहने की शक्ति प्रदान करती है? यह जानने और इससे यह सीखने को मैं कितनी उत्सुक हूं," वारेन्का के शान्त चेहरे को देखती हुई कीटी सोच रही थी। प्रिमेस ने वारेन्का से और गाने को कहा तथा उसने पियानो के पास खड़े होकर अपने दुबले-पतले तथा सांवले हाथ से पियानो पर ताल देते हुए दूसरा गाना भी वैसे ही सधे, स्पष्ट और सुन्दर ढंग से गा दिया।

स्वर-लिपियों की कापी में अगला गाना इतालवी था। कीटी ने उसका प्रारम्भिक संगीत बजाया और वारेन्का की तरफ देखा।

"इसे छोड़ देते हैं," वारेन्का ने लजाते हुए कहा।

कीटी ने अपनी चिन्तित और प्रश्नसूचक दृष्टि वारेन्का के चेहरे पर जमा दी।

"तो दूसरा ही सही," उसने पृष्ठ उलटते और उसी क्षण यह समझते हुए कि इस गाने के साथ कुछ सम्बन्धित है झटपट कहा।

"नहीं," वारेन्का ने स्वर-लिपि पर अपना हाथ रखते और मुस्कराते हुए कहा, "नहीं, यही गाऊंगी।" और उसने पहले की भांति विचलित हुए बिना शान्त और अच्छे ढंग से इसे भी गा दिया।

गाना खत्म होने पर सबने फिर उसके प्रति आभार प्रकट किया और चाय पीने चले गये। कीटी और वारेन्का घर के पासवाले बगीचे में निकल गयीं।

"यह सच है न कि इस गाने के साथ आपकी कोई स्मृति जुड़ी हुई है?" कीटी ने पूछा। "आप मुझे इसके बारे में बतायें नहीं," जल्दी से इतना और जोड़ दिया, "सिर्फ यही कह दें कि यह सच है?"

"न बताने की कौन-सी बात है? मैं बताती हूं," वारेन्का ने साधारण ढंग से कहा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना कहती गयी "हां, कभी तो यह स्मृति बहुत बोझिल थी। मैं एक व्यक्ति को प्यार करती थी और उसे ही यह गाना सुनाया करती थी।"

कीटी बड़ी-बड़ी और फैली-फैली आंखों से चुपचाप और भाव-विह्वल होकर वारेन्का की ओर देख रही थी।

"मैं उसे प्यार करती थी और वह मुझे। लेकिन उसकी मां को यह पसन्द नहीं था और इसलिये उसने दूसरी लड़की से शादी कर ली। अब वह हमारे नज़दीक ही रहता है और मैं कभी-कभार उसे देखती हूं। आपने ऐसा नहीं सोचा होगा कि कभी मेरी ज़िन्दगी में भी प्यार आया था?" उसने कहा और उसके सुन्दर चेहरे पर वह हल्की-सी लौ चमक उठी, जो जैसा कि कीटी अनुभव कर रही थी, कभी उसके सारे व्यक्तित्व को रौशन करती थी।

"सोचा कैसे नहीं था? अगर मैं मर्द होती, तो आप को जानने के बाद अन्य किसी को प्यार ही न कर पाती। मैं समझ नहीं पा रही हूं कि अपनी मां की खुशी के लिये वह आपको कैसे भूल गया और उसने आपको दुख दिया – उसके सीने में दिल नहीं था।"

"और नहीं, वह बहुत अच्छा आदमी है और मैं दुखी नहीं, बल्कि बहुत सुखी हूं। तो क्या आज और गाना-बजाना नहीं होगा?" घर की ओर बढ़ते हुए उसने इतना और कहा।

"कितनी अच्छी, कितनी अच्छी हैं आप!" कीटी ज़ोर से कह उठी और उसे रोककर चूम लिया। "काश कि मैं थोड़ी-सी भी आपके समान होती!"

"किसी दूसरे के समान आप क्यों होना चाहती हैं? आप जैसी हैं, वैसी ही बहुत अच्छी हैं," अपनी विनम्र और अलस मुस्कान के साथ वारेन्का ने कहा।

"नहीं, मैं ज़रा भी अच्छी नहीं हूं। आप मुझे बताये... ठहरिये, आइये बैठ जाये," कीटी ने उसे फिर से बेंच पर अपने पास बिठाते हुए कहा। "कहिये, क्या यह सोचना अपमानजनक नहीं लगता कि किसी व्यक्ति ने आपका प्यार ठुकरा दिया, कि उसने आपको अपना नहीं बनाना चाहा?"

"नहीं, उसने ठुकराया नहीं। मुझे विश्वास है कि वह मुझे प्यार करता था, किन्तु आज्ञाकारी बेटा है..."

"लेकिन अगर उसने मां की इच्छा को पूरा करने के लिये नहीं, बल्कि ख़ुद ही ऐसा किया होता?" कीटी ने कहा और यह अनुभव किया कि उसने अपना राज़ खोल दिया है और शर्म से दहकते हुए उसके चेहरे ने उसका पर्दाफ़ाश कर डाला है।

"तब उसने बुरा किया होता और मुझे उसके लिये अफ़सोस न होता," वारेन्का ने उत्तर दिया और सम्भवतः वह समझ गयी थी कि अब उसकी नहीं, कीटी की चर्चा हो रही है।

"किन्तु अपमान?" कीटी ने कहा। "अपमान को नहीं भुलाया जा सकता, नहीं भुलाया जा सकता," अन्तिम बॉल में संगीत के रुक जाने पर अपनी दृष्टि को याद करते हुए उसने कहा।

"अपमान की कौन-सी बात है? आपने तो कोई बुरी बात नहीं की?"

"बुरी से भी बढ़कर – शर्मनाक।"

वारेन्का ने सिर हिलाया और कीटी के हाथ पर अपना हाथ रख दिया।

"शर्म किस बात की?" वारेन्का ने कहा। "आप उस व्यक्ति से, जो आपके प्रति उदासीन है, यह तो नहीं कह सकती थीं कि उसे प्यार करती हैं?"

"ज़ाहिर है कि नही। मैंने कभी एक भी शब्द नहीं कहा, लेकिन वह जानता था। नही, नही, कुछ ऐसी नज़रें, कुछ ऐसे अन्दाज़ भी होते हैं। मैं अगर सौ बरस भी जीती रही, तो भी इस बात को नही भूल पाऊगी।"

"लेकिन क्यो? मेरी समझ मे नही आ रहा। असली चीज़ तो यह है कि आप उसे अब प्यार करती है या नही," वारेन्का ने साफ़-साफ़ कह दिया।

"मैं उससे नफरत करती हू। मैं अपने को क्षमा नही कर सकती।"

"लेकिन क्यो?"

"शर्म, अपमान।"

"आह, काश सभी आपकी तरह सवेदनशील होते," वारेन्का ने कहा। "एक भी ऐसी लड़की नही होगी, जिसे ऐसा अनुभव न हुआ हो। यह सब महत्वहीन है।"

"तो महत्वपूर्ण क्या है?" कीटी ने जिज्ञासापूर्ण आश्चर्य से उसके चेहरे को गौर से देखते हुए पूछा।

"ओह, बहुत कुछ महत्वपूर्ण है," यह न समझ पाते हुए कि क्या कहे, वारेन्का ने उत्तर दिया। लेकिन इसी समय खिड़की से प्रिंसेस की आवाज़ सुनाई दी

"कीटी, ठण्ड हो गयी है! या तो शाल ले जाओ या भीतर आ जाओ।"

"हा सचमुच, चलने का वक्त हो गया!" वारेन्का ने उठते हुए कहा। "मुझे अभी m-me Berthe के यहा भी जाना है, उन्होने आने का अनुरोध किया है।"

कीटी उसका हाथ थामे रही और उसकी जिज्ञासापूर्ण तथा अनुनय करती हुई दृष्टि पूछ रही थी "क्या है वह, क्या है वह सबसे महत्वपूर्ण चीज़, जो ऐसा चैन देती है? आप जानती हैं, बताये मुझे।" लेकिन वारेन्का तो यह समझ भी नही पाई कि कीटी की नज़र उससे क्या पूछ रही है। उसे तो केवल यही याद था कि अभी m-me Berthe के यहा जाना है और रात के बारह बजने से पहले घर पहुचकर maman को चाय देनी है। वह कमरे में गयी, स्वर-लिपिया उठाई और सबसे विदा लेकर जाने को हुई।

धन्यवाद, हो तो मैं अब की छोड़ जाऊं ... कीटी ने कहा।

'हाँ, पर रात को आप अकेली कैसे जायेंगी?' तिमोन ने कहा। और कुछ नहीं, तो मैं अपनी नौकरानी परशा को ही भेज देती हूँ।"

कीटी ने देखा कि छोड़ने के लिये जाने के बारे में शब्द सुनते हुए वारेन्का ने बड़ी मुश्किल से अपनी मुस्कान पर काबू पाया।

नहीं, मैं हमेशा अकेली जाती हूं और मेरे साथ कभी कुछ नहीं होता," उसने टोपी उठाते हुए कहा। कीटी को एक बार फिर चूमकर और यह बताये बिना ही कि महत्वपूर्ण चीज क्या है, वह बगल में स्वर-लिपियां दबाये फुर्ती से बाहर निकली, गर्मी की रात के हल्के अंधेरे में गायब हो गयी और यह रहस्य अपने साथ ही ले गयी कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या उसे यह गरिमा और शान्ति प्रदान करता है, जिससे ईर्ष्या हो सकती है।

(३३)

कीटी ने मदाम श्ताल से परिचय कर लिया और इस जान-पहचान तथा वारेन्का के साथ दोस्ती ने न केवल उसे बहुत प्रभावित ही किया, बल्कि उसके घाव पर मरहम भी रख दिया। उसे यह सान्त्वना इस चीज में मिली कि इसकी बदौलत उसके सामने एक ऐसी बिल्कुल नई दुनिया का उद्घाटन हुआ, जिसमें उसकी अतीत की दुनिया जैसा कुछ भी नहीं था। यह बहुत ऊंची और अद्भुत दुनिया थी, जिसकी ऊंचाई से इस अतीत पर चैन से दृष्टि डाली जा सकती थी। उसे यह मालूम हुआ कि सहज वृत्ति की दुनिया के अलावा, वह अब तक जिसके वश में रही थी, एक आत्मिक जीवन भी था। धर्म ने उसके सामने ऐसे जीवन के द्वार खोले। किन्तु उस धर्म ने, जो उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखता था, जिससे कीटी बचपन से परिचित थी और जो गिरजाघर में दोपहर तथा शाम की प्रार्थना करने, वहां लोगों से मिलने-जुलने तथा पादरी के साथ स्लाव भाषा में इंजील पढ़ने के अलावा और कुछ नहीं था। यह नया धर्म ऊंचा और रहस्यपूर्ण तथा कुछ श्रेष्ठ विचारों भावनाओं से सम्बन्धित था, जिस पर केवल इसलिये विश्वास

नहीं किया जा सकता था कि ऐसा करने का आदेश दिया गया था, बल्कि जिसे प्यार करना भी सम्भव था।

कीटी ने शब्दों से ही यह सब नहीं जाना था। मदाम श्ताल कीटी से ऐसे प्यारे बच्चे की तरह बातचीत करती थी, जिसे देखकर अपनी जवानी की यादें ताजा हो जाती हैं। सिर्फ एक बार ही उसने इस बात का उल्लेख किया कि लोगों के सभी दुख-दर्दों में केवल प्यार और आस्था ही सान्त्वना प्रदान करते हैं और ईसा की दया के लिये कोई भी दुख-दर्द तुच्छ नहीं होता। इतना कहने के फौरन बाद ही उसने बातचीत का विषय बदल दिया। किन्तु कीटी ने उसकी हर गतिविधि, हर शब्द, हर आसमानी दृष्टि-क्षेप में, जैसा कि कीटी उसकी दृष्टि के बारे में कहती थी, तथा विशेषतः वारेन्का से सुनी हुई उसकी जीवन-गाथा से यह जान लिया कि "महत्वपूर्ण चीज़ क्या है" और जिसे वह अब तक नहीं जानती थी।

किन्तु मदाम श्ताल का चरित्र चाहे कितना ही ऊंचा क्यों न था, उसकी सारी कहानी चाहे कितनी ही मर्मस्पर्शी क्यों न थी, उसकी वाणी चाहे कितनी ही उत्कृष्ट तथा कोमल क्यों न थी, कीटी को अनचाहे ही उसमें कुछ ऐसे लक्षण दिखाई दिये, जिनसे उसे परेशानी हुई। उसने देखा कि उसके रिश्तेदारों के बारे में पूछे जाने पर मदाम श्ताल ऐसे तिरस्कारपूर्वक मुस्कराई, जो ईसाई धर्म की कल्याणकारी भावना के अनुरूप नहीं था। उसने यह भी देखा कि एक दिन मदाम श्ताल के यहां एक कैथोलिक पादरी के आने पर वह बड़े यत्न से लैम्प के शेड में अपना चेहरा किये रही और मुस्कराती भी खास ढंग से थी। इन दोनों बातों के मामूली होने पर भी कीटी को उनसे परेशानी हुई और मदाम श्ताल के बारे में कुछ सन्देहों ने उसके दिल में सिर उठा लिया। किन्तु दूसरी ओर एकदम अकेली, रिश्तेदारों और मित्रों के बिना तथा प्यार में निराश होने के बावजूद कुछ भी न चाहने तथा किसी भी बात की शिक्वा-शिकायत न करनेवाली वारेन्का उस पूर्णता का आदर्श रूप थी, जिसकी कीटी कल्पना भी नहीं कर सकती थी। वारेन्का के उदाहरण से वह यह समझ गयी कि अपने को भूलने और दूसरों को प्यार करने की ही देर है कि वह अपने को शान्त, सुखी और बहुत अच्छी अनुभव करने लगेगी। कीटी ऐसी ही बनना चाहती

थी। अब अच्छी तरह से यह समझने के बाद कि "सबसे महत्वपूर्ण चीज़ क्या है" कीटी ने इस पर मुग्ध होने तक ही अपने को सन्तुष्ट नहीं कर लिया, बल्कि उसी क्षण पूरे मन से अपने सम्मुख उद्घाटित होनेवाले इस नये जीवन को अपना व्यक्तित्व समर्पित कर दिया। मदाम श्ताल और दूसरी नारियों के बारे में कहानियों के आधार पर, जिनका वारेन्का उल्लेख करती थी, कीटी ने अपने जीवन की भावी योजना बना ली। मदाम श्ताल की भानजी Aline की तरह, जिसके बारे में वारेन्का ने बहुत कुछ बताया था, वह भी हर जगह किस्मत के मारों को ढूंढेगी, उनकी यथाशक्ति सहायता करेगी, उनमें इजील की प्रतियां बांटेगी, बीमारों, अपराधियों और मरते हुओं को इजील पढ़कर सुनायेगी। अपराधियों को इजील पढ़कर सुनाने का विचार, जैसा कि Aline करती थी, उसे विशेषतः रुचा। किन्तु ये सब गुप्त योजनायें थीं, जिनका कीटी ने न तो अपनी मां और न वारेन्का से ही ज़िक्र किया।

वैसे तो बड़े पैमाने पर अपनी योजनाओं को अमली शक्ल देने के वक्त का इन्तज़ार करते हुए कीटी अभी, यहां जल-चिकित्सा नगरी में भी, जहां बहुत-से रोगी और दुखी लोग थे, वारेन्का के ढंग से अपने नये उसूलों को व्यवहार में लाने के बड़ी आसानी से मौके ढूंढ लेती थी।

शुरू में तो प्रिंसेस ने सिर्फ़ इसी बात की तरफ़ ध्यान दिया कि कीटी मदाम श्ताल और विशेषतः वारेन्का की ओर अपनी engouement के, जैसा कि वह कहती थी, बहुत अधिक प्रभाव में है। उन्होंने देखा कि कीटी न केवल अपने कार्य-कलापों, बल्कि चलने-फिरने, बातचीत करने और आंखें झपकाने के ढंग में भी अनजाने ही वारेन्का की नकल करती है। किन्तु बाद में प्रिंसेस ने यह भी देखा कि इस मुग्धता के अलावा बेटी में कोई गम्भीर आत्मिक परिवर्तन भी हो रहा है।

प्रिंसेस ने देखा कि कीटी शामों को मदाम श्ताल द्वारा उसे भेंट की गयी फ्रांसीसी भाषा की इजील पढ़ती है, जो वह पहले नहीं करती थी, कि वह ऊंचे समाज के परिचितों से कन्नी काटती है तथा उन रोगियों से मिलती-जुलती है, जो वारेन्का के संरक्षण में थे। रोगी और गरीब चित्रकार पेत्रोव के परिवार से तो विशेष रूप से मर्माक में आती थी। कीटी स्पष्टतः इस बात पर गर्व करती थी कि इस परिवार में वह मर्म का कर्तव्य पूरा करती है। यह सब कुछ अच्छा था और

प्रिंसेस इसके बिल्कुल खिलाफ नहीं थीं, खास तौर पर इसलिये कि पेत्रोव की बीवी एक वाइज्जत औरत थी और जर्मन राजकुमारी ने कीटी की गतिविधियों की ओर ध्यान देते हुए उसे फरिश्ता कहकर उसकी तारीफ की थी। अगर अति न होती, तो यह सब कुछ बहुत अच्छा होता। किन्तु प्रिंसेस ने देखा कि उनकी बेटी अति की सीमा की ओर जा रही है और इसी की उन्होंने उसे चेतावनी दी।

"Il ne faut jamais rien outrer*," उन्होंने कीटी से कहा।

परन्तु बेटी ने मा को कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह तो केवल मन ही मन यह सोचती रही कि ईसाई धर्म से सम्बन्धित मामलों में अति की बात करना उचित नहीं। उस शिक्षा के अनुसरण में अति हो ही कहा सकती है, जिसमें यह कहा गया है कि अगर तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारा गया है, तो तुम दूसरा गाल सामने कर दो जब ट उतारा जाता है, तो कमीज भी दे दो? किन्तु प्रिंसेस को उसका प अति की ओर बढ़ना पसन्द नहीं था तथा इससे भी ज्यादा यह पसन्द ही था कि कीटी, जैसा कि प्रिंसेस अनुभव करती थी, उनके सामने पना दिल नहीं खोलना चाहती थी। वास्तव में कीटी ने अपने दृष्टि ोणों और भावनाओं को मा से छिपा रखा था। उसने इसलिये ऐसा ही किया था कि अपनी मा को प्यार या उनका आदर नहीं करती ी, बल्कि इसलिये कि वे उसकी मा थीं। वह मा की तुलना में किसी के सामने भी उन्हें आसानी से प्रकट कर देती।

"न जाने क्यों, आन्ना पाव्लोव्ना बहुत दिनों से हमारे यहा नहीं आई," प्रिंसेस ने एक दिन पेत्रोव की पत्नी के बारे में कहा। "मैंने उसे बुलवाया था। लेकिन वह तो जैसे किसी वजह से नाखुश है।"

"नहीं, मुझे तो ऐसा कुछ दिखाई नहीं दिया maman," कीटी ने शर्म से लाल होते हुए कहा।

"बहुत दिनों से तुम उनके यहां नहीं गयी क्या?"

"हम कल पहाड़ों पर सैर करने के लिये जा रहे हैं," कीटी ने जवाब दिया।

"ठीक है, जाओ," प्रिंसेस ने बेटी के परेशान चेहरे को ध्यान

---

* किसी भी चीज में अति अच्छी नहीं। (फ्रांसीसी)

से देखते और उसकी परेशानी के कारण का अनुमान लगाते हुए कहा।
इसी दिन वारेन्का दोपहर के खाने पर आई और उसने बताया कि आन्ना पाव्लोव्ना ने अगले दिन पहाड़ों पर सैर के लिये जाने का इरादा बदल लिया है। प्रिंसेस ने फिर से इस बात की तरफ ध्यान दिया कि कीटी के चेहरे पर लाली दौड़ गयी है।

"कीटी, पेत्रोव परिवार से तुम्हारे साथ कोई अप्रिय बात तो नहीं हो गयी है?" जब मां-बेटी अकेली रह गयीं, तो प्रिंसेस ने पूछा। "उसने हमारे यहां बच्चों को भेजना और खुद आना भी क्यों बन्द कर दिया?"

कीटी ने जवाब दिया कि उनके बीच कोई ऐसी बुरी बात नहीं हुई और वह बिल्कुल यह नहीं समझ पा रही है कि आन्ना पाव्लोव्ना किस कारण उससे मानो नाराज है। कीटी ने बिल्कुल सच्ची बात कही थी। अपने प्रति आन्ना पाव्लोव्ना के बदले हुए रवैये का कारण वह नहीं जानती थी, मगर अनुमान लगाती थी। वह ऐसी बात का अनुमान लगाती थी, जो वह न केवल मां से, बल्कि खुद से भी नहीं कह सकती थी। यह ऐसी बातों में से एक थी, जिसे आदमी जानता होता है, मगर खुद से भी नहीं कह पाता – भूल हो जाने पर बहुत भयावह और लज्जाजनक स्थिति हो सकती है।

कीटी ने इस परिवार के साथ अपने सम्बन्धों पर बार-बार गौर किया। उसे याद आया कि कैसे भेंट होने पर आन्ना पाव्लोव्ना के गोरे और दयालु चेहरे पर भोली-भाली खुशी का भाव आ जाता था। उसे याद आई रोगी के बारे में हुई उनकी गुप्त बातें, उनका यह षड्यन्त्र कि रोगी को काम से, जिसकी डाक्टरों ने मनाही कर दी थी, कैसे हटाया और घूमने के लिये ले जाया जाये। अपने प्रति छोटे लड़के के लगाव का भी ध्यान आया, जो उसे "मेरी कीटी" कहता था और उसके बिना सोना नहीं चाहता था। कितना अच्छा था यह सब! उसके बाद उसे स्मरण हो आया कत्थई रंग के फ्राक-कोट में पेत्रोव की दुबली-पतली आकृति का, उसकी लम्बी गर्दन का, विरले घुंघराले बालों का, कुछ पूछती-सी नीली आंखों का, जो शुरू में कीटी को भयानक लगती थीं, और उसकी उपस्थिति में उसके प्रफुल्ल दिखाई देने के कष्टप्रद प्रयासों का। उसे याद आया कि [illegible] के सभी मरीजों

की भांति पेत्रोव के प्रति अनुभव होनेवाली अपनी घिन पर काबू पाने के लिये कैसे उसे अपने को मजबूर करना पड़ा था और कितनी कोशिश से वह यह सोचा करती थी कि उससे क्या कहे। उसे उसकी वह सहमी और स्नेहपूर्ण दृष्टि की भी, जिससे पेत्रोव उसे देखता था, सहानुभूति और अटपटेपन की अजीब भावना तथा अपनी परोपकारिता की उस चेतना की भी याद हो आई, जो कीटी उस समय अनुभव किया करती थी। कितना अच्छा था यह सब! किन्तु यह सब तो शुरू में था। अब, कुछ दिन पहले सब कुछ अचानक बिगड़ गया था। आन्ना पाव्लोव्ना बनावटी अनुग्रह से कीटी का स्वागत करती और लगातार अपने पति तथा कीटी पर नज़र रखती।

"मेरे उसके नज़दीक होने पर वह जिस मर्मस्पर्शी प्रसन्नता को अनुभव करता है, क्या आन्ना पाव्लोव्ना के मेरे प्रति उदासीन हो जाने का यही तो कारण नहीं है?"

"हां," कीटी को याद आया, "तीन दिन पहले जब उसने दुखी होते हुए यह कहा था – 'आपकी ही राह देख रहा है, आपके बिना कॉफी पीना नहीं चाहता, यद्यपि बेहद कमज़ोर हो गया है,' तो आन्ना पाव्लोव्ना के अन्दाज़ में कुछ अस्वाभाविक और ऐसा था, जो उसके दयालु स्वभाव से मेल नहीं खाता था।"

"हां, सम्भव है कि मेरा उसे कम्बल देना आन्ना पाव्लोव्ना को अच्छा न लगा हो। यह बहुत मामूली-सी बात थी, किन्तु उसने उसे इतने अटपटे ढंग से लिया, इतनी देर तक आभार प्रकट किया कि खुद मुझे भी अटपटापन महसूस होने लगा था। फिर वह मेरा छविचित्र, जो उसने इतना सुन्दर बनाया है। और सबसे प्रमुख बात उसकी वह नज़र है – सहमी-सहमी और प्यार भरी! हां, हां, ऐसा ही है!" बहुत त्रस्त होते हुए कीटी ने मन ही मन दोहराया। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं होना चाहिये! वह इतना दयनीय है!" एक क्षण बाद उसने अपने आपसे कहा।

इस सन्देह ने उसके नये जीवन की खुशी को विषाक्त कर दिया।

से देखने और उसकी परेशानी के कारण का अनुमान लगाते हुए कहा।

इसी दिन वारेन्का शेर्बात्स्की के मकान पर आई और उसने बताया कि आन्ना पाव्लोव्ना ने अपने दिन पहाड़ों पर सैर के लिये जाने का इरादा बदल दिया है। प्रिंसेस ने फिर से इस बात की तरफ ध्यान दिया कि कीटी के चेहरे पर लाली दौड़ गयी है।

कीटी, पेत्रोव परिवार से तुम्हारे साथ कोई अप्रिय बात तो नहीं हो गयी है? जब मां-बेटी अकेली रह गयीं, तो प्रिंसेस ने पूछा। "उसने हमारे यहां बच्चों को भेजना और खुद आना भी क्यों बन्द कर दिया?"

कीटी ने जवाब दिया कि उनके बीच कोई ऐसी बुरी बात नहीं हुई और वह बिल्कुल यह नहीं समझ पा रही है कि आन्ना पाव्लोव्ना किस कारण उससे मानो नाराज है। कीटी ने बिल्कुल सच्ची बात कही थी। अपने प्रति आन्ना पाव्लोव्ना के बदले हुए रवैये का कारण वह नहीं जानती थी, मगर अनुमान लगाती थी। वह ऐसी बात का अनुमान लगाती थी, जो वह न केवल मां से, बल्कि खुद से भी नहीं कह सकती थी। यह ऐसी बातों में से एक थी, जिसे आदमी जानता होता है, मगर खुद से भी नहीं कह पाता – भूल हो जाने पर बहुत भयावह और लज्जाजनक स्थिति हो सकती है।

कीटी ने इस परिवार के साथ अपने सम्बन्धों पर बार-बार ग़ौर किया। उसे याद आया कि कैसे भेंट होने पर आन्ना पाव्लोव्ना के गोल और दयालु चेहरे पर भोली-भाली खुशी का भाव आ जाता था। उसे याद आई रोगी के बारे में हुई उनकी गुप्त बातें, उनका यह षड्यन्त्र कि रोगी को काम से, जिसकी डाक्टरों ने मनाही कर दी थी, कैसे हटाया और घूमने के लिये ले जाया जाये। अपने प्रति छोटे लड़के के लगाव का भी ध्यान आया, जो उसे "मेरी कीटी" कहता था और उसके बिना सोना नहीं चाहता था। कितना अच्छा था यह सब! इसके बाद उसे स्मरण हो आया कत्थई रंग के फ्राक-कोट में पेत्रोव की दुबली-पतली आकृति का, उसकी लम्बी गर्दन का, विरले घुंघराले बालों का, कुछ पूछती-सी नीली आंखों का, जो शुरू में कीटी को भयानक लगती थी, और उसकी उपस्थिति में उसके प्रफुल्ल दिखाई देने के कष्टप्रद प्रयासों का। उसे याद आया कि तपेदिक के सभी मरीज़ों

की भांति पेत्रोव के प्रति अनुभव होनेवाली अपनी घिन पर काबू पाने के लिये कैसे उसे अपने को मजबूर करना पड़ा था और कितनी कोशिश से वह यह सोचा करती थी कि उससे क्या कहे। उसे उसकी वह सहमी और स्नेहपूर्ण दृष्टि की भी, जिससे पेत्रोव उसे देखता था, सहानुभूति और अटपटेपन की अजीब भावना तथा अपनी परोपकारिता की उग्र चेतना की भी याद हो आई, जो कीटी उस समय अनुभव किया करती थी। कितना अच्छा था यह सब! किन्तु यह सब तो शुरू में था। अब, कुछ दिन पहले सब कुछ अचानक बिगड़ गया था। आन्ना पाव्लोव्ना बनावटी अनुग्रह से कीटी का स्वागत करती और लगातार अपने पति तथा कीटी पर नज़र रखती।

"मेरे उसके नज़दीक होने पर वह जिस मर्मस्पर्शी प्रसन्नता को अनुभव करता है, क्या आन्ना पाव्लोव्ना के मेरे प्रति उदासीन हो जाने का यही तो कारण नहीं है?"

"हां," कीटी को याद आया, "तीन दिन पहले जब उसने दुखी होते हुए यह कहा था – 'आपकी ही राह देख रहा है, आपके बिना कॉफी पीना नहीं चाहता, यद्यपि बेहद कमज़ोर हो गया है,' तो आन्ना पाव्लोव्ना के अन्दाज़ में कुछ अस्वाभाविक और ऐसा था, जो उसके दयालु स्वभाव से मेल नहीं खाता था।"

"हां, सम्भव है कि मेरा उसे कम्बल देना आन्ना पाव्लोव्ना को अच्छा न लगा हो। यह बहुत मामूली-सी बात थी, किन्तु उसने उसे इतने अटपटे ढंग से लिया, इतनी देर तक आभार प्रकट किया कि खुद मुझे भी अटपटापन महसूस होने लगा था। फिर वह मेरा छविचित्र, जो उसने इतना सुन्दर बनाया है। और सबसे प्रमुख बात उसकी वह नज़र है – सहमी-सहमी और प्यार भरी! हां, हां, ऐसा ही है!" बहुत त्रस्त होते हुए कीटी ने मन ही मन दोहराया। "नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, ऐसा नहीं होना चाहिये! वह इतना दयनीय है!" एक क्षण बाद उसने अपने आपसे कहा।

इस सन्देह ने उसके नये जीवन की खुशी को विषाक्त कर दिया।

जान-निकित्सा का कोर्स समाप्त होने के पहले ही प्रिस श्चेर्वात्स्की कार्ल्सबाद, फिर बादेन और किसिनगेन में अपने रूसी परिचितों के यहां जाने के बाद, जहां, उनके शब्दों में वे कुछ रूसी हवा का आनन्द लेने गये थे, अपने परिवार में लौट आये।

विदेश-जीवन के बारे में प्रिस और प्रिंसेस के दृष्टिकोण एक-दूसरे के सर्वथा प्रतिकूल थे। प्रिंसेस को विदेश की हर चीज बहुत बढ़िया लगती थी और रूसी समाज में अपनी दृढ़ स्थिति के बावजूद वे विदेश में अपने को यूरोपीय महिला जाहिर करने की कोशिश करती थीं, जो वे नहीं थीं, क्योंकि विशिष्ट रूसी महिला थीं। इसलिये उन्हें ढोंग-दिखावा करना पड़ता था और इस कारण वे परेशानी का शिकार होती थीं। इसके विपरीत प्रिस को विदेश में सब कुछ अटपटा लगता था, यूरोपीय जीवन उन्हें बोझिल प्रतीत होता था, वे अपनी रूसी आदतों से चिपके रहते थे और विदेश में जान-बूझकर अपने को उससे कहीं कम यूरोपीय जाहिर करते थे, जितने वास्तव में थे।

प्रिस कुछ दुबलाकर लौटे, उनके गालों की थैलियां लटक गयी थीं, मगर बहुत ही खुश थे। जब उन्होंने कीटी को बिल्कुल स्वस्थ देखा, तो उनकी खुशी का यह रंग और भी गाढ़ा हो गया। मदाम श्ताल और वारेन्का के साथ कीटी की दोस्ती की खबर और प्रिंसेस द्वारा दी गयी इस सूचना से कि उन्हें कीटी में कोई विशेष परिवर्तन होता दिखाई दे रहा है, प्रिस परेशान हो उठे थे और बेटी के अपने अतिरिक्त किसी भी अन्य चीज की ओर आकर्षित होने पर उनके दिल में सामान्य ईर्ष्या की भावना और यह डर पैदा हो गया था कि बेटी कहीं उनके प्रभाव से निकलकर ऐसे क्षेत्र में न चली जाये, जो उनकी पहुंच के बाहर हो। लेकिन ये सभी अप्रिय खबरें खुशमिज़ाजी और प्रफुल्लता के उस सागर में डूब गयीं, जो हमेशा उनमें लहराता था और जिसे कार्ल्सबाद के स्वास्थ्यप्रद जल ने और प्रबल कर दिया था।

लौटने के दूसरे ही दिन प्रिस अपना लम्बा ओवरकोट पहने, अपनी रूसी झुर्रियों और ढीले-ढाले गालों की झलक देते हुए, जिन्हें कलफ लगे कालर ने ऊपर उठा रखा था, बेटी को साथ

लेकर बहुत ही अच्छे मूड मे जल-स्रोतो की ओर चल दिये।

सुबह बहुत सुहावनी थी – छोटे-छोटे बगीचोवाले साफ-सुथरे और प्यारे घर, बीयर की शौकीन और खुशी-खुशी काम करती जर्मन परिचारिकाओ के लाल चेहरो और लाल बाहो तथा चमकते सूरज को देखकर मन खिल उठता था। किन्तु वे जल-स्रोतों के जितना अधिक निकट पहुंचते जा रहे थे, उतने ही अधिक रोगी उन्हे मिलते थे और जर्मनी के सुखी जीवन की सामान्य परिस्थितियो मे उनके चेहरे और भी अधिक दयनीय लगते थे। कीटी को तो इस असगति से अब कोई आश्चर्य नही होता था। उसके लिये चमकता सूरज, हरियाली की सुखद छटा और गूजते स्वर इन परिचित चेहरो और उनमे होनेवाले अच्छे-बुरे परिवर्तनो के, जिन पर वह नज़र रखती थी, आवश्यक अग थे। किन्तु प्रिस को जून के महीने की सुबह का यह उजाला और चमक, वाल्ज की खुशी भरी प्रचलित धुने बजाते हुए आर्केस्ट्रा की स्वर-लहरिया तथा खास तौर पर स्वस्थ नौकरानियो की सूरते यूरोप के कोने-कोने से यहा एकत्रित और ढीली-ढाली चाल से डग भरते हुए मुर्दो जैसे रोगियो की उपस्थिति मे बेहूदा और घिनौनी लगती थी।

अपनी प्यारी बेटी का हाथ थामकर चलते हुए प्रिस को बेशक गर्व और यौवन के लौट आने जैसी अनुभूति हो रही थी, फिर भी अपनी दृढ चाल तथा चर्बी चढे बडे-बडे अगो के कारण वे परेशानी और शर्म महसूस करने लगे थे। उन्हे कुछ ऐसा लग रहा था मानो वे नग-धडग होकर लोगो के बीच आ गये हो।

"मिलाओ, मिलाओ मुझे अपने नये दोस्तो से," कोहनी से बेटी का हाथ दबाते हुए प्रिस कह रहे थे। "मुझे तो तुम्हारा यह घिनौना सोडेन भी इसलिये अच्छा लगने लगा है कि इसने तुम्हे इतना स्वस्थ बना दिया है। मगर यहा उदासी, बडी उदासी महसूस होती है। यह कौन है?"

कीटी अपने पिता को मिलनेवाले परिचितो और अपरिचितो के नाम बता रही थी। बाग के दरवाज़े के पास ही राह दिखानेवाली औरत को साथ लिये अधी m-me Berthe से उनकी भेट हुई और कीटी की आवाज़ सुनकर बूढी फ्रासीसी औरत के चेहरे पर प्रकट होनेवाले स्नेहपूर्ण भाव देख कर प्रिस को खुशी हुई। वह उसी क्षण

अतिशय फ्रांसीसी नम्रता के साथ उनसे बात करने, इतनी अच्छी बेटी के लिये उनकी प्रशंसा करने तथा कीटी की उपस्थिति में ही उसकी तारीफों के पुल बांधने, उसे कीमती सजाना, मोती और सान्त्वना देनेवाला फरिश्ता कहने लगी।

"तो यह दूसरा फरिश्ता है," प्रिंस ने मुस्कराते हुए कहा। "वह m-lle वारेन्का को पहला फरिश्ता बताती है।"

"ओह! m-lle वारेन्का – वह असली फरिश्ता है, allez,"* m-me Berthe ने फौरन सहमति प्रकट की।

गैलरी में खुद वारेन्का से उनकी भेंट हो गयी। वह बढ़िया लाल पर्स हाथ में लिये तेज कदम बढ़ाती हुई सामने से आ रही थी।

"ये मेरे पापा आ गये!" कीटी ने वारेन्का से कहा।

वारेन्का ने हमेशा की तरह सादगी और स्वाभाविकता से प्रिंस का अभिवादन किया और उसी क्षण सरलता तथा संकोच के बिना उनसे बातचीत करने लगी, जैसे सभी से करती थी।

"निश्चय ही मैं आपको जानता हूं, बहुत अच्छी तरह जानता हूं," प्रिंस ने मुस्कराते हुए कहा, जिससे कीटी ने सहर्ष यह जान लिया कि पिता को उसकी मित्र अच्छी लगी है। "कहां जाने की उतावली में है आप?"

"Maman यहां हैं," उसने कीटी को सम्बोधित करते हुए कहा। "वे रात भर नहीं सोईं और डाक्टर ने उन्हें बाहर जाने की सलाह दी है। मैं उनका काम लिये जा रही हूं।"

"तो यह फरिश्ता नम्बर एक है!" वारेन्का के जाने के बाद प्रिंस ने कहा।

कीटी ने देखा कि वे वारेन्का का मजाक उड़ाना चाहते थे, लेकिन किसी तरह भी ऐसा नहीं कर पाये, क्योंकि वारेन्का उन्हें अच्छी लगी थी।

"तो तुम्हारे सभी मित्रों से मिल लेंगे," उन्होंने कहा। "मदाम श्ताल से भी, अगर वह मुझे पहचानने की मेहरबानी करेगी।"

"तुम क्या उन्हें जानते हो पापा?" मदाम श्ताल की चर्चा

---

*उसके बारे में तो कहना ही क्या है। (फ्रांसीसी)

"यह मेरी बेटी है," प्रिंस ने कहा। "आप से मिलकर खुशी हुई।"

चित्रकार ने सिर झुकाया और अप्रत्याशित रूप से सफेद सुन्दर दांतों की झलक देते हुए मुस्कराया। "प्रिंस, हम तब आपकी राह देखते रहे" चित्रकार ने बीवी से कहा।

यह कहते हुए वह लड़खड़ाया और अपनी लड़खड़ाहट को फिर से दोहराते हुए यह जाहिर करने की कोशिश की कि उसने जान-बूझकर ही ऐसा किया है।

"मैं आना चाहती थी किन्तु वारेन्का ने आन्ना पाव्लोव्ना की ओर से यह सन्देश दिया था कि आप लोग नहीं जायेंगे।"

"कैसे नहीं जायेंगे?" पेत्रोव ने गुस्से से लाल होने और इसी क्षण खांसने लगा आंखों से पत्नी को ढूंढ़ते हुए कहा। "आनेता, आनेता!" उसने बीवी को पुकारा और ऐसा करते समय उसकी गोरी और पतली गर्दन पर रस्सी जैसी मोटी-मोटी नसें तन गयीं।

आन्ना पाव्लोव्ना पास आई।

"कैसे तुमने प्रिंसेस को यह कहलवा दिया कि हम नहीं जायेंगे!" वह खरखरी-सी आवाज में गुस्से से फुसफुसाया।

"नमस्ते, प्रिंसेस!" आन्ना पाव्लोव्ना ने बनावटी मुस्कान के साथ, जो उसके पहले के अन्दाज से बिल्कुल भिन्न थी, कहा। "आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई," उसने प्रिंस को सम्बोधित किया। "बहुत दिनों से आपका इन्तजार हो रहा था, प्रिंस।"

"तुमने कैसे प्रिंसेस को यह कहलवा दिया कि हम नहीं जायेंगे?" चित्रकार और अधिक झल्लाहट से एक बार फिर खरखरी-सी आवाज में फुसफुसाया। स्पष्टतः वह इस कारण और भी अधिक खीझ महसूस कर रहा था कि आवाज उसका साथ नहीं दे रही थी और वह अपने शब्दों को वैसी अभिव्यक्ति नहीं दे पा रहा था, जैसी कि देना चाहता था।

"हे मेरे भगवान! मैंने सोचा था कि हम नहीं जायेंगे," बीवी ने चिड़चिड़ेपन से जवाब दिया।

"यह कैसे, कब..." वह खांसने लगा और उसने हाथ झटक दिया।

प्रिंस ने अपना टोप ऊपर उठाया और बेटी के साथ आगे बढ़ गये।

"ओह!" प्रिंस ने गहरी सांस ली, "कैसे किस्मत के मारे हैं ये।"

"हा, पापा," कीटी ने जवाब दिया। "और फिर इनके तीन बच्चे हैं, कोई नौकर-चाकर नही और साधन भी तो लगभग नहीं के बराबर है। अकादमी मे उसे कुछ पैसे मिलते है," कीटी बडे उत्साह से यह सब बता रही थी और ऐसे अपने प्रति आन्ना पाव्लोव्ना के रवैये मे हुए अजीब परिवर्तन के कारण उत्पन्न मानसिक उथल-पुथल पर काबू पाने की कोशिश कर रही थी।

"और यह रही मदाम श्ताल," कीटी ने पहियोंवाली आराम-कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर तकियो के सहारे भूरे और हल्के नीले रग के कपडो मे छतरी के नीचे कुछ लेटा हुआ-सा दिखाई दे रहा था।

यह मदाम श्ताल थी। उसके पीछे इस पहिया-कुर्सी को चलानेवाला हट्टा-कट्टा और खिन्न-सा जर्मन मजदूर खडा था। सुनहरे बालोवाला स्वीडिश काउट, कीटी जिसे नाम से जानती थी, श्ताल के नजदीक खडा था। कई रोगी इस पहिया-कुर्सी के पास रुककर एक अजूबे की तरह इस महिला को देख रहे थे।

प्रिस उसके निकट गये। इसी क्षण कीटी ने पिता की आखो मे उसे परेशान करनेवाली व्यग्यपूर्ण चमक देखी। मदाम श्ताल के पास जाकर वे बहुत ही शिष्ट और मधुर ढग से ऐसी बढिया फ़्रासीसी मे बोलने लगे, जैसी कि आजकल बहुत कम लोग बोल पाते हैं।

"मुझे मालूम नही कि आपको मेरा ध्यान है या नही, किन्तु अपनी बेटी के प्रति आपकी अनुकम्पा के लिये आभार प्रकट करने को मैं अपनी याद दिलाना चाहता हू," उन्होने अपना टोप उतारकर और उसे फिर से न पहनते हुए कहा।

"प्रिस अलेक्सान्द्र श्चेर्बात्स्की," मदाम श्ताल ने अपनी आसमानी आखो को उनकी ओर उठाते हुए कहा, जिनमे कीटी को अप्रसन्नता की झलक मिली। "बहुत खुशी है मुझे। आपकी बेटी से तो मुझे बहुत ही प्यार हो गया है।"

"आपका स्वास्थ्य अभी तक सुधरा नही?"

"मैं तो इसकी आदी हो गयी हू," मदाम श्ताल ने जवाब दिया और स्वीडिश काउट से प्रिस का परिचय करवाया।

"आप तो लगभग पहले जैसी ही है," प्रिस ने कहा। "मुझे

इस पर लगातार सत्र से धक्के देता? का सीमारा उत्तर नहीं हुआ।"

"हां, भगवान सलीब देता है और उसे उठाने की शक्ति भी देता है। पर सोचकर अचरज हैरान होती रहती हूं कि किसलिये यह जिन्दगी घिसटती चली जा रही है... दूसरी तरफ से!" मदाम श्ताल ने झुंझलाते हुए वारेन्का से कहा, जिसने उसके पैरों पर ठीक तरह से कम्बल नहीं ओढ़ाया था।

"मतलब, नेकी करने के लिये," प्रिंस ने आंखों से हंसते हुए कहा।

"यह निर्णय करना हमारा काम नहीं है," प्रिंस के चेहरे पर व्यंग्य का हल्का सा पुट भांपते हुए मदाम श्ताल ने कहा। "तो प्यारे काउंट, आप मुझे वह किताब भेज देंगे न? बहुत कृतज्ञ हूं आपकी," उसने जवान स्वीड को सम्बोधित करते हुए कहा।

"अरे आप!" अपने नजदीक खड़े हुए मास्को के कर्नल को देखकर प्रिंस कह उठे और मदाम श्ताल को सिर भुकाकर तथा बेटी और मास्को के कर्नल को साथ लेकर आगे बढ़ गये।

"ये हैं हमारे रईस लोग, प्रिंस!" चुटकी लेने की इच्छा से कर्नल ने कहा, जो मदाम श्ताल से इसलिये नाखुश था कि वह उससे परिचित नहीं थी।

"बिल्कुल पहले जैसी ही है," प्रिंस ने उत्तर दिया।

"आप क्या इसे बीमार होने यानी बिस्तर थाम लेने के पहले भी जानते थे?"

"हां। मेरे सामने ही उसकी ऐसी हालत हो गयी थी," प्रिंस ने कहा।

"कहते हैं कि वह दस साल से खड़ी नहीं हो पा रही है।"

"इसलिये खड़ी नहीं होती कि उसकी टांगें बहुत छोटी हैं। बहुत ही भद्दी बनावट है उसके जिस्म की..."

"पापा, ऐसा नहीं हो सकता!" कीटी चिल्ला उठी।

"दुष्ट लोग ऐसा ही कहते हैं, मेरी बिटिया। तुम्हारी वारेन्का को खूब भुगतना पड़ रहा है," उन्होंने इतना और कह दिया। "ओह, ये बीमार रईसजादियां!"

"ओह नहीं, ऐसी बात नहीं है, पापा!" कीटी ने बड़े जोश

उनकी दरियादिली से परिचित थे और आधा घण्टे बाद ऊपर की मंजिल पर रहनेवाले हैमबर्ग के बीमार डाक्टर को शाहबलूत के नीचे जमा होनेवाले स्वस्थ रूसी लोगों के इस जमघट को देखकर ईर्ष्या होने लगी। सफेद मेजपोश से ढकी मेज के करीब, जिस पर काफीदानियां, डबल रोटी, मक्खन, पनीर और पक्षियों का ठण्डा गोश्त रखा था, बैंगनी रंग के फीतों से सजी ऊनी टोपी पहने प्रिंसेस बैठी थी और लोगों को कॉफी के प्याले तथा सैंडविच दे रही थी। दूसरे सिरे पर बैठे हुए प्रिंस खूब डटकर खा तथा खुशी की तरंग में ऊंचे-ऊंचे बातें कर रहे थे। उन्होंने सभी जल-चिकित्सा केन्द्रों पर खरीदी गयी चीजें – नक्काशीवाले छोटे-छोटे डिब्बे, साधारण आभूषण और सभी तरह की कागज-काट छुरियां – अपने पास रख ली थी और लिसहेन नाम की नौकरानी तथा मकान-मालिक समेत उन्हें सभी को बांट रहे थे। वे अपनी हास्यास्पद रूप से बुरी जर्मन भाषा में मकान-मालिक के साथ मजाक कर रहे थे और उसे इस बात का यकीन दिला रहे थे कि चलित-जल ने नहीं, बल्कि उसके बढ़िया भोजन, खास तौर पर आलूबुखारे के शोरबे ने कीटी को स्वस्थ कर दिया था। प्रिंसेस अपने पति की कमो आदतों का मजाक उड़ा रही थी, किन्तु इतनी खुशी और इतने रंग-तरंग में थी, जितनी यहां आकर अपने जीवन में कभी नहीं हो पायी थी। कर्नल, जैसा कि सदा होता था, प्रिंस के मजाकों पर मुस्कराता था, मगर जहां तक यूरोप का सवाल था, जिसका, जैसा कि वह समझता था, गम्भीर अध्ययन करता था, प्रिंसेस के पक्ष में था। सरल मनवाली मारीया येव्गेन्येव्ना प्रिंस के हर मजाक पर हंसते-हंसते लोट-पोट होती थी और वारेन्का भी, जैसा कि कीटी ने पहले कभी नहीं देखा था, सभी को प्रभावित करनेवाले प्रिंस के मजाकों से हंसते-हंसते बेदम हो रही थी।

कीटी को इस सबसे खुशी मिल रही थी, मगर उसके लिये चिन्तित न होना सम्भव नहीं था। पिता ने अपने हास्यपूर्ण अन्दाज से उसकी सहेलियों तथा उस जीवन के बारे में, जिससे उसे प्यार हो गया था, अनचाहे ही जो सवाल उसके सामने पेश कर दिया था, वह उसे हल नहीं कर पा रही थी। पेत्रोव परिवार के मामले में उसके सम्बन्धों का परिवर्तन, जो आज इतने स्पष्ट और कटु रूप से प्रकट हुआ था,

भी होता है कि पचास कोपेक के लिये सारा महीना लिया जा सकता है और ऐसा भी कि किसी कीमत पर आधा घण्टा भी नहीं दिया जाये। ठीक है न प्यारी कीटी? तुम ऐसी उदास-सी क्यों हो?"

"नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं।"

"आप कहां चल दीं? कुछ देर और बैठिये," किटी ने वारेन्का से कहा।

"मुझे घर जाना चाहिये," वारेन्का ने उठते हुए कहा और फिर से हंसने लगी।

सन्तुलित होने पर उसने विदा ली और टोपी लेने के लिये घर के भीतर गयी। कीटी भी उसके पीछे-पीछे हो ली। उसे वारेन्का भी अब दूसरी लगती थी। वह बुरी नहीं हो गयी थी, लेकिन जिस रूप में वह पहले उसकी कल्पना करती थी, अब उससे भिन्न थी।

"ओह, एक जमाने से मैं ऐसे नहीं हंसी!" वारेन्का ने छतरी और थैला लेते हुए कहा। "कितने प्यारे हैं आपके पापा!"

कीटी चुप रही।

"हम कब मिलेंगी?" वारेन्का ने पूछा।

"Maman पेत्रोव दम्पति के यहां जाना चाह रही हैं। आप वहां नहीं होंगी?" कीटी ने वारेन्का से पूछा।

"मैं होऊंगी," वारेन्का ने जवाब दिया। "वे जाने की तैयारी कर रहे हैं और इसलिये मैंने सामान समेटने में उनका हाथ बटाने का वादा किया है।"

"तो मैं भी आऊंगी।"

"नहीं, आप किसलिये आयेंगी?"

"क्यों नहीं? क्यों नहीं? क्यों नहीं?" कीटी आंखों को फैलाते और वारेन्का को जाने से रोकने के लिये उसकी छतरी हाथ में लेते हुए कह उठी। "नहीं, रुकिये, क्यों न आऊं मैं?"

"इसलिये कि आपके पापा आ गये हैं और फिर आपकी उपस्थिति में वे संकोच भी अनुभव करते हैं।"

"नहीं, आप मुझे यह बताये—क्यों आप ऐसा नहीं चाहतीं कि मैं पेत्रोव परिवार में अक्सर जाया करूं? आप नहीं चाहती हैं न? मगर क्यों?"

ने नहीं कहा था। इसीलिये कि यह सब ढोंग है! ढोंग है! ढोंग है!

"लेकिन ढोंग किस उद्देश्य से?" वारेन्का ने धीमे से प्रश्न किया

"आह, कैसी हिमाकत है, कैसा घटियापन है! कोई जरूरत नहीं थी इसकी. सब ढोंग है!" कीटी ने छतरी खोलते और बन्द करते हुए कहा

"लेकिन किस उद्देश्य से?"

"इसलिये कि दूसरो की नजर मे अच्छी बन जाऊ, भगवान की नजर मे अच्छी बन जाऊ, सबकी आखो मे धूल झोक दू। नही, अब मैं इसके फेर मे नही पड़ूगी! बुरी रहूगी, मगर झूठी और कपटी तो नही बनूगी!"

"कौन कपटी है?" वारेन्का ने धिक्कारते हुए कहा। "आप ऐसे कह रही है, जैसे कि "

लेकिन कीटी को गुस्से का दौरा पडा हुआ था। उसने वारेन्का को उसकी बात पूरी नही करने दी।

"मैं आपके बारे मे, आपके बारे मे बिल्कुल नही कह रही हू। आप पूर्णता का रूप हैं। हा, हा, मैं जानती हू कि आप पूर्णता का रूप हैं। लेकिन अगर मैं बुरी हू, तो इसका क्या किया जाये? अगर मैं बुरी न होती, तो ऐसा कुछ न हुआ होता। इसलिये मैं जैसी हू, यही अच्छा है कि वैसी ही रहू मगर ढोंग नही करूगी। मेरा क्या सरोकार है आन्ना पाव्लोव्ना से! वे जैसे चाहे वैसे जियें, और मैं अपने ढग से। मैं दूसरी नही हो सकती यह सब वैसा नही है, वैसा नही है! "

"क्या वैसा नही है?" वारेन्का ने समझ न पाते हुए कहा।

"सब कुछ वैसा नही है। मै दिल के सिवा और किसी दूसरे ढग से नही जी सकती, लेकिन आप नियमो-उसूलो के मुताबिक जीती है। मुझे तो आपसे यो ही लगाव हो गया लेकिन आपने निश्चय ही केवल मुझे बचाने मुझे कुछ सिखाने के लिये ऐसा किया!"

"आप मेरे साथ अन्याय कर रही है," वारेन्का ने कहा।

"मै दूसरो के बारे मे कुछ नही कह रही हू, अपनी बात कह रही हू।"

"कीटी!" मा की आवाज सुनाई दी। "इधर आओ, पापा को अपना मूगे का हार दिखाओ।"

तीसरा भाग

(१)

...र्गेई इवानोविच कोज्निशेव ने दिमागी काम से आराम पाना चाहा और विदेश ... जैसा कि वह आम तौर पर करता था, मई के अन्त ... गाव आ गया। उसे विश्वास था कि गाव का जीवन ... जीवन था। वह अब इसी जीवन का आनन्द लेने के ...स आया। कोन्स्तान्तीन लेविन को बहुत खुशी हुई, ...सलिये कि इस गर्मी मे उसे अपने भाई निकोलाई के ...म्मीद नही थी। किन्तु कोज्निशेव के प्रति अपने सारे ... के बावजूद लेविन को गाव मे अपने भाई के साथ ...होती थी। गाव के प्रति भाई के रवैये से उसे परेशानी ...।, बुरा भी लगता था। लेविन के लिये गाव जीवन-...सुख-दुख और श्रम का स्थल, कोज्निशेव के लिये गाव ...*राम का स्थान और दूसरी ओर नगर के बुरे प्रभाव की* ... जिसका वह बडी खुशी से तथा उसके उपयोगी होने ...*थ सेवन करता था। लेविन के लिये गाव इसलिये* ... वह निश्चय ही उपयोगी श्रम की कर्म भूमि था, ...*ये गाव इसलिये खास तौर पर अच्छा था कि वहा* ...न करे और उसे करना भी नही चाहिये। इसके अलावा ...कोज्निशेव का रवैया लेविन को अच्छा नही लगता था। ... कि वह आम जनता को प्यार करता है और उसे

जानता-समझता है। वह अक्सर किसानों से बातचीत करता, जो वह किसी तरह की बनावट और अपने बड़प्पन के बिना अच्छे ढंग से कर पाता था, और अपनी हर ऐसी बातचीत से किसानों के पक्ष में तथा इस बात के प्रमाण के रूप में सामान्य निष्कर्ष निकालता कि वह जनता को जानता-समझता है। लेविन को किसानों के प्रति यह रवैया पसन्द नहीं था। उसके लिये किसान सामान्य श्रम का एक मुख्य सहभागी तत्त्व था, और किसानों के प्रति अपने सारे आदर-भाव तथा प्रेम के बावजूद, जो, जैसा कि वह खुद कहता था, उसे सम्भवतः किसान आया के दूध के साथ मिला था, वह साझे कार्य में भाग लेनेवाले के रूप में कभी-कभी तो इन लोगों की शक्ति, विनम्रता तथा न्याय-प्रियता पर मुग्ध हो उठता और बहुत अक्सर, जब साझे काम में दूसरे गुणों की आवश्यकता होती, इन किसानों की लापरवाही, गन्दगी, पियक्कड़पन और झूठ से झल्लाहट महसूस करता। लेविन से अगर यह पूछा जाता कि वह आम जनता को प्यार करता है या नहीं, तो निश्चय ही वह यह न तय कर पाता कि इसका क्या जवाब दे। वह किसानों को उसी तरह प्यार भी करता था और नहीं भी करता था, जैसे आम तौर पर सभी लोगों को। ज़ाहिर है कि एक दयालु व्यक्ति के रूप में वह लोगों को प्यार न करने के बजाय अधिक प्यार ही करता था और इसलिये किसानों पर भी यही बात लागू होती थी। विशेष ढंग से किसानों को प्यार करना या न करना उसके लिये सम्भव नहीं था, क्योंकि वह न केवल किसानों के साथ रहा था, न केवल उसके सारे हित उनके साथ सबद्ध थे, बल्कि अपने को आम जनता का अंग भी मानता था, खुद में तथा किसानों में कोई विशेष गुण-अवगुण नहीं देखता था और अपने को उनसे किसी तरह भिन्न नहीं प्रकट कर सकता था। इसके अलावा, बेशक बहुत समय तक मालिक, मध्यस्थ और विशेषतः सलाहकार के रूप में (किसान उस पर विश्वास करते थे और साठ किलोमीटर तक की दूरी से सलाह लेने के लिये उसके पास आते थे) बहुत अर्से से किसानों के साथ उसके बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहे थे, फिर भी किसानों के बारे में उसका कोई निश्चित मत नहीं था। इसलिये इस सवाल का जवाब देना कि वह किसानों को जानता-समझता है या नहीं वैसे ही मुश्किल होता है, जैसे इस सवाल का कि

भाई को अधिक निकटता मे जानता-समझता गया, त्यों-त्यों अपनी आत्मा की गहराई मे उसे अधिकाधिक अक्सर यह महसूस होने लगा कि लोगो की आम भलाई करने की यह क्षमता, जिससे वह अपने को पूरी तरह वंचित अनुभव करता, शायद गुण नही, बल्कि इसके विपरीत किसी चीज की कमी है—नेकी, ईमानदरी और सद्भावनापूर्ण इच्छाओ तथा रुचियो की कमी नही, बल्कि जीवन-शक्ति की कमी, उस चीज की कमी है, जिसे दिल कहते हैं, उस उत्प्रेरणा की कमी है, जो आदमी को उसके सामने प्रस्तुत अनेक जीवन-पथो मे से एक को चुनने और उसी को चाहने के लिये विवश करती है। अपने भाई को वह जितना अधिक जानता गया उतना अधिक ही उसने इस बात को लक्षित किया कि कोज्निशेव तथा आम भलाई का काम करनेवाले दूसरे बहुत से कार्यकर्त्ता भी इस सर्वकल्याण के प्यार की ओर दिल से नही खिंचे थे, बल्कि दिमागी तर्क-वितर्क से ऐसा करना अच्छा समझते थे और केवल इसीलिये ऐसा करते थे। इस बात के अवलोकन से लेविन के इस अनुमान की और अधिक पुष्टि हो गयी कि उसका भाई सर्वकल्याण तथा आत्मा की अमरता के प्रश्न को शतरंज की एक बाजी या किसी नई मशीन की बहुत समझदारी की बनावट से अधिक महत्त्व नही देता है।

इसके अलावा, लेविन को भाई के साथ गाव मे इस कारण भी परेशानी होती कि वह तो खास तौर पर गर्मियो मे लगातार खेतीबारी के कामो मे व्यस्त रहता और गर्मी के लम्बे दिन मे भी उन सब कामो को न निपटा पाता, जो उसे करने होते थे, जबकि कोज्निशेव आराम करता। बेशक यो तो वह अब आराम कर रहा था यानी अपने रचना-कार्य मे व्यस्त नही था, फिर भी वह दिमागी काम का ऐसा आदी हो चुका था कि दिमाग मे आनेवाले विचारो को सुन्दर तथा संतुलित रूप मे प्रस्तुत करना पसन्द करता था और चाहता था कि कोई उसकी बात सुने। भाई ही उसका बहुत सामान्य और स्वाभाविक श्रोता था। इसलिये इनके सम्बन्धो की मैत्रीपूर्ण सरलता के बावजूद लेविन को उसे अकेला छोड़ना अटपटा सा लगता। कोज्निशेव को धूप मे घास पर लेटना और धूप सेंकते हुए मजे-मजे बाते करना पसन्द था।

"तुम यकीन नहीं करोगे," वह भाई से कहता, "यह देहाती

मछलियाँ पकड़ने के लिये नदी पर जाने की इच्छा प्रकट की। मछली मारना उसे पसन्द था और वह मानों इस बात पर गर्व करता था कि उसे ऐसे मूर्खतापूर्ण काम की भी इच्छा हो सकती है।

लेविन ने, जिसे खेतों और चरागाह में जाना था, उससे कहा कि वह घोड़ा-गाड़ी में उसे वहाँ छोड़ देगा।

यह गर्मी का वह समय था, जब इस साल की फसल निर्धारित हो चुकती है, जब अगले साल की बुवाई की चिन्तायें शुरू हो जाती हैं और घास की कटाई का वक्त नज़दीक होता है, जब रई की भूरी-हरी तथा हल्की-फुल्की बालें, जो अभी दानों से नहीं भरी होतीं, हवा में लहराती हैं, जब जई की हरी फसलें, जिनके बीच में कहीं-कहीं पीली घास के झुण्ड भी होते हैं, देर से बोये गये खेतों में टेढ़ी-मेढ़ी खड़ी होती हैं, जब कोटू की प्रारम्भिक फसलें फैलकर ज़मीन को ढक देती हैं, जब पशुओं के पैरों से रौंदी गयी खाली छोड़ी गयी और पत्थर जैसी सख्त हो जानेवाली ज़मीन आधी जोती जा चुकी होती है और बड़े-बड़े टुकड़े हल के स्पर्श से अछूते ही रह जाते हैं, जब खादों की खेतों से गोबर के सूखे ढेरों की गन्ध के साथ घासों की मधुर गन्ध आती है, जब हसिये की राह देखते हुए चरागाह, जिनके बीच जहाँ-तहाँ उखाड़े गये डण्ठलों के काले ढेर दिखाई देते हैं, एक चौड़े सागर की तरह फैले रहते हैं।

यह वह समय था, जब हर साल दोहराये जाने और सभी लोगों की पूरी शक्ति की अपेक्षा करनेवाली फ़सल कटाई से पहले संक्षिप्त विराम होता है। फसल बहुत बढ़िया थी और उजले, गर्म दिनों तथा ओसभीगी छोटी रातों का वक्त था।

जंगल पार करके ही दोनों भाई चरागाहों तक पहुँच सकते थे। कोज्निशेव अत्यधिक हरियालीवाले वन के सौन्दर्य को लगातार मुग्ध होकर देख रहा था। कभी वह अपने भाई को लाइम का वह पुराना वृक्ष दिखाता, जो छायावाले पक्ष से काला-सा लगता था, पीली पत्तियों के कारण चटकीला-सा था और पुष्पित होनेवाला था, तो कभी इस वर्ष के नौउम्र वृक्षों की मरकती हरी पत्तियों की ओर इशारा करता। लेविन को प्रकृति के सौन्दर्य के बारे में कुछ कहना और सुनना पसन्द नहीं था। उसके लिये शब्द तो मानों उस चीज़ का सौन्दर्य हर लेते थे,

जिसे वह देखता होता था। वह भाई की हा में हा मिलाता जा रहा था, किन्तु अनचाहे ही किसी दूसरी बात के बारे में सोचने लगा था। जब वे जगल से बाहर आ गये, तो टीले की एक ढालू और बिना बोयी भूमि पर उसका पूरा ध्यान केन्द्रित हो गया, जो कही तो पीली घास से ढकी थी, *जिस पर कही हल-रेखाओ के चौखाने बने थे, कही खाद के* ढेर लगे थे और जो कही-कही पर जुती हुई भी थी। घोडा-गाडियो की एक पात मैदान मे से जा रही थी। लेविन ने उन्हे गिना और उसे इस बात की खुशी हुई कि जो कुछ जरूरी है, सब लाया जा रहा है और चरागाहो को देखकर वह घास काटने के बारे में सोचने लगा। घास की कटाई की बात सोचकर वह हमेशा ही विशेष रूप से उत्तेजित हो उठता था। चरागाह के पास पहुचकर लेविन ने घोडा रोक दिया।

घास की घनी जडो के पास सुबह की शबनम अभी सूखी नही थी। *कोज्निशेव ने इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि उसके पाव भीग न* जाये भाई से यह अनुरोध किया कि घोडा-गाडी मे ही उसे चरागाह के पार बेत के उस झुरमुट तक पहुचा दे, जहा पेर्च मछलिया पकडी जा सकती थी। अपनी घास को रौदते हुए लेविन को चाहे कितना ही दुख क्यो नही हो रहा था, फिर भी वह घोडा-गाडी को चरागाह मे *से ले चला। ऊची-ऊची घास धीरे-से गाडी के पहियो तथा घोडे की* टागो के गिर्द लिपट जाती थी और पहियो की गीली घिरनियो तथा स्पोको पर अपने बीज छोड देती थी।

भाई झाडी के नीचे बैठकर अपनी बसी ठीक करने लगा, लेविन ने घोडे को ले जाकर बाधा तथा शान्त चरागाह के भूरे-हरे विराट सागर मे, जिसे *हवा हिला-डुला नही रही थी, प्रवेश किया।* पानी से खूब तर चरागाह मे पके बीजो वाली रेशम जैसी घास लगभग उसकी कमर को छू रही थी।

चरागाह को लाघकर लेविन रास्ते पर पहुच गया, जहा शहद की मक्खियो की पेटिका लिये हुए सूजी आख वाले एक बूढे से उसकी मुलाकात हुई।

"क्यो फोमिच? *मधु-मक्खियो का नया झुण्ड हाथ लग गया* क्या?" लेविन ने पूछा।

"कैसा नया झुण्ड, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच! पुराने सम्भाले रहू, यही बहुत है। दूसरी बार झुण्ड निकल भागा भला हो आपके

उन श्वेत जोतनेवाले नौजवानों का। उन्होंने एक घोड़ा जोत में निकाला और इनका पीछा किया..."

"तो क्या ख्याल है फ़ोमिच, घास की कटाई शुरू की जाये या इन्तज़ार करें?"

"क्या कहा जाये, हुजूर! हम लोग तो सन्त पीटर के दिन तक बाट देखा करें। परन्तु आप तो हमेशा कुछ पहले ही कटाई शुरू कर देते हैं। कोई बुराई नहीं, घास बहुत अच्छी है। ढोर-डंगरों के लिये कुछ कमी नहीं पड़ेगी।"

"मौसम के बारे में क्या ख्याल है?"

"यह तो भगवान जानें। शायद अच्छा ही रहे।"

लेविन अपने भाई के पास वापस आया। मछली तो उसने एक भी नहीं पकड़ी थी, फिर भी कोज्निशेव ऊब अनुभव नहीं कर रहा था बड़े रंग में था। लेविन ने देखा कि डाक्टर के साथ हुई बातचीत के फलस्वरूप जोश में आया हुआ उसका भाई बात करने को उत्सुक है। इसके विपरीत, लेविन जल्दी से घर जाना चाहता था, ताकि अगले दिन घास काटनेवालों को बुलवाकर घास की कटाई के बारे में, जो उसके मन पर बोझ बनी हुई थी, अपने इरादे को पक्का कर ले।

"तो चलें," लेविन ने कहा।

"ऐसी क्या जल्दी है? कुछ देर बैठेंगे। लेकिन तुम कितने ज़्यादा भीग गये हो! बेशक मछली तो नहीं फंसी, फिर भी यहां बड़ा मज़ा है। हर तरह का शिकार इसीलिये अच्छा है कि आदमी प्रकृति के बीच रहता है। यह इस्पाती रंग का पानी कितना सुन्दर है!" उसने कहा। "ये चरागाहोंवाले तट मुझे हमेशा वह पहेली याद दिलाते हैं – जानते हो कौन सी? घास पानी से कहती है – हम डोलती हैं, हम डोलती हैं।"

"मैं यह पहेली नहीं जानता," लेविन ने उदासी से जवाब दिया।

(३)

"सुनो, मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था," कोज्निशेव ने कहा। "तुम्हारे जिले के बारे में मुझे इस डाक्टर ने जो कुछ बताया, और वह कुछ बेवकूफ नौजवान नहीं है, वह सब बहुत ही बेहूदा है। मैं तुमसे

करता, तो तुम बताओ मैं क्या करूं?" लेविन ने यह पहचान लेने पर जवाब दिया कि उसने जिसे देखा था, वह कारिन्दा ही है और उसने सम्भवतः किसानों को जुताई में छुट्टी दे दी है। वे हलों को उलट रहे थे। 'क्या सचमुच उन्होंने जुताई खत्म कर दी?" वह सोच रहा था।

'लेकिन सुनो," बड़े भाई ने अपने सुन्दर चेहरे पर बल डालकर कहा, 'हर चीज की कोई हद होती है। सनकी और निश्छल व्यक्ति होना और झूठ-बनावट को नापसन्द करना बहुत अच्छी बात है – मैं यह सब जानता हूं। किन्तु तुम जो कुछ कह रहे हो, उसका या तो कोई अर्थ नहीं है या बहुत बुरा अर्थ है। कैसे तुम्हें यह महत्त्वपूर्ण नहीं प्रतीत होता कि वह जनता, जिसे, जैसा कि तुम विश्वास दिलाते हो, प्यार करते हो . . ."

"मैंने कभी ऐसा विश्वास नहीं दिलाया," लेविन सोच रहा था।

" . . . सहायता के बिना मरती है? जाहिल देहाती दाइयां बच्चों को मौत के मुंह में धकेलती हैं और जनता उजड्ड है तथा मुखियों के बस में है। तुम्हें इनकी मदद करने के साधन दिये गये हैं और तुम ऐसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे ख्याल में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है।"

कोज्निशेव ने छोटे भाई को इस दुविधा में डाल दिया – "या तो दिमागी तौर पर अभी तुम्हारा इतना विकास नहीं हुआ कि जो कुछ तुम्हारे लिये करना सम्भव है, तुम उसे समझ नहीं सकते या फिर अपने चैन अथवा घमण्ड या किसी अन्य चीज को ऐसा करने के लिये कुर्बान नहीं करना चाहते।"

लेविन ने महसूस किया कि उसे या तो भाई के सामने झुकना होगा या सर्वहित के कार्य के प्रति अपने प्यार की कमी को स्वीकार करना होगा। इससे उसका अपमान होता था और उसे ठेस लगती थी।

"दोनों चीजें ही," उसने दृढ़ता से कहा। "मैं ऐसा नहीं समझता हूं कि यह करना सम्भव है . . ."

"क्या मतलब? ढंग से धन का विभाजन करके डाक्टरी मदद देना असम्भव है?"

"मुझे ऐसा लगता है कि यह सम्भव नहीं . हमारे जिले के छः हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, बर्फ पिघलने पर हमारे जैसे गन्दे रास्तों, बर्फ के तूफानों और कभी-कभी काम के तनाव को ध्यान में रखते हुए मुझे ऐसा नहीं लगता कि हर जगह पर डाक्टरी मदद की व्यवस्था

करना, तो तुम बताओ मैं क्या करूं?" लेविन ने यह पहचान लेने पर जवाब दिया कि उसने जिसे देखा था, वह कारिन्दा ही है और उसने सम्भवतः किसानों को जुताई से छुट्टी दे दी है। वे हलों को उलट रहे थे। "क्या सचमुच उन्होंने जुताई खत्म कर दी?" वह सोच रहा था।

"लेकिन सुनो," बड़े भाई ने अपने सुन्दर चेहरे पर बल डालकर कहा, "हर चीज की कोई हद होती है। सनकी और निश्छल व्यक्ति होना और भूठ-बनावट को नापसन्द करना बहुत अच्छी बात है–मैं यह सब जानता हूं। किन्तु तुम जो कुछ कह रहे हो, उसका या तो कोई अर्थ नहीं है या बहुत बुरा अर्थ है। कैसे तुम्हें यह महत्त्वपूर्ण नहीं प्रतीत होता कि वह जनता, जिसे, जैसा कि तुम विश्वास दिलाते हो, प्यार करते हो . ."

"मैंने कभी ऐसा विश्वास नहीं दिलाया," लेविन सोच रहा था।

"... सहायता के बिना मरती है? जाहिल देहाती दाइयां बच्चों को मौत के मुंह में धकेलती हैं और जनता उजड्ड है तथा मुखियों के बस में है। तुम्हें इनकी मदद करने के साधन दिये गये हैं और तुम ऐसा नहीं करते, क्योंकि तुम्हारे ख्याल में यह महत्त्वपूर्ण नहीं है।"

कोज्निशेव ने छोटे भाई को इस दुविधा में डाल दिया–"या तो दिमागी तौर पर अभी तुम्हारा इतना विकास नहीं हुआ कि जो कुछ तुम्हारे लिये करना सम्भव है, तुम उसे समझ नहीं सकते या फिर अपने चैन अथवा घमण्ड या किसी अन्य चीज को ऐसा करने के लिये कुर्बान नहीं करना चाहते।"

लेविन ने महसूस किया कि उसे या तो भाई के सामने झुकना होगा या सर्वहित के कार्य के प्रति अपने प्यार की कमी को स्वीकार करना होगा। इससे उसका अपमान होता था और उसे ठेस लगती थी।

"दोनों चीजें ही," उसने दृढ़ता से कहा। "मैं ऐसा नहीं समझता हूं कि यह करना सम्भव है ..."

"क्या मतलब? ढंग से धन का विभाजन करके डाक्टरी मदद देना असम्भव है?"

"मुझे ऐसा लगता है कि यह सम्भव नहीं... हमारे जिले के छः हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र, बर्फ पिघलने पर हमारे जैसे गन्दे रास्तों, बर्फ के तूफानों और कभी-कभी काम के तनाव को ध्यान में रखते हुए मुझे ऐसा नहीं लगता कि हर जगह पर डाक्टरी मदद की व्यवस्था

करना सम्भव है। इसके अलावा डाक्टरी में मेरा विश्वास भी नही है।"

"लेकिन यह तो न्यायसगत बात नही है मैं तुम्हारे सामने हजारो मिसाले पेश कर सकता हू . और स्कूल?"

"उनकी क्या जरूरत है?"

"यह तुम क्या कह रहे हो? शिक्षा के लाभ के बारे मे भी क्या कोई सन्देह हो सकता है? पढ़ाई अगर तुम्हारे लिये अच्छी है, तो सभी के लिये अच्छी है।"

लेविन ने नैतिक रूप से अपने को पूरी तरह पराजित अनुभव किया, इसलिये गुस्से मे आ गया और न चाहते हुए भी उसने सर्वहित के काम मे अपनी उदासीनता का मुख्य कारण कह दिया।

"मुमकिन है कि यह सब अच्छा हो, लेकिन मुझे डाक्टरी मदद के उन केन्द्रो की स्थापना की चिन्ता करने की क्या जरूरत है, जिनका मैं कभी उपयोग नही करूगा? ऐसे स्कूलों की स्थापना भी, जहा मैं अपने बच्चे कभी नही भेजूगा, जहा किसान भी अपने बच्चे नही भेजना चाहते और जिनके बारे मे अभी मुझे यह पूरा यकीन भी नही है कि उन्हे वहा भेजना चाहिये?" लेविन ने कहा।

सर्वहित के प्रति ऐसे रवैये से कोज्निशेव को क्षणिक आश्चर्य हुआ, मगर उसने उसी समय हमले की नयी योजना बनायी।

वह खामोश रहा, उसने एक बसी निकाली उसे फिर से पानी मे डाला और मुस्कराते हुए भाई को सम्बोधित किया।

"लेकिन सुनो सबसे पहली बात तो यह है कि चिकित्सा-केन्द्र जरूरी साबित हुआ। आखिर तो हमे अगाफ्या मिखाइलोव्ना के लिये जिला-केन्द्र से डाक्टर बुलवाना पड़ा है।"

"पर मैं सोचता हू कि हाथ टेढ़ा ही रहेगा।"

"यह तो बाद मे देखा जायेगा फिर पढ़ा-लिखा किसान अधिक अच्छा काम करता है, अधिक महत्त्व रखता है।"

"नही, तुम किसी से भी पूछ सकते हो," लेविन ने दृढ़ता से कहा, "पढ़ा-लिखा किसान काम के लिहाज से कही बुरा होता है। रास्तो-सडको की मरम्मत मुमकिन नही और पुल भी ज्यो ही बनाये जाते है, चुरा लिये जाते है।"

"फिर भी," कोज्निशेव ने नाक-भौह सिकोड कर कहना शुरू

किया। उसे अपनी बात काटनेवाले और खास तौर पर ऐसे लोग पसन्द नहीं थे, जो लगातार एक बात से दूसरी बात पर छलांग मारते हुए किसी तरह के सम्बन्ध के बिना नये-नये तर्क पेश करते हो और इस तरह यह तय करना असम्भव बना देते है कि किस चीज का जवाब दिया जाये। "वैसे तो मामला यह नहीं है। सुनो, इतना बताओ कि तुम शिक्षा को जनता के लिये वरदान मानते हो या नहीं?"

"मानता हूं," लेविन के मुह से अनजाने ही निकल गया और उसी क्षण उसने महसूस किया कि वह कह दिया है, जो सोचता नहीं है। उसने अनुभव किया कि उसके ऐसा मान लेने पर अब यह सिद्ध किया जायेगा कि वह ऐसी बेकार की बाते कह रहा है, जिनका कोई मतलब नहीं है। कैसे यह सिद्ध किया जायेगा, यह वह नहीं जानता था, मगर इतना जानता था कि निश्चय ही तर्कसगत रूप से ऐसा ही प्रमाणित किया जायेगा और वह ऐसे प्रमाण की प्रतीक्षा कर रहा था।

लेविन ने जैसी आशा की थी, तर्क उससे कही साधारण रहा।

"अगर तुम इसे वरदान मानते हो," कोज्निशेव ने कहा, "तो यह नहीं हो सकता कि एक ईमानदार आदमी के नाते तुम ऐसे काम के प्रति प्यार और सहानुभूति अनुभव न करो, उसके लिये काम न करो।"

"लेकिन मैं इस काम को अभी अच्छा नहीं मानता हूं," लेविन ने लाल होते हुए कहा।

"क्या मतलब? तुमने अभी तो कहा था..."

"मेरा मतलब यह था कि मैं इसे न तो अच्छा और न सम्भव ही मानता हूं।"

"कोशिश किये बिना तुम यह नहीं जान सकते।"

"अच्छा, मान लेते है," लेविन ने कहा, यद्यपि वह ऐसा कुछ भी मान नहीं रहा था। "चलो मान लेता हूं कि यह ऐसा ही है। फिर भी मेरी समझ में यह नहीं आता कि मैं इसकी चिन्ता क्यों करूं।"

"क्या मतलब?"

"देखो, अगर हम इस मसले पर बात कर रहे हैं, तो तुम मुझे दार्शनिक दृष्टि से यह स्पष्ट करो," लेविन ने कहा।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि दर्शनशास्त्र का इससे क्या सम्बन्ध है," कोज्निशेव ने, जैसा कि लेविन को लगा, ऐसे अन्दाज में कहा

मानो वह दर्शनशास्त्र की विवेचना के भाई के अधिकार को मान्यता देने को तैयार नहीं है। लेविन को इससे झल्लाहट हुई।

"मैं बताता हूं क्या सम्बन्ध है!" लेविन ने भड़कते हुए कहा। "मेरे ख्याल में तो व्यक्तिगत सुख-सौभाग्य ही हमारी सब कार्रवाइयों की प्रेरक-शक्ति है। एक कुलीन के रूप में मुझे इन जेम्स्त्वो-संस्थाओं में कुछ भी ऐसा नज़र नहीं आता, जिससे मेरी खुशहाली बढ़ सके। सड़कें बेहतर नहीं हुई और हो भी नहीं सकती, मेरे घोड़े मुझे बुरी पर भी खींच ले जाते हैं। डाक्टर और चिकित्सा-केन्द्र की मुझे जरूरत नहीं, न्यायाधीश भी मुझे नहीं चाहिये – मैं कभी उसके पास नहीं गया और नहीं जाऊंगा। स्कूलों की मुझे न सिर्फ़ कोई आवश्यकता ही नहीं, बल्कि जैसा कि मैं तुमसे कह चुका हूं, वे हानिकारक भी होंगे। मेरे लिये जेम्स्त्वो-संस्थाओं का मतलब है एक हेक्टर ज़मीन के पीछे अठारह कोपेक देना, शहर जाना, खटमलों वाले बिस्तर पर सोना और सभी तरह की बकवास तथा बेसिर-पैर की बातें सुनना। किन्तु मेरा निजी हित मुझे इसके लिये प्रेरित नहीं करता।"

"सुनो तो," कोज्निशेव ने मुस्कराते हुए उसे टोका "निजी हित ने हमें किसानों की आजादी के लिये काम करने को प्रेरित नहीं किया था, मगर हमने ऐसा किया।

"नहीं, ऐसा नहीं है!" लेविन ने और भी गर्म होते हुए उसे टोका। "किसानों की आज़ादी का सवाल और मामला था। उसमें निजी हित था। हम उस जुए को उतार फेंकना चाहते थे जो हम सभी भले लोगों को पीस रहा था। किन्तु जेम्स्त्वो-परिषद का सदस्य बनकर मैं इस बात पर विचार करूं कि शहर में, जहां मैं रहता नहीं हूं, कितने सफ़ाई करनेवाले चाहिये तथा कैसे पाइपें बिछाई जायें, बेकन चुरा लेनेवाले किसी किसान के मुकदमे में जूरी में बैठकर छः घण्टे तक वह बकवास सुनूं, जो अपराधी का वकील और सरकारी वकील करते हैं, तथा यह भी कि कैसे अध्यक्ष मेरे बूढ़े तथा बुद्धू अल्योश्का से यह पूछता है – 'श्रीमान अभियुक्त, आप बेकन चुराने का तथ्य स्वीकार करते हैं या नहीं?' – 'उह?'"

लेविन अब अपनी तरंग में बह गया था और वह जूरी के अध्यक्ष और बुद्धू अल्योश्का की नकल करने लगा था। उसे यह सब कुछ मामले से सम्बन्धित प्रतीत हो रहा था।

किन्तु कोज्निशेव ने सिर्फ कधे भटक दिये।

"तो तुम कहना क्या चाहते हो?"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहता हू कि उन अधिकारो की, जो मुझसे मेरे हित से सम्बन्ध रखते हैं, मैं हमेशा अपनी पूरी ताकत से रक्षा करूगा। हमारे विद्यार्थी-जीवन मे जब हमारी तलाशी ली गयी और जेनदार्मों ने हमारे खत पढे, तो मैं जी-जान से इन अधिकारो को बचाने, तालीम पाने और आजादी के अपने हको की रक्षा के लिये सब कुछ करने को तैयार था। अनिवार्य सैनिक सेवा की बात मेरी समझ मे आती है, जिसका मेरे बच्चो, मेरे भाइयो और खुद मुझसे सम्बन्ध है मैं उस चीज पर सोच-विचार करने को तैयार हू, जिसका मुझसे ताल्लु है। लेकिन इस बात पर दिमाग खपाना कि जेम्स्त्वो-परिषद के चालीस हजार रूबल कैसे खर्च किये जाये या बुद्धू अल्योशा का मुकदमा सुना जाये – यह मेरी समझ मे नही आता और मैं नही कर सकता।"

लेविन ऐसे बोल रहा था मानो उसके शब्दो का बाध टूट गया हो कोज्निशेव मुस्कराया।

"कल तुम पर भी मुकदमा चल सकता है। तो क्या तुम्हे यह अच्छा लगेगा कि पुरानी फौजदारी अदालत मे तुम पर मुकदमा चलाया जाये?"

"मुझ पर मुकदमा नही चलेगा। मैं कभी किसी का गला नही काटूगा और मुझे इसकी जरूरत नही है। समझे न!" वह फिर मामले से कोई सम्बन्ध न रखनेवाली बात पर छलाग लगाता हुआ कहता गया, "हमारी जेम्स्त्वो संस्थाये और यह सब कुछ भोज वृक्षों की उन टहनियो जैसा है जिन्हे हमने ट्रिनिटी पर्व के दिन सभी ओर गाड दिया था, ताकि वे जगल-सा दिखाई दे जो यूरोप मे अपने आप ही पनप गया है। मैं दिल से ऐसे भोज वृक्ष को सीचने और इन पर भरोसा करने मे असमर्थ हू।"

कोज्निशेव ने केवल कधे भटक दिये और इस तरह इस बात की हैरानी जाहिर की कि इन दोनो की बहस मे अब ये भोज वृक्ष कहा से आ धमके, यद्यपि वह फौरन यह समझ गया कि उसके भाई का इससे क्या अभिप्राय है।

"सुनो इस तरह से भी कभी कोई बहस होती है?"

किन्तु लेकिन जन-हित के कामों के प्रति अपनी उदासीनता की, जिसकी उसे चेतना थी, सफ़ाई पेश करना चाहता था और इसलिये कहता गया

"मेरे ख्याल में तो निजी हित के बिना किसी भी काम का कोई ठोस आधार नहीं हो सकता। यह आम सचाई है, दार्शनिक सचाई," उसने 'दार्शनिक' शब्द को ज़ोर से दोहराते हुए कहा, मानो यह ज़ाहिर करना चाहता हो कि सभी दूसरे लोगों की तरह उसे भी दर्शन का ज़िक्र करने का हक़ है।

कोलिसोव फिर से मुस्करा दिया। "अपने रुझानों की वकालत करने के लिये उसका भी अपना एक दर्शन है," उसने सोचा।

"और दर्शन की बात तो तुम रहने दो," उसने कहा। "सभी युगों के दर्शन का मुख्य कार्यभार वह अनिवार्य सम्बन्ध ढूंढना रहा है, जो निजी और सर्वहित के बीच विद्यमान है। पर मामले में सम्बन्ध रखनेवाली बात तो यह है कि मुझे तुम्हारी तुलना को सुधारना है। बीज गाड़े नहीं गये हैं बल्कि कुछ रोपे गये हैं और कुछ के बीज बोये गये हैं तथा उनके प्रति सावधानी से काम लेना चाहिये। केवल ऐसे ही जनगण का भविष्य है, ऐसे ही जनगण इतिहास में अपनी जगह बना सकते हैं जो यह महसूस करते हैं कि उनकी संस्थाओं में क्या महत्वपूर्ण और गौरवपूर्ण है और वे उसे सहेजते हैं।"

कोलिसोव मामले को दार्शनिक-ऐतिहासिक क्षेत्र में ले गया, जो [illegible] की पहुंच के बाहर था और उसे यह स्पष्ट कर दिया कि उसका दृष्टिकोण कितना ग़लत है।

"जहां तक इस चीज़ का ताल्लुक है कि तुम्हें यह पसन्द नहीं, तो तुम मुझे माफ़ करना–यह हमारी रूसी काहिली और रईसी है, क्या मुझे यक़ीन है कि तुम वक़्ती तौर पर गुमराह हो गये हो और [illegible] सही रास्ते पर आ जाओगे।"

[illegible] खामोश रहा। वह महसूस कर रहा था कि उसे चारों [illegible] चित कर दिया गया है, मगर साथ ही उसे यह भी अनुभव हो रहा था कि वह कुछ ऐसा कहना चाहता था, जो भाई की समझ में नहीं आया। वह सिर्फ़ यह नहीं जानता था कि क्यों उसका भाव भाई की समझ में नहीं आया। इसलिये कि वह जो कुछ कहना चाहता था, उसे

साफ तौर पर नहीं कह पाया, या इसलिये कि भाई उसकी बात समझना नहीं चाहता था या समझ नहीं सका था। किन्तु वह इन विचारों की गहराई में नहीं जाना चाहता था और भाई की बात काटे बिना किसी दूसरे अपने निजी मामले के बारे में सोचने लगा।

कोज्निशेव ने अपनी आखिरी बसी लपेटी, घोड़े को खोला और वे घर की ओर चल दिये।

(४)

भाई के साथ बातचीत के समय लेविन जिस निजी मामले के बारे में सोच रहा था, वह यह था – पिछले साल एक दिन घास की कटाई के समय कारिन्दे से किसी बात पर नाराज होने के बाद उसने अपने को शान्त करने के लिये अपने ही एक उपाय का उपयोग किया था – हँसिया लेकर खुद घास काटने लगा था।

उसे यह काम इतना अधिक पसन्द आया था कि उसने कई बार इसे किया - घर के सामनेवाले पूरे चरागाह की घास खुद ही काट डाली और इस साल वसन्त के आरम्भ से ही किसानों के साथ दिन भर घास काटने की योजना बना ली। भाई के आने के बाद से वह इस असमंजस में था – कटाई करे या न करे? भाई को सारा सारा दिन अकेले छोड़ते हुए उसे [illegible] महसूस होती और इस बात का भी डर था कि कहीं वह ऐसा करने के लिये उसका मजाक न उड़ाये। किन्तु चरागाह में चक्कर लगाने और कटाई से उसे जो मज़ा आता था उसकी याद करके उसने लगभग पक्का कर लिया था कि कटाई करेगा। भाई के साथ [illegible] बातचीत के बाद उसे फिर से इसकी याद आ गई।

[illegible] करना चाहिये [illegible] मेरा स्वभाव [illegible] [illegible] उसने सोचा और भाई तथा किसानों के सामने [illegible] [illegible] पर [illegible] [illegible] न लगे, उसने [illegible] [illegible] कर लिया।

[illegible]

"हा, कृपया मेरा हसिया भी तीत के पास भिजवा दीजिये, ताकि वह उसे तेज करके कल ले आये। हो सकता है कि मैं खुद भी कटाई करू," उसने घबराहट छिपाने की कोशिश करते हुए कहा।

कारिन्दा मुस्कराया और बोला

"जो हुक्म।"

शाम को चाय के वक्त लेविन ने भाई से भी यह कह दिया।

"लगता है कि मौसम सुधर गया है," वह बोला। "कल मै घास की कटाई शुरू कर रहा हू।"

"मुझे यह काम बहुत पसन्द है," कोज्निशेव ने कहा।

"और मुझे बेहद अच्छा लगता है। कभी-कभी तो मैंने भी किसानो के साथ यह काम किया है और कल दिन भर यही करना चाहता हू।"

कोज्निशेव ने सिर ऊपर उठाया और जिज्ञासा से भाई की तरफ देखा।

"क्या मतलब? किसानो के बराबर, दिन भर?"

"हा यह बहुत ही सुखद है," लेविन ने कहा।

"कसरत के रूप मे ऐसा करना बहुत बढिया है, मगर तुम शायद ही इसे बर्दाश्त कर पाओगे" कोज्निशेव ने किसी भी तरह के व्यग्य के बिना कहा।

"मैं आज़मा कर देख चुका हू। शुरू मे कठिनाई होती है, मगर बाद मे गाडी चल निकलती है। सोचता हू कि पिछडूगा नही।"

"अच्छा! लेकिन यह बताओ कि किसानो को यह कैसा लगता है? वे तो यह सोचकर हसते होंगे कि ये रईसज़ादे अपनी सनक दिखा रहे हैं।"

"नही, मैं ऐसा नही समझता। यह इतना खुशी-भरा और साथ ही इतना मुश्किल काम होता है कि कुछ सोचने की फुरसत ही नही मिलती।"

"लेकिन तुम [illegible] साथ दोपहर का खाना कैसे खाओगे? तुम्हारे लिये [illegible] और लाफीट शराब की बोतल भेजना तो [illegible]

[illegible] आराम के वक्त घर आ जाऊगा।"

[illegible] की तुलना मे जल्दी उठा, लेकिन

खेतीबारी के प्रबन्ध की समस्याये निपटाते हुए उसे देर हो गयी। जब वह चरागाह मे पहुचा, तो घास काटनेवाले दूसरी क़तार की कटाई कर रहे थे।

पहाडी के ऊपर मे ही उसे उसके दामन मे चरागाह का वह छायादार भाग, जहा से घास काटी जा चुकी थी, भूरी टालो और कोटो के काले ढेरो के साथ, जो पहली कतार शुरू करने की जगह पर उतारे गये थे, नजर आ रहा था।

अधिक निकट जाने पर एक-दूसरे के पीछे लम्बी क़तार मे फैले और अपने-अपने ढग से हसिया चलाते किसान दिखाई देने लगे। उनमें से कोई कोट पहने था और कोई कुरता ही। लेविन ने गिनती की, कुल बयालीस लोग थे।

चरागाह की ऊबड-खाबड ढाल पर, जहा पुराना बाध था, ये लोग धीरे-धीरे बढ रहे थे। अपने कुछ लोगो को लेविन ने पहचान लिया। इनमे बहुत लम्बा सफेद कुरता पहने येर्मील था, जो झुककर हसिया चला रहा था। नौजवान वास्का भी था, जो पहले लेविन के यहा साईस रह चुका था और जो हर कतार को ज़ोरदार तथा बडे झटके से काटता जा रहा था। लेविन को घास काटने के काम की शिक्षा देनेवाला नाटा दुबला-पतला किसान तीत भी दिख रहा था। वह झुके बिना आगे-आगे जाता हुआ अपनी चौडी कतार को ऐसे काटता जा रहा था मानो हसिये से खिलवाड कर रहा हो।

लेविन घोडे से नीचे उतरा और उसे रास्ते के करीब बाधकर तीत के पास गया। तीत ने झाडियो के नीचे से दूसरा हसिया निकाल कर उसे दिया।

"बिल्कुल तैयार है, मालिक, उस्तरे की नाईं, अपने आप काटता चला जाता," तीत ने टोपी उतार कर लेविन को हसिया देते हुए मुस्कराकर कहा।

लेविन ने हसिया ले लिया और उसकी आज़माइश करने लगा। घास की अपनी कतारो को खत्म करके पसीने से तर और प्रसन्न घास काटनेवाले एक-दूसरे के बाद बाहर रास्ते पर आये और उन्होंने हसते हुए मालिक से सलाम-दुआ की। वे सभी लेविन को देख रहे थे, मगर किसी ने कहा कुछ भी नहीं। कुछ क्षण बाद लम्बे कद के एक

बूढ़े घास काटनेवाले ने, जिसके चेहरे पर झुर्रियां पडी थी और जो बिना दाढी के था तथा भेड की खाल का कोट पहने था, लेविन को सम्बोधित किया।

"मालिक, अब आगे आयो, घास काटे मे पीछे न रहियो," बूढ़े ने कहा और लेविन को घास काटनेवालो के बीच दबी-घुटी हसी सुनाई दी।

"कोशिश करूंगा पीछे न रहने की," लेविन ने जवाब दिया, तीत के पीछे खडा हो गया और कटाई शुरू करने के इशारे का इन्तज़ार करने लगा।

"डटे रहियो," बूढ़े ने फिर से चेतावनी दी।

तीत ने लेविन के लिये जगह छोड दी और वह उसके पीछे-पीछे कटाई करने लगा। रास्ते के किनारे वाली घास छोटी-छोटी थी और लेविन, जिसने बहुत अर्से से कटाई नही की थी तथा जो अपने ऊपर जमी हुई लोगो की नज़रो के कारण झेप महसूस कर रहा था, शुरू मे बुरे ढग से कटाई करता रहा, यद्यपि वह हसिये को हिलाता ज़ोर से था। उसे अपने पीछे से ये बाते सुनाई दी

"हसिया की ऊचाई उसके माफ़िक न पड़त, कित्ता झुके जात," एक ने कहा।

"हसिया के फल पर जोर दे के चलावे तो काम बने," दूसरे ने कहा।

"कोई बात नही, ठीक है, धीरे-धीरे राह पर आवत," बूढ़ा कह रहा था। "देखत, होई गयो चौडी पाल काटत हो, थकी जाओगे, मालिक ऐसे काम नहीं करत, मालिक, तुम्हारी अपनी घास है। देखो कित्ती छोड दी! हमी ऐसो करत तो पिटाई होत।"

नर्म घास शुरू हो गयी थी और लेविन ये सभी टिप्पणियां सुनता, किन्तु कोई जवाब दिये बिना तथा यथाशक्ति अच्छी तरह कटाई करने की कोशिश करता हुआ तीत के पीछे चलता जा रहा था। कोई सौ कदम तक इन्होने कटाई कर ली। तीत तो रुके बिना, ज़रा-सी भी थकावट ज़ाहिर किये बिना बढ़ता चला जा रहा था। किन्तु लेविन बुरी तरह घबराहट महसूस करने लगा था कि वह बर्दाश्त नही कर पायेगा – इतना अधिक थक गया था वह।

धीमे-से कुछ कहा। दोनों ने सूरज की तरफ देखा। "किस चीज के बारे में बात कर रहे हैं ये और क्यों नई कतार शुरू नहीं करते?" लेविन सोच रहा था और यह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि किसान लगातार चार घण्टों से कटाई कर रहे हैं और अब उनके नाश्ता करने का वक्त हो गया है।

"नास्ते-पानी का बख्त होई गयो, मालिक," बूढ़े ने कहा।

"सच, वक्त हो गया? तो, करो नाश्ता।"

लेविन ने हसिया तीत को दे दिया और डबल रोटी लेने के लिये कोटो की ओर जाते किसानों के साथ बारिश से कुछ कुछ भीगी घास की लम्बी कतारों के विस्तार को लाघता हुआ घोड़े की तरफ चल दिया। इसी समय यह बात उसकी समझ मे आई कि वह मौसम का अनुमान नहीं लगा सका और बारिश ने घास को भिगो दिया।

"घास खराब हो जायेगी," उसने कहा।

"कोई बात नहीं, मालिक, बारिस-बरखा मे कटाई करत, मौसम सुधरे तो टाल जमावत," बूढ़े ने जवाब दिया।

लेविन ने घोडा खोला और कॉफी पीने घर चल दिया।

कोज्निशेव अभी-अभी बिस्तर से उठा था। लेविन ने कॉफी पी और भाई के कपड़े पहनकर भोजन कक्ष में आने के पहले ही चरागाह में वापस चला गया।

(५)

नाश्ते के बाद लेविन पहलेवाली कतार के बजाय हंसी-मज़ाक करने-वाले बूढ़े, जिसने उसे अपने करीब बुला लिया था, और उस जवान किसान के बीच आ गया, जिसने पतझर मे ही शादी की थी और उस गर्मी में पहली बार घास काटने आया था।

तना हुआ बूढ़ा अपने बाहर को निकले पैरों से लम्बे डग भरता हुआ आगे आगे जा रहा था तथा लयबद्ध हरकत से, जिसमें उसे स्पष्टतः चलते वक्त हाथ हिलाने से कुछ ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती थी, मानो खिलवाड़ सा करता हुआ ऊँची और सीधी कतार बनाता जाता था। ऐसे लगता था मानो वह हँसिये को नहीं चलाता था, बल्कि तेज हँसिया अपने आप ही रसीली घास के बीच सनसनाता हुआ चला जा रहा था।

लेविन के पीछे जवान मीश्का था। वह बालों के गिर्द ताजा घास का गुच्छा बांधे था और उसके प्यारे, नौजवानी के चेहरे को देखने से पता चलता था कि वह बड़ा जोर लगाकर काम कर रहा है। लेकिन फिर भी जैसे ही कोई उसकी तरफ देखता, वह मुस्करा देता। यह मानने के बजाय कि उसे मुश्किल हो रही है, वह तो स्पष्टत जान दे देना बेहतर समझता था।

लेविन इन दोनों के बीच था। दिन की ज़ोरदार गर्मी में घास काटने का काम उसे इतना मुश्किल नहीं लगा। जिस्म को तर करनेवाला पसीना उसे ठण्डक देता और पीठ, सिर तथा कोहनियों तक उघाड़ी बाहों को झुलसनेवाले सूरज से काम में मज़बूती और दृढ़ता मिलती। चेतनाहीन स्थिति के वे क्षण अधिकाधिक आते, जब यह न सोचना सम्भव था, कि वह क्या कर रहा है। हंसिया अपने आप ही काटता चला जाता था। ये बड़े सुखद क्षण होते थे। इनसे भी अधिक सुखद वे क्षण होते, जब वे कतार के अन्त में नदी तट पर पहुचते, बूढ़ा घनी और गीली घास से हंसिये को पोंछता, हंसिये के इस्पाती फल को नदी के ताज़ा पानी में धोता और सिल्ली के डिब्बे में भरकर लेविन को ऐसा पानी पीने के लिये देता।

"कहो, कैसो लगत मेरो क्वास! चोखो है न?" वह आंख मारकर कहता।

और वास्तव में ही लेविन ने इस गुनगुने पानी जैसा पेय, जिसमें घास के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते थे और जिससे मोरचा खाये टीन का स्वाद आता था, कभी नहीं पिया था। इसके फौरन बाद हंसिये पर हाथ रखकर उल्लासपूर्ण मटरगश्ती होती, जिसके दौरान बहते पसीने को पोंछा जा सकता था, खुलकर सांस ली जा सकती थी, घास काटनेवालों की लम्बी पांत तथा जंगल और खेत में जो कुछ हो रहा था, उसे देखा जा सकता था।

लेविन जितनी अधिक देर तक घास काटता जा रहा था, उतना ही अधिक वह विस्मृति के ऐसे क्षणों को अनुभव करता था, जब हाथ हंसिये को नहीं हिलाते थे, बल्कि हंसिया खुद पूरी तरह से चेतन और जीवन से ओत-प्रोत शरीर को अपने पीछे चलाता था और काम उसके बारे में सोचे-विचारे बिना मानो किसी जादू के प्रभाव से अपने

आप सही तथा बढ़िया ढंग से होता जाता था। ये सबसे अधिक सुखद क्षण होते थे।

केवल तभी कठिनाई का सामना करना पड़ता, जब अपने आप होनेवाली इस हरकत को रोकना और सोचना पड़ता, जब किसी ठूंठ या घास-पात के झुण्ड के गिर्द घास काटनी पड़ती। बूढ़ा आसानी से यह करता। ठूंठ सामने आने पर वह अपने काम का ढंग बदल लेता और हंसिये के फल और कभी उसके सिरे से दोनों तरफ हल्की-हल्की चोटें करते हुए उसे साफ़ कर डालता। वह सामने आनेवाली हर चीज़ को देखता। किसी पौधे को उखाड़ लेता, उसे खुद खाता या लेविन को देता, कभी हंसिये के सिरे से किसी टहनी को रास्ते से हटाता, कभी बटेर के उस घोंसले को देखता, जिसमें से उसके हंसिये के पास से ही मादा ऊपर उड़ती, कभी मार्ग में आ जानेवाले किसी सांप को कांटे की तरह हंसिये पर उठा लेता, लेविन को दिखाता और फिर फेंक देता।

लेविन और उसके पीछे आनेवाले नौजवान के लिये ऐसी गतिविधि मुश्किल थी। ये दोनों एक ही तरह तनावपूर्ण ढंग से हंसिया चलाते हुए पूरी तरह काम के जोश में थे। इनके लिये अपनी गतिविधि को बदलना और साथ ही अपने सामने आ जानेवाली चीज़ की तरफ़ ध्यान देना सम्भव नहीं था।

वक्त कैसे बीतता जा रहा था लेविन को इसका पता नहीं चला। अगर उससे पूछा जाता कि वह कितनी देर से घास काट रहा है, तो उसका जवाब होता – आध घण्टे से। लेकिन वास्तव में तो दोपहर के खाने का वक्त होनेवाला था। नयी कतार शुरू करते हुए बूढ़े ने उन लड़के-लड़कियों की तरफ़ लेविन का ध्यान दिलाया, जो सड़क पर भिन्न दिशाओं से घास काटनेवालों की तरफ़ आ रहे थे, ऊंची घास के कारण मुश्किल से दिखाई दे रहे थे, अपने नीचे की ओर तने छोटे छोटे हाथों में डबल रोटी की पोटलियां और कपड़ों में भरी तथा चिथड़ों से बन्द की हुई सुराहियां ला रहे थे।

'देखिए, हमारे [illegible] आ गये!' बूढ़े ने उनकी तरफ़ इशारा करके कहा और हाथ की ओट करके सूरज की तरफ़ देखा।

दो और कतारों की घास काटने के बाद बूढ़ा रुक गया।

'तो अब भोजन का वक्त हो गया, मालिक!' उसने दृढ़ता

पूर्वक कहा। और घास काटनेवाले नदी तट तक जाकर कटी कतारों को लांघते हुए अपने कोटों की ओर चल दिये, जिनके करीब भोजन लानेवाले उनके बच्चे इन्तजार कर रहे थे। दूर से आनेवाले किसान अपनी घोड़ा-गाड़ियों के साये और निकटवाले मरघत की झाड़ी के नीचे, जिस पर उन्होंने घास डाल दी थी, जमा हो गये।

लेविन भी उनके पास ही बैठ गया, उसका घर जाने को मन नहीं हुआ।

मालिक की उपस्थिति में अनुभव होनेवाला सकोच कभी का खत्म हो चुका था। किसान खाना खाने के लिये तैयार होने लगे। कुछ ने हाथ-मुह धोया, नौजवानों ने नदी में स्नान किया, कुछ ने आराम करने की जगह ठीक की और रोटी की पोटलिया तथा क्वास से भरी सुराहिया खोली। बूढ़े ने रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े करके प्याले में डाले, चमचे के दस्ते से उनका मलीदा-सा बनाया, मिल्ली के डिब्बे से पानी डाला, कुछ और रोटी के टुकड़े काटे और उन पर नमक डालने के बाद पूरब की तरफ मुह करके प्रार्थना करने लगा।

"*तो मालिक, हमारे मलीदा खावत,*" *प्याले के सामने घुटनों* के बल बैठते हुए उसने कहा।

मलीदा इतना जायकेदार था कि लेविन ने भोजन करने के लिये घर जाने का इरादा बदल दिया। उसने बूढ़े के साथ खाना खाया, गहरी दिलचस्पी लेते हुए उसके घरेलू मामलों के बारे में बातचीत की और बूढ़े को अपने से सम्बन्धित उन सभी बातों और परिस्थितियों के बारे में बताने लगा, जिनमें बूढ़े ने रुचि प्रकट की। उसने भाई की तुलना में अपने को इस बूढ़े के अधिक निकट अनुभव किया और इसके प्रति अनुभव होनेवाले स्नेह से मुस्कराये बिना न रह सका। बूढ़े ने जब फिर से उठकर प्रार्थना की और अपने सिर के नीचे घास रखकर एक झाड़ी के नीचे लेट गया, तो लेविन ने भी ऐसा ही किया। धूप में बड़ी हठीली हो जानेवाली मक्खियां और कीड़े-मकोड़े उसके पसीने से तर चेहरे और शरीर को गुदगुदाते थे, फिर भी वह लेटते ही सो गया और तभी जागा, जब सूरज झाड़ी के दूसरी ओर चला गया था और धूप उस तक पहुंचने लगी थी। बूढ़ा तो कभी का जाग चुका था और नौजवान घास काटनेवालों के हसिये तेज़ कर रहा था।

लेविन ने अपने इर्द-गिर्द नज़र घुमाई, तो जगह को पहचान नहीं पाया — सभी कुछ इतना बदल गया था। चरागाह के विराट विस्तार में घास काटी जा चुकी थी तथा सूरज की सन्ध्याकालीन टेढ़ी किरणों में महकती कतारों के साथ अपनी विशेष, नयी चमक दिखा रहा था। नदी-तट के पास झाड़ियां, जिनके गिर्द घास काट दी गयी थी, और खुद नदी भी, जो पहले दिखाई नहीं देती थी, मगर अब अपने मोड़ों सहित इस्पात की भांति चमकती थी, हिलते-डुलते और नींद से जागे लोग, चरागाह की वह जगह, जहां अभी तक बिना कटी घास की दीवार सी लग रही थी, घास के बिना नंगे से लग रहे चरागाह के ऊपर मंडराता हुआ बाज — यह सभी कुछ सर्वथा नया था। पूरी तरह जाग जाने के बाद लेविन यह अनुमान लगाने लगा कि कितनी घास काटी जा चुकी है और आज कितनी और काटी जा सकती है।

काम करनेवाले बयालीस लोगों को ध्यान में रखते हुए बहुत ही अधिक कटाई की जा चुकी थी। भूदास-प्रथा के समय तीस आदमी जिस बड़े चरागाह को दो दिन में काटते थे, वह पूरा काटा जा चुका था। छोटी-छोटी कतारों वाले कोनों में ही घास काटना बाकी रह गया था। किन्तु लेविन आज ही यथासम्भव अधिक कटाई करवा लेना चाहता था और जल्दी-जल्दी नीचे जाते सूरज को देखकर उसे अफ़सोस हो रहा था। उसे ज़रा भी थकान महसूस नहीं हो रही थी, वह तो जल्दी-जल्दी और जितना सम्भव हो, ज़्यादा से ज़्यादा काम कर डालना चाहता था।

"क्या ख़्याल है, हम आज माश्किन ऊंचाई पर भी कटाई कर लेंगे या नहीं?" लेविन ने बूढ़े से पूछा।

"जैसी भगवान की इच्छा होगी, सूरज तो ऊंचा नहीं है। छोकरा लोगों को कुछ वोदका देने की सोचन?"

तीसरे पहर, जब फिर से सभी लोग बैठ गये और तम्बाकू पीनेवाले तम्बाकू का मज़ा लेने लगे, तो बूढ़े ने उनको बताया — "माश्किन ऊंचाई पर कटाई कर दिखावन, तो वोदका पावन।"

"अरे, बात नहीं बन पावन! चलो, तीत! तेज़ी से हाथ चलावन! खाना तो बाद में पेट भर कर! चलो!" आवाज़ें गूंजीं और कटाई करनेवालों ने भरपूर तेज़ी से काम करके अपनी कतार ख़त्म कर दी।

गया था और भाई के करीब ही रहना चाहता था। "हां, बारिश के वक्त तुम कहां थे?"

"कैसी बारिश? ऐसे ही कुछ बूंदें गिरी थीं। तो मैं अभी आता हूं। तो तुमने अच्छी तरह दिन बिताया? बहुत अच्छी बात है।" और लेविन हाथ-मुंह धोने तथा कपड़े बदलने के लिये चला गया।

पांच मिनट बाद दोनों भाई भोजन-कक्ष में मिले। लेविन को बेशक ऐसा लग रहा था कि उसे भूख नहीं है और केवल इसीलिये मेज पर बैठ गया है कि कुज्मा बुरा न माने, लेकिन जब खाने लगा, तो भोजन उसे बहुत ही स्वादिष्ट प्रतीत हुआ। कोज्निशेव मुस्कराता हुआ लेविन को देख रहा था।

"अरे हां, तुम्हारा एक खत आया है," वह बोला। "कुज्मा, कृपया नीचे से खत ले आओ। हां, दरवाजा बन्द करना नहीं भूलना।"

खत ओब्लोन्स्की का था। लेविन ने उसे ऊंचे-ऊंचे पढ़ा। ओब्लोन्स्की ने पीटर्सबर्ग से लिखा था "मुझे डौली का पत्र मिला है, वह येर्गूशोवो में है और वहां सब कुछ ठीक-ठाक नहीं कर पा रही है। कृपया उसके पास जाओ, सलाह-मशविरा देकर उसकी मदद करो, तुम तो सब कुछ जानते-समझते हो। तुम्हारे आने से उसे बेहद खुशी होगी। वह बेचारी एकदम अकेली है। मेरी सास और बाकी सब लोग तो अभी तक विदेश में हैं।"

"बहुत अच्छी बात है! जरूर जाऊंगा उनके पास," लेविन ने कहा "हम दोनों इकट्ठे भी चल सकते हैं। कितनी अच्छी है वह। ठीक है न?"

"बहुत दूर तो नहीं हैं वे लोग?"

"कोई पैंतालीस किलोमीटर। शायद साठ किलोमीटर। लेकि रास्ता बहुत बढ़िया है। खूब अच्छा सफर रहेगा घोड़ा-गाड़ी में।"

"बहुत खुश हूं यह जानकर," कोज्निशेव ने लगातार मुस्करा हुए ही जवाब दिया।

छोटे भाई की प्रफुल्ल मुद्रा ने उसका भी खुशी भरा मूड बन दिया था।

"क्या कहने हैं तुम्हारी भूख के!" बड़े भाई ने तश्तरी पर झुके लेविन के भूरे-लाल और सांवले चेहरे तथा गर्दन को गौर से देखते हुए कहा।

प्रफुल्लता से आंखें सिकोड़ रहा था, खाना खत्म होने पर हाथ रहा था तथा बिल्कुल यह याद नहीं कर पा रहा था कि कल किस बारे पर बातचीत हुई थी।

"मेरे ख्याल में तुम कुछ हद तक सही हो। हमारा मतभेद इस बात में है कि तुम निजी हित को प्रेरक-शक्ति मानते हो, जब कि मैं ऐसा मानता हूं कि शिक्षित व्यक्ति में सर्वहित की भावना होनी चाहिये। शायद तुम्हारी बात सही हो कि भौतिक दिलचस्पी से प्रेरित गतिविधि बेहतर होगी। कुल मिलाकर तुम्हारा स्वभाव बहुत ही prime-sautière* है, जैसा कि फ्रांसीसी कहते हैं। तुम बड़े जोश और उत्साह से काम करना चाहते हो या फिर बिल्कुल कुछ करना ही नहीं चाहते।"

लेविन अपने भाई की बात सुन रहा था, कुछ नहीं समझ पा रहा था और समझना भी नहीं चाहता था। उसे सिर्फ यही डर था कि भाई कोई ऐसा सवाल न कर दे, जिससे यह जाहिर हो जाये कि वह कुछ नहीं सुन रहा था।

"तो यह मामला है मेरे दोस्त," कोज्निशेव ने उसका कंधा छूते हुए कहा।

"सो तो जाहिर ही है। सब ठीक है। मैं अपनी बात पर अड़ा नहीं हूं," लेविन ने अपराधी बालक जैसी मुस्कान के साथ कहा। "मैंने किस बात पर बहस की थी?" वह सोच रहा था। "स्पष्ट है कि मैं भी अपनी जगह ठीक हूं और वह अपनी जगह और सब कुछ बढ़िया है। हां, मुझे दफ्तर में जाकर देखना चाहिये कि वहां क्या हाल-चाल है।" वह उठा, उसने अंगड़ाई ली और मुस्कराया।

कोज्निशेव भी मुस्करा दिया।

"कुछ टहलना चाहते हो, तो आओ इकट्ठे चलें," उसने कहा, क्योंकि वह भाई से दूर नहीं होना चाहता था, जिससे ताजगी और स्फूर्ति की महक आ रही थी। "आओ चलें, अगर तुम्हें दफ्तर में कुछ काम है, तो रास्ते में हो लेंगे।"

'हे भगवान!' लेविन इतने जोर से चिल्लाया कि कोज्निशेव डर गया।

---

* आवेगपूर्ण। (फ्रांसीसी)

"क्या बात है?"

"अगाफ्या मिखाइलोव्ना का हाथ?" लेविन ने माथे पर हाथ मारकर कहा। "मैं तो उसके बारे में भूल ही गया।"

"पहले से बेहतर है।"

"फिर भी मैं जल्दी से उसके पास हो आता हू। तुम टोप भी नही पहन पाओगे कि मैं आ जाऊगा।"

और सीढी से नीचे भागते हुए लेविन की एडिया जोर से बज उठी।

(७)

स्तेपान अर्कादयेविच ओब्लोन्स्की बहुत स्वाभाविक और बहुत जरूरी वह कर्तव्य पूरा करने के लिये पीटर्सबर्ग गया था, जिससे सभी सरकारी अधिकारी-कर्मचारी अच्छी तरह परिचित होते है और जिसे दूसरे लोग समझने में असमर्थ रहते हैं तथा जिसकी अवहेलना करके सरकारी दफ्तर में नौकरी करते रहना सम्भव नही होता। यह कर्तव्य है – मन्त्रालय को अपनी याद दिलाना। इस कर्तव्य की पूर्ति के लिये ओब्लोन्स्की घर मे जितने भी पैसे थे, लगभग सभी अपने साथ ले गया और घुडदौडो तथा देहाती बगलो मे खूब मजे की दिलचस्प जिन्दगी बिताता था। इसी वक्त डौली बच्चो को साथ लेकर गाव चली गयी, ताकि जहा तक सम्भव हो, खर्च को कम कर सके। वह दहेज मे मिलनेवाले अपने उसी येर्गूशोवो गाव मे गई थी, जहा वसन्त मे जगल बेच दिया गया था और जो लेविन के पोक्रोव्स्की गाव से कोई पचहत्तर किलोमीटर दूर था।

येर्गूशोवो मे पुरानी बडी हवेली कभी की गिरा दी गयी थी और डौली के पिता ने अपने वक्त मे ही उप-भवन को बडा और ठीक-ठाक करवा दिया था। बीस साल पहले डौली जब बच्ची ही थी, यह उप-भवन खासा बडा और आरामदेह था, यद्यपि सभी उप-भवनो की भाति दक्षिण में और घोडा-गाडी के मार्ग के सामने न होकर बगल की ओर खडा था। लेकिन अब यह उप-भवन पुराना और खस्ता हालत मे था। वसन्त मे ओब्लोन्स्की जब जगल बेचने गया था, डौली ने तभी

उससे मकान को गौर से देखने और उसकी जरूरी मरम्मत आदि करवाने का अनुरोध किया था। सभी वैवफा पतियों की भांति ओब्लोन्स्की ने बीवी के आराम की बहुत चिन्ता की, खुद मकान को अच्छी तरह देखा और उसकी दृष्टि से जो कुछ जरूरी था, सभी कुछ किया। उसके ख्याल के मुताबिक यह जरूरी था कि सारे फ़र्नीचर पर छींटदार कपड़ा चढ़ाया जाये, पर्दे लटकाये जायें, बाग को साफ़ किया जाये, तालाब के करीब पुल बनाया जाये और फूल उगाये जायें। लेकिन वह दूसरी बहुत-सी चीजें भूल गया, जिनकी कमी बाद में डौली को बुरी तरह परेशान करती रही।

ओब्लोन्स्की चिन्ताशील पिता और पति होने की चाहे जितनी भी कोशिश क्यों न करता था, फिर भी किसी भांति यह याद नहीं रख पाता था कि उसकी बीवी और बच्चे हैं। उसकी रुचियां छड़ों जैसी थीं और वह उन्हीं से निर्देशित होता था। मास्को लौटकर उसने बड़े गर्व से बीवी को बताया कि सारी व्यवस्था कर दी गयी है, कि घर बहुत प्यारा हो गया है और उसके ख्याल में उसके लिये वहां जाकर रहना बहुत अच्छा होगा। ओब्लोन्स्की के मतानुसार गांव में जाना सभी दृष्टियों से बहुत सुखद था – बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर हो जायेगा, खर्च कम होगा और खुद उसे अधिक आज़ादी मिल जायेगी। डौली तो बच्चों के लिये, खास तौर पर उस बच्ची के लिये, जो लाल बुख़ार के बाद पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पायी थी, गर्मी भर को गांव में जाना सर्वथा जरूरी मानती थी। वह इस कारण भी ऐसा चाहती थी कि तुच्छ अपमानों, लकड़ी और मछली बेचनेवालों तथा मोची के छोटे-छोटे कर्जों के तकाजों से बच सके, जिन्होंने उसके नाक में दम कर रखा था। इसके अलावा उसे गांव जाना इसलिये भी अच्छा लग रहा था कि बहन कीटी को भी, जो गर्मी के मध्य में विदेश से लौटनेवाली थी और जिसके लिये डाक्टरों ने नदी-स्नान की सिफ़ारिश की थी, अपने पास वहां बुला लेगी। कीटी ने विदेश से लिखा था कि उसके लिये इससे ज्यादा और कोई सुखद बात नहीं हो सकती थी कि वह येर्गूशोवो में, जो दोनों बहनों के बचपन की स्मृतियों से भरपूर था, डौली के साथ गर्मियां बिताये।

शुरू में तो गांव का जीवन डौली के लिये बहुत कठिन रहा। वह बचपन में गांव में रही थी और उसके मन पर कुछ ऐसी छाप रह

उससे मकान को गौर से देखने और उसकी जरूरी मरम्मत आदि करवाने का अनुरोध किया था। सभी बेवफ़ा पतियों की भांति ओब्लोन्स्की ने बीवी के आराम की बहुत चिन्ता की, खुद मकान को अच्छी तरह देखा और उसकी दृष्टि में जो कुछ जरूरी था, सभी कुछ किया। उसके ख्याल के मुताबिक यह जरूरी था कि सारे फर्नीचर पर छींटदार कपड़ा चढ़ाया जाये, पर्दे लटकाये जायें, बाग को साफ किया जाये, तालाब के करीब पुल बनाया जाये और फूल उगाये जायें। लेकिन वह दूसरी बहुत-सी चीजें भूल गया, जिनकी कमी बाद में डौली को बुरी तरह परेशान करती रही।

ओब्लोन्स्की विलासप्रिय पिता और पति होने की चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न करता था, फिर भी किसी भांति यह याद नहीं रख पाता था कि उसकी बीवी और बच्चे हैं। उसकी रुचियां छड़ों जैसी थीं और वह उन्हीं से निर्देशित होता था। मास्को लौटकर उसने बड़े गर्व से बीवी को बताया कि सारी व्यवस्था कर दी गयी है, कि घर बहुत प्यारा हो गया है और उसके ख्याल में उसके लिये वहां जाकर रहना बहुत अच्छा होगा। ओब्लोन्स्की के मतानुसार गांव में जाना सभी दृष्टियों से बहुत सुखद था – बच्चों का स्वास्थ्य बेहतर हो जायेगा, खर्च कम होगा और खुद उसे अधिक आज़ादी मिल जायेगी। डौली तो बच्चों के लिये, खास तौर पर उस बच्ची के लिये, जो लाल बुखार के बाद पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पायी थी, गर्मी भर को गांव में जाना सर्वथा जरूरी मानती थी। वह इस कारण भी ऐसा चाहती थी कि तुच्छ अपमानों, लकड़ी और मछली बेचनेवालों तथा मोची के छोटे-छोटे कर्जों के तगादों से बच सके, जिन्होंने उसके नाक में दम कर रखा था। इसके अलावा उसे गांव जाना इसलिये भी अच्छा लग रहा था कि बहन कीटी को भी, जो गर्मी के मध्य में विदेश से लौटनेवाली थी और जिसके लिये डाक्टरों ने नदी-स्नान की सिफारिश की थी, अपने पास वहां बुला लेगी। कीटी ने विदेश से लिखा था कि उसके लिये इससे ज्यादा और कोई सुखद बात नहीं हो सकती थी कि वह येर्गूशोवो में, जो दोनों बहनों के लिये बचपन की स्मृतियों से भरपूर था, डौली के साथ गर्मियां बिताये।

शुरू में तो गांव का जीवन डौली के लिये बहुत कठिन रहा। वह तो बचपन में गांव में रही थी और उसके मन पर कुछ ऐसी छाप रह

रही थी कि गांव शहर की सभी कठिनाइयों से बचने की जगह है कि वहां जीवन बेशक सुन्दर नहीं है (डौली ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया), मगर सस्ता और आरामदेह है। वहां सब कुछ उपलब्ध है सब कुछ सस्ता है सब कुछ हासिल किया जा सकता है और बच्चे खूब मज़े से रहते हैं। किन्तु अब गृह-स्वामिनी के रूप में गांव आने पर उसने देखा कि यह सब कुछ वैसा नहीं है जैसा उसने सोचा था।

गांव में उनके आने के दूसरे ही दिन मूसलधार बारिश हुई और रात को दालान तथा बच्चों के कमरे में पानी चूने लगा। इसलिये चारपाइयां मेहमानखाने में ले जानी पड़ीं। घर में बावर्चिन नहीं थी। पशु-पालिका के शब्दों में नौ गउओं में से कुछ ब्यानेवाली थीं कुछ पहली बार ब्यायी थीं कुछ बूढ़ी थीं और कुछ कठोर थनोंवाली थीं। बच्चों तक को न दूध और न मक्खन मिलता था। अंडे भी नहीं थे। मुर्गी खरीदना मुमकिन नहीं था। इसलिये बूढ़े सख्त नसों और [illegible] मांसवाले मुर्गे उबालने तथा तलने पड़ते थे। फ़र्शों को धोने के लिये औरतें ढूंढ़ पाना सम्भव नहीं था — सभी आलुओं के खेतों में काम कर रही थीं। सवारी भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि एक घोड़ा बहुत उद्दंड था और गाड़ी में जुतने को तैयार नहीं था। नदी पर नहाने की कहीं जगह नहीं थी — सारे तट पर पशुओं का जमघट था और वह सड़क की ओर से खुला था। सैर के लिये जाना भी मुमकिन नहीं था क्योंकि पशु टूटी हुई बाड़ लांघ कर बाग में आ जाते थे। पशुओं में एक भयानक सांड भी था, जो गरजता था और शायद सींग भी मारता था। कपड़ों के लिये अलमारियां नहीं थीं। जो थीं भी वे बन्द नहीं होती थीं और जब कोई उनके पास से गुज़रता था तो अपने आप खुल जाती थीं। पतीले-कड़ाहियां नहीं थीं, कपड़े धोने का टब और नौकरानी द्वारा कपड़ों पर इस्तरी करने के लिये तख्ता तक नहीं था।

डौली की दृष्टि से इन भयानक मुसीबतों में पड़ जाने पर आरम्भ में तो आराम और चैन की जगह उसे हताशा अनुभव हुई। वह अपनी हर कोशिश करती, अपनी लाचारी की हालत को अनुभव करती और हर घड़ी छलकने को बेचैन आंसुओं को बड़ी मुश्किल से रोकती। कारिन्दा, जो भूतपूर्व सार्जेन्ट था और जिसे ओब्लोन्स्की ने उसकी सुन्दर तथा प्रभावपूर्ण शक्ल-सूरत पर मुग्ध होकर दरबान से कारिन्दा

बना दिया था, डौली की मुसीबतों में कोई दिलचस्पी नहीं लेता था और बड़े आदर से यही कहता रहता था "कुछ भी तो नहीं है बाबा ऐसे बेहूदा लोग हैं," और किसी चीज में मदद नहीं करता था।

स्थिति बहुत ही निराशाजनक लग रही थी। किन्तु, जैसे कि सब सभी परिवारों में होता है, ओब्लोन्स्की के घर में भी नज़र में न आने वाला मगर बहुत ही उपयोगी एक व्यक्ति था। इस व्यक्ति का नाम था – मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना। वह अपनी मालकिन को शान्त होने विश्वास दिलाती कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा (ये उसके ही शब्द थे जिन्हें मात्वेई ने रट लिया था) और खुद बड़े इत्मीनान से बिना घबराहट के बिना अपनी कोशिश करती रही।

कारिन्दे की बीवी के साथ वह फौरन घुल-मिल गयी और पहले ही दिन उसने अकासिया झाड़ियों की छाया में बैठकर कारिन्दे और उसकी बीवी के साथ चाय पी और सभी मामलों पर सोच-विचार किया। जल्द ही अकासिया झाड़ियों के नीचे मात्र्योना फ़िलिमोनोव्ना का क्लब बन गया और इस क्लब के ज़रिये, जिसमें कारिन्दे की बीवी, गाँव का [illegible] और दफ्तर का मुंशी शामिल था, धीरे-धीरे ज़िन्दगी की मुसीबतों को दूर किया जाने लगा तथा एक सप्ताह के अन्दर ही सब कुछ ठीक-ठाक हो गया। छत की मरम्मत कर दी गयी, [illegible] की एक रिश्तेदार बावर्चिन के रूप में मिल गयी, मुर्गियाँ खरीदी गयीं, गायें दूध देने लगीं, बाग के गिर्द [illegible] बना दिया [illegible]

[illegible]

दौरान धर्म के बारे मे अपने स्वतन्त्र विचारो से वह उन्हे बहुत अक्सर हैरान करती थी। उसका अपना, आवागमन का अजीब धर्म था, जिसमें उसकी दृढ आस्था थी, और गिरजे के जड सूत्रो की वह बहुत परवाह नही करती थी। लेकिन परिवार में वह गिरजे की सभी मांगो का कडाई से पालन करती थी और सो भी मिसाल पेश करने के लिये नही, बल्कि सच्चे दिल से। लगभग एक साल से बच्चे धार्मिक अनुष्ठान मे नही गये थे, उसे इस बात से बहुत परेशानी हो रही थी और मार्योना फिलिमोनोव्ना के पूरे समर्थन तथा सहानुभूति से उसने अब गर्मी मे ऐसा करने का निर्णय किया।

डौली ने कई दिन पहले से ही इस बात पर सोच-विचार किया कि सभी बच्चो को कैसे पहनाया-ओढाया जाये। पोशाकें सी गयी, ठीक-ठाक की गयी, धोयी गयी, मगजी उधेडी और चुन्नटें खोली गयी, बटन टांके गये तथा रिबन तैयार किये गये। तान्या के फ्राक ने, जिसे सीने का जिम्मा अंग्रेज शिक्षिका ने लिया था, डौली को बहुत परेशान किया। अंग्रेज शिक्षिका ने गलत जगह पर चुन्नटें डाल दी, आस्तीनों के सूराख बहुत चौडे कर दिये और फ्राक को लगभग बिगाड डाला। तान्या के कंधों पर वह ऐसे तंग और कसा हुआ था कि देखकर दिल को दुख होता था। लेकिन मार्योना फिलिमोनोव्ना को कलियां जोडने और ऊपर से एक छोटा-सा केप डाल देने का अच्छा विचार सूझ गया। बात बन गयी, लेकिन अंग्रेज शिक्षिका के साथ तो झगडा होते होते बचा। इतवार की सुबह तक सब कुछ ठीक-ठाक हो गया था और नौ बजते-बजते – इसी वक्त तक पादरी से प्रार्थना शुरू न करने का अनुरोध किया गया था – खुशी से चमकते-दमकते और बढिया पोशाकें पहने बच्चे बरामदे के पास बग्घी के सामने खडे होकर मां के आने का इन्तजार कर रहे थे।

मार्योना फिलिमोनोव्ना के कहने पर उद्दंड मुश्की घोडे की जगह कारिन्दे का भूरा घोडा बग्घी में जोता गया था और अपनी पोशाक की चिन्ता के कारण देर करनेवाली डौली मलमल की सफेद पोशाक पहने हुए बाहर आई।

डौली ने बडे ध्यान और उत्तेजना से अपने बाल सवारे तथा कपडे पहने थे। पहले वह अपने लिए कपडे पहनती थी ताकि सुन्दर लगे और

समर्थन जरूरी था और इसलिये उसने भी यह कह दिया कि ग्रीशा को नहीं केक मिलेगा। इससे खुशी का सामान्य वातावरण कुछ बिगड़ गया।

ग्रीशा यह कहता हुआ रो रहा था कि निकोलाई भी सीटी बजा रहा था, लेकिन उसे सजा नहीं दी गयी, और वह केक के लिये नहीं रोता है – उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता – बल्कि इसलिये रोता है कि उसके साथ बेइंसाफी हुई है। यह तो और भी ज्यादा दुख की बात थी और डौली ने अंग्रेज शिक्षिका के साथ बातचीत करके ग्रीशा को माफ कर देने का फैसला कर लिया। इसी उद्देश्य से वह अंग्रेज शिक्षिका की ओर चल दी और हॉल को लांघते हुए उसे दिल को इतना अधिक खुश करनेवाला नजारा दिखाई दिया कि उसकी आंखों में आंसू आ गये और उसने खुद ही कसूरवार को माफ कर दिया।

सजा पानेवाला ग्रीशा हॉल की कोनेवाली खिड़की में बैठा था और उसके करीब ही हाथ में तश्तरी लिये हुए तान्या खड़ी थी। गुड़ियों को भोजन कराने का बहाना करके तान्या ने अंग्रेज शिक्षिका से अपने हिस्से का केक बच्चों के कमरे में ले जाने की अनुमति ले ली और उसे हॉल में भाई के पास ले आई। सजा के रूप में उसे जिस बेइंसाफी का शिकार होना पड़ा था उसके बारे में रोना जारी रखते हुए वह केक खा रहा था और सिसकते हुए उसने कहा "खुद भी खाओ, दोनों मिलकर खायेंगे दोनों मिलकर।

तान्या का दिल शुरू में ग्रीशा के लिये दया और इसके बाद अपने नेक काम की चेतना से भर आया तथा उसकी आंखें भी नम हो गयीं। किन्तु केक से इन्कार न करके वह भी अपना हिस्सा खाती जा रही थी।

मां को देखकर वे सहम गये, किन्तु उसके चेहरे को ध्यान से देखने पर समझ गये कि ठीक काम कर रहे हैं, जोर से हंस पड़े और केक से मुंह भरे हुए अपनी मुस्कान से भरे होठों को हाथों से पोंछने लगे और फिर चेहरों पर आंसू तथा मुरब्बा पोत लिया।

"हे भगवान! नया सफेद फ्राक! तान्या! ग्रीशा!" मां ने फ्राक को बचाने की कोशिश करते हुए कहा, किन्तु उसकी आंखों में आंसू भरे हुए थे और उसके होठों पर बड़ी सुखद तथा आनन्दपूर्ण मुस्कान थी।

नयी पोशाकें उतरवा दी गयीं, लड़कियों को ब्लाउज और लड़कों को पुरानी कमीजें पहनने को कहा गया, गाड़ी जोतने का आदेश

दिया गया तथा कारिन्दे की इच्छा के विरुद्ध उसमें फिर से उ
भूरा घोड़ा जोता गया। खुमिया बटोरने और नदी में नहाने के
जाने का निर्णय किया गया था। बच्चों के कमरे से खुशी भरी किलक
या सुनाई दी और वे नहाने के लिये रवाना हो जाने तक शान्त नहीं

खुमियों से पूरी टोकरी भर ली गयी। लिली तक ने खुमी ढ़ूढ
पहले तो ऐसा होता था कि शिक्षिका मिस गूल खुमी ढूंढकर निर्ल
दिखा देती, लेकिन इस बार तो खुद उसी ने बड़ी-सी खुमी ढूंढी
सभी खुशी से चिल्ला उठे "लिली ने बड़ी-सी खुमी ढूंढी है!

इसके बाद बग्घी को नदी के तट पर ले जाया गया घोड़े
भोज वृक्षों के नीचे खड़ा करके सब नहाने चल दिये। कोचवान तेरेन
मक्खियों से बचने के लिये पूछ हिलाते घोड़ों को एक वृक्ष से ब
घास को कुचलते हुए भोज वृक्षों की छाया में लेट गया और
तम्बाकू पीने लगा। नहाने के लिये टट्टी लगाकर बनायी गयी जग
बच्चों की खुशी भरी किलकारियां उसे लगातार सुनाई देती

बेशक सभी बच्चों की देखभाल करना तथा उनकी शरारतें
रोकना काफी परेशानी का काम था बेशक सभी की जुर्राबों सुर्था
विभिन्न पैरों के जूतों को याद रखना तथा गड़बड़ न करना फीते
बटन खोलना तथा उन्हें फिर से बांधना और बन्द करना मुश्किल
था, फिर भी डौली को, जो खुद नदी-स्नान को हमेशा बहुत
करती रही थी और जिसे बच्चों के लिये भी स्वास्थ्यप्रद मानती
किसी भी और चीज से इतना अधिक आनन्द नहीं मिलता था कि
बच्चों के साथ ऐसे नहाने में। उनकी गुदगुदी टांगों को छूना
पर जुर्राबें चढ़ाना, उनके छोटे-छोटे नंगे शरीरों को हाथों में
डुबकियां लगवाना, कभी खुशी भरी और कभी डरी हुई चीखें
सुनना, फैली-फैली, डरी-डरी और खुशी से चमकती आंखों
चेहरों तथा इन हांफते हुए अपने छोटे-छोटे फरिश्तों को देखना
लिये बहुत ही आह्लादपूर्ण था।

आधे बच्चे जब कपड़े पहन चुके थे, तो जंगली फल-फूलं
चुनती और सजी-धजी देहाती औरतें स्नान-स्थान के करीब आईं
सहमी-सहमी-सी रुक गयीं। मात्र्योना फिलिमोनोव्ना ने उनमें से एक
पानी में गिर गयी चादर और कमीज को सुखाने के लिये पुकार कि

डौली इन देहाती औरतों से बातें करने लगी। शुरू में मुंह पर हाथ रखकर हंसने और प्रश्नों को न समझनेवाली इन देहाती औरतों की जल्द ही झेंप दूर हो गयी, वे बातें करने लगी तथा तुरन्त ही उन्होंने बच्चों के प्रति अपने सच्चे प्रशंसा भाव से, जिसे वे स्पष्ट रूप में प्रकट कर रही थीं, डौली का मन जीत लिया।

"अरे, कैसी खूबसूरत है वह, चीनी-सी सफ़ेद-सफ़ेद," तान्या को मुग्ध होकर देखती और सिर हिलाती हुई एक किसान औरत ने कहा। "पर कितनी दुबली-पतली "

"हां यह बीमार रही है।"

"अरे, या को भी नहलायो गयो," दूसरी ने गोद के बेटे के बारे में कहा।

'नहीं वह तो अभी तीन महीने का है," डौली ने गर्व से उत्तर दिया।

"अरे वाह!

"तुम्हारे बच्चे है?"

'चार थे दो रह गये – बेटो और बिटिया। पिछले धार्मिक व्रत पर दूध छुड़ायो है।"

'कितनी उम्र है इसकी?"

"दूसरो बरस चल रह्यो।

'तो क्या इतनी देर तक दूध पिलाती रही?"

'हम तो ऐसा ही करत – तीन बरस तक।"

और डौली के लिये बातचीत बहुत ही दिलचस्प हो गयी – प्रसूति कैसी रही? बेटे को क्या बीमारी हुई थी? पति कहां है? अक्सर आता है या नहीं?

डौली को देहाती औरतों के साथ अपनी बातचीत इतनी दिलचस्प लग रही थी, इनकी रुचियां इतनी अधिक समान थीं कि उसका वहां से उठकर जाने को मन नहीं हो रहा था। डौली के लिये सबसे अधिक सुखद बात तो यह थी कि वह देखती थी कि वे औरतें सबसे ज्यादा इस बात पर मुग्ध हो रही थीं कि उसके इतने अधिक और ऐसे प्यारे बच्चे हैं। इन औरतों ने डौली को हंसाया और अंग्रेज शिक्षिका मिस [illegible] को इस बात के लिये नाराज़ भी कर दिया कि वही [illegible] इसकी

समझ मे न आनेवाली हसी का कारण थी। एक जवान देहाती औरत सबसे बाद मे कपडे पहननेवाली अग्रेज शिक्षिका को ध्यान से देख रही थी और जब उसने तीसरा स्कर्ट पहना, तो वह यह टिप्पणी किये बिना न रह सकी "अरे वाह, पहनत जात है पहनत जात है, बस करने का नाम ही न लेवत," उसने कहा और वे सभी की सभी ठठाकर हस पडी।

(६)

नहाये-धोये और गीले बालोंवाले बच्चो से घिरी और खुद अपने सिर पर रूमाल बाधे डौली घर के करीब पहुच रही थी, जब कोचवान ने कहा

"कोई साहब आ रहे हैं, पोक्रोव्स्कोये गाव वाले लगते है।"

डौली ने गौर से सामने की तरफ देखा और सलेटी रग के टोप तथा सलेटी रग के ओवरकोट मे लेविन को पहचानकर, जो उनकी तरफ आ रहा था, बहुत खुश हुई। उसके आने पर वह हमेशा ही खुश होती थी और अब खास तौर पर इसलिये खुश हुई कि लेविन उसे उसकी पूरी भव्यता के साथ देख सकेगा। उसकी गरिमा को लेविन से अधिक अच्छी तरह तो कोई भी नही समझ सकता था।

डौली को देखने पर उसकी आखो के सामने भावी पारिवारिक जीवन के बारे मे उसकी कल्पना का एक चित्र प्रस्तुत हो गया।

"आप तो बिल्कुल अपने चूज़ो से घिरी हुई मुर्गी जैसी लग रही हैं, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना।"

"ओह, कितनी खुश हू मैं आपके आने से।" लेविन की ओर हाथ बढाते हुए उसने कहा।

"खुश हैं, मगर आपने यहा आने के बारे मे खबर नही भेजी। मेरे यहा बडा भाई आया हुआ है। स्तीवा की चिट्ठी से यह पता चला कि आप यहा हैं।"

"स्तीवा की चिट्ठी से?" डौली ने हैरान होकर पूछा।

"हा, उसने लिखा है कि आप यहा आई हुई है और उसका ख्याल है कि आप मुझे किसी चीज़ मे मदद करने की अनुमति देगी,"

लेविन ने कहा और यह कहकर अचानक झेंप गया तथा बात को अधूरी छोड़कर चुपचाप बग्घी के साथ चलता हुआ लाइम वृक्ष की कोंपलें तोड़कर कुतरता रहा। वह यह सोचकर झेंप गया था कि डौली को उस काम के लिये किसी पराये आदमी की मदद पाकर खुशी नहीं होगी, जिसे उसके पति को करना चाहिये था। डौली को सचमुच ही अपने पारिवारिक काम-काजों को दूसरों के मत्थे मढ़ देने की स्तीवा की यह आदत पसन्द नहीं थी। वह फौरन यह समझ गयी कि लेविन को इस बात का एहसास है। मामले की बारीकी को समझने की इस क्षमता, भावनाओं की इस सूक्ष्मता के लिये ही डौली को लेविन अच्छा लगता था।

"जाहिर है, मुझे यह समझते देर नहीं लगी कि आप मुझसे मिलना चाहती हैं और मुझे इस बात की बड़ी खुशी है। निश्चय ही मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि शहरी घर-गिरस्ती चलाने वाली आप जैसी महिला को यहां सब कुछ बड़ा अटपटा-सा लगता होगा। इसलिये अगर किसी तरह की कोई जरूरत महसूस हो, तो मैं पूरी तरह आपकी सेवा में हाजिर हूं।"

"अजी नहीं!" डौली ने जवाब दिया। "शुरू में कुछ परेशानी हुई, मगर अब तो मेरी बूढ़ी आया की बदौलत सब कुछ ठीक-ठाक हो गया है," उसने मात्र्योना फिलिमोनोव्ना की तरफ संकेत करते हुए कहा। मात्र्योना फिलिमोनोव्ना यह समझते हुए कि उसी की चर्चा चल रही है, खुशी भरी और मैत्रीपूर्ण मुस्कान के साथ लेविन की तरफ देखकर मुस्करा दी। वह लेविन को जानती थी और उसे यह भी मालूम था कि वह डौली की छोटी बहन के लिये अच्छा वर है तथा यह चाहती थी कि मामला सिरे चढ़ जाये।

"कृपया बग्घी में बैठ जाइये, हम थोड़ा खिसक जायेंगी," मात्र्योना फिलिमोनोव्ना ने लेविन से कहा।

"नहीं, मैं पैदल आऊंगा। बच्चो, कौन घोड़ों से होड़ करने के लिये मेरे साथ चलेगा?"

बच्चे लेविन को बहुत कम जानते थे, उन्हें याद नहीं था कि कब उससे मिले थे, किन्तु उन्होंने उसके सामने में संकोच और अरुचि का वह भाव नहीं दिखाया जो ढोंग करनेवाले वयस्कों के प्रति बच्चे अनुभव करते हैं और जिसके कारण उन्हें अक्सर सजा भुगतनी पड़ती है।

भिजवा दूं? अगर आप हिसाब चुकाना ही चाहे और अगर आपको ऐसा करते हुए लाज न आये, तो हर महीने मुझे पाच रूबल दे सकती हैं।"

"नही, बडी मेहरबानी। हमारे यहा सब कुछ ठीक चल रहा है।"

"तो मैं आपकी गउए देख लूंगा और अगर अनुमति देगी तो यह समझा दूगा कि उन्हे कैसे चराया जाये। चारा ही तो असली चीज है।"

और लेविन ने बातचीत को बदलने के उद्देश्य से ही डौली को दूध-उत्पादन का सिद्धान्त स्पष्ट किया, जिसका मुख्य भाव यह था कि गाय चारे को दूध मे बदलनेवाली मशीन के सिवा कुछ नही है, इत्यादि।

लेविन यह सब कह रहा था और कोठी के बारे मे तफसीले जानने को बहुत उत्सुक था, मगर साथ ही इससे डर भी रहा था। उसे इस बात की शका थी कि बडी मुश्किल से हासिल किया गया उसके मन का चैन फिर से खो जायेगा।

"हा, यह सब तो ठीक है, लेकिन इन सब चीजो की तरफ ध्यान देना जरूरी है, वह कौन करेगा?" डौली ने मन मारकर उत्तर दिया।

मात्र्योना फिलिमोनोव्ना की मदद से डौली ने अपनी घर-गिरस्ती ऐसे जमा ली थी कि अब वह उसमे किसी भी तरह की तब्दीली नही करना चाहती थी। इसके अलावा खेतीबारी सम्बन्धी लेविन की जानकारी मे उसे विश्वास नही था। इस विचार के बारे मे उसे सन्देह था कि गाय दूध बनानेवाली मशीन ही है। उसे लगा कि इस किस्म के विचार कृषि-व्यवस्था मे केवल बाधा ही डाल सकते है। उसे प्रतीत हुआ कि यह सब कही अधिक सीधा-सरल मामला है, कि सिर्फ, जैसा कि मात्र्योना फिलिमोनोव्ना ने समझाया था, चितकबरी और सफेद पुट्ठे वाली गाय को अधिक चारा-पानी देना चाहिये, कि बावर्ची रसोईघर से बची खुची खाने पीने की चीजो और जूठन को धोबिन की गाय के लिये न ले जाये। यह सब कुछ समझ मे आता था। मगर अनाज और घास के चारे के बारे मे तर्क-वितर्क अस्पष्ट और सन्देहपूर्ण थे। फिर मुख्य बात तो यह थी कि वह कोठी की चर्चा करना चाहती थी।

(१०)

"कीटी ने मुझे लिखा है कि वह एकान्त और शान्ति से अधिक और कुछ नहीं चाहती," डौली ने मौन छा जाने पर कहा।

"उसका स्वास्थ्य अब अच्छा है क्या?" लेविन ने बेचैनी अनुभव करते हुए पूछा।

"भगवान की दया से वह बिल्कुल स्वस्थ हो गयी है। मुझे कभी यह यकीन नहीं हुआ था कि उसे तपेदिक है।"

"ओह, मुझे बड़ी खुशी है!" लेविन ने कहा। डौली को लगा कि ब लेविन ने ऐसा कहा और चुपचाप उसकी तरफ़ देखता रहा, तो उसके चेहरे पर मन को कुछ छूनेवाला और लाचारी का भाव था।

"कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच, मुझे यह बताइये," डौली ने अपनी दयालु और तनिक उपहासजनक मुस्कान के साथ कहा, "आप कीटी से किसलिये नाराज़ हैं?"

"मैं? मैं नाराज़ नहीं हूं," लेविन ने जवाब दिया।

"नहीं, आप नाराज़ हैं। आप जब मास्को गये थे, तो हमारे और उनके यहां क्यों नहीं आये थे?"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," लेविन ने शर्म से पानी-पानी होते हुए जवाब दिया, "मुझे इस बात की हैरानी हो रही है कि आप, पनी दयालुता के बावजूद इस बात को अनुभव नहीं कर रही हैं। पको मुझ पर तरस क्यों नहीं आ रहा, जबकि आप यह जानती हैं ..."

"क्या जानती हूं मैं?"

"यह जानती हैं कि मैंने प्रस्ताव किया और मुझे इन्कार कर दिया गया," लेविन ने कहा और वह कोमल भावना, जो क्षण भर पहले उसने कीटी के लिये अनुभव की थी, तिरस्कार के लिये गुस्से की भावना में बदल गयी।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि मैं जानती हूं?"

"क्योंकि सभी यह जानते हैं ..."

"यह आपकी भूल है। मैं यह नहीं जानती थी, यद्यपि कुछ अनुमान ज़रूर लगाती थी।"

"अच्छा! अब तो आप जानती हैं।"

"मैं सिर्फ इतना जानती थी कि कोई बात हुई है, जो उसे बहुत यातना दे रही थी और यह कि उसने कभी भी इसकी चर्चा न करने का मुझसे अनुरोध किया था। अगर उसने मुझे यह नहीं बताया, तो किसी को भी नहीं बताया। लेकिन क्या हुआ था आप दोनों के बीच? मुझे बताइये।"

'मैंने बता दिया है कि क्या हुआ था।"

'कब हुआ था यह?"

'जब मैं आखिरी बार आपके यहां गया था।"

"जानते हैं कि मैं आप से क्या कहना चाहती हूं," डौली बोली, "मुझे बहुत, बहुत ही अफसोस है उसके लिये। आप तो केवल आत्माभिमान की भावना से व्यथित हैं "

"हो सकता है," लेविन ने कहा, "लेकिन "

डौली ने उसकी बात काटी

'लेकिन उस बेचारी के लिये मुझे बहुत, बहुत ही अफसोस है। अब मैं सब कुछ समझती हूं।'

"मगर, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, मैं आपसे माफी चाहता हूं," लेविन ने उठते हुए कहा। "विदा! दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना, फिर मिलेंगे।"

"नहीं, रुकिये" लेविन की आस्तीन थामते हुए उसने कहा। "रुकिये, बैठिये।"

"कृपया, कृपया हम इसकी चर्चा नहीं करेंगे," लेविन ने बैठते हुए कहा और साथ ही उसे यह अनुभव हुआ कि वह उम्मीद, जो उसे दफन हो चुकी प्रतीत हुई थी, फिर से उसके दिल में अंगड़ाई ले रही है, हिल-डुल रही है।

"अगर मैं आपको चाहती न होती," डौली ने कहा और उसकी आंखें डबडबा आईं, "अगर मैं आपको वैसे ही न जानती होती, जैसे जानती हूं "

यह भावना, जो दम तोड़ चुकी प्रतीत होती थी, अधिकाधिक सजीव होकर उभर रही थी और लेविन के हृदय पर हावी होती जा रही थी।

"हां, मैं अब सब कुछ समझ गयी हूं," डौली कहती गयी। 'आप यह नहीं समझ सकते। आप मर्दों को, आज़ाद और चुनाव

में थी। दुविधा यह थी – आप या व्रोन्स्की। उससे वह हर दिन मिलती थी, आपसे काफ़ी अर्से से नही मिलती थी। अगर वह कुछ अधिक उम्र की होती – मिसाल के तौर पर उसकी जगह मेरे लिये कोई दुविधा नहीं हो सकती थी। वह मुझे कभी भी फूटी आखो नहीं सुहाया था और मेरे मन की ही बात ठीक निकली।"

लेविन को कीटी का जवाब याद हो आया। उसने कहा था "नही, ऐसा नहीं हो सकता "

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना," उसने रुखाई से कहा, "अपने प्रति आपके इस विश्वास का मैं बहुत ऊचा मूल्याकन करता हू। मेरे ख्याल में आप गलती कर रही हैं। मैं सही हू या गलत हू, लेकिन यह आत्माभिमान, जिसे आप ऐसे तिरस्कार से देखती हैं, मेरे लिये येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना के बारे में कुछ सोचना ही असम्भव बना देता है। आप समझती हैं न, एकदम असम्भव बना देता है।"

"मैं सिर्फ एक बात और कहूगी – आप जानते हैं कि मैं अपनी उस बहन की चर्चा कर रही हू, जिसे अपने बच्चो की तरह प्यार करती हू। मैं यह नही कह रही हू कि वह आपको प्यार करती थी, बल्कि सिर्फ इतना कहना चाहती थी कि उस वक्त उसका इन्कार करना कुछ भी जाहिर नही करता।"

"मैं नही जानता!" लेविन ने उछलकर खडे होते हुए कहा। "काश, आप जानती कि कैसी ठेस लगा रही हैं मेरे दिल को! यह तो बिल्कुल ऐसी ही बात है कि आपका बच्चा मर जाये और लोग आपसे कहे – वह ऐसा, ऐसा हो सकता था, जिन्दा रह सकता था और आपको ऐसी-ऐसी खुशिया दे सकता था। मगर वह मर चुका है, मर चुका है, मर चुका है "

"कितने हास्यास्पद हैं आप," डौली ने कहा और लेविन के उत्तेजित होने के बावजूद उदासी से मुस्करा दी। "हा, मैं अब अधिकाधिक सब कुछ समझती जा रही हू," वह कहती गयी। "तो आप कीटी के आ जाने पर हमारे यहा नहीं आयेंगे?"

"नहीं, नहीं आऊगा। जाहिर है कि येकातेरीना अलेक्सान्द्रोव्ना मैं कन्नी नहीं काटूगा, लेकिन जहा कहीं भी सम्भव होगा, अपनी . मे उसका दिल न दुखाने की कोशिश करूगा।"

वह तान्या को जहां भी मुमकिन होता, घूमे मार रहा था। डौली ने जब यह देखा तो उसके हृदय मे मानो कही कुछ टूट गया। उसके जीवनाकाश पर काली घटा-सी छा गयी, वह समझ गयी कि उसके यही बच्चे, जिन पर उसे इतना नाज था, न केवल बिल्कुल साधारण, बल्कि बुरे, बुरी शिक्षा-दीक्षा तथा भद्दी और पाशविक प्रवृत्तिवाले दूर बच्चे हैं।

वह अन्य किसी बात की चर्चा करने और किसी अन्य चीज के बारे मे सोचने मे असमर्थ थी तथा लेविन को अपना दुख बताये बिना नहीं रह सकती थी।

लेविन ने देखा कि वह बहुत दुखी है और उसने यह कहते हुए उसे शान्त करने की कोशिश की कि यह कुछ भी बुरा जाहिर नही करता, कि सभी बच्चे हाथापाई करते हैं। किन्तु ऐसा कहते हुए लेविन मन ही मन सोच रहा था. "नही, मैं शान नही दिखाऊगा और अपने बच्चो के साथ फ्रासीसी मे बातचीत नही करूगा, लेकिन मेरे बच्चे ऐसे नही होगे। मुख्य बात तो यह है कि उन्हे बिगाडना और खराब नही करना चाहिये और वे बहुत अच्छे बच्चे बन जायेगे। हा, मेरे बच्चे ऐसे नही होगे।"

लेविन विदा लेकर चला गया और डौली ने उसे रोका नहीं।

(११)

जुलाई के मध्य मे लेविन की बहन के गाव का मुखिया उसके पास आया। यह गाव लेविन के पोक्रोव्स्कोये गाव से तीस किलोमीटर दूर था। मुखिया काम-काज की स्थिति और घास की कटाई के बारे मे विवरण लाया था। बहन की जागीर से मुख्यत चरागाहों मे पैदा होनेवाली घास से आय प्राप्त होती थी। पहले के वर्षों मे किसान एक हेक्टर के लिये बीस रूबल देकर घास काट ले जाते थे। लेविन ने जब इस जागीर का प्रबन्ध अपने हाथ मे लिया, तो घास की भूमि का निरीक्षण करके इस नतीजे पर पहुचा कि उनका अधिक मूल्य होना चाहिये और उसने एक हेक्टर की घास के लिए पच्चीस रूबल कीमत निर्धारित कर दी। किसान यह कीमत देने को तैयार नहीं हुए और, जैसा कि लेविन को

थी तथा बाद में दब गयी है और यह कि सब कुछ दीन-ईमान से किया गया है, लेविन अपनी बात पर अडा रहा कि उसकी अनुमति के बिना घास का बटवारा किया गया है और इसलिये वह हर टाल में पचास छकडे भरने के गट्ठे मानने को तैयार नही है। काफी लम्बे बहस-मुबाहसे के बाद मामला यो तय हुआ कि किसान पचास छकडे मानते हुए इन ग्यारह टालो को खुद ले ले और मालिक का हिस्सा नये सिरे से अलग कर दे। यह बातचीत और घास के बंटवारे का काम सारी दोपहर तक चलता रहा। जब घास का आखिरी हिस्सा बंट गया, तो लेविन ने बाकी देखभाल का काम मुशी को सौंपा और विल्लो की शाखा के निशानवाली घास की टाल पर बैठकर लोगों से भरे चरागाह को मुग्ध होकर देखने लगा।

लेविन के सामने दलदल के पीछे उस जगह, जहा नदी मुडती थी, रग-बिरगी पोशाकें पहने ऊची और खुशी-भरी आवाजों में बोलती-बतियाती हुई देहाती औरतो की एक पात हिल-डुल रही थी और पीले-हरे डठलो पर फैली हुई घास जल्दी-जल्दी भूरी और टेढी-मेढी कतारों मे बदलती जाती थी। औरतो के पीछे-पीछे पाचे लिये हुए मर्द आ रहे थे और घास की कतारे चौडी, ऊची और फूली-फूली टालो का रूप लेती जा रही थी। बाईं ओर के उस चरागाह मे, जहा से घास उठाई जा चुकी थी, छकडो की खडखडाहट सुनाई दे रही थी, बडे-बडे पाचो से इनमे लादी जानेवाली घास की टाले एक के बाद एक गायब होती जा रही थी और मधुर सुगन्ध वाली घास से भरे छकडो का रूप लेती जाती थी, जो घोडो के पुट्ठो पर टिके हुए थे।

"बस, मौसम अच्छो बनो रहे! घोखो सारो होवन!" लेविन की बगल मे बैठते हुए बूढे ने कहा। "घास नहीं, चाय होन। तो ऐसे काम करत मानो चूजे दाना खावन," घास की उठाई जाने वाली टालो की ओर सकेत करते हुए उसने कहा। "दुपहर के भोजन बाद से आधी घास लाद चुकत।"

"अन्तिम होवे क्या?" उसने पुकारकर उस नौजवान से पूछा, जो छकडे के अग्रभाग में खडा था और सन की लगामो के सिरो को हिलाता हुआ निकट से गुजर रहा था।

"हा, अन्तिम होवे, बापू!" नौजवान ने घोडे को जरा रोककर

सब सामान को ठीक किया और घास को रस्सी से बांधने के लिए छकड़े के नीचे घुस गये। इवान उन्हें सिखा रहा था कि यह काम कैसे करना चाहिये और दोनों द्वारा कहे गये कुछ शब्दों को सुनकर वह जोर से हंस पड़ा। दोनों के चेहरों के भावों में यौवन से मदमाता, प्रसन्न और कुछ-कुछ सकुचाने-सा चमक खोलने वाला प्यार झलक रहा था।

(१२)

छकड़े पर लदी घास बांध दी गयी थी। इवान कूदकर नीचे आ गया और बढ़िया तथा मोटे-ताज़े घोड़े की लगाम थामकर चलने लगा। उसकी बीवी ने छकड़े पर लदी घास पर जेली फेंक दी और फुर्ती से हाथ मलती तथा हाथ हिलाती हुई चक्र में जमा औरतों की तरफ चल दी। सड़क पर पहुंचकर इवान ने छकड़ों की लम्बी पांत में अपना छकड़ा भी लगा दिया। कंधों पर जेली रखे, रंग-बिरंगी चटकीली पोशाकों की झलक दिखाती और खुशी भरी ऊंची आवाज़ों को गुंजाती हुई औरतें छकड़ों के पीछे-पीछे चल रही थीं। एक खरखरे और अनगढ़े नारी-कण्ठ ने एक गाना शुरू किया और उसे दोहरायी जानेवाली स्थायी तक ला दिया तथा पचास मोटी और बारीक और जोरदार आवाज़ों ने उसे एकसाथ ही मिल-जुलकर फिर से गाना शुरू कर दिया।

गाती हुई औरतें लेविन के करीब आती जा रही थीं और उसे ऐसा लगा मानो हंसी-खुशी की गड़गड़ाहट करती हुई एक काली घटा उसकी ओर बढ़ती आ रही है। यह घटा घिर आई, उसे, जिस टाल पर वह लेटा हुआ था, उसे तथा घास की दूसरी टालों और छकड़ों तथा दूरस्थ खेतों-मैदानों तक को उसने अपनी लपेट में ले लिया और सभी कुछ मानो सीटियों और तरह-तरह की आवाज़ों की गूंज वाले इस हंसी-खुशी से हुमकते उन्मत्त गाने की लय के साथ डोल और झूम रहा था। लेविन को इस तरह के स्वस्थ आनन्द-मंगल से ईर्ष्या हुई, उसने चाहा कि जीवन की इस खुशी की अभिव्यक्ति में भाग ले।

कुछ भी नहीं कर सकता था और लेटे रहकर देखने तथा

था, उसके लिये कोई चारा नहीं था। अब गाते हुए वे

काम के पूरे लम्बे दिन ने हंसी-खुशी के अतिरिक्त उन पर अन्य कोई छाप नहीं छोड़ी थी। पौ फटने के पहले सब कुछ शान्त हो गया। सिर्फ रात की आवाजें – दलदलों में लगातार टर्टरानेवाले मेंढकों का स्वर और सुबह होने के पहले चरागाह में छा जानेवाले कुहासे में घोड़ों की हिनहिनाहट ही सुनाई दे रही थी। आंख खुलने पर लेविन घास की टाल पर से उठा और तारों को देखते ही समझ गया कि रात गुजर चुकी है।

"तो मैं क्या करूंगा? कैसे करूंगा मैं यह?" उसने अपने आपसे कहा। वह खुद अपने लिये उस विचार की अभिव्यक्ति ढूंढ रहा था, जो उसने इस छोटी-सी रात में सोचा और अनुभव किया था। उसने जो कुछ सोचा और अनुभव किया था, उसे तीन विभिन्न विचार-शृंखलाओं में विभाजित किया जा सकता था। पहली, पुरानी ज़िन्दगी, अपने अनुपयोगी ज्ञान और उस शिक्षा से इन्कार करना था, जिसकी किसी को आवश्यकता नहीं थी। ऐसा करने में उसे आनन्द की अनुभूति होती थी और यह उसके लिये बहुत आसान तथा सीधी-सादी बात थी। दूसरे विचारों और कल्पनाओं का सम्बन्ध उस जीवन से था, जो वह अब बिताना चाहता था। इस जीवन की सादगी, निर्मलता और औचित्य को वह स्पष्ट रूप से अनुभव करता था और उसे विश्वास था कि उस जीवन में उसे वह सन्तोष, चैन और गरिमा प्राप्त हो जायेगी, जिनकी अनुपस्थिति को वह दुखी मन से अनुभव करता था। तीसरी विचार-शृंखला का सम्बन्ध इस प्रश्न से था कि इस पुराने जीवन से नये की ओर संक्रमण कैसे किया जाये। इस प्रश्न के जवाब में उसे कुछ भी स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था। "बीवी ले आऊं? कोई काम करूं और काम करने की आवश्यकता अनुभव करूं? पोक्रोव्स्कोये को छोड़ दूं? भूमि खरीद लूं? किसान-कम्यून में शामिल हो जाऊं? किसी किसान औरत से शादी कर लूं? कैसे बदलूं मैं अपनी इस ज़िन्दगी को?" उसने फिर अपने से यह पूछा और उसे कोई जवाब नहीं मिला। "वैसे मैं रात भर नहीं सोया और कुछ भी तो स्पष्ट कल्पना नहीं कर सकता," उसने अपने आपसे कहा। "मैं बाद में इसे स्पष्ट करूंगा। एक बात तय है कि आज की रात ने मेरे भाग्य का निर्णय कर दिया। पारिवारिक जीवन के बारे में मेरे पहले के सभी सपने बकवास हैं, अवास्तविक हैं,"

लेविन से भूल नही हो सकती थी। दुनिया में ऐसी और आखें तो थी ही नही। दुनिया में केवल यही एक लड़की थी, जो उसके लिये जीवन का सारा प्रकाश और अर्थ सकेन्द्रित कर सकती थी। यह वही थी। यह कीटी ही थी। लेविन समझ गया कि वह स्टेशन से येर्गूशोवो जा रही है। वे सभी चीजे, जो इस उनीदी रात में लेविन को परेशान करती रही थी, वे सभी निर्णय, जो उसने किये थे, अचानक गायब हो गये। किसी किसान औरत के साथ शादी करने की बात को उसने नफरत से याद किया। केवल वही, तेज़ी से दूर जाती और सड़क के दूसरी ओर पहुच जानेवाली इस बग्घी में, केवल वही पिछले कुछ अर्से से उसके लिये इतने यातनाप्रद ढग से बोझिल बनी हुई जीवन की पहेली का हल था।

कीटी ने फिर बग्घी से बाहर नही झाका। बग्घी के स्प्रिगो की आवाज अब सुनाई नही देती थी, घटियो की टनटनाहट तनिक सुनाई पड रही थी। कुत्तो की भूक ने स्पष्ट कर दिया कि बग्घी गाव में पहुंच गयी है, और इर्द-गिर्द खाली खेत, सामने गाव तथा वह खुद एकाकी तथा सभी कुछ से बेगाना बडे मार्ग पर फेका हुआ-सा अकेला चला जा रहा है।

लेविन ने वह बादल-सीपी देख पाने की आशा से आकाश को ताका, जिसे उसने कुछ क्षण पहले मुग्ध होकर देखा था और जो उसके लिये उस रात के सभी विचारों और भावनाओं का प्रतीक बन गयी थी। अब आकाश मे सीपी जैसा कुछ भी नही था। वहा, पहुच से बाहर की ऊचाई पर रहस्यपूर्ण परिवर्तन हो चुका था। बादल-सीपी का तो चिह्न तक बाकी नही रहा था और आधे आकाश में अधिकाधिक छोटे होते जाते फूले-फूले बादलो का समतल कालीन-सा फैला हुआ था। आकाश नीला हो चुका था और चमक रहा था तथा उसी कोमलता और उसी पहुच से बाहर की दूरी में उसकी प्रश्नसूचक दृष्टि का उत्तर दे रहा था।

"नही," उसने अपने आपसे कहा, "सादगी और मेहनत की यह जिन्दगी चाहे कितनी ही अच्छी क्यों न हो, मैं उसकी तरफ नहीं ... मैं 'उसे' प्यार करता हू।"

बहुत-से लोगों ने द्वन्द्व-युद्ध किये थे।

किशोरावस्था से द्वन्द्व-युद्ध का विचार कारेनिन को खास तौर पर इसलिये आकर्षित करता रहा था कि वह स्वभाव से डरपोक आदमी था और इस बात को अच्छी तरह जानता था। कारेनिन अपनी ओर तनी हुई पिस्तौल की कल्पना करके सहम उठता था और उसने अपने जीवन में कभी किसी हथियार का इस्तेमाल नहीं किया था। इस डर ने जवानी के दिनों में उसे अक्सर द्वन्द्व-युद्ध के बारे में सोचने और उस स्थिति से तुलना करने के लिये बाध्य किया, जिसमें उसे अपने जीवन को खतरे के सामने करना होगा। जिन्दगी में कामयाबी पाने और मजबूत स्थिति प्राप्त कर लेने के बाद वह कभी का इस भावना को भूल चुका था। मगर इस पुरानी आदत ने अपना रंग दिखाया और अपनी कायरता का भय इतना प्रबल सिद्ध हुआ कि उसने द्वन्द्व-युद्ध पर सभी पहलुओं से देर तक सोचा और मन ही मन इस विचार से खिलवाड़ किया, यद्यपि वह पहले से ही इस बात को जानता था कि किसी भी हालत में द्वन्द्व-युद्ध नहीं करेगा।

"हमारा समाज अभी इतना असभ्य है (इंगलैंड जैसी बात नहीं) कि बहुत से लोग" – और इन लोगों में वे भी शामिल थे, जिनकी राय को कारेनिन महत्त्व देता था – द्वन्द्व-युद्ध को अच्छा मानते हैं, मगर इसका नतीजा क्या निकलेगा? मान लें, मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये चुनौती देता हूं," कारेनिन न मन ही मन सोचता रहा और चुनौती के बाद की रात और अपनी ओर तनी हुई पिस्तौल की सजीव कल्पना करके सिहर उठा और समझ गया कि वह कभी ऐसा नहीं करेगा – "मान लें मैं उसे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकार देता हूं। मान लें, मुझे पिस्तौल चलाना सिखा दिया जाता है," वह सोचता गया, "मुझे ढंग से खड़ा कर दिया जाता है, मैं घोड़ा दबा देता हूं," – उसने आखें मूंद कर अपने आपसे कहा – "और पता चलता है कि मैंने उसकी हत्या कर डाली," कारेनिन ने अपने आपसे कहा और इन बेहूदा विचारों को दूर भगाने के लिये सिर झटका। "अपराधिनी पत्नी और बेटे के साथ अपने सम्बन्धों का निपटारा करने आदमी की हत्या करने में क्या तुक है? फिर भी करना ही होगा कि बीवी के साथ क्या व्यवहार करूं? ज्यादा जिस बात की सम्भावना है और जो निस्सन्देह

मैं मारा जाऊगा या घायल हो जाऊगा।
हो ही जायेगा, वह यह है कि मैं मारा जाऊगा या घायल
मैं, जो बेक्सूर आदमी हू, बलि का बकरा हू, मारा जाऊगा या घायल
हो जाऊगा। यह तो और भी ज्यादा बेतुकी बात है। लेकिन इतना ही
नही, मेरी ओर से उसे द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती देना ईमानदारी का काम
नही होगा। क्या मैं पहले से ही यह नही जानता हू कि मेरे दोस्त मेरे
लिये द्वन्द्व-युद्ध की नौबत नही आने देगे – कभी ऐसा नही होने देगे कि
राजकीय कार्यकर्ता रूस के लिये महत्त्व रखनेवाले व्यक्ति का जीवन
खतरे मे पडे? तो इसका क्या नतीजा होगा? नतीजा यह होगा कि
मैंने पहले से ही यह जानते हुए कि मामला कभी भी खतरे की हद तक
नही पहुच सकेगा, उसे चुनौती देकर अपनी थोडी झूठी शान दिखानी
चाही है। यह बेईमानी यह ढोग, अपने को और दूसरो को धोखा
देना होगा। द्वन्द्व-युद्ध की बात नही सोची जा सकती और कोई भी
मुझसे इसकी आशा नही करता। मेरा लक्ष्य तो यह है कि अपने सम्मान
की रक्षा करू, ताकि किसी तरह की बाधा के बिना अपने कार्य-कलाप
को जारी रख सकू।" कारेनिन के लिये सरकारी काम पहले भी बहुत
ज्यादा माने रखता था और अब तो उसे वह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण
प्रतीत होने लगा।

द्वन्द्व-युद्ध पर सोच-विचार और उसमे इन्कार करने के बाद कारेनिन
ने तलाक के बारे मे सोचना शुरू किया। यह वह दूसरा उपाय था,
जिसका उन पतियो ने, जो उसे याद थे, उपयोग किया था। तलाक
की सभी घटनाओ को (जिनकी उसके सुपरिचित समाज मे बहुत
अधिक सख्या थी) मन ही मन याद करते हुए कारेनिन को एक भी
ऐसी घटना याद नही आई जिसका उद्देश्य वही हो, जो उसका था।
इन सभी घटनाओ म पति ने या तो बेवफा बीवी को त्याग दिया था या
बेच डाला था, और वही पक्ष जो अपराधी होने के कारण विवाह
करने का अधिकार नही रखता था, किसी नये साथी के साथ जाली
झूठे कानूनी दाम्पत्य-सम्बन्ध स्थापित कर लेता था। कारेनिन ने अपने
मामले मे यह देखा कि कानूनी यानी ऐसा तलाक देना मुमकिन नही
जिसके अनुसार केवल अपराधी पत्नी से ही इन्कार किया जा सके
वह समझता था कि जीवन की जटिल परिस्थितियो से घिरा हु
था, वे उन थोडे प्रमाणो की सम्भावनायें नही देती थी, पत्नी के अप

यातना देती रही थी, उसी क्षण खत्म हो गयी थी, जब पत्नी द्वारा कहे गये शब्दों के फलस्वरूप दर्द के साथ दांत निकल गया था। किन्तु एक दूसरी भावना ने इसकी जगह ले ली थी – उसके दिल मे यह इच्छा पैदा हो गयी थी कि पत्नी को न केवल विजय ही न प्राप्त हो, बल्कि अपने अपराध के लिये उसे दण्ड भी मिले। वह इस भावना को स्वीकार नही करता था, किन्तु अपने मन की गहराई मे यह चाहता जरूर था कि उसका चैन और प्रतिष्ठा नष्ट करने के लिये उसे कुछ दुख अवश्य उठाना पड़े। फिर से द्वन्द्व, तलाक और अलग हो जाने की स्थितियों पर विचार करने और फिर से उन्हे ठुकराने के बाद कारेनिन को इस बात का यकीन हो गया कि उसके लिये सिर्फ एक ही रास्ता है – जो कुछ हुआ है, उसे समाज से गुप्त रखते हुए पत्नी को अपने से अलग न होने दे और उनके मिलने-जुलने की सम्भावना तथा मुख्यत – जिसे वह अपने सम्मुख भी स्वीकार करने को तैयार नही था – उसे दण्ड देने के लिये सभी सम्भव उपाय करे। "मुझे अपना यह निर्णय उसे सूचित कर देना चाहिये कि उस सारी कठिन परिस्थिति पर विचार करने के बाद, जिसमे उसने परिवार को डाल दिया है, बाहरी status *quo** के अलावा सभी रास्ते दोनों पक्षों के लिये कहीं अधिक बुरे होगे और मैं ऐसा करने को राजी हू, बशर्ते कि वह मेरी इच्छा का कड़ाई से पालन करे, यानी प्रेमी के साथ अपने सम्बन्ध समाप्त कर दे।" कारेनिन ने जब यह निर्णय स्वीकार कर लिया था, तो इसके समर्थन मे एक अन्य जोरदार तर्क उसके दिमाग मे आया। "ऐसा निर्णय करके मैं धर्म के अनुसार भी काम कर रहा हू," उसने अपने आपसे कहा, "केवल ऐसा निर्णय करके ही मैं न केवल अपराधिनी पत्नी से इन्कार नही कर रहा हू, बल्कि उसे सुधार की सम्भावना भी दे रहा हू तथा इतना ही नही – मेरे लिये यह चाहे कितना ही कष्टप्रद क्यों न हो – उसके सुधार और उत्थान के लिये अपनी कुछ शक्ति भी समर्पित कर रहा हू।" कारेनिन यद्यपि यह जानता था कि अपनी पत्नी पर वह नैतिक प्रभाव नही डाल सकता, कि सुधार की ऐसी सभी कोशिशों का झूठ और कपट के सिवा कोई नतीजा नही निकलेगा, यद्यपि दुख के इन

---

* स्थिति को ज्यों का त्यों बनाये रखना। (लैटिन)

दुखों को सहन करते हुए धर्म का निर्देशन पाने की बात एक बार भी उसके दिमाग मे नहीं आई थी, फिर भी अब उसका यह निर्णय, जैसा कि उसे लगा, धर्म के तकाजों के अनुरूप था, तो इस धार्मिक पुष्टि ने उसे पूरा सन्तोष और कुछ हद तक चैन भी प्रदान किया। उसे यह सोचकर खुशी हुई कि जीवन के ऐसे महत्त्वपूर्ण मामले में कोई यह नही कह सकेगा कि उसने उस धर्म के नियमों के अनुसार आचरण नही किया, जिसका सामान्य उदासीनता और उत्साहहीनता की स्थिति में भी उसने हमेशा झण्डा ऊचा रखा है। इस मामले की और अधिक तफसीलों पर विचार करते हुए कारेनिन को ऐसी कोई बाधा सामने दिखाई नही दी कि पत्नी के साथ उसके सम्बन्ध लगभग पहले जैसे ही क्यो नही रह सकते। इसमें कोई शक नही कि उसके प्रति अपना आदर भाव तो वह कभी नहीं लौटा सकेगा, किन्तु इसके लिये न तो ऐसे कारण थे और न हो ही सकते थे कि वह अपनी जिन्दगी को बरबाद करे और इसलिये दुख सहे कि वह बुरी और बेवफा बीवी थी। "हा, वक्त बीतेगा, सब कुछ ठीक-ठाक कर देनेवाला वक्त बीतेगा, और पहले जैसे सम्बन्ध बहाल हो जायेगे," कारेनिन ने अपने आपसे कहा, "यानी उस हद तक बहाल हो जायेगे कि मैं अपनी जिंदगी मे अशान्ति अनुभव नही करूगा। वह दुखी होगी, लेकिन मैं दोषी नही हू और इसलिये मैं दुखी नही हो सकता।"

(१४)

पीटर्सबर्ग पहुचने तक कारेनिन ने इस निर्णय को न केवल पूरी तरह मान लिया, बल्कि अपने दिमाग मे वह खत भी तैयार कर लिया, जो वह अपनी बीवी को लिखेगा। दरबान के कमरे में जाकर कारेनिन ने पत्रो और मन्त्रालय से लाये गये कागजो पर नजर डाली और उन्हें अपने अध्ययन-कक्ष मे लाने का आदेश दिया।

"घोड़े खोल दिये जायें और मैं अब किसी से भी नही मिलूगा," अन्तिम शब्दो पर जोर देते हुए दरबान के सवाल के जवाब में कुछ खुशी के साथ, जो इस बात का लक्षण थी कि उसका मूड अच्छा है, उसने कहा।

कारेनिन ने अपने अध्ययन-कक्ष के दो चक्कर लगाये, लिखने की बहुत बड़ी मेज़ के सामने रुका, जिस पर उसके यहां आने के पहले ही नौकर ने छ: मोमबत्तियां जला दी थीं, उसने अपनी उंगलियां चटकायीं और बैठकर लिखने का सामान व्यवस्थित करने लगा। मेज़ पर कोहनियां टिकाकर उसने एक ओर को सिर झुकाते हुए क्षण भर को कुछ सोचा और फिर एक पल भी रुके बिना लिखने लगा। वह उसे सम्बोधित किये बिना फ़ासीसी भाषा में "आप" सर्वनाम का उपयोग करते हुए, जो रूसी भाषा के "आप" जैसी रुखाई से मुक्त है, पत्र लिख रहा था।

"हमारी अन्तिम बातचीत के समय मैंने उसी बातचीत से सम्बन्धित एक विषय पर अपने निर्णय की सूचना देने का इरादा ज़ाहिर किया था। सभी चीज़ों पर बहुत ध्यान से विचार करके मैं अपना यह वचन पूरा करने के उद्देश्य से अब यह पत्र लिख रहा हूं। मेरा निर्णय यह है – *आपकी हरकतें चाहे कैसी भी क्यों न हों, मैं अपने को उन बन्धनों को तोड़ने का अधिकारी नहीं मानता हूं, जिनमें उच्च शक्ति ने हमें बांधा है।* दम्पति में से किसी एक की सनक, मनमर्ज़ी या अपराध तक से *परिवार को तोड़ा नहीं जा सकता और हमारा जीवन पहले की तरह ही चलना जाना चाहिये।* ऐसा मेरे लिये, आपके लिये और हमारे बेटे के लिये ज़रूरी है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप उस चीज़ के लिये पश्चाताप कर चुकी हैं और पश्चाताप कर रही हैं, जो मेरे यह पत्र लिखने का कारण है और *यह कि आप हमारे मनमुटाव के कारण* को जड़ से ख़त्म करने तथा अतीत को भूल जाने के लिये मेरे साथ सहयोग करेंगी। ऐसा न करने पर आप स्वयं ही उसकी कल्पना कर सकती हैं, जो आप तथा आपके बेटे के साथ बीतनेवाला है। व्यक्तिगत रूप से भेंट होने पर इन सब बातों के बारे में अधिक विस्तार से बातचीत करने की आशा रखता हूं। चूंकि देहात के बंगले में रहने का समय ख़त्म हो रहा है, इसलिये मैं आपसे जितनी भी जल्दी हो सके, मंगलवार तक तो अवश्य ही पीटर्सबर्ग आने का अनुरोध करता हूं। आपके यहां आने से सम्बन्धित सब प्रबन्ध कर दिये जायेंगे। इस बात की ओर ध्यान देने का अनुरोध करता हूं कि अपने इस अनुरोध की पूर्ति को मैं विशेष महत्त्व देता हूं।

अ० कारेनिन

पुनश्च – इस पत्र के साथ कुछ रकम भी भेज रहा हूं, जिसकी आपको अपने खर्चों के लिये जरूरत हो सकती है।'

पत्र को फिर से पढ़कर वह खुश हुआ, खास तौर पर इसलिये कि उसे रुपये भेजने का भी ख्याल आ गया था। पत्र में न तो कोई कठोर शब्द था न किसी तरह की भर्त्सना और न नम्रता ही थी। मुख्य बात तो यह थी – लौटने के लिये सुनहरा पुल उपस्थित था। पत्र को तह करने और हाथी दांत की बड़ी तथा भारी कागज-काट छुरी से उसे बराबर करने तथा रुपयों के साथ उसे लिफाफे में डालने के बाद उसने उस खुशी को महसूस करते हुए, जो उसकी ढंग से व्यवस्थित लेखन-सामग्री उसे हमेशा प्रदान करती थी घण्टी बजाई।

"हरकारे को देकर कहना कि कल देहात के बंगले पर आन्ना अर्काद्येव्ना को पहुंचा दे " उसने कहा और उठकर खड़ा हो गया।

'जो हुक्म हुजूर। चाय यही लाने की आज्ञा देंगे?"

कारेनिन ने अध्ययन-कक्ष मे ही चाय लाने का आदेश दिया और हाथी दात की बडी मारी छुरी से खिलवाड करता हुआ उस आरामकुर्सी की तरफ चल दिया जिसके करीब लैम्प और युगुवाइन उत्कीर्णन-लेखो के बारे मे फ्रासीसी भाषा मे वह पुस्तक रखी हुई थी, जिसे वह पढना आरम्भ कर चुका था। आरामकुर्सी के ऊपर एक विख्यात चित्रकार द्वारा बनाया गया तथा अण्डाकार सुनहरे चौखटे मे जडा आन्ना का बहुत ही बढिया छविचित्र टगा हुआ था। कारेनिन ने उसकी तरफ देखा। अभेद्य नजरे मजाक उडाती-सी और धृष्टता के साथ उसकी तरफ वैसे ही देख रही थी, जैसे उस अन्तिम शाम को, जब उनके बीच बातचीत हुई थी। कारेनिन को चित्रकार द्वारा आन्ना के सिर पर बहुत अच्छे ढग से बनायी गयी काली लेस, काले बाल और अगूठियों से ढकी हुई अनामिका सहित गोरा और बहुत सुन्दर हाथ असह्य रूप से धृष्टतापूर्ण और चुनौती देते-से प्रतीत हुए। एक मिनट तक इस छविचित्र को देखने पर कारेनिन ऐसे कांपा कि उसके होठो ने फडफडा कर "बर्र" की आवाज निकाली तथा उसने मुह फेर लिया। जल्दी से आरामकुर्सी पर बैठकर उसने पुस्तक खोल ली। उसने पढने की कोशिश की, मगर वह किसी प्रकार भी युगुवाइन उत्कीर्णन-लेखों मे पहले जैसी सजीव रुचि अनु-

भव नहीं कर सका। वह पुस्तक को देख रहा था, मगर सोच कुछ और रहा था। वह पत्नी के बारे में नहीं, बल्कि उस जटिलता के सम्बन्ध में सोच रहा था, जो पिछले कुछ समय में उसके राजकीय कार्य-कलापों में पैदा हो गयी थी और जो इस समय उसके कार्य की मुख्य दिलचस्पी बनी हुई थी। वह अनुभव कर रहा था कि पहले की तुलना में अब वह इस जटिलता की गहराई में कहीं अधिक पैठ गया है और उसके दिमाग़ में एक ऐसा महत्वपूर्ण विचार पैदा हुआ है – ऐसा तो वह आत्मप्रशंसा के बिना ही कह सकता था – जो इस सारे मामले की गुत्थियां खोल देगा, उसके कार्य-पद को और ऊंचा कर देगा, दुश्मनों को मात दे देगा और इसलिये राज्य को उससे बहुत लाभ होगा। चाय रखकर नौकर ज्यों ही कमरे से बाहर निकला, कारेनिन उसी क्षण उठा और अपनी लिखने की मेज़ पर जा बैठा। चालू मामलों की फ़ाइल को मेज़ के मध्य में खिसकाकर उसने आत्मसन्तोष की तनिक दिखाई देनेवाली मुस्कान के साथ स्टैंड से पेंसिल ली और उस जटिलता से सम्बन्धित कागज़ात को, जो उसने मंगवाये थे, पढ़ने के काम में डूब गया। जटिलता यह थी। राजकीय कार्यकर्त्ता के रूप में कारेनिन की एक खास खूबी थी, जो निरन्तर उन्नति करते हुए हर राजकीय कर्मचारी में होती है, वह खूबी, जिसने उसकी दृढ़ महत्त्वाकांक्षा, संयतता, ईमानदारी और आत्मविश्वास के साथ मिलकर उसे आगे बढ़ाया था। वह खूबी थी – दफ्तरी लाल फ़ीतेबाज़ी के प्रति उसकी घृणा, पत्र-व्यवहार में यथाशक्ति कमी करना, चालू मामले के तथ्यों के साथ यथासम्भव प्रत्यक्ष सम्पर्क जोड़ना और मितव्ययता से काम लेना। ऐसा हुआ कि २ जून के विख्यात आयोग को ज़ारायस्काया गुबेर्नीया की ज़मीनों की सिंचाई के मामले से निपटना पड़ रहा था। यह मामला कारेनिन के मन्त्रालय के अन्तर्गत था और फ़िज़ूलखर्ची तथा दफ्तरी लाल फ़ीतेबाज़ी की बढ़िया मिसाल था। कारेनिन इस बात को अच्छी तरह जानता था। ज़ारायस्काया गुबेर्नीया की ज़मीनों की सिंचाई का मामला कारेनिन से पहले और उससे भी पहले के अधिकारी ने शुरू किया था। वास्तव में ही इस मामले पर बहुत-सा बेकार पैसा ख़र्च किया जा चुका था और किया जा रहा था तथा स्पष्टतः इसका कोई नतीजा नहीं निकलनेवाला था। अपना पद सम्भालते ही कारेनिन यह समझ गया और उसने इस मामले को ख़त्म

करना चाहा। लेकिन शुरू में जब उसकी अपनी स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी और जब उसे यह मालूम था कि बहुत-से लोगों के हित इस मामले के साथ उलझे हुए हैं, उसे ऐसा करना समझदारी की बात प्रतीत नहीं हुआ। बाद को दूसरे मामलों में व्यस्त हो जाने पर वह इसके बारे में भूल गया। अन्य सभी मामलों की भांति यह मामला भी अपने आप ही चलता रहा। (बहुत-से लोगों को इससे रोज़ी-रोटी मिलती थी, खास तौर पर एक बहुत ही नैतिकतावादी और संगीत-प्रेमी परिवार को। इस परिवार की सभी बेटियां तार वाद्य-यन्त्र बजाती थीं और एक बेटी की शादी के वक्त कारेनिन ने धर्म-पिता का कर्तव्य निभाया था।) कारेनिन के मतानुसार शत्रुतापूर्ण मन्त्रालय द्वारा इस मामले को उठाना शराफ़त का काम नहीं था, क्योंकि हर मन्त्रालय में इससे भी कहीं बुरे मामले थे, जिन्हें दफ़्तरी काम के जाने-माने शिष्टाचार के मुताबिक कोई नहीं उठाता था। अब अगर उसे ललकारा ही गया था, तो उसने दिलेरी से इस चुनौती को स्वीकार किया था और ज़ारायस्काया गुबेर्नीया की ज़मीनों की सिंचाई के आयोग के काम के अध्ययन और जांच के लिये एक विशेष आयोग की नियुक्ति की मांग की थी। अब वह उन श्रीमानों को किसी तरह का चैन नहीं लेने दे रहा था। उसने ग़ैररूसी निवासियों के जीवन की सुव्यवस्था के बारे में एक अन्य आयोग की नियुक्ति की भी मांग की। ग़ैररूसी निवासियों के जीवन की सुव्यवस्था का प्रश्न २ जून की कमेटी में संयोग से ही उठाया गया था और इन लोगों की दुर्दशा को ध्यान में रखते हुए कारेनिन ने इसका ज़ोरदार समर्थन किया था। कमेटी में यह मामला कई मन्त्रालयों के बीच विवाद का कारण था। कारेनिन के विरोधी मन्त्रालय ने यह सिद्ध किया कि ग़ैररूसी लोग खूब फल-फूल रहे हैं और प्रस्तावित पुनर्व्यवस्था से उनकी खुशहाली नष्ट हो जायेगी। अगर कोई बुरी बात है भी, तो वह केवल इस कारण कि कारेनिन के मन्त्रालय ने कानून द्वारा सुनिश्चित उपायों को लागू नहीं किया है। कारेनिन अब ये मांगें करने का इरादा रखता था – एक, ग़ैररूसियों की स्थिति का वहीं जाकर अध्ययन करने के लिये एक आयोग नियुक्त किया जाये, दो, अगर ग़ैररूसियों की हालत वास्तव में वैसी ही हो, जैसी कि कमेटी के हाथों में विद्यमान सरकारी दस्तावेज़ों से प्रतीत होती है, तो उनकी इस दुर्दशा के (क) राजनी-

रिक, (ग) प्रशासकीय, (ग) आर्थिक, (घ) नृवंशीय, (ङ) भौतिक तथा (च) धार्मिक कारणों की जांच करने के लिये एक अन्य वैज्ञानिक आयोग नियुक्त किया जाये, तीन, शत्रुतापूर्ण मन्त्रालय से उन बुरी परिस्थितियों को दूर करने के लिये, जिनमें अब गैररूसी थे, पिछले दस सालों में उठाये गये कदमों के बारे में सूचना देने की मांग की जाये, और चार तथा अन्तिम मन्त्रालय को यह स्पष्ट करने के लिये कहा जाये कि उसने मूलभूत कानून के खण्ड धारा १८ तथा धारा ३६ की टिप्पणी की भावना के विरुद्ध क्यों कार्रवाई की जैसा कि कमेटी को ५ दिसम्बर १८६३ और ७ जून १८६४ को प्राप्त तथा १७० १५ और १८ ३०८ नम्बर में फाइल की गयी सूचनाओं से स्पष्ट है। इन विचारों की रूप-रेखा को जल्दी-जल्दी लिखते समय कारेनिन के चेहरे पर गम्भीरता की लालिमा-सी दौड़ गयी। एक कागज लिख लेने के बाद वह उठा, उसने घण्टी बजायी और आवश्यक सूचना-सामग्री भेजने के लिये अपने सेक्रेटरी के नाम एक रुक्का भेज दिया। वह उठा, उसने कमरे का चक्कर लगाया फिर से आन्ना के छविचित्र पर नजर डाली, नाक-भौंह सिकोड़ी और तिरस्कारपूर्वक मुस्कराया। युगुवाइन उत्कीर्णन-लेखों के बारे में पुस्तक को थोड़ा और पढ़ने तथा उसमें फिर से रुचि लेने के बाद कारेनिन रात के ग्यारह बजे बिस्तर पर चला गया और वहां लेटे-लेटे जब उसे पत्नी के साथ अपनी स्थिति का ध्यान आया, तो वह उसे इतनी अधिक निराशाजनक नहीं प्रतीत हुई।

(१५)

व्रोन्स्की ने आन्ना से जब यह कहा कि उसकी स्थिति असहनीय है और उसे इस बात के लिये राजी करना चाहा कि वह पति से सब कुछ कह दे, तो आन्ना ने बेशक बहुत दृढ़ता और क्रोध से उसका विरोध किया, फिर भी अपनी आत्मा की गहराई में वह अपनी स्थिति को झूठी और छलपूर्ण मानती थी तथा जी-जान से उसे बदलना चाहती थी। घुड़दौड़ के बाद पति के साथ घर लौटते हुए उत्तेजना के क्षण में उसने उससे सब कुछ कह दिया था और उस पीड़ा के बावजूद, जो ऐसा करने पर उसने अनुभव की, वह ऐसा करके खुश थी। पति के जाने पर उसने

अपने आपसे कहा कि वह शुभ है, कि अब सब कुछ स्पष्ट हो जाये और कम से कम झूठ तथा छल-कपट तो बाकी नहीं रहेगा। उसे य बिल्कुल निश्चित प्रतीत हुआ कि उसकी स्थिति अब सदा के लि स्पष्ट हो जायेगी। उसकी यह नयी स्थिति बुरी हो सकती है, कि स्पष्ट होगी, उसमें अस्पष्टता और झूठ नहीं होगा। वह समझती थी ि ये शब्द कह कर उसने खुद को तथा अपने पति को जो पीड़ा दी थी अब उसका पुरस्कार यह होगा कि सब कुछ एक स्पष्ट रूप धारण क लेगा। उसी शाम को व्रोन्स्की से उसकी मुलाकात हुई, मगर पति साथ उसकी जो बातचीत हुई थी, उसने उसकी चर्चा नहीं की, यद्यपि इसलिये कि स्थिति स्पष्ट हो जाये, व्रोन्स्की से यह कह देना चाहिये था

अगली सुबह को आंख खुलने पर आन्ना को सबसे पहले वही शब्द याद आये, जो उसने पति से कहे थे। ये शब्द उसे इतने भयानक प्रतीत हुए कि अब वह यह नहीं समझ पा रही थी कि ऐसे अजीब और भद्दे शब्द कहने का वह साहस ही कैसे कर पायी तथा इस बात की कल्पना करने में असमर्थ थी कि इसका नतीजा क्या होगा। किन्तु शब्द तो कहे जा चुके थे और कारेनिन कुछ भी कहे बिना चला गया था। "मैं व्रोन्स्की से मिली और उसे यह नहीं बताया। जब वह जा रहा था, तो मैंने उसे वापस बुलाकर यह बताना चाहा, मगर फिर इरादा बदल लिया, क्योंकि अजीब-सा लगता था कि मैंने शुरू में ही उसे सब कुछ क्यों नहीं बताया था। कहना चाहते हुए भी मैंने क्यों नहीं कहा?" और इस प्रश्न के उत्तर में शर्म की सुर्ख-सी लाली उसके चेहरे पर छा गयी। वह समझ गयी कि किस चीज ने उसे ऐसा नहीं करने दिया, समझ गयी कि उसे शर्म महसूस हो रही थी। अपनी स्थिति, जो पिछली शाम को उसे स्पष्ट हो गयी प्रतीत हुई थी, अब अचानक न केवल अस्पष्ट, बल्कि पूरी तरह निराशाजनक लगी। उस बदनामी का ख्याल करके, जिसके बारे में पहले उसने सोचा ही नहीं था, वह भयभीत हो उठी। उसने जब यह सोचा कि उसका पति क्या करेगा, तो भयानक से भयानक ख्याल उसके दिमाग में आने लगे। उसे लगा कि अभी कारिन्दा आकर उसे घर से निकाल देगा और उसकी ऐसी बेइज्जती की खबर घर-घर पहुंच जायेगी। उसने खुद से यह पूछा कि घर से निकाल दी

व्रोन्स्की का ध्यान आने पर उसे प्रतीत हुआ कि वह उसे प्यार नहीं करता, कि वह उसे बोझ अनुभव करने लगा है, कि उसी के बन जाने के लिये वह उससे नहीं कह सकती और इसलिये उसके प्रति उसे शत्रुभाव की अनुभूति होने लगी। उसे लगा कि उसने पति से जो शब्द कहे थे और जिन्हें वह लगातार अपनी कल्पना में दोहराती जाती थी, वे शब्द उसने सभी से कहे थे और सभी ने सुन थे। उसे उन लोगों के साथ आंख मिलाने की हिम्मत नहीं हो रही थी, जिनके साथ वह रहती थी। उसे नौकरानी को बुलाने और नीचे जाकर अपने बेटे तथा उसकी शिक्षिका को देखने की तो और भी कम हिम्मत हो रही थी।

नौकरानी, जो बहुत देर से आन्ना के दरवाज़े पर कान लगाये हुई थी, खुद ही उसके कमरे में आ गयी। आन्ना ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी आंखों में झांका और उसके चेहरे पर भय की लाली छा गयी। नौकरानी ने यह कहकर भीतर आने के लिये माफ़ी मांगी कि उसे प्रतीत हुआ था मानो घण्टी बजायी गयी है। वह पोशाक और एक रुक्का ले आई। रुक्का बेत्सी ने भेजा था। बेत्सी ने उसे याद दिलाया था कि लीज़ा मेर्कालोवा और बाउटेस श्तोल्त्स अपने प्रशंसकों बालूज्स्की तथा बूढ़े स्त्रेमोव के साथ आज सुबह क्रोकेट की एक बाज़ी खेलने आयेंगी। "और कुछ नहीं, तो तौर-तरीक़ों के अध्ययन के लिये ही आ जाइये। मैं आपकी राह देख रही हूं," उसने लिखा था।

आन्ना ने रुक्का पढ़कर गहरी सांस ली।

"कुछ नहीं, कुछ भी नहीं चाहिये," उसने श्रृंगार की मेज़ पर बोतलों और बाल संवारने के ब्रुशों को ठीक करती हुई आन्नुश्का से कहा। "तुम जाओ, मैं अभी कपड़े पहनकर बाहर आ जाऊंगी। कुछ भी, कुछ भी नहीं चाहिये।"

आन्नुश्का बाहर चली गयी, मगर आन्ना ने कपड़े पहनने शुरू नहीं किये। वह पहले की तरह ही सिर झुकाये और बांहें लटकाये बैठी रही, कभी-कभी उसका सारा शरीर सिहर उठता मानो वह कोई संकेत करना या कुछ कहना चाहती हो और फिर से ज्यों की त्यों बैठी रह जाती। वह लगातार दोहरा रही थी "हे भगवान! हे मेरे भगवान!" लेकिन उसके लिये न तो "मेरे" और न "भगवान" शब्द ही कोई अर्थ रखता था। इस चीज़ के बावजूद कि उसे जिस धर्म की शिक्षा दी

गयी थी, उसके प्रति उसके मन में कभी कोई शंका पैदा नहीं हुई थी, उसके लिये अपनी इस स्थिति में धर्म का अवलंब ढूंढना उतना ही अटपटा था, जितना कि खुद कारेनिन से सहायता पाने की इच्छा करना। वह पहले से ही यह जानती थी कि उसके लिये धर्म की सहायता पाना तभी सम्भव है, जब वह उससे इन्कार कर दे, जो उसके जीवन का सारतत्त्व था। न केवल उसके मन पर भारी बोझ था, बल्कि वह एक नयी और उस मानसिक स्थिति के कारण भय अनुभव करने लगी, जिसकी उसे पहले कभी अनुभूति नहीं हुई थी। उसने महसूस किया कि उसकी आत्मा में हर चीज वैसे ही दो रूप धारण करने लगी है, जैसे थकी आंखों को सभी कुछ दोहरा दिखाई देने लगता है। क्या वह डरती है और क्या चाहती है, जो हुआ था या जो होगा, वह यह नहीं जानती थी।

"ओह, यह मैं क्या कर रही हूं!" अचानक सिर के दोनों ओर दर्द महसूस होने पर उसने अपने आपसे कहा। सम्भलने पर उसने देखा कि कनपटियों के पास वह दोनों हाथों से बालों को पकड़े हुए उन्हें खींच रही है। वह उछलकर खड़ी हुई और कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगी।

"कॉफ़ी तैयार है और मेर्योभा तथा शिक्षिका आपकी राह देख रहे हैं," आन्नुश्का ने फिर से कमरे में आकर और फिर से आन्ना को उसी स्थिति में पाकर कहा।

"मेर्योभा? क्या बात है मेर्योभा के बारे में?" सारी सुबह में पहली बार अपने बेटे के अस्तित्व के बारे में याद आने पर आन्ना ने अचानक सजीवता से पूछा।

"लगता है कि कोई कसूर हो गया है उनसे," आन्नुश्का ने मुस्करा-कर उत्तर दिया।

"क्या कसूर हो गया है?"

"कोनेवाले कमरे में कुछ आड़ू रखे थे। लगता है कि उन्होंने चुपके से एक खा लिया है।"

आन्ना अपने को जिस असहाय स्थिति में पा रही थी, बेटे का ध्यान आने पर वह अचानक उससे उबर आयी। उसे बेटे के लिये मां के जीने की कुछ हद तक निश्छल, यद्यपि अतिशयोक्तिपूर्ण वह भूमिका याद

आ गयी, जो पिछले कुछ सालो से वह निभा रही थी, तथा उसने खुश होते हुए यह अनुभव किया कि पति और व्रोन्स्की के साथ उसके सम्बन्ध चाहे कोई भी रूप क्यों न ले, उसके बावजूद उसका अपना एक सहारा है। यह सहारा उसका बेटा था। बेटे को वह किसी भी हालत मे नही छोड़ सकती थी। बेशक पति उसे बुइज्जत करके निकाल दे बेशक व्रोन्स्की के प्यार का उफान ठण्डा पड जाये और वह अपनी आजाद जिन्दगी बिताता रहे (उसने फिर कटुता और तिरस्कारपूर्वक उसके बारे में सोचा), वह अपने बेटे को नही छोड सकती। उसके जीवन का एक लक्ष्य है। बेटे के साथ अपनी इस स्थिति को मज़बूत करने के लिये, ताकि उसे उससे छीन न लिया जाये, उसे कुछ करना चाहिये, करना चाहिये। इतना ही नही, जल्दी, जितनी भी जल्दी सम्भव हो, जब तक कि उसे उससे छीन नही लिया गया, कुछ करना चाहिये। बेटे को लेकर कही चले जाना चाहिये। बस, यही है, जो उसे करना चाहिये। उसके लिये शान्त होना और इस यातनापूर्ण स्थिति से मुक्ति पाना जरूरी था। बेटे को ध्यान मे रखते हुए कोई कदम उठाने के विचार, इस ख्याल ने कि इसी वक्त उसको साथ लेकर कही चले जाना चाहिये, उसे शान्ति प्रदान की।

आन्ना ने झटपट कपडे पहने, नीचे उतरी और दृढ कदमो से मेहमानखाने में गयी, जहा हर दिन की तरह मेज पर कॉफी रखी थी और शिक्षिका के साथ सेर्योझा उसकी राह देख रहा था। सिर से पाव तक सफेद पोशाक पहने हुए सेर्योझा दर्पण के नीचे मेज के पास खडा था और पीठ तथा सिर झुकाये हुए बहुत ही ध्यानमग्न होकर, जिससे वह परिचित थी और जिस मुद्रा मे वह अपने पिता से मिलता-जुलता प्रतीत होता था, उन फूलो के साथ कुछ कर रहा था, जिन्हे लाया था।

शिक्षिका के चेहरे पर विशेष रूप से बहुत कड़ाई झलक रही थी। सेर्योझा बहुत ज़ोर से, जैसा कि अक्सर उसके साथ होता था, चिल्लाया "ओ, अम्मा!" और इस दुविधा मे कि फूल छोडकर मा का अभिवादन करने जाये या माला बना ले और फूलो को लेकर जाये, जहा का तहा ठिठक कर रह गया।

शिक्षिका अभिवादन करने के बाद बहुत विस्तारपूर्वक और हर

चीज को स्पष्ट करते हुए सेर्योझा के कसूर के बारे में बताने लगी मगर आन्ना उसकी बातें नहीं सुन रही थी। वह यह सोच रही थी कि शिशिका को अपने साथ ले जायेगी या नहीं। "नहीं, नहीं ले जाऊंगी," उसने तय किया। "बेटे को लेकर अकेली ही जाऊंगी।"

"हां, यह बहुत बुरी बात है," आन्ना ने कहा और बेटे का कंधा थामकर कड़ी नहीं, बल्कि भीरु-सी दृष्टि से, जिससे लड़का चक्कर में पड़ा और खुश भी हुआ, देखा और चूमा। "इसे मेरे पास छोड़ दीजिये," उसने हैरान होती हुई शिशिका से कहा और बेटे के हाथ अपने हाथ में लिये हुए ही उस मेज पर जा बैठी, जहां कॉफी रखी थी।

"अम्मा! मैं... मैं... मैंने नहीं..." बेटे ने उसके चेहरे के भाव से यह समझने की कोशिश करते हुए कि आड़ू के लिये उसके साथ क्या होनेवाला है, कहा।

"सेर्योझा," शिशिका के कमरे से बाहर जाते ही आन्ना बोली, "यह बुरी बात है, लेकिन तुम फिर कभी ऐसा नहीं करोगे न? तुम मुझे प्यार करते हो न?"

आन्ना ने अनुभव किया कि उसकी आंखें डबडबायी आ रही हैं। "क्या मैं इसमे प्यार किये बिना रह सकती हूं?" बेटे की डरी-सहमी और साथ ही प्रसन्न आंखों में झांकते हुए उसने अपने आपसे कहा। "क्या मुझे यातना देने के लिये वह भी अपने पिता का साथ देगा? क्या मुझ पर तरस नहीं आयेगा उसे?" आंसू उसके चेहरे पर छलक आये थे और उन्हें छिपाने के लिये वह तेजी से उठी और लगभग भागती हुई बरामदे में चली गयी।

पिछले दिनों में गरज के साथ बारिश होने के बाद आज मौसम ठण्डा और साफ हो गया था। धुले हुए पत्तों के बीच से छनकर आनेवाली तेज धूप के बावजूद हवा में ठण्ड थी।

आन्ना ठण्ड और आन्तरिक भय से, जिसने खुली हवा में नयी शक्ति के साथ उसे जकड़ लिया था, सिहर उठी।

"जाओ, Mariette के पास जाओ," उसने अपने पीछे-पीछे बाहर आनेवाले सेर्योझा से कहा और बरामदे में बिछी चटाई पर इधर-उधर आने-जाने लगी। "क्या वे मुझे क्षमा नहीं कर देंगे, यह नहीं समझ पायेंगे कि जो हुआ है, उसके सिवा कुछ हो ही नहीं सकता था?" उसने अपने आपसे कहा।

और फिर मैं उसे लिख ही क्या सकती हूं?" उसने अपने आ
कहा। फिर से उसके चेहरे पर शर्म की लाली दौड़ गयी, उस
शान्तचित्तता की याद आ गयी और उसके प्रति खीझ की भावना ने उ
एक ही वाक्य लिखे हुए कागज को फाड़कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े क
देने को विवश किया। "कुछ जरूरत नहीं इसकी," उसने अ
आपसे कहा और लेखन-सामग्री समेटकर वह ऊपर चली गयी, निश्चि
और नौकरों-चाकरों को उसने यह बताया कि आज मास्को जा रही
और उसी समय अपनी चीजें इकट्ठी करने लगी।

(१६)

देहात के बंगले के चौकीदार, माली और नौकर-चाकर म
कमरों से आते-जाते हुए चीजें उठाकर ला रहे थे। छोटी-बड़ी अलमारिय
खुली हुई थीं, रस्सियां लाने के लिये किसी को दुकान पर भेजना पड़
और फर्श पर अखबारी कागज फैले हुए थे। दो सन्दूक, थैले और कम्ब
ड्योढ़ी में लाकर रख दिये गये थे। बग्घी और किराये की दो घोड़ा
गाड़ियां बाहर दरवाजे के सामने खड़ी थीं। सामान पैक करने के काम मे
आन्तरिक परेशानी को भूल जानेवाली आन्ना अपने कमरे की मेज के सामने
खड़ी हुई सफरी थैला तैयार कर रही थी, जब आगुन्तक ने घर के
करीब पहुंचती हुई बग्घी की खड़खड़ाहट की ओर उसका ध्यान आकृष्ट
किया। आन्ना ने खिड़की में से बाहर झांका और कारेनिन के सन्देशवाहक
को दरवाजे की घण्टी बजाते देखा।

"जाकर मालूम करो कि क्या मामला है," आन्ना ने कहा और
शान्ति से अपने को हर चीज के लिये तैयार करके तथा घुटनों पर हाथ
टिकाकर आरामकुर्सी में बैठ गयी। नौकर ने कारेनिन के हाथ का लिखा
हुआ मोटा-सा पैकेट लाकर दिया।

"सन्देशवाहक को उत्तर लाने का आदेश दिया गया है," नौकर
ने बताया।

"अच्छी बात है," आन्ना ने कहा और ज्योंही नौकर बाहर गया,
उसने कांपती उंगलियों से पत्र खोला। नये नोटों की एक गड्डी उसमें से
निकलकर गिर पड़ी। वह पत्र निकालकर उसे अन्त से पढ़ने लगी।

"आपके यहां आने से सम्बन्धित सब प्रबंध कर दिये जायेंगे। इस बात की ओर ध्यान देने का अनुरोध करता हू कि अपने इस अनुरोध की पूर्ति को मैं विशेष महत्त्व देता हू," उसने पढा। उसने जल्दी-जल्दी पीछे की ओर उसे आगे पढा, सारे पत्र को पढा और एक बार फिर सारे पत्र को शुरू से अन्त तक पढा। पत्र समाप्त करने पर उसे लगा कि वह ठण्ड महसूस कर रही है और उस पर ऐसी भयानक मुसीबत टूट पडी है, जिसकी उसने आशा नही की थी।

सुबह उसे अपने पति से कहे हुए शब्दों के लिये पश्चाताप हो रहा था और वह केवल यही चाह रही थी कि वे शब्द न कहे गये होते। यह पत्र उन शब्दों को अनकहा स्वीकार कर रहा था और जो वह चाहती थी, उसे वही दे रहा था। किन्तु अब उसे यह पत्र उससे भी कही ज्यादा भयानक प्रतीत हो रहा था, जिसकी वह कल्पना कर सकती थी।

"वह सही है! सही है!" उसने कहा। "जाहिर है कि वह हमेशा सही होता है वह ईसाई धर्म का अनुयायी है, वह उदार-दयालु है! हा, घटिया और दुष्ट व्यक्ति है वह! मेरे सिवा यह कोई नही समझता और समझ भी नहीं पायेगा। मैं इसे स्पष्ट करने मे असमर्थ हू। लोग कहते है कि वह धर्म-परायण, सदाचारी ईमानदार और समझदार आदमी है। किन्तु जो कुछ मैंने देखा है, वे उसे नही देखते। वे नही जानते कि कैसे आठ सालो तक उसने मेरे जीवन को घोटा, मुझमें जो कुछ सजीव था, उसको दबा दिया, कि उसने एक बार भी यह नही सोचा – मैं जीती-जागती नारी हू, जिसे प्यार की अपेक्षा है। वे नहीं जानते कि कैसे हर कदम पर उसने मेरा अपमान किया और आत्मतुष्ट रहा। क्या मैंने अपने जीवन का औचित्य ढूढ पाने के लिये कोशिश नही की, जी-जान से कोशिश नही की? क्या मैंने उससे प्यार करने की, जब पति को प्यार करना सम्भव नही रहा, तो बेटे को प्यार करने की कोशिश नहीं की? किन्तु वह वक्त आया, जब मैं यह समझ गयी कि अब अपने को और धोखा नही दे सकती, कि मैं हाड-मास की बनी हुई हू, कि अगर भगवान ने मुझे ऐसा बनाया है कि मैं प्यार करू और जिन्दा रहू, तो इसमें मेरा कोई अपराध नही है। और अब? वह अगर मेरी हत्या कर डालता, उसे मार डालता, तो मैं सब कुछ सहन कर लेती, मैं सब कुछ क्षमा कर देती, लेकिन नही, वह "

"वह क्या करेगा, मैं इसका क्यों अनुमान नहीं लगा पाती? वह वही करेगा, जो उसके नीच स्वभाव के अनुरूप है। वह जो भी करेगा, ठीक ही रहेगा, लेकिन मुझे, तबाह हो चुकी औरत को और बुरी तरह, और नीचतापूर्वक तबाह कर डालेगा ..." "आप स्वयं ही इसकी कल्पना कर सकती हैं जो आप और आपके बेटे के साथ बीतनेवाला है," उसे पति के पत्र के ये शब्द याद हो आये। "यह इस बात की धमकी है कि वह बेटे को मुझसे छीन लेगा और सम्भवत उनके मूर्खतापूर्ण कानून के मुताबिक ऐसा मुमकिन भी है। किन्तु क्या मैं यह नही जानती हू कि वह ऐसा क्यों कह रहा है? वह बेटे के प्रति मेरे प्यार में भी विश्वास नहीं करता या उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखता है (जैसा कि वह हमेशा उसका मजाक उड़ाता रहा है), मेरी इस भावना का तिरस्कार करता है, किन्तु वह जानता है कि मैं बेटे को छोड़कर कभी नहीं जाऊगी, बेटे को नहीं छोड सकती, कि बेटे के बिना मेरे लिये उस व्यक्ति के साथ भी, जिसे मैं प्यार करती हूं, जीवन का कोई अर्थ नहीं हो सकता, कि बेटे को छोड़कर भाग जाने पर मैं सबसे अधिक कलकित और घृणित नारी जैसा व्यवहार करूगी- वह यह जानता है और जानता है कि मैं ऐसा नहीं कर पाऊगी।"

"हमारा जीवन पहले की तरह ही चलता जाना चाहिये," उसे पत्र का एक अन्य वाक्य याद आ गया। "यह जीवन तो पहले भी यातनाप्रद था और पिछले कुछ समय में तो बहुत ही भयानक था। अब कैसा होगा यह? वह यह सब कुछ जानता है, जानता है कि मैं इस बात के लिये पश्चाताप नहीं कर सकती कि सास लेती हूं, कि प्यार करती हू, कि झूठ और कपट के सिवा इसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा, लेकिन उसके लिये तो मुझे यातना देते जाना जरूरी है। मैं उसे जानती हू, मैं जानती हू कि जैसे मछली पानी में, वैसे ही वह झूठ में तैरता और इसमें आनन्दित होता है। लेकिन नहीं, मैं उसे यह आनन्द नहीं पाने दूगी, मैं झूठ का वह जाला तार-तार कर डालूगी, जिसमें वह मुझे उलझाना चाहता है। इसका जो भी नतीजा होना है, हो जाये। झूठ और धोखे-फरेब से तो सभी कुछ बेहतर है।

"लेकिन कैसे करू यह? हे मेरे भगवान! हे मेरे भगवान! क्या मुझसे ज्यादा बदकिस्मत कभी कोई नारी थी?.."

"नहीं, तार-तार कर डालूगी, तार-तार कर डालूगी!" उछलकर खड़ी होते और अपने आसुओं पर काबू पाते हुए वह चिल्ला उठी। वह उसे दूसरा खत लिखने के लिये मेज के पास गयी। किन्तु अपनी आत्मा की गहराई मे वह पहले ही यह अनुभव कर रही थी कि कुछ भी तार-तार करने की शक्ति उसमे नही होगी, कितनी ही झूठी और बेईमानी की स्थिति होने पर भी वह उसमे से नहीं निकल पायेगी।

वह लिखने की मेज पर बैठ गयी, किन्तु पत्र लिखने के बजाय मेज पर हाथ रखकर उसने उनपर सिर टिका दिया तथा सिसकते और गहरी सासो के कारण उभरते-गिरते वक्ष के साथ बच्चो की तरह रोने लगी। वह इस कारण रो रही थी कि उसकी स्थिति के स्पष्ट तथा निश्चित होने का स्वप्न सदा के लिये भग हो चुका था। वह पहले से ही यह जानती थी कि सब कुछ ऐसा ही रहेगा और इतना ही नहीं, पहले से ज्यादा बुरा हो जायेगा। वह अनुभव कर रही थी कि ऊचे समाज मे उसे जो स्थिति प्राप्त थी और सुबह के समय जो उसे इतनी महत्वहीन प्रतीत हुई थी, वह उसे प्रिय थी, कि उसे पति और बेटे को छोडने तथा प्रेमी के साथ अपना भाग्य जोडनेवाली कलकित नारी की स्थिति मे बदलने की शक्ति वह नहीं जुटा सकेगी, कि कितनी ही कोशिश करने पर भी वह अपने से अधिक शक्तिशाली नही हो सकेगी। वह कभी भी प्यार की स्वतन्त्रता को अनुभव नही कर पायेगी और हमेशा अपराधिनी पत्नी बनी रहेगी, जिसपर किसी भी क्षण पर्दाफाश होने का खतरा मडराता रहेगा, जो हमेशा एक पराये और स्वतन्त्र व्यक्ति के साथ अपमानजनक सम्बन्ध बनाये रखने के लिये, जिसके जीवन को वह अग नहीं बन पायेगी, पति को धोखा देती रहेगी। वह जानती थी कि ऐसा ही होगा और साथ ही यह इतना भयानक था कि इसका क्या अन्त होगा, वह इसकी कल्पना करने मे असमर्थ थी। और अपने पर काबू पाने मे असमर्थ वह ऐसे रो रही थी, जैसे दण्ड पानेवाले बच्चे रोते है।

नौकर के पैरो की आहट से वह होश मे आने को विवश हुई और उससे अपना मुह छिपाकर उसने यह ढोग किया कि पत्र लिख रही है।

"सन्देशवाहक उत्तर देने का अनुरोध कर रहा है," नौकर ने कहा।

"उत्तर? हां," आन्ना बोली, "वह दो घोड़ा रखे। मैं घण्टी बजाकर बुला लूंगी।"

"मैं क्या लिख सकती हूं?" वह सोच रही थी। "मैं अकेली क्या तय कर सकती हूं? मैं क्या जानती हूं? मैं क्या चाहती हूं? किस चीज से प्यार है मुझे?" उसने फिर से यह अनुभव किया कि उसकी आत्मा में सभी कुछ दो रूप धारण करने लगा है। इस भावना से वह फिर भयभीत हो उठी और क्रियाशीलता के लिये उसके मस्तिष्क में आनेवाले पहले ही उस आधार को थाम लिया, जो अपने बारे में उसके विचारों से उसे मुक्ति दिला सकता था। "मुझे अलेक्सेई (ऐसे उसने मन ही मन व्रोन्स्की को सम्बोधित किया) से मिलना चाहिये, सिर्फ वही यह बता सकता है कि मुझे क्या करना चाहिये। बेत्सी के यहां जाऊंगी, सम्भव है कि वहां उससे मेरी भेंट हो जाये," उसने अपने आपसे कहा और सर्वथा यह भूल गयी कि पिछली रात को, जब उसने व्रोन्स्की से कहा था कि वह प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां नहीं जायेगी, तो व्रोन्स्की ने भी इसी कारण वहां जाने से इन्कार कर दिया था। आन्ना ने मेज के पास जाकर पति को यह लिख भेजा, "मुझे आपका पत्र मिल गया है। आ०" – और घण्टी बजाकर अपना उत्तर नौकर को दे दिया।

"हम मास्को नहीं जा रही हैं," उसने कमरे में दाखिल होनेवाली आन्नुश्का से कहा।

"बिल्कुल नहीं जा रही हैं?"

"नहीं, कल तक सामान को ऐसे ही बंधा रहने दो और बग्घी को रोके रहो। मैं प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां जाऊंगी।"

"कौन-सी पोशाक तैयार करूं?"

(१७)

क्रोकेट की बाजी में हिस्सा लेनेवालों में, जिसके लिये प्रिंसेस त्वेरस्काया ने आन्ना को बुलाया था, दो महिलायें और उनके प्रशंसक शामिल थे। ये दोनों महिलायें पीटर्सबर्ग के बहुत ही चुने हुए लोगों की एक नयी मण्डली की, जिन्हें किसी चीज के अनुकरण के अनुकरण में

"प्रिंसेस बाग में हैं, अभी उन्हें सूचना दे दी जायेगी। आप
में चलना पसन्द नहीं करेंगी?" दूसरे कमरे में एक अन्य नौकर ने पू

अनिश्चितता और अस्पष्टता की स्थिति वैसी ही बनी हुई थी, जै
घर पर। वह तो पहले से भी बुरी थी, क्योंकि कुछ भी करना सम
नहीं था, व्रोन्स्की से मिलना मुमकिन नहीं था और यहां, पराये त
इस समय उसके मूड के बिल्कुल प्रतिकूल लोगों की संगत में र
रखना जरूरी था। किन्तु वह ऐसी पोशाक पहने थी, जो उसे मा
था कि उसपर फबती है। वह अकेली नहीं थी, उसके इर्द-गिर्द शाहि
का अभ्यस्त, ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण था और घर की तुलना में यहां उस
मन हल्का था। उसे यह सोचने की जरूरत नहीं थी कि वह क्या क
हर चीज अपने आप होती जा रही थी। अपने सजीलेपन से चकि
करनेवाली सफेद पोशाक पहने अपनी ओर आती हुई बेत्सी को देख
आन्ना सदा की भांति मुस्करायी। प्रिंसेस त्वेरस्काया के साथ तुश्केवि
और रिज़े की एक लड़की भी थी, जिसके राजधानी से दूर रहनेवा
मां-बाप की खुशी का इसलिये कोई ठिकाना नहीं था कि उनकी बे
जानी-मानी प्रिंसेस के यहां गर्मी बिता रही थी।

सम्भवत आन्ना में कोई अजीब बात रही होगी, क्योंकि बेत्सी क
फौरन इसकी ओर ध्यान गया।

"पिछली रात मैं ढंग से सो नहीं पाई," आन्ना ने इन तीनों की
तरफ आते नौकर पर नजर डालते हुए, जो उसकी कल्पना के अनुसा
व्रोन्स्की का रुक्का लाया था, प्रिंसेस त्वेरस्काया के प्रश्न का उत
दिया।

"मैं कितनी खुश हूं कि आप आ गयीं," बेत्सी ने कहा। "
थक गयी हूं और जब तक वे लोग आते हैं, चाय का प्याला पीन
चाहती हूं। और आप माशा को साथ लेकर जरा उस क्रोकेट ग्राउ
की जांच कर लें, जरा उन्होंने घास काटी है," उसने तुश्केविच को
सम्बोधित करते हुए कहा। "हम आपके साथ चाय पीते हुए दिली बात
कर लेंगी – we'll have a cosy chat, ठीक है न?" उसने मुस्कराते
और आन्ना का वह हाथ दबाते हुए कहा जिसमें वह छाता लिये थी।

"खास तौर पर जबकि मैं आपके यहां बहुत देर तक नहीं रु
सकती। मुझे बूढ़ी व्रेदे के यहां जरूर ही जाना है। पर समझिये कि मैं

साल हो गये हैं मुझे उससे वादा किये हुए," आन्ना ने कहा, जिसके लिये झूठ बोलना, जो उसके स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप नहीं था, समाज में न केवल साधारण और स्वाभाविक बन गया था, बल्कि उसे खुशी भी प्रदान करता था।

एक सेकण्ड पहले तक उसने जो सोचा भी नहीं था, वह किसलिये कह दिया, आन्ना किसी प्रकार भी यह स्पष्ट न कर पाती। उसने सिर्फ इसी बात को ध्यान में रखते हुए ऐसा कहा था कि चूंकि व्रोन्स्की यहां नहीं आयेगा, इसलिये उसे यहां से जाने की आज़ादी सुनिश्चित कर लेनी तथा किसी न किसी प्रकार उससे मिलने की कोशिश करनी चाहिये। लेकिन उसने मदाम व्रेदे का ही क्यों नाम लिया, जिसके साथ अन्य बहुत-से लोगों की तरह उसने आने का वादा किया हुआ था, आन्ना यह न बता सकती। फिर भी, जैसा कि बाद में पता चला, व्रोन्स्की के साथ मुलाकात के अधिकतम चातुर्यपूर्ण उपायों की कल्पना करने पर भी वह इससे बेहतर और कुछ न सोच पाती।

"नहीं, मैं आपको किसी हालत में नहीं जाने दूंगी," आन्ना के चेहरे को बहुत गौर से देखते हुए उसने कहा। "सच कहती हूं कि अगर आपको प्यार न करती होती, तो आपसे नाराज़ हो जाती। लगता है कि आप इस बात से डरती हैं कि मेरे दोस्तों की संगत से आप अटपटी स्थिति में पड़ जायेंगी। कृपया हमारे लिये छोटे मेहमानखाने में चाय ले आओ," सदा की भांति नौकर से बात करते हुए उसने अपनी आंखें सिकोड़कर कहा। उससे रुक्का लेकर उसने पढ़ा। "अलेक्सेई हमें चकमा दे गया," उसने फ़ांसीसी में कहा, "लिखता है कि वह नहीं आ सकता," उसने ऐसे स्वाभाविक और साधारण अन्दाज़ में कहा, मानो उसके दिमाग़ में यह बात कभी आ ही नहीं सकती थी कि व्रोन्स्की क्रोकेट के खिलाड़ी के अतिरिक्त आन्ना के लिये कोई और भी महत्त्व रखता है।

आन्ना जानती थी कि बेत्सी को सब कुछ मालूम है, लेकिन उसकी उपस्थिति में वह व्रोन्स्की की जैसे चर्चा करती थी, उसे सुनते हुए उसे हमेशा क्षण भर को यह विश्वास हो जाता था कि वह कुछ नहीं जानती।

"अच्छा!" आन्ना ने ऐसे उदासीनता से कहा मानो इस मामले में उसकी बहुत कम दिलचस्पी हो और मुस्कराते हुए कहती गयी "आपके दोस्तों की संगत में कैसे कोई अटपटी स्थिति में पड़ सकता है?" अन्य

जरूरी है। पेटे मे बाग में आ जाइये। छः बजे वहां पहुंच जाऊंगी।" उसने लिफाफा बन्द कर दिया और बेत्सी ने लौटने पर उसके सामने ही पत्र को भेज दिया।

सचमुच, चाय पीते वक्त, जो छोटे ठण्डे मेहमानखाने में छोटी-सी मेज पर लायी गयी थी, दोनों नारियों के बीच a cosy chat* शुरू हो गयी, जिसका मेहमानों के आने से पहले प्रिंसेस त्वेरस्काया ने वादा किया था। वे आनेवालों के बारे में बातचीत करने लगीं और बातचीत लीजा मेर्कालोवा पर केन्द्रित हो गयी।

"वह बहुत प्यारी है और मुझे हमेशा बहुत अच्छी लगती है," आन्ना ने कहा।

"आपको उसे प्यार करना चाहिये। वह आपकी दीवानी है। घुड़दौड़ के बाद वह मेरे पास आई और आपसे मुलाकात न होने पर बड़ी निराश हुई। वह कहती है कि आप बिल्कुल किसी उपन्यास की नायिका जैसी हैं और अगर वह पुरुष होती तो आपके कारण हजारों बेवकूफियां कर डालती। स्त्रेमोव उससे कहता है कि वह यों भी ऐसा करती है।"

"किन्तु, कृपया मुझे यह बताइये, मैं कभी भी समझ नहीं पाई," आन्ना ने कुछ देर चुप रहने के बाद ऐसे अन्दाज में कहा, जो स्पष्ट करता था कि वह यों ही बेकार यह सवाल नहीं पूछ रही है, बल्कि उसके लिये जितना होना चाहिये था, वह उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। "कृपया यह बताइये कि प्रिंस कालूज्स्की से, जिसे सब मीश्का कहते हैं, उसका क्या सम्बन्ध है? मैं उनसे कम मिली हूं। कैसा सम्बन्ध है यह?"

बेत्सी आंखों में ही मुस्कराई और उसने गौर से आन्ना को देखा।

"नया ढंग है," वह बोली। "उन सभी ने यह ढंग चुना है। परवाह करे उनकी जूती। लेकिन परवाह न करने के अन्दाज तो अलग-अलग हो सकते हैं।"

"हां, लेकिन कालूज्स्की के साथ उसके कैसे सम्बन्ध हैं?"

बेत्सी अप्रत्याशित बहुत खुशमिजाजी से तथा खुलकर हंस दी, जैसा कि वह बहुत कम करती थी।

---

* प्यारी बातचीत। (अंग्रेजी)

"यह तो आप प्रिंसेस म्याग्काया के अधिकार-क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं। कोई भोला बच्चा ही ऐसा सवाल पूछ सकता है," बेत्सी ने सम्भवत अपनी हसी रोकनी चाही, पर असफल रही और उसने दूसरो को भी प्रभावित करनेवाला ऐसा ठहाका लगाया, जैसा कि कभी-कभार हसनेवाले लोग ही लगाते हैं। "उनसे पूछना चाहिये," उसने हसी के आसुओ के बीच कहा।

"नही, आप हस रही हैं," आन्ना खुद भी उसकी हंसी से प्रभावित होकर बरबस हसते हुए बोली, "लेकिन मैं कभी भी नही समझ पायी। इस मामले मे पति की भूमिका मेरी समझ मे नही आती।"

"पति? लीजा मेर्कालोवा का पति उसके पीछे-पीछे उसकी पोशाक का झोल सम्भालता है और हमेशा उसका हुक्म बजा लाने को तैयार रहता है। मगर इसके आगे वास्तव मे क्या है, कोई भी यह नही जानना चाहता। आप तो जानती ही हैं कि अच्छे समाज मे पोशाक की कुछ तफसीलो के बारे मे न तो सोचा जाता है और न उनकी चर्चा ही की जाती है। यहा भी यही बात है।"

"आप रोलैंड्की की पार्टी मे जायेगी?" आन्ना ने बात बदलने के लिये पूछा।

"शायद नही जाऊगी," बेत्सी ने जवाब दिया और अपनी सहेली की ओर देखे बिना छोटे-छोटे पारदर्शी प्यालो मे खुशबूदार चाय डालने लगी। प्याले को आन्ना की ओर बढाकर उसने सिगरेट निकाली और उसे चादी के होल्डर मे लगाकर कश खीचने लगी।

"तो देखिये न, मैं बहुत सौभाग्यशाली स्थिति मे हूं," प्याला हाथ मे लेकर उसने अब हसे बिना कहा। "मैं आपको भी समझती हूं और लीजा को भी। लीजा तो उन भोले-भाले स्वभाववालो मे से है, जो बच्चो की भाति यह नही समझते कि क्या अच्छा और क्या बुरा है। कम से कम तब नही समझती थी, जब बहुत जवान थी। अब वह यह जानती है कि उसका यह समझ न पाना उसे जचता है। हो सकता है कि अब वह जान-बूझकर न समझती हो," बेत्सी ने पतली-सी मुस्कान-रेखा के साथ कहा। "लेकिन फिर भी यह उसे जचता है। बात यह है कि एक ही चीज को दुखद दृष्टिकोण से देखा और यातना बनाया जा सकता है और उसके प्रति सीधा-सादा और खुशी का रवैया भी अपनाया

जा सकता है। सम्भवत आप चीज़ों को बहुत ही दुखद ढंग से देखने की प्रवृत्ति रखती है।"

"काश मैं दूसरों को भी वैसे ही जानती होती, जैसे खुद को जानती हू," आन्ना ने गम्भीरता से और सोचते हुए कहा। "मैं दूसरों से अच्छी या बुरी हू? मेरे ख्याल से तो बुरी हू।"

"बिल्कुल बच्ची, एकदम बच्ची है" बेत्सी ने दोहराया। "पर लो, वे आ गये।"

(१८)

कदमों की आहट हुई और मर्दाना आवाज उसके बाद जनाना आवाज और हसी सुनाई दी तथा इसके फौरन बाद प्रतीक्षित अतिथि – साफो श्तोल्त्स और अच्छे स्वास्थ्य से बहुत ही चमकता-दमकता हुआ तथाकथित वास्का भीतर दाखिल हुए। साफ नज़र आ रहा था कि कम तले मांस, खुमियो और बरगडी का उस पर बहुत अच्छा असर हुआ था। वास्का ने सिर भुकाकर महिलाओं का अभिवादन किया, उनकी ओर देखा, लेकिन केवल एक सेकण्ड को। वह साफो के पीछे-पीछे मेहमानखाने मे दाखिल हुआ और उसके पीछे-पीछे ही उसने मेहमानखाने को ऐसे लाघा मानो उसके साथ बधा हुआ हो और अपनी चमकती आखो को उसपर ऐसे टिकाये रहा मानो उसे खा जाना चाहता हो। साफो श्तोल्त्स के बाल सुनहरे तथा आखे काली थी। ऊची एडी के जूते पहने हुए वह छोटे-छोटे तथा तेज कदमो से कमरे मे दाखिल हुई और उसने महिलाओ के साथ मर्दो की भाति खूब मजबूती और जोर से हाथ मिलाया।

इस नयी ख्याति-तारिका से आन्ना पहले कभी नही मिली थी और वह उसकी सुन्दरता तथा अति की सीमा तक पहुची हुई बहुत सजीली पोशाक और उसके साहसपूर्ण अन्दाज़ से दग रह गयी। उसके सिर पर अपने तथा पराये सुनहरे और नर्म बालो का ऐसा ढाचा-सा बना हुआ था कि उसका सिर उसके बडे-बडे, तने तथा सामने की ओर काफी नगे उरोजो जैसा लग रहा था। उसकी हर गतिविधि मे कुछ ऐसा था कि हर कदम पर पोशाक के नीचे से उसके घुटनो तथा

जाघों की बनावट बिल्कुल साफ दिखाई देती थी और आदमी यह सवाल पूछने को विवश हो जाता था कि पीठ पर ढेर सारे तथा हिलते-डुलते कपड़े के नीचे उसका अपना छोटा-सा और सुन्दर शरीर, जो सामने की ओर इतना नग्न तथा पीछे और नीचे की तरफ इतना ढका हुआ था, वास्तव में कहा समाप्त होता है।

बेत्सी ने झटपट आन्ना से उसका परिचय कराया।

"*आप कल्पना तो करें कि हमने दो फौजियों को बग्घी के नीचे बस कुचल ही नहीं डाला,*" वह मुस्कराते, आंख मटकाते और अपनी पोशाक के झोल को पीछे की तरफ करते हुए, जिसे उसने एक ओर को बहुत अधिक झटक दिया था, फौरन यह बताने लगी। "मैं वास्का के साथ बग्घी में जा रही थी... *अरे हां, आप तो परिचित नहीं है।*" और नौजवान आदमी का कुलनाम बताकर परिचय करवाया तथा लाल होते हुए अपनी भूल यानी इस बात पर कि एक अपरिचिता के सामने उसे वास्का कहा था, गूंजती खिलखिलाहट के साथ हंस दी।

वास्का ने फिर से आन्ना के सामने सिर झुका दिया, मगर कुछ कहा नहीं। उसने साफो को सम्बोधित किया:

"आप बाजी हार गयीं। हम यहां पहले पहुंच गये हैं। मानिये, शर्त अदा कीजिये," उसने मुस्कराते हुए कहा।

साफो और भी अधिक रंग में आकर हंस दी।

"इसी वक्त तो अदायगी नहीं होगी," उसने कहा।

"और कोई बात नहीं, बाद में हासिल कर लूंगा।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है। अरे हां!" उसने अचानक गृह-स्वामिनी को सम्बोधित किया। "मैं भी खूब हूं... भूल ही गयी... आपके लिए एक मेहमान लाई हूं। यह रहा वह।"

अप्रत्याशित युवा मेहमान, जिसे साफो अपने साथ लाई और भूल गयी थी, इतना महत्त्वपूर्ण मेहमान था कि उसके जवान होने के बावजूद दोनों महिलाएं उसके स्वागत को खड़ी हो गयीं।

यह साफो का नया प्रशंसक था। वास्का की भांति अब यह भी उसकी दुम बना फिरता था।

कुछ ही देर बाद प्रिंस कालूज्स्की और [illegible] के साथ लीजा मेर्कालोवा आ गयी। [illegible] [illegible] लीजा मेर्कालोवा दुबली-[illegible]

थी, उसका चेहरा अलस, पूर्वी ढग का था और आखे बडी सुन्दर तथा, जैसा कि सभी कहते थे, रहस्यपूर्ण-सी थी। उसकी काली पोशाक का अन्दाज़ (आन्ना ने तुरन्त ही उसकी ओर ध्यान दिया तथा ऊचा आका) सर्वथा उसकी सुन्दरता के अनुरूप था। साफो जितनी चुस्त और नपी-तुली थी, लीज़ा उतनी ही नर्म तथा ढीली-ढाली थी।

किन्तु आन्ना की रुचि की दृष्टि से लीज़ा कही अधिक आकर्षक थी। बेत्सी ने उसके बारे में आन्ना से कहा था कि लीज़ा ने भोले-भाले बालक का चोला-सा धारण कर लिया है, मगर उसे देखने पर आन्ना ने महसूस किया कि यह सही नही है। वह वास्तव में ही भोली-भाली और लाड-प्यार से बिगडी हुई किन्तु प्यारी और उदारमना नारी थी। यह सही है कि उसका भी साफो जैसा रग-ढग था – साफो की भाति उसके भी दो प्रशसक – एक जवान और एक बूढा – उसके साथ नत्थी हुए से घूमते थे और नजरो से उसे हडपते जाते थे किन्तु उसमें कुछ ऐसा था, जो उसके इर्द-गिर्द के वातावरण से ऊचा था – उसमे शीशो के बीच असली हीरे की सी चमक थी। यह चमक उसकी बहुत सुन्दर और वास्तव मे ही रहस्यपूर्ण आखो मे झलकती थी। काले घेरोवाली इन आखो की थकी-थकी और साथ ही भावुक दृष्टि अपनी पूर्ण निश्छलता से चकित करती थी। इन आखो मे झाकने पर हर किसी को ऐसा लगता था कि वह उसे पूरी तरह जान गया है और जानने पर उससे प्यार किये बिना नही रह सकता था। आन्ना को देखकर उसका चेहरा अचानक खुशी भरी मुस्कान से चमक उठा।

"ओह, कितनी खुश हू मैं आपको यहा पा कर!" आन्ना के पास आकर उसने कहा। "कल घुडदौडो के वक्त मे आपके पास आना ही चाहती थी कि आप चली गयी। खास तौर पर कल मैं बहुत उत्सुक थी आपसे मिलने को। सचमुच ही बडा भयानक दृश्य था न वह?" उसने आन्ना को ऐसी दृष्टि से देखते हुए कहा, जिसने मानो उसकी आत्मा को खोलकर रख दिया था।

"हा, मैंने कभी यह नही सोचा था कि वहा ऐसी विह्वलता अनुभव होती है," आन्ना ने लज्जारुण होते हुए कहा।

इसी समय सब लोग बाग मे जाने के लिये उठे।

"मैं नही जाऊगी," लीज़ा ने मुस्कराते और आन्ना के करीब

बैठते हुए कहा। "आप भी नहीं जायेंगी न? क्रोकेट खेलने में क्या तुक है!"

"नहीं, मुझे पसन्द है," आन्ना ने कहा।

"तो यह, यह बताइये, आप ऐसा क्या करती हैं कि आपको ऊब नहीं महसूस होती? आपको देखने से ही मन खिल उठता है। आप जिन्दगी को जीती हैं, मगर मैं ऊबती हूं।"

"आप ऊबती हैं? आप तो पीटर्सबर्ग के सबसे ज्यादा खुश लोगों के हलके में रहती हैं," आन्ना ने कहा।

"यह मुमकिन है कि जो लोग हमारे हलके में नहीं हैं, उन्हें और भी ज्यादा ऊब महसूस होती है। लेकिन हमें, शायद मुझे तो, खुशी नहीं, बहुत, बहुत ही ज्यादा ऊब महसूस होती है।"

साफ़ो सिगरेट जलाकर अपने दोनों जवान प्रशंसकों के साथ बाग में चली गयी। बेत्सी और स्त्रेमोव चाय की मेज पर डटे रहे।

"आपको ऊब महसूस होती है?" बेत्सी ने कहा। "साफ़ो कहती है कि कल उन्होंने आपके यहां बहुत मौज मनायी।"

"ओह, बेहद उकताहट रही!" लीजा मेर्कालोवा ने कहा। "घुड़दौड़ के बाद सभी मेरे यहां चले गये। वही, फिर वही के वही लोग! फिर वही की वही बातें। शाम भर सोफ़ों पर पड़े रहे। इसमें क्या मौज मजा हो सकता है? नहीं, आप इसके लिए क्या करती हैं कि आपको ऊब महसूस न हो?" उसने फिर आन्ना से पूछा। "आप पर नजर डालते ही यह अनुभव होता है - यह रही वह नारी, जो शायद सुखी, दुखी भी हो सकती है, मगर ऊब अनुभव नहीं करती। मुझे सिखा दीजिये कि आप यह कैसे कर पाती हैं?"

"मैं कुछ नहीं करती," इन अनुरोधपूर्ण प्रश्नों से लजाकर और शर्माते हुए आन्ना ने जवाब दिया।

व्यक्ति के नाते उसने उसके साथ विशेषत अच्छी तरह से पेश
कोशिश की।

कुछ नही करती,'" उसने हल्की-सी मुस्कान के साथ इन
ा दोहराया, "यही सबसे अच्छा उपाय है। मैं बहुत अर्से से
रह रहा हूं," उसने लीजा मेर्कालोवा को सम्बोधित किया
ात के लिये कि ऊब महसूस न हो, यह नही सोचना चाहिये
महसूस होगी। यह तो बिल्कुल वही बात है कि अगर आदमी
र से डरता हो, तो उसे इस चीज़ से नही डरना चाहिये कि
ही आयेगी। आन्ना अर्कादियेव्ना ने आपसे यही कहा है।'

अगर मैंने यह कहा होता तो मुझे बडी खुशी हुई होती। कारण
ह न केवल बुद्धिमत्तापूर्ण, बल्कि सच भी है," आन्ना ने मुस्कराते
हा।

'नही, यह बताइये कि उनींदेपन और ऊब से कैसे बचा जा सकता
'

"नींद आये, इसके लिये काम करना चाहिये और खुश होने के
भी काम करना चाहिये।"

"अगर मेरे काम की किसी को जरूरत नही, तो मैं किसलिये
ा करूं? ढोंग करना मुझे आता नही और मैं चाहती भी नही।"

"आप कभी नही सुधर सकेगी," लीजा की ओर देखे बिना
मोव ने कहा और फिर से आन्ना को सम्बोधित किया।

चूंकि आन्ना के साथ उसकी बहुत कम मुलाकात होती थी, इसलिये
मूली बातो के सिवा वह उससे और कुछ नही कह सकता था।
किन स्त्रेमोव ऐसी मामूली बाते ही कहता रहा कि कब वह पीटर्सबर्ग
टेगी, कि काउंटेस लीदिया इवानोव्ना उसे कितना अधिक प्यार
रती है और सो भी ऐसे अभिव्यक्तिपूर्ण ढग से, जो जाहिर करता था
क वह जी-जान से उसके लिये मधुर होना तथा उसके प्रति अपना
म्मान ही नहीं, बल्कि उससे भी कुछ अधिक भावना दिखाना चाहता
है।

तुश्केविच ने भीतर आकर कहा कि सभी लोग क्रोकेट के खिलाडियो
की राह देख रहे हैं।

"नही, कृपया नही जाइये," लीजा मेर्कालोवा ने यह मालूम

होने पर कि आन्ना जाना चाहती है, अनुरोध किया। स्त्रेमोव ने भी उसका साथ दिया।

ऐसे लोगों की संगत के बाद बुढ़िया व्रेदे के यहा जाना तो जमीन-आसमान के फर्क के समान होगा। इसके अलावा वहा आप निन्दा-चुगली ही सुनेगी, जबकि यहा हमारी, बहुत ही अच्छी और निन्दा-चुगली से बिल्कुल उलट भावनाये जागृत कर पायेंगी," उसने आन्ना से कहा।

आन्ना कुछ देर तक दुविधा मे पडकर सोचती रही। इस समझदार आदमी की प्रशंसापूर्ण बात, अपने प्रति लीजा द्वारा प्रकट किया जानेवाला भोला-भाला और बाल-सुलभ स्नेह तथा ऊंचे समाज का यह परिचित वातावरण – यह सब कुछ इतना राहत देनेवाला था, जबकि इतना कठिन समय उसके सामने था कि वह घडी भर को इस असमंजस में रही – क्या यहीं रुके रहना और स्पष्टीकरण के उस कठिन क्षण को टाल देना अच्छा नही होगा? किन्तु यह याद आने पर कि अगर वह कोई निर्णय नहीं करेगी, तो घर मे अकेली होने पर उसका क्या हाल होगा, उस भयानक हरकत के स्मरण मात्र से, जब वह दोनो हाथों से सिर थामे हुए थी, उसने विदा ली और चली गयी।

(१९)

ऊंचे समाज के जीवन मे पहली नजर में चचल तबीयत का व्यक्ति दिखाई देने के बावजूद व्रोन्स्की को गडबड से बडी नफरत थी। जवानी के दिनो मे ही, जब वह सैनिक विद्यालय का विद्यार्थी था, उसने किसी मुश्किल में पड जाने पर कर्ज मागा था और कोरा जवाब पाने के अपमान को अनुभव कर लिया था। तब से उसने कभी भी अपने को ऐसी स्थिति मे नही पडने दिया था।

अपने मामलो को ठीक-ठाक करने के लिये वह परिस्थितियों के अनुसार साल मे चार-पाच बार एकान्त में बैठकर अपने सारे हिसाब-किताब को स्पष्ट रूप देता। इसे वह हिसाब चुकाना या faire la lessive* कहता।

---

* धुलाई करना। (फ्रासीसी)

छुट्टियों के बाद अगले दिन देर से जागने पर वोल्को ने दाढ़ी बनाये और नहाये बिना सूती फौजी कमीज पहनी और पैसे गिन और पत्रों को मेज पर रखकर काम में जुट गया। पेत्रोव्स्की ने यह जानते हुए कि ऐसे मौकों पर वह झल्लाया होता है, आंख खुलते ही दोस्त को लिखने की मेज पर बैठे देखकर चुपचाप कपड़े पहने और उसके काम में खलल डाले बिना बाहर चला गया।

अपने चारों ओर के वातावरण की परिस्थितियों की जटिलता की छोटी से छोटी बारीकियों से परिचित हर व्यक्ति अनचाहे ही ऐसा मानता है कि इन परिस्थितियों की जटिलता और उनके स्पष्टीकरण की कठिनाई केवल उसी से सम्बन्धित व्यक्तिगत और संयोगिक बातें हैं और वह किसी तरह भी यह नहीं सोचता कि दूसरों को भी उसी के समान अपनी जटिल परिस्थितियों का सामना करना होता है। वोल्को को भी ऐसा ही लगता था। इसलिये वह साधारण आन्तरिक गर्वभावना से यह सोचता था कि उसकी जगह कोई दूसरा आदमी अगर अपने को उसके जैसी कठिन परिस्थितियों में पाता तो कभी का भटक गया होता और कोई बुरा रास्ता अपनाने को विवश हो जाता। किन्तु वोल्को अनुभव कर रहा था कि अगर उसे भटकना नहीं है, तो अब उसके लिये अपनी सारी स्थिति को समझना और स्पष्ट करना जरूरी है।

सबसे आसान काम के रूप में वोल्को ने सबसे पहले रुपयों-पैसों के हिसाब-किताब की तरफ ध्यान दिया। अपनी बारीक लिखावट में पत्र लिखने के कागज पर सभी ऋण लिखकर जब उसने उनका जोड़ किया, तो पाया कि उसे सत्रह हजार और कुछ सौ रूबल देने हैं। हिसाब को सरल बनाने के लिये उसने सैकड़ों की संख्या को छोड़ दिया। नकद रकम और बैंक की कापी में जमा धन को गिनने पर उसे पता चला कि उसके पास कुल अठारह सौ रूबल बाकी हैं और नया साल शुरू होने तक और आमदनी की कोई सम्भावना नहीं है। कर्जों की सूची को फिर से पढ़ने के बाद वोल्को ने उसे तीन श्रेणियों में बांटते हुए फिर से लिख लिया। पहली श्रेणी के अन्तर्गत वे ऋण थे, जिन्हें फौरन अदा करना चाहिये था या कम से कम जिनकी अदायगी के लिये रकम तैयार होनी चाहिये थी, ताकि मांगे जाने पर पल भर की देरी के बिना उन्हें चुकाया जा सके। ऐसे ऋणों की रकम लगभग चार हजार थी – डेढ़

लिये केवल पच्चीस हजार रूबल वार्षिक निश्चित करके पिता की जागीर की बाकी सारी आमदनी भाई को देने का निर्णय किया। व्रोन्स्की ने तब भाई से कहा कि जब तक वह शादी नहीं करता, जो सम्भवतः कभी नहीं करेगा, उसके लिये इतनी रकम काफ़ी रहेगी। बड़ा भाई जो एक सबसे अधिक खर्चीली पलटन का कमांडर था और जिसने उन्हीं दिनों शादी की थी, इस उपहार को स्वीकार करने से इन्कार नहीं कर सकता था। माँ, जिसकी अपनी अलग जागीर थी, उस पच्चीस हजार के अलावा बीस हजार रूबल व्रोन्स्की को हर साल और देती थी और व्रोन्स्की यह सब कुछ खर्च कर डालता था। पिछले कुछ समय से माँ आन्ना के साथ व्रोन्स्की के सम्बन्ध और उसके मास्को से चले आने की बात को लेकर उससे नाराज़ हो गयी थी और उसने उसे रूबल भेजना बन्द कर दिया था। नतीजा यह हुआ था कि व्रोन्स्की जो पैंतालीस हजार वार्षिक आय का आदी हो चुका था, इस साल केवल पच्चीस हजार मिलने पर अपने को मुश्किल में पा रहा था। इस मुश्किल से निजात पाने के लिये वह अपनी माँ से पैसे नहीं माँग सकता था। माँ के अन्तिम पत्र ने, जो उसे एक ही दिन पहले मिला था, उसे ख़ास तौर पर चिढ़ा दिया था, क्योंकि उसमें कुछ ऐसे संकेत थे कि वह ऊँचे समाज और नौकरी के मामले में उसकी मदद करने को तैयार थी, किन्तु ऐसी ज़िन्दगी के लिये नहीं, जिससे सारे अच्छे समाज में बदनामी होती हो। माँ की उसे इस तरह से ख़रीद लेने की इच्छा ने उसके मर्म को बुरी तरह आहत कर दिया और उसके प्रति उसका हृदय और भी उदासीन हो गया। लेकिन वह दरियादिली से कहे गये अपने शब्दों को वापस नहीं ले सकता था, यद्यपि आन्ना के साथ अपने सम्बन्ध की कुछ सम्भावनाओं का धुँधला-सा पूर्वानुमान लगाते हुए अब वह यह महसूस करता था कि दरियादिली से ये शब्द सोचे-समझे बिना कहे गये थे और उसे, अविवाहित को ही, अपनी एक लाख की पूरी आमदनी की ज़रूरत हो सकती है। किन्तु वह अपने शब्दों को वापस नहीं ले सकता था। उसके लिये केवल अपनी भाभी को याद कर लेना, इतना ही याद कर लेना काफ़ी था कि कैसे प्यारी और अच्छी वार्या हर सम्भव अवसर पर यह याद दिलाती थी कि वह उसकी दरियादिली को भूली नहीं है और उसका ऊँचा मूल्यांकन करती

र व्रोन्स्की को यह समझने में देर नहीं लगती थी कि जो कुछ
चुका है, उसे वापस लेना मुमकिन नहीं। यह वैसे ही असम्भव
से किसी नारी को पीटना, चोरी करना या झूठ बोलना। उसके
एक ही बात सम्भव थी, जो उसे करनी चाहिये थी और जिसके
। उसने क्षण भर की दुविधा के बिना ही निर्णय कर लिया–
र से दस हज़ार रूबल उधार ले, जिसमें कोई कठिनाई नहीं हो
, अपने खर्च कम करे और घुड़दौड़ के घोड़े बेच डाले। यह
करके उसने रोलैंडकी को, जो घोड़े खरीदने के लिये उसके पास
ार सन्देश भिजवा चुका था, फ़ौरन एक रुक्का लिख भेजा।
बाद उसने अंग्रेज़ ट्रेनर और सूदखोर को बुलवाया तथा उसके
जो रकम थी, उसे अलग-अलग हिसाबों में बांट दिया। इन
को निपटाकर उसने मां को एक कठोर और कटु पत्र लिखा।
बाद बटुए में से आन्ना के तीन रुक्के निकाले, उन्हें फिर से पढ़ा,
और पिछले दिन उसके साथ हुई अपनी बातचीत को याद
सोच में डूब गया।

(२०)

ोन्स्की का जीवन इसलिये विशेष रूप से सुखी था कि उसका एक
नियम-संग्रह था, जो निश्चित रूप से यह तय करता था कि उसे
रना और क्या नहीं करना चाहिये। यह नियम-संग्रह परिस्थितियों
टे-से दायरे तक सीमित था, लेकिन दूसरी ओर ये नियम बिल्कुल
त थे और इस दायरे से बाहर न निकलते हुए व्रोन्स्की को कभी
भर को भी उसे जो कुछ करना चाहिये, उसके बारे में असमंजस
होता था। ये नियम पक्के तौर पर तय करते थे कि पत्तेबाज़ को
ने चाहिये, मगर दर्ज़ी को देने की ज़रूरत नहीं, कि मर्दों के साथ
नहीं बोलना चाहिये, लेकिन औरतों के साथ झूठ बोला जा सकता
किसी को धोखा नहीं देना चाहिये लेकिन पति को धोखा दिया जा
है, कि अपमान को क्षमा नहीं करना चाहिये, मगर वह खुद
न कर सकता है आदि। ये सभी नियम बेसमझी के और बुरे
करते थे, किन्तु सन्देहहीन थे और इन पर अमल करते हुए व्रोन्स्की
को शान्त और यह अनुभव करता कि अपना सिर ऊंचा रख

सकता है। केवल पिछले कुछ अर्से से आन्ना के साथ अपने सम्बन्धों के सिलसिले में व्रोन्स्की यह महसूस करने लगा था कि उसका नियम-संग्रह सभी परिस्थितियों के लिये पर्याप्त नहीं है और भविष्य ऐसी कठिनाइयाँ तथा सन्देह प्रस्तुत कर रहा है जिनके लिये उसके पास मार्ग-दर्शन के कोई सूत्र नहीं थे।

आन्ना और उसके पति के प्रति उसका इस समय का रवैया बिल्कुल सीधा-सादा और साफ था। वह जिस नियम-संग्रह से निर्देशित होता था उसमें उसका निश्चित और स्पष्ट रूप विद्यमान था।

आन्ना एक खानदानी औरत थी जिसने उसे अपना प्यार भेंट किया था और वह खुद भी उसे प्यार करता था। इसलिये उसकी नजर में वह ऐसी औरत थी जिसे कानूनी बीवी जैसा और उससे भी ज्यादा आदर-सत्कार मिलना चाहिये। किसी शब्द या संकेत से उसका न केवल अपमान ही नहीं करना चाहिये बल्कि वह आदर भी न दिखाने के बजाय जिसकी कोई नारी आशा-अपेक्षा कर सकती है वह अपना हाथ कटवा डालना बेहतर समझता।

समाज के प्रति भी उसका रवैया स्पष्ट था। सभी लोग इस बात को जान सकते हैं इसके बारे में अनुमान लगा सकते हैं मगर किसी को भी इसके बारे में कुछ कहने की हिम्मत नहीं होनी चाहिये। ऐसा न होने पर वह मुंह खोलनेवालों को चुप रहने और अपनी प्रेम-पात्र नारी की अविद्यमान प्रतिष्ठा का आदर करने को विवश कर सकता था।

आन्ना के पति के प्रति उसका रवैया तो सबसे ज्यादा साफ था। आन्ना जब से उसे प्यार करने लगी थी तभी से वह उसपर अपना चुनौतीहीन अधिकार मानता था। पति तो फालतू और खलल डालनेवाला ही था। निस्सन्देह उसकी स्थिति दयनीय थी, किन्तु क्या हो सकता है? पति को सिर्फ इतना ही अधिकार प्राप्त था कि हाथ में हथियार लेकर अपने को सन्तुष्ट करने की मांग करे और व्रोन्स्की इसके लिये पहले ही क्षण से तैयार था।

किन्तु पिछले कुछ समय से आन्ना और उसके बीच कुछ नये आन्तरिक सम्बन्ध प्रकट हो गये थे, जो अपनी अस्पष्टता से व्रोन्स्की को चिन्तित करते थे। आन्ना ने पिछले दिन ही उसे यह बताया था कि वह गर्भवती हो गयी है। उसे अनुभव हो रहा था कि यह खबर और आन्ना

जो आशा कर रही थी, वह कुछ ऐसी अपेक्षा रखता है, जिसे
नियम-सग्रह, जिससे वह निर्देशित होता था, पूरी तरह स्पष्ट नही
। वास्तव मे ही उसने ऐसी खबर की आशा नही की थी और
के अपनी स्थिति घोषित करते ही उसके हृदय ने उससे यह
ह आन्ना से पति को छोड देने की माग करे। उसने यह कह दिया,
अब विचार करने पर उसे यह स्पष्ट दिख रहा था कि ऐसा न
ा ही बेहतर होता। साथ ही अपने मे ऐसे कहते हुए उसे यह शका
ी रही थी – क्या ऐसा करना बुरा नही होगा?

"अगर मैंने पति को छोडने की बात कही है, तो इसका मतलब
है कि वह मेरे पास आ जाये। क्या मैं इसके लिये तैयार हूं? मैं
अपने साथ कही ले जा ही कैसे सकता हू, जबकि मेरी जेब खाली
मान ले कि इस मुश्किल को मैं दूर कर सकता हू .. लेकिन सेना
हते हुए मैं उसे कैसे ले जा सकता हू? अगर मैंने ऐसा कहा है,
मुझे इसके लिये तैयार होना चाहिये, यानी मेरे पास पैसे होने
ये और मुझे सेना मे त्यागपत्र दे देना चाहिये।"

व्रोन्स्की सोच मे डूब गया। इस प्रश्न से कि वह सेना से अवकाश
करे या नही, एक अन्य, गुप्त, केवल उसे ही ज्ञात और उसके
न की लगभग मुख्य दिलचस्पी ने, जिसे उसने बेशक जिन्दगी भर
ाये रखा था, सिर उठाया।

महत्वाकाक्षा तो उसके बचपन और किशोरावस्था का पुराना
ा रही थी। यह ऐसा सपना था, जिसे वह स्वय अपने सम्मुख
स्वीकार नही करता था किन्तु जो इतना प्रबल था कि अब उसकी
ना उसके प्यार से भी टक्कर ले रही थी। ऊचे समाज और नौकरी
मामले मे शुरू मे उसे सफलता मिली, किन्तु दो साल पहले उसने
बडी भूल कर दी। उसने अपनी स्वावलबिता दिखाने और आगे
ने की इच्छा से उस ओहदे को लेने से इन्कार कर दिया, जो उसे पेश
या गया था। उसे उम्मीद थी कि इस इन्कार से उसका महत्व बढ
येगा, किन्तु ऐसा करने पर वह कुछ अधिक ही सहमी प्रतीत हुआ
र उसकी अवहेलना कर दी गयी। चाहे-अनचाहे एक स्वतन्त्र व्यक्ति
स्थिति ग्रहण कर लेने पर वह बडी व्यवहारकुशलता और समझदारी
यह जाहिर करते हुए इसे निभाता रहा कि मानो किसी से भी

नाराज़ नहीं है, कि किसी ने भी उसे ठेस नहीं पहुंचाई है और केवल यही चाहता है कि उसे चैन से रहने दिया जाये, क्योंकि वह बहुत मजे मे है। वास्तव मे पिछले साल से, जब वह मास्को गया, उसके मजे खत्म हो गये थे। वह महसूस करता था कि ऐसे स्वावलम्बी व्यक्ति की स्थिति, जो सब कुछ कर सकता है, मगर जो कुछ भी करने की परवाह नही करता, लुप्त होने लगी है, बहुत से लोग यही सोचने *लगे है कि ईमानदार तथा भला आदमी होने के अलावा वह कुछ भी* करने मे असमर्थ है। आन्ना के साथ उसके सम्बन्ध से इतना अधिक शोर मचा, इसने सभी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तथा व्रोन्स्की को एक नयी चमक-दमक प्रदान करके कुछ देर के लिये उसकी महत्वाकाक्षा के कुरेदते कीडे को शान्त कर दिया। किन्तु एक सप्ताह पहले यह कीडा नई शक्ति के साथ मचल उठा। उसके बचपन का साथी, एक ही हलके, एक ही समाज और शाही सैनिक स्कूल का साथी, सेर्पुखोव्स्कोई, जिसके साथ उसने सैनिक विद्यालय की शिक्षा पूरी की जिसके साथ वह कक्षा, कसरत, शरारतो और महत्त्वाकाक्षा के स्वपनो मे होड करता रहा था, कुछ ही दिन पहले मध्य एशिया से लौटा था, जहा उसको दो बार पदोन्नति हुई थी और वह प्रतिष्ठा मिली थी, जो ऐसे जवान जनरलो को बहुत कम ही मिलती है।

सेर्पुखोव्स्कोई के पीटर्सबर्ग आते ही प्रथम महत्त्व के जगमगाते सितारे के रूप मे उसकी चर्चा होने लगी। व्रोन्स्की का हमउम्र और सहपाठी सेर्पुखोव्स्कोई जनरल बन चुका था और ऐसी नियुक्ति की आशा कर रहा था, जो राजकीय कार्यों की गतिविधियो को प्रभावित कर सकती थी, जबकि व्रोन्स्की स्वावलम्बी, बहुत होनहार तथा एक सुन्दर नारी का प्रेमपात्र होते हुए भी केवल घुडसेना का कप्तान था, जो जितना भी चाहे, स्वावलम्बी हो सकता था। "ज़ाहिर है कि सेर्पुखो-व्स्कोई से मुझे ईर्ष्या नही है और हो भी नही सकती। किन्तु उसकी पदोन्नति मुझे यह स्पष्ट करती है कि कम प्रतीक्षा करनी चाहिये और मेरे जैसा व्यक्ति बहुत जल्दी ही उन्नति की सीढी पर चढ सकता है। तीन साल पहले उसकी मेरे जैसी ही स्थिति थी। सेना से इस्तीफा देकर मैं अपनी नाव डुबो लूगा। नौकरी मे बने रहने पर मेरा कुछ भी हर्ज नही है। उसने तो खुद यह कहा था कि वह अपनी स्थिति नही

ा चाहती। और मैं उमका प्रणय-पात्र होने हुए सेर्पुखोव्स्कोई से
नही कर सकता।" अपनी मूछों को धीरे-धीरे मरोडते हुए वह
उठा और उसने कमरे मे चक्कर लगाया। उसकी आखे विशेष
चमक रही थी और उसे अपने मन मे वह दृढता, शान्ति और
महसूस हो रही थी, जो अपनी स्थिति के स्पष्ट हो जाने पर
हमेशा अनुभव होती थी। पहले के हिसाब-किताब के बाद की
ही सब कुछ स्पष्ट और साफ था। उसने दाढी बनाई, ठण्डे पानी
ान किया, कपडे पहने और बाहर निकला।

(२१)

"मैं तुम्हे बुलाने आया हू। तुम्हारी 'धुलाई' आज बहुत देर
चलती रही," पेत्रीत्स्की ने कहा। "खत्म हो गयी न?"

"खत्म हो गयी," व्रोन्स्की ने केवल आखो मे ही हंसते और
मूछो के सिरो को ऐसे सावधानी से मरोडते हुए कहा मानो
अपने मामलो मे जो सुव्यवस्था की है, कोई भी जोरदार और
हरकत उसे गडबडा सकती है।

"इसके बाद तुम हमेशा हमाम से बाहर निकले प्रतीत होते हो,"
स्की ने कहा। "मुझे ग्रीत्स्का (पलटन के कमाडर को वे ऐसे
लाते थे) ने भेजा है, तुम्हारी राह देखी जा रही है।"

व्रोन्स्की ने कोई जवाब दिये बिना और कुछ दूसरी ही बात सोचते
अपने दोस्त की तरफ देखा।

"यह सगीत उसी के यहा गूज रहा है?" उसने तुरहियो, पोल्का
वाल्ज नृत्यो की अपने कानो तक पहुच रही जानी-पहचानी ध्वनियो
ुनकर कहा। "किस बात का जशन मनाया जा रहा है?"

"सेर्पुखोव्स्कोई आया है।"

"सच!" व्रोन्स्की बोला "मुझे तो मालूम ही नही।"

उसकी आखो की चमक और तेज हो गयी।

अपने मन मे यह तय करके कि अपने प्यार की बदौलत वह अति
भाग्यशाली है और उसके लिये उसने अपनी महत्वाकाक्षा की बलि दे दी
कम से कम अपने लिये ऐसी भूमिका ग्रहण करने के बाद – व्रोन्स्की

न तो सेर्पुखोव्स्कोई के प्रति ईर्ष्या और न ही इस बात के लिये नाराजगी महसूस कर सकता था कि पलटन मे आने पर वह सबसे पहले उसी के पास नही आया था। सेर्पुखोव्स्कोई अच्छा मित्र था और व्रोन्स्की को उसके आने से खुशी हुई थी।

"मैं बहुत खुश हू।"

पलटन का कमाडर देमिन एक बडी हवेली में रहता था। सभी मेहमान नीचे वाले, खुले छज्जे मे जमा थे। आगन मे वोद्का से भरे बडे पीपे के करीब खडे वावर्दी फौजी गायको तथा अफसरो से घिरी पलटन-कमांडर की लम्बी-तडगी और खुशी मे उमगती आकृति पर ही व्रोन्स्की की सबसे पहले नज़र पडी। पलटन-कमाडर छज्जे की पहली पैडी पर आकर ओफ़ेनबाख का काड्रिल बजाते बैड से भी अधिक ऊची आवाज मे एक तरफ को खडे हुए फौजियो को कुछ हुक्म दे रहा था और हाथ हिला रहा था। फौजियो का एक दल, सार्जेन्ट और कुछ छोटे अफसर व्रोन्स्की के साथ ही छज्जे के करीब पहुचे। पलटन-कमाडर मेज़ की तरफ लौटा और हाथ मे गिलास लिये हुए फिर छज्जे के चबूतरे पर बाहर आया और जाम ऊपर उठाते हुए उसने ये शब्द कहे "हमारे भूतपूर्व साथी और बहादुर जनरल प्रिस सेर्पुखोव्स्कोई की सेहत के लिये। हुर्रा!"

पलटन-कमाडर के पीछे-पीछे ही हाथ मे गिलास लिये हुए सेर्पुखोव्स्कोई बाहर आया।

"तुम तो लगातार और भी जवान होते जा रहे हो, बोन्दारेन्को," उसने अपने सामने खडे, सैन्यसेवा की दूसरी अवधि पूरी कर रहे जवान दिखने तथा लाल-लाल गालोवाले सार्जेन्ट से कहा।

व्रोन्स्की तीन सालो से सेर्पुखोव्स्कोई से नही मिला था। उसने गलमुच्छे बढ़ा लिये थे, *अधिक हृष्ट-पुष्ट हो गया था*, मगर पहले की तरह ही सुघड-सुडौल था और अपनी सुन्दरता से इतना नहीं जितना कि सौजन्य और चेहरे तथा आकृति की उदात्तता से चकित करता था। व्रोन्स्की ने उसमे जिस एक तब्दीली को लक्षित किया, वह थी धीमी-धीमी और स्थायी कान्ति, जो सफलता पाने और इस सफलता की सर्वमान्यता के बारे मे विश्वास रखने वाले लोगो के चेहरो पर अकित हो जाती है। व्रोन्स्की इस चमक से परिचित था और सेर्पुखोव्स्कोई के चेहरे पर उसे वह फौरन दिखाई दे गयी।

आक्रमण के सिलसिले में ऐसी श्रेष्ठता सिद्ध करने लगा तथा कुछ देर के लिये हो-हल्ला शान्त हो गया। सेर्पुख़ोव्स्कोई हाथ धोने के लिये भीतर गुसलखाने में गया और वहा उसे व्रोन्स्की मिल गया। व्रोन्स्की पानी से अपना सिर भिगो रहा था। फ़ौजी कमीज उतारकर उसने बालो से ढकी हुई लाल गर्दन वाश बेसिन के नल की धार के नीचे कर दी थी और गर्दन तथा सिर को हाथो से मल रहा था। यह काम खत्म करने के बाद व्रोन्स्की सेर्पुख़ोव्स्कोई के पास चला गया। दोनो तुरन्त ही एक सोफ़े पर बैठ गये और उनके बीच दोनो के लिये ही बहुत दिलचस्प बातचीत छिड गयी।

"मुझे बीवी के ज़रिये तुम्हारे बारे मे सभी कुछ मालूम होता रहा," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने कहा। "मैं खुश हू कि तुम उससे अक्सर मिलते रहे।"

"वह वार्या की सहेली है और पीटर्सबर्ग की मात्र यही तो नारिया हैं, जिनसे मिलकर मुझे खुशी होती है," व्रोन्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया। वह इसलिये मुस्कराया कि बातचीत के रुख का उसने पहले से ही अनुमान लगा लिया था और यह उसे अच्छा लग रहा था।

"मात्र यही नारिया?" सेर्पुख़ोव्स्कोई ने मुस्कराकर पूछा।

"मुझे भी तुम्हारे बारे में जानकारी मिलती रही, लेकिन सिर्फ तुम्हारी बीवी के ज़रिये ही नही," चेहरे की कठोर अभिव्यक्ति से सेर्पुख़ोव्स्कोई के सकेत के लिये मनाही करते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "तुम्हारी सफलता से मुझे बडी खुशी हुई, मगर हैरानी जरा भी नही। मैं तो इससे ज्यादा की उम्मीद कर रहा था।"

सेर्पुख़ोव्स्कोई मुस्कराया। अपने बारे में उसे स्पष्टत यह राय अच्छी लगी और उसने इसे छिपाने की ज़रूरत नही समझी।

"तुम्हारे सामने साफ़-साफ़ मानता हू कि मैंने तो इसके उलट कम सफलता की आशा की थी। मैं महत्वाकाक्षी हू, यह मेरी कमज़ोरी है और मैं इसे स्वीकार करता हू।"

"तुम्हे अगर सफलता न मिली होती, तो शायद तुमने इसे स्वीकार न किया होता," व्रोन्स्की ने कहा।

"नही, मैं ऐसा नही मानता," सेर्पुख़ोव्स्कोई ने फिर

उसके लिये कुछ [illegible]
मेरे हाथो मे आई, तो उन अनेक की तुलना में, जिन्हे मैं जानता हू, वह अधिक बेहतर रहेगी," सेर्पुखोव्स्कोई ने सफलता की चेतना मे मुस्कराते हुए कहा। "इसलिये मैं इसके जितना अधिक निकट पहुंच रहा हू, उतना ही खुश हू।"

"हो सकता है कि तुम्हारे लिये यह ऐसा हो, मगर सभी के लिये नही। मैंने भी ऐसा सोचा था, लेकिन अब जी रहा हू और ऐसा पाता हू कि केवल इसी के लिये जीने मे कोई तुक नही," व्रोन्स्की ने कहा।

"अब तुम आये असली बात पर! असली बात पर!" सेर्पुखोव्स्कोई हसते हुए बोला। " मैंने तो उसी चीज से, जो तुम्हारे बारे मे सुनी थी, बात शुरू की थी, तुम्हारे इन्कार से . जाहिर है कि मैंने तुम्हारे निर्णय का अनुमोदन किया। लेकिन हर चीज को करने का अपना ढग होता है। मेरे ख्याल में तुमने किया तो ठीक, मगर वैसे नही किया, जैसे करना चाहिये था।'

"जो हो चुका, सो हो चुका और तुम जानते हो कि जो कर चुका हू, मैं उसकी तरफ मुडकर नही देखता। फिर इसके अलावा मैं खूब मजे में हू।"

"मजे मे हो — वक्ती तौर पर। लेकिन तुम्हे इससे सन्तोष नही होगा। मैं तुम्हारे भाई से ऐसा नही कहूगा। वह तो हमारे इस मेजबान की तरह प्यारा बच्चा-सा है। सुनो तो!" उसने हुर्रे की गूज सुनते हुए इतना और कहा। 'वह बहुत खुश है, लेकिन तुम्हे इससे सन्तोष नही होगा।"

"मै नही कह रहा हू कि मुझे सन्तोष है।"

"बात सिर्फ इतनी ही नही है। तुम्हारे जैसे लोगो की जरूरत है।"

"किसे?"

"किसे? समाज को। रूस को लोगो की जरूरत है, पार्टी की . . है वरना सब सत्यानाश हो जायेगा।"

और उस अभिनेत्री को याद करते हुए कहा, जिसके साथ उसके दोनों व्यक्तियों के सम्बन्ध थे।

"नारियों की ऊंचे समाज में जितनी अधिक दृढ़ स्थिति होती है, उतना ही अधिक बुरा है। यह तो fardeau को हाथों में ढोना नहीं, बल्कि उसे दूसरे से छीनने के समान है।"

"तुमने कभी प्यार नहीं किया," व्रोन्स्की ने अपने सामने देखते और आन्ना के बारे में सोचते हुए धीमे से कहा।

हो सकता है। लेकिन मैंने तुमसे जो कहा है, उसे याद रखना। एक बात और – नारियां हम पुरुषों की तुलना में अधिक व्यावहारिक होती है। हम प्यार को एक बहुत बड़ी चीज़ बना देते हैं, किन्तु उनके लिये वह सदा terre-à-terre* है।"

"अभी अभी आ रहे हैं!" उसने भीतर आनेवाले नौकर से कहा। लेकिन जैसा कि उसने सोचा था, नौकर उन्हें फिर से बुलाने नहीं आया था। वह तो व्रोन्स्की के नाम रुक्का लाया था।

"प्रिंसेस त्वेरस्काया का आदमी आपके लिये इसे लाया है।"

व्रोन्स्की ने पत्र खोलकर पढ़ा और उसके चेहरे पर उत्तेजना की लाली छा गयी।

"मेरे सिर में दर्द होने लगा है, मैं घर जा रहा हूं," उसने सेर्पुखोव्स्कोई से कहा।

"तो, जाओ। Carte blanche देते हो?"

"बाद में बात करेंगे। मैं तुमसे पीटर्सबर्ग में मिलूंगा।"

(२२)

पांच तो कभी के बज चुके थे और इस हेतु कि वह समय पर पहुंच जाये, सो भी अपनी बग्घी में नहीं, जिसे सभी जानते-पहचानते थे, व्रोन्स्की यान्श्विन की किराये की बग्घी में बैठ गया और उसने कोचवान को जितना सम्भव हो सके, तेज़ी से बग्घी दौड़ाने को कहा। चार स्थानोंवाली पुरानी बग्घी काफ़ी बड़ी थी। व्रोन्स्की एक कोने में

* हर दिन की मामूली बातें। (फ़्रांसीसी)

बैठ गया, सामनेवाली सीट पर उसने टांगे फैला ली और सोच मे डूब गया।

उसने अपने सारे मामलो को जैसे व्यवस्थित कर लिया था, उसकी धुंधली-सी चेतना, सेर्पुखोव्स्कोई की दोस्ती और उसकी इस प्रशंसा की धुंधली-सी स्मृति कि वह राज्य के लिये काम का आदमी है और मुख्यत तो मिलन की प्रतीक्षा – यह सभी कुछ जीवन की एक सुखद अनुभूति के रूप मे घुल-मिल गया। यह अनुभूति इतनी तीव्र थी कि वह अनचाहे ही मुस्करा दिया। उसने टांगे नीचे कर ली, एक घुटने को दूसरे पर टिका लिया और उसे हाथ मे लेकर उस लचीली पिंडली को छुआ जिस पर पिछले दिन गिरने के समय चोट आ गयी थी और पीठ टिकाकर कई बार गहरी सासे ली।

"खूब, बहुत खूब!" उसने अपने आपसे कहा। उसे पहले भी अक्सर अपने शरीर की सुखद चेतना की अनुभूति होती थी किन्तु इस समय की भाति उसे अपना आप और अपना शरीर कभी इतना प्यारा नही लगा था। मजबूत टाग मे हल्का-सा दर्द उसे अच्छा लग रहा था, सास लेते समय अपनी छाती के हिलने-डुलने से मास-पेशियो की अनुभूति प्यारी लग रही थी। अगस्त महीने का वही उजला और ठण्डा दिन, जिसने आन्ना पर इतना निराशाजनक प्रभाव डाला था, व्रोन्स्की को उत्तेजनापूर्ण सजीवता प्रदान करनेवाला प्रतीत हुआ और नल के नीचे खूब भिगोने से सिहरे हुए चेहरे तथा गर्दन को ताजगी प्रदान कर रहा था। इस ताज़ा हवा में मूछो पर लगी ब्रिलेन्तीन क्रीम की सुगन्ध उसे विशेषत बहुत प्यारी लग रही थी। बग्घी की खिडकी मे से उसे जो कुछ दिखाई दे रहा था, इस ठण्डी, निर्मल हवा, सूर्यास्त के समय के इस धुधले प्रकाश मे वैसा ही ताज़ा, प्रफुल्लतापूर्ण और शक्तिशाली था, जैसा वह खुद – डूबते सूरज की किरणो मे घरो की चमकती छते, बाडो की रूप-रेखाये और इमारतो के कोण, कभी-कभार सामने आनेवाले राहगीर और बग्घिया, वृक्षो और घास की निश्चल हरियाली, ढग से बनी हुई आलू की क्यारिया, घरो और वृक्षो, झाडियो तथा आलुओ की क्यारियो से पडती हुई टेढी छायाये। सब कुछ थोडी ही देर पहले खत्म किये तथा वार्निश से चमकाये गये सुन्दर चित्र के समान था।

"तेज़, और तेज़ करो घोडो को!" उसने खिडकी

उसे थमा दिया। कोचवान के हाथ से लालटेन के पास किसी चीज़ को छुआ, चाबुक की सटकार सुनाई दी और हमवार सड़क पर बग्घी तेजी से दौड़ने लगी।

"इस सुख के सिवा मुझे और कुछ नहीं चाहिये," खिड़कियों के बीच की जगह पर बग्घी की हाथी-दांत की मुठिया को देखते और जिस रूप में उसने अन्तिम बार आन्ना को देखा था, उसकी कल्पना करते हुए उसने मन ही मन सोचा। "जितना अधिक समय बीतता जा रहा है, उससे मुझे उतना ही अधिक प्यार होता जा रहा है। लो, यह आ गया ब्रेदे के सरकारी बंगले का बगीचा। कहां है वह यहां? कहां है? कैसे यहां आई है? उसने यहां क्यों मिलन-स्थल तय किया और बेत्सी के खत में क्यों मुझे लिखा है?" उसने केवल अभी यह सोचा, मगर सोचने का वक्त नहीं था। उसने उद्यान-पथ तक पहुंचने के पहले ही कोचवान को बग्घी रोकने को कहा, दरवाजा खोलकर चलती बग्घी से उतर गया और घर की ओर ले जानेवाले उद्यान-पथ पर बढ़ चला। वहां कोई नहीं था, किन्तु दायीं ओर नज़र डालने पर उसे आन्ना दिखाई दी। उसका चेहरा परदे से ढका हुआ था, किन्तु उसने खुशी भरी नज़र से आन्ना की उस विशेष चाल को, जो केवल उसी का लक्षण थी, उसके कंधों के झुकाव और जिस स्थिति में अपने सिर को रखती थी, पहचान लिया था तथा तुरन्त उसके शरीर में मानो विद्युत तरंग-सी दौड़ गयी। उसने टांगों की लचीली गतिविधि से सांस लेते समय फेफड़ों के हिलने-डुलने तक अपने को एक नयी शक्ति के साथ अनुभव किया और होंठों पर गुदगुदी-सी महसूस की।

व्रोन्स्की के निकट आ जाने पर आन्ना ने जोर से उसके साथ हाथ मिलाया।

"तुम नाराज़ तो नहीं हो कि मैंने तुम्हें बुलाया है? मेरे लिये तुमसे मिलना जरूरी था," उसने कहा और परदे के नीचे व्रोन्स्की को दिखनेवाली होंठों की गम्भीर और कड़ी रेखा से उसका मूड फौरन बदल गया।

"मैं नाराज़ होऊं! लेकिन तुम कैसे आईं, कहां चलें?"

"कहीं भी," व्रोन्स्की के हाथ पर अपना हाथ रखते हुए उसने कहा, "आओ चलें, मुझे तुमसे बात करनी है।"

व्रोन्स्की समझ गया कि कोई खास बात हो गयी है और यह मिलन सुखद नहीं रहेगा। आन्ना की उपस्थिति में उसकी इच्छाशक्ति जवाब दे जाती थी – आन्ना की परेशानी का कारण न जानते हुए वह अभी से यह महसूस कर रहा था कि अनचाहे खुद उसे भी वही परेशानी अनुभव होने लगी है।

"क्या हुआ? क्या बात है?" व्रोन्स्की ने कुहनी से उसका हाथ दबाते और उसके चेहरे से उसके मनोभावों को पढ़ने की कोशिश करते हुए पूछा।

आन्ना अपनी हिम्मत बटोरते हुए कुछ कदम चुपचाप चलती रही और फिर अचानक रुक गयी।

"मैंने तुमसे कल नहीं कहा," वह जल्दी-जल्दी और मुश्किल से सांस लेते हुए कहने लगी, "कि अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच के साथ घर लौटते हुए मैंने उसे सब कुछ बता दिया कह दिया कि मैं उसकी बीवी नहीं रह सकती, कि और सब कुछ कह डाला।"

व्रोन्स्की अनजाने ही अपने सारे शरीर को उसकी ओर झुकाये हुए उसे सुन रहा था मानो ऐसे उसकी स्थिति के बोझ को कम करना चाहता हो। किन्तु उसके ऐसा कहते ही वह अचानक तन गया और उसके चेहरे पर गर्व तथा कठोरता का भाव आ गया।

"हां, हां, यह बेहतर है, हजार गुना बेहतर है! मैं समझ सकता हूं कि तुम्हारे लिये यह कितना मुश्किल रहा होगा।"

किन्तु आन्ना उसके शब्द नहीं सुन रही थी, वह चेहरे के भावों से उसके मन के भाव पढ़ रही थी। वह यह नहीं जान सकती थी कि व्रोन्स्की के चेहरे का भाव उसके दिमाग में आनेवाले पहले ख्याल – अब द्वन्द्व-युद्ध अनिवार्य है – को व्यक्त कर रहा था। द्वन्द्व-युद्ध का ख्याल तो भूलकर भी उसके दिमाग में कभी नहीं आया था और इसलिये व्रोन्स्की के चेहरे की इस क्षणिक कठोरता का उसने दूसरा ही अर्थ लगाया।

पति का पत्र पाकर वह अपने मन की गहराई में यह जान गयी थी कि सब कुछ पहले की तरह ही रहेगा, कि वह अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा की अवहेलना नहीं कर पायेगी, बेटे को छोड़कर प्रेमी के साथ अपना भाग्य नहीं जोड़ सकेगी। प्रिंसेस त्वेरस्काया के यहां बितायी

गयी सुबह ने इस बात की और भी पुष्टि कर दी थी। लेकिन फिर भी यह मिलन उसके लिये बहुत ही महत्त्व रखता था। उसे आशा थी कि इस मिलन से उसकी स्थिति बदल जायेगी और उसका बचाव हो जायेगा। अगर यह समाचार पाकर व्रोन्स्की दृढ़ता से, बड़े उत्साह से, घड़ी-भर को भी दुविधा में पड़े बिना उससे यह कहेगा "सब कुछ छोड़-छाड़कर मेरे साथ भाग चलो!" – तो वह बेटे को छोड़कर उसके साथ चली जायेगी। किन्तु इस खबर का उसपर वैसा असर नहीं हुआ, जैसी उसने आशा की थी – उसे तो मानो किसी बात से कुछ बुरा लगा था।

"मेरे लिये यह सब कहना जरा भी मुश्किल नहीं रहा। यह अपने आप ही हो गया," आन्ना ने झल्लाहट से कहा, "और यह लो ..." उसने दस्ताने में से पति का पत्र निकालकर उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"मैं समझता हूं, सब समझता हूं," उसने आन्ना को टोककर पत्र लेते और पढ़े बिना ही उसे शान्त करते हुए कहा, "मैं सिर्फ एक ही चीज़ चाहता था, एक ही चीज के लिये प्रार्थना करता था – इस स्थिति को खत्म कर दूं, ताकि तुम्हारे सुख-सौभाग्य को अपना जीवन समर्पित कर सकूं।"

"तुम मुझसे यह किसलिये कह रहे हो?" वह बोली। "क्या मुझे इसमें सन्देह हो सकता है? अगर मुझे सन्देह होता .."

"वे कौन आ रही हैं?" व्रोन्स्की ने अपनी ओर आती दो महिलाओं की तरफ संकेत करते हुए अचानक कहा। "हो सकता है कि हमें जानती हों," और वह आन्ना को अपने पीछे-पीछे ले जाते हुए जल्दी से बगल की पगडंडी पर बढ़ गया।

"आह, मेरी बला से!" उसने कहा। आन्ना के होंठ कांप उठे। व्रोन्स्की को लगा कि परदे के नीचे से आन्ना की आंखें अजीब तरह के गुस्से से उसे देख रही हैं। "तो मैं कह रही हूं कि बात यह नहीं है, मुझे इसके बारे में सन्देह नहीं हो सकता। लेकिन देखो, उसने मुझे क्या लिखा है। पढ़ो।" और वह फिर से रुक गयी।

पति के साथ आन्ना के विच्छेद की खबर सुनने के क्षण की भांति ही अब पत्र पढ़ते हुए व्रोन्स्की का ध्यान बरबस उस स्वाभाविक प्रभाव

की ओर चला गया, जो अपमानित पति के सम्बन्ध में उसके दिमाग में आया था। अब पत्र हाथ में लिये हुए उसने अनचाहे ही उस चुनौती-पत्र की, जो सम्भवतः आज या कल उसे अपने घर पर मिल जायेगा, तथा उस द्वन्द्व-युद्ध की कल्पना की, जिसके समय इसी कठोरता और गर्व के भाव से, जो इस वक्त उसके चेहरे पर था, हवा में गोली छोड़कर वह अपमानित पति की गोली का निशाना बनेगा। इसी क्षण उसके दिमाग में उस बारे में विचार कौंध गया, जो कुछ ही देर पहले सेर्पुखोव्स्कोई ने उससे कहा था और जो खुद उसने उसी सुबह को सोचा था यानी यह कि उसे इस झंझट से दूर रहना चाहिये। वह जानता था कि यह विचार वह आन्ना के सामने व्यक्त नहीं कर सकता।

पत्र पढ़ने के बाद उसने आन्ना की ओर नज़र उठाई और उसकी नज़र में दृढ़ता नहीं थी। आन्ना फ़ौरन समझ गयी कि वह खुद पहले से इसके बारे में सोचता रहा है। वह जानती थी कि व्रोन्स्की उससे चाहे कुछ भी क्यों न कहे, वह सब नहीं कहेगा, जो सोचता है। वह समझ गयी कि उसकी अन्तिम आशा उसे छल गयी। यह वह नहीं था, जिसकी उसने आशा की थी।

"तुम देख रहे हो न कि वह कैसा आदमी है," आन्ना ने कांपती आवाज़ से कहा, "वह "

"मैं माफ़ी चाहता हूं, मगर मुझे इस बात से खुशी हो रही है," व्रोन्स्की ने उसकी बात काटते हुए कहा और उसकी नज़र इस बात की मिन्नत कर रही थी कि उसे अपने शब्द स्पष्ट करने का समय दिया जाये। "मैं इसलिये खुश हूं कि जैसा वह सोचता है, यह सब वैसा नहीं रह सकता, किसी हालत में नहीं रह सकता।"

"क्यों नहीं रह सकता?" अपने आंसुओं को पीते हुए आन्ना ने पूछा। वह अब स्पष्टतः उस बात को कोई महत्त्व नहीं दे रही थी, जो व्रोन्स्की कहेगा। उसे अनुभव हो रहा था कि उसके भाग्य का निर्णय हो चुका है।

व्रोन्स्की यह कहना चाहता था कि द्वन्द्व-युद्ध के बाद, जो उसके मतानुसार अनिवार्य था, ऐसी स्थिति बनी नहीं रह सकती थी, मगर उसने कही दूसरी बात।

"यह स्थिति बनी नहीं रह सकती। मैं आशा करता हूं कि अ तुम उसे छोड़ दोगी। मैं आशा करता हूं," वह घबराया और उस चेहरे पर लाली दौड़ गयी, "कि तुम मुझे हमारे जीवन के बारे सोचने और उसे व्यवस्थित रूप देने की अनुमति दोगी। कल उसने कहना शुरू किया।

आन्ना ने उसे अपनी बात नहीं कहने दी।

"मगर मेरा बेटा?" वह चिल्ला उठी। "तुमने पढ़ लिया न कि उसने क्या लिखा है? उसे छोड़ना होगा, लेकिन मैं ऐसा नहीं क सकती और ऐसा करना नहीं चाहती।"

"किन्तु भगवान के लिये यह सोचो कि क्या बेहतर है? बेटे क छोड़ देना या इसी अपमानजनक स्थिति को बनाये रखना?"

"किसके लिये अपमानजनक स्थिति?"

"सभी के लिये और सबसे अधिक तो तुम्हारे लिये।"

"तुम कहते हो अपमानजनक ऐसा नहीं कहो। मेरे लिये इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं है," आन्ना ने कांपते स्वर में कहा। वह अब यह नहीं चाहती थी कि व्रोन्स्की सच्ची बात न कहे। उसके पास तो सिर्फ उसका प्यार ही रह गया था और वह उसे प्यार करना चाहती थी। "तुम इस बात को समझो कि जब से मुझे तुमसे प्यार हुआ है, उन दिन से मेरे लिये सब कुछ बदल गया है। मेरे लिये सिर्फ एक ही, सिर्फ एक ही चीज बाकी है – वह तुम्हारा प्यार है। अगर वह मेरा है, तो मैं अपने को इतनी ऊंची, इतनी दृढ़ अनुभव करती हूं कि मेरे लिये कुछ भी अपमानजनक नहीं हो सकता। मुझे अपनी स्थिति पर इसलिये गर्व है कि इसलिये गर्व है गर्व है " वह यह नहीं कह पाई कि उसे किस बात का गर्व है। लज्जा और हताशा से उसका गला रुंध गया। वह रुककर सिसकने लगी।

व्रोन्स्की ने अनुभव किया कि उसका गला रुंधता जा रहा है, कि नाक में खुजली-सी महसूस हो रही है और जीवन में पहली बार उसने रोना चाहा। वह यह न बता पाता कि किस चीज ने उसके मन को ऐसे छू लिया था, उसे आन्ना पर तरस आ रहा था और वह महसूस कर रहा था कि उसकी कोई मदद नहीं कर सकता तथा साथ ही यह भी जानता था कि उसके दुर्भाग्य के लिये वही दोषी है, कि उसने कोई बुरी बात की है।

"क्या तलाक देना मुमकिन नहीं?" उसने कमजोर-सी आवाज में पूछा। आन्ना ने जवाब दिये बिना सिर हिला दिया। "क्या यह नहीं हो सकता कि तुम बेटे को साथ ले लो और उसे छोड़ दो?"

"हो सकता है, लेकिन यह सब उस पर निर्भर करता है। अब मुझे उसके पास जाना चाहिये," उसने रुखाई से कहा। उसकी यह पूर्वानुभूति कि सब कुछ पहले की तरह ही रहेगा, सही सिद्ध हुई।

"मंगल के रोज मैं पीटर्सबर्ग में हूंगा और तब सब कुछ तय हो जायेगा।"

"हां," आन्ना बोली। "लेकिन अब इस बारे में हम और चर्चा नहीं करेंगे।"

आन्ना की बग्घी, जो उसने वापस भेज दी थी और जिसे व्रेदे के बाग के जंगले के पास आने को कह दिया था, आ गयी। आन्ना ने व्रोन्स्की से विदा ली और घर चली गयी।

(२३)

सोमवार को २ जून के आयोग की सामान्य बैठक थी। कारेनिन सभा-भवन में दाखिल हुआ, आयोग के सदस्यों और प्रधान से उसने सामान्य ढंग से हाथ मिलाया और अपने लिये तैयार करके रखे गये कागज़ों पर हाथ टिकाकर अपनी सीट पर बैठ गया। इन कागज़ों में वे उद्धरण थे, जिनकी उसे जरूरत हो सकती थी और उस बयान का मसविदा भी था, जो वह यहां देने वाला था। वैसे तो उसे हवालों की जरूरत भी नहीं थी। उसे सब कुछ याद था और जो कुछ यहां कहनेवाला था, उसको अपने दिमाग में दोहराने की जरूरत नहीं समझता था। वह जानता था कि जब वक्त आयेगा और जब वह उपेक्षा का भाव लाने की बेहद कोशिश करनेवाले विरोधी का चेहरा अपने सामने देखेगा, तो उसका भाषण अपने आप ही उमड़ता हुआ उससे कहीं बेहतर हो जायेगा, जितना कि वह अब उसे तैयार कर सकता था। वह अनुभव कर रहा था कि उसका भाषण इतना अधिक सारपूर्ण था कि उसके हर शब्द का महत्त्व होगा। इसी बीच सामान्य विवरण सुनते हुए वह बहुत ही भोली-भाली और मासूम सूरत बनाये बैठा था। फूली नसोंवाले

उसके गोरे हाथों को, जिनकी लम्बी उंगलियां बड़ी नज़ाकत से उसके सामने रखे कागज के दोनों सिरों को छू रही थीं, तथा थकान के भार से एक ओर को झुके हुए सिर को देखकर कोई यह नहीं सोच सकता था कि अभी उसके मुंह से ऐसे शब्द निकलेंगे, जिनसे भयानक तूफान-सा आ जायेगा, जो सदस्यों को एक-दूसरे को टोकते हुए चीखने-चिल्लाने को विवश कर देंगे और प्रधान को बैठक में अनुशासन बनाये रखने की मांग करनी पड़ेगी। रिपोर्ट के खत्म होने पर कारेनिन ने अपनी धीमी और पतली आवाज़ में घोषणा की कि ग़ैररूसी लोगों के प्रबन्ध के बारे में वह अपने कुछ विचार प्रकट करना चाहता है। सभी का ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया। कारेनिन ने खांसकर गला साफ़ किया और अपने विरोधी की ओर देखे बिना, बल्कि जैसा कि भाषण देते समय वह हमेशा करता था, सामने बैठे पहले व्यक्ति, नाटे-से विनम्र बूढ़े को चुनकर, जिसका आयोग में कभी कोई मत नहीं रहा था, अपने विचार प्रकट करने लगा। बात जब मूलभूत और बुनियादी क़ानून पर पहुंची, तो विरोधी उछलकर खड़ा हो गया और चिल्लाने लगा। स्त्रेमोव जो आयोग का सदस्य था और बुरी तरह तिलमिला उठा था, अपनी सफ़ाई पेश करने लगा। कुल मिलाकर बड़ी तूफ़ानी बैठक रही। किन्तु कारेनिन ने मैदान मार लिया और उसका सुझाव स्वीकार हो गया – तीन और आयोग बना दिये गये तथा अगले दिन पीटर्सबर्ग के एक खास हलके में सिर्फ़ इसी बैठक की चर्चा होती रही। कारेनिन को आशातीत सफलता मिली थी।

अगले दिन यानी मंगलवार की सुबह को आंख खुलने पर कारेनिन ने खुश होते हुए पिछले दिन की अपनी विजय को याद किया और मुस्काये बिना न रह सका, यद्यपि उसने अपने को उस समय उदासीन सा प्रकट करना चाहा, जब उसके बड़े सेक्रेटरी ने उसकी चापलूसी करने के लिए आयोग में जो कुछ हुआ था, उसके सम्बन्ध में उस तक पहुंची हुई अफ़वाहें उसे बतायीं।

वह सेक्रेटरी से बातचीत करते हुए कारेनिन पूरी तरह से यह भूल गया कि आज मंगल का वही दिन था, जो उसने आन्ना के लौटने के लिए तय किया था, और जब नौकर ने उसके आने की सूचना दी, तो उसे हैरानी तथा अप्रिय आश्चर्य हुआ।

आन्ना सुबह ही पीटर्सबर्ग आई थी। आन्ना के तार के मुताबिक उसे लाने के लिये बग्घी भेजी गयी थी और इसलिये कारेनिन को उसके आने की जानकारी होनी चाहिये थी। किन्तु जब वह आई तो वह उसके स्वागत के लिये बाहर नहीं निकला। आन्ना को बताया गया कि वह अभी बाहर नहीं गया और अपने सेक्रेटरी के साथ काम में व्यस्त है। उसने पति को अपने आ जाने के बारे में कहलवा दिया, अपने कक्ष में चली गयी और यह आशा करते हुए कि वह उसके पास आयेगा अपनी चीज़ों को ठीक-ठाक करने लगी। किन्तु एक घण्टा बीतने पर भी वह नहीं आया। आन्ना प्रबन्ध करने के बहाने भोजन-कक्ष में गयी और यह आशा करते हुए कि वह यहां आ जायेगा जान-बूझकर ऊंचे-ऊंचे बोलने लगी। मगर वह नहीं आया, यद्यपि आन्ना को इस बात की आहट मिली कि वह सेक्रेटरी को विदा करने के लिये दरवाज़े तक बाहर गया था। आन्ना जानती थी कि हर दिन की तरह वह जल्द ही अपने काम पर चला जायेगा और वह इसके पहले ही उससे मिलना चाहती थी, ताकि उनके सम्बन्ध स्पष्ट हो जायें।

आन्ना ने हॉल को लांघा और दृढ़ता से उसकी ओर चल दी। जब वह उसके कमरे में दाखिल हुई, तो कारेनिन वर्दी पहने स्पष्टतः जाने को तैयार होकर छोटी-सी मेज़ पर कोहनियां टिकाये बैठा था और थकी-थकी-सी नज़र से अपने सामने देख रहा था। कारेनिन की तुलना में आन्ना ने उसे पहले देखा और समझ गयी कि वह उसके बारे में सोच रहा है।

आन्ना को देखकर उसने उठना चाहा, इरादा बदल लिया, इसके बाद उसके चेहरे पर लाली आ गयी, जो आन्ना ने पहले कभी नहीं देखी थी, वह जल्दी से उठा और उसकी नज़र से नज़र न मिलाते हुए, बल्कि कुछ ऊंचाई पर, उसके माथे तथा बालों पर नज़र टिकाये हुए तेज़ी से उसकी तरफ़ बढ़ चला। वह आन्ना के क़रीब आया, उसका हाथ थाम लिया और उससे बैठने का अनुरोध किया।

"मैं बहुत खुश हूं कि आप आ गयीं," उसने आन्ना के क़रीब बैठते हुए कहा और स्पष्टतः कुछ कहना चाहा, मगर बीच में ही रुक गया। उसने कई बार बात शुरू करनी चाही, पर नहीं की इस मिलन की तैयारी करते हुए आन्ना ने अपने को यह समझाया था कि

उसका तिरस्कार और अपमान करेगी, फिर भी अब उसकी समझ मे नही आ रहा था कि उससे क्या कहे और उसे उसके लिये अफसोस हो रहा था। इस तरह देर तक खामोशी बनी रही। "सेर्योझा स्वस्थ है न?" कारेनिन ने पूछा और जवाब का इन्तजार किये बिना इतना और कह दिया· "मैं आज दोपहर का खाना घर पर नही खाऊगा और अब मुझे जाना चाहिये।"

"मैंने मास्को जाना चाहा था," आन्ना बोली।

"नही, आपने बहुत, बहुत अच्छा किया कि यहां आ गयी," उसने कहा और फिर से चुप हो गया।

यह देखते हुए कि वह बात शुरू नही कर पा रहा है, आन्ना ने खुद ही उसे आरम्भ किया

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," पति की ओर देखने तथा अपने चेहरे पर टिकी उसकी नजर से अपनी दृष्टि को नीचे न करते हुए उसने कहा "मैं अपराधी नारी हू, बुरी औरत हू, लेकिन मैं वैसी ही हूं जैसा कि मैंने आपको तब बताया था और यही कहने के लिये आयी हूं कि मैं इसमें कोई परिवर्तन नही कर सकती।"

'मैंने आपसे इसके बारे मे नही पूछा," उसने अचानक दृढ़ता और घृणापूर्वक उससे नजर मिलाते हुए कहा, "मैंने ऐसा ही सोचा था।" स्पष्टतः क्रोध के प्रभाव से उसने अपनी क्षमताओं पर पुनः पूरी तरह अधिकार पा लिया था। "किन्तु जैसा कि मैंने आपसे उस समय कहा था और फिर आपको लिखा था," वह तीखी और पतली आवाज में कहता गया "मैं फिर दोहराता हू कि मेरे लिये यह जानना जरूरी नही है। मैं इसकी अवहेलना करता हू। सभी पत्नियां आप जैसी उदार नही होती कि अपने पतियों को इतना 'सुखद' समाचार देने की इतनी उतावली हों।" उसने 'सुखद' शब्द पर विशेष जोर दिया। "मैं तब तक इसकी अवहेलना करूगा जब तक उसे समाज को इसका पता नही चलता, जब तक मेरे नाम पर बट्टा नही लगता। इसलिये मैं केवल आपको यह बतलाये देता हू कि हमारे सम्बन्ध वैसे ही रहने चाहिये जैसे सदा रहे है और अगर आप अपने को अपराधी स्थिति मे डालेंगी तो फिर इसी हालत मे मैं अपनी मान मर्यादा की रक्षा के लिये कदम उठाने को मजबूर हूगा।"

"लेकिन हमारे सम्बन्ध वैसे ही नहीं हो सकते, जैसे सदा से" आन्ना ने भय से उसकी तरफ देखते हुए कातर-सी आवाज में कहा।

आन्ना ने जब सिर से उसके शान्त हाव-भाव देखे, उसकी तीखी, बच्चों जैसी और व्यंग्यपूर्ण आवाज सुनी तो उसके प्रति घृणा ने उसका पहले वाला दया भाव नष्ट कर दिया और वह केवल भयभीत-सी होकर रह गयी। लेकिन वह हर हालत में अपनी स्थिति को स्पष्ट कर लेना चाहती थी।

"मैं आपकी पत्नी नहीं रह सकती जब मैंने ..." उसने कहना शुरू किया।

कारेनिन क्रोध और रुखाई से हंसा।

"ऐसा मानना चाहिये कि आपने जिस तरह का जीवन चुना है, उसका आपके विचारों पर भी प्रभाव पड़ा है। मैं इतना अधिक आदर और इतनी अधिक घृणा करता हूं – आपके अतीत का आदर और वर्तमान से घृणा – कि मेरा कतई वह आशय नहीं था, जो आपने मेरे शब्दों से समझा।"

आन्ना ने गहरी सांस ली और सिर झुका लिया।

"वैसे, यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही कि आपके समान आज़ाद होते हुए," वह गुस्से में आकर कहता गया, "और पति से अपनी बेवफाई के बारे में साफ-साफ कहते हुए, जैसा कि मुझे लग रहा है, आप कुछ भी बुरा नहीं महसूस कर रही हैं, जबकि पति के प्रति पत्नी के कर्त्तव्य निभाना आप बुरा समझती हैं।"

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच[1] आप मुझसे क्या चाहते हैं?"

"मैं चाहता हूं कि इस आदमी को मैं यहां न देखूं और यह कि आप ऐसा व्यवहार करें कि न तो ऊंचा समाज और न ही नौकर-चाकर आप पर उंगली उठा पायें कि आप उससे न मिलें। मुझे लगता है कि यह बहुत नहीं है। इसके बदले में आपको एक ईमानदार बीवी के कर्त्तव्य पूरे किये बिना उसके अधिकार प्राप्त होंगे। बस यही कुछ है, जो मैं आपसे कह सकता हूं। अब मेरे जाने का वक्त हो गया। मैं दोपहर का खाना घर पर नहीं खाऊंगा।"

वह उठा और दरवाज़े की तरफ चल दिया। आन्ना भी उठकर खड़ी हो गयी। कारेनिन ने चुपचाप सिर झुकाकर उसके लिये रास्ता छोड़ दिया।

लेविन ने घास की टाल पर जो रात बिताई थी, वह उसके मन पर प्रभाव डाले बिना न रही – उसके लिये खेतीबारी घृणित हो गयी और उसे उसमें कोई दिलचस्पी न रही। बहुत ही बढ़िया फ़सल के बावजूद, पहले कभी ऐसा नहीं हुआ था या कम से कम उसे कभी ऐसा नहीं लगा था कि इतनी अधिक असफलताओं का मुह देखना पड़ा हो और उसके तथा किसानों के बीच इस साल जैसे शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध रहे हों। इन असफलताओं और इस शत्रुता का कारण अब उसे बिल्कुल स्पष्ट था। किसानों के निकट होने के फलस्वरूप उसे काम में जो आनन्द मिला था, उसे किसानों और उनके जीवन से जो ईर्ष्या तथा जिसे स्वयं अपनाने की इच्छा अनुभव हुई थी, जो इस रात को उसके लिये सपना न रहकर इरादा बन गयी थी और जिसे अमली शक्ल देने के बारे में उसने सोचा-विचारा था – इन सब चीज़ों ने उसके द्वारा संचालित खेतीबारी के बारे में उसके दृष्टिकोण को इतना बदल दिया कि उसे उसमें किसी भी तरह पहले जैसी दिलचस्पी न रही और वह खेत कामगारों के प्रति अपने उस अरुचिकर सम्बन्ध को देखे बिना नहीं रह सकता था जो इस सारे मामले की जड़ में था। पावा जैसी बढ़िया नसल की गउओं का झुण्ड, खाद डाली और मोटे के हलों से जोती गयी सारी ज़मीन, सरपत के झाड़ों से घिरे नौ एक जैसे खेत, गहरी जोती और खाद से उपजाऊ बनायी गयी लगभग एक सौ हेक्टर भूमि और बीज बोने की ड्रिल आदि – यह सब कुछ बहुत बढ़िया होता अगर वह खुद या अपने प्रति सहानुभूति रखनेवाले साथियों और लोगों की मदद से सारा काम कर पाता। लेकिन अब वह साफ़ तौर पर यह देख रहा था (कृषि सम्बन्धी उसकी पुस्तक पर किये जानेवाले काम ने जिसके अनुसार खेतीबारी के कामों का मुख्य तत्त्व खेत मज़दूर होना चाहिये, इस बात को समझने में बहुत मदद दी) कि जिस ढंग से वह खेतीबारी का संचालन कर रहा था उसमें उसके तथा खेत मज़दूरों के बीच कठोर और लगातार संघर्ष चल रहा है। इस संघर्ष में एक ओर से यानी उसकी ओर से तो सब कुछ बेहतर ढंग से बदलने का स्थायी तथा तनावपूर्ण प्रयास था तथा दूसरी ओर से स्थिति को ज्यों का त्यों रखने

ने देखा कि इस मशीन से उसके बहुत यत्न करने मगर दूसरी किसी प्रयास या इशारे के बिना सिर्फ यही नतीजा निकल रहा खेतीबारी का काम किसी की भी पसन्द के मुताबिक नहीं हो रहा बढ़िया औज़ार, बढ़िया पशु तथा भूमि व्यर्थ खराब हो रहे थे। बड़ी बात तो यह थी कि न केवल इस ध्येय के लिये लगाई ी शक्ति ही बेकार जा रही थी बल्कि अब जब उसके कार्य । उसे स्पष्ट हो गया था वह यह महसूस किये बिना नहीं रह था कि उसका लक्ष्य भी बिल्कुल अनुचित था। वास्तव में यह किस बात का था ? वह अपनी एक-एक कौड़ी के लिये जूझता था के लिये ऐसा करना ज़रूरी था क्योंकि अगर वह इसमें उदा- । ढील देता, तो मज़दूरों को मज़दूरी देने के लिये भी उसके पास की कमी हो जाती) जबकि वे लोग इस बात के लिये यत्नशील चैन और मज़े से काम करें यानी जैसे उनकी आदत हो गयी उसके हित में यह था कि हर मज़दूर यथाशक्ति अधिक काम करे, भी लापरवाही से नहीं कि वह ओसाने की मशीन घोड़े की और माड़ने की मशीन न तोड़े तथा जो कुछ करे उसके बारे में विचारे। दूसरी ओर मज़दूर यथासम्भव अधिक मज़े तथा आराम से करना चाहता था तथा मुख्यतः तो बेफ़िक्री और मस्ती से, सो सोचे-समझे बिना। इस गर्मी में लेविन ने हर कदम पर यह देखा। ने ज़मीन के बुरे टुकड़े चुनकर, जिनपर जंगली घास और कड़वे । उगे हुए थे और जो बीज हासिल करने के उपयुक्त नहीं थे, वहां तिया घास काटने के लिये लोग भेजे किन्तु उन्होंने बेहतरीन जोतवाले टुकड़ों से घास काटी अपनी सफ़ाई में यह कहा कि कारिन्दे ऐसा ही आदेश दिया था और उसे यह कहकर तसल्ली दी कि बहुत बढ़िया चारा होगा। मगर लेविन तो जानता था, ऐसा इसलिये हुआ कि न टुकड़ों पर घास काटना आसान था। उसने घास को पलटकर सुखाने ा यन्त्र भेजा, उसे पहली कतारों में ही तोड़ डाला गया, क्योंकि किसान के लिये सिर के ऊपर घूमते हुए पंखों के नीचे सीट पर बैठना ख का काम था। उससे यह कहा गया "कोई फ़िक्र नहीं कीजिये, औरतें इस काम को अधिक अच्छी तरह कर देंगी।" हल इसलिये बेकार थे कि मज़दूर के दिमाग में यह बात नहीं आई कि ऊपर उठे फाल को

वह दूर के जिले मे रहनेवाले अपने मित्र स्वियाज्स्की की ओर रवाना हो गया। वहा बढिया दलदल थे, जिनमे ढेरों कुनाल थे, और इस मित्र ने कुछ ही समय पहले अपने यहा आने का पुराना इरादा पूरा करने को लिखा था। सूरोव्स्की जिले मे कुनालोवाले दलदल बहुत अर्से से लेविन को अपनी ओर खीच रहे थे, किन्तु खेतीबारी के काम की वजह से वह वहा जाने के विचार को टालता रहा था। अब वह श्चेर्बात्स्की परिवार की निकटता और मुख्यत फार्म से, सो भी शिकार के लिये दूर जाते हुए बहुत खुशी महसूस कर रहा था, क्योंकि शिकार सभी तरह की मुसीबतों-परेशानियों मे उसे सबसे ज्यादा चैन देता था।

(२५)

सूरोव्स्की जिले मे न तो रेलगाडी जाती थी और न ही डाक ले जानेवाली सरकारी घोडा-गाडिया। इसलिये लेविन अपनी ही बग्घी मे वहा जा रहा था।

आधी मंजिल तय करने के बाद वह घोडों को चारा-पानी देने के लिये एक धनी किसान के यहां रुका। स्वस्थ, गंजे सिर और गालों के पास सफेद होती चौडी लाल दाढी वाले बूढे ने फाटक खोला और उसे थामकर खडा रहा, ताकि बग्घी फाटक को लाघ जाये। कोचवान को बडे, साफ-सुथरे और भाडे-बुहारे हुए नये अहाते मे, जहा कुछ जले हुए हल रखे थे, सायबान के नीचे जाने का संकेत करके बूढे ने लेविन से मेहमानखाने मे चलने को कहा। साफ-सुथरी पोशाक और नंगे पैरों मे गैलोश पहने जवान लडकी भुककर नयी ड्योढी का फर्श साफ कर रही थी। लेविन के पीछे-पीछे भीतर भाग आनेवाली कुतिया को देखकर वह डरी और चीख उठी, किन्तु यह जानने पर कि वह काटती नही है, अपनी चीख पर खुद ही हस पडी। आस्तीन ऊपर चढे हाथ से लेविन को मेहमानखाने की ओर जाने का रास्ता बताकर उसने फिर से भुककर अपना सुन्दर मुखडा छिपा लिया और फर्श धोने लगी।

"समोवार गर्म कर दू क्या?" उसने पूछा।

"हा, कृपया।"

मेहमानखाना बडा था। उसमे डचों की अगीठी थी और बीच मे

दीवार से उसे दो हिस्सों में बांटा गया था। देव-प्रतिमाओं के नीचे बेल-बूटोंवाली मेज़, एक बेंच और दो कुर्सियां रखी थीं। दरवाज़े के क़रीब अलमारी में बर्तन थे। शटर बन्द थे, मक्खियां बहुत कम थीं और कमरा इतना साफ़-सुथरा था कि लेविन ने लास्का को, जो सड़क पर दौड़ती और डबरों में लोटती-पोटती रही थी, दरवाज़े के पास एक कोने में बैठ जाने का इशारा किया, ताकि वह फ़र्श को गन्दा न कर दे। मेहमानख़ाने को देखने के बाद वह पिछवाड़े के अहाते में गया। गैलोश पहने हुए प्यारी-सी सूरतवाली युवती बहंगी पर ख़ाली बालटियां लटकाये हुए कुएं से पानी लाने के लिये उसके सामने से भागती हुई गुज़री।

"ज़रा फुर्ती से!" बूढ़े ने ख़ुशमिज़ाजी से उसे ऊंची आवाज़ में कहा और लेविन के पास गया। "तो हुज़ूर, आप निकोलाई इवानोविच स्वियाज्स्की के यहां जा रहे हैं? वे भी हमारे यहां आया करते हैं," ओसारे के जंगले पर कोहनियां टिकाकर उसने बातचीत शुरू करने की इच्छा से कहा।

बूढ़ा जब स्वियाज्स्की के साथ अपने परिचय की बात सुना रहा था, तो बीच में ही फिर से फाटक चरमराकर खुला और खेत में काम करनेवाले लोग हलों तथा हेंगों के साथ अहाते में दाख़िल हुए। हलों और हेंगों के साथ जुते हुए घोड़े मज़बूत और बड़े-बड़े थे। काम करनेवाले स्पष्टतः घर के ही लोग थे – इनमें से दो नौजवान छींट की कमीज़ें और तुर्रेदार टोपियां पहने थे तथा बाक़ी दो – एक बूढ़ा और दूसरा जवान – भाड़े के मज़दूर थे और गाढ़े के कुरते पहने थे। बूढ़ा ओसारे से हटकर घोड़ों के पास गया और उन्हें खोलने लगा।

"कहां हल चलाते रहे हैं?" लेविन ने पूछा।

"आलू खोदते रहे हैं। हम भी कुछ ज़मीन पट्टे पर लेते हैं। फ़ेदोत, तुम इस बधिया घोड़े को बाहर चरने के लिये नहीं छोड़ो, बल्कि नांद पर खड़ा कर दो। हम दूसरा घोड़ा जोत लेंगे।"

"बापू, मैंने हलों के जो फाल लाने को कहा था, आ गये हैं क्या?" लम्बे-तड़ंगे और हट्टे-कट्टे नौजवान ने पूछा, जो स्पष्टतः बूढ़े का बेटा था।

"स्ले... स्लेज में हैं," बूढ़े ने उतारी हुई लगामों को लपेटते और ज़मीन पर फेंकते हुए कहा। "जब तक वे खाना खा रहे हैं, सब कुछ ठीक-ठाक कर दो।"

सुन्दर युवती पानी से भरी बाल्टियों वाली बहंगी को कंधे पर रखे, जिससे उसके कंधे झुक गये थे, भीतर गयी। कहीं से कुछ अन्य औरतें सामने आ गयी – सुन्दर और जवान, अधेड़ उम्र की, बूढ़ी तथा असुन्दर, बच्चों के साथ और बच्चों के बिना।

समोवार में पानी उबलने लगा था। भाड़े के मजदूर और घरवाले लोग घोड़ों की देखभाल करने के बाद खाना खाने चल दिये। लेविन ने बग्घी में से अपनी रसद निकालकर बूढ़े को अपने साथ चाय पीने के लिये आमन्त्रित किया।

"रहने दीजिये, मैं तो पी चुका हूं," बूढ़े ने स्पष्टतः सहर्ष उसका प्रस्ताव स्वीकार करते हुए कहा। "साथ देने के लिये पी लूगा।"

चाय पीते वक्त लेविन ने बूढ़े की खेतीबारी के बारे में सारी जानकारी हासिल कर ली। बूढ़े ने दस साल पहले एक जमींदारिन से लगभग १३० हेक्टर जमीन पट्टे पर ली थी। पिछले साल यह सारी जमीन खरीद ली और पड़ोस के जमींदार से लगभग ३३० हेक्टर जमीन और किराये पर ले ली। इस जमीन का थोड़ा-सा भाग, सबसे बुरा भाग, उसने किराये पर दे दिया और लगभग चवालीस हेक्टर जमीन वह अपने परिवार तथा भाड़े के दो मजदूरों की मदद से खुद जोतता-बोता था। बूढ़े ने शिकायत की कि उसका कामकाज ढीला चल रहा है। किन्तु लेविन समझ गया कि वह केवल कहने के लिये ही ऐसा कह रहा है और वास्तव में उसका फार्म खूब फल-फूल रहा है। अगर उसका मामला ढीला होता, तो वह एक सौ पाच रूबल प्रति हेक्टर के हिसाब से जमीन न खरीदता, तीन बेटों और एक भतीजे की शादी न कर पाता, दो बार आग लगने के बाद निर्माण न करता और सो भी पहले से बेहतर। बूढ़े के शिकवे-शिकायत के बावजूद यह साफ दिख रहा था कि वह अपनी खुशहाली, अपने बेटों, अपने भतीजे, बहुओं, घोड़ों और गउओं तथा इस बात पर न्यायसंगत रूप से गर्व करता है कि इस सारे धंधे को ढंग से चला रहा है। बूढ़े के साथ अपनी बातचीत से उसे यह पता चला कि वह खेतीबारी के नये तरीकों के भी विरुद्ध नहीं था। उसने बहुत बड़ी मात्रा में आलू बोये थे और उसके आलू, जो लेविन ने खेतों के पास से गुजरते हुए देखे थे, फूल चुके थे, जबकि

युवा नारी थी, जो प्याले में फिर से पत्तागोभी का शोरवा डाल रही थी।

बहुत मुमकिन है कि गैलोश पहने हुए जवान औरत के प्यारे चेहरे ने सुख-समृद्धि का वह प्रभाव डालने में, जो इस किसान-परिवार ने लेविन के मन पर पड़ा, निर्णायक भूमिका अदा की हो, किन्तु यह प्रभाव इतना गहरा था कि लेविन किसी तरह भी इससे मुक्ति नहीं पा सका। बूढ़े के घर से स्वियाज्स्की के घर तक वह बार-बार इस किसान की खेतीबारी के बारे में सोचता रहा मानो दिल पर पड़ी इस छाप में कुछ तो उसके विशेष ध्यान की माग करता था।

(२६)

स्वियाज्स्की अपने जिले के कुलीनो का मुखिया था। वह लेविन से पाच साल बड़ा और एक अर्से से शादीशुदा था। उसकी जवान साली भी उसी के घर में रहती थी और वह लेविन को बहुत पसन्द थी। लेविन जानता था कि स्वियाज्स्की और उसकी बीवी उसके साथ इस लड़की की शादी करने को बहुत उत्सुक हैं। वह पक्की तरह यह जानता था, जैसे कि शादी के लायक सभी जवान लोग हमेशा यह जानते होते हैं, यद्यपि इसके बारे में उसने कभी किसी से यह न कहा होता। वह यह भी जानता था कि बेशक शादी करना चाहता है, कि सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यह सुन्दर लड़की बहुत अच्छी बीवी हो सकती है और अगर उसे कीटी से प्यार न होता, तो भी उससे वैसे ही शादी न करता, जैसे कि आसमान में न उड़ता। इस बात की चेतना ने उसकी उस खुशी का कुछ रग फीका कर दिया, जो स्वियाज्स्की के यहा जाकर वह हासिल करने की उम्मीद कर रहा था।

शिकार के लिये जाने के निमन्त्रण के साथ स्वियाज्स्की का पत्र पाते ही लेविन को इस बात का ख्याल आया। इसके बावजूद उसने यह तय किया कि अपने बारे में स्वियाज्स्की के ऐसे विचार उसका आधारहीन अनुमान ही है और इसलिये वह जायेगा। इसके अलावा अपने दिल की गहराई में वह एक बार फिर अपने को जाचना, इस लड़की के बारे में अपनी भावनाओं को परखना चाहता था। स्वियाज्स्की का घरेलू जीवन बहुत ही सुखद था और खुद स्वियाज्स्की, जो लेविन को जान-पहचान

के ज़ेम्स्त्वो-परिषद के कार्यकर्ताओं में सर्वश्रेष्ठ ढंग का व्यक्ति था लेविन के लिये हमेशा बहुत दिलचस्प रहा था।

स्वियाज्स्की लेविन को हमेशा चकित करनेवाले उन लोगों में से था, जिनका चिन्तन मौलिक न होते हुए भी बहुत तर्कसंगत होता है और उनके जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। उनके जीवन की दिशा अत्यधिक सुनिश्चित और दृढ़ होती है और जीवन उनके विचारों से सर्वथा स्वतन्त्र और लगभग हमेशा ही उनके प्रतिकूल अपने आप ही चलता जाता है। स्वियाज्स्की बहुत ही उदार विचारों का व्यक्ति था। वह कुलीनों को घृणा की दृष्टि से देखता था और अधिकतर कुलीनों को भूदास-प्रथा के पक्षपाती मानता था जो केवल भीरुतावश अपने विचार व्यक्त नहीं करते थे। वह रूस को तुर्की की तरह गया-बीता देश और रूस की सरकार को इतना बुरा समझता था कि सरकार की गतिविधियों पर कभी गम्भीर टीका-टिप्पणियां भी नहीं करना चाहता था। इसके साथ ही वह सरकारी कामकाज करता था, कुलीनों का आदर्श मुखिया था तथा यात्रा के समय सदैव कोकेड और लाल पट्टीवाला टोप पहनता था। उसके मतानुसार ढंग की इन्सानी ज़िन्दगी सिर्फ़ विदेश में ही मुमकिन थी और सम्भावना पाते ही वह वहां चला जाता था, लेकिन साथ ही रूस में बहुत ही जटिल तथा बढ़िया ढंग की खेतीबारी का सचालन करता था, रूस में जो कुछ होता था बड़ी दिलचस्पी से उसपर नज़र रखता था तथा सब कुछ जानता था। वह यह मानता था कि मानव विकास की दृष्टि से रूसी किसान बन्दर से मानव बनने की सक्रमण-अवस्था में है मगर साथ ही ज़ेम्स्त्वो-परिषदों के चुनावों में सबसे ज्यादा उत्साह से किसानों के साथ हाथ मिलाता था और उनके विचारों को सुनता था। वह किसी भी तरह के शकुनों-अपशकुनों और मौत में विश्वास नहीं करता था लेकिन पादरियों के जीवन को बेहतर बनाने गिरजों की संख्या बढ़ाने के प्रश्न में बड़ी दिलचस्पी लेता था और उसने इस बात के लिये एड़ी-चोटी का जोर लगाया था कि उसके गांव में गिरजा बना रहे।

औरतों के प्रश्न पर उनकी स्वतन्त्रता और विशेषतः उनके काम करने के अधिकार के मामले में अतिवादी पक्षपातियों का समर्थक था। किन्तु पत्नी के साथ ऐसे रहता था कि सभी उनके सन्तानहीन, मैत्रीपूर्ण

पारिवारिक जीवन को मुग्ध होकर देखते थे और उसने अपनी बीवी का जीवन ऐसे व्यवस्थित कर दिया था कि वह यथासम्भव बेहतर और अधिकाधिक खुशी भरा समय बिताने की दम्पति की साझी इच्छा की पूर्ति के सिवा न तो कुछ करती थी और न कर ही सकती थी।

अगर लेविन में लोगों के जीवन के केवल उजले पहलू को ही देखने का गुण न होता, तो स्वियाज्स्की का चरित्र उसके लिये न तो कोई कठिनाई और न प्रश्न ही प्रस्तुत करता। वह अपने आपसे कहता-उल्लू है या कूड़ा-करकट और बात साफ हो जाती। लेकिन वह उसे 'उल्लू' नहीं कह सकता था, क्योंकि स्वियाज्स्की निश्चय ही न केवल बहुत बुद्धिमान, बल्कि बड़ा पढ़ा-लिखा आदमी था और अपने सुशिक्षित होने का ज़रा भी दिखावा नहीं करता था। कोई भी ऐसा विषय नहीं था, जो वह न जानता हो, मगर अपना ज्ञान तभी प्रकट करता था, जब ऐसा करने की विवशता होती। लेविन उसे 'कूड़ा-करकट' तो और भी कम कह सकता था, क्योंकि स्वियाज्स्की निस्सन्देह एक ईमानदार, दयालु और बुद्धिमान व्यक्ति था, जो खुशमिज़ाजी और सजीवता से ऐसे काम करता था, जिनका उसके इर्द-गिर्द के सभी लोग बहुत ऊंचा मूल्यांकन करते थे और सम्भवतः कभी भी उसने जान-बूझकर न तो कुछ बुरा किया था और न ही कर सकता था।

लेविन ने उसे समझने की कोशिश की और नहीं समझ पाया और उसके जीवन को वह हमेशा एक जीती-जागती पहेली की तरह देखता था।

लेविन के साथ उसकी दोस्ती थी और इसलिये वह स्वियाज्स्की को कुरेदने की छूट लेता था, उसके जीवन-दृष्टिकोण की तह तक जाने की कोशिश करता था, मगर उसकी यह कोशिश कभी सिरे नहीं चढ़ती थी। जब कभी भी लेविन स्वियाज्स्की की बुद्धि के अतिथि कक्ष के सभी के लिये खुले द्वारों से आगे झांकने का प्रयास करता, स्वियाज्स्की तनिक परेशान हो उठता, उसकी दृष्टि में डर की ज़रा झलक मिलती, मानो वह डरता हो कि लेविन उसे समझ जायेगा, और वह हंसते हुए तथा खुशमिज़ाजी से उसका प्रतिवाद करता।

अब खेतीबारी के काम में निराश हो जाने के बाद लेविन के लिये स्वियाज्स्की के यहां जाना विशेषतः सुखद हो गया था। न केवल यही

द अपने और बाकी सभी कुछ में मुग्ध इस सौभाग्यशाली दम्पति उनके सुखी घर का उस पर प्रफुल्लतापूर्ण प्रभाव पड़ता था वह अपने जीवन से अत्यधिक असन्तुष्ट होने पर अब स्वियाज्स्की हा उस रहस्य को जानना चाहता था जो उसके जीवन को इतनी ता, सुनिश्चितता और प्रफुल्लता प्रदान करता था। इतना ही , लेविन जानता था कि स्वियाज्स्की के यहां अड़ोस-पड़ोस के दारों से भी उसकी मुलाकात होगी और उसके लिये अब खेतीबारी, र और खेत-मज़दूरों की मजूरी, आदि के बारे में जिन्हें जैसा लेविन जानता था, किसी कारण से घटिया माना जाता था और अब उसे बहुत ही महत्वपूर्ण लगते थे बातचीत करना और उनके बार सुनना विशेष रूप से दिलचस्प था। 'हो सकता है कि भूदास-ा के समय ये बातें महत्वपूर्ण नहीं थी या इंगलैंड में महत्त्व न रखती । दोनों स्थितियों में खेतीबारी की परिस्थितियां सुनिश्चित हैं। न्तु हमारे यहां, जब सब कुछ उलट-पुलट गया है और नया रूप रण कर रहा है, ये परिस्थितियां कैसे तय होंगी यह रूस की सबसे हत्त्वपूर्ण समस्या है," लेविन सोच रहा था।

लेविन ने जैसी आशा की थी, शिकार उससे कहीं बुरा रहा। लदल सूख गया था और कुनाल वहां थे ही नहीं। वह दिन भर वहां टकता रहा और केवल तीन पक्षी ही मार कर लाया, लेकिन जैसा के हमेशा शिकार के बाद होता था उसकी भूख खूब चमक उठी थी, उसका मूड बहुत बढ़िया था और बौद्धिक उन्माह बहुत तीव्र हो गया था, जो ज़ोरदार शारीरिक गतिविधि के फलस्वरूप उसे सदा अनुभव होता था। शिकार के समय, जब ऐसा प्रतीत हो सकता था कि वह किसी भी चीज़ के बारे में नहीं सोच रहा था उसे रह-रहकर बूढ़े तथा उसके परिवार की याद आती थी और यह प्रभाव न केवल अपनी तरफ ध्यान देने की, बल्कि उससे सम्बन्धित किसी चीज़ के समाधान की भी मांग करता था।

शाम को चाय के समय दो ज़मींदारों की उपस्थिति में, जो सर-परस्ती के कुछ मामलों के सिलसिले में आये थे, वह दिलचस्प बातचीत शुरू हो गयी, जिसकी लेविन ने आशा की थी।

चाय की मेज़ पर लेविन गृह-स्वामिनी के निकट बैठा था और

उसे उसके साथ तथा सामने बैठी हुई साली के साथ बातचीत करते रहना चाहिये था। गृह-स्वामिनी नाटे कद की, गोल चेहरे और सुनहरे बालोंवाली नारी थी, वह खूब मुस्कराती थी और उसके गालों पर खूब गुल पड़ते थे। लेविन ने उसके माध्यम से अपने लिये उस महत्वपूर्ण पहेली का हल ढूंढने की कोशिश की, जो उसका पति उसके लिये बना हुआ था। लेकिन वह सोचने-विचारने की पूरी स्वतन्त्रता नहीं पा रहा था, क्योंकि यातनापूर्ण अटपटापन महसूस कर रहा था। उसे इसलिये यातनापूर्ण अटपटापन महसूस हो रहा था कि उसके सामने स्वियाज्स्की की साली, जैसा कि उसे लग रहा था, खास फ़्राक पहने बैठी थी, जो उसकी गोरी छाती पर वर्गाकार रूप में नीचा काटा गया था। इस चीज़ के बावजूद कि छाती बहुत गोरी थी, या शायद इसलिये कि छाती बहुत गोरी थी, फ़्राक की यह वर्गाकार काट लेविन के चिन्तन में बाधा बन रही थी। वह कल्पना कर रहा था, सम्भवतः गलत ही, कि फ़्राक को उसके लिये ही इस तरह काटा गया है और इसलिये उसकी तरफ़ देखना उचित नहीं समझता था तथा उधर न देखने की कोशिश करता था। किन्तु यह महसूस कर रहा था कि केवल यही इसके लिये अपराधी है कि फ़्राक को ऐसे काटा गया है। लेविन को लग रहा था कि वह किसी को धोखा दे रहा है, कि उसे कुछ स्पष्ट करना चाहिये, लेकिन यह स्पष्ट करना किसी तरह भी सम्भव नहीं और इसलिये वह लगातार शर्मा रहा था, बेचैनी और अटपटापन महसूस कर रहा था। उसकी यह झेंप स्वियाज्स्की की सुन्दर साली को भी प्रभावित कर रही थी। किन्तु प्रतीत होता था कि गृह-स्वामिनी ऐसा अनुभव नहीं करती थी और जानबूझकर उसे बातचीत में उलझा रही थी।

[illegible] कहते हैं [illegible] गृह-स्वामिनी ने शुरू की हुई बातचीत को [illegible] कहते हुए कहा, [illegible] कि मेरे पति को रूसी चीज़ों में दिलचस्पी [illegible] हो सकता। इसके [illegible] विदेश में खुश रहता है [illegible] और [illegible] नहीं रहता [illegible]। [illegible] यह अपने को [illegible] [illegible] है। [illegible] उसके [illegible] और उसके [illegible] का बड़ा गुण है। [illegible] अपने [illegible] [illegible] है...

से प्राप्त बात करने के अधिकारपूर्ण ढंग तथा बड़े, सुन्दर तथा सधसाने हाथों के हिलने-डुलने के अन्दाज में, जिनमें से एक की अनामिका में वह शादी की पुरानी अंगूठी पहने था, उसे इसके लक्षण दिखाई दिये।

(२७)

"जो कुछ व्यवस्थित किया गया है, अगर उसे छोड़ते हुए दुःख न होता . बहुत मेहनत की गयी है तो हाथ झटक देता, बेच डालता और निकोलाई इवानोविच की तरह चल देता 'सुन्दरी हेलेन' सुनने," जमींदार ने कहा, जिसके बुद्धिमत्तापूर्ण बुढ़ाये चेहरे पर मधुर मुस्कान चमक रही थी।

"लेकिन नहीं छोड़ रहे हैं न " स्वियाज्स्की ने कहा, "इसका मतलब है कि कुछ कारण है।"

"कारण एक है कि घर में रहता हूं, जो न खरीदा है और न किराये पर लिया है। इसके अलावा यह उम्मीद भी है कि कभी किसान समझदार हो जायेंगे। नहीं, अब तो मानिये या न मानिये – बस, शराब और बदमाशी ही चल रही है! जमीन को उन्होंने बांट-बांट कर बांट दिया है, न तो गाय है, न घोड़ा। किसान भूख से मर रहा होगा, उसे मजदूरी पर रख लीजिये वह तुम्हारा सब कुछ नष्ट और चौपट कर डालेगा और इसके अलावा न्यायाधीश के सामने भी खींच ले जायेगा।"

"आप भी तो न्यायाधीश के पास शिकायत लेकर जा सकते हैं," स्वियाज्स्की ने कहा।

"मैं शिकायत करूंगा? किसी हालत में भी नहीं! ऐसी बातें होंगी कि शिकायत करने का अफसोस होगा! थांकी के फार्म में क्या हुआ – पेशगी रकम ली और चले गये। न्यायाधीश ने क्या किया? उन्हें मुक्त कर दिया। बस, सरकारी अदालत और मुखिया के बल पर ही सब कुछ चल रहा है। वह पुराने वक्त की तरह उसकी अच्छी तरह खबर लेता है। अगर यह न हो तो सब कुछ छोड़छाड़कर कहीं दूर भाग जायें!"

[illegible] स्वियाज्स्की [illegible] कह रहा था [illegible]

केवल बिगड़ नहीं रहा था, बल्कि, जैसा कि जाहिर था, मजा ले रहा था।

"ऐसा कुछ किये बिना आखिर हम भी तो अपनी खेतीबारी चला रहे हैं," उसने मुस्कराकर कहा। "मैं, लेविन और ये भी।"

स्वियाज्स्की ने दूसरे जमींदार की तरफ इशारा किया।

"हां, मिखाईल पेत्रोविच की खेतीबारी चल रही है, मगर पूछिये तो कैसे? यह क्या युक्तियुक्त खेतीबारी है?" जमींदार ने कहा, जो स्पष्टतः "युक्तियुक्त" शब्द का बाकपन दिखा रहा था।

"मेरी खेतीबारी बहुत सीधी-सादी है," मिखाईल पेत्रोविच ने कहा। "शुक्र है भगवान का। मेरी खेतीबारी सिर्फ इतनी ही है कि पतझर के करों के लिये पैसे तैयार रहें। किसान लोग आते हैं, कहते हैं – बापू, माई-बाप, मदद करो! ये अपने लोग, अपने पड़ोसी किसान ही है, तरस आता है। उनकी मजदूरी एक-तिहाई पेशगी दे देता हूं और कहता हूं, देखो, मैंने तुम्हारी मदद की है, अब तुम भी चाहे जई की बुवाई हो, चाहे घास या फसल की कटाई, मेरी मदद करना। इस तरह हम हर परिवार से मिलनेवाले श्रम के बारे में बात तय कर लेते हैं। यह सच है कि उनमें भी कुछ बेईमान निकल आते हैं।"

लेविन बुजुर्गों के इन पुराने तरीकों से बहुत पहले से परिचित था, उसने स्वियाज्स्की से नजरें मिलायी, मिखाईल पेत्रोविच को टोका और पकी मूछोंवाले जमींदार को सम्बोधित किया।

"तो आपका क्या विचार है?" उसने पूछा, "खेतीबारी को कैसे चलाना चाहिये?"

"मिखाईल पेत्रोविच की तरह ही – या फिर बटाई अथवा पट्टे पर किसानों को जमीन दे दो। ऐसा किया जा सकता है, मगर ऐसा करके हम राज्य की साझी दौलत को बरबाद करते हैं। जहां भूदासों के श्रम और अच्छे प्रबन्ध से जमीन मुझे नौ गुनी उपज देती थी, बटाई से सिर्फ तीन गुनी ही देती है। भूदासों की मुक्ति ने रूस को बरबाद कर डाला है!"

स्वियाज्स्की ने मुस्कराती आंखों से लेविन की तरफ देखा और तनिक दिखाई देनेवाला उपहासपूर्ण संकेत भी किया। किन्तु लेविन को जमींदार के शब्द हास्यास्पद नहीं लगे। स्वियाज्स्की को समझने की

तुलना में वह इन शब्दों को अधिक अच्छी तरह समझता था। जमींदार ने यह साबित करने के लिये कि भूदासों की मुक्ति से हम कैसे बरबाद हो गया है, आगे और जो कुछ कहा लेविन को वह बहुत नहीं, अपने लिये नया और अकाट्य प्रतीत हुआ। जमींदार स्पष्टतः अपना ही विचार प्रकट कर रहा था, जैसा कि बहुत कम होता है। इसके अलावा यह विचार ऐसा नहीं था, जो खाली दिमाग़ को किसी चीज़ में व्यस्त करने की इच्छा का परिणाम हो, बल्कि ऐसा विचार, जो उसके जीवन की परिस्थितियों की देन था, जिस पर उसने गांव के अपने एकांत जीवन में विचार किया था, जिसे सभी पहलुओं से जांचा-परखा था।

"बात यह है कि हर प्रकार की प्रगति केवल शक्ति के उपयोग से ही सम्भव होती है," वह कह रहा था और स्पष्टतः यह दिखाना चाहता था कि उसने भी कुछ पढ़ा-पढ़ाया है। "पीटर प्रथम, महारानी येकातेरीना और ज़ार अलेक्सान्द्र के सुधारों को ले लीजिये। यूरोप के इतिहास पर ही नज़र डालिये। खेतीबारी की प्रगति के बारे में तो खास तौर पर यह सही है। आलुओं को ही ले लीजिये – उनकी बुवाई भी हम पर ज़बर्दस्ती लादी गयी। लकड़ी के हल से भी तो हमेशा ज़मीन नहीं जोती जाती थी। उसका भी शायद मध्य युग में ज़बर्दस्ती इस्तेमाल शुरू करवाया गया। अब हमारे ज़माने में भूदास प्रथा के समय हम ज़मींदार लोग खेतीबारी के बेहतर तरीक़ों का उपयोग करते थे। अनाज सुखाने और मांडने के यन्त्रों, खाद डालने के तरीक़ों और तरह तरह के उपकरणों का उपयोग – सभी कुछ अपनी ताक़त के बल पर करते थे। शुरू में किसानों ने उनका विरोध और बाद में हमारे उदाहरण का अनुकरण किया। अब, भूदास-प्रथा की समाप्ति से हमारी ताक़त छीन ली गयी और हमारी खेतीबारी को, जो ऊंचे स्तर पर थी, नीचे, बहुत ही पिछड़े और आदिम स्तर पर आना पड़ेगा। मैं तो ऐसा ही समझता हूं।

"लेकिन क्यों? अगर वह युक्तियुक्त ढंग की है, तो आप उजरती श्रम से उसे चला सकते हैं," स्वियाज्स्की ने कहा।

"अधिकार का ज़ोर नहीं रहा, जनाब। किसकी मदद से चलाऊंगा मैं खेतीबारी? मैं यह जानने की अनुमति चाहता हूं।"

"तो यह है श्रम-शक्ति, खेतीबारी का मुख्य तत्त्व," लेविन ने सोचा।

"मजदूरो की मदद से।"

"मजदूर लोग अच्छी तरह और अच्छे औजारो की मदद से काम नही करना चाहते। हमारा मजदूर सिर्फ एक ही चीज जानता है– नशे मे धुत हो जाना और पीकर वह सभी कुछ खराब कर डालना जो उसे दिया जाता है। घोडो को वेवक्त पानी पिलाकर मार डालेगा, अच्छे साज को तोड देगा, टायरवाले पहिये की जगह बिना टायर का ले आयेगा और बचे पैसो की शराब पी लेगा। अनाज माडने के यन्त्र मे कावला डाल देगा, ताकि उसे बिगाड दे। जो कुछ उसकी इच्छा के अनुसार नही होता, वह उसे फूटी आखो नही सुहाता। इसीलिये खेतीबारी का स्तर नीचा हो गया है। जमीने वेकार पडी है उन पर भाड-झखाड उग आये है या उन्हे किसानो के बीच बाट दिया गया है और जहा करोडो पूलो मे अनाज पैदा होता था, वहा अब लाखो मे होता है। देश की कुल दौलत कम हो गयी। अगर यह सभी कुछ सोच-समझकर किया जाता, तो

और वह भूदासो की मुक्ति की अपनी वह योजना बताने लगा, जिसके अन्तर्गत ये झझटे न पैदा होती।

लेविन को इसमे दिलचस्पी नही अनुभव हुई किन्तु जब उसने अपनी बात खत्म कर ली, तो लेविन उसकी पहली प्रस्थापना की ओर लौटा और स्वियाज्स्की को सम्बोधित तथा इस बात की कोशिश करते हुए कि वह अपना गम्भीर मत प्रकट करे कहा

"यह बात कि खेतीबारी का स्तर नीचा हो रहा है और यह कि खेत-मजदूरो के प्रति हमारे रवैये को ध्यान मे रखते हुए लाभदायक तथा युक्तियुक्त खेती करना सम्भव नही बिल्कुल सही है।"

"मुझे ऐसा नही लगता, स्वियाज्स्की ने गम्भीरता से आपत्ति की। "मुझे तो केवल यही प्रतीत हो रहा है कि हम खेतीबारी का सचालन करना नही जानते और भूदास-प्रथा के समय हम जिस तरह की खेती कर रहे थे उसका स्तर न केवल बहुत ऊचा, बल्कि बहुत नीचा था। हमारे यहा न खेतीबारी की मशीने है, न अच्छे घोडे है, न अच्छा प्रबन्ध है और न हम हिसाब-किताब ही रखना आता है। किसी भी भूस्वामी से पूछ लो वह तुम्हे यह नही बता पायेगा कि क्या लाभदायक है और क्या नही।

"मतलब यह कि इतालवी ढंग का बही-खाता रखा जाये,"
जमींदार ने व्यंग्यपूर्वक कहा। "किसी भी तरह का हिसाब-किताब क्यों
रखा जाये, मगर वे सब कुछ का सत्यानास ही कर देंगे, नफ़ा नहीं होगा।"
"सत्यानास क्यों कर देंगे? तुम्हारी माड़ने की घटिया-सी मशी
मशीन तोड़ सकते हैं, मगर मेरी भाप की मशीन को नहीं तोड़ें
रूसी घोड़े को, क्या कहते हैं उसे? पूंछ-घसीट नसल यानी जिसे पू
से घसीटकर चलाना पड़ता है, खराब कर सकते हैं, लेकिन फ्लैं
नसल के या कम से कम घोड़ा-गाड़ी में जुतनेवाले बड़े घोड़े ले आइये
उन्हें खराब नहीं कर सकेंगे। बाकी सभी चीज़ों के बारे में भी य
बात है। हमें अपने खेतीबारी के काम के स्तर को ऊपर उठाना चाहिये।"
"ऊपर उठाने के लिये हाथ-पल्ले कुछ हो भी तो, निकोला
इवानोविच! आपको तो कोई फ़िक्र नहीं, मगर मैं बड़े बेटे को विश्व
विद्यालय और छोटों को हाई स्कूल में पढ़ाने का खर्च उठाता हूं – मुझ
तो फ्लैंडर्स नसल के घोड़े न खरीदे गये।"
"इसके लिये बैंक है।"
"ताकि जो कुछ थोड़ा-बहुत अपने पास है, उसकी भी नीला
हो? नहीं, शुक्रिया आपका!"
"मैं इस बात से सहमत नहीं हूं कि खेतीबारी करने का स्त
और ऊपर उठाना चाहिये और ऐसा सम्भव भी है," लेविन बोला
"यह मेरा काम है, मेरे पास इसके लिये साधन भी हैं, मगर
कुछ भी नहीं कर पाया। नहीं जानता कि बैंक किसके लिये लाभदाय
हैं। कम से कम मैंने तो खेतीबारी के जिस भी काम में पैसा लगाय
उसी में नुकसान हुआ पशुओं में – नुकसान, मशीनों में – नुकसान।
"यह सोलह आने सही है," पकी मूछोंवाले ज़मींदार ने ख
शी से हंसते हुए इस बात की पुष्टि की।
"और मैं अकेला ही ऐसा नहीं हूं," लेविन कहता गया, "
युक्तियुक्त ढंग से खेतीबारी करनेवाले सभी भूस्वामियों का हवा
दे सकता हूं। कुछ इने-गिने अपवादों को छोड़कर सभी घाटे में खेती
का काम चला रहे हैं। तो आप ही बताइये कि क्या आपकी खे
मुनाफ़े में चल रही है?" लेविन ने पूछा और उसी क्षण विवाद
की नज़र में उस भय की वह क्षणिक झलक दिखाई दी, जो उसने

रखी थी, जब उसने स्वियाज्स्की के मस्तिष्क के मेहमानखाने से आगे जाना चाहा था।

कहना ही होगा कि लेविन ने यह सवाल पूछकर उचित काम नहीं किया था। गृह-स्वामिनी ने तो कुछ ही देर पहले चाय पीते समय उससे यह कहा था कि इस गर्मी मे उन्होंने हिसाब-किताब के एक जर्मन माहिर को मास्को से बुलाया था, जिसने पाच सौ रूबल लेकर उनके हिसाब-किताब की जाच की थी और यह पाया था कि खेतीबारी मे उनको तीन हजार से कुछ अधिक रूबलो का नुकसान हुआ है। उसे सही रकम याद नहीं थी, लेकिन जर्मन लेखापाल ने तो पाई-पाई तक का हिसाब जोड दिया था।

स्वियाज्स्की की खेती मे नफे की चर्चा चलने पर पकी मूछोवाला जमीदार मुस्करा दिया। वह सम्भवत यह जानता था कि उसके पड़ोसी और कुलीनो के मुखिया को क्या नफा हो सकता है।

"सम्भव है, लाभ न होता हो," स्वियाज्स्की ने उत्तर दिया। "यह केवल यही सिद्ध करता है कि या तो मैं बुरा प्रबन्धक हू या लगान की वृद्धि के लिये पूजी लगा रहा हू।"

"ओह, लगान!" लेविन बुरी तरह चिल्ला उठा। "हो सकता है कि यूरोप मे लगान हो, जहा जमीन उसपर लगाये गये श्रम से बेहतर हो गयी है, लेकिन हमारे यहा तो मेहनत करने से जमीन खराब होती है यानी जुताई-बुवाई से उसका उपजाऊपन कम किया जा रहा है। इसका मतलब हुआ कि लगान नहीं है।"

"लगान कैसे नहीं है? यह तो अर्थशास्त्र का एक नियम है।"

"तो हम नियम के बाहर हैं। लगान हमारे लिये कुछ भी स्पष्ट नहीं करता, बल्कि इसके विपरीत, उलझा देता है। आप मुझे यह बताये कि लगान का सिद्धान्त कैसे

"दही पीना पसन्द करेंगे? माशा, हमारे लिये यहा दही या झड़बेरिया भेज दो," उसने पत्नी को सम्बोधित किया। "इस साल झड़बेरिया काफी देर तक मिल रही है।"

और स्वियाज्स्की बहुत ही अच्छे मूड मे उठा तथा सम्भवत यह मानते हुए कि बातचीत वहीं खत्म हो गयी है, जहा लेविन को लगा कि वह शुरू ही हो रही है, वहा से हट गया।

अपने साथ बहस करनेवाले व्यक्ति के चले जाने पर लेविन ने यह सिद्ध करते हुए जमींदार के साथ बातचीत जारी रखी कि सारी मुश्किल इसी बात से पैदा होती है कि हम अपने मजदूरों के विशि लक्षणों और आदतों को नहीं जानना चाहते। लेकिन जमींदार उन सभी लोगों की तरह, जो अपने मौलिक ढंग से एकान्त में सोचने-विचारने के आदी होते हैं, दूसरों के विचारों को कठिनाई से ग्रहण करता था और अपने विचारों पर अड़ा रहता था। वह यही रट लगाये रहा कि रूसी किसान जानवर है उसे जानवरों की सी हरकत करना पसन्द है और उसका यह जानवरपन दूर करने के लिये कानूनी ताकत की जरूरत है, जो नहीं रही डंडे की जरूरत है, लेकिन हम ऐसे उदार हो गये कि हमने अचानक वकीलों और जेलखानों को हजारों सालों से चले आ रहे डंडे की जगह दे दी है। इन जेलों में सड़ते किसानों को बढ़िया शोरबा खिलाया जाता है और उनके लिये कई घन फुट हवा का प्रबन्ध किया जाता है।

"आप ऐसा क्यों सोचते हैं," लेविन ने फिर से विवाद के प्रश्न की ओर लौटने की कोशिश करते हुए कहा, "कि खेत-मजदूरों के प्रति ऐसा रवैया नहीं अपनाया जा सकता, जिसके अनुसार काम उत्पादनशील हो सके?"

"रूसी किसानों के मामले में ऐसा कभी नहीं हो सकेगा! कानूनी ताकत नहीं है" जमींदार ने जवाब दिया।

"नई परिस्थितियां कैसे पैदा की जा सकती हैं?" स्वियाज्स्की ने दही खाने और सिगरेट पीने के बाद फिर से विवाद करनेवालों के पास आकर कहा। "श्रम-शक्ति के बारे में सभी तरह के सम्भव रवैये स्पष्ट हो चुके हैं और उनका अध्ययन किया जा चुका है," उसने कहा। "बर्बरता का अवशेष – पारस्परिक अवलम्ब वाला आदिम कम्यून अपने आप ही खत्म होता जा रहा है भूदास-प्रथा को समाप्त किया जा चुका है केवल स्वतन्त्र श्रम बाकी रह गया है, उसके रूप सुनिश्चित और बने-बनाये हैं तथा उन्हें स्वीकार करना चाहिये। खेत-मजदूर, गैरनकदार और फार्मर – आप इस घेरे से बाहर नहीं जा सकते।"

"लेकिन यूरोप इन रूपों से सन्तुष्ट नहीं है।"

"मनुष्ट नही है और नये रूपो की खोज कर रहा है। सम्भवत वह खोज भी लेगा।"

"यही तो मैं भी कह रहा हू," लेविन ने जवाब दिया। "हम भी उनकी खोज क्यो न करे?"

"इसलिये कि यह तो रेलवे के निर्माण की विधियो का फिर से आविष्कार करने के समान बात होगी। वे विधिया सोच ली गयी है, हमारे सामने तैयार है।"

"लेकिन अगर वे हमारे अनुकूल नही बैठती, अगर वे बेतुकी है, तो?" लेविन ने प्रश्न किया।

और उसे स्वियाज्स्की की आखो मे फिर से डर की झलक मिली।

"हा, यह तो हम डीग हाकना चाहते है कि यूरोप जो कुछ ढूढ रहा है, हमने उसे खोज लिया है! मैं यह सब कुछ जानता हू, लेकिन माफी चाहता हू, आप वह सब जानते है, जो श्रम-सगठन के सिलसिले मे यूरोप मे किया गया है?"

"नही, बहुत कम।"

"यूरोप के सबसे सुलझे हुए दिमाग अब इस सवाल मे उलझ रहे है। शुल्से-डेलिच की प्रवृत्ति   फिर श्रम के प्रश्न पर यह ढेर सारा साहित्य, सबसे अधिक उदारवादी लासाल की धारा का मिलहाजेन प्रणाली – यह तो ठोस रूप भी ले चुकी है, जैसा कि आप सम्भवत जानते होगे।"

"मुझे इसका कुछ आभास है, मगर बहुत ही धुधला-सा।"

"नही, यह तो आप केवल ऐसे ही कह रहे है। आप यह सब मुझसे कुछ कम नही जानते हैं। जाहिर है कि मै समाजशास्त्र का प्रोफेसर नहीं हू, लेकिन मुझे इसमे दिलचस्पी महसूस हुई और अगर आपको भी सचमुच इसमे रुचि अनुभव होती है, तो आप भी इसका अध्ययन करें।"

"लेकिन वे लोग किस नतीजे पर पहुचे है?"

"क्षमा चाहता हू   "

जमीदार उठकर खडे हो गये और अपने मस्तिष्क के मेहमानखाने के पीछे झाकने की लेविन की बुरी आदत को फिर से बीच मे ही रोककर स्वियाज्स्की अपने मेहमानो को छोडने चला गया।

इस शाम को लेविन को महिलाओं के साथ असह्य ऊब अनुभव हुई। जैसा कि पहले कभी नहीं हुआ था, उसे यह विचार बहुत परेशान कर रहा था कि खेतीबारी के काम के बारे में वह जो असन्तोष अनुभव करता था, वह केवल उसी तक सीमित नहीं था, बल्कि सारे रूस में व्याप्त एक सामान्य रूप था और कोई ऐसी व्यवस्था करना, जिसके मुताबिक खेत-मजदूर वैसे ही काम करेंगे जैसे कि वे उस किसान के यहां काम करते हैं, जहां लेविन रास्ते में ठहरा था, सपना नहीं अपितु एक कार्यभार है, जिसका हल ढूंढना जरूरी है। लेविन को लगा कि यह कार्यभार पूरा किया जा सकता है और उसे इसकी कोशिश करनी चाहिये।

उसने महिलाओं को शुभरात्रि की कामना की और यह वादा किया कि अगला पूरा दिन भी उन्हीं के यहां बितायेगा, ताकि घोड़े पर सवार होकर उनके साथ सरकारी जंगल में हुए एक दिलचस्प भूस्खलन को देखने जा सके। सोने से पहले वह गृह-स्वामी के कक्ष में मजदूरी के प्रश्न से सम्बन्धित वे पुस्तकें लेने गया, जिनका स्वियाज्स्की ने उसे पढ़ने का सुझाव दिया था। स्वियाज्स्की का अध्ययन-कक्ष एक बहुत बड़ा कमरा था, जिसमें सभी ओर पुस्तकों से भरी अलमारियां रखी थीं और दो मेजें थीं। लिखने की एक बहुत बड़ी मेज तो कमरे के बीचोंबीच रखी थी और दूसरी गोल मेज पर विभिन्न भाषाओं में सितारे की शक्ल में लैम्प के चारों ओर पत्र-पत्रिकाओं के नवीनतम अंक सजे हुए थे। लिखने की मेज के करीब सुनहरे लेबल लगे दराजों वाला एक स्टैंड था, जहां सभी तरह की फाइलें रखी थीं।

स्वियाज्स्की ने किताबें निकालीं और झूलनेवाली आराम कुर्सी में बैठ गया।

"क्या देख रहे हैं आप?" उसने लेविन से पूछा, जो गोल मेज के करीब रुककर पत्रिकाओं को उलट-पलट रहा था।

"अरे हां, इसमें एक बहुत दिलचस्प लेख है," स्वियाज्स्की ने उस पत्रिका के बारे में कहा, जो लेविन हाथ में लिये था। "प्रतीत होता है," उसने रंग में आते हुए अपनी बात जारी रखी, "कि पोलैं

के विभाजन के लिये मुख्यत. फ्रेडरिक जिम्मेदार नही था। ऐसा प्रतीत होता है . ."

और उसने अपनी विशिष्ट स्पष्टता के साथ सक्षिप्त रूप मे इन नयी, बहुत महत्वपूर्ण और दिलचस्प चीजो की चर्चा की। इसके बावजूद कि लेविन के दिल-दिमाग पर खेतीबारी के सुप्रबन्ध का प्रश्न छाया हुआ था, वह अपने मेजबान की बाते सुनते हुए खुद से यह सवाल पूछ रहा था "इसके मन मे क्या चीज है? आखिर किसलिये, किसलिये उसे पोलैंड के विभाजन मे रुचि है?" स्वियाज्स्की की बात खत्म होने पर लेविन ने बरबस ही यह पूछा "तो क्या हुआ?" लेकिन हुआ कुछ भी नही था। केवल इतनी बात ही दिलचस्प थी – "ऐसा प्रतीत होता है।" लेकिन स्वियाज्स्की ने यह स्पष्ट नहीं किया और यह स्पष्ट करने की जरूरत भी नही समझी कि उसके लिये यह क्यो दिलचस्प था।

"मुझे उस चिड़चिड़े-से जमीदार मे बडी रुचि अनुभव हुई," लेविन ने गहरी सास लेकर कहा। "वह समझदार है और बहुत कुछ सच कह रहा था।"

"ओह, रहने दीजिये! वह ऐसे सभी लोगो की तरह दिल से भूदास-प्रथा का पक्का समर्थक है।"

"आप जिनके मुखिया है "

"हाँ लेकिन मैं इनकी दूसरी दिशा मे अगुवाई करता हू " स्वियाज्स्की ने हसते हुए कहा।

"मेरी सबसे ज्यादा दिलचस्पी की चीज यह है," लेविन ने कहा। "उसकी यह बात सही है कि हमारा कृषि-कार्य यानी हमारा युक्तियुक्त कृषि-सचालन सफल नही हो रहा केवल सूदखोरी के ढग की खेतीबारी, जैसी वह चुप्पे किस्म का जमीदार करता है, अथवा बहुत ही सीधे ढग की खेती गिरे चढती है। इसके लिये कौन दोषी है?"

"जाहिर है कि हम खुद ही। इसके अलावा यह भी सही नही है कि हमारा काम नही चल रहा है। वासील्चिकोव के यहा तो चल रहा है।"

"घोड़ों का फार्म "

"लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि आपको हैरानी किस बात

से हो रही है। किसानों के भौतिक और नैतिक विकास का स्तर इतना नीचा है कि उन्हें सम्भवतः उन सभी चीजों का विरोध करना चाहिये जो उनके लिये परायी है। यूरोप में युक्तियुक्त खेतीबारी इसलिये चल रही है कि किसान पढ़े-लिखे है। तो नतीजा यह निकलता है कि हमें यहां किसानों को तालीम देनी चाहिये – बस, बात खत्म।"

'लेकिन किसानों को तालीम दी कैसे जाये?"

किसानों को तालीम देने के लिये तीन चीजों की जरूरत है – स्कूल, स्कूल और स्कूल।'

मगर आपने तो खुद ही कहा है कि किसानों के भौतिक विकास का स्तर नीचा है। स्कूलों से भला कैसे मदद मिलेगी?"

सुनिये, आप मुझे बीमार को दी जानेवाली सलाहोंवाली बात की याद दिला रहे है। रोगी से कहा जाता है, 'आपको जुलाब की दवा की आजमाइश करनी चाहिये।' 'कर चुका, मामला और बिगड़ गया।' जोंकें लगवाइये।' 'लगवा चुका – मामला और भी बिगड़ गया।' तो फिर भगवान की माला जपिये।' 'जप चुका – मामला और भी ज्यादा बिगड़ गया।' हम दोनों का भी ऐसा ही हाल है। मैं कहता हूं अर्थशास्त्र – आप कहते है – मामला और बिगड़ जाएगा। मैं कहता हूं समाजवाद – आप कहते है – और भी बुरा। तालीम – तो और भी ज्यादा बुरी रहेगी।

फिर भी स्कूल क्या मदद करेंगे?'

किसानों में नयी ज़रूरतें पैदा कर देंगे।'

यह बात कभी भी मेरी समझ में नहीं आई।' लेविन ने [illegible] [illegible] हुए अपनी बात कही। किसानों की अपनी माली हालत देखते हुए [illegible] [illegible] कैसे मदद करेंगे? आप कहते है कि स्कूल और तालीम उनमें नयी ज़रूरतें पैदा कर देंगे। यह तो और भी बुरा होगा, क्योंकि [illegible] उन्हें पूरा करने में असमर्थ होंगे। [illegible] [illegible] और धार्मिक [illegible]

[illegible]

रोने के दौरे पडते है, सो उसका इलाज करवाना है।' मैंने पूछा कि वह बुढ़िया इसका कैसे इलाज करती है। 'बच्चे को मुर्गी के दरबे मे बिठाकर कोई टोना करती है।'"

"लीजिये, आपने तो खुद ही सब कुछ कह दिया! इसलिये कि वह बच्चे का इलाज करवाने को मुर्गी के दरबे मे न ले जाये, यह जरूरी है कि " स्वियाज्स्की ने प्रफुल्ल मुस्कान के साथ कहा।

"ओह नहीं!" लेविन ने भल्लाते हुए कहा। मेरे लिये यह इलाज किसानों का स्कूलों मे इलाज करने के बराबर है। किसान गरीब और अनपढ है – यह तो हम वैसे ही अच्छी तरह देख रहे है, जैसे देहाती औरत बच्चे को बीमार देखती है, क्योकि वह रोता-चिल्लाता है। लेकिन स्कूल गरीबी और निरक्षरता की मुसीबत को दूर करने मे कैसे मदद दे सकते है यह वैसे ही समझ मे नही आता जैसे यह कि मुर्गी के दरबे मे ले जाने से बच्चे की बीमारी कैसे दूर हो सकती है। जिस वजह से वह गरीब है, उस वजह को खत्म करने की कोशिश करनी चाहिये।"

"कम से कम इस मामले मे तो आप स्पेन्सर से जिसे इतना अधिक नापसन्द करते है, सहमत हो गये हैं। वह भी यही कहता है कि शिक्षा जीवन की बडी खुशहाली और आराम-सुविधा का उसके शब्दो मे, अक्सर नहाने-धोने का, परिणाम हो सकती है मगर पढने-लिखने की क्षमता का नही "

"तो मैं बहुत खुश हू या, इसके विपरीत बहुत नाखुश हू कि स्पेंसर के साथ सहमत हो गया। लेकिन यह बात तो मैं बहुत पहले से जानता हू। स्कूलों से कुछ फायदा नही होगा, बल्कि फायदा होगा ऐसी आर्थिक व्यवस्था से जिसके अन्तर्गत लोगों की माली हालत बेहतर होगी, उनके पास फुरसत का ज्यादा वक्त होगा और तब – तब स्कूल भी हो जायेंगे।

"फिर भी अब सारे यूरोप म स्कूल अनिवार्य हैं।

'और आप खुद तो कैसे स्पेंसर के साथ इस मामले मे सहमत है?" लेविन ने पूछा।

किन्तु स्वियाज्स्की की आखो म भय का भाव झलक उठा और उसने मुस्कराते हुए कहा

"अरे, वह बच्चे के इलाज वाली बात बड़ा बढ़िया थी! अपने अपने कानों से सुनी?"

लेविन ने महसूस किया कि इस व्यक्ति के जीवन और विचारों के बीच वह कभी सम्बन्ध-सूत्र नहीं खोज पायेगा। स्पष्टतः उसके लिये इस बात का कोई महत्त्व नहीं था कि उसका तर्क-वितर्क उसे किस नतीजे पर पहुंचाता है। उसे तो केवल तर्क-वितर्क की प्रक्रिया से ही मतलब था। उसका तर्क-वितर्क जब उसे अन्ध-गली में ले जाता था, तो उसे अच्छा नहीं लगता था। उसे यह पसन्द नहीं था और वह इससे बचता था तथा बातचीत को किसी सुखद और मधुर दिशा में मोड़ ले जाता था।

उस किसान द्वारा, जिसके यहां लेविन रास्ते में ठहरा था, मन पर छोड़ गये प्रभाव सहित, जो मानो आज के सभी प्रभावों और विचारों का आधार बना, आज की सारी छापों ने लेविन को बहुत बेचैन कर दिया। यह प्यारा स्वियाज्स्की, जो केवल सामाजिक उपयोग के लिये अपने विचार संचित करता था और सम्भवतः अपने जीवन में लेविन के लिये रहस्य बने रहे किन्हीं दूसरे सिद्धान्तों से निर्देशित होता था, और फिर भी भीड़ का अंग होते हुए ऐसे विचारों से जन-मत को संचालित करता है, जिनमें खुद विश्वास नहीं रखता; वह भन्नाया हुआ जमींदार, जो जीवन की यातनाओं से निचोड़े गये अपने तर्क-वितर्क के मामले में बिल्कुल सही है, किन्तु एक पूरे वर्ग, सो भी रूस के सबसे अच्छे वर्ग के प्रति अपने क्रोध की दृष्टि से सही नहीं है, अपने कार्यकलापों से असन्तोष और इन सारी समस्याओं का कोई हल पा जाने की अस्पष्ट आशा – यह सभी कुछ आन्तरिक बेचैनी और समाधान की प्रत्याशा की निकटता में घुल-मिल गया।

अपने कमरे में अकेला रह जाने और स्प्रिंगदार गद्दे पर लेट जाने के बाद, जो हाथ या पांव को जरा हिलाने-डुलाने पर अचानक उछल पड़ता था, लेविन देर तक नहीं सो पाया। स्वियाज्स्की ने बेशक बहुत कुछ कहा था, मगर उसकी एक भी बात में लेविन को दिलचस्पी महसूस नहीं हुई। हां, जमींदार की दलीलें ध्यान देने के योग्य थीं। लेविन को बरबस ही उसके सब शब्द याद हो आये और अपनी कल्पना में वह उसको दिये गये अपने जवाबों को सही करने लगा।

"हां, मुझे उससे कहना चाहिये था – आपका कहना है कि हमारा खेतीबारी का धंधा इसलिये सफल नहीं हो रहा है कि किसान को किसी भी तरह का सुधार फूटी आखो नहीं सुहाता और यह कि ऐसे सुधारो को जबर्दस्ती लागू करना चाहिये। लेकिन अगर इन सुधारो के बिना खेतीबारी बिल्कुल ही न चलती हो, तब तो आपकी बात सही हो सकती थी। मगर वह चल रही है और केवल वही सफल हो रही है, जहा खेत-मजदूर अपनी आदतों के मुताबिक काम करता है, जैसा कि आधे रास्तेवाले बूढे के यहा। खेतीबारी के सम्बन्ध मे हमारा-तुम्हारा साझा असन्तोष यह सिद्ध करता है कि या तो हम या फिर खेत-मजदूर इसके लिये दोषी है। हम श्रम-शक्ति की प्रकृति की ओर कोई ध्यान दिये बिना बहुत अर्से से अपने, यूरोपीय ढग से जोर लगा रहे हैं। आइये, श्रम-शक्ति को आदर्श श्रम-शक्ति न मानकर उसकी सहज प्रवृत्तियों के साथ रूसी दहकान मान ले और इसके मुताबिक अपनी खेतीबारी को शक्ल दे। आप कल्पना करे," मुझे उससे कहना चाहिये था, "कि आपके यहा खेतीबारी का धधा वैसे ही चलता है, जैसे उस बूढे के यहा, कि आपने काम की सफलता मे मजदूरो को दिलचस्पी पैदा करने का साधन और सुधारो के मामले मे बीच का वह रास्ता भी ढूढ लिया है, जिसे वे स्वीकार करते हैं, तो आप भूमि का उपजाऊपन कम किये बिना पहले की तुलना मे दुगुनी, तिगुनी फसल पायेगे। उसे आधा-आधा बाट लीजिये, आधी फसल मजदूरो को दे दीजिये और जो हिस्सा आपके पास रह जायेगा, वह पहले से ज्यादा होगा और मजदूरो को भी ज्यादा उपज मिलेगी। ऐसा करने के लिये खेतीबारी के ढग के स्तर को नीचे लाना चाहिये और उसकी सफलता मे मजदूरो की रुचि पैदा करनी चाहिये। ऐसा कैसे किया जाये – यह तफसीलो की बात है, किन्तु निश्चय ही ऐसा करना सम्भव है।"

इस विचार से लेविन बहुत उत्तेजित हो उठा। इस विचार को अमली शक्ल देने की तफसीलो पर चिन्तन करते हुए उसे आधी रात तक नीद नही आई। उसका अगले दिन यहा से जाने का कोई ख्याल नही था, लेकिन अब उसने यह तय कर लिया कि तडके ही घर को चल देगा। इसके अलावा फ्राक पर नीची काट वाली यह साली भी उसके दिल मे शर्म और कोई बुरी हरकत करने के लिये पश्चाताप,

गा भाव पैदा करती थी। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि उसे इस भी देर किये बिना जाना चाहिये था, मशीन के गेहूं की बुवाई के पहले किसानो के सामने अपनी योजना रखनी चाहिये थी, ताकि वे नये आधारों पर बुवाई करें। उसने खेतीबारी के अपने पहले ढग को पूरी तरह से बदल डालने का निर्णय कर लिया था।

(२६)

लेविन की योजना को व्यावहारिक रूप देने मे कई कठिनाइयां थी। किन्तु उसने यथाशक्ति सघर्ष किया और यद्यपि जो चाहता था, वह प्राप्त नही कर सका तथापि जितनी सफलता उसे मिली, उसने अपने को धोखा दिये बिना वह ऐसा विश्वास कर सकता था कि यह कार्य मेहनत करने के लायक है। एक सबसे बड़ी कठिनाई यह थी कि खेतीबारी का काम पहले से ही चल रहा था, कि सब कुछ रोककर फिर से सारा काम शुरू करना सम्भव नही था और चालू मशीन को सुधारने की जरूरत थी।

घर लौटकर उसी शाम को जब उसने कारिन्दे को अपनी योजना बतायी, तो वह स्पष्ट सन्तोष के साथ लेविन के विचारों के उस भाग से सहमत हो गया, जो यह जाहिर करता था कि अब तक जितना कुछ किया गया है वह सब बेतुका और घाटे का काम है। कारिन्दे ने कहा कि वह बहुत पहले से ऐसा कह रहा है, कि उसकी बात पर कोई कान नही देना चाहता था। जहा तक लेविन के इस सुझाव का सम्बन्ध था कि वह खेतीबारी के सारे काम मे मजदूरो के साथ हिस्सेदार के रूप मे भाग ले, तो कारिन्दे ने इस सिलसिले मे केवल बड़ी उदासीनता दिखाई तथा कोई निश्चित राय जाहिर नही की, बल्कि उसी समय अगले दिन राई के बाकी पूले ले जाने और दोहरी जुताई के लिये लोगो को भेजने की चर्चा करने लगा। चुनांचे लेविन ने महसूस किया कि इस वक्त उसे उसकी योजना के बारे मे सोचने की फुरसत नही है।

किसानो के साथ इस बात की चर्चा करने और नयी शर्तों पर उन्हे खेती के लिये जमीन देने का सुझाव प्रस्तुत करने पर उसे इसी मुख्य कठिनाई से दो-चार होना पड़ा कि वे चालू काम मे बहुत अधिक

व्यस्त थे और उन्हें इस सुझाव के नफे-नुकसान के बारे में सोचने का तनिक अवकाश नहीं था।

भोला-भाला किसान इवान तो मानो लेविन के सुझाव को पूरी तरह समझ गया कि वह पशु-पालन से होनेवाले नफे मे अपने परिवार सहित भाग पा सकेगा और उसने इसका पूरा समर्थन किया। किन्तु जब लेविन उसे भावी लाभो के बारे मे समझाने लगा, तो इवान के चेहरे पर घबराहट झलक उठी और उसने अफसोस जाहिर किया कि उसकी पूरी बात नही सुन सकता। वह कोई ऐसा काम ढूढ लेता था, जिसे टालना मुमकिन नही होता था – पाचे से घास को स्टाल से बाहर करने लगता या नाद मे पानी भरने अथवा गोबर साफ करने लगता।

किसानो का यह दृढ विश्वास दूसरी कठिनाई था कि उन्हे अधिक से अधिक लूटने-निचोडने के अतिरिक्त ज़मीदार का और कोई उद्देश्य हो ही नही सकता। उन्हे इस बात का पक्का यकीन था कि उसका असली उद्देश्य (वह उनसे चाहे कुछ भी क्यो न कहे) हमेशा वह होगा, जो वह उनसे नही कहेगा। वे खुद अपने विचार प्रकट करते हुए बहुत कुछ कहते थे, लेकिन कभी वह नही बताते थे, जो उनका असली उद्देश्य होता था। इसके अलावा (लेविन अनुभव करता था कि चिडचिडा ज़मीदार सही था) किसान किसी भी तरह के समझौते के लिये पहली और अनिवार्य शर्त यह पेश करते थे कि उन्हे खेतीबारी के किसी भी तरह के नये तरीको और नये उपकरणो-यन्त्रो के उपयोग के लिये विवश न किया जाये। वे इस बात से सहमत थे कि लोहे के हल से ज्यादा अच्छी जुताई होती है, कि द्रुत-जुताई-यन्त्र अधिक सफलतापूर्वक काम करता है, किन्तु इस बात के हजारो बहाने ढूढ निकालते थे कि वे उनका उपयोग क्यो नही कर सकते। यद्यपि लेविन को यह विश्वास हो चुका था कि खेतीबारी के ढग का स्तर नीचा करना होगा, तथापि उसे उन सुधारो से इन्कार करते हुए अफसोस होता था, जिनका लाभ इतना स्पष्ट था। किन्तु इन कठिनाइयो के बावजूद उसने अपने मन की बात पूरी की और पतझर आते न आते मामला ढग से चल पडा या कम से कम उसे ऐसा प्रतीत हुआ।

शुरू मे लेविन ने सारा फार्म, जैसे वह था वैसे ही कि-

तरह-तरह के बहाने बनाकर इस जमीन पर पशुशाला और पक्की बनाने का काम, जो उनके साथ तय किया गया था, टाल देते और इसे जाडे तक लटकाते चले गये।

यह सही है कि शुरायेव ने सब्जियो के जो बगीचे लिये थे, उन्हे छोटे-छोटे टुकडो मे किसानों को किराये पर देना चाहा। उसने स्पष्टत उन शर्तों को, जिन पर जमीन दी गयी थी, बिल्कुल गलत, लगता था कि जान-बूझकर गलत ढग से समझा था।

यह सही है कि किसानो से बातचीत करते और उन्हे धधे के सभी लाभ समझाते हुए लेविन अक्सर यह महसूस करता था कि किसान उसकी आवाज के उतार-चढाव को ही सुन रहे है और यकीनी तौर पर यह जानते हैं कि वह चाहे कुछ भी क्यो न कहे, वे उसके झासे मे आनेवाले नही हैं। सबसे ज्यादा समझदार किसान रेजुनोव से बात करते हुए वह विशेषत ऐसा अनुभव करता था। उसे रेजुनोव की आखो मे वह चमक दिखाई देती, जो लेविन पर व्यग्य-सा करती होती और साथ ही यह दृढ विश्वास प्रकट करती कि अगर कोई धोखे के इस जाल मे फसेगा, तो वह रेजुनोव नही होगा।

इन सब चीजो के बावजूद लेविन को लग रहा था कि काम आगे बढ रहा है और कडाई से हिसाब-किताब रखते हुए तथा अपनी बात पर डटे रहकर वह उन्हे इस नये प्रबन्ध के भावी लाभ स्पष्ट कर देगा और तब काम अपने आप ही चल निकलेगा।

इन कामो और उसके पास बच रहे खेतीबारी के काम और साथ ही अध्ययन-कक्ष मे अपनी पुस्तक पर किये जानेवाले कार्य ने लेविन को गर्मी भर इतना व्यस्त रखा कि वह शिकार के लिये लगभग गया ही नही। अगस्त के अन्त मे ओब्लोन्स्की परिवार का एक नौकर जीन वापस लाया और उसी से लेविन को यह पता चला कि वे लोग मास्को वापस चले गये है। उसने अनुभव किया कि डौली के पत्र का उत्तर न देकर, अपनी इस अशिष्टता मे, जिसको वह शर्म से लाल हुए बिना याद नही कर सकता था, उसने अपना मामला पूरी तरह चौपट कर लिया है और वह अब कभी उनके यहा नही जायेगा। स्वियाज्की परिवार के साथ भी उसने ऐसा ही व्यवहार किया था, उनसे विदा लिये बिना ही वहा से चला आया था। लेकिन उनके यहा भी वह कभी

जायेगा। उसे अब इसमें कोई फर्क नहीं पड़ता था। अपने कर्म को नये ढंग से कार्यान्वित करने के काम में उसे इतनी अधिक दिलचस्पी महसूस हो रही थी जितनी कभी किसी चीज में नहीं हुई थी। उसने स्वियाज्स्की द्वारा दी गयी किताबों को, और उसके पास जो किताबें नहीं थीं उन्हें मंगवाकर पढ़ा, राजनीतिक अर्थशास्त्र की और समाजवादी किताबों को पढ़ा, जैसी कि आशा थी, उसे उनमें कुछ भी ऐसा नहीं मिला जो उसके काम से सम्बन्ध रखता हो। राजनीतिक अर्थशास्त्र की किताबों में, उदाहरणार्थ मिल्ल की किताबों में, जिन्हें उसने बड़े जोश के साथ यह आशा करते हुए सबसे पहले पढ़ा कि किसी भी क्षण अपने सामने प्रस्तुत समस्याओं का समाधान पा जायेगा, उसे यूरोपीय खेतीबारी की स्थिति से उद्भूत नियम ही मिले। लेकिन यह बात किसी भी तरह उसकी समझ में नहीं आई कि ये नियम, जो रूस पर लागू नहीं होते थे, सबके लिये सामान्य क्यों हैं। समाजवादी पुस्तकों में भी उसे ऐसा ही नजर आया। वे या तो सुन्दर कल्पनायें थीं, जिन्हें व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकता था और जिनकी ओर वह विद्यार्थी-जीवन में आकृष्ट हुआ था, या फिर यूरोप में विद्यमान स्थिति को, जो रूसी खेतीबारी की स्थिति से बिल्कुल भिन्न थी, सुधारने अथवा उसमें पैबन्द लगाने का प्रयत्न करती थीं। राजनीतिक अर्थशास्त्र यह कहता था कि जिन नियमों के अनुसार यूरोप का धन बढ़ा है और बढ़ रहा है, उन नियमों का सार व्यापक और सन्देहहीन है। समाजवादी शिक्षा यह कहती थी कि इन नियमों के अनुसार विकास विनाश की ओर ले जाता है। दोनों में से कोई भी तो न केवल इस बात का उत्तर, बल्कि यह संकेत तक नहीं देता था कि वह, लेविन, और रूस के सभी किसान तथा भूस्वामी अपने करोड़ों हाथों और हेक्टरों का क्या करें, ताकि वे देश की सामान्य समृद्धि के लिये अधिकतम उत्पादनशील बन सकें।

अब जब उसने यह काम करने का बीड़ा उठा ही लिया था तो उसने इस विषय से सम्बन्धित सारी सामग्री को बहुत मन लगाकर पढ़ा और पतझर में विदेश जाकर वहां इस सिलसिले में और बहुत कुछ पढ़ने का इरादा बनाया, ताकि इस मामले में उसके साथ वह न हो, जो अक्सर दूसरे मामलों में हुआ था। कई बार ऐसा हुआ था कि

अपने साथ बात करनेवाले के विचारों को वह समझने और अपने विचार प्रकट ही करने लगता था कि अचानक उससे कहा जाता था "और बाउअमान, और जोन्स, और दुगुबुआ, और मिचेल्ली? आपने इनको नही पढ़ा है। पढ़िये – इन्होंने इस विषय का अच्छी तरह विवेचन किया है।"

लेविन को अब यह बिल्कुल स्पष्ट था कि बाउअमान और मिचेल्ली उसे कुछ भी नही बता सकते। उसे क्या चाहिये, वह यह जानता था। वह देख रहा था कि रूस में बढ़िया जमीनें है, बढ़िया श्रमिक है और कुछ हालतों में, जैसे कि आधे रास्तेवाले किसान के यहां जमीन और श्रमिक बहुत अधिक पैदावार देते है, किन्तु अधिकतर स्थितियों में जब यूरोपीय ढंग से पूंजी लगायी जाती है कम पैदावार होती है और ऐसा केवल इसलिये होता है कि मजदूर लोग अपने स्वाभाविक ढंग से काम करना चाहते है और अच्छा काम करते है कि उनका विरोध संयोगवश नही, बल्कि स्थायी है और उसकी जड़ें किसानों के चरित्र में निहित है। वह सोच रहा था कि रूसी लोग, जिनके भाग्य में खाली पड़ी हुई विस्तृत भूमि को सजग रूप से जोतना-बोना बदा था, उस समय तक उन जरूरी तरीकों से चिपके रहे, जब तक कि यह काम पूरा नही हो गया और खेतीबारी के ये तरीके इतने बुरे नही हैं, जितने कि आम तौर पर समझे जाते है। वह सैद्धान्तिक रूप से अपनी पुस्तक और अमली तौर पर अपनी कृषि-व्यवस्था से यह सिद्ध करना चाहता था।

(३०)

सितम्बर के अन्त में दूर की जमीन पर, जो किसानों के दल को साझी खेती के लिये दी गयी थी, पशुशाला बनाने के लिये लकड़ी पहुंच गयी और मक्खन बेचकर नफा बांट दिया गया। फार्म पर व्यवहारिक रूप से बहुत बढ़िया काम चल रहा था या कम से कम लेविन को ऐसा लग रहा था। इस सारे काम को सैद्धान्तिक रूप से स्पष्ट तथा अपनी रचना को समाप्त करने के लिये, जो लेविन की कल्पना की उड़ानों के अनुसार राजनीतिक अर्थशास्त्र में न केवल क्रान्ति ही

करेगी, बल्कि इस विज्ञान को पूरी तरह नष्ट करके एक नये-ज़मीन के प्रति किसानों के रवैये के-विज्ञान की नींव डालेगी, विदेश जाकर इस दिशा में किये गये सारे कार्य का अध्ययन तथा इस बात का विश्वसनीय प्रमाण प्राप्त करना ज़रूरी था कि वहां जो कुछ किया गया है वह ऐसा नहीं है, जिसकी ज़रूरत है। लेविन केवल गेहूं के बेचे जाने की राह देख रहा था, ताकि पैसे मिल जायें और तब वह विदेश चला जायेगा। किन्तु बारिश शुरू हो गयी, जिसने खेत में रह गयी फ़सल और आलुओं को नहीं बटोरने दिया, सभी काम-काज ठप्प कर दिये और गेहूं का बेचा जाना भी असम्भव बना दिया। रास्तों पर अथाह कीचड़ था, दो चक्कियां पानी की बाढ़ में बह गयीं और मौसम अधिकाधिक ख़राब होता जा रहा था।

३० सितम्बर को सुबह सूरज निकल आया और अच्छे मौसम की उम्मीद करते हुए लेविन पूरे मन से विदेश जाने की तैयारी करने लगा। उसने गेहूं को बोरियों में भर देने का आदेश दिया, कारिन्दे को पैसे लाने के लिये व्यापारी के पास भेजा और खुद घोड़ा-गाड़ी में बैठकर विदेश जाने के पहले फ़ार्म-सम्बन्धी अन्तिम हिदायतें देने चला गया।

सभी काम-काज निपटाकर और जल-धाराओं में तर होकर, जो कभी उसके चमड़े के कोट से गर्दन पर बह आती थीं और कभी उसके बूटों में, किन्तु बहुत खुश और भावनाओं में उमगता हुआ लेविन शाम को घर लौटा। शाम को मौसम और भी ज़्यादा ख़राब हो गया, पूरी तरह भीगी और कानों तथा सिर को झटकती हुई घोड़ी पर ओले तथा सख्त बर्फ़ की बौछार ऐसे चोट करती थी कि वह टेढ़ी होकर चल रही थी। किन्तु हुड के नीचे लेविन मज़े में था और वह खुशी से आसपास इर्द-गिर्द कभी पहियों की लीकों पर भागी जाती जल-धाराओं, कभी पातहीन शाखाओं पर लटकती पानी की बूंदों, कभी पुल के तख्ते पर अभी तक न पिघली सख्त बर्फ़ के सफ़ेद धब्बों और कभी नंगे एल्म वृक्ष के गिर्द गिरे हुए रसीले और अभी तक निखरे पत्तों की मोटी तह की ओर देखता। इर्द-गिर्द की प्रकृति के उदासी में डूबे होने के बावजूद वह अपने को विशेषतः उमंग में अनुभव कर रहा था। गांव के मर्द से किसानों से हुई बातचीत ने यह स्पष्ट कर दिया था कि

पने सम्बन्धों के अभ्यस्त होने लगे हैं। बूढे रखवाले ने, जिसके यहां विन अपने कपड़े सुखाने के लिये गया, स्पष्टत. लेविन की योजना । समर्थन किया और अपनी ही इच्छा से पशु खरीदने के एक साझे र्य में भाग लेने को कहा।

"मुझे बस, दृढता से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना चाहिये र मैं अपने उद्देश्य में सफल हो जाऊगा,' लेविन सोच रहा था, और काम तथा यत्न करने में कोई तुक है। यह मेरा निजी मामला ी वल्कि यहा सामान्य कल्याण का सवाल है। खेतीबारी का सारा ाम और मुख्यत सारी जनता की स्थिति में आमूल परिवर्तन होना ाहिये। गरीबी की जगह–सामान्य समृद्धि, खुशहाली, शत्रुता की गह–सहमति और हितों का ऐक्य। थोड़े में, रक्तहीन क्रान्ति, न्तु महानतम क्रान्ति, शुरू में हमारे छोटे-से जिले, फिर गुबेर्निया िर रूस और सारी दुनिया में। कारण कि न्यायपूर्ण विचार फलप्रद ा बिना नहीं रह सकता। हा, यह वह लक्ष्य है, जिसके लिये काम रने में कोई तुक है। यह कि मैं, कोस्त्या लेविन, वही व्यक्ति इसको रा कर रहा हू जो काली टाई लगाकर बॉल में गया था और कीटी चेर्बात्स्काया ने जिसका विवाह-प्रस्ताव ठुकरा दिया था तथा जो स्वय पनी दृष्टि म ऐसा दयनीय और तुच्छ बन गया था–यह सब कुछ ी सिद्ध नहीं करता। मुझे विश्वास है कि अपने बारे में याद करते ए फ्रैंकलिन ने भी खुद को ऐसा ही तुच्छ अनुभव किया होगा और से भी अपने पर ऐसे ही भरोसा नहीं हुआ होगा। किन्तु इससे कुछ नहीं सिद्ध होता। जरूर उसकी भी कोई अपनी अगाफ्या मिखाइलोव्ना रही होगी जिसे वह अपनी योजनायें बताता होगा।

ऐसे विचारों में डूबा हुआ लेविन अधेरा होने पर घर लौटा।

व्यापारी के पास गया हुआ कारिन्दा गेहू के मूल्य का एक भाग लेकर लौट आया था। बूढ़े रखवाले के साथ मामला तय कर लिया गया और कारिन्दे को रास्ते में यह पता चला कि सभी जगह फसले खेतों में खड़ी रह गयी और इसलिये दूसरों की तुलना में खेतों में पड़े हुए अपने १६० पूले कोई महत्त्व नहीं रखते थे।

शाम का भोजन करने के बाद लेविन हर दिन की तरह किताब लेकर आरामकुर्सी में बैठ गया और उसे पढते हुए पुस्तक

होगा, अगाफ्या मिखाइलोव्ना ने उठने और दरवाजे की ओर जाते हुए कहा। किन्तु लेविन उससे आगे निकल गया। उसका काम अब आगे नही बढ रहा था और वह किसी भी मेहमान के आने पर खुश था।

(३१)

भागते हुए आधी सीढिया उतर जाने पर लेविन को बाहरी बैठक मे खासी की जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी। किन्तु अपने पैरो की आवाज के कारण उसे वह साफ तौर पर सुनाई नही दी और उसे यह आशा थी कि उससे भूल हुई है। कुछ क्षण बाद उसे लम्बी और हड्डीली आकृति दिखाई दी और ऐसा प्रतीत हुआ कि अब अपने को धोखा देना मुमकिन नही था, फिर भी उसे आशा बनी रही कि वह भूल कर रहा और फर का कोट उतारने तथा खासने वाला यह लम्बा व्यक्ति उसका भाई निकोलाई नही है।

लेविन अपने भाई को प्यार करता था, मगर उसकी सगत हमेशा एक यातना होती थी। इस समय, जब लेविन अपने दिमाग मे आये विचारो और अगाफ्या मिखाइलोव्ना द्वारा उसी बात के याद दिलाये जाने के प्रभाव मे अस्पष्ट तथा उलझी-उलझायी मानसिक स्थिति मे था, भाई के साथ होनेवाली भेट विशेषत बोझिल प्रतीत हो रही थी। किसी प्रफुल्ल, स्वस्थ और पराये-से मेहमान की जगह, जो, जैसी कि उसने आशा की थी, उसकी इस मानसिक अस्पष्टता की स्थिति से किसी दूसरी तरफ उसका ध्यान मोड सकेगा, उसे अपने भाई से मिलना होगा, जो उसकी रग-रग को पहचानता है, जो उसकी आत्मा की गहराई मे छिपे भावो को भी अच्छी तरह जानता है और जो उसे उन्हे प्रकट करने को विवश कर देगा। वह ऐसा नही चाहता था।

मन मे ऐसी बुरी भावना आने के लिये स्वय अपने पर झल्लाता लेविन भगता हुआ ड्योढी मे गया। भाई को निकट से देखते ही व्यक्तिगत निराशा का यह भाव फौरन गायब हो गया और दया के भाव ने उसकी जगह ले ली। अपने दुर्बलपन और रोग के कारण भाई निकोलाई बेशक पहले भी भयानक लगता था, मगर अब तो वह और हाड-

हठीला और रोग-ग्रस्त दिख रहा था। वह तो त्वचा से ढका हुआ हड्डियों का ढाचा मात्र था।

अपनी लम्बी, दुबली-पतली गर्दन को भटकते और उस पर से मफलर उतारते तथा अजीब, दयनीय ढग से मुस्कराते हुए वह ड्योढी मे खडा था। उसकी यह शान्त और नम्र मुस्कान देखकर लेनिन को लगा कि उसका गला रुध रहा है।

"लो, मैं तुम्हारे पास आ गया," निकोलाई ने भाई के चेहरे को एकटक देखते हुए घुटी-सी आवाज मे कहा। मैं बहुत समय से ऐसा करना चाहता था, मगर मेरा स्वास्थ्य अच्छा नही रह रहा था। अब तो मैं बहुत अच्छा हो गया हू,' अपनी बडी-बडी और दुबली दुबली हथेलियो से दाढी को साफ करते हुए उसने कहा।

"हा, हा!" लेविन ने जवाब दिया। और भाई को चूमते समय जब उसने अपने होठो से उसके शरीर के खुरदरेपन को अनुभव किया तथा उसकी बडी और अजीब ढग से चमकती आखो को निकट से देखा, तो उसे और भी अधिक भय की अनुभूति हुई।

लेविन ने कुछ हफ्ते पहले भाई को लिखा था कि उसके घर मे सम्पत्ति का जो अविभाजित भाग रह गया था, उसे बेच देने के फलस्वरूप अब निकोलाई कोई दो हजार रूबल पा सकता है।

निकोलाई ने कहा कि अब वह यह रकम लेने और मुख्यत तो अपने घोसले मे कुछ समय बिताने और अपनी धरती को छूने के लिये ताकि पुराने जमाने के सूरमाओ की तरह निकट भविष्य मे किये जाने-वाले अपने कार्यकलापो के लिये शक्ति बटोर सके, यहा आया है। भाई की पीठ के और झुक जाने तथा उसके लम्बे कद को ध्यान मे रखते हुए अत्यधिक दुबलेपन के बावजूद उसकी गतिविधियो मे पहले की सी फुरती और फुर्तीलापन था। लेविन उसे अपने अध्ययन-कक्ष मे ले गया।

भाई ने बडी सावधानी से कपडे बदले, जैसा कि वह पहले नही करता था, अपने सीधे, विरले बालो को सवारा और मुस्कराते हुए ऊपर चला गया।

भाई बहुत ही स्नेहपूर्ण और प्रसन्नता की मुद्रा मे था, जैसा कि लेविन उसे अक्सर बचपन मे देखा करता था। उसने भाई सेर्गेई इवानो

विच कोज्निशेव का भी किसी प्रकार की कटुता के बिना उल्लेख किया। अगाफ्या मिखाइलोव्ना से मुलाकात होने पर उसने उसके साथ हंसी-मजाक किया और पुराने नौकरों के बारे में पूछ-ताछ की। पारफ़ेन देनीसिच की मौत की खबर का उसपर बुरा असर पड़ा। उसके चेहरे पर भय झलक उठा, मगर वह जल्द ही सम्भल गया।

"*वह तो काफी बूढ़ा हो चुका था,*" उसने कहा और बातचीत का विषय बदल दिया। "तुम्हारे यहां एक-दो महीने रहने के बाद मास्को चला जाऊंगा। जानते हो, मुझे म्याग्कोव ने नौकरी दिलवाने का वचन दिया है और मैं सरकारी नौकरी करने लगूंगा। अब मैं अपनी ज़िन्दगी बिल्कुल दूसरे ही ढंग से चलाऊंगा," वह कहता गया। "जानते हो, मैंने उस औरत से पिंड छुड़ा लिया।"

"मारीया निकोलायेव्ना से? मगर क्यों, किसलिये?"

"ओह, वह बहुत ही बुरी औरत थी। बहुत-सी परेशानियां पैदा की उसने मेरे लिये।" लेकिन ये परेशानियां क्या थीं, उसने यह नहीं बताया। वह यह तो नहीं कह सकता था कि उसने इसलिये मारीया निकोलायेव्ना को भगा दिया था कि चाय हल्की बनाती थी और मुख्यतः इसलिये कि एक रोगी की तरह उसकी देखभाल करती थी। "फिर मैं तो वैसे ही अपनी ज़िन्दगी को बिल्कुल बदल डालना चाहता हूं। जाहिर है कि बाकी सभी लोगों की तरह मैंने भी बेवकूफ़ियां की हैं, लेकिन सम्पत्ति – यह तो सबसे तुच्छ चीज़ है और मुझे उसके लिये कोई अफ़सोस नहीं। बस, सेहत होनी चाहिये और भगवान की कृपा से मेरी सेहत अच्छी हो गयी है।"

लेविन सुन रहा था और यह सोच रहा था कि क्या कहे, मगर उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। शायद निकोलाई ने भी यह महसूस कर लिया। वह लेविन से उसके काम-काज के बारे में पूछ-ताछ करने लगा। लेविन को अपने बारे में बातचीत करके खुशी हो रही थी, क्योंकि वह ढोंग किये बिना अपनी बात कह सकता था। उसने भाई को अपनी योजनाओं और कार्रवाइयों के बारे में बताया।

निकोलाई सुनता रहा, मगर सम्भवतः उसे इन बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

इन दोनों व्यक्तियों के बीच इतना कुछ एक जैसा और इतनी

निकटता थी कि उनकी मामूली-सी गतिविधि, उनकी आवाज़ का अन्दाज़ ही उन्हें शब्दों की तुलना में कहीं कुछ ज़्यादा बता देता था।

इस समय इन दोनों के दिमाग़ों में एक ही विचार था – निकोलाई की बीमारी और उसकी निकट आती हुई मौत। यही विचार बाक़ी सब कुछ पर हावी था। लेकिन दोनों में से किसी को भी इसकी चर्चा करने की हिम्मत नहीं हो रही थी और इसलिये वे उस विचार को व्यक्त किये बिना, जो उनके दिल-दिमाग़ पर छाया था, जो कुछ भी कह रहे थे, सब झूठ था। लेविन को कभी इस बात की इतनी ख़ुशी नहीं हुई थी कि रात हो गयी थी और सोने का वक़्त हो गया था। कभी किसी अजनबी के साथ, किसी भी औपचारिक भेंट के समय वह इतना अस्वाभाविक और कृत्रिम नहीं रहा था, जितना आज। इस कृत्रिमता की चेतना और इसका पश्चाताप उसे और भी अधिक कृत्रिम बना देता था। उसका मन हो रहा था कि वह मौत के मुंह में जाते हुए अपने प्यारे भाई के लिये आंसू बहाये, मगर उसे इस बातचीत को सुनना और उसमें हिस्सा लेना पड़ रहा था कि वह कैसे अपनी जिन्दगी बितायेगा।

घर में चूंकि सीलन थी और केवल एक ही कमरा गर्माया गया था, इसलिये लेविन ने एक परदे के पीछे अपने ही कमरे में भाई के सोने की व्यवस्था की।

भाई बिस्तर पर चला गया और सोया या नहीं, लेकिन रोगी की तरह करवटें बदलता और खांसता रहा तथा जब खांसी का दौरा उसे बेहाल कर देता, तो कुछ बड़बड़ाता। कभी-कभी गहरी सांस लेने पर वह "हे मेरे भगवान" कहता। कभी-कभी जब बलगम न निकलने से उसका दम घुटने लगता, तो वह झल्लाकर 'ओह, शैतान!" कह उठता। लेविन उसे सुनता हुआ देर तक नहीं सो पाया। लेविन के दिमाग़ में तरह-तरह के ख़्याल आ रहे थे, मगर ये सभी ख़्याल एक ही चीज़ यानी मौत पर आकर ख़त्म होते थे।

मौत ही हर चीज़ का अनिवार्य अन्त है, यह बात पहली बार एक अदम्य शक्ति के रूप में उसके सामने आई। और यह मौत, जो ऊंघानींदी में आदत के मुताबिक़ सोचे-विचारे बिना कभी भगवान और कभी शैतान को याद करनेवाले उसके प्यारे भाई के भीतर बैठी

विन कोज्निशेव का भी [illegible] कहता के [illegible]
अगाफ्या मिखाइलोव्ना से मुलाकात होने पर उसने उसके साथ हंसी-मजाक किया और पुराने नौकरों के बारे में पूछ-ताछ की। पारफ्रेन देनीसिच की मौत की खबर का उसपर बुरा असर पडा। उसके चेहरे पर भय झलक उठा, मगर वह जल्द ही सम्भल गया।

"वह तो खासा बूढा हो चुका था," उसने कहा और बातचीत का विषय बदल दिया। "तुम्हारे यहा एक-दो महीने रहने के बाद मास्को चला जाऊगा। जानते हो, मुझे म्याग्कोव ने नौकरी दिलवाने का वचन दिया है और मैं सरकारी नौकरी करने लगूगा। अब मैं अपनी जिन्दगी बिल्कुल दूसरे ही ढग से चलाऊगा," वह कहता गया। "जानते हो, मैंने उस औरत से पिड छुडा लिया।"

"मारीया निकोलायेव्ना से? मगर क्यो, किसलिये?"

"ओह, वह बहुत ही बुरी औरत थी। बहुत-सी परेशानिया पैदा की उसने मेरे लिये।" लेकिन ये परेशानिया क्या थी, उसने यह नही बताया। वह यह तो नही कह सकता था कि उसने इसलिये मारीया निकोलायेव्ना को भगा दिया था कि चाय हल्की बनाती थी और मुख्यत इसलिये कि एक रोगी की तरह उसकी देखभाल करती थी। "फिर मैं तो वैसे ही अपनी जिन्दगी को बिल्कुल बदल डालना चाहता हू। जाहिर है कि बाकी सभी लोगो की तरह मैंने भी बेवकूफिया की है लेकिन सम्पत्ति – यह तो सबसे तुच्छ चीज है और मुझे उसके लिये कोई अफसोस नही। बस, सेहत होनी चाहिये और भगवान की कृपा से मेरी सेहत अच्छी हो गयी है।"

लेविन सुन रहा था और यह सोच रहा था कि क्या कहे, मगर उसे कुछ सूझ नही रहा था। शायद निकोलाई ने भी यह महसूस कर लिया। वह [illegible] मे पूछ-ताछ करने लगा।
[illegible] थी, क्योकि वह
भाई की आती
[illegible] बातो मे कोई
[illegible] और इतनी

निकटता थी कि उनकी मामूली-सी गतिविधि, उनकी आ
अन्दाज ही उन्हें शब्दों की तुलना में कहीं कुछ ज्यादा बता

इस समय इन दोनों के दिमागों में एक ही विचार था –
की बीमारी और उसकी निकट आती हुई मौत। यही विच
सब कुछ पर हावी था। लेकिन दोनों में से किसी को भी इस
करने की हिम्मत नहीं हो रही थी और इसलिये वे उस विचार
किये बिना, जो उनके दिल-दिमाग पर छाया था, जो कुछ
रहे थे, सब झूठ था। लेविन को कभी इस बात की इतनी
हुई थी कि रात हो गयी थी और सोने का वक्त हो गया
किसी अजनबी के साथ, किसी भी औपचारिक भेंट के समय
अस्वाभाविक और कृत्रिम नहीं रहा था, जितना आज। इस
की चेतना और इसका पश्चाताप उसे और भी अधिक कृ
देता था। उसका मन हो रहा था कि वह मौत के मुह में
अपने प्यारे भाई के लिये आसू बहाये, मगर उसे इस बात
सुनना और उसमें हिस्सा लेना पड़ रहा था कि वह कैसे अपन
बितायेगा।

घर में चूकि सीलन थी और केवल एक ही कमरा गम
था, इसलिये लेविन ने एक परदे के पीछे अपने ही कमरे में
सोने की व्यवस्था की।

भाई बिस्तर पर चला गया और सोया या नहीं लेवि
की तरह करवटें बदलता और खासता रहा तथा जब खासी
उसे बेहाल कर देता, तो कुछ बड़बड़ाता। कभी-कभी गह
लेने पर वह "हे मेरे भगवान" कहता। कभी-कभी जब
निकलने से उसका दम घुटने लगता, तो वह भल्लाकर
शैतान!" कह उठता। लेकिन उसे सुनता हुआ देर तक नहीं स
लेविन के दिमाग में तरह-तरह के ख्याल आ रहे थे, मगर
ख्याल एक ही चीज यानी मौत पर आकर खत्म होते थे।

मौत ही हर चीज का अनिवार्य अन्त है, यह बात पह
एक अदम्य शक्ति के रूप में उसके सामने आई। और यह
ऊघानींदी में आदत के मुताबिक सोचे-विचारे बिना कभी
और कभी शैतान को याद करनेवाले उसके प्यारे भाई के भ

थी अब उतनी दूर नहीं थी, जितनी उसे पहले प्रतीत होती थी। यह मौत उसके अपने भीतर भी थी – वह ऐसा अनुभव कर रहा था। अगर आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों या तीस साल बाद – क्या यह एक ही बात नहीं है? यह अनिवार्य मृत्यु क्या है, उसे न केवल यह मालूम ही नहीं था न केवल उसने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था बल्कि न तो ऐसा कर सकता था और न उसे ऐसा करने की जुर्रत ही हो सकती थी।

मैं काम कर रहा हूं, मैं कुछ करना चाहता हूं, लेकिन मैं यह भूल ही गया कि सब कुछ समाप्त हो जायेगा, कि मौत जैसी कोई चीज़ भी है।

वह झुका हुआ और घुटनों के गिर्द हाथ बांधे अंधेरे में पलंग पर बैठा था और दिमाग़ के तनाव के कारण सांस रोके सोच रहा था। लेकिन वह अपने दिमाग़ पर जितना अधिक ज़ोर डालता था, उसे उतना ही अधिक यह स्पष्ट होता जाता था कि निस्संदेह ऐसा हुआ है कि वास्तव में उसने जीवन की एक छोटी सी चीज़ की ओर ध्यान नहीं दिया उसे भूल गया कि मौत आयेगी और सब कुछ ख़त्म हो जायेगा कि कुछ भी शुरू करना बेकार था, कि इस मामले में कराहों का कोई वश नहीं चलता। हां, यह भयानक बात है, मगर है ऐसा ही।

मैं अभी ज़िन्दा हूं। अब क्या किया जाये, क्या किया जाये?' उसने हताशा से कहा। [illegible]

[illegible]

निकोलाई ने सिर्फ यही जवाब दिया होता "जानता हू कि मरनेवाला हू, लेकिन डरता हू, डरता हू!" अगर वे ईमानदारी से बात करते, तो इसके सिवा और कुछ न कहते। लेकिन ऐसे तो जीना मुमकिन नही और इसलिये कोन्स्तान्तीन ने वह करने की कोशिश की, जिसके लिये वह जीवन भर प्रयत्नशील रहा था और नही कर पाया था तथा जो, जैसा कि उसने देखा था बहुत-से लोग बडी अच्छी तरह से कर पाते थे और जिसके बिना जीना असम्भव था – मतलब यह कि उसने वह न कहने की कोशिश की जो सोचता था और उसे लगातार ऐसा अनुभव होता था कि यह बनावटी लगता है, कि भाई इस बनावट को अच्छी तरह पहचान रहा है और इस कारण खीझ रहा है।

तीसरे दिन निकोलाई ने लेविन को फिर से अपनी योजना बताने को कहा और न केवल उसकी आलोचना करने, बल्कि जान-बूझकर उसे कम्युनिज्म से गडबडाने लगा।

"तुमने केवल पराया विचार ले लिया है, लेकिन उसे बिगाड दिया है और तुम उसे वहा लागू करना चाहते हो, जहा वह लागू नही होता।"

"लेकिन मैं तुमसे कह रहा हू कि इसमे कुछ भी तो समान नही है। वे निजी सम्पत्ति, पूजी और उत्तराधिकार की न्यायशीलता से इन्कार करते हैं, मगर मैं इस मुख्य स्टिमुलस से इन्कार नही करता हू (लेविन को यह अच्छा नही लगता था कि वह ऐसे शब्दो का उपयोग करता था, किन्तु जब से वह अपने काम मे गहरी रुचि लेने लगा था, अनजाने ही अधिकाधिक गैररूसी शब्दो का इस्तेमाल करता था), केवल श्रम को नियमित करना चाहता हू।"

"यही, यही तो बात है। तुमने पराया विचार ले लिया, उसमे वह सब काट डाला जो उसकी जान है और अब यकीन दिलाना चाहते हो कि यह कुछ नया है," निकोलाई ने गुस्से से टाई-बधी अपनी गर्दन को झटकते हुए कहा।

"लेकिन मेरे विचार और उसके बीच कुछ भी सामान्य नही है "

"उसमे " गुस्से से आखे चमकाते और व्यग्यपूर्वक मुस्कराते हुए निकोलाई कह रहा था, "उसमे कम से कम, कैसे कहा जाये, ज्यामितिक सुन्दरता – स्पष्टता और सन्देहहीनता का सौन्दर्य है। सम्भव

ने यह महसूस करते हुए कि उसके बायें गाल की मास-पेशी लगातार फड़क रही है, कहा।

"तुम्हारी कोई आस्था नही थी और नही है, बल्कि तुम केवल अपने अहं को तृप्त करना चाहते हो।"

"अच्छी बात है और तुम मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो।"

"छोड़ देता हूं! पहले से ही मुझे ऐसा कर देना चाहिये था। जाओ तुम भाड़ में! बहुत पछता रहा हूं कि मैं यहा आया!"

बाद मे लेविन ने अपने भाई को शान्त करने की चाहे जितनी भी कोशिश क्यो न की, निकोलाई ने कुछ भी सुनना नही चाहा, यही कहता रहा कि उसे चले जाना चाहिये। कोन्स्तान्तीन ने अनुभव किया कि भाई के लिये जिन्दगी बोझ बन गयी है।

निकोलाई ने जाने की जब पूरी तैयारी कर ली, तो कोन्स्तान्तीन फिर से बनावटी ढंग से अनुरोध करने लगा कि अगर उसने किसी तरह उसके दिल को ठेस पहुंचायी हो, तो वह उसे क्षमा कर दे।

"ओह, अपने दिल का बड़प्पन दिखाना चाहते हो!" निकोलाई ने कहा और मुस्कराया। "अगर तुम अपने को सही साबित करना चाहते हो, तो मैं तुम्हे ऐसा करने की खुशी दे सकता हूं। तुम सही हो, लेकिन मैं तो फिर भी चला ही जाऊंगा!"

रवाना होने के पहले निकोलाई ने उसे चूमा और अजीब गम्भीरता से भाई की ओर देखकर अचानक कहा

"फिर भी मेरे बारे मे बुरा नही सोचना, कोस्त्या!" और उसकी आवाज़ काप गयी।

सिर्फ यही शब्द सच्चे दिल कहे गये थे। लेविन समझ गया कि इन शब्दो से उसका यह अभिप्राय था· "तुम देख रहे हो और जानते हो कि मेरी हालत बहुत खराब है और सम्भव है कि फिर कभी हमारी मुलाकात हो ही न पाये।" लेविन यह समझ गया और उसकी आंखे छलछला आईं। उसने फिर से भाई को चूमा, लेकिन कुछ कह नही पाया।

भाई के जाने के दो दिन बाद लेविन भी विदेश रवाना हो गया। रेलवे स्टेशन पर कीटी के चचेरे भाई, श्चेर्बात्स्की से लेविन की मुलाकात हो गयी और उसने उसे अपनी उदासी से बहुत हैरान किया।

"तुम्हें क्या हुआ है?" श्चेर्बात्स्की ने उससे पूछा।

"कुछ नहीं हुआ, वैसे दुनिया में खुश होने को कुछ खास तो है भी नहीं।"

"कुछ खास है भी नहीं? ग्र्युलुस-ब्युलुस जाने के बजाय तुम मेरे साथ पेरिस चलो तो। वहां देखना, कैसा मजा रहता है!"

"नहीं, मेरे लिये सब खत्म हो चुका है। मेरा मरने का वक्त आ गया है।"

"यह भी खूब रही!" श्चेर्बात्स्की ने हंसते हुए कहा। "मैंने तो शुरू करने की ही तैयारी की है।"

"हां, कुछ समय पहले तक मैं भी ऐसा ही सोचता था, लेकिन अब यह जानता हूं कि जल्द ही मर जाऊंगा।"

लेविन वही कह रहा था, जो पिछले कुछ समय से वास्तव में सोच रहा था। उसे हर चीज़ में केवल मौत दिखती थी या यही लगता था कि वह उसके निकट पहुंच रहा है। लेकिन उसने जो योजना बनायी थी, वह उसे अधिकाधिक अपनी ओर खींच रही थी। मौत आने तक उसे किसी तरह तो जिन्दगी काटनी थी। उसके लिये हर चीज पर अन्धेरा छा गया था, लेकिन इसी अन्धेरे के फलस्वरूप वह यह महसूस करता था कि इस अन्धेरे में उसे राह दिखानेवाली चीज़ सिर्फ उसका काम है और इसलिये अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरकर उसने इसी का दामन थाम लिया था और इसके साथ चिपका हुआ था।

चौथा भाग

(१)

कारेनिन पति-पत्नी एक ही घर में रहते जा रहे थे, हर दिन मिलते थे, मगर एक-दूसरे के लिये सर्वथा अजनबी थे। अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच कारेनिन ने पत्नी के साथ हर दिन मिलने का इसलिये नियम-सा बना लिया था कि नौकरों-चाकरों को किसी तरह के अनुमान लगाने का आधार न मिले, लेकिन वह घर पर दिन का भोजन करने से कन्नी काटता। व्रोन्स्की कारेनिन के घर नहीं आता था, किन्तु आन्ना उससे घर के बाहर कहीं मिलती थी और पति यह जानता था।

इन तीनों के लिये यह यातनापूर्ण स्थिति थी और अगर उन्हें इस बात की आशा न होती कि यह स्थिति बदल जायेगी, कि यह अस्थायी दुखद कठिनाई है, जो दूर हो जायेगी, तो इन तीनों में से कोई भी इसे एक दिन भी बर्दाश्त न कर पाता। कारेनिन को यह उम्मीद थी कि जैसे हर चीज का अन्त होता है, ऐसे ही आन्ना की भावनाओं का यह तूफान भी खत्म हो जायेगा, कि सभी इसके बारे में भूल जायेंगे और उसका नाम निष्कलंक ही रह जायेगा। आन्ना, जिस पर यह स्थिति निर्भर करती थी और जिसके लिये यह सबसे ज्यादा यातनाप्रद थी, इसे इसलिये सहन कर रही थी कि उसे न केवल आशा ही, बल्कि इस बात का दृढ़ विश्वास था कि बहुत जल्द यह सारी स्थिति सुलझ जायेगी, स्पष्ट हो जायेगी। वह निश्चय ही यह नहीं जानती थी कि कैसे यह उलझन सुलझेगी, मगर उसे पक्का यक़ीन

हा, हा। लगता है कि बिखरी दाढी वाले नाटे और गन्दे-मन्दे देहाती हटुए ने भुककर कुछ किया था और फिर अचानक फ़ासीसी में कुछ अजीब-से शब्द बोलने लगा था। हा, इसके अलावा तो सपने में और कुछ नही था,' उसने अपने आपसे कहा। "लेकिन वह इतना भयानक क्यो था?" उसे बडी सजीवता से पुन इस देहाती और उन अस्पष्ट फ़ासीसी शब्दो की याद हो आयी, जो इस देहाती ने कहे थे और उसे अपनी पीठ पर भय की भुरभुरी-सी अनुभव हुई।

"*यह क्या बकवास है!*' व्रोन्स्की ने सोचा और घडी पर नज़र डाली।

रात के साढे आठ बज चुके थे। उसने घण्टी बजाकर नौकर को बुलाया, जल्दी से कपडे पहने और बाहर आ गया। वह सपने के बारे में बिल्कुल भूल गया था और केवल इसी बात से व्यथित था कि उसे देर हो गयी थी। कारेनिन परिवार के घर के पास पहुचने पर उसने घडी देखी — नौ बजने में दस मिनट बाकी थे। ऊची, सकरी-सी बग्घी, जिसमे दो भूरे घोडे जुते थे, दरवाज़े के सामने खडी थी। उसने आन्ना की बग्घी को पहचान लिया। "वह मेरे यहा जा रही है," व्रोन्स्की ने सोचा, "और यही बेहतर भी होता। इस घर मे कदम रखना मुझे अच्छा नही लगता। *लेकिन जो भी हो, मैं छिप तो नहीं सकता,*" उसने अपने आपसे कहा और बचपन से आदी जैसे बन गये उस आदमी के अन्दाज़ में, जिसके लिये शर्म की कोई बात नही, वह अपनी स्लेज से निकलकर दरवाज़े के पास पहुचा। दरवाज़ा खुला और हाथ पर कम्बल डाले हुए दरबान ने बग्घी को बुलाया। व्रोन्स्की *यो तो छोटी-मोटी तफ़सीलो की ओर ध्यान देने का अभ्यस्त नहीं था,* फिर भी इस समय वह दरबान की नज़र मे आश्चर्य के उस भाव की अवहेलना न कर सका, जिससे उसने उसकी तरफ देखा। दरवाज़े के बीच व्रोन्स्की लगभग कारेनिन से टकरा गया। गैस की सीधी रोशनी काले टोप के नीचे कारेनिन के पीले, घसे हुए चेहरे और ओवरकोट की ऊदबिलाव की खाल वाले कालर के पीछे चमक रही सफेद टाई पर पड रही थी। ...रेनिन की निश्चल और बुझी-बुझी आखे व्रोन्स्की के चेहरे पर जम... ...ी ने सिर भुकाया और कारेनिन ने मानो होठो को चुमकारने ...ओर हाथ उठाया और आगे चला गया। व्रोन्स्की ने देखा

से परेशान हो रही हूं... नहीं, मैं नहीं कहूंगी! मैं तुमसे झगड़ा नहीं कर सकती। जब तुम पास नहीं होते हो। नहीं, मैं नहीं कहूंगी!

आन्ना ने अपने दोनों हाथ उसके कंधों पर रख दिये और देर तक उसे गौर से, खुशी भरी तथा साथ ही परखती नजर से देखती रही। जितने समय से उसने उसे नहीं देखा था, मानो उसकी कमी पूरी करते हुए वह उसे निहार रही थी। सभी मुलाकातों की भांति इस समय भी वह उसके बारे में अपनी कल्पना में बननेवाले चित्र की (जो कहीं बेहतर और वास्तव में असम्भव था) उसके साथ तुलना-मिलान कर रही थी, जैसा कि वह वास्तव में था।

(३)

तुम उससे मिले?" जब वे मेज के पास लैम्प के नीचे बैठ गये, तो आन्ना ने पूछा। "तो यह तुम्हें देर से आने की सजा मिली है।"

"लेकिन यह हुआ कैसे? उसे तो परिषद की बैठक में होना चाहिये था?"

"वह वहां गया था, लौट आया और अब फिर कहीं चला गया है। खैर, यह कोई बात नहीं। इसकी चर्चा नहीं करो। तुम कहां थे? राजकुमार के साथ ही?"

आन्ना को उसके जीवन की सभी तफसीलें मालूम थीं। उसने कहना चाहा कि वह सारी रात सो नहीं पाया था और इसलिये उसकी आंख लग गयी, लेकिन उसके भाव-विभोर और खुशी-भरे चेहरे को देखकर उसे लज्जा अनुभव हुई। इसलिये उसने कहा कि उसे राजकुमार की रवानगी के बारे में रिपोर्ट देने जाना था।

"तो अब तो यह सब खत्म हो गया? वह चला गया न?"

"शुक्र है भगवान का कि खत्म हो गया। तुम विश्वास नहीं करोगी कि मेरे लिये यह सब कितना असह्य था।"

"वह क्यों? आप सब जवान मर्दों की यही तो हर दिन की जिन्दगी है," उसने भौंहें चढ़ाकर कहा और मेज पर पड़ी हुई अपनी बुनाई को लेकर व्रोन्स्की की ओर देखे बिना उसमें से क्रोशिया छुड़ाने लगी।

[illegible]

हुआ था। तब वह भावी को तुष्टि मानता था, लेकिन सुख अभी अनेक वर्ष बाकी था। लेकिन अब वह ऐसा अनुभव करता था कि सुख पीछे रह गया है। वह बिल्कुल वैसी नहीं थी, जैसी कि उसने पहली बार देखने पर उसे अनुभव किया था। शारीरिक और भावनात्मक दोनों दृष्टियों से वह पहले की तुलना में बुरी हो गयी थी। वह मोटी गयी थी और जब उसने अभिनेत्री की बातें कीं, तो रोष के भाव ने उसके चेहरे को बिगाड़ कर दिया था। वह आन्ना की ओर ऐसे देख रहा था जैसे कोई व्यक्ति अपने द्वारा तोड़े और मुरझाये गये उस फूल को देखता है जिसमें वह मुश्किल से उस सौन्दर्य को देख पाता है जिसके कारण उसने उसे तोड़ा और नष्ट किया था। और फिर भी वह अनुभव कर रहा था कि जब उसका प्यार बहुत प्रबल था तब अत्यधिक इच्छा होने पर वह इस प्यार को अपने हृदय से निकाल सकता था किन्तु अब, जबकि इस क्षण की भांति उसे ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रति उसे प्यार की अनुभूति नहीं होती है वह जानता था कि उसके लिये आन्ना से अपना नाता तोड़ना सम्भव नहीं।

"हां, तो तुम मुझसे क्या कहना चाहते थे राजकुमार के बारे में? मैंने भूत को भगा दिया है, भगा दिया है" उसने इतना और कह दिया। इनके बीच ईर्ष्या को भूत कहा जाता था। "हां, तो तुमने राजकुमार के बारे में क्या कहना शुरू किया था? किसलिये तुम्हें इतनी अधिक परेशानी महसूस हुई?"

"ओह, बर्दाश्त के बाहर था!" अपने विचार के तार को जोड़ने की कोशिश करते हुए उसने कहा। 'उसे अधिक निकटता से जानने-

"हां, यह तो बताओ, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच से तुम्हारी कहां मुलाकात हुई?" अचानक उसकी आवाज कृत्रिम ढंग से गूंज उठी।

"दरवाजा लांघते वक्त।"

"और उसने ऐसे तुम्हारा अभिवादन किया?"

आन्ना ने अपना मुंह लम्बा-सा किया, आंखों को आधा मूंदा, चेहरे के भाव को झटपट बदला और हाथों को जोड़ लिया। व्रोन्स्की को सहसा आन्ना के सुन्दर चेहरे पर वैसा ही भाव दिखाई दिया, जिससे कारेनिन ने उसका अभिवादन किया था। व्रोन्स्की मुस्करा दिया और आन्ना उस गहरी तथा प्यारी हंसी के साथ खिलखिलाकर हंस दी, जो उसका एक प्रमुख आकर्षण था।

"मैं उसे समझने में बिल्कुल असमर्थ हूं," व्रोन्स्की ने कहा। "अगर देहात में तुम्हारे सब कुछ कह देने के बाद वह तुमसे नाता तोड़ लेता, अगर वह मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारता... लेकिन यह मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी स्थिति को वह कैसे सहन कर सकता है? वह यातना सहन करता है, इतना साफ नजर आता है।"

"वह?" उसने व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा। "वह बहुत खुश है।"

"किसलिये हम सब इतनी यातना सह रहे हैं, जबकि सब कुछ इतना अच्छा हो सकता था?"

"लेकिन वह यातना नहीं सह रहा है। क्या मैं उसे, उस झूठ को नहीं जानती हूं, जिससे वह परिपूर्ण है? कुछ भी अनुभव करते हुए क्या ऐसे रहना सम्भव है, जैसे वह मेरे साथ रहता है? वह कुछ नहीं समझता, कुछ अनुभव नहीं करता। जो व्यक्ति कुछ थोड़ा बहुत भी अनुभव करता है, क्या वह अपनी अपराधिनी बीवी के साथ एक ही घर में रह सकता है? क्या उसके साथ बातचीत करना सम्भव है? क्या निकटता दिखाते हुए उसे 'तुम' कहा जा सकता है?"

फिर से अनचाहे ही वह यह कहते हुए उसकी नकल उतारे बिना न रह सकी "तुम, ma chère, तुम, आन्ना!"

"वह मर्द नहीं, इन्सान नहीं, कठपुतला है! कोई यह नहीं जानता, मगर मैं जानती हूं। ओह, अगर उसकी जगह मैं होती, तो कभी की ऐसी, अपने जैसी स्त्री को मार डालती, उसके टुकड़े कर देती और उसे ma chère, आन्ना न कहती। वह इन्सान नहीं, मिनिस्टरी

है। वह यह नहीं ...

राया है, फालतू है नहीं, हम उसकी चर्चा नहीं करेंगे। "

ारी बात ठीक नहीं है, सही नहीं है, मेरी प्यारी," आन्ना करने का प्रयास करते हुए व्रोन्स्की ने कहा। "लेकिन हटाओ, बारे में बात नहीं करेंगे। मुझे यह बताओ कि तुम क्या करती तुम्हें क्या हुआ है? क्या बीमारी है तुम्हें और डाक्टर ने है?"

ा व्यंग्यपूर्ण खुशी से उसकी ओर देख रही थी। शायद उसे ुछ अन्य हास्यास्पद और घिनौने पक्ष याद आ गये थे और वह त करने के समय की प्रतीक्षा कर रही थी।

ल्न व्रोन्स्की ने अपनी बात जारी रखी

ारा अनुमान है कि यह बीमारी नहीं, बल्कि तुम्हारी गर्भ ति है। कब होगा वह?"

ना की आंखों में व्यंग्यपूर्ण चमक बुझ गयी, लेकिन एक दूसरी ने – जिसका अर्थ व्रोन्स्की नहीं जानता था और जिसमें दुख का ा पुट था – आन्ना के चेहरे के पहले वाले भाव का स्थान ा।

जल्द ही, जल्द ही। तुमने कहा था कि हमारी स्थिति यातनापूर्ण ि हमें इसका अन्त करना चाहिये। काश, तुम जान सकते कि ये यह कितनी बोझिल है, कि तुम्हें बिना रोक-टोक और खुलकर वर पाने के लिये मैं कौन-सी कीमत चुकाने को तैयार न हो जाती! द यातना न सहन करती और तुम्हें अपनी ईर्ष्या से यातना न . और जल्द ही यह हो जायेगा, मगर वैसे नहीं जैसे हम सोचते

और इस विचार से कि यह कैसे होगा, उसे खुद पर इतनी दया कि उसकी आंखों में आंसू छलक आये और वह अपनी बात जारी ख सकी। उसने लैम्प के नीचे अंगूठियों और गोरेपन से चमकता अपना हाथ व्रोन्स्की की आस्तीन पर रख दिया।

"यह वैसे नहीं होगा, जैसे हम सोचते हैं। मैं तुम्हें कुछ बताना ं चाहती थी, मगर तुमने मुझे मजबूर कर दिया है। जल्द, बहुत द यह सब समाप्त हो जायेगा और हम सभी, सभी को चैन मिल

"हां, यह तो बताओ, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच से तुम्हारी कहां मुलाकात हुई?" अचानक उसकी आवाज कृत्रिम ढंग से गूज उठी।

"दरवाजा लांघते वक्त।"

"और उसने ऐसे तुम्हारा अभिवादन किया?"

आन्ना ने अपना मुह लम्बा-सा किया, आखो को आधा मूदा, चेहरे के भाव को झटपट बदला और हाथो को जोड लिया। व्रोन्स्की को सहसा आन्ना के सुन्दर चेहरे पर वैसा ही भाव दिखाई दिया, जिससे कारेनिन ने उसका अभिवादन किया था। व्रोन्स्की मुस्करा दिया और आन्ना उस गहरी तथा प्यारी हसी के साथ खिलखिलाकर हस दी, जो उसका एक प्रमुख आकर्षण था।

"मैं उसे समझने मे बिल्कुल असमर्थ हू," व्रोन्स्की ने कहा। "अगर देहात मे तुम्हारे सब कुछ कह देने के बाद वह तुमसे नाता तोड लेता, अगर वह मुझे द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारता... लेकिन यह मेरी समझ मे नही आता कि ऐसी स्थिति को वह कैसे सहन कर सकता है? वह यातना सहन करता है, इतना साफ नज़र आता है।"

"वह?" उसने व्यग्यपूर्वक मुस्कराकर कहा। "वह बहुत खुश है।"

"किसलिये हम सब इतनी यातना सह रहे हैं, जबकि सब कुछ इतना अच्छा हो सकता था?"

"लेकिन वह यातना नही सह रहा है। क्या मैं उसे, उस झूठ को नही जानती हू, जिससे वह परिपूर्ण है? कुछ भी अनुभव करते हुए क्या ऐसे रहना सम्भव है, जैसे वह मेरे साथ रहता है? वह कुछ नही समझता, कुछ अनुभव नही करता। जो व्यक्ति कुछ थोडा बहुत भी अनुभव करता है, क्या वह अपनी अपराधिनी बीवी के साथ एक ही घर मे रह सकता है? क्या उससे साथ बातचीत करना सम्भव है? क्या नफरत छिपाते हुए उसे 'तुम' कहा जा सकता है?"

फिर से अनचाहे ही वह यह कहते हुए उसकी नकल उतारे बिना न रह सकी "तुम, ma chere, तुम, आन्ना!"

"वह मर्द नही, इन्सान नही, कठपुतला है! कोई यह नही जानता, मगर मैं जानती हू। और अगर उसकी जगह मैं होती, तो [illegible] की ऐसी, आन्ना जैसी स्त्री को मार डालती, उसके टुकडे कर देती [illegible] re, आन्ना न कहती। वह इन्सान नही, [illegible]

जायेगा तथा हमें और अधिक यातना नहीं सहनी पड़ेगी।"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा," व्रोन्स्की ने उसे समझते हुए कहा।

'तुमने अभी पूछा था कि कब होगा? बहुत जल्द। और मैं जिन्दा नहीं रह पाऊंगी। तुम मुझे टोको नहीं!" और उसने अपनी बात कहने की उतावली की। मैं यह जानती हूं और पक्की तरह जानती हूं – मैं मर जाऊंगी और बहुत खुश हूं कि मर जाऊंगी, खुद भी मुक्त हो जाऊंगी और तुम्हें भी मुक्त कर दूंगी।"

आन्ना की आंखों से आंसू बहने लगे। व्रोन्स्की अपनी बेचैनी को छिपाने की कोशिश करते हुए, जिसका जैसा कि उसे मालूम था, कोई आधार नहीं था मगर जिस पर वह काबू पाने में असमर्थ था, उसके हाथ की ओर झुककर उसे चूमने लगा।

"तो यह बात है, यह बेहतर होगा," जोर से व्रोन्स्की का हाथ दबाते हुए उसने कहा। "बस, यही, यही एक रास्ता बाकी है हमारे लिये।"

व्रोन्स्की ने सम्भलते हुए सिर ऊपर उठाया।

"कैसी बेतुकी बात है! कैसी बेसिर-पैर की बात कर रही हो तुम!"

"नहीं, यह सच है।"

"क्या, क्या सच है?"

"यही कि मैं मर जाऊंगी। मैंने सपना देखा है।"

"सपना?" व्रोन्स्की ने दोहराया और तुरत ही उसे अपने सपने में दिखनेवाला देहाती याद हो आया।

"हां, सपना," आन्ना ने कहा। 'बहुत पहले देखा था मैंने यह सपना। मुझे दिखाई दिया था कि मैं अपने सोने के कमरे में भागी गयी हूं, कि मुझे वहां से कुछ लेना था, कुछ जानना था, तुम जानते हो कि सपने में यह कैसे होता है," वह भय से आंखों को फैलाये हुए कहती जा रही थी, "और सोने के कमरे के कोने में मुझे 'कुछ' खड़ा-सा दिखाई दिया।"

"ओह, क्या बकवास है! कैसे यकीन किया जा सकता है ऐसी बात .."

लेकिन आन्ना ने अपने को टोकने नहीं दिया। वह जो कुछ कह रही थी, उसके लिये बहुत महत्त्वपूर्ण था।

"और वह 'कुछ' मुडा। मैंने देखा कि वह नाटा-सा और बडा भयानक देहाती है, जिसकी दाढी अस्त-व्यस्त है। मैंने भाग जाना चाहा, लेकिन वह एक बोरी पर झुककर उसमे हाथो से कुछ टटोलने लगा "

आन्ना ने यह दिखाया कि कैसे वह बोरी मे कुछ टटोल रहा था। उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी। व्रोन्स्की को अपना स्वप्न याद आ गया और उसे ऐसे ही भय की अनुभूति हुई।

"वह टटोल रहा था और 'र' वर्ण का फ्रासीसी अन्दाज मे उच्चारण करते हुए जल्दी-जल्दी बडबडाता जा रहा था 'Il faut le battre le fer, le broyer, le petrir '* मैंने डर के कारण जागना चाहा, जाग गयी लेकिन सपने मे ही जागी। मैंने अपने आपसे पूछा कि इसका क्या अर्थ है। हमारे नौकर कोरनेई ने कहा—'मालकिन, प्रसव मे चल बसेगी, प्रसव मे ' और मेरी आख खुल गयी "

"कैसी बेतुकी बात है, कैसी बेतुकी बात है।" व्रोन्स्की ने कहा, लेकिन उसे खुद यह महसूस हो रहा था कि उसकी आवाज़ मे विश्वास का बल नहीं है।

"खैर हटाओ, हम इस बारे मे बात नहीं करेंगे। घण्टी बजाओ मैं चाय लाने के लिये कह देती हू। जरा रुको, अब बहुत समय नहीं लगेगा, मैं "

लेकिन वह अचानक खामोश हो गयी। आन की आन मे उसके चेहरे का भाव बदल गया। शान्त, गम्भीर और सुखद एकाग्रता ने भय और घबराहट का स्थान ले लिया। व्रोन्स्की इस परिवर्तन का अर्थ नहीं समझ पाया। आन्ना अपने गर्भ मे नये प्राणी का हिलना-डुलना सुन रही थी।

---

* लोहे को ढालना चाहिये, कूटना और गूथना चाहिये। (फ्रासीसी)

अपने घर के दरवाजे पर व्रोन्स्की से भेंट होने के बाद कारेनिन पहले से बने हुए अपने इरादे के मुताबिक इतालवी ऑपेरा देखने चला गया। वह दो अंकों तक वहां बैठा रहा और जिनसे उसे मिलना था, मिल-जुल लिया। घर लौटने पर उसने ध्यान से खूंटी को देखा और वहां फौजी ओवरकोट न पाकर सदा की तरह अपने कमरे में चला गया। किन्तु हर दिन से भिन्न, वह बिस्तर पर न जाकर सुबह के तीन बजे तक अपने कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। पत्नी के प्रति क्रोध, जो लोक-लाज को ध्यान में नहीं रखना चाहती थी और अपने घर पर प्रेमी से न मिलने की एकमात्र शर्त को पूरा करने को तैयार नहीं थी, उसे चैन नहीं लेने दे रहा था। उसने उसकी मांग पूरी नहीं की, इसलिये उसे उसको सजा देनी और तलाक लेने तथा बेटे को छीनने की अपनी धमकी पूरी करनी चाहिये। वह इस मामले से सम्बन्धित सभी कठिनाइयां जानता था, लेकिन चूंकि उसने ऐसा करने की धमकी दी थी, इसलिये अब उसे पूरा करना चाहिये। काउंटेस लीदिया इवानोव्ना ने उसे संकेत कर दिया था कि उसकी स्थिति का यही सबसे अच्छा हल है और पिछले कुछ समय में तलाक की कानूनी व्यवस्था इतनी सुधर गयी है कि कारेनिन को औपचारिक कठिनाइयां दूर करना सम्भव प्रतीत हुआ। फिर मुसीबत तो कभी अकेली नहीं आती। गैररूसियों से सम्बन्धित मामले और जारायस्काया गुबेर्निया की सिंचाई के मसले को लेकर कारेनिन को दफ्तरी काम-काज में इतनी अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ा था कि पिछले कुछ समय से वह बेहद खीझा-खीझा रहा था।

वह रात भर नहीं सोया और सुबह होने तक बहुत ही द्रुत गति से बढ़ता हुआ उसका गुस्सा अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने और मानो गुस्से से लबालब भरा प्याला लेकर तथा डरता हुआ कि कहीं वह छलक न जाये, इस बात से डरता हुआ कि गुस्से के साथ वह शक्ति भी न जाती रहे, जो पत्नी से बात करने के लिये जरूरी थी, यह जानते ही कि वह जाग गयी है, उसके कमरे [illegible] हुआ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] सीखना? अगर आप इसी शब्द का उल्लेख करना चाहते हैं तो सीखना है प्रेमी के लिये पति और बेटे को छोड़ देना और पति के टुकड़ों पर जीना!

आन्ना ने सिर झुका लिया। उसने न केवल वह नहीं कहा, जो एक दिन पहले उसने अपने प्रेमी से कहा था कि वही उसका पति है और पति फालतू है, बल्कि उसे इसका ख्याल तक नहीं आया। वह उसके शब्दों की न्यायसंगतता को अनुभव कर रही थी और धीरे से उसने केवल इतना ही कहा

"आप मेरी स्थिति का उससे बुरा चित्रण नहीं कर सकते, जैसी कि मैं खुद उसे समझती हूं। लेकिन आप किसलिये यह सब कह रहे हैं?"

"किसलिये? किसलिये कह रहा हूं मैं यह?" वह उसी तरह गुस्से में कहता गया। "ताकि आप यह जान जायें कि शिष्टाचार निभाने के बारे में आपने मेरी इच्छा की अवहेलना की है और इसलिये मैं इस स्थिति को समाप्त करने के लिये जरूरी कदम उठाऊंगा।"

"वह तो वैसे ही जल्द, बहुत जल्द समाप्त हो जायेगी," आन्ना

* तथ्य का उल्लेख। (फ्रांसीसी)

ने जवाब दिया और निकट आती तथा अब वांछित मौत का ख्याल
आने पर फिर से उसकी आखे डबडबा आयी।
"तुम और तुम्हारे प्रेमी के मसूबो से कही पहले ही यह स्थिति
खत्म हो जायेगी। आपको केवल पशु-वासना की तृप्ति की जरूरत
है "

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच! मैं यह नही कहूगी कि यह आपके मन
का छोटापन है, लेकिन मरे हुए को मारना तो शिष्टता भी नही।
'हा, आपको केवल अपना ही ध्यान है, किन्तु उसकी यातना
मे, जो आपका पति था, आपकी कोई दिलचस्पी नही। आपको इससे
कोई फर्क नही पड़ता कि उसकी सारी जिन्दगी बरबाद हो गयी है
कि उसने बेहद या याद यादना सही है।
कारेनिन इतनी जल्दी-जल्दी बोल रहा था कि अक्षर गडबडा गये
और वह किसी तरह 'यातना' न कहकर आखिर 'यादना' ही कह
पाया। आन्ना को हसी और उसी क्षण शर्म आई कि ऐसे वक्त उसके
लिये हसी की भी कोई बात हो सकती है। पहली बार उसे क्षण भर
को उसके लिये सहानुभूति हुई उसने अपने को उसके स्थान पर अनुभव
किया और उसे उसपर दया आई। लेकिन वह उसे क्या कह सकती
थी क्या कर सकती थी? उसने सिर भुका लिया और खामोश रही।
वह भी कुछ समय तक चुप रहा और बाद में कुछ कम चिचियाती
रूखी आवाज में योही मुह मे आ जाने और कोई विशेष महत्त्व न
रखनेवाले शब्दो पर जोर देते हुए बोलता गया।
'मैं आपसे यह कहने आया था उसने कहा
आन्ना ने उसकी तरफ देखा। 'नही, यह मुझे ऐसे ही प्रतीत
हुआ था,' उसने उसके चेहरे का वह भाव याद करते हुए जब वह
'यातना' शब्द नही कह पाया था सोचा नही ऐसी धुधली-
धुधली आखो और आत्मतुष्टि वाला व्यक्ति क्या कुछ अनुभव कर
सकता है?'

"कुछ भी बदलना मेरे बस मे नही," वह फुसफुसाई।
'मैं आपसे यह कहने आया हू कि कल मास्को जा रहा हू और
इस घर मे अब नही लौटूगा। मेरे निर्णय के बारे में आपको वकील
से सूचना मिल जायेगी, जिसे मैं तलाक का मामला सौपूगा।' मेरा बेटा

"तलाक हमारे कानून के अन्तर्गत," उसने हमारे कानून के प्रति तनिक असन्तुष्टि व्यक्त करते हुए कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, इन परिस्थितियों में सम्भव है... रुको!" उसने दरवाजे में से भीतर झांकनेवाले अपने सहायक से कहा, लेकिन फिर भी उठा, उससे कुछ शब्द कहे और फिर अपनी जगह पर आ बैठा। "इन परिस्थितियों में – पति-पत्नी में से किसी के शारीरिक दृष्टि से असमर्थ होने पर, पांच साल तक खबर न मिलने, लापता हो जाने पर," उसने बालों से ढकी छोटी-सी उंगली को मोड़कर कहा, "इसके बाद परगमन (इस शब्द का उसने स्पष्ट प्रसन्नता के साथ उच्चारण किया)। उपविभाजन यह है। (वह अपनी मोटी-मोटी उंगलियों को मोड़ता गया, यद्यपि परिस्थितियों और उपविभाजनों का एक साथ वर्गीकरण सम्भव नहीं था) – पति या पत्नी की शारीरिक असमर्थता, इसके बाद पति या पत्नी का परगमन।" चूंकि सभी उंगलियां मोड़ी जा चुकी थीं, इसलिये उसने उन सभी को सीधा कर लिया और अपनी बात जारी रखी: "यह तो सैद्धान्तिक बात है, लेकिन मैं यह समझता हूं कि आपने इस मामले का व्यावहारिक रूप जानने के लिये मेरे पास आने की कृपा की है। इसलिये पहले की मिसालों को ध्यान में रखते हुए मुझे आपसे यह निवेदन करना है – जैसा कि मैं समझता हूं, शारीरिक असमर्थतायें नहीं हैं? खबर के बिना लापता होने का भी सवाल नहीं है?"

कारेनिन ने सहमति प्रकट करते हुए सिर भुकाया।

"तो नतीजा यह निकलता है – दम्पति में से किसी एक का परगमन और आपसी सहमति से अपराधी पक्ष का उद्घाटन और ऐसी सहमति की अनुपस्थिति में वस्तुगत अपराध-उद्घाटन। मुझे यह भी कहना होगा कि यह अन्तिम बात व्यवहार में बहुत कम पाई जाती है," वकील ने कहा और कारेनिन पर उडती-सी नज़र डालकर ऐसे खामोश हो गया, जैसे तमंचाफरोश तरह-तरह की पिस्तौलों का गुण-वर्णन करके ग्राहक के चुनाव की प्रतीक्षा करता है। लेकिन कारेनिन चुप रहा और इसलिये वकील कहता गया "मेरे ख्याल में तो आपसी सहमति का परगमन सबसे आम तथा समझदारी का व्यावहारिक रास्ता है। कम पढ़े-लिखे आदमी के सामने मैंने अपने को ऐसे अभिव्यक्त न किया होता," वकील ने कहा, "लेकिन मैं समझता हूं कि हमारे लिये यह सब स्पष्ट है।"

"तलाक हमारे कानूनों के मुताबिक," उसने हमारे कानूनों के बारे में ज़रा नापसन्दगी जाहिर करते हुए कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, इन परिस्थितियों में सम्भव है . . रुके रहो!" उसने दरवाज़े में से भीतर झांकनेवाले अपने सहायक से कहा, लेकिन फिर भी उठा, उससे कुछ शब्द कहे और फिर अपनी जगह पर आ बैठा। "इन परिस्थितियों में – पति-पत्नी में से किसी के शारीरिक दृष्टि से अक्षम होने पर, पांच साल तक पूरी तरह लापता हो जाने पर," उसने बालों से ढकी छोटी-सी उंगली को मोड़कर कहा, "इसके बाद परगमन (इस शब्द का उसने स्पष्ट प्रसन्नता के साथ उच्चारण किया)। उप-विभाजन ये हैं (वह अपनी मोटी-मोटी उंगलियों को मोड़ता गया, यद्यपि परिस्थितियों और उप-विभाजनों का एक साथ वर्गीकरण स्पष्टतः सम्भव नहीं था) – पति या पत्नी की शारीरिक अक्षमता, इसके बाद पति या पत्नी का परगमन।" चूंकि सभी उंगलियां मोड़ी जा चुकी थीं, इसलिये उसने उन सभी को सीधा कर लिया और अपनी बात जारी रखी "यह तो सैद्धान्तिक बात है, लेकिन मैं यह समझता हूं कि आपने इस मामले का व्यावहारिक रूप जानने के लिये मेरे पास आने की कृपा की है। इसलिये पहले की मिसालों को ध्यान में रखते हुए मुझे आपसे यह निवेदन करना है – जैसा कि मैं समझता हूं, शारीरिक अक्षमतायें नहीं हैं? खबर के बिना लापता होने का भी सवाल नहीं है?"

कारेनिन ने सहमति प्रकट करते हुए सिर झुकाया।

"तो नतीजा यह निकलता है – दम्पति में से किसी एक का परगमन और आपसी सहमति से अपराधी पक्ष का उद्घाटन और ऐसी सहमति की अनुपस्थिति में वस्तुगत अपराध-उद्घाटन। मुझे यह भी कहना होगा कि यह अन्तिम बात व्यवहार में बहुत कम पाई जाती है," वकील ने कहा और कारेनिन पर उड़ती-सी नज़र डालकर ऐसे खामोश हो गया, जैसे तमंचाफरोश तरह-तरह की पिस्तौलों का गुण वर्णन करके ग्राहक के चुनाव की प्रतीक्षा करता है। लेकिन कारेनिन चुप रहा और इसलिये वकील कहता गया "मेरे ख्याल में तो आपसी सहमति का परगमन सबसे आम तथा समझदारी का व्यावहारिक रास्ता है। कम पढ़े लिखे आदमी के सामने मैंने अपने को ऐसे अभिव्यक्त न किया होता" वकील ने कहा, "लेकिन मैं समझता हूं कि हमारे लिये यह सब स्पष्ट है।"

अपनी जगह पर लौटते हुए उसने चुपके से एक कीड़ा और पकड़ लिया। "गर्मी तक मेरे फ़र्नीचर की कैसी बुरी हालत हो जायेगी," उसने नाक-भौंह सिकोड़ते हुए सोचा।

"तो आप कुछ कह रहे थे " उसने कारेनिन को सम्बोधित किया।

"मैं आपको खत द्वारा अपने फैसले की खबर दे दूंगा," कारेनिन ने उठते और मेज़ थामते हुए कहा। कुछ देर चुप रहने के बाद वह बोला· "आपके शब्दों से मैं यह परिणाम निकाल सकता हू कि तलाक लेना सम्भव है। मैं आपसे अपनी शर्तें बता देने का भी अनुरोध करना चाहता हू।"

"अगर आप मुझे अपने ढंग से काम करने की छूट देंगे, तो सब कुछ सम्भव है," वकील ने कारेनिन के सवाल की अवहेलना करते हुए उत्तर दिया। "मैं कब आपका खत आने की उम्मीद कर सकता हू?" वकील ने दरवाज़े की तरफ बढ़ते और अपनी आंखें तथा पेटेंट के जूतों की चमक दिखाते हुए पूछा।

"एक हफ्ते बाद। आप जवाब में यह लिख भेजने की मेहरबानी कीजिये कि इस मामले को अपने हाथ में लेते हैं या नहीं और किन शर्तों पर।"

"ठीक है।"

वकील ने आदर से सिर झुकाया मुवक्किल के लिये दरवाज़ा खोल दिया और अकेला रह जाने पर खुशी की तरंग में बह गया। वह इतना खुश था कि अपने उसूलों के खिलाफ़ उसने सौदेबाज़ी करनेवाली महिला के लिये फ़ीस में कुछ कमी कर दी और यह तय करके कि अगले जाड़े तक सिगोनिन की भांति वह भी अपने सारे फ़र्नीचर पर मखमल चढ़वा लेगा, उसने कपड़ा खानेवाले कीड़े पकड़ना बन्द कर ।

(६)

मैं ... में कारेनिन की बड़ी शानदार
उसके लिये बहुत सुख साबित हुआ।
... के जीवन का सभी दृष्टियों

[illegible]

किये गये आंकड़ों का समर्थन करना था। इनके परिणामस्वरूप इन्हें लोगों और मामले में भी सारी स्थिति उलझ गयी और इस बात के बावजूद कि सभी को इसमें बड़ी दिलचस्पी थी, कोई भी यह समझ पाने में असमर्थ था कि विदेशी वास्तव में गरीबी और बरबादी का शिकार हो रहे हैं या फल-फूल रहे हैं। इस गड़बड़ और कुछ हद तक उसकी बीवी की बेवफाई के कारण उसके प्रति उत्पन्न हास्यजनक तिरस्कार भावना के फलस्वरूप कारेनिन की स्थिति बड़ी डावांडोल हो गयी थी। ऐसी हालत में भी कारेनिन ने एक महत्वपूर्ण निर्णय किया। आयोग को आश्चर्यचकित करते हुए उसने यह घोषणा की कि वह मामले की जांच करने के लिये खुद वहां जाने की अनुमति पाने का अनुरोध करेगा। और अनुमति पाकर कारेनिन दूर-दराज के उन गुबर्नियाओं के लिए रवाना हो गया।

कारेनिन की रवानगी से काफी शोर मचा, आम तौर पर इसलिये कि प्रस्थान से पहले उसने विधिपूर्वक वह सारी रकम लौटा दी, जो मंजिल तक पहुंचने के लिये बारह घोड़ों के खर्च को ध्यान में रखकर उसे दी गयी थी।

"मेरे ख्याल में उसका ऐसा करना बहुत ही प्रशंसनीय है," इस सम्बन्ध में बेत्सी ने प्रिंसेस म्याग्काया से कहा। "डाक-बग्घियों पर इतना पैसा क्यों बरबाद किया जाये, जब सबको यह मालूम है कि अब हर जगह रेलगाड़ी आती-जाती है?"

लेकिन प्रिंसेस म्याग्काया इससे सहमत नहीं थी और प्रिंसेस त्वेरस्काया के मत से उसे खीझ तक अनुभव हो रही थी।

"आपके लिये ऐसा कहना बहुत अच्छा है, जबकि आपके यहा जाने कितने साथ स्कूल है, लेकिन मेरा पति जब गर्मियो मे जाच-कार्य के लिये जाता है, तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। उसे यात्रा करना पसन्द है और इससे उसकी सेहत बेहतर होती है तथा मेरे यहा कुछ ऐसी व्यवस्था बनी हुई है कि इस पैसे मे मेरी घोड़ा-गाडी और कोचवान का खर्च चलता है।"

दूरस्थ गुबेर्नियाओ को जाते हुए कारेनिन तीन दिन के लिये मास्को मे रुका।

मास्को पहुचने के अगले दिन वह गवर्नर-जनरल से मिलने के लिये बग्घी मे जा रहा था। गाजेत्नी गली के चौक मे, जहा हमेशा निजी और किराये की बग्घियो की भीड़ रहती थी, कारेनिन को बहुत ऊची और खुशी भरी आवाज मे अपना नाम सुनाई दिया और वह मुडकर देखे बिना न रह सका। फैशनदार छोटा ओवरकोट पहने तथा छोटा-सा फैशनदार टोप सिर पर रखे, जो एक ओर को भुका हुआ था, मुस्कराता और लाल होठो के बीच सफेद दातो की झलक दिखाता हुआ जवान, खुशी मे उमगता और चमकता ओब्लोन्स्की पटरी के पास खडा था तथा दृढ़ता और जोर से उसे पुकारते हुए रुकने की माग कर रहा था। वह एक हाथ से कोने मे खडी बग्घी की खिडकी थामे था, जिसमे से मखमल की टोपी से ढका हुआ एक नारी का सिर तथा बच्चो के दो सिर बाहर झाक रहे थे, और मुस्कराता हुआ दूसरा हाथ बहनोई की ओर हिला रहा था। महिला भी स्नेहपूर्वक मुस्कराती हुई कारेनिन की ओर हाथ हिला रही थी। यह बच्चो के साथ डौली थी।

कारेनिन मास्को मे किसी से नही मिलना चाहता था और अपनी पत्नी के भाई से तो बिल्कुल ही नही। उसने टोप ऊपर उठाया और आगे बढ़ना चाहा, लेकिन ओब्लोन्स्की ने उसके कोचवान को रुकने का इशारा किया और बर्फ को लाघता हुआ उसकी तरफ भाग चला।

"अपने आने की खबर तक न देना तो बडी ज्यादती है! कब आये? मैं कल दूसो के होटल मे गया था, वहा तख्ते पर लगी सूची मे 'कारेनिन' पढ़ा, लेकिन मैं तो कल्पना भी नही कर सकता था कि यह तुम हो।" बग्घी की खिडकी मे अपना सिर घुसेडते हुए ओब्लो-

स्की ने कहा। "नही तो मैं तुम्हारे कमरे मे आ गया होता। कितनी खुशी हो रही है तुमसे यहां मिलकर!" वर्फ़ झाड़ने के लिये पाव मे पाव टकराते हुए वह कह रहा था। "कितनी ज्यादती है हमें अपने आने की खबर न देना!" उसने दोहराया।

"मुझे फुरसत नहीं मिली, बहुत व्यस्त था मैं," कारेनिन ने रुखाई से कहा।

"आओ, मेरी बीवी के पास चले, वह तुमसे मिलने को बहुत उत्सुक है।"

कारेनिन ने अपनी ठिठुरी हुई टागो पर लिपटा कम्बल उतारा, बग्घी से बाहर निकला और वर्फ़ लाघते हुए डौली के पास पहुंचा।

"यह क्या बात है, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, आप हमसे ऐसे कन्नी क्यो काट रहे हैं?" डौली ने मुस्कराते हुए पूछा।

"मैं बहुत व्यस्त रहा। आपसे मुलाकात होने पर बहुत खुश हू," उसने ऐसे अन्दाज मे कहा, जो यह जाहिर कर रहा था कि उसे ऐसा होने से दुख हुआ। "आपका स्वास्थ्य कैसा है?"

"मेरी प्यारी आन्ना का क्या हाल है?"

कारेनिन कुछ बड़बड़ाया और उसने जाना चाहा। मगर ओब्लोन्स्की ने उसे रोक लिया।

"देखो, कल हम ऐसा करेंगे। डौली, तुम इसे कल दिन के खाने पर बुला लो। कोज्निशेव और पेसत्सोव को भी बुला लेंगे ताकि यह जरा मास्को के बुद्धिजीवियो को भी चखकर देख ले।"

"हा, कृपया आइयेगा," डौली ने कहा। हम आपका पाच या छ बजे, जैसा आप उचित समझें, इन्तजार करेंगे। तो मेरी प्यारी आन्ना कैसी है? कितना अरसा हो गया "

"वह स्वस्थ है," कारेनिन नाक-भौंह सिकोडकर बड़बड़ाया। "बहुत खुशी हुई!" और वह अपनी बग्घी की तरफ चल दिया।

"आयेंगे न?" डौली ने ऊचे स्वर में पूछा।

कारेनिन ने कुछ जवाब दिया, जिसे डौली आती-जाती बग्घियो के शोर में नहीं सुन सकी।

"मैं कल तुम्हारे पास आऊगा।" ओब्लोन्स्की ने पुकारकर कहा। कारेनिन बग्घी में चढ़ा और इतना पीछे को हटकर बैठ गया कि न तो खुद किसी को देखे और न नजर ही आये।

"अजीब आदमी है।" ओब्लोन्स्की ने बीवी से कहा और घड़ी पर नज़र डालकर चेहरे के सामने हाथ से कुछ ऐसा सकेत-सा किया, जिसका अर्थ पत्नी और बच्चों के प्रति स्नेह-प्रदर्शन था तथा बाकपन से पटरी पर चल दिया।

'स्तीवा! स्तीवा!" डौली लज्जारुण होते हुए चिल्लाई।

उसने मुड़कर देखा।

"मुझे ग्रीशा और तान्या के लिये ओवरकोट खरीदने है। पैसे तो दो।"

'कोई बात नही, कह देना कि मैं चुका दूगा," और वह बग्घी में पास से गुजरनेवाले एक परिचित को खुशमिज़ाजी से सिर झुकाकर आखो से ओझल हो गया।

(७)

अगले दिन इतवार था। ओब्लोन्स्की बैले के रिहर्सल के समय बोल्शोई थियेटर गया और प्यारी-सी नर्तकी माशा चीबिसोवा को, जो उसके सरक्षण के फलस्वरूप अभी-अभी वहा काम करने लगी थी, मूगे का हार भेट किया, जिसका उसने एक दिन पहले वादा किया था और थियेटर के अधेरे मे पर्दे के पीछे उसका प्यारा और उपहार पाकर चमक उठनेवाला मुह चूम लिया। हार के उपहार के अलावा उसे बैले के बाद उससे मिलने के बारे मे भी तय करना था। उसे यह समझाकर कि बैले के शुरू होने के वक्त वह नही आ सकेगा, उसने वादा किया कि अन्तिम अक के समय आयेगा और रात के खाने के लिये अपने साथ ले जायेगा। थियेटर से वह अखोत्नी रियाद चौक मे पहुचा, जहा उसने तीसरे पहर के खाने के लिये खुद मछली और सब्जी चुनी और बारह बजे दयूस्सो के होटल मे पहुच गया। वहा उसे तीन व्यक्तियों से मिलना था, जो उसकी खुशकिस्मती से इसी होटल मे ठहरे हुए थे। ये थे – लेविन, जो कुछ ही समय पहले विदेश से लौटा था, उसका नया विभागाध्यक्ष, जो कुछ ही समय पहले इस ऊचे पद पर नियुक्त हुआ था और मास्को मे

जाच-कार्य के लिये आया था और उसका बहनोई कारेनिन, जिसे वह अवश्य ही तीसरे पहर के खाने पर बुलाना चाहता था।

ओब्लोन्स्की को कही बाहर भोजन करना अच्छा लगता था, किन्तु छोटी, मगर खाने-पीने और मेहमानो के चुनाव की दृष्टि से बढ़िया दावत करना और भी ज्यादा पसन्द था। आज की दावत का कार्यक्रम उसे बहुत अच्छा लग रहा था – उसमें जिन्दा लाई गयी पर्च मछलियां होगी, असपारागस सब्जी होगी और la pièce de résistance* के रूप मे अद्भुत, लेकिन साधारण रोस्टबीफ होगा और उचित किस्म की शराबे होगी। बस, खाने-पीने की बात समाप्त। मेहमानो मे कीटी और लेविन होगे और इसलिये कि वे दोनो साफ तौर पर लोगो की नजर मे न आये चचेरी बहन और नौजवान श्चेर्बात्स्की भी होगा तथा मेहमानो मे la pièce de résistance के रूप मे कोज्निशेव तथा कारेनिन होगे। कोज्निशेव – मास्कोवाला और दार्शनिक है, कारेनिन – पीटर्सबर्गी और व्यावहारिक आदमी है। हा, इनके अलावा जाने-माने मनकी और उत्साही पेसत्सोव को भी बुला लूगा। यह उदारतावादी, बातूनी, सगीतज्ञ, इतिहासज्ञ और पचास वर्षीय प्यारा तरुण कोज्निशेव और कारेनिन के लिये चटनी का काम देगा। वह उन्हे उकसायेगा और भडकायेगा।

जगल खरीदनेवाले व्यापारी से पैसो की दूसरी किस्त मिल गयी थी और सभी पैसे अभी खर्च नही हुए थे। पिछले कुछ अर्से से डौली बहुत मधुर और मेहरबान रही थी और आज की दावत का विचार सभी दृष्टियो से ओब्लोन्स्की को खुशी प्रदान कर रहा था। बहुत ही प्रसन्नचित्त था वह। हा, कुछ कुछ परेशानी पैदा करनेवाली दो परिस्थितिया भी थी। किन्तु ये दोनो परिस्थितिया ओब्लोन्स्की के हृदय मे लहरानेवाले खुशमिजाजी और प्रसन्नता के सागर मे डूब गयी थी। ये परिस्थितिया थी – पिछले दिन कारेनिन से सडक पर मुलाकात होने पर उसने महसूस किया था कि उसके प्रति उसके व्यवहार मे रूखापन और कठोरता थी। कारेनिन के चेहरे के इस भाव और इस बात को कि वह उनके यहा नही आया और अपने आने की सूचना भी नही दी और उन

* खास। (फ्रासीसी)

अफवाहों को ध्यान में रखते हुए, जो उसने आन्ना और व्रोन्स्की के बारे में सुनी थी, ओब्लोन्स्की ने अनुमान लगाया कि पति-पत्नी के बीच कुछ गड़बड़ चल रही है।

यह पहली अप्रिय परिस्थिति थी। दूसरी कुछ अप्रिय परिस्थिति यह थी कि सभी नये सचालकों की भांति उसका नया सचालक भी एक भयानक व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध था, जो सुबह के ६ बजे उठता और घोड़े की तरह काम करता था और अपने अधीन काम करनेवालों से भी इसी तरह काम करने की आशा करता था। इसके अलावा यह नया बड़ा अधिकारी अपने व्यवहार में बड़ा अक्खड़ होने की ख्याति रखता था और अफवाहों के मुताबिक उसके विचार उससे पहलेवाले बड़े अधिकारी और उन विचारों के सर्वथा प्रतिकूल थे, जो अब तक खुद ओब्लोन्स्की के भी विचार थे। पिछले दिन ओब्लोन्स्की सरकारी वर्दी पहनकर दफ्तर में गया था और नया अफसर उसके साथ बहुत ही अच्छे ढंग से पेश आया था, उसने उसके साथ परिचित व्यक्ति के रूप में बातचीत की थी। इसलिये ओब्लोन्स्की फ्राक-कोट में उससे मिलने के लिये जाना अपना कर्तव्य मानता था। यह विचार कि शायद नया बड़ा अधिकारी उसके साथ बहुत तपाक से न मिले, दूसरी अप्रिय परिस्थिति थी। लेकिन ओब्लोन्स्की अपनी सहज प्रेरणा से यह अनुभव कर रहा था कि सब कुछ ठीक-ठाक हो जायेगा। "जैसे हम गुनाहगार हैं, वैसे ही बाकी सब भी हमारे जैसे इन्सान, सब लोग हैं। आपस में बिगड़ने और उलझने की क्या बात है?" होटल में दाखिल होते हुए वह सोच रहा था।

"हलो, वसीली," एक ओर को झुका हुआ टोप पहने और गलियारे को लाघते हुए उसने होटल के एक परिचित नौकर को सम्बोधित किया, "तुमने गल-मुच्छे बढ़ा लिये? लेकिन सात नम्बर में है न? कृपया मुझे रास्ता दिखा दो। हा, यह भी मालूम कर आओ कि काउंट आनिच्किन (यह उसका नया बड़ा अधिकारी था) से मैं मिल सकता हूं या नहीं?"

"जो हुक्म, हुजूर," वसीली ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। "बहुत दिनों से हमारे यहा तशरीफ नहीं लाये।"

"मैं कल यहा आया था, लेकिन दूसरे दरवाजे से। यही सात नम्बर है?"

जवाब दिया। "सच, मरने का वक्त आ चुका है। और यह सब कुछ
बकवास है। तुमसे सच्ची बात कहता हू–मैं अपने विचार और काम
को मूल्यवान मानता हू, लेकिन वास्तव मे तो–तुम इस पर सोचो–
हमारी यह सारी दुनिया छोटी-सी फफूंदी है, जो छोटे-से ग्रह पर उभर
आयी है। और हम यह सोचते हैं कि हमारे यहा कोई महान चीज हो
सकती है–महान विचार, महान कार्य। यह सब बालू का एक कण है,
छोटा-सा कण।"

"मेरे भाई, यह तो तुम आदम के ज़माने की बात कर रहे हो।"

"यह सही है, लेकिन जब आदमी साफ तौर पर यह समझ जाता
है तो सब कुछ तुच्छ हो जाता है। यह समझ जाने पर कि आज नही,
तो कल मर जायेगे और कुछ भी बाकी नही रहेगा, तो सब कुछ
महत्त्वहीन हो जाता है। मैं अपने विचार को बहुत महत्त्वपूर्ण मानता हू
और अगर इसे व्यावहारिक रूप दिया जा सकता हो, तो वह उतना
ही तुच्छ है, जितना कि इस भालू का शिकार करना। तो ऐसे ही हम
अपनी जिन्दगी बिताते हैं, शिकार और काम मे अपना मन लगाते
हुए, ताकि मौत के बारे मे न सोचें।"

ओब्लोन्स्की उसकी बाते सुनते हुए स्नेह और अर्थपूर्ण ढग से
मुस्कराया।

"सो तो ज़ाहिर है। तो तुम आ गये मेरे रास्ते पर। याद है न
कि कैसे तुमने इस बात के लिये मेरी आलोचना की थी कि मैं जीवन मे
आनन्द पाने के फेर मे रहता हू?

"ऐसे कठोर न बनो, ओ, नैतिकतावादी।"

नही, फिर भी जीवन मे कुछ अच्छा है, तो यह " लेविन के
विचार उलझ गये। "मैं कुछ नहीं जानता। सिर्फ इतना जानता हू कि
जल्द ही मर जायेगे।"

"जल्द ही क्यो?"

"और सुनो, जब हम मौत के बारे मे सोचते हैं, तो जीवन इतना
आकर्षक नही रहता, मगर चैन बढ जाता है।"

"इसके विपरीत, अन्त मे तो और भी ज्यादा मजा रहता है।
खैर, मुझे अब चलना चाहिये," ओब्लोन्स्की ने दसवी बार उठने
[illegible]रहा।

[illegible]

बेशक आइए।

तो तीन बजे और शाम तक [illegible] नमस्कार।"

ओब्लोन्स्की [illegible] और [illegible] बर्तिकारी के पास नीचे च[illegible] दिया। उसकी अन्तर्दृष्टि ने उसे धोखा नहीं दिया। [illegible] [illegible] बड़ा दिलचस्प आदमी निकला। ओब्लोन्स्की ने उसके सा[थ] कुछ खाया-पिया और इतनी देर तक बैठा रहा कि केवल तीन बजने [के] बाद ही कारेनिन के कमरे में पहुंचा।

(८)

गिरजे में सुबह की प्रार्थना से लौटने के बाद कारेनिन ने सारी सुबह अपने कमरे में बिताई। इस सुबह को उसे दो काम करने थे। पहला, इस समय मास्को में आये हुए गैररूसियों के प्रतिनिधिमण्डल से मिलना और उसे पीटर्सबर्ग रवाना करना। दूसरा, वकील को वह पत्र भेजना, जिसका उसने वादा किया था। यह प्रतिनिधिमण्डल यद्यपि कारेनिन की पहलकदमी पर बुलाया गया था, कई परेशानियां, यहां तक कि खतरे भी पेश करता था, और कारेनिन को इस बात की बहुत खुशी थी कि मास्को में ही उसकी इस प्रतिनिधिमण्डल से भेंट हो गयी। इस प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों को अपनी भूमिका और कर्त्तव्यों का तनिक भी आभास नहीं था। वे भोले-भाले ढंग से ऐसा मानते थे कि उनका काम

[illegible] ' ओब्लोन्स्की ने
[illegible]
हुए कहने में हर्षित हुए। 'बहुत खुश हूं कि तुम मिल गये' मैं
मुझे उम्मीद है कि [illegible] ओब्लोन्स्की ने [illegible] शुरू किया

मैं नहीं आ सकता ' कारेनिन ने खड़े रहकर और बेरुखी से
बैठने के लिये न कहते हुए [illegible] से जवाब दिया।

कारेनिन ने [illegible] औपचारिक अन्दाज़ अपनाने [illegible], जो
ऐसी बीवी के भाई के साथ होने चाहिये जिसके विरुद्ध वह तलाक़ की
कार्रवाई शुरू करनेवाला था। लेकिन उसने [illegible] के इस [illegible] को
ध्यान में नहीं रखा जो ओब्लोन्स्की की आत्मा के [illegible] से उमड़
पड़ रहा था।

ओब्लोन्स्की की निर्मल और चमकीली आंखें फैल गयीं।

"क्यों नहीं आ सकोगे? क्या अभिप्राय है तुम्हारा?" ओब्लोन्स्की ने कुछ न समझ पाते हुए फ्रांसीसी में कहा। "नहीं, तुम इसका वचन दे चुके हो। हम सब तुम्हारे आने का भरोसा किये बैठे हैं।"

"मैं कहना चाहता हूं, आपके यहां इसलिये नहीं आ सकता कि हमारे बीच रिश्तेदारी के जो नाते थे, अब उन्हें ख़त्म हो जाना चाहिये।"

"क्या? यह क्या कह रहे हो? क्यों?" ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर पूछा।

"क्योंकि मैं आपकी बहन, अपनी बीवी के विरुद्ध तलाक़ की कार्रवाई आरम्भ कर रहा हूं। मुझे विवश होकर ..."

लेकिन कारेनिन के बात ख़त्म करने के पहले ही ओब्लोन्स्की ने कुछ ऐसा किया, जिसकी कारेनिन ने आशा नहीं की थी। ओब्लोन्स्की ने गहरी सांस ली और आरामकुर्सी पर धमक गया।

"नहीं, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, यह तुम क्या कह रहे हो!" ओब्लोन्स्की ऊंचे स्वर में कह उठा और उसके चेहरे पर व्यथा अंकित हो गयी।

"बात ऐसी ही है।"

"माफ़ी चाहता हूं, लेकिन मैं इसपर यक़ीन नहीं कर सकता, नहीं कर सकता।"

कारेनिन यह महसूस करते हुए बैठ गया कि उसके शब्दों का वैसा

ही हुआ, जैसी उसने आशा की थी और उसे बात माफ करनी
केन्तु उसका स्पष्टीकरण चाहे कुछ भी क्यो न हो, साले के
के रवैये मे कोई फर्क नही पडेगा।
ा, मुझे तलाक लेने की दुखद परिस्थिति मे डाल दिया गया है,"
हा।
ै सिर्फ एक बात कहूगा, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच। मैं एक बहुत
और न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप मे तुम्हे जानता हू, आन्ना को –
ः माफ करना, मैं उसके बारे मे अपनी राय नही बदल सकता –
त अच्छी और नेक औरत के रूप मे जानता हू तथा इसीलिये,
चाहता हू, मैं इस बात पर विश्वास नही कर सकता। इस मामले
र कोई गलतफहमी हुई है," उसने कहा।
ाश, यह गलतफहमी ही होती "
हा, मैं समझता हू," ओब्लोन्स्की ने उसे टोक दिया। "लेकिन
है सिर्फ एक बात, जल्दी नही करनी चाहिये। नही, नही
चाहिये जल्दी!"
मैंने जल्दी नही की," कारेनिन ने रुखाई से कहा, "और ऐसे
मे सलाह किसी से नही ली जा सकती। मैंने पक्का इरादा बना
है।"
यह बडी भयानक बात है!" ओब्लोन्स्की ने गहरी उसास
र कहा। "मैं एक बात करूगा, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच।
अनुरोध करता हू, ऐसा करो!" वह बोला। "जहा तक मैं
ा हू, मामले की कार्रवाई अभी शुरू नही की गयी। उसे शुरू
के पहले मेरी बीवी से मिल लो, उससे बात कर लो। वह आन्ना
पनी बहन की तरह प्यार करती है, तुम्हे चाहती है और वह
' नारी है। भगवान के लिये उससे बात कर लो! मुझपर इतनी
ानी करो, मैं तुम्हारी मिन्नत करता हू!"
कारेनिन सोच मे डूब गया और ओब्लोन्स्की उसकी खामोशी को
किये बिना सहानुभूति से उसकी तरफ देखता रहा।
"तुम जाओगे न उसके पास?"
"कह नहीं सकता। मैं तो इसीलिये आपके घर नही गया। मेरे
ा मे हमारे सम्बन्धो मे परिवर्तन होना चाहिये।"

[illegible] मुझे इसका कोई कारण दिखाई नहीं देता, मैं तुम्हारे मानने की अनुमति चाहता हूं कि हमारे रिश्तेदारी के सम्बन्ध के अलावा मुझमें सदा से प्रति [illegible] हूं [illegible] की भी है जो मैं हमेशा तुम्हारे लिये अनुभव की है और सच्चा आदर भी। ओब्लोन्स्की ने उसका हाथ दबाकर कहा। अगर तुम्हारे बुरे से बुरे अनुमान सच साबित हुए तो भी मैं दोनों में से किसी एक पक्ष को अपना फ़ैसला करने का इरादा नहीं रखता और मुझे ऐसा नहीं लगता तथा इसके लिये मुझे कोई कारण दिखाई नहीं देता कि हमारे सम्बन्धों में क्यों परिवर्तन होना चाहिये। लेकिन अब इतना करो, मेरी बीवी से मिलने आ जाओ।

असल यह है कि इस मामले में हमारे नज़रिये अलग-अलग हैं," कारेनिन ने रुखाई से कहा। "पर और हम इस बात की चर्चा नहीं करेंगे।

नहीं, लेकिन तुम्हारे यहां आने में क्या बुराई है? कम से कम आज खाने पर? मेरी बीवी तुम्हारी राह देख रही है। कृपया आ जाओ। और फिर सबसे बड़ी चीज़ तो यह है कि उससे बात करो। वह अद्भुत नारी है। भगवान के लिये मान जाओ, मैं तुम्हारे पांव पड़ता हूं!"

"अगर आप इतना अधिक चाहते हैं, तो मैं आ जाऊंगा," कारेनिन ने गहरी सांस लेकर कहा।

और बातचीत का विषय बदलने के लिये उसने वह चर्चा शुरू की, जिसमें दोनों की साझी दिलचस्पी थी। यह चर्चा थी ओब्लोन्स्की के नये बड़े अधिकारी के बारे में, जो अपेक्षाकृत अभी जवान आदमी था और जिसे अचानक इतने ऊंचे ओहदे पर नियुक्त कर दिया गया था।

कारेनिन पहले भी काउंट आनिच्किन को पसन्द नहीं करता था और हमेशा ही उसके साथ उसका मत-भेद रहा था। लेकिन अब वह सरकारी नौकरी से सम्बन्धित किसी भी व्यक्ति की समझ में आनेवाली उस घृणा को नहीं छिपा सकता था, जो अपनी नौकरी में झटका खा जानेवाला आदमी उस व्यक्ति के प्रति अनुभव करता है, जिसे तरक़्क़ी मिल जाती है।

"तो उससे तुम्हारी मुलाक़ात हुई?" कारेनिन ने ज़हरीली मुस्कान के साथ पूछा।

"हा, हुई। वह कल हमारे दफ़्तर मे आया था। लगता है कि वह अपना काम खूब बढ़िया ढग से जानता है और बड़ा क्रियाशील आदमी है।"

"हा, लेकिन उसकी यह क्रियाशीलता किस दिशा मे निर्देशित है?" कारेनिन ने सवाल किया। "इस दिशा मे कि कोई काम सिरे चढ़ाये या सिरे चढ़े हुए काम को बिगाड़े? नौकरशाही घिसघिस – यह हमारे राज्य की बदकिस्मती है, जिसका वह बढ़िया प्रतिनिधि है।"

"मैं नहीं जानता कि उसकी किस बात के लिये निन्दा की जा सकती है। उसकी प्रवृत्तिया क्या है, यह मुझे मालूम नहीं। लेकिन इतना जरूर है कि वह बढ़िया आदमी है," ओब्लोन्स्की ने उत्तर दिया। "सचमुच बढ़िया आदमी है। हम दोनो ने अभी कुछ कलेवा किया और मैंने उसे वह पेय – जानते हो, शराब मे सन्तरो के टुकड़ो वाला पेय – बनाना सिखाया। उससे बड़ी ठण्डक महसूस होती है। हैरानी की बात है कि वह यह नहीं जानता था। उसे बड़ा पसन्द आया। नहीं, सच कहता हू कि वह बहुत बढ़िया आदमी है।"

ओब्लोन्स्की ने घड़ी पर नजर डाली।

"हे भगवान, चार से भी कुछ अधिक समय हो चुका है और मुझे अभी दोल्गोवूशिन के यहा भी जाना है। तो कृपया, जरूर आना खाने पर। तुम तो कल्पना भी नहीं कर सकते कि तुम्हारे न आने से मुझे और मेरी बीवी को कितना रज होगा।"

कारेनिन ने अपने साले को वैसे ही विदा नहीं किया, जैसे आने पर उसने उसका स्वागत किया था।

"मैंने वचन दिया था और मैं उसे पूरा करूगा," उसने उदासी से जवाब दिया।

"यकीन मानो, मैं इसका ऊचा मूल्याकन करता हू और मुझे आशा है कि तुम्हें अफ़सोस नहीं होगा," ओब्लोन्स्की ने मुस्कराकर जवाब दिया।

चलते-चलते ही ओवरकोट पहनते हुए उसने नौकर के सिर पर धीरे से चपत लगाई, हसा और बाहर चला गया।

"कृपया पाच बजे, और फ्राकरकोट पहने हुए," दरवाजे के पास लौटकर उसने फिर से ऊची आवाज मे कहा।

पांच से कुछ अधिक समय हो चुका था और कुछ मेहमान आ भी चुके थे, जब गृह-स्वामी घर पहुंचा। वह सेर्गेई इवानोविच कोज्निशेव और पेस्त्सोव के साथ, जो एक ही समय दरवाजे पर पहुंचे, घर में दाखिल हुआ। ये मास्को के बुद्धिजीवियों के दो प्रमुख प्रतिनिधि थे, जैसा कि ओब्लोन्स्की ने उनके बारे में कहा था। ये दोनों अपने चरित्र और सूझ-बूझ की दृष्टि से सम्मानित व्यक्ति थे। वे एक-दूसरे का आदर करते थे, लेकिन लगभग सभी चीजों में उनका पूरा और ठोस मतभेद था, जिसके कभी दूर होने की आशा नहीं की जा सकती थी। सो भी इसलिये नहीं कि उनकी विचारधारायें एक-दूसरे के प्रतिकूल थीं, बल्कि इसलिये कि वे एक ही शिविर में थे (उनके शत्रु उन्हें आपस में गड़बड़ा देते थे), किन्तु इस शिविर में उनका अपना-अपना रंग था। चूंकि अर्द्ध-अमूर्त विचारों में असहमति से अधिक कुछ भी सहमति के अनुरूप नहीं हो सकता, इसलिये उनके बीच विचारों का न केवल मतभेद होता था, बल्कि एक अर्से से वे नाराज हुए बिना एक-दूसरे की सुधारी न जा सकनेवाली भ्रान्तियों पर हंसने के भी अभ्यस्त हो चुके थे।

ये दोनों मौसम की चर्चा करते हुए दरवाजे को लांघ रहे थे, जब ओब्लोन्स्की इनसे आ मिला। ओब्लोन्स्की के ससुर, प्रिंस अलेक्सान्द्र द्मीत्रियेविच श्चेर्बात्स्की, जवान श्चेर्बात्स्की, तूरोवत्सिन, कीटी और कारेनिन पहले से मेहमानखाने में मौजूद थे।

ओब्लोन्स्की ने फौरन भांप लिया कि मेहमानखाने में उसके बिना मामला ढंग से नहीं चल रहा है। भूरा रेशमी समारोही फ्राक पहने हुए डौली स्पष्टतः बच्चों की चिन्ता से, जिन्हें बच्चों के कमरे में अलग भोजन करना था, और पति के अभी तक न आने के कारण परेशान होते हुए उसके बिना इन सभी लोगों को ढंग से घुला-मिला नहीं पायी थी। वे सभी जैसा कि बूढ़े प्रिंस ने कहा, मेहमान बननेवाली पादरी की बेटियों की तरह बैठे थे, स्पष्टतः यह नहीं समझ पा रहे थे कि किस कारण यहां आ गये और केवल चुप न रहने के लिये ही कुछ बोलते जा रहे थे। सुशमिजाज तूरोवत्सिन साफ तौर पर पानी से बाहर मछली की तरह महसूस कर रहा था और ओब्लोन्स्की के आने पर उसके मोटे

ठी की मुस्कान मानो यह कहती प्रतीत हो रही थी – "अरे भाई,
ने इन बड़े समझदार लोगो के बीच मुझे बिठा दिया। कुछ पीना
और Château des fleurs मे जाना – यह है मेरा क्षेत्र तो।" बूढ़े
प्रिंस चुपचाप बैठे थे, अपनी चमकती आखो से कारेनिन को कनखियो से
देख रहे थे और ओब्लोन्स्की समझ गया कि उन्होने इस बड़े राजकीय
कार्यकर्ता के बारे मे, जिसका स्टर्जन मछली की तरह लोगो को फुसलाने
के लिये इस्तेमाल किया जाता है, कोई चुभती हुई सी बात सोच ली
है। कीटी दरवाजे की तरफ देखते हुए हिम्मत बटोर रही थी, ताकि
लेविन के आने पर झेंप न महसूस करे। जवान श्चेर्बात्स्की, जिसके
साथ कारेनिन का परिचय नही कराया गया था, ऐसा जाहिर करने की
कोशिश कर रहा था कि इससे उसे कोई परेशानी नही हो रही है।
महिलाओ की सगत मे तीसरे पहर के खाने से सम्बन्धित पीटर्सबर्ग
की आदत के मुताबिक कारेनिन फ्राककोट और सफेद टाई पहने था
और ओब्लोन्स्की उसके चेहरे से यह समझ गया कि वह अपना वचन
पूरा करने ही आया है और यहा अपनी उपस्थिति से एक बोझिल
कर्तव्य पूरा कर रहा है। वही मुख्यत उस ठण्डक के लिये जिम्मेदार था,
जिसने ओब्लोन्स्की के आने से पहले सभी मेहमानो को सर्द कर दिया था।

ओब्लोन्स्की ने मेहमानखाने मे दाखिल होते ही माफी मागी और
कहा कि उसे उस प्रिंस ने रोक लिया था, जिसके मत्थे वह हमेशा ही
अपनी अनुपस्थिति और देरी का दोष मढ देता था, घडी भर मे सभी
का एक-दूसरे से परिचय करवा दिया और कारेनिन को कोज्निशेव से
मिलाते हुए पोलैड के रूसीकरण की चर्चा छेड दी, जिसमे वे दोनो
और पेसत्सोव भी फौरन उलझ गये। तूरोवत्सिन का कन्धा थपथपाकर
उसने उसके कान मे फुसफुसाते हुए कोई मजाकिया बात कही और उसे
बीवी तथा प्रिंस के पास बिठा दिया। फिर कीटी से कहा कि इस शाम
को वह खूब ही जंच रही है और जवान श्चेर्बात्स्की का कारेनिन से
परिचय करवाया। आन की आन मे उसने मेहमानो का ऐसा आटा-सा
गूध दिया कि मेहमानखाने मे बडी रौनक आ गयी और खुशी भरी
आवाजे गूजने लगी। सिर्फ लेविन नही आया था। लेकिन यह अच्छा
ही था, क्योकि भोजन-कक्ष मे जाने पर वह यह देखकर स्तम्भित रह गया
कि पोर्टवाइन और शेरी लेवे की दुकान से नही, बल्कि देपरे के यहा से

[illegible]

'पहली बार मैं ही लेविन से उनकी भेंट हो गयी।

'मुझे देर तो नहीं हो गयी?'

'तुम देर से न आओगे, ऐसा हो ही सकता है!' उसकी बांह में बांह डालते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा।

"बहुत लोग हैं क्या? कौन-कौन हैं?" लेविन ने बरबस ही झेंप से लाल होते और दस्ताने से टोपी पर पड़ी बर्फ झाड़ते हुए पूछा।

'सब अपने ही हैं। कीटी भी यहीं है। आओ, मैं कारेनिन से तुम्हारा परिचय कराऊं।'

अपने उदार विचारों के बावजूद ओब्लोन्स्की यह जानता था कि कारेनिन के साथ जान-पहचान होना जरूर ही प्रतिष्ठा की बात है और इसलिये अपने सबसे अच्छे मित्रों को ही वह यह सम्मान प्रदान करता था। किन्तु इस समय लेविन इस परिचय के सारे आनन्द को अनुभव करने की स्थिति में नहीं था। अपने लिये उस स्मरणीय शाम के बाद जब व्रोन्स्की से उसकी मुलाकात हुई थी, अगर बड़ी सड़क पर बग्घी में देखने के क्षण को न गिना जाये, तो उसने कीटी को नहीं देखा था। अपने दिल की गहराई में वह जानता था कि आज यहां उससे उसकी भेंट होगी। किन्तु अपने विचारों को खुली छूट देने के लिये वह खुद को यकीन दिला रहा था कि उसे यह मालूम नहीं है। अब यह सुनकर कि वह यहां है, उसे अचानक ऐसी खुशी और साथ ही ऐसा भय अनुभव हुआ कि उसके लिये सांस लेना कठिन हो गया और वह नहीं कह पाया, जो कहना चाहता था।

"कैसी, कैसी है वह? वैसी, जैसी पहले थी या वैसी, जैसी बग्घी में? अगर दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने सच बात कही थी, तो? क्यों सच नहीं होगी उसकी बात?" वह सोच रहा था।

"ओह, कृपया कारेनिन से मेरा परिचय कराओ," उसने मुश्किल से कहा और हताशापूर्ण दृढ़ता के साथ मेहमानखाने में दाखिल होकर उसे देखा।

वह पहले जैसी नहीं थी, वैसी भी नहीं थी, जैसी बग्घी मे। वह
लुल दूसरी ही थी।
वह डरी-सहमी, घबरायी और लजायी हुई थी और इसीलिये
और भी अधिक सुन्दर लग रही थी। लेविन के कमरे मे दाखिल होते
ही उसकी ओर कीटी की नज़र गयी। वह उसकी राह देख रही थी।
वह खुश हुई और अपनी खुशी से इस हद तक परेशान हो उठी कि एक
ऐसा क्षण भी आया, यानी वह क्षण, जब वह गृह-स्वामिनी अर्थात
डौली के पास गया और उसने फिर से कीटी पर नज़र डाली, तो
कीटी, लेविन और डौली को भी, जो यह सब देख रही थी, ऐसा
लगा कि वह अपने को सम्भाल नही पायेगी और रो पड़ेगी। उसके
चेहरे पर सुर्खी दौडी, उसका रग उडा, फिर से लाली आई और तनिक
सिहरते होंठो से उसके निकट आने की राह देखते हुए वह बुत-सी
बनकर रह गयी। लेविन उसके पास गया, उसने सिर झुकाया और
चुपचाप उसकी तरफ हाथ बढा दिया। अगर उसके होंठो मे थोडा-सा
कपन न होता, अगर आखो मे थोडी-सी नमी न होती, जिससे उसकी
आखो की चमक और बढ गयी थी, तो उस समय उसकी मुस्कान
लगभग शान्त थी, जब उसने यह कहा
"कितना अरसा हो गया हमे मिले हुए!" और उसने हताशा-
जनित दृढता के साथ उसके हाथ मे अपना ठण्डा हाथ मिलाया।
"आपने मुझे नही देखा, मगर मैंने आपको देखा था," लेविन ने
उल्लासपूर्ण मुस्कान से चमकते हुए जवाब दिया। "जब आप स्टेशन से
येर्गूशोवो जा रही थी, तब मैंने आपको देखा था।"
"कब?" कीटी ने हैरानी से पूछा।
"आप येर्गूशोवो जा रही थीं," लेविन ने कहा और यह अनुभव
किया कि उसकी आत्मा मे छलकी जाती खुशी के कारण उसका गला
रुधा जा रहा है। "इस मर्मस्पर्शी प्राणी के साथ कोई अपराधपूर्ण चीज़
जोड़ने की मुझे कैसे हिम्मत हुई। और हा, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने जो
कुछ कहा था, वह भी सच ही प्रतीत हो रहा है," वह सोच रहा
था।
ओब्लोन्स्की उसका हाथ थामकर उसे कारेनिन के पास ले गया।
"मिलिये, मिलिये," उसने दोनों के नाम लेते हुए परिचय करवाया।

लगी थी है और यह हिदायत देकर कि ओवरकोट को जल्दी से उसी लेने की पुकार पर भेजा जाये, वह फिर से मेहमानखाने की ओर चल दिया।

भोजन कक्ष में ही लेविन से उसकी भेंट हो गयी।

"मुझे देर तो नहीं हो गयी?"

"तुम देर से न आओ, ऐसा हो भी सकता है!" उसकी बांह में बांह डालते हुए ओब्लोन्स्की ने कहा।

"बहुत लोग हैं क्या तुम्हारे यहां? कौन-कौन है?" लेविन ने अनचाहे ही झेंप से लाल होते और दस्ताने से टोपी पर पड़ी बर्फ झाड़ते हुए पूछा।

"सब अपने ही हैं। कीटी भी यहीं है। आओ, मैं कारेनिन से तुम्हारा परिचय कराऊं।"

अपने उदार विचारों के बावजूद ओब्लोन्स्की यह जानता था कि कारेनिन के साथ जान-पहचान होना जरूर ही प्रतिष्ठा की बात है और इसलिये अपने सबसे अच्छे मित्रों को ही वह यह सम्मान प्रदान करता था। किन्तु इस क्षण लेविन इस परिचय के सारे आनन्द को अनुभव करने की स्थिति में नहीं था। अपने लिये उस स्मरणीय शाम के बाद, जब व्रोन्स्की से उसकी मुलाकात हुई थी, अगर बड़ी सड़क पर बग्घी में देखने के क्षण को न गिना जाये, तो उसने कीटी को नहीं देखा था। अपने दिल की गहराई में वह जानता था कि आज यहां उससे उसकी भेंट होगी। किन्तु अपने विचारों को खुली छूट देने के लिये वह खुद को यकीन दिला रहा था कि उसे यह मालूम नहीं है। अब यह सुनकर कि वह यहां है, उसे अचानक ऐसी खुशी और साथ ही ऐसा भय अनुभव हुआ कि उसके लिये सांस लेना कठिन हो गया और वह नहीं कह पाया, जो कहना चाहता था।

"कैसी, कैसी है वह? वैसी, जैसी पहले थी या वैसी, जैसी बग्घी में? अगर दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने सच बात कही थी, तो? क्यों सच नहीं होगी उसकी बात?" वह सोच रहा था।

"ओह, कृपया कारेनिन से मेरा परिचय कराओ," उसने मुश्किल से कहा और हताशापूर्ण दृढ़ता [illegible] होकर उसे देखा।

वह पहले जैसी नहीं थी, वैसी भी नही थी, जैसी बग्घी मे। वह
बिल्कुल दूसरी ही थी।

वह डरी-सहमी, घबरायी और लजायी हुई थी और इसीलिये
और भी अधिक सुन्दर लग रही थी। लेविन के कमरे मे दाखिल होते
ही उसकी ओर कीटी की नजर गयी। वह उसकी राह देख रही थी।
वह खुश हुई और अपनी खुशी से इस हद तक परेशान हो उठी कि एक
ऐसा क्षण भी आया, यानी वह क्षण, जब वह गृह-स्वामिनी अर्थात
डौली के पास गया और उसने फिर से कीटी पर नज़र डाली, तो
कीटी, लेविन और डौली को भी, जो यह सब देख रही थी, ऐसा
लगा कि वह अपने को सम्भाल नही पायेगी और रो पडेगी। उसके
चेहरे पर सुर्खी दौडी, उसका रंग उडा, फिर से लाली आई और तनिक
सिहरते होंठो से उसके निकट आने की राह देखते हुए वह बुत-सी
बनकर रह गयी। लेविन उसके पास गया, उसने सिर झुकाया और
चुपचाप उसकी तरफ हाथ बढा दिया। अगर उसके होंठो मे थोडा-सा
कम्पन न होता, अगर आंखो मे थोडी-सी नमी न होती, जिससे उसकी
आंखो की चमक और बढ गयी थी, तो उस समय उसकी मुस्कान
लगभग शान्त थी, जब उसने यह कहा

"कितना अरसा हो गया हमें मिले हुए!" और उसने हताशा-
जनित दृढ़ता के साथ उसके हाथ से अपना ठण्डा हाथ मिलाया।

"आपने मुझे नही देखा, मगर मैंने आपको देखा था," लेविन ने
उल्लासपूर्ण मुस्कान से चमकते हुए जवाब दिया। "जब आप स्टेशन से
येर्गूशोवो जा रही थी, तब मैंने आपको देखा था।"

"कब?" कीटी ने हैरानी से पूछा।

"आप येर्गूशोवो जा रही थी," लेविन ने कहा और यह अनुभव
किया कि उसकी आत्मा मे छलकी जाती खुशी के कारण उसका गला
रुंधा जा रहा है। "इस मर्मस्पर्शी प्राणी के साथ कोई अपराधपूर्ण चीज़
जोडने की मुझे कैसे हिम्मत हुई। और हां, दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना ने जो
कुछ कहा था, वह भी सच ही प्रतीत हो रहा है," वह सोच रहा
था।

व्रोन्स्की उसका हाथ थामकर उसे कारेनिन के पास ले गया
"लीजिये, मिलिये," उसने दोनों के ... परिचय करवाया

"फिर से मिलकर बड़ी खुशी हुई," लेविन से हाथ मिलाते हुए कारेनिन ने रुखाई से कहा।

"आप एक-दूसरे को जानते हैं?" ओब्लोन्स्की ने हैरानी से पूछा।

"हमने रेलगाड़ी के डिब्बे में तीन घण्टे साथ-साथ बिताये थे," लेविन ने मुस्कराते हुए बताया, "लेकिन नकाबपोशों के नाच की तरह एक-दूसरे से अनजान और जिज्ञासा लिये हुए ही बाहर निकले थे। कम से कम मैं तो।"

"तो यह मामला है! कृपया चलिये भोजन-कक्ष में," उसने उधर इशारा करते हुए कहा।

पुरुष लोग भोजन-कक्ष में हल्के कलेवे और पीने-पिलाने की मेज़ के पास पहुंचे। उस पर छ तरह की वोदका और चांदी की चिमटियों सहित तथा उनके बिना तरह-तरह के पनीर, केवियर, हेरिंग मछली, किस्म-किस्म की डिब्बाबन्द चीज़ें और तश्तरियों में फ़ांसीसी डबलरोटी के छोटे-छोटे टुकड़े रखे हुए थे।

मर्द लोग सुगंधित वोदकाओं और हल्के कलेवे की चीज़ों के पास खड़े थे और कोज़्निशेव, कारेनिन और पेसत्सोव के बीच पोलैंड के रूसीकरण के बारे में हो रही बातचीत खाना आरम्भ होने की प्रत्याशा में धीरे-धीरे शान्त होती जा रही थी।

कोज़्निशेव को बहुत ही सूक्ष्म और गम्भीर वाद-विवाद में अचानक मज़ाक का नमक छिड़ककर उसे समाप्त करने और इस तरह बातचीत करनेवालों का मूड बदलने की कला में कमाल हासिल था। उसने अब भी यही किया।

कारेनिन यह साबित कर रहा था कि पोलैंड का रूसीकरण केवल ऊंचे उसूलों के परिणामस्वरूप ही सम्भव है, जिन्हें रूसी प्रशासन को वहां लागू करना चाहिये।

पेसत्सोव इस बात पर ज़ोर दे रहा था कि एक जाति दूसरी जाति में तभी जज़्ब होती है, जब उस दूसरी जाति की आबादी बहुत घनी हो।

कोज़्निशेव दोनों से सहमत था, मगर कुछ हद तक ही। जब वे मेहमानखाने से बाहर निकल रहे थे, तो कोज़्निशेव ने बहस खत्म करने के लिये मुस्कराकर कहा:

"इसलिये विदेशियों के रूसीकरण का एक ही उपाय है – अधिक से

न्वे पैदा करना। मैं और मेरा भाई इस मामले में सबसे
रहे हैं। लेविन आप, विवाहित महानुभाव और विशेषत
ब्लोन्स्की, इस मामले मे बहुत देशभक्ति दिखा रहे हैं – कितने
आपके?" उसने स्नेहपूर्वक मुस्कराते और छोटा-सा जाम मेज-
सामने करते हुए पूछा।
ो खिलखिलाकर हस पड़े और ओब्लोन्स्की तो खास तौर पर
ते हुए हसा।
हा, यही सबसे अच्छा उपाय है," वह पनीर चबाते और अपने
बढ़ाये गये जाम मे कोई खास किस्म की वोदका डालते हुए
तो इस तरह हसी-मज़ाक के साथ बातचीत खत्म हुई।
यह पनीर कुछ बुरा नही है। तो लेगे? मेज़बान ने कहा। "तुम
फिर से कसरत करने लगे हो?" उसने बायें हाथ से लेविन की
छूते हुए पूछा। लेविन मुस्कराया, उसने अपनी बाह की पेशियो
सकड़ाया और ओब्लोन्स्की को लेविन के फ्राककोट के कपड़े और
ी उगलियो के नीचे पनीर के सख्त पिड की तरह उभरे हुए इस्पाती
की सी अनुभूति हुई।
"ओह, कैसी मज़बूत मास-पेशिया हैं! बिल्कुल सैम्सन हो!"
"मेरे ख्याल मे भालू का शिकार करने के लिये आदमी मे बहुत
त होनी चाहिये," कारेनिन ने, जो शिकार की बहुत अस्पष्ट-सी
पना कर सकता था, डबलरोटी के मकड़ी के जाले जैसे पतले-से
ड़े पर पनीर लगाते हुए कहा।
लेविन मुस्कराया।
"ज़रा भी नही। इसके विपरीत, बच्चा भी भालू को मार सकता
," लेविन ने गृह-स्वामिनी के साथ कलेवे की मेज़ की ओर आती
हिलाओ को तनिक सिर भुकाते और एक ओर को हटते हुए कहा।
"मैंने सुना है कि आपने भालू का शिकार किया है?" कीटी ने
ाबू मे न आने और लगातार फिसलनेवाली खुमी को काटे से पकड़ने
ी कोशिश करते और लेसो को भटकते हुए, जिनके बीच से उसकी
ोरी बाह भलक रही थी, कहा।
ऐसा प्रतीत हो सकता था कि कीटी ने जो कहा था, उसमे कोई
खास बात नही थी। किन्तु कीटी ने जब यह कहा, तो लेविन के

स कमरे में ही नहीं, बल्कि सारी दुनिया में केवल उसका, जो महत्वपूर्ण और अहमियत रखनेवाला हो गया था, और कीटी का तित्व था। वह अपने को ऐसी चोटी पर महसूस कर रहा था, सिर चकराता है, और बाकी सभी लोग, ये भले और सज्जन नन और ओब्लोन्स्की, आदि तथा सारी दुनिया कहीं दूर थी, नीचे थी।

बहुत ही स्वाभाविक ढंग से, उनकी तरफ देखे बिना तथा इस, मानो उन्हें कहीं और बिठाने को जगह ही न हो, ओब्लोन्स्की ने न को कीटी के क़रीब बिठा दिया।

"तुम यहां भी बैठ सकते हो," उसने लेविन से कहा।

खाना वैसा ही बढ़िया था, जैसे बढ़िया बर्तन थे, जिनका ओब्लो-ी दीवाना था। 'मारी-लुईज़' शोरबा बहुत अच्छा बना था छोटी-टी और मुंह में घुलती जानेवाली कचौरियां एकदम नफ़ीस थीं। द टाइयां पहने मात्वेई और दो नौकर खाने की चीज़ों और शराबों से म्बन्धित हर काम चुपके-चुपके, दबे पांव और फुर्ती से निपटा रहे थे। जन भौतिक दृष्टि से सफल रहा और अभौतिक दृष्टि से भी उसमें छ कम सफलता नहीं मिली। कभी साझी और कभी अलग-अलग लोगों के बीच लगातार बातचीत चलती रही और खाने के अन्त में उसमें सी सजीवता आ गयी कि पुरुष बातचीत करते हुए ही मेज़ से उठे और कारेनिन तक रंग में आ गया।

(१०)

पेस्त्सोव को हर चीज़ पर अन्त तक विचार-विमर्श करना पसन्द था और उसे कोज़्निशेव के शब्दों से सन्तोष नहीं हुआ, खास तौर पर इसलिये कि वह अपने मत की भ्रान्ति को अनुभव कर रहा था।

"मेरा अभिप्राय सिर्फ़ आबादी की अधिकता से नहीं था," शोरबा खाते समय उसने कारेनिन को सम्बोधित करके कहा, "लेकिन मूलाधारों के साथ – न कि उसूलों के साथ – उसकी अधिकता से है।"

"मुझे ऐसा लगता है," कारेनिन ने धीरे-धीरे और मुरझाये हुए ढंग से जवाब दिया, "यह एक ही बात हो जाती है। मेरे ख्याल में

दूसरी जाति पर वही जाति प्रभाव डाल सकती है, जो अधिक विकसित होती है, जो "

"लेकिन यही तो सवाल है," पेसत्सोव ने कहा, जो हमेशा बोलने को उतावला रहता था और जो कहता था, हमेशा उसमें अपनी आत्मा का पूरा जोर डाल देता था, "अधिक विकसित होने का क्या मतलब समझा जाये? अंग्रेज, फ्रांसीसी, जर्मन – इनमें से कौन विकास की अधिक ऊंची सीढ़ी पर है? इनमें से कौन दूसरे को अपने प्रभाव में लायेगा? हम देखते हैं कि राइन पर बड़ा फ्रांसीसी प्रभाव पड़ गया है, लेकिन जर्मनों का स्तर नीचा नहीं है!" वह चिल्ला रहा था। "यहां कोई दूसरा नियम है!"

"मुझे लगता है कि हमेशा वही जाति प्रभावित करती है, जो सही अर्थ में सुशिक्षित होती है," कारेनिन ने अपनी भौंहों को तनिक ऊपर चढ़ाते हुए कहा।

"किन्तु वास्तविक सुशिक्षा के हमें क्या लक्षण मानने चाहिये?" पेसत्सोव ने पूछा।

"मेरे ख्याल में ये लक्षण सर्वविदित हैं," कारेनिन ने जवाब दिया।

"क्या पूरी तरह से सर्वविदित है?" कोज्निशेव ने हल्की सी मुस्कान के साथ बातचीत में दखल दिया। "आजकल यह माना जाता है कि वास्तविक शिक्षा केवल शुद्ध क्लासिकल हो सकती है। लेकिन हम दोनों पक्षों के बीच जोरदार वाद-विवाद देखते हैं और ऐसा नहीं माना जा सकता कि विपक्ष के पास अपने समर्थन में प्रबल तर्क नहीं है।"

'आप क्लासिकों में से एक हैं, सेर्गेई इवानोविच। लाल शराब दूं?' ओब्लोन्स्की ने कहा।

"मैं इस या उस शिक्षा के बारे में अपनी राय नहीं जाहिर कर रहा हूं," कोज्निशेव ने किसी बच्चे के प्रति दिखायी जानेवाली कृपापूर्ण की मुस्कान के साथ मुस्कराते और अपना जाम बढ़ाते हुए कहा। "मैं सिर्फ इतना कह रहा हूं कि दोनों पक्षों के पास जोरदार दलीलें हैं" कारेनिन को सम्बोधित करते हुए वह कहता गया। "मुझे क्लासिकल शिक्षा मिली है, मगर इस बहस में मैं खुद किसी नतीजे पर पहुंचना सम्भव नहीं पा रहा हूं। मैं साफ तौर पर यह समझने में असमर्थ हूं

कि प्राकृतिक विद्याओ की तुलना मे क्लासिकल विद्याओं को क्यों श्रेष्ठ माना जाये।"

"प्राकृतिक विज्ञानो का भी वैसा ही शैक्षणिक प्रभाव होता है," पेसत्सोव ने बात आगे बढ़ाई। "मिसाल के लिये खगोलशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र, सामान्य नियमविधि सहित प्राणिशास्त्र मे से किसी एक को ले लीजिये!"

मैं इससे पूरी तरह सहमत होने मे असमर्थ हू," कारेनिन ने जवाब दिया।

मुझे लगता है, यह स्वीकार किये बिना नही रहा जा सकता कि ओं के रूपो के अध्ययन की प्रक्रिया ही मानसिक विकास पर विशेष ड़ा प्रभाव डालती है। इसके अलावा इस बात को भी अस्वीकार । किया जा सकता कि क्लासिकल लेखको का उच्चतम नैतिक प्रभाव ता है जबकि दुर्भाग्यवश, प्राकृतिक विज्ञानो के साथ ऐसे हानिकारक गैर झूठे सिद्धान्त सम्बद्ध हैं, जो हमारे समय के कोढ़ हैं।"

कोज्निशेव ने कुछ कहना चाहा, लेकिन पेसत्सोव ने अपनी भारी आवाज़ में उसे टोक दिया। वह बड़े जोश के साथ यह सिद्ध करने लगा कि ऐसा मत उचित नहीं है। कोज्निशेव इतमीनान से कुछ कह पाने का इन्तज़ार करने लगा। स्पष्टत उसने कोई अकाट्य आपत्ति तैयार कर ली थी।

लेकिन,' कोज्निशेव ने हल्की-सी मुस्कान के साथ कारेनिन को सम्बोधित करते हुए कहा, "इस बात से सहमत न होना असम्भव है कि इन दोनो प्रकार की विद्याओ के लाभ-हानियो का सही अनुमान लगाना कठिन है और यह प्रश्न कि किन विद्याओ को बेहतर माना जाना जाये इतनी जल्दी और अन्तिम रूप से हल न हो पाता, अगर क्लासिकल शिक्षा के पक्ष में यह श्रेष्ठता न होती, जिसका आपने अभी उल्लेख किया है यानी नैतिक – disons le mot* – सर्वखण्डनवाद-विरोधी प्रभाव।'

बिल्कुल नही।"

अगर क्लासिकल विद्याओ के पक्ष मे सर्वखण्डनवाद-विरोधी प्रभाव की यह श्रेष्ठता न होती, तो हम दोनो पक्षो के तर्कों पर अधिक सोच-विचार करते, उन्हे अधिक जाचने-परखने," कोज्निशेव हल्की-सी

---

* साफ़ शब्दो में। (फ्रासीसी)

मुस्कान के साथ कहे जा रहा था, "हमने दोनों प्रवृत्तियों को अधिक विस्तार दिया होता। किन्तु अब हम जानते हैं कि क्लासिकल शिक्षा इन गोलियों में सर्वध्वंसवाद के विरुद्ध स्वास्थ्यप्रद शक्ति निहित है हम बड़े साहस से अपने रोगियों को उनका सेवन करने को कहते और अगर उनमें यह रोगहर शक्ति न होती, तो?" उसने म का मसाला छिड़कते हुए अपनी बात समाप्त की।

कोज्निशेव की गोलियों वाली बात से सभी हंस पड़े। तुरोव्त्सिन तो खास तौर पर बहुत जोर से और खुश होकर हंसा। आखिर तो हंसने की कोई ऐसी बात सुनाई दी थी जिसकी वह यह बात सुनते हुए इन्तजार कर रहा था।

पेस्त्सोव को बुलाकर ओब्लोन्स्की ने भूल नहीं की थी। उ उपस्थित रहते एक क्षण को भी बुद्धिमत्तापूर्ण बातचीत बन्द नहीं सकती थी। कोज्निशेव ने अपने मज़ाक के साथ बातचीत समाप्त ही थी कि पेस्त्सोव ने दूसरी बात शुरू कर दी।

'इस बात से भी सहमत नहीं हुआ जा सकता,' वह बोला 'कि सरकार के सामने कोई ऐसा लक्ष्य था। सरकार सम्भवतः सामान्य विचारों से निर्देशित होती है और जो कदम वह उठाती है, उन सम्भाव्य प्रभावों को ध्यान में नहीं रखती। उदाहरण के लिये नारी शिक्षा को हानिकारक माना जाना चाहिये किन्तु सरकार नारियों विद्यालय और विश्वविद्यालय खोल रही है।

फौरन ही नारी शिक्षा के नये विषय पर बातचीत होने लगी। कारेनिन ने यह विचार प्रकट किया कि नारी शिक्षा के सवाल को आम तौर पर नारी स्वतन्त्रता के सवाल के साथ गड़बड़ा दिया जाता है और इसलिये उसे हानिकारक माना जा सकता है।

"इसके विपरीत मैं यह मानता हूं कि ये दोनों प्रश्न अविच्छिन्न रूप से एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं," पेस्त्सोव ने कहा। "यह तो [illegible] है। शिक्षा के अभाव के कारण नारी अधिकारों से वंचित है और शिक्षा का अभाव अधिकारों के अभाव के कारण है। यह नहीं कि नारियों को इस हद तक दासता में जकड़ा गया है, इतना पुराना है कि हम अक्सर यह समझना नहीं

"कर्तव्यों और अधिकारों के बीच चोली-दामन का रिश्ता है। सत्ता, धन और सम्मान – नारियां इन्हीं को तो चाहती हैं," पेसत्सोव ने कहा।

"यह तो वही बात है कि मैं धाय बनना चाहूं और इस बात का बुरा मानूं कि नारियों को इसके लिये पैसे दिये जाते हैं, मगर मुझे नहीं," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

तूरोवत्सिन ज़ोर से हंस पड़ा और कोज्निशेव को इस बात का अफ़सोस हुआ कि यह उसने नहीं कहा। कारेनिन भी मुस्कराये बिना न रह सका।

"लेकिन मर्द तो स्तन-पान नहीं करा सकते," पेसत्सोव ने आपत्ति की, "जबकि नारियां ..."

"क्यों नहीं, एक अंग्रेज़ ने किसी जहाज़ में अपने बच्चे को स्तन-पान कराया था," बूढ़े प्रिंस ने बेटियों के सामने इतनी छूट लेते हुए कहा।

"जितने ऐसे अंग्रेज़ हैं, उतनी ही नारियां कर्मचारिणें होंगी," कोज्निशेव बोला।

"लेकिन कोई ऐसी लड़की क्या करे, जिसका परिवार न हो?" ओब्लोन्स्की ने चीबिसोवा को याद करते हुए प्रश्न किया। पेसत्सोव का पक्ष लेते और उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए वह लगातार इसी लड़की को ध्यान में रख रहा था।

"अगर इस लड़की के किस्से की तह में जाया जाये, तो आपको मालूम होगा कि इस लड़की ने अपने या अपनी बहन के परिवार से, जहां उसे नारियों के करने लायक काम मिल सकता था, नाता तोड़ लिया था," डौली ने सम्भवतः यह अनुमान लगाकर कि ओब्लोन्स्की का किस लड़की से अभिप्राय है, बातचीत में अचानक भाग लेते हुए झल्लाकर कहा।

"लेकिन हम तो उसूल और आदर्श की बात कर रहे हैं!" पेसत्सोव ने अपनी गूंजती हुई भारी आवाज़ में एतराज़ किया। "नारी आत्मनिर्भर और सुशिक्षिता होने का अधिकार चाहती है। वह अपने लिये ऐसा ... होने की चेतना से पीड़ित और दबी-घुटी हुई है।"

"और मैं इस बात से पीड़ित और दबा-घुटा हुआ हूं कि शिशु-

शासन-गृह में मुझे धाय के रूप में नहीं लिया जायेगा," बूढ़े प्रिंस ने फिर से अपनी बात दोहरायी, जिससे तुरोवत्सिन इतना खुश हुआ कि हंसते-हंसते मोटे सिरेवाली ऐस्पैरागस सब्जी को चटनी में गिरा बैठा।

(११)

कीटी और लेविन को छोड़कर बाकी सभी साथी बातचीत में हिस्सा ले रहे थे। शुरू में, जब एक जाति पर दूसरी जाति के प्रभाव की चर्चा हो रही थी, लेविन के दिमाग में बरबस वे बातें आ रही थी, जो वह इस विषय पर कह सकता था। किन्तु ये विचार, जो पहले उसके लिये इतने अधिक महत्त्वपूर्ण थे, स्वप्न में दिखनेवाली चीजों की तरह उसके दिमाग में झलक दिखाते थे और उसे अब उनमें जरा भी दिलचस्पी महसूस नहीं हो रही थी। उसे तो यह अजीब-सा भी लग रहा था कि जिस चीज की किसी को भी जरूरत नहीं है, उसके बारे में वे इतनी कोशिश से क्यों बातचीत कर रहे हैं। ठीक ऐसे ही यह प्रतीत हो सकता है कि नारियों के अधिकारों और शिक्षा के सम्बन्ध में वे जो कुछ कह रहे थे, उसमें कीटी की भी रुचि होनी चाहिये थी। विदेश में बनी अपनी सहेली वारेन्का, उसकी दुखद निर्भरता को याद करते हुए उसने कितनी बार इस सम्बन्ध में सोचा था। कितनी बार उसने अपने बारे में यह सोचा-विचारा था कि अगर उसकी शादी न हुई, तो वह क्या करेगी और कितनी बार उसने अपनी बहन से इस विषय पर बहस की थी। किन्तु अब उसे इसमें तनिक भी दिलचस्पी नहीं महसूस हो रही थी। लेविन के साथ उसकी कोई अपनी बातचीत चल रही थी। बातचीत नहीं, बल्कि कुछ ऐसे रहस्यपूर्ण ढंग से उनके दिलों के तार बज रहे थे, जो हर क्षण इन दोनों को अधिकाधिक निकटता के सूत्र में बांधते जा रहे थे और जिस अज्ञात दुनिया में वे प्रवेश कर रहे थे, उसके प्रति दोनों के दिलों में सुखद भय की भावना उपजा रहे थे।

सबसे पहले लेविन ने कीटी के इस सवाल के जवाब में कि पिछले साल वह उसे बग्घी में कैसे देख पाया, उसे बताया कि घास काटने के बाद वह बड़ी सड़क से घर जा रहा था और तब उसने उसे देखा था।

"बहुत तड़के की बात है यह। आपकी शायद तभी आंख खुली

३०*

"कर्तव्यों और अधिकारों के बीच चोली-दामन का रिश्ता है। सत्ता, धन और सम्मान – नारियां इन्हीं को तो चाहती हैं," पेसत्सोव ने कहा।

"यह तो वही बात है कि मैं धाय बनना चाहूं और इस बात का बुरा मानूं कि नारियों को इसके लिये पैसे दिये जाते हैं, मगर मुझे नहीं," बूढ़े प्रिंस ने कहा।

तुरोव्त्सिन ज़ोर से हंस पड़ा और कोज़्निशेव को इस बात का अफ़सोस हुआ कि यह उसने नहीं कहा। कारेनिन भी मुस्कराये बिना न रह सका।

"लेकिन मर्द तो स्तन-पान नहीं करा सकते," पेसत्सोव ने आपत्ति की, "जबकि नारियां ..."

"क्यों नहीं, एक अंग्रेज ने किसी जहाज में अपने बच्चे को स्तन-पान कराया था," बूढ़े प्रिंस ने बेटियों के सामने इतनी छूट लेते हुए कहा।

"जितने ऐसे अंग्रेज हैं, उतनी ही नारियां कर्मचारिणें होंगी," कोज्निशेव बोला।

"लेकिन कोई ऐसी लड़की क्या करे, जिसका परिवार न हो?" ओब्लोन्स्की ने चीबिसोवा को याद करते हुए प्रश्न किया। पेसत्सोव का पक्ष लेते और उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए वह लगातार इसी लडकी को ध्यान मे रख रहा था।

"अगर इस लडकी के किस्से की तह मे जाया जाये, तो आपको मालूम होगा कि इस लड़की ने अपने या अपनी बहन के परिवार से, जहा उसे नारियों के करने लायक काम मिल सकता था, नाता तोड लिया था," डौली ने सम्भवत: यह अनुमान लगाकर कि ओब्लोन्स्की का किस लडकी से अभिप्राय है, बातचीत में अचानक भाग लेते हुए झल्लाकर कहा।

"लेकिन हम तो उसूल और आदर्श की बात कर रहे हैं!" पेसत्सोव ने अपनी गूजती हुई भारी आवाज मे एतराज किया। "नारी आत्मनिर्भर और सुशिक्षिता होने का अधिकार चाहती है। वह अपने लिये ऐसा होने की चेतना से पीडित और दबी-घुटी हुई है।"

"और मैं इस बात से पीडित और दबा-घुटा हुआ हूं कि शिशु-

पालन-गृह मे मुझे धाय के रूप मे नही लिया जायेगा," बूढे प्रिंस ने फिर से अपनी बात दोहरायी, जिससे पुरोवलिन इतना खुश हुआ कि हसते-हसते मोटे सिरेवाली अस्पारागस गन्डी को चटनी में गिरा बैठा।

(११)

कीटी और लेविन को छोडकर बाकी सभी साभी बातचीत मे हिस्सा ले रहे थे। शुरू मे, जब एक जाति पर दूसरी जाति के प्रभाव की चर्चा हो रही थी, लेविन के दिमाग में बरबस वे बाते आ रही थी, जो वह इस विषय पर कह सकता था। किन्तु ये विचार, जो पहले उसके लिये इतने अधिक महत्त्वपूर्ण थे, स्वप्न में दिखनेवाली चीजों की तरह उसके दिमाग मे झलक दिखाते थे और उसे अब उनमे जरा भी दिलचस्पी महसूस नही हो रही थी। उसे तो यह अजीब-सा भी लग रहा था कि जिस चीज़ की किसी को भी जरूरत नही है, उसके बारे मे वे इतनी कोशिश से क्यो बातचीत कर रहे हैं। ठीक ऐसे ही यह प्रतीत हो सकता है कि नारियो के अधिकारो और शिक्षा के सम्बन्ध मे वे जो कुछ कह रहे थे, उसमे कीटी की भी रुचि होनी चाहिये थी। विदेश में बनी अपनी सहेली वारेन्का, उसकी दुखद निर्भरता को याद करते हुए उसने कितनी बार इस सम्बन्ध मे सोचा था! कितनी बार उसने अपने बारे मे यह सोचा-विचारा था कि अगर उसकी शादी न हुई, तो वह क्या करेगी और कितनी बार उसने अपनी बहन से इस विषय पर बहस की थी। किन्तु अब उसे इसमे तनिक भी दिलचस्पी नही महसूस हो रही थी। लेविन के साथ उसकी कोई अपनी बातचीत चल रही थी। बातचीत नहीं, बल्कि कुछ ऐसे रहस्यपूर्ण ढग से उनके दिलो के तार बज रहे थे, जो हर क्षण इन दोनो को अधिकाधिक निकटता के सूत्र मे बाधते जा रहे थे और जिस अज्ञात दुनिया मे वे प्रवेश कर रहे थे, उसके प्रति दोनो के दिलो मे सुखद भय की भावना उपजा रहे थे।

सबसे पहले लेविन ने कीटी के इस सवाल के जवाब मे कि पिछले साल वह उसे बग्घी मे कैसे देख पाया, उसे बताया कि घास काटने के बाद वह बडी सडक से घर जा रहा था और तब उसने उसे देखा था।

"बहुत तडके की बात है यह। आपकी शायद तभी आख खुली

आपकी maman अपने कोने में सो रही थीं। बहुत ही सुहानी सुबह थी। मैं चलता हुआ सोच रहा था – कौन हो सकता है यह चार घोड़ों वाली बग्घी मे? घटिया बधे घोड़ों की बढ़िया चौकड़ी थी और क्षणभर को आपकी झलक मिली। मैंने खिड़की की ओर देखा – आप ऐसे बैठी थीं दोनों हाथो मे अपनी टोपी के फीते थामे और किसी बहुत ही गहरी सोच में डूबी हुई," उसने मुस्कराते हुए कहा।"काश, मैं यह जान सकता कि उस वक्त आप क्या सोच रही थी। किसी बहुत ही महत्त्वपूर्ण चीज के बारे मे?"

"भूतनी जैसी तो नही बनी हुई थी?" कीटी ने सोचा। किन्तु इन तफसीलो की याद से लेविन के चेहरे पर झलक उठनेवाली सुखद मुस्कान से उसने यह अनुभव किया कि लेविन के दिल पर उसने बुरी नही, बल्कि बहुत अच्छी छाप छोडी थी। कीटी के चेहरे पर सुर्खी दौड गयी और वह उल्लासपूर्वक हस दी।

"सच, याद नही।"

"तूरोवत्सिन कैसे खुलकर हसता है!" लेविन ने उसकी नम आखो और हिलते शरीर को मुग्धता से देखते हुए कहा।

"बहुत अर्से से आप उसे जानते हैं क्या?" कीटी ने पूछा।

"उसे कौन नही जानता!"

"और मैं देख रही हू कि आप उसे बुरा आदमी समझते हैं।"

"बुरा नही, नाकारा।"

"यह सही नही है! अब से ऐसा नही सोचियेगा!" कीटी ने कहा। "उसके बारे मे मेरी भी ऐसी ही घटिया राय थी, लेकिन वह, वह – बहुत ही अच्छा और दयालु व्यक्ति है। सोने का दिल पाया है उसने।"

"उसके दिल के बारे मे आपको कैसे पता चला?"

"हम दोनो बडे अच्छे दोस्त हैं। मैं बहुत अच्छी तरह जानती हू उसे। पिछले जाडे मे, आपके हमारे यहा से जाने के कुछ ही समय बाद," कीटी ने अपराधी की तरह और साथ ही लेविन पर भरोसा जाहिर करती मुस्कान के साथ कहा, "डौली के सभी बच्चों को लाल बुखार ने आ दबाया और वह एक दिन उसके यहा आया। और आप कल्पना कर सकते है," कीटी फुसफुसाकर बोली, "उसे डौली पर। तरस आया कि वह वही रहकर बच्चों की देखभाल मे उसकी

मदद करने लगा। हा, तीन हफ्ते तक वही रहते हुए आया की तरह बच्चो की चिन्ता करता रहा।

"मैं कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच को लाल बुखार के दिनों में तुरोवत्सिन द्वारा की गयी सहायता के बारे मे बता रही हू," कीटी ने बहन की ओर झुककर बताया।

"हा, अद्भुत, बहुत ही बढ़िया आदमी है वह," डौली ने तुरोवत्सिन की ओर देखकर, जिसने यह महसूस कर लिया था कि उसकी चर्चा हो रही है, तथा उसकी तरफ ज़रा मुस्कराकर कहा। लेविन ने फिर तुरोवत्सिन पर नज़र डाली और उसे इस बात की हैरानी हुई कि वह इस व्यक्ति की खूबियो को पहले से क्यो नहीं भाप पाया।

"माफी चाहता हू, माफी चाहता हू। लोगो के बारे मे अब कभी बुरा नही सोचूगा।" इस समय वह जो कुछ अनुभव कर रहा था, उसे निश्छलता से अभिव्यक्त करते हुए उसने खुशी से कहा।

(१२)

नारियो के अधिकारो के बारे मे छिड जानेवाली बातचीत मे शादी सम्बन्धी असमान अधिकारो के कुछ ऐसे नाजुक सवाल थे, जिनकी महिलाओ की उपस्थिति मे चर्चा नही की जा सकती थी। भोजन के समय पेसत्सोव ने कई बार इन सवालो को उठाया, मगर कोज्निशेव और ओब्लोन्स्की ने बडी सावधानी से उन्हे टाल दिया।

जब सब मेज पर से उठ गये और महिलाये बाहर चली गयी, तो पेमत्सोव ने उनके पीछे-पीछे न जाकर कारेनिन को सम्बोधित किया और उसे असमानता का मुख्य कारण बताने लगा। उसके मतानुसार पति-पत्नी की असमानता इस बात मे थी कि न तो कानून और न समाज ही पति तथा पत्नी की बेवफाई का समान दण्ड देता है।

ओब्लोन्स्की जल्दी से कारेनिन के पास आया और उसने उसकी ओर सिगार बढाया।

"नही, मैं सिगार नहीं पीता हू," कारेनिन ने शान्ति से [illegible] दिया और मानो जान-बूझकर यह ज़ाहिर करने के [illegible]

"लेकिन उसने क्या किया है?" डौली ने पूछा। "क्या किया है उसने?"

"उसने अपने कर्तव्यों की अवहेलना और पति के साथ बेवफाई की है। यह किया है उसने," कारेनिन ने जवाब दिया।

"नहीं, नहीं, यह नहीं हो सकता! नहीं, भगवान के लिये ऐसा नहीं कहिये। आप भूल कर रहे हैं," डौली ने हाथों से कनपटियों को छूते और आंखें बन्द करते हुए कहा।

कारेनिन डौली और खुद को अपने यकीन की पुख्तगी दिखाने की इच्छा से केवल होंठों पर रूखी सी मुस्कान लाते हुए मुस्कराया। किन्तु इस जोरदार वकालत से बेशक वह डावांडोल नहीं हुआ, पर इसने उसके घाव पर नमक जरूर छिड़क दिया। वह अधिक जोश से बोलने लगा।

"जब पति के सामने पत्नी स्वयं इसकी घोषणा करे, तब भूल करने का प्रश्न ही नहीं रहता। यह घोषणा करे कि विवाहित जीवन के आठ वर्ष और बेटा – यह सब भूल है और वह फिर से जिन्दगी शुरू करना चाहती है," उसने नाक से सू-सू करते हुए झल्लाहट से कहा।

"आन्ना और दुराचार – मैं इन दोनों को सूत्रबद्ध नहीं कर सकती, मुझे इसपर विश्वास नहीं होता।"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना!" अब उसने डौली के दयालु और विह्वल चेहरे पर सीधे नजर टिकाते और यह अनुभव करते हुए कि उसकी जबान बोलने को बेचैन है, कहा। "अगर अभी शक-शुबहे की गुंजाइश होती, तो मैं इसके लिये बड़ी कीमत चुकाने को तैयार हो जाता। जब मुझे सन्देह था, तो मन पर भारी गुजरने के बावजूद मैं इस समय की तुलना में कम दुखी था। जब तक मैं सन्देह की दुविधा में था, तो कुछ आशा भी थी, लेकिन अब आशा नहीं और फिर भी मैं हर चीज के बारे में सन्देह करता हूं। हर चीज के बारे में मैं ऐसे सन्देह करता हूं कि बेटा भी मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता और कभी-कभी यह भी यकीन नहीं होता कि वह मेरा बेटा है। मैं बहुत दुखी हूं।"

उसके लिये ये अन्तिम शब्द कहना अनावश्यक था। डौली की ओर नजर करते ही वह यह समझ गयी, उसे कारेनिन के लिये अफसोस होने लगा और अपनी सहेली के निर्दोष होने के बारे में उसका विश्वास डगमगा गया।

"लेकिन उसने क्या किया है?" डौली ने पूछा। "क्या किया है उसने?"

"उसने अपने कर्तव्यों की अवहेलना और पति के साथ बेवफाई की है। यह किया है उसने," कारेनिन ने जवाब दिया।

"नही, नही, यह नही हो सकता! नही, भगवान के लिये ऐसा नही कहिये। आप भूल कर रहे हैं!" डौली ने हाथो से कनपटियों को छूते और आखे बन्द करते हुए कहा।

कारेनिन डौली और खुद को अपने यकीन की पुख्तगी दिखाने की इच्छा से केवल होठो पर रूखी-सी मुस्कान लाते हुए मुस्कराया। किन्तु इस जोरदार वकालत से बेशक वह डावाडोल नही हुआ, पर इसने उसके घाव पर नमक जरूर छिडक दिया। वह अधिक जोश से बोलने लगा।

"जब पति के सामने पत्नी स्वय इसकी घोषणा करे, तब भूल करने का प्रश्न ही नही रहता। यह घोषणा करे कि विवाहित जीवन के आठ वर्ष और बेटा – यह सब भूल है और वह फिर से जिन्दगी शुरू करना चाहती है," उसने नाक से सू-सू करते हुए झल्लाहट मे कहा।

"आन्ना और दुराचार – मैं इन दोनों को सूत्रबद्ध नही कर सकती, मुझे इसपर विश्वास नही होता।"

"दार्या अलेक्सान्द्रोव्ना!" अब उसने डौली के दयालु और विह्वल चेहरे पर सीधे नजर टिकाते और यह अनुभव करते हुए कि उसकी जबान बोलने को बेचैन है, कहा। "अगर अभी शक-शुबहे की गुजाइश होती, तो मैं इसके लिये बडी कीमत चुकाने को तैयार हो जाता। जब मुझे सन्देह था, तो मन पर भारी गुजरने के बावजूद मैं इस समय की तुलना मे कम दुखी था। जब तक मैं सन्देह की दुविधा मे था, तो कुछ आशा भी थी, लेकिन अब आशा नही और फिर भी मैं हर चीज के बारे मे सन्देह करता हू। हर चीज के बारे मे मैं ऐसे सन्देह करता हू कि बेटा भी मुझे फूटी आखों नही सुहाता और कभी-कभी यह भी यकीन नही होता कि वह मेरा बेटा है। मैं बहुत दुखी हू।"

उसके लिये ये अन्तिम शब्द कहना अनावश्यक था। डौली की ओर नजर करते ही वह यह समझ गयी, उसे कारेनिन के लिये अफसोस होने लगा और अपनी सहेली के निर्दोष होने के बारे मे उसका विश्वास डगमगा गया।

कह रहा था, उसे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी और वे दोनों जो कुछ कह रहे थे, उसमें तो और भी कम दिलचस्पी थी। वह केवल एक ही चीज चाहता था – इन दोनों और बाकी सब को भी खुशी और सुख मिले। वह अब जानता था कि उसके लिये सबसे महत्त्वपूर्ण एक चीज क्या है। वह एक चीज पहले वहां मेहमानखाने में थी, फिर हिलने-डुलने लगी और दरवाजे के पास जाकर रुक गयी। मुड़कर देखे बिना ही वह अपने पर टिकी दृष्टि और मुस्कान को अनुभव कर रहा था और मुड़े बिना नहीं रह सका। वह श्चेर्बात्स्की के साथ दरवाजे के पास खड़ी थी और उसकी तरफ देख रही थी।

"मैंने सोचा था कि आप पियानो की तरफ जा रही हैं," कीटी के करीब जाकर उसने कहा। "गांव में मुझे इस मशीन की ही कमी खलती है।"

"नहीं, हम केवल आपको बुलाने के लिये आये थे और आभारी हूं," उसने मानो मुस्कान के उपहार में उसे पुरस्कृत करते हुए कहा, "कि आप आ गये। बहस करने में क्या रखा है? कोई भी तो किसी दूसरे को अपनी बात का यकीन नहीं दिला पाता।"

"हां, यह सच है," लेविन ने कहा, "अधिकतर तो हम केवल इसलिये ज़ोर-शोर से बहस करते हैं कि हमारा विपक्षी क्या सिद्ध करना चाहता है, उसे नहीं समझ पाते हैं।"

बहुत बुद्धिमान लोगों के बीच वाद-विवाद के समय लेविन का अक्सर इस बात की ओर ध्यान गया था कि बहुत ज़ोर लगाने, तर्क-वितर्क की ढेरों बारीकियों और शब्दों के उपयोग के बाद बहस करनेवालों को आखिर इस बात की चेतना होती थी कि उन्होंने इतनी देर से एक-दूसरे के सामने जो कुछ सिद्ध करने की कोशिश की है, वह बहुत देर से, बहस के शुरू से ही उन्हें स्पष्ट था, लेकिन उनकी पसन्द अलग-अलग है और इस कारण अपनी पसन्द का उल्लेख नहीं करना चाहते कि विपक्षी उसे मात न दे दे। उसने अक्सर यह भी अनुभव किया कि कभी [illegible] वह चीज समझ में आ जाती है, जो विपक्षी [illegible] खुद को भी वही चीज पसन्द आ जाने पर हो जाते हो और तब सभी दलीलें बेकार [illegible] इसके उलट अनुभूति होती है – आखिर

न वह कहते हो, जो तुम्हें पसन्द है और जिसके लिये सोच-सोचकर र्क ढूढ़ते हो। इस चीज़ को अच्छे और निश्छल ढग से कह पाने मे फल होने पर ऐसा भी हो जाता है कि विरोधी अचानक सहमत होकर बहस करना बन्द कर देता है। लेविन यही कहना चाहता था।

कीटी अपने माथे पर बल डालकर उसकी बात समझने की कोशिश कर रही थी। किन्तु उसने अपनी बात स्पष्ट करनी शुरू ही की थी कि वह उसे समझ चुकी थी।

"आपका मतलब है—हमें यह जानना चाहिये कि विरोधी किस चीज़ के लिये बहस कर रहा है, उसे क्या पसन्द है, तब हम"

लेविन द्वारा बुरे ढग से व्यक्त किये गये भाव को कीटी ने पूरी तरह समझकर उसे व्यक्त कर दिया था। लेविन खुशी से मुस्करा दिया—उसे पेसत्सोव और अपने भाई के साथ उलझे-उलझाये ढेरों-ढेर शब्दों के बाद जटिलतम भावों की यह इतनी सक्षिप्त, स्पष्ट और लगभग शब्दहीन अभिव्यक्ति अत्यधिक आश्चर्यचकित करनेवाली प्रतीत हुई थी।

श्चेर्बात्स्की इनके पास से चला गया, कीटी ताश खेलने की मेज़ के पास जा बैठी और खड़िया लेकर नये हरे कपड़े पर एक केन्द्र से कई दिशाओं मे जानेवाले चक्र बनाने लगी।

इन दोनो ने नारियों की आज़ादी और उनके कार्यों के बारे मे खाने की मेज़ पर हुई बातचीत फिर से शुरू कर दी। लेविन डौली के इस विचार से सहमत था कि अविवाहित रह जानेवाली लड़की परिवार मे ही नारी के करने योग्य काम पा सकती है। उसने इस तर्क से इस मत की पुष्टि की कि किसी भी परिवार का सहायिका के बिना काम नही चल सकता, कि हर धनी या निर्धन परिवार मे या तो घर की या वेतन भोगी आया है और होनी चाहिये।

"नही," कीटी ने शर्म से लाल होते, किन्तु साथ ही अपनी निश्छल आखो से लेविन की ओर अधिक साहस से देखते हुए कहा, "लड़की ऐसी स्थिति मे हो सकती है कि तिरस्कार के बिना परिवार मे न जा सके, लेकिन वह खुद"

वह सकेत से ही कीटी की बात समझ गया।

"अरे, हा!" वह बोला, "हा, हा, आपकी बात सही है, आपकी बात सही है!"

खाने की मेज पर नारियों की आजादी के बारे में पेसत्सोव जो कुछ सिद्ध कर रहा था, वह सब कुछ केवल इसीलिये समझ गया कि कीटी के हृदय में उसने अविवाहित रह जाने और तिरस्कृत होने का भय देखा और चूंकि वह उसे प्यार करता था, इसलिये उसने इस भय और तिरस्कार को अनुभव किया तथा फौरन अपने तर्क वापस ले लिये।

खामोशी छा गयी। कीटी मेज पर खड़िया से चक्र बनाती जा रही थी। उसकी आंखों में धीमी-धीमी चमक थी। कीटी के मूड के अधीन होते हुए वह अपने अंग-अंग में सुख का अधिकाधिक बढ़ता हुआ तनाव अनुभव कर रहा था।

"ओह, मैंने पूरी मेज पर चक्र बना दिये!" कीटी ने कहा और खड़िया रखकर कुछ ऐसे हिली-डुली मानो उठना चाहती हो।

"इसके बिना मैं अकेला कैसे रहूंगा?" उसने भयभीत होकर यह सोचा और खड़िया हाथ में ले ली। "जरा रुकिये," मेज के पास बैठते हुए वह बोला। "मैं बहुत समय से आपसे एक बात पूछना चाहता था।"

लेविन ने कीटी की स्नेहपूर्ण, यद्यपि सहमी हुई नजर से नजर मिलाई।

"कृपया पूछिये।"

"तो यह पढ़िये," उसने कहा और वाक्य के ये पहले अक्षर लिख दिये: ज, आ, मु, य, ज, द, थ, क, ऐ, न, ह, स, त, क, इ, य, म, थ, क, क, न, ह, स, अ, क, त? इन अक्षरों का यह अर्थ था "जब आपने मुझे यह जवाब दिया था कि ऐसा नहीं हो सकता, तो क्या इसका यह मतलब था कि कभी नहीं हो सकता अथवा केवल तभी?" इस बात की कोई सम्भावना नहीं थी कि कीटी ऐसे जटिल वाक्य को समझ जाये, किन्तु लेविन ने ऐसी दृष्टि से उसकी ओर देखा, जो मानो कह रही थी – इसी बात पर मेरी जिन्दगी का दारोमदार है कि आप इन शब्दों को समझेंगी या नहीं।

कीटी ने गम्भीरता से लेविन की ओर देखा और फिर अपने माथे को, जिस पर बल पड़े हुए थे, हाथ पर टिकाकर इन अक्षरों को पढ़ने लगी। जब-तब वह उसकी ओर देखती और मानो अपनी नजर से यह पूछती "मैं जो सोच रही हूं, वह ठीक है या नहीं?"

(१५)

कीटी के जाने पर जब लेविन अकेला रह गया, तो उसके बिना उसने ऐसी बेचैनी और जल्दी सुबह तक, जब वह फिर उससे मिलेगा और उसके साथ चिर-बन्धन में बंध जायेगा, जल्दी से जल्दी सो लेने की तीव्र इच्छा अनुभव की, कि वह इन चौदह घण्टों से, जो अभी उसे उसके बिना बिताने थे, मौत की तरह भयभीत हो उठा। इसलिये कि वह अकेला न रहे, कि समय को छल सके, उसके लिये किसी की संगत में रहना और बातचीत करना जरूरी था। इस उद्देश्य के लिये ओब्लोन्स्की सबसे अच्छा रहता, मगर वह, जैसा कि उसने बताया था, रात की पार्टी में, किन्तु वास्तव में थियेटर जा रहा था। लेकिन उससे केवल इतना ही कह पाया कि वह बहुत खुश है और उसे प्यार करता है तथा कभी भी वह नहीं भूल सकेगा, जो उसने उसके लिये

है। ओब्लोन्स्की की दृष्टि और मुस्कान लेविन को यह स्पष्ट कर
थी कि वह उसकी इस भावना को सही रूप मे समझ रहा है।
"तो कहो, अभी मरने का वक्त तो नही आया न?" ओब्लोन्स्की
स्नेह से लेविन का हाथ दबाते हुए पूछा।
"नही!" लेविन ने जवाब दिया।
डौली ने भी लेविन से विदा लेने के समय मानो बधाई देते हुए
उससे कहा:
"कितनी खुश हू कि आपकी कीटी से फिर मुलाकात हुई। पुरानी
दोस्तियो को सहेजना चाहिये।"
किन्तु लेविन को डौली के ये शब्द अच्छे नही लगे। वह यह समझने
मे असमर्थ थी कि यह सब कितना ऊचा और उसकी समझ के परे था,
कि उसे यह याद दिलाने का साहस नही करना चाहिये था।
लेविन ने इनसे विदा ले ली, लेकिन इसलिये कि अकेला न रह
ये, अपने भाई के साथ चिपक गया।
"तुम कहा जा रहे हो?"
"बैठक मे भाग लेने।"
"मैं भी तुम्हारे साथ चलता हू। चल सकता हू?"
"चल क्यो नही सकते? चलो," कोज्निशेव ने मुस्कराकर कहा।
"तुम्हे आज हुआ क्या है?"
"मुझे? मैं आज सौभाग्यशाली हू!" लेविन ने जिस बग्घी मे वे
जा रहे थे, उसकी खिडकी का शीशा नीचे गिराते हुए कहा। तुम्हे
तो कोई आपत्ति नही? वरना दम घुटता है। मैं आज सौभाग्यशाली
हू! तुमने कभी शादी क्यो नही की?"
कोज्निशेव मुस्कराया।
"मैं बहुत खुश हू। लगता है कि वह बहुत भली लडकी
कोज्निशेव ने कहना चाहा।
"नही कहो, नही कहो, कुछ नही कहो!" लेविन ने दो
हाथो से भाई के कोट के कालर से उसके सीने को ढकते हुए कहा। '
बहुत भली लडकी है," इतने साधारण और घिसे-पिटे ये शब्द उ
भावना के बिल्कुल अनुरूप नही थे।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] हो।

[illegible] किस ढंग की सभाएं होती हैं?' लेविन ने मुस-कराते हुए पूछा।

वे बैठक में भाग लेने के लिये पहुंचे। लेविन ने सेक्रेटरी को हक-लाकर [illegible] बैंक की रिपोर्ट पढ़ते सुना, जिसे स्पष्टतः वह खुद नहीं समझ रहा था। किन्तु लेविन ने इस सेक्रेटरी के चेहरे से यह देखा कि वह कितना प्यारा, दयालु और भला आदमी है। रिपोर्ट पढ़ते समय वह कैसे घबरा रहा था, गड़बड़ कर रहा था, लेविन को यही उसकी भलमनसाहत का प्रमाण प्रतीत हुआ। इसके बाद भाषण शुरू हुए। वे कुछ रकम निर्धारित करने और पाइपें बिछाने के बारे में बहस कर रहे थे। कोज्निशेव ने दो सदस्यों को शब्दों के तीखे डंक मारे और विजेता की तरह काफी देर तक बोलता रहा। दूसरे सदस्य ने कागज पर कुछ लिखकर शुरू में तनिक झिझकते हुए बोलना आरम्भ किया, मगर बाद में उसने बड़े जहरीले और मधुर ढंग से उसे उत्तर दिया। इसके बाद स्वियाज्स्की ने (वह भी यहां था) भी बहुत सुन्दरता और उदात्तता से कुछ कहा। लेविन इन लोगों को सुन और स्पष्ट रूप से अनुभव कर रहा था कि न तो रकमें निर्धारित करने और न पाइपें बिछाने की बात ही कोई महत्व रखती थी और ये लोग बिल्कुल खीझ-भुनभुना नहीं रहे थे, बल्कि सभी बड़े दयालु और भले लोग थे और उनके बीच सभी कुछ बहुत अच्छे और प्यारे ढंग से हो रहा था। कोई भी किसी के लिये बाधा नहीं था, सभी को बहुत अच्छा लग रहा था। लेविन के लिये सबसे विलक्षण बात यह थी कि आज इन सभी को वह आर-पार देख पा रहा था और ऐसे छोटे-छोटे लक्षणों से, जिन्हें वह पहले नहीं

देख सका था, वह हर किसी की आत्मा को जानने में समर्थ था और साफ तौर पर देख रहा था कि वे सभी दयालु लोग थे। उसे लेविन को तो वे सभी आज खास तौर पर बहुत प्यार कर रहे थे। यह इस चीज से नजर आ रहा था कि कैसे वे उससे बात कर रहे थे, सभी अपरिचित लोग भी उसकी तरफ कैसे स्नेह से देख रहे थे।

"कहो, तुम्हें यहां अच्छा लगा?" कोज्निशेव ने उससे पूछा।

"बहुत ही। मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि यह इतना दिलचस्प होगा। बहुत खूब, बहुत बढ़िया!"

स्वियाज्स्की ने लेविन के पास आकर उसे अपने यहां चाय पीने के लिये आमन्त्रित किया। लेविन किसी भी तरह यह समझ और याद नहीं कर पा रहा था कि वह किस कारण स्वियाज्स्की से नाखुश था उससे क्या चाहता था। वह समझदार और अद्भुत रूप से दयालु व्यक्ति था।

"बड़ी खुशी से," उसने कहा और उसकी पत्नी तथा साली का हाल-चाल पूछा। विचारों के अजीब संयोग से, चूंकि स्वियाज्स्की की साली का विचार विवाह से ही सम्बन्धित था उसे लगा कि स्वियाज्स्की की पत्नी और साली से बेहतर और कोई व्यक्ति नहीं होगा, जिसे वह अपने सौभाग्य के बारे में बताये। इसलिये उनके यहां जाते हुए उसे बड़ी खुशी हो रही थी।

स्वियाज्स्की ने लेविन से गांव में उसके काम-काज के बारे में पूछ-ताछ की और सदा की भांति ऐसा कुछ ढूंढ पाने की सम्भावना को स्वीकार नहीं किया, जो यूरोप में खोज न लिया गया हो। लेविन को अब यह बिल्कुल बुरा नहीं लगा। इसके विपरीत, वह यह महसूस कर रहा था कि स्वियाज्स्की की बात सही है, कि यह सारा धन्धा बड़ा तुच्छ है तथा उस शराफत और नजाकत को महसूस कर रहा था, जिससे स्वियाज्स्की अपने सही होने की चर्चा से कन्नी काट रहा था। स्वियाज्स्की के घर की महिलायें तो विशेषतः बहुत अच्छे ढंग से पेश आ रही थीं। लेविन को लगा कि वे सब कुछ जानती हैं, उसके प्रति सहानुभूति रखती हैं, लेकिन मामले की नजाकत को महसूस करते हुए कुछ कहती नहीं हैं। वह उनके यहां एक, दो, तीन घण्टे बैठा हुआ तरह-तरह के विषयों पर बातें करता रहा, किन्तु उसी चीज के बारे में

सोचता रहा, जो उसके दिल-दिमाग़ पर छाई हुई थी। इस बात की ओर उसका ध्यान नहीं गया कि उसने बुरी तरह उन्हें उबा डाला है और बहुत पहले ही उनके सोने का वक़्त हो चुका है। स्वियाज्स्की जम्हाइयां लेते और अपने मित्र की मानसिक स्थिति पर हैरान होते हुए उसे ड्योढ़ी तक छोड़ गया। रात के एक बजने के बाद का वक़्त था। लेविन होटल में लौटा और यह सोचकर परेशान हो उठा कि अपनी बेकरारी-बेचैनी के साथ वह अभी शेष रह गये दस घण्टे अकेला कैसे बितायेगा। ड्यूटी बजानेवाले नौकर ने मोमबत्ती जला दी और जाना चाहा, किन्तु लेविन ने उसे रोक लिया। येगोर नाम का यह नौकर, जिसकी ओर लेविन का पहले ध्यान ही नहीं गया था, बहुत समझदार और भला तथा इससे भी बढ़कर, दयालु व्यक्ति प्रतीत हुआ।

"जागते रहना कठिन लगता है न, येगोर?"

"क्या किया जाये! काम ही ऐसा है। रईसों के घरों में चैन रहता है, मगर यहां आमदनी ज़्यादा है।"

पता चला कि येगोर का परिवार है, तीन बेटे और एक बेटी, जो दर्ज़िन है। वह ज़ीनसाज़ की दुकान के कारिन्दे के साथ उसकी शादी करना चाहता था।

इस सिलसिले में लेविन ने येगोर को अपना यह विचार बताया कि शादी के मामले में प्यार ही मुख्य चीज़ है और प्यार से आदमी सदा सुखी रहता है, क्योंकि सुख तो ख़ुद आदमी के भीतर ही होता है।

येगोर ने ध्यान से लेविन की बात सुनी और उसके विचार को सम्भवतः अच्छी तरह समझ गया, किन्तु इसकी पुष्टि में उसने लेविन के लिये अप्रत्याशित यह टिप्पणी की कि जब वह भले कुलीनों के यहां काम करता था, तो हमेशा उनसे सन्तुष्ट रहा और अब भी अपने मालिक से ख़ुश है, यद्यपि वह फ़्रांसीसी है।

"बहुत ही दयालु आदमी है," लेविन ने सोचा।

"येगोर, जब तुमने शादी की थी, तो क्या तुम अपनी बीवी को प्यार करते थे?"

"प्यार कैसे नहीं करता था," येगोर ने जवाब दिया।

लेविन ने देखा कि येगोर भी उल्लासपूर्ण मानसिक स्थिति में है और अपनी सभी आन्तरिक भावनायें व्यक्त करना चाहता है।

"मेरा जीवन भी अद्भुत है। मैं बचपन से ही " उसने आखो मे चमक लाते और स्पष्टत लेविन के उल्लास मे वैसे ही प्रभावित होकर कहना शुरू किया, जैसे लोग किसी दूसरे को जम्हाई लेते देखकर खुद जम्हाई लेने लगते है।

किन्तु इसी समय घण्टी बजी। येगोर चला गया और लेविन अकेला रह गया। उसने तीसरे पहर के भोजन के समय लगभग कुछ नही खाया था, स्वियाज्स्की के यहा रात के खाने और चाय से इन्कार कर दिया था, लेकिन रात के खाने के बारे मे सोच भी नही सकता था। वह पिछली रात सो नही सका था, किन्तु सोने का ख्याल भी ध्यान मे नही ला सकता था। कमरे मे ठण्डक थी, मगर उसका गर्मी से दम घुट रहा था। उसने खिडकी के दोनो झरोखे खोल दिये और उनके सामने मेज पर बैठ गया। बर्फ से ढकी छत के पीछे जजीरो सहित बेल-बूटोवाली सलीब दिखाई दे रही थी और उसके ऊपर उसे अत्यधिक चमकते पीले कैपेल्ला तारे के साथ प्रजापति नक्षत्र का तिकोण दिखाई दिया। वह कभी सलीब, तो कभी तारे पर नजर डालता, क्रमिक रूप से कमरे मे आनेवाली ताजा, बर्फीली हवा को सासो मे भरता और कल्पना-पट पर उभरनेवाले बिम्बो और स्मृतियो को मानो स्वप्न की भाति देखता। तीन बजने के बाद उसे गलियारे मे पैरो की आहट सुनाई दी और उसने दरवाजे मे से झाककर देखा। यह उसका परिचित जुआरी म्यास्किन था, जो क्लब से लौट रहा था। वह बडा उदास, नाक-भौह सिकोडे और खासता हुआ चल रहा था। "बेचारा, किस्मत का मारा," लेविन ने सोचा और इस व्यक्ति के प्रति प्यार और दया से उसकी आखे डबडबा आयी। उसने चाहा कि उससे बात करे, उसे तसल्ली दे, मगर यह ध्यान आने पर कि वह सिर्फ एक कमीज पहने है, उसने अपना इरादा बदल लिया और फिर से ठण्डी हवा मे स्नान करने और अनूठी बनावटवाली, मूक, किन्तु उसके लिये महत्वपूर्ण सलीब तथा ऊपर उठते हुए पीले चमकते तारे को देखे। छ बजते ही फर्श पर पालिश करनेवाले अपना काम करने लगे, किसी गिरजे मे घण्टिया बजने लगी तथा लेविन झुरझुरी महसूस करने लगा। उसने खिडकी का झरोखा बन्द कर दिया, हाथ-मुह धोया, कपडे पहने और बाहर सडक पर आ गया।

सोचता रहा, जो उसके दिल-दिमाग पर छाई हुई थी। इस बात की ओर उसका ध्यान नही गया कि उसने बुरी तरह उन्हे उबा डाला है और बहुत पहले ही उनके सोने का वक्त हो चुका है। स्वियाज्स्की जम्हाइयां लेते और अपने मित्र की मानसिक स्थिति पर हैरान होते हुए उसे ड्योढी तक छोड गया। रात के एक बजने के बाद का वक्त था। लेविन होटल मे लौटा और यह सोचकर परेशान हो उठा कि अपनी बेकरारी-बेचैनी के साथ वह अभी शेष रह गये दस घण्टे अकेला कैसे बितायेगा। ड्यूटी बजानेवाले नौकर ने मोमबत्ती जला दी और जाना चाहा, किन्तु लेविन ने उसे रोक लिया। येगोर नाम का यह नौकर, जिसकी ओर लेविन का पहले ध्यान ही नही गया था, बहुत समझदार और भला तथा इससे भी बढकर, दयालु व्यक्ति प्रतीत हुआ।

"जागते रहना कठिन लगता है न, येगोर?"

"क्या किया जाये! काम ही ऐसा है। रईसों के घरों मे चैन रहता है, मगर यहा आमदनी ज्यादा है।"

पता चला कि येगोर का परिवार है, तीन बेटे और एक बेटी, जो दर्जिन है। वह जीनसाज की दुकान के कारिन्दे के साथ उसकी शादी करना चाहता था।

इस सिलसिले मे लेविन ने येगोर को अपना यह विचार बताया कि शादी के मामले मे प्यार ही मुख्य चीज है और प्यार से आदमी सदा सुखी रहता है, क्योकि सुख तो खुद आदमी के भीतर ही होता है।

येगोर ने ध्यान से लेविन की बात सुनी और उसके विचार को सम्भवत अच्छी तरह समझ गया, किन्तु इसकी पुष्टि मे उसने लेविन के लिये अप्रत्याशित यह टिप्पणी की कि जब वह भले कुलीनो के यहा काम करता था, तो हमेशा उनसे सन्तुष्ट रहा और अब भी अपने मालिक से खुश है, यद्यपि वह फ्रांसीसी है।

"बहुत ही दयालु आदमी है," लेविन ने सोचा।

"... ..., जब तुमने शादी की थी, तो क्या तुम अपनी बीवी को ...?"

"... ऐसे नहीं करता था," येगोर ने जवाब दिया।

ने ... येगोर भी उल्लासपूर्ण मानसिक स्थिति मे है ... भावनाये व्यक्त करना चाहता है।

"मेरा जीवन भी अद्भुत है। मैं बचपन से ही ... " उसने आँखों में चमक लाते और स्पष्टतः लेनिन के उल्लास से वैसे ही प्रभावित होकर कहना शुरू किया, जैसे लोग किसी दूसरे को जम्हाई लेते देखकर खुद जम्हाई लेने लगते हैं।

किन्तु इसी समय घण्टी बजी। येगोर चला गया और लेनिन अकेला रह गया। उसने तीसरे पहर के भोजन के समय लगभग कुछ नहीं खाया था, सिवाल्स्की के यहां रात के खाने और चाय से इन्कार कर दिया था, लेकिन रात के खाने के बारे में सोच भी नहीं सकता था। वह पिछली रात सो नहीं सका था, किन्तु सोने का ख्याल भी ध्यान में नहीं ला सकता था। कमरे में ठण्डक थी, मगर उसका गर्मी से दम घुट रहा था। उसने खिड़की के दोनों झरोखे खोल दिये और उसके सामने मेज पर बैठ गया। बर्फ से ढकी छत के पीछे कंगूरे गाथिक बेल-बूटोंवाली मसीद दिखाई दे रही थी और उसके ऊपर उसे अत्यधिक चमकते पीले वीनस-सा तारे के साथ प्रकाशमान नक्षत्र का निशान दिखाई दिया। वह कभी मसीद, तो कभी तारे पर नजर डालता, खुली खिड़की से कमरे में आनेवाली ताजा बर्फीली हवा को सांसों में भरता और कल्पना-पट पर उभरनेवाले बिम्बों और स्मृतियों को मानो स्वप्न की भांति देखता। तीन बजने के बाद उसे गलियारे में पैरों की आहट सुनाई दी और उसने दरवाजे में से झांककर देखा। यह उसका परिचित जुआरी स्याम्किन था, जो क्लब से लौट रहा था। वह बड़ा उदास, नाक-भौंह सिकोड़े और खांसता हुआ चल रहा था। "बेचारा, किस्मत का मारा," लेनिन ने सोचा और इस व्यक्ति के प्रति प्यार और दया से उसकी आंखें डबडबा आयीं। उसने चाहा कि उससे बात करे, उसे तसल्ली दे, मगर यह ध्यान आने पर कि वह सिर्फ एक कमीज पहने है, उसने अपना इरादा बदल लिया और फिर से ठण्डी हवा में स्नान करने और अनूठी बनावटवाली, मूक, किन्तु उसके लिये महत्वपूर्ण मसीद तथा ऊपर उठते हुए पीले चमकते तारे को देखे। छः बजते ही फर्श पर पालिश करनेवाले अपना काम करने लगे, किसी गिरजे में घण्टियां बजने लगीं तथा लेनिन झुरझुरी महसूस करने लगा। उसने खिड़की का झरोखा बन्द कर दिया, हाथ-मुंह धोया, कपड़े पहने और बाहर सड़क पर आ गया।

सड़कें अभी सूनी पड़ी थीं। लेविन श्चेर्बात्स्की परिवार के घर के करीब पहुँचा। मुख्य द्वार बन्द था और सभी सो रहे थे। वह वापस लौटा, फिर से अपने होटल के कमरे में गया और कॉफ़ी लाने को कहा। येगोर के बजाय दिन के वक्त का बैरा कॉफ़ी लाया। लेविन ने उससे बातचीत शुरू करनी चाही, लेकिन बैरे को किसी ने घण्टी बजा कर बुला लिया और वह चला गया। लेविन ने कॉफ़ी पीना और केक का टुकड़ा मुह मे डालना चाहा, किन्तु उसका मुह मानो बिल्कुल नहीं समझ पा रहा था कि वह केक का क्या करे। लेविन ने केक थूक दिया, ओवरकोट पहना और फिर से बाहर चला गया। नौ से अधिक का समय हो चुका था, जब वह दूसरी बार श्चेर्बात्स्की परिवार के घर के सामने पहुँचा। घर के लोग अभी जागे ही थे और बावर्ची रसद लाने के लिये जा रहा था। अभी कम से कम दो घण्टे और बिताना लाज़िमी था।

लेविन ने पिछली रात और सुबह पूरी तरह अचेतनावस्था मे गुजारी थी और अपने को भौतिक जीवन की स्थितियो से एकदम मुक्त अनुभव करता रहा था। उसने दिन भर कुछ भी नही खाया था, दो रातो तक पलक नही झपकी थी, सिर्फ़ कमीज़ पहने हुए ही बर्फ़ीली हवा मे कई घण्टे गुजारे थे और न केवल इतना ताज़ादम और स्वस्थ अनुभव कर रहा था, जितना उसने कभी नही किया था, बल्कि अपने को शरीर से सर्वथा मुक्त महसूस कर रहा था। वह मांस-पेशियो के किसी प्रयास के बिना चल-फिर रहा था और अनुभव करता था कि सभी कुछ कर सकता है। उसे यकीन था कि ज़रूरत होने पर उड़ भी सकता है और किसी घर का कोना भी हिला-डुला सकता है। उसने लगातार घड़ी पर नज़र डालते और इधर-उधर देखते हुए बाकी वक्त बिताया।

लेविन ने इस समय जो कुछ देखा, इसके बाद फिर कभी नहीं देख पाया। विशेष रूप से स्कूल जाते बच्चों, छतो से पटरी पर उतरनेवाले नीलगू कबूतरों और पावरोटियों ने, जिन पर आटा छिड़का ... जिन्हें अदृश्य हाथ ने बाहर रख दिया था, विशेष रूप से

उसके दिल को छू लिया। ये पावरोटिया, कबूतर और दो लडके मानो इस दुनिया के प्राणी नही थे। यह सब एक ही वक्त हुआ – लडका भागता हुआ कबूतर के पास गया और मुस्कराते हुए उसने लेविन की तरफ देखा। कबूतर ने पख फडफडाये और हवा मे सिहरते हिमकणो के बीच से धूप मे अपने पखों को चमकाता हुआ उड गया। छोटी-सी खिडकी मे से सिकी हुई डबलरोटियो की सुगन्ध आ रही थी तथा पावरोटिया सामने आ रही थी। यह सब कुछ एक साथ इतना असाधारण रूप से अच्छा था कि लेविन खुशी से रो और हस पडा। गाजेत्नी गली और कीस्लोव्का का बडा-सा चक्कर लगाकर वह फिर होटल मे वापस आ गया और घडी को अपने सामने रखकर बारह बजने का इन्तज़ार करने लगा। बगल के कमरे मे मशीनो और धोखे-फरेब के बारे मे कुछ बातचीत हो रही थी और सुबह के ढग की खासी सुनाई दे रही थी। ये लोग नही समझ पा रहे थे कि घडी की सूई बारह के करीब पहुच रही है। बारह बज गये। लेविन बाहर आया। कोचवान सम्भवत सब कुछ जानते थे। खिले हुए चेहरोवाले इन कोचवानो ने उसे घेर लिया और आपस मे बहस करते हुए वे अपनी सेवाये पेश करने लगे। इस आशय से कि दूसरे कोचवानो के दिलो को ठेस न लगे, उसने किसी दूसरी बार उनकी गाडी मे जाने का वचन देते हुए एक कोचवान को चुन लिया और उसे श्चेर्बात्स्की परिवार के यहा चलने को कहा। कोट से ऊपर उठे और मज़बूत लाल गर्दन पर फिट बैठे सफेद कमीज़ के कालरवाला कोचवान बहुत खूब था। इस कोचवान की स्लेज ऊची और ऐसी आरामदेह थी कि फिर कभी उसे इस तरह की गाडी मे सवारी का मौका नही मिला। घोडा भी लाजवाब था, तेज़ भागने की कोशिश करता था, मगर मानो अपनी जगह से हिलता ही नही प्रतीत हो रहा था। कोचवान श्चेर्बात्स्की परिवार का घर जानता था और सवारी के प्रति विशेष आदर दिखाने के लिये कोहनियो को गोल बनाते तथा "तुर्र" कहकर घोडे को रोकते हुए लेविन को घर के सामने उतार दिया। श्चेर्बात्स्की परिवार का दरबान तो शायद सब कुछ जानता था। यह उसकी आखो की मुस्कान और जिस ढग से उसने निम्न शब्द कहे, स्पष्ट था "बहुत दिनो से नही पधारे, कोन्स्तान्तीन द्मीत्रियेविच!"

न केवल यह कि वह सब कुछ जानता था, बल्कि स्पष्टतः खुश था और अपनी खुशी को छिपाने के लिये प्रयत्नशील भी था। उसकी बूढ़ी प्यारी आंखों में झांकते हुए लेविन अपनी खुशी में कुछ और नया समझ पाया।

"जगकर उठ गये?"

"जी! इसे यहीं रख दीजिये," जब लेविन ने टोपी लेने के लिये वापस जाना चाहा, तो दरबान ने मुस्कराते हुए कहा। यह भी कुछ अर्थपूर्ण बात थी।

"किसे सूचित करने का आदेश दीजियेगा?" नौकर ने पूछा।

नौकर बेशक जवान और नये ढंग के नौकरों में से बांका-छैला था, फिर भी बहुत दयालु और भला आदमी था और वह भी सब कुछ समझता था।

"प्रिंसेस ... प्रिंस ... छोटी प्रिंसेस को," लेविन ने कहा।

लेविन को जो चेहरा सबसे पहले दिखाई दिया, वह mademoiselle Linon का था। वह हॉल को लांघ रही थी और उसके छिरले घुंघराले बाल तथा चेहरा चमक रहा था। लेविन ने उसके साथ बात शुरू ही की थी कि अचानक दरवाजे के पीछे फ्राक की सरसराहट सुनाई दी और mademoiselle Linon लेविन की आंखों के सामने से ओझल हो गयी और अपने सौभाग्य की निकटता की सुखद घबराहट से उसका दिल बैठ गया। Mademoiselle Linon ने उतावली की और उसे वहीं छोड़कर दूसरे दरवाजे की ओर बढ़ गयी। उसके बाहर जाते ही तख्तों के फर्श पर तेज और हल्के-फुल्के कदम बज उठे और उसकी खुशी, उसकी जिन्दगी, वह खुद—खुद उसका बेहतर भाग, वह, जिसकी वह इतने समय से तलाश और तमन्ना कर रहा था, बड़ी तेजी से उसके करीब आती जा रही थी। वह आ नहीं रही थी, बल्कि कोई अदृश्य शक्ति उसे उसकी तरफ खींचे ला रही थी।

लेविन केवल उसकी निर्मल और निश्छल आंखों को देख रहा था, जो प्यार की उसी खुशी से सहमी हुई थी, जिससे उसका अपना दिल सराबोर था। इन आंखों की चमक अधिकाधिक निकट आती जा रही ... प्यार के प्रकाश से उसे चकाचौंध कर रही थी। वह उसके

करीब आकर उसे छूती हुई रुक गयी। उसकी बाहें उठी और उसके कंधों पर टिक गयी।

वह जो कुछ कर सकती थी उसने सब कुछ कर दिया था – वह उसके पास भाग आयी थी और उसने झेंपते तथा मग्न होते हुए अपने को पूरी तरह उसे समर्पित कर दिया था। लेविन ने उसे अपने आलिंगन में भर लिया और उसके मुंह पर जो उसका चुम्बन पाना चाह रहा था अपने होंठ टिका दिये।

वह भी सारी रात नहीं सोई थी और पूरी सुबह उसकी राह देखती रही थी। माता-पिता पूरी तरह सहमत और उसकी खुशी में मग्न थे। वह उसकी राह देख रही थी। वही सबसे पहले उसे अपने तथा उसके सौभाग्य की सूचना देना चाहती थी। वह अकेली ही उससे मिलने इसके लिये अपने को तैयार करती रही थी और इस विचार में मग्न भी हुई थी झेंपी भी थी शर्माई भी थी तथा खुद यह नहीं जानती थी कि क्या करेगी। उसने लेविन के पैरों की आहट और आवाज सुनी तथा mademoiselle Linon के जाने तक दरवाजे के पीछे खड़ी रहकर राह देखती रही। वह कुछ सोचे विचारे और अपने से क्यों और कैसे पूछे बिना उसके पास चली गयी और वह किया जो उसने किया था।

"आइये, मां के पास चलें" लेविन का हाथ थामते हुए कीटी ने कहा। लेविन देर तक कुछ नहीं कह सका। इतना इसलिये नहीं कि वह शब्दों में अपनी भावनाओं की गरिमा नष्ट करने से डरता था जितना इसलिये कि हर बार जब उसने कुछ कहना चाहा उसे ऐसा अनुभव हुआ कि शब्दों के बजाय उसकी आंखों से खुशी के आंसू निकल आयेंगे। लेविन ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा।

क्या यह सच है? आखिर उसने खरखरी सी आवाज में कहा। 'यकीन नहीं होता कि तुम मुझे प्यार करती हो

कीटी उसके तुम और उस झीझक पर मुस्करा दी जि उसने उसकी तरफ देखा था।

"हां! कीटी ने विशेष महत्त्व के साथ और धीरे धीरे क बहुत सौभाग्यशालिनी हूं मैं।

लेविन का हाथ थामे हुए ही वह मेहमानखाने में दाखिल दोनों को देखते ही प्रिंसेस की सांस तेज़ हो गयी वे उसी क्षण र

शादी कब की जाये? तुम्हारा क्या ख्याल है, अलेक्सान्द्र?"

"इससे पूछो," बूढ़े प्रिंस ने लेविन की ओर संकेत करते हुए कहा। "यह तो इसी को तय करना है।"

"कब?" लेविन सम्मोहित होते हुए बोला। "कल। अगर आप मुझसे पूछते हैं, तो शायद आज सगाई और कल ब्याह हो जाना चाहिये।"

"बस, रहने दो, mon cher, यह बेकार बात है!"

"तो एक हफ़्ते बाद।"

"यह तो सचमुच पागल है।"

"लेकिन क्यों नहीं?"

"हे भगवान!" लेविन की इस उतावली पर खुशी से मुस्कराते हुए प्रिंसेस ने कहा। "और दहेज?"

"तो क्या दहेज और बाकी सब कुछ भी होगा?" लेविन ने दहलते दिल से सोचा। "लेकिन क्या दहेज और सगाई की रस्म और बाकी सब कुछ—क्या इससे मेरी खुशी का रंग बिगड़ सकता है? नहीं, किसी भी चीज़ से ऐसा नहीं हो सकता!" उसने कीटी की तरफ़ देखा और महसूस किया कि दहेज के विचार से उसे ज़रा भी ठेस नहीं लगी है। "इसका मतलब यह हुआ कि ऐसा होना चाहिये," उसने सोचा।

"बात यह है कि मैं कुछ भी नहीं जानता और मैंने केवल अपनी इच्छा ही व्यक्त की है," उसने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा।

"तो हम ही तय कर लेंगे। हम सगाई के साथ ही विवाह की घोषणा कर देंगे। यह ठीक रहेगा।"

प्रिंसेस अपने पति के पास गयी, उन्हें चूमा और जाना चाहा लेकिन पति ने उसे रोक लिया, बांहों में भरकर युवा प्रेमी की तरह कोमलता से तथा मुस्कराते हुए उसे कई बार चूमा। बूढ़े स्पष्टतः क्षण भर को अपनी सुध-बुध खो बैठे और उन्हें इस बात का पूरा ज्ञान नहीं रहा कि वे दोनों ही फिर से प्रेम-दीवाने हो गये हैं या उनकी बेटी ही। प्रिंस और प्रिंसेस के बाहर जाने पर लेविन अपनी मंगेतर के पास गया और उसका हाथ थाम लिया। अब उसने अपने को सम्भाल लिया था और बातें कर सकता था। उसे कीटी से बहुत कुछ कहना था। लेकिन उसने वह नहीं कहा, जो कहना था।

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी, किन्तु मेरे दिल में हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि किस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। "तब भी..." कीटी रुकी और अपनी निश्छल आंखों से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ आपको ही प्यार करती थी, मगर बहक गयी थी। मुझे यह कहना ही होगा... आप इसे भुला सकेंगे?"

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नहीं रह सकता कि..."

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था, यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बातें बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भांति पवित्र नहीं है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनों बातें कह ही देनी चाहिये।

"नहीं, अब नहीं, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना जरूर। मैं किसी भी चीज से नहीं डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह तय हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हूं आप मुझे उसी रूप में ग्रहण कर लेंगी, मुझसे इन्कार नहीं करेंगी न? नहीं न?"

"हां, हां, नहीं करूंगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत में बाधा डाल दिया था। बनावटी ढंग से, किन्तु मधुर मुस्कान लिये हुए अपनी प्यारी शिष्या को बधाई देने आई थी। उसके बाहर जाते ही नौकर-चाकर बधाई देने आ गये। बाद में रिश्तेदार आ पहुंचे और उस खुशी भरी हलचल का आरम्भ हुआ, जिससे लेविन को विवाह के अगले दिन तक छुटकारा नहीं मिली। लेविन लगातार असमंजस और ऊब अनुभव करता था, मगर खुशी की तीव्रता निरन्तर बढ़ती जा रही थी। वह

लगातार यह महसूस करता था कि उससे बहुत-सी ऐसी चीजों की अपेक्षा की जा रही है, जो वह नहीं जानता है और उसमें जो कुछ करने को कहा जाता, वह सब कुछ करता और इससे उसे खुशी नसीब होती। उसका ख्याल था कि उसकी सगाई दूसरों से बिल्कुल अलग किस्म की होगी, कि सगाई-शादी की आम रस्में उसके विशेष सुख-सौभाग्य का रंग बिगाड़ देंगी, लेकिन हुआ यह कि उसने भी वही कुछ किया, जो दूसरे करते थे और इससे उसकी खुशी बढ़ती चली गयी, अधिकाधिक अपने ढंग की ऐसी विशेष खुशी होती गयी, जो दूसरों ने कभी नहीं जानी थी।

"अब हम मिठाई खायेंगी," mademoiselle Linon ने कहा और लेविन मिठाई खरीदने चल दिया।

"बहुत खुशी हुई है मुझे," स्वियाज्स्की ने कहा। "मैं आपको फोमीन के यहां से गुलदस्ते खरीदने की सलाह देता हूं।"

"ऐसा करने की जरूरत है?" और वह फोमीन की दुकान पर चला गया।

बड़े भाई ने उससे कहा कि उसे कर्ज ले लेना चाहिये, क्योंकि बहुत खर्च होगा, उपहार खरीदने होंगे।

"उपहार चाहिये?" और वह फूल्डे के यहां चल दिया।

मिठाईवाले, फोमीन और फूल्डे के यहां उसने देखा कि उसकी राह देखी जा रही थी, कि उसके आने से उन्हें खुशी हुई और उन सभी की तरह, जिनके साथ इन दिनों उसका वास्ता पड़ता था, वे भी उसके सुख से आनन्द-विभोर हो रहे हैं। असाधारण बात तो यह थी कि सभी लोग न केवल उसे चाहते थे, बल्कि जो पहले उसके प्रति मैत्री का भाव नहीं रखते थे, उसके प्रति भावनाहीन और उदासीन थे, अब उसपर मुग्ध होते थे, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे, उसकी भावनाओं के प्रति बड़ी कोमलता और नजाकत दिखाते थे तथा उसकी इस आस्था को मानते थे कि वह संसार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति है, क्योंकि उसकी मंगेतर पूर्णता का चरम बिन्दु है। कीटी भी ऐसा ही अनुभव करती थी। काउंटेस नोर्डस्टोन ने जब यह संकेत करने की जुर्रत की कि वह कुछ बेहतर की कामना कर रही थी, तो कीटी इतने जोश में आ गयी और ऐसे अकाट्य रूप से उसने यह सिद्ध

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी, किन्तु मेरे दिल में हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि किस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। "तब भी ..." कीटी रुकी और अपनी निश्छल आंखों से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ आपको ही प्यार करती थी, मगर बहक गयी थी.. मुझे यह कहना ही होगा ... आप इसे भुला सकेंगे?"

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नहीं रह सकता कि ..."

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था, यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बातें बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भांति पवित्र नहीं है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनों बातें कह ही देनी चाहिये।

"नहीं, अब नहीं, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना जरूर। मैं किसी भी चीज से नहीं डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह तय हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हूं आप मुझे उसी रूप में ग्रहण कर लेंगी, मुझसे इन्कार नहीं करेंगी न? नहीं न?"

"हां, हां, नहीं करूंगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत में खलल डाल दिया, जो बेशक बनावटी ढंग से, किन्तु मधुर मुस्कान लिये हुए अपनी प्यारी शिष्या को बधाई देने आई थी। उसके बाहर जाते ही नौकर-चाकर बधाई देने आ गये। बाद में रिश्तेदार आ पहुंचे और उस सुखद शोर-शराबे का आरम्भ हुआ, जिससे लेविन को विवाह के ... तक मुक्ति नहीं मिली। लेविन लगातार अटपटापन और ... करता था, मगर खुशी की तीव्रता निरन्तर ...

लगातार यह महसूस करता था कि उससे बहुत-सी ऐसी चीजों की अपेक्षा की जा रही है, जो वह नहीं जानता है और उससे जो कुछ करने को कहा जाता, वह सब कुछ करता और इससे उसे खुशी नसीब होती। उसका ख्याल था कि उसकी सगाई दूसरो से बिल्कुल अलग किस्म की होगी, कि सगाई-शादी की आम रस्में उसके विशेष सुख-सौभाग्य का रंग बिगाड देगी, लेकिन हुआ यह कि उसने भी वही कुछ किया, जो दूसरे करते थे और इससे उसकी खुशी बढती चली गयी, अधिकाधिक अपने ढंग की ऐसी विशेष खुशी होती गयी, जो दूसरो ने कभी नही जानी थी।

"अब हम मिठाई खायेगी," mademoiselle Linon ने कहा और लेविन मिठाई खरीदने चल दिया।

"बहुत खुशी हुई है मुझे," स्वियाज्स्की ने कहा। "मैं आपको फोमीन के यहा से गुलदस्ते खरीदने की सलाह देता हूं।"

"ऐसा करने की जरूरत है?" और वह फोमीन की दुकान पर चला गया।

बडे भाई ने उससे कहा कि उसे कर्ज ले लेना चाहिये, क्योकि बहुत खर्च होगा, उपहार खरीदने होगे।

"उपहार चाहिये?" और वह फूल्डे के यहा चल दिया।

मिठाईवाले, फोमीन और फूल्डे के यहा उसने देखा कि उसकी राह देखी जा रही थी, कि उसके आने से उन्हे खुशी हुई और उन सभी की तरह, जिनके साथ इन दिनो उसका वास्ता पडता था, वे भी उसके सुख से आनन्द-विभोर हो रहे हैं। असाधारण बात तो यह थी कि सभी लोग न केवल उसे चाहते थे, बल्कि जो पहले उसके प्रति मैत्री का भाव नहीं रखते थे, उसके प्रति भावनाहीन और उदासीन थे, अब उसपर मुग्ध होते थे, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे, उसकी भावनाओ के प्रति बडी कोमलता और नजाकत दिखाते थे तथा उसकी इस आस्था को मानते थे कि वह ससार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति है, क्योकि उसकी मगेतर पूर्णता का चरम बिन्दु है। कीटी भी ऐसा ही अनुभव करती थी। काउटेस नोर्डस्टोन ने जब यह सकेत करने की जुर्रत की कि वह कुछ बेहतर की कामना कर रही थी, तो [illegible] मे आ गयी और ऐसे अकाट्य रूप से उसने यह सिद्ध

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी, किन्तु मेरे दिल मे हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि किस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। "तब भी..." कीटी रुकी और अपनी निश्छल आखो से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ आपको ही प्यार करती थी, मगर बहक गयी थी... मुझे यह कहना ही होगा... आप इसे भुला सकेंगे?"

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नही रह सकता कि..."

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था, यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बाते बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भाति पवित्र नही है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनो बाते कह ही देनी चाहिये।

"नही, अब नही, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना जरूर। मैं किसी भी चीज से नही डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह तय हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हू आप मुझे उसी रूप मे ग्रहण कर लेगी, मुझसे इन्कार नही करेगी न? नही न?"

"हा, हा, नही करूगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत मे खलल डाल दिया, जो बेशक बनावटी ढग से, किन्तु मधुर मुस्कान लिये हुए अपनी प्यारी शिष्या को बधाई देने आई थी। उसके बाहर जाते ही नौकर-चाकर बधाई देने आ गये। बाद मे रिश्तेदार आ पहुचे और उस सुखद शोर-शराबे का आरम्भ हुआ, जिससे लेविन को विवाह के अगले दिन तक मुक्ति नही मिली। लेविन लगातार अटपटापन और ऊब अनुभव करता था, मगर खुशी की तीव्रता निरन्तर बढ़ती जा रही थी। वह

लगातार यह महसूस करता था कि उससे बहुत-सी ऐसी चीज़ों की अपेक्षा की जा रही है, जो वह नहीं जानता है और उससे जो कुछ करने को कहा जाता, वह सब कुछ करता और इससे उसे खुशी महसूस होती। उसका ख्याल था कि उसकी सगाई दूसरों से बिल्कुल अलग किस्म की होगी, कि सगाई-शादी की आम शर्तें उसके विशेष सुख-सौभाग्य का रंग बिगाड़ देंगी, लेकिन हुआ यह कि उसने भी वही कुछ किया, जो दूसरे करते थे और इससे उसकी खुशी बढ़ती चली गयी, अधिकाधिक अपने ढंग की ऐसी विशेष खुशी होती गयी जो दूसरों ने कभी नहीं जानी थी।

"अब हम मिठाई खायेंगी," mademoiselle Linon ने कहा और लेविन मिठाई खरीदने चल दिया।

"बहुत खुशी हुई है मुझे," स्वियाज्स्की ने कहा। "मैं आपको फोमीन के यहां से गुलदस्ते खरीदने की सलाह देता हूं।"

"ऐसा करने की ज़रूरत है?" और वह फोमीन की दुकान पर चला गया।

बड़े भाई ने उससे कहा कि उसे कर्ज़ ले लेना चाहिये, क्योंकि बहुत खर्च होगा, उपहार खरीदने होंगे।

"उपहार चाहिये?" और वह फूल्दे के यहां चल दिया।

मिठाईवाले, फोमीन और फूल्दे के यहां उसने देखा कि उसकी राह देखी जा रही थी, कि उसके आने से उन्हें खुशी हुई और उन सभी की तरह, जिनके साथ इन दिनों उसका वास्ता पड़ता था, वे भी उसके सुख से आनन्द-विभोर हो रहे हैं। असाधारण बात तो यह थी कि सभी लोग न केवल उसे चाहते थे, बल्कि जो पहले उसके प्रति मैत्री का भाव नहीं रखते थे, उसके प्रति भावनाहीन और उदासीन थे, अब उसपर मुग्ध होते थे, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे, उसकी भावनाओं के प्रति बड़ी कोमलता और नज़ाकत दिखाते थे तथा उसकी इस आस्था को मानते थे कि वह संसार का सबसे सौभाग्यशाली व्यक्ति है, क्योंकि उसकी मंगेतर पूर्णता का चरम बिन्दु है। कीटी भी ऐसा ही अनुभव करती थी। काउंटेस नोर्डस्टोन ने जब यह संकेत करने की जुर्रत की कि वह कुछ बेहतर की कामना कर रही थी, तो कीटी इतने जोश में आ गयी और ऐसे अकाट्य रूप से उसने यह सिद्ध

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी, किन्तु मेरे दिल में हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यकीन है कि किस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। "तब भी..." कीटी रुकी और अपनी निश्छल आंखों से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ आपको ही प्यार करती थी, मगर बहक गयी थी। मुझे यह कहना ही होगा... आप इसे भुला सकेंगे?"

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नहीं रह सकता कि..."

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था, यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बातें बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भांति पवित्र नहीं है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनों बातें कह ही देनी चाहियें।

"नहीं, अब नहीं, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना जरूर। मैं किसी भी चीज से नहीं डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह तय हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हूं आप मुझे उसी रूप में ग्रहण कर लेंगी, मुझसे इन्कार नहीं करेंगी न? नहीं न?"

"हां, हां, नहीं करूंगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत में खलल डाल दिया, जो बेशक बनावटी ढंग से, किन्तु मधुर मुस्कान लिये हुए अपनी प्यारी शिष्या को बधाई देने आई थी। उसके बाहर जाते ही नौकर-चाकर बधाई देने आ गये। बाद में रिश्तेदार आ पहुंचे और उस शोर-शराबे का आरम्भ हुआ, जिससे लेविन को विवाह के बाद तक मुक्ति नहीं मिली। लेविन लगातार अटपटापन अनुभव करता था, मगर खुशी की तीव्रता निरन्तर बढ़ती

लगातार यह महसूस करता था कि उससे बहुत-सी ऐसी चीजों की अपेक्षा की जा रही है, जो वह नहीं जानता है और उससे जो कुछ करने को कहा जाता, वह सब कुछ करता और इससे उसे खुशी नसीब होती। उसका ख्याल था कि उसकी सगाई दूसरों से बिल्कुल अलग किस्म की होगी, कि सगाई-शादी की आम रस्में उसके विशेष सुख-सौभाग्य का रंग बिगाड़ देंगी, लेकिन हुआ यह कि उसने भी वही कुछ किया, जो दूसरे करते थे और इससे उसकी खुशी बढ़ती चली गयी, अधिकाधिक अपने ढंग की ऐसी विशेष खुशी होती गयी,जो दूसरों ने कभी नहीं जानी थी।

"अब हम मिठाई खायेंगे," mademoiselle Linon ने कहा और लेविन मिठाई खरीदने चल दिया।

"बहुत खुशी हुई है मुझे," स्वियाज्स्की ने कहा। "मैं आपको फोमीन के यहां से गुलदस्ते खरीदने की सलाह देता हूं।"

"ऐसा करने की जरूरत है?" और वह फोमीन की दुकान पर चला गया।

बड़े भाई ने उससे कहा कि उसे कर्ज ले लेना चाहिये, क्योंकि बहुत खर्च होगा, उपहार खरीदने होंगे।

"उपहार चाहिये?" और वह फूल्डे के यहां चल दिया।

मिठाईवाले, फोमीन और फूल्डे के यहां उसने देखा कि उसकी राह देखी जा रही थी, कि उसके आने से उन्हें खुशी हुई और उन सभी की तरह, जिनके साथ इन दिनों उसका वास्ता पड़ता था, वे भी उसके सुख से आनन्द-विभोर हो रहे हैं। असाधारण बात तो यह थी कि सभी लोग न केवल उसे चाहते थे, बल्कि जो पहले उसके प्रति मैत्री का भाव नहीं रखते थे, उसके प्रति भावनाहीन और उदासीन थे, अब उसपर मुग्ध होते थे, उसकी हर इच्छा पूरी करने की कोशिश करते थे, उसकी भावनाओं के प्रति बड़ी कोमलता और नज़ाकत दिखाते थे तथा उसकी इस आस्था को मानते थे कि वह संसार का सबसे सौभाग्य-शाली व्यक्ति है, क्योंकि उसकी मंगेतर पूर्णता का चरम बिन्दु है। कीटी भी ऐसा ही अनुभव करती थी। काउंटेस नोर्डस्टोन ने जब यह संकेत करने की जुर्रत की कि वह कुछ बेहतर की कामना कर रही थी, तो कीटी इतने जोश में आ गयी और ऐसे अकाट्य रूप से उसने यह सिद्ध

"मैं जानता था कि ऐसा ही होगा! मैंने कभी आशा नहीं की थी, किन्तु मेरे दिल में हमेशा इसका विश्वास बना रहा था," उसने कहा। "मुझे यक़ीन है कि क़िस्मत ने पहले से ही ऐसा तय कर दिया था।"

"और मैं?" वह बोली। 'तब भी ' कीटी रुकी और अपनी निश्छल आखों से दृढ़तापूर्वक उसकी ओर देखती हुई फिर से कहती गयी, "तब भी, जब मैंने अपने सौभाग्य को अपने से दूर किया था। मैं हमेशा सिर्फ आपको ही प्यार करती थी मगर बहक गयी थी मुझे यह कहना ही होगा आप इसे भुला सकेंगे?

"शायद यह अच्छा ही हुआ। आपको भी मुझे बहुत कुछ क्षमा करना होगा। मैं आपको बताये बिना नही रह सकता कि

लेविन ने कीटी को जो कुछ बताने का निर्णय किया था यह उनमें से एक बात थी। उसने शुरू से ही उसे दो बातें बताने का इरादा बना लिया था – कि वह उसकी भाति पवित्र नही है और दूसरे यह कि नास्तिक है। यह यातनापूर्ण था, किन्तु वह ऐसा मानता था कि उसे दोनों बाते कह ही देनी चाहिये।

"नही, अब नही, बाद को!" लेविन ने कहा।

"अच्छी बात है, बाद को, मगर बताना ज़रूर। मैं किसी भी चीज से नही डरती। मुझे सब कुछ जानना चाहिये। सो यह सब हो गया।"

लेविन ने कीटी की बात पूरी की

"तय यह हो गया कि मैं जैसा भी हू आप मुझे उसी रूप में [illegible] कर लेगी, मुझसे इन्कार नही करेंगी न? नही न?"

"हा, हा, नही करूगी।"

Mademoiselle Linon ने इनकी बातचीत [illegible]
दिया, जो बेशक [illegible] ढंग से, किन्तु मधुर [illegible]
प्यारी [illegible]
खाकर

लेविन के हताशापूर्ण चेहरे पर तरस खाते हुए उसने अपनी बात सम्भाली। "लेकिन यह भयानक, भयानक है।"

लेविन ने सिर झुका लिया और खामोश रहा। वह कुछ भी नहीं कह सका।

"आप मुझे क्षमा नहीं करेगी," वह फुसफुसाया।

"मैं क्षमा कर चुकी हू, लेकिन यह भयानक चीज है।"

किन्तु लेविन की खुशी इतनी ज्यादा थी कि इस स्वीकारोक्ति ने उसे कम नहीं किया, बल्कि केवल एक नया रग दे दिया। कीटी ने उसे क्षमा कर दिया था, मगर इस क्षण से वह अपने को उसके और अधिक अयोग्य मानने लगा, नैतिक दृष्टि से उसके सामने और अधिक झुक गया तथा जिस सौभाग्य के लायक नहीं था, उसका और ऊचा मूल्याकन करने लगा।

(१७)

तीसरे पहर के भोजन के समय और उसके बाद हुई बातचीतो के प्रभावो पर अनचाहे ही सोच-विचार करता हुआ कारेनिन अपने एकाकी कमरे को लौट रहा था। क्षमा के बारे मे डौली के शब्दो से उसे झल्लाहट ही महसूस हुई थी। ईसाई धर्म के नियम अपने मामले मे लागू होते थे या नहीं होते थे, यह प्रश्न बहुत जटिल था, जिसकी हल्के-फुल्के ढग से चर्चा नहीं की जा सकती थी और कारेनिन ने बहुत पहले से ही इसका नकारात्मक उत्तर दे दिया था। वहा जो कुछ कहा गया था, उस सब मे से बुढ्ढू और दयालु तूरोवत्सिन के ये शब्द उसे सबसे ज्यादा अच्छी तरह से याद रह गये थे शाबाश है उसे, द्वन्द्व-युद्ध के लिये ललकारा और दूसरी दुनिया मे पहुचा दिया। सम्भवत सभी को ये शब्द अच्छे लगे थे, यद्यपि उन्होंने शिष्टतावश ऐसा कहा नहीं था।

"कुल मिलाकर यह बात खत्म हो चुकी है, इसके बारे मे कुछ सोचने की जरूरत नहीं," कारेनिन ने अपने आपसे कहा। निकट भविष्य की अपनी यात्रा और जाच-कार्य के बारे मे सोचता हुआ वह होटल के कमरे मे दाखिल हुआ और पहुचाने के लिये पीछे-पीछे आनेवाले

[illegible] पूछा कि [illegible] है। [illegible]
[illegible] है। कारेनिन ने [illegible]
[illegible]
[illegible] लेकर [illegible] करने लगा।

"ये तार आये हैं," दरबान ने लौटते हुए कमरे में उपस्थित होते हुए कहा। "हुजूर, माफी चाहता हूं, मैं अभी-अभी बाहर गया था।"

कारेनिन ने तार लेकर उन्हें खोला। पहले तार में स्त्रेमोव के उसी पद पर, जो कारेनिन खुद पाना चाहता था, नियुक्त किये जाने का समाचार था। कारेनिन ने तार फेंक दिया, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और वह उठकर कमरे में इधर-उधर टहलने लगा। "Quos vult perdere dementat",* उसने कहा। Quos से उसका अभिप्राय उन लोगों से था, जिन्होंने इस नियुक्ति में योग दिया था। उसे इस बात का दुख नहीं था कि उसको वह जगह नहीं मिली थी, कि उसकी स्पष्ट अवहेलना कर दी गयी थी, लेकिन उसकी समझ में यह नहीं आ रहा था, उसे हैरानी हो रही थी कि कैसे उन लोगों का इस चीज की ओर ध्यान नहीं गया कि यह बातूनी और लफ्फाज स्त्रेमोव बाकी सभी के मुकाबले में इस जगह के अयोग्य था। वे लोग कैसे यह नहीं देख पाये थे कि स्त्रेमोव की नियुक्ति करके उन्होंने अपना बेड़ा गर्क कर लिया था, अपनी prestige** खो दी थी!

"इसमें भी कुछ ऐसा ही लिखा होगा," उसने दूसरा तार खोलते हुए खीझकर खुद से कहा। तार पत्नी का था। नीली पेंसिल से लिखे गये "आन्ना" शब्द पर सबसे पहले उसकी नजर गयी। "मर रही हूं, आने का अनुरोध, मिन्नत करती हूं। क्षमादान पाकर अधिक चैन से मर सकूंगी," उसने पढ़ा। कारेनिन ने तिरस्कारपूर्वक मुस्कराकर तार फेंक दिया। यह दगा और मक्कारी है, पहले क्षण में उसे इसमें शक की जरा भी गुंजाइश नहीं प्रतीत हुई।

"वह किसी भी तरह का धोखा-फरेब कर सकती है। वह बच्चे

---

* विनाश काले विपरीत बुद्धि अथवा गीदड़ की मौत आने पर वह शहर को भागता है। (लैटिन)

** प्रतिष्ठा। (फ्रांसीसी)

को देख रहा था। वह घर के सामने पहुंचा। दरवाज़े के करीब किराये की एक बग्घी और एक निजी बग्घी खड़ी थी, जिसमें कोचवान सो रहा था। ड्योढ़ी में दाखिल होते हुए कारेनिन ने मानो अपने दिमाग के किसी दूर के कोने से निर्णय प्राप्त किया और उसी पर अमल करने का इरादा बनाया। यह निर्णय था "अगर धोखा निकले, तो तिरस्कार-पूर्ण शान्ति के साथ वहां से चले जाना। अगर सच हो, तो व्यावहारिक शिष्टता दिखाई जाये।"

कारेनिन के घण्टी बजाने के पहले ही दरबान ने दरवाजा खोल दिया। टाई के बिना पुराना फ्राककोट और स्लीपर पहने हुए दरबान पेत्रोव, वैसे कपितोनिच अजीब-सा लग रहा था।

'मालकिन कैसी है?"

"कल सही-सलामत बच्चा हो गया।"

कारेनिन रुका और उसके चेहरे का रंग उड़ गया। वह अब साफ तौर पर यह समझ गया कि कैसे जी-जान से वह उसकी मौत चाहता है।

"और तबीयत कैसी है?"

सुबह का चोगा पहने हुए कोरनेई सीढ़ियों से नीचे भागा आया।

"बड़ी खराब है तबीयत उनकी," उसने जवाब दिया। "कल कई डाक्टर आये थे और अब भी डाक्टर यहा बैठा है।"

"चीजें भीतर ले जाओ," कारेनिन ने कहा और इस समाचार से कुछ राहत महसूस करते हुए कि अभी उसके मरने की कुछ सम्भावना है, अग्रकक्ष में गया।

खूंटी पर फौजी ओवरकोट लटका हुआ था। कारेनिन ने यह देखकर पूछा

"कौन है यहा?"

"डाक्टर, दाई और काउंट व्रोन्स्की।"

कारेनिन भीतरवाले कमरे में गया। मेहमानखाने में कोई नही था। उसके पैरो की आहट पाकर आन्ना के कमरे से बैगनी फीतोवाली टोपी पहने हुए दाई बाहर निकली।

वह कारेनिन के करीब आई और मृत्यु की निकटता अनुभव करते हुए कारेनिन का हाथ थामकर उसे सोने के कमरे मे ले गयी।

"शुक्र है भगवान का कि आप आ गये! सिर्फ आपकी,
ही चर्चा कर रही हैं," दाई ने कहा।

"जल्दी से बर्फ दीजिये!" डाक्टर की आदेशपूर्ण आवाज सुना

कारेनिन आन्ना के कमरे में गया। आन्ना की मेज़ के करी
नीची-सी कुर्सी पर व्रोन्स्की टेढ़ा बैठा था और चेहरे को हाथों से
हुए रो रहा था। डाक्टर की आवाज़ सुनाई पड़ने पर वह उ
खड़ा हुआ, उसने चेहरे से हाथ हटाये और कारेनिन को देखा। अ
पति को देखकर वह ऐसे चकराया कि सिर को कंधों के बीच दुबक
मानो कहीं गायब हो जाना चाहता हो, फिर से बैठ गया। लेकिन
कोशिश करके अपने को सम्भाला और बोला

"वह मर रही है। डाक्टर का कहना है कि उसके बच
कोई उम्मीद नहीं। मैं पूरी तरह से आपकी दया पर निर्भर हूं, लेकि
यहां रहने दीजिये वैसे, मैं वही करूंगा, जो आप चाहेंगे,

व्रोन्स्की के आंसू देखकर कारेनिन को वही मानसिक प
अनुभव होने लगी, जो दूसरों की व्यथा-पीड़ा देखकर उसे होती
उसने मुंह फेर लिया और व्रोन्स्की की पूरी बात सुने बिना तेज़ी
वाजे की ओर बढ़ गया। सोने के कमरे से आन्ना की आवाज़
दी। उसके स्वर में प्रफुल्लता और ज़िन्दादिली थी तथा उसकी
का उतार-चढ़ाव बिल्कुल साफ़ था। कारेनिन सोने के कमरे में अ
पलंग के पास गया। वह उसकी ओर मुंह करके लेटी हुई थी।
गालों पर लाली थी, आंखें चमक रही थीं और ब्लाउज़ के क
बाहर निकले हुए छोटे-छोटे गोरे हाथ कम्बल के छोर से खिलवा
रहे थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि वह न केवल स्वस्थ और ताज़ादम,
बहुत ही अच्छे मूड में है। वह जल्दी-जल्दी और गूंजती आवाज़
असाधारण रूप से सही और स्वर के भावनापूर्ण उतार-चढ़ाव के
में बोल रही थी।

"क्योंकि अलेक्सेई – मैं अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच की बात
रही हूं (कैसी अजीब और भयानक बात है न कि दोनों ही अ
हैं?) – अलेक्सेई मुझे इन्कार नहीं करता। मैं भूल जाती औ
मुझे माफ़ कर देता मगर वह आता क्यों नहीं? वह दया
वह खुद नहीं जानता कि कितना दयालु है। ओह, मेरे भगवान

ओर ऐसे स्नेह और ऐसी मुग्धता से देख रही थी, जैसी कि वह उसकी आंखों में कभी नहीं देख पाया था।

"ज़रा रुको, तुम नहीं जानते ... ठहरो, ठहरो ..." वह मानो अपने विचारों को सुव्यवस्थित करते हुए खामोश हो गयी। "हां," उसने कहना शुरू किया। "हां, हां, हां। तो मैं यह कहना चाहती थी। मुझ पर हैरान नहीं होओ। मैं वही हूं ... लेकिन मेरे भीतर एक दूसरी है, मैं उससे डरती हूं—वह उस दूसरे को प्यार करने लगी ... मैंने तुमसे नफ़रत करने की कोशिश की, लेकिन पहलेवाली उस अपने को भूल नहीं सकी। मैं वह नहीं हूं। अब मैं अपने असली रूप में हूं ... पूरी तरह से। मैं अब मर रही हूं, मैं जानती हूं कि मर जाऊंगी ... उससे पूछ लो। मैं इस वक्त भी महसूस कर रही हूं कि मेरे हाथ-पांव, मेरी उंगलियों पर मन-मन बोझ है। उंगलियां कैसी हैं—बहुत ही बड़ी, बड़ी! लेकिन यह सब कुछ जल्द ही खत्म हो जायेगा ... मुझे सिर्फ़ एक ही बात की ज़रूरत है—तुम मुझे माफ़ कर दो, पूरी तरह माफ़ कर दो! मैं बहुत बुरी हूं, लेकिन मेरी आया बताया करती थी कि वह पावन शहीद—क्या नाम है उसका? —वह मुझसे भी बुरी थी। मैं भी रोम चली जाऊंगी, वहां वीराना है और तब मैं किसी को परेशान नहीं करूंगी। सिर्फ़ सेर्योझा और बच्ची को साथ ले लूंगी ... नहीं, तुम माफ़ नहीं कर सकते! मैं जानती हूं कि ऐसी बात के लिये माफ़ नहीं किया जा सकता! नहीं, नहीं, चले जाओ, तुम ज़रूरत से ज़्यादा अच्छे हो!" आन्ना अपने एक गर्म हाथ में उसका हाथ थामे थी और दूसरे से उसे परे धकेल रही थी।

कारेनिन की मानसिक परेशानी बढ़ती गयी और ऐसी अवस्था तक पहुंच गयी कि उसने उसके विरुद्ध संघर्ष करना बन्द कर दिया। उसने अचानक यह अनुभव किया कि जिस चीज़ को वह अपनी मानसिक परेशानी मानता था, वास्तव में इसके प्रतिकूल उसकी आत्मा के परमानन्द की ऐसी स्थिति थी, जो सहसा उसे ऐसा सुख प्रदान कर रही थी, जिसकी उसे कभी अनुभूति नहीं हुई थी। उसके दिमाग़ में यह विचार नहीं आया कि ईसाई धर्म का वह नियम, जिसका वह जीवन भर अनुकरण करने का इच्छुक रहा था, इस बात की मांग करता था कि वह अपने शत्रुओं को क्षमा और उनसे प्यार करे। किन्तु दुश्मनों के प्रति

"हे भगवान! हे भगवान! कब खत्म होगा यह? मुझे मोर्फिया दीजिये। डाक्टर, मुझे मोर्फिया दीजिये। हे भगवान, हे मेरे भगवान!"

और वह पलग पर छटपटाने लगी।

डाक्टर और अन्य सहयोगी डाक्टरो का कहना था कि यह प्रसूति-ज्वर है, जिसमे निन्यानवे प्रतिशत मृत्यु की ही सम्भावना होती है। दिन भर जोर का बुखार, सरसाम और बेहोशी की हालत रही। आधी रात के वक्त रोगिनी पूरी तरह सज्ञाहीन थी और उसकी नब्ज भी लगभग गायब थी।

किसी क्षण भी मृत्यु होने की सम्भावना थी।

व्रोन्स्की अपने घर चला गया, लेकिन सुबह को स्थिति जानने के लिये लौट आया और कारेनिन ने ड्योढी मे उससे मुलाकात करते हुए कहा:

"रुक जाइये, हो सकता है कि वह आपसे मिलने की इच्छा जाहिर करे," और खुद उसे बीवी के कमरे मे ले गया।

सुबह को फिर से उत्तेजना, बेचैनी, विचारो और शब्दो की तीव्रता आरम्भ हुई तथा फिर बेहोशी के साथ अन्त हुआ। तीसरे दिन भी ऐसा ही हुआ तथा डाक्टरो ने कहा कि मरीज़ा के बचने की उम्मीद की जा सकती है। इस दिन कारेनिन उस कमरे मे गया, जहा व्रोन्स्की बैठा था और दरवाजा बन्द करके उसके सामने बैठ गया।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच," व्रोन्स्की ने यह अनुभव करते हुए कि स्पष्टीकरण का समय निकट आ गया है, कहा, "मैं न तो कुछ कह सकता हू और न कुछ समझ सकता हू। मुझ पर तरस खाइये। आपके दिल पर चाहे कितनी ही भारी क्यो न गुजर रही हो, किन्तु विश्वास कीजिये, मेरी हालत और भी अधिक बुरी है।"

उसने उठना चाहा। मगर कारेनिन ने उसका हाथ थाम लिया और कहा,

"मैं अनुरोध करता हू कि आप मेरी पूरी बात सुन ले। यह बहुत जरूरी है। मेरे लिये आपके सामने उन भावनाओ को स्पष्ट करना आवश्यक है, जिनसे मैं निर्देशित हुआ हू और आगे भी हूगा, ताकि मेरे बारे मे आपको कोई गलतफहमी न हो। आप जानते हैं कि मैंने

तलाक देने का फैसला कर लिया था और इस मामले को शुरू भी कर
दिया है। आपसे यह नहीं छिपाऊंगा कि इस मामले को शुरू करते
समय मैं दुविधा में था और मुझे यातना का शिकार होना पड़ा।
आपके सामने यह स्वीकार करता हूं कि आपसे और उससे बदला
लेने की भावना मुझे परेशान कर रही थी। जब मुझे तार मिला तो
मैं इन्हीं भावनाओं को लिये हुए यहां आया। इतना ही नहीं, मैंने उसकी
मौत की भी कामना की। किन्तु " वह यह सोचते हुए कि उसे
अपने दिल का भाव बताये या न बताये, कुछ देर खामोश रहा। "कि
मैंने उसे देखा और क्षमा कर दिया। क्षमा करने के सुख ने मुझे अ
कर्त्तव्य के बारे में सचेत किया। मैंने उसे बिल्कुल माफ कर दिया।
तमाचा खाने के लिये दूसरा गाल सामने करना चाहता हूं, मैं कं
उतारे जाने पर कमीज भी दे देना चाहता हूं* और भगवान से बेव
यही प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे क्षमा करने के सुख से वंचित
करे।" कारेनिन की आंखों में आंसू आ गये थे और व्रोन्स्की उस
दृष्टि की निर्मलता तथा चैन से चकित रह गया। "यह है मेरी स्थिति
आप मुझ पर कीचड़ उछाल सकते हैं, ऊंचे समाज में उपहास पा
बना सकते हैं, किन्तु मैं उसे तिलांजली नहीं दूंगा और आपको भ
कभी भर्त्सना का एक शब्द नहीं कहूंगा," वह कहता गया। "मे
लिये मेरा कर्त्तव्य बिल्कुल स्पष्ट है — मुझे उसके साथ होना चाहि
और मैं ऐसा ही करूंगा। अगर वह आपसे मिलने की इच्छा प्रक
करेगी, तो मैं आपको सूचना भिजवा दूंगा, लेकिन मेरे ख्याल में आ
आपके लिये यहां से चले जाना ही बेहतर होगा।"

कारेनिन उठकर खड़ा हो गया और सिसकियों के कारण उसक
गला रुंध गया। व्रोन्स्की भी उठकर खड़ा हुआ तथा सीधा हुए बिन
झुके-झुके ही माथे पर बल डालकर उसने कारेनिन की तरफ देखा।
कारेनिन की भावनायें उसकी समझ में नहीं आ रही थीं। मगर वह
महसूस कर रहा था कि यह कोई ऊंची भावना थी और उसके दृष्टि-क्षेत्र
की परिधि से परे थी।

---

* ... में उद्धृत।

ऐसे प्यार करने लगा था, जैसे करना चाहिये था, तो उसके सामने अपमानित हो गया था, उसे हमेशा के लिये खो बैठा था और आन्ना के दिल मे उसने लज्जाजनक स्मृतियां ही बाकी छोड दी थी। उसके लिये यह हास्यास्पद और लज्जाजनक स्थिति सबसे भयानक थी, जब कारेनिन ने शर्म से लाल हुए उसके चेहरे पर से उसके हाथ हटाये थे। वह कारेनिन परिवार के घर के बाहर खोया-सा खडा था और नही जानता था कि क्या करे।

"किराये की बग्घी ले आऊ, सरकार?" दरबान ने पूछा।

"हां, ले आओ।"

तीन उनींदी रातो के बाद घर लौटने पर व्रोन्स्की कपडे उतारे बिना ही औंधे मुह सोफे पर लेट गया, उसने हाथ जोड लिये और सिर को उनपर टिका लिया। उसका सिर भारी था। बहुत ही अजीब-अजीब तरह के बिम्ब स्मृतियां और विचार असाधारण तेजी तथा स्पष्टता से उसके दिमाग मे आने-जाने लगे। उसे दिखाई दिया कि वह रोगिनी के लिये दवाई डाल रहा है और चमचे मे से कुछ दवाई नीचे गिरा देता है, इसके बाद उसे दाई के गोरे हाथो की झलक मिली, और कारेनिन अजीब-सी स्थिति मे पलग के सामने फर्श पर बैठा नजर आया।

"सोना चाहिये! भूल जाना चाहिये!" उसने स्वस्थ व्यक्ति के ऐसे चैन भरे विश्वास के साथ कहा कि अगर वह थक गया है और सोना चाहता है, तो उसकी फौरन आंख लग जायेगी। सचमुच उसी क्षण उसके दिमाग मे सब कुछ गडबडाने लगा और वह विस्मृति की खाई मे धसकने लगा। अचेतन जीवन के सागर की लहरे उसके सिर के ऊपर लहराने लगी। अचानक मानो उसे बिजली का जोरदार झटका लगा हो, वह ऐसे जोर से सिहरा कि उसका सारा शरीर सोफे के स्प्रिगो पर उछल पडा और हाथो का सहारा लेते हुए वह अत्यधिक भयभीत होकर उछला तथा घुटनो के बल हो गया। उसकी आंखे ऐसे पूरी खुली हुई थी मानो उसे नींद आई ही न हो। एक क्षण पहले जो भारीपन और अगो का ढीलापन अनुभव हो रहा था गायब हो गया।

मुझ पर जितना भी चाहे, कीचड उछाल सकते है,"

उसे कारेनिन के शब्द सुनाई दिये और वह तथा दहकते लाल गालों एवं चमकती आंखोंवाली आन्ना उसे अपने सामने दिखाई दी, जो बड़े प्यार और कोमलता से उसे नहीं, बल्कि कारेनिन को देख रही थी। उसने, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, अपनी बुद्धू और हास्यास्पद-सी वह सूरत भी देखी, जब कारेनिन ने उसके चेहरे पर से हाथ हटाये थे। उसने फिर से टांगें सीधी कीं और पहलेवाली मुद्रा में सोफे पर लेटकर आंखें मूंद लीं।

"सोना चाहिये! सोना चाहिये!" उसने मन ही मन दोहराया। किन्तु मुंदी हुई आंखों से उसे अधिक स्पष्टता से आन्ना का चेहरा उस रूप में दिखाई दिया, जैसा घुड़दौड़ के पहले की स्मरणीय शाम को उसने देखा था।

"यह नहीं है और नहीं होगा तथा वह अपने स्मृति-पट से इसे मिटा देना चाहती है। किन्तु मैं इसके बिना जिन्दा नहीं रह सकता। कैसे हमारी सुलह हो सकती है, कैसे सुलह हो सकती है?" उसने ऊंचे-ऊंचे कहा और अनजाने ही इन शब्दों को दोहराने लगा। शब्दों की इस पुनरावृत्ति ने नये बिम्बों और स्मृतियों को, जो उसने अनुभव किया कि उसके मस्तिष्क में उमड़े आ रहे हैं, उभरने से रोका। किन्तु यह शब्द-पुनरावृत्ति उसकी कल्पना की उड़ान को कुछ ही देर तक रोक पायी। फिर से असाधारण तेजी से सुखद क्षण और उनके साथ ही कुछ पहले का अपमान भी आंखों के सामने उभर आया। 'हाथ हटाओ," आन्ना की आवाज सुनाई दी। उसने हाथ हटाये और व्रोन्स्की को अपने चेहरे के लज्जापूर्ण तथा बुद्धूपन के भाव की अनुभूति हुई।

व्रोन्स्की सोने की कोशिश करते हुए लेटा रहा, यद्यपि अनुभव कर रहा था कि इसकी तनिक भी आशा नहीं थी। वह किसी विचार के संयोगवश दिमाग में आनेवाले शब्दों को फुसफुसाते हुए दोहराता जा रहा था और इस तरह नये बिम्बों को उभरने से रोकना चाह रहा था। उसने कान लगाकर सुना और अजीब [illegible] जैसी फुसफुसाहट शब्दों की पुनरावृत्ति [illegible] — मूल्यांकन नहीं कर सके [illegible] अवसर से नहीं उठा सका।"

"यह क्या मामला है [illegible] मैं पागल होता जा रहा हूं?" [illegible] अपने सवाल किया [illegible] "शायद ऐसा ही है। आखिर लोग किसलिये [illegible]

ऐसे प्यार करने लगा था, जैसे करना चाहिये था, तो उसके सामने अपमानित हो गया था, उसे हमेशा के लिये खो बैठा था और आन्ना के दिल मे उसने लज्जाजनक स्मृतिया ही बाकी छोड दी थी। उसके लिये वह हास्यास्पद और लज्जाजनक स्थिति सबसे भयानक थी, जब कारेनिन ने शर्म से लाल हुए उसके चेहरे पर से उसके हाथ हटाये थे। वह कारेनिन परिवार के घर के बाहर खोया-सा खडा था और नहीं जानता था कि क्या करे।

"किराये की बग्घी ले आऊ, सरकार?" दरबान ने पूछा।

"हा, ले आओ।"

तीन उनीदी रातो के बाद घर लौटने पर व्रोन्स्की कपडे उतारे बिना ही औंधे मुह सोफे पर लेट गया, उसने हाथ जोड लिये और सिर को उनपर टिका लिया। उसका सिर भारी था। बहुत ही अजीब-अजीब तरह के बिम्ब, स्मृतिया और विचार असाधारण तेजी तथा स्पष्टता से उसके दिमाग मे आने-जाने लगे। उसे दिखाई दिया कि वह रोगिनी के लिये दवाई डाल रहा है और चमचे मे से कुछ दवाई नीचे गिरा देता है, इसके बाद उसे दाई के गोरे हाथो की झलक मिली, और कारेनिन अजीब-सी स्थिति मे पलग के सामने फर्श पर बैठा नजर आया।

"सोना चाहिये! भूल जाना चाहिये!" उसने स्वस्थ व्यक्ति के ऐसे चैन भरे विश्वास के साथ कहा कि अगर वह थक गया है और सोना चाहता है, तो उसकी फौरन आख लग जायेगी। सचमुच उसी क्षण उसके दिमाग मे सब कुछ गडबडाने लगा और वह विस्मृति की खाई मे धसकने लगा। अचेतन जीवन के सागर की लहरे उसके सिर के ऊपर लहराने लगी। अचानक मानो उसे बिजली का जोरदार झटका लगा हो, वह ऐसे जोर से सिहरा कि उसका सारा शरीर सोफे के स्प्रिगो पर उछल पडा और हाथो का सहारा लेते हुए वह अत्यधिक भयभीत होकर ~~उसका नया~~ घुटनो के बल हो गया। उसकी आखे ऐसे पूरी खुली हुई थी मानो उसे नींद आई ही न हो। एक क्षण पहले उसे सिर का जो भारीपन और अगो का ढीलापन अनुभव हो रहा था वह अचानक गायब हो गया।

"आप मुझ पर जितना भी चाहे, कीचड उछाल सकते है,"

उसे कारेनिन के शब्द सुनाई दिये और वह सदा दहकने लाज गालो एव चमकती आंखोवाली आन्ना उसे अपने सामने दिखाई दी, जो बडे प्यार और कोमलता से उसे नही, बल्कि कारेनिन को देख रही थी। उसने, जैसा कि उसे प्रतीत हुआ, अपनी बुद्धू और हास्यास्पद-सी वह सूरत भी देखी, जब कारेनिन ने उसके चेहरे पर से हाथ हटाये थे। उसने फिर से टांगें सीधी कीं और पहलेवाली मुद्रा में सोफे पर लेटकर आंखें मूद लीं।

"सोना चाहिये! सोना चाहिये!" उसने मन ही मन दोहराया। किन्तु मुंदी हुई आंखो से उसे अधिक स्पष्टता से आन्ना का चेहरा उस रूप मे दिखाई दिया, जैसा घुड़दौड़ के पहले की स्मरणीय शाम को उसने देखा था।

"यह नहीं है और नहीं होगा तथा वह अपने स्मृति-पट से इसे मिटा देना चाहती है। किन्तु मैं इसके बिना जिन्दा नहीं रह सकता। कैसे हमारी सुलह हो सकती है, कैसे सुलह हो सकती है?" उसने ऊंचे-ऊंचे कहा और अनजाने ही इन शब्दो को दोहराने लगा। शब्दो की इस पुनरावृत्ति ने नये बिम्बो और स्मृतियो को, जो उसने अनुभव किया कि उसके मस्तिष्क मे उमडे आ रहे हैं, उभरने से रोका। किन्तु यह शब्द-पुनरावृत्ति उसकी कल्पना की उडान को कुछ ही देर तक रोक पायी। फिर से असाधारण तेजी से सुखद क्षण और उनके साथ ही कुछ पहले का अपमान भी आंखो के सामने उभर आया। "हाथ हटाओ," आन्ना की आवाज सुनाई दी। उसने हाथ हटाये और व्रोन्स्की को अपने चेहरे के लज्जापूर्ण तथा बुद्धूपन के भाव की अनुभूति हुई।

व्रोन्स्की सोने की कोशिश करते हुए लेटा रहा, यद्यपि अनुभव कर रहा था कि इसकी तनिक भी आशा नहीं थी। वह किसी विचार के सयोगवश दिमाग मे आनेवाले शब्दो को फुसफुसाते हुए दोहराता जा रहा था और इस तरह नये बिम्बो को उभरने से रोकना चाह रहा था। उसने कान लगाकर सुना और अजीब [illegible] जैसी फुसफुसाहट मे इन शब्दो की पुनरावृत्ति [illegible] – मूल्यांकन नहीं [illegible] अवसर से लाभ नहीं उठा सका।"

"यह क्या मामला है? क्या मैं पागल होता जा रहा हूं?" [illegible] अपने आपसे सवाल किया। "शायद ऐसा ही है। आखिर लोग किसलिये

पागल होते हैं, किस कारण अपने को गोली का निशाना बनाते हैं?" उसने खुद को जवाब दिया और आखें खोलने पर अपने सिर के पास अपनी भाभी वार्या के हाथ की कशीदाकारी वाला तकिया देखकर हैरान रह गया। उसने तकिये के फुदने को छुआ और वार्या तथा यह याद करने की कोशिश करने लगा कि आखिरी बार उसकी उससे कब मुलाकात हुई थी। किन्तु किसी दूसरी बात के बारे मे सोचना यातनापूर्ण था। "नही, सोना चाहिये!" उसने तकिये को अपने करीब खिसका लिया और उसके साथ सिर सटा दिया। किन्तु आखे बन्द रखने के लिये उसे बडा यत्न करना पड रहा था। वह उछलकर बैठ गया। "मेरे लिये यह समाप्त हो चुका है," उसने अपने आपसे कहा। "क्या किया जाये, यह सोचना चाहिये। जीवन मे क्या बाकी रह गया है?" उसने आन्ना के प्यार के अलावा अपने जीवन पर तेजी से विचार किया।

"महत्वाकाक्षा? सेर्पुखोव्स्कोई? ऊचा समाज? राज दरबार?" किसी भी चीज पर उसका मन नही टिक पाया। यह सब कुछ पहले मानी रखता था, लेकिन अब यह सब बेमानी हो चुका था। वह सोफे से उठा, उसने अपना फाक-कोट उतार दिया, पेटी ढीली कर ली, अधिक आसानी से सास ले सकने के लिये बालो से ढकी छाती को उघाड लिया और कमरे मे चक्कर लगाया। "ऐसे पागल होते हैं लोग, और ऐसे अपने को गोली का निशाना बनाते हैं ताकि शर्म न आये," उसने धीरे से इतना और जोड दिया।

व्रोन्स्की दरवाजे के पास गया और उसे बन्द कर दिया। इसके बाद टकटकी बधी नजर और कसकर भिचे हुए दातो के साथ मेज के पास गया, पिस्तौल उठाई, उसे गौर से देखा, भरी हुई नली को ऊपर किया और सोच मे डूब गया। दो मिनट तक सिर झुकाये और चेहरे पर विचारो के अत्यधिक तनाव के भाव के साथ वह पिस्तौल हाथो मे थामे निश्चल खडा हुआ सोचता रहा। "बेशक," उसने अपने आपसे ऐसे कहा मानो विचारो के तर्कसगत, लम्बे और स्पष्ट क्रम ने उसे इसी निश्चित परिणाम पर पहुंचाया हो। वास्तव मे उसका यह निर्विवाद "बेशक" केवल स्मृतियो और बिम्बो के ऐसे ही क्रम की पुनरावृत्ति का परिणाम था, जिसे उसने पिछले एक घण्टे मे दसियो बार दोहराया था। ये

उसी सुख की स्मृतिया थी, जो सदा के लिये खोया जा चुका था, जीवन मे जो कुछ आगे था, उसके बेमानी होने की भावना थी, अपने अपमान की वही चेतना थी और वही क्रम था इन बिम्बो और भावनाओ का।

"बेशक," उसने इसी शब्द को दोहराया, जब तीसरी बार उसके विचार फिर से स्मृतियो और भावनाओं के उसी बधे-बधाये क्रम की ओर प्रवृत्त हुए। उसने पिस्तौल को छाती के बायी ओर सटाया और घोडे को पूरे हाथ के पजे मे ऐसे कसते हुए, मानो अचानक उसे मुट्ठी मे भीच रहा हो, दबा दिया। उसे गोली चलने की आवाज नही सुनाई दी, किन्तु छाती मे लगे ज़ोरदार झटके से उसके पाव डोल गये। उसने मेज के किनारे का सहारा लेना चाहा, उसकी पिस्तौल गिर गयी, वह लडखडाया और अपने गिर्द हैरानी से देखते हुए फर्श पर बैठ गया। नीचे से मेज की वक्राकार टागो, कागजो की टोकरी और शेर की खाल को देखते हुए वह अपने कमरे को पहचान नही सका। मेहमानखाने से नौकर के फर्श पर चीं-चूर्र करते तेज कदमो की आवाज से वह सम्भला। उसने अपने दिमाग पर ज़ोर डाला और समझ गया कि फर्श पर बैठा है तथा शेर की खाल और हाथ पर खून देखकर उसे यह भी चेतना हो गयी कि उसने अपने को गोली का निशाना बनाया है।

"पागलपन है! निशाना चूक गया," हाथ से पिस्तौल को टटोलते हुए वह बुदबुदाया। पिस्तौल उसके करीब ही पडी थी, मगर वह कुछ दूरी पर उसे ढूढ रहा था। उसे ढूढते हुए वह दूसरी तरफ बढा और सन्तुलन न बनाये रखने के कारण गिर पडा और उसके घाव से खून की धार बहने लगी।

बडी-बडी कलमोवाला ठाठदार नौकर, जो अनेक बार परिचितो से अपने स्नायुओ की कमजोरी का रोना रो चुका था, अपने मालिक को फर्श पर पडे देख ऐसे डर गया कि खून को ऐसे ही बहता छोडकर मदद लाने के लिये भाग गया। एक घण्टे बाद व्रोन्स्की की भाभी वार्या आई और तीन डाक्टरो की मदद से, जिन्हे उसने सभी तरफ से बुलवा भेजा था और जो एक ही वक्त यहां पहुचे थे, घायल को पलग पर लिटाया और उसकी देखभाल करने को रुक गयी।

गयी थी तथा जो, अगर वह उसकी इतनी चिन्ता न करता तो शायद मर गयी होती, केवल दयाभाव से ध्यान दिया, और उसे पता भी नहीं चला कि कैसे वह उसको प्यार करने लगा। वह दिन में कई बार बच्चों के कमरे में जाता और देर तक वहां बैठा रहता और इसके फलस्वरूप आया और दूध पिलानेवाली धाय, जो शुरू में उसकी उपस्थिति में घबराती थी, उसके वहां आने की अभ्यस्त हो गयी। कभी-कभी वह सोती हुई बच्ची के छोटे-से रोयों वाले और बल पड़े गेरुए-लाल चेहरे को आध घण्टे तक चुपचाप बैठा हुआ ताकता रहता, उसके नाक-भौंह चढ़े माथे और मुट्ठियां बंधे छोटे-छोटे गुदगुदे हाथों को निहारता रहता, जिनसे वह अपनी आंखों और नाक को मसलती रहती थी। ऐसे क्षणों में वह विशेष रूप से अपने को सर्वथा शान्त तथा सन्तुष्ट अनुभव करता और अपनी स्थिति में कुछ भी असाधारण, कुछ भी ऐसा न महसूस करता, जिसे बदलने की जरूरत होती।

किन्तु जितना ज्यादा वक्त बीता, उतना ही ज्यादा उसने साफ तौर पर यह देख लिया कि उसके लिये वर्तमान स्थिति चाहे कितनी ही स्वाभाविक क्यों न थी, उसे वैसा नहीं रहने दिया जायेगा। वह अनुभव करता था कि उसकी आत्मा का निर्देशन करनेवाली प्रबल मानसिक शक्ति के अतिरिक्त एक अन्य, उतनी या उससे भी अधिक हावी हो जाने वाली एक घटिया शक्ति भी थी, जो उसके जीवन का निर्देशन करती थी और यह शक्ति उसे व्याकुलता-मुक्त वह चैन नहीं लेने देगी, जिसके लिये वह लालायित था। वह महसूस करता था कि सभी उसकी ओर प्रश्नसूचक आश्चर्य से देखते हैं, उसे समझने में असमर्थ हैं और उससे किसी बात की अपेक्षा कर रहे हैं। पत्नी के साथ अपने सम्बन्धों के कच्चेपन और अस्वाभाविकता को वह विशेष रूप से अनुभव करता था

मृत्यु की निकटता के कारण आन्ना के मिज़ाज में आनेवाली नर्‍ जब खत्म हो गयी, तो कारेनिन का इस ओर ध्यान जाने लगा कि आन्ना उससे डरती है, उसकी उपस्थिति उसके लिये बोझिल रहती है अ‍ उसे उससे नज़रें मिलाने की हिम्मत नहीं होती। वह मानो कुछ कह चाहती थी और ऐसा करने का साहस नहीं कर पाती थी और मा पूर्वानुमान से यह अनुभव करते हुए कि उनके सम्बन्ध ऐसे नहीं बने सकते, उससे कुछ अपेक्षा कर रही थी।

फ़रवरी के अन्त में आन्ना की बेटी, जिसका नाम भी आ
रखा गया था, बीमार हो गयी। कारेनिन सुबह को ब
कमरे में गया और डाक्टर को बुलवाने की हिदायत
मन्त्रालय चला गया। अपने काम-काज समाप्त करके वह
बजे के बाद घर लौटा। ड्योढ़ी में दाखिल होने पर उसे गोटे-कि
वर्दी पहने और कंधों पर भालू की खाल का लबादा डाले एक
नौकर दिखाई दिया, जो मिंक का स्त्रियों का फ़र-कोट हाथ में उठा
"कौन आया है?" कारेनिन ने पूछा।

"प्रिंसेस येलिज़ावेता फ्योदोरोव्ना त्वेरस्काया," नौकर ने
कर, जैसा कि कारेनिन को प्रतीत हुआ, उत्तर दिया।

कारेनिन ने इस सारे कठिन समय में इस बात की ओर
दिया था कि ऊंचे समाज में उसके परिचित, विशेषतः नारियां,
और उसकी पत्नी में खास दिलचस्पी लेती थीं। इन सभी परिचि
उसे मुश्किल से छिपनेवाली किसी बात की कोई खुशी दिखाई
थी, वही खुशी, जो उसे वकील और अब नौकर की आंखों में दि
दी थी। सभी मानो उल्लसित थे, जैसे कि किसी की शादी में हिस्
रहे हों। उससे भेंट होने पर वे कठिनाई से छिपनेवाली खुशी के
आन्ना की सेहत के बारे में पूछ-ताछ करते।

प्रिंसेस त्वेरस्काया की उपस्थिति और उससे सम्बन्धित स्मृ
तथा इस कारण भी कि वह उसे पसन्द नहीं करता था, कारेनिन पत्नी
कमरे में न जाकर सीधा बच्चों के कमरे में चला गया। बच्चों के
कमरे में मुंह के बल मेज़ पर लेटा तथा कुर्सी पर टांगें रखे हुए सेर्
खुशी से कुछ बड़बड़ाता हुआ चित्रकारी कर रहा था। आन्ना की बीम
के दौरान फ्रांसीसी शिक्षिका की जगह ले लेनेवाली अंग्रेज़ शिक्षि
लड़के के पास बैठी हुई कुछ बुन रही थी। वह झटपट उठी, कारे
का अभिवादन किया और सेर्योझा को झकझोर कर उठाया।

कारेनिन ने बेटे के बालों को सहलाया, पत्नी के स्वास्थ्य के बारे
शिक्षिका के प्रश्न का उत्तर दिया और यह पूछा कि डाक्टर ने baby
के बारे में क्या कहा है।

"हुजूर, डाक्टर ने कहा है कि परेशानी की कोई बात नहीं

"लेकिन वह तो अभी भी रो रही है," कारेनिन ने बगल के कमरे से बच्ची के रोने की आवाज सुनकर कहा।

"हुजूर, मेरे ख्याल में धाय ठीक नहीं है," अंग्रेज शिक्षिका ने जोर देकर कहा।

"आप ऐसा क्यों समझती है?" कारेनिन ने रुककर पूछा।

"काउंटेस पोल के यहां भी ऐसा ही हुआ था। बच्चे का इलाज किया जाता रहा और फिर पता यह चला कि बच्चा भूखा रहता है - धाय दूध के बिना थी, हुजूर।"

कारेनिन सोच में डूब गया और कुछ क्षण तक खड़ा रहकर दूसरे कमरे में दाखिल हुआ। बच्ची सिर पीछे को किये हुए धाय के हाथों में छटपटा रही थी और न तो धाय की फूली हुई चूची को, जो उसकी ओर बढ़ी हुई थी, मुह में ले रही थी और न ही धाय और आया की उसे चुप कराने की कोशिश में दोहरी शी-शी के बावजूद चुप ही हो रही थी।

"क्या अभी तक इसकी तबीयत कुछ बेहतर नहीं हुई?" कारेनिन ने पूछा।

"बहुत ही बेचैन है," आया ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

"मिस एडवर्ड का कहना है कि शायद धाय के दूध नहीं उतरता," कारेनिन ने कहा।

"मैं खुद भी ऐसा ही सोचती हू, अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच।"

"तो आप कहती क्यो नहीं?"

"किससे कहू? आन्ना अर्काद्येव्ना तो अभी तक स्वस्थ नहीं है," आया ने कुछ नाराजगी से उत्तर दिया।

आया इस घर की पुरानी नौकरानी थी। उसके इन सीधे-सादे शब्दों में कारेनिन को अपनी स्थिति के बारे में सकेत-सा अनुभव हुआ।

बच्ची और भी ज्यादा जोर से रो रही थी, उसका गला रुधा जाता था और आवाज घरघरी होती जा रही थी। आया झल्लाहट से हाथ झटककर बच्ची के पास गयी, उसे धाय के हाथों से लेकर इधर-उधर आते-जाते हुए झुलाने लगी।

"डाक्टर से धाय की जाच करने के लिये कहना चाहिये," कारेनिन ने कहा।

"इसपर अन्ना उस आदमी के साथ विदाई-भेंट से इन्कार नहीं कर सकती, जिसने आपके कारण अपने को गोली का निशाना बनाया ..."

"मैं इसी कारण उससे मिलना नहीं चाहती।"

चेहरे पर भय और अपराध का भाव लिये हुए कारेनिन रुका तथा किसी की नजर में आये बिना उसने वापस जाना चाहा। किन्तु यह सोचकर उसने अपना इरादा बदला कि ऐसा करना शोभा नहीं देगा, वह लौटा, खांसा और सोने के कमरे की तरफ चल दिया। बातचीत बन्द हो गयी और वह कमरे में दाखिल हुआ।

आन्ना सलेटी रंग का ड्रेसिंग गाउन पहने सोफे पर बैठी थी। उसके छोटे-छोटे कटे हुए काले बाल गोल सिर पर घने बुश की तरह खड़े थे। सदा की भांति पति को देखते ही अब भी उसके चेहरे पर से अचानक सजीवता गायब हो गयी, उसने सिर भुका लिया और बेचैनी से बेट्सी की तरफ देखा। बेट्सी अत्यधिक नवीन फैशन के कपड़े पहने बनी-ठनी हुई थी, उसकी टोपी उसके सिर के ऊपर ऐसे छतरी-सी लग रही थी, जैसे लैम्प के ऊपर शेड। वह नीलगूं रंग का फ्राक पहने थी जिसकी चटकीली टेढ़ी धारियां एक ओर से चोली तथा दूसरी ओर से स्कर्ट पर से गुजर रही थी। अपनी ऊंची सपाट आकृति को सीधा ताने हुए वह आन्ना के करीब बैठी थी और वह सिर भुकाकर तथा व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ कारेनिन से मिली।

"ओह!" उसने मानो हैरान होते हुए कहा। "मुझे बड़ी खुशी है कि आप घर पर हैं। आप कहीं आते-जाते ही नहीं और मैंने आन्ना के बीमार होने के बाद से आपको नहीं देखा। मैंने आपकी चिन्ताओं के बारे में सभी कुछ सुना है। हां, आप अद्भुत पति हैं!" उसने अर्थपूर्ण और स्नेह-सिक्त अन्दाज में कहा मानो पत्नी के प्रति उसके व्यवहार के लिये विशाल हृदयता का पदक भेंट कर रही हो।

कारेनिन ने रुखाई से सिर भुकाया, पत्नी का हाथ चूमा और उससे उसकी तबीयत के बारे में पूछा।

"मुझे लगता है कि बेहतर है," पति की नजर से नजर बचाते हुए उसने कहा।

"मगर आपके चेहरे का रंग ऐसा है मानो आपको बुखार हो," उसने "बुखार" शब्द पर जोर देते हुए कहा।

"हम दोनों बहुत ज्यादा अच्छे साथी नहीं है," बेत्सी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह मेरी स्पष्टवादिता है। इसलिये मैं जा रही हूं।"

वह उठकर खड़ी हो गयी किन्तु आन्ना ने सहसा व्याकुल होते हुए जल्दी से उसका हाथ पकड़ लिया।

"नहीं, इतना थोड़ा रुकिये। मुझे आपसे ... नहीं, आपसे कुछ कहना है ..." उसने कारेनिन को सम्बोधित किया और उसकी गर्दन और माथा शर्म से लाल हो गये। "मैं आपसे कुछ भी छिपा नहीं सकती और न ही ऐसा चाहती हूं," वह बोली।

कारेनिन ने अपनी उंगलियां चटकायीं और सिर झुका लिया।

"बेत्सी कह रही थी कि काउंट व्रोन्स्की ताशकन्द जाने के पहले विदा लेने के लिये हमारे यहां आना चाहता है।" वह पति की ओर नहीं देख रही थी और उसके लिये चाहे यह कितना ही कठिन क्यों न हो, सब कुछ कह देना चाहती थी। "मैंने कह दिया है कि मैं उससे नहीं मिल सकती।"

"मेरी प्यारी, आपने कहा था कि यह अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच पर निर्भर होगा," बेत्सी ने उसकी भूल सुधारी।

"हां, लेकिन मैं उससे नहीं मिल सकती और ऐसा करने में कोई तुक ..." वह अचानक रुकी और उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से पति की ओर देखा (वह उसकी ओर नहीं देख रहा था)। "थोड़े में यह कि मैं नहीं चाहती ..."

कारेनिन उसके करीब हो गया और उसने उसका हाथ अपने हाथ में लेना चाहा।

शुरू में आन्ना ने पति के नम, बड़ी-बड़ी और फूली-फूली नसोंवाले हाथ से, जो उसका हाथ थामना चाह रहा था, अपना हाथ पीछे हटा लिया। किन्तु सम्भवत अपना मन मारकर उसका हाथ दबाया।

"मुझ पर भरोसा करने के लिये आपका बहुत आभारी हूं, किन्तु ..." उसने परेशानी और खीझ से यह महसूस करते हुए जवाब दिया कि अपने आप वह जो कुछ आसानी से और स्पष्टत तय कर सकता था, प्रिंसेस त्वेरस्काया की उपस्थिति में उस पर विचार-विनिमय करने में असमर्थ है। कारण कि वह प्रिंसेस त्वेरस्काया को ऊंचे समाज की नजरों में उसके जीवन का संचालन करनेवाली उस

और उसके पास बैठ गया। अब वह रूसी में बात करता और उसे 'तुम' कहता, तो इस 'तुम' से आन्ना अवश्य ही झल्ला उठती। 'और तुम्हारे निर्णय के लिये भी बहुत आभारी हूं। मैं भी ऐसा ही समझता हूं कि अगर वह यहां से जा ही रहा है, तो काउंट व्रोन्स्की के लिये यहां आने की कोई जरूरत नहीं है। वैसे..."

"मैं खुद यह कह चुकी हूं, फिर दोहराने की क्या आवश्यकता है?" आन्ना ने अचानक झल्लाहट के साथ, जिस पर वह काबू नहीं पा सकी थी, उसे टोक दिया। 'कोई जरूरत नहीं है,' वह सोच रही थी, 'उस औरत के पास विदा लेने के लिये आने की जरूरत नहीं है, जिसे वह प्यार करता है, जिसके लिये उसने मरना और अपने को बरबाद करना चाहा तथा जो उसके बिना जी नहीं सकती। नहीं, कोई जरूरत नहीं है!' उसने अपने होंठ भींच लिये और चमकती आंखें उसकी फूली-फूली नसोंवाले हाथों पर झुका लीं, जो धीरे-धीरे एक-दूसरे को मल रहे थे।

"इसकी कभी चर्चा नहीं करेंगे," उसने शान्ति से इतना और कह दिया।

"मैंने इस मामले का फैसला पूरी तरह तुम पर ही छोड़ दिया है और मुझे यह देखकर खुशी है..." कारेनिन ने कहना शुरू किया।

"कि मेरी इच्छा आपकी इच्छा के साथ मेल खाती है," आन्ना ने इस बात से खीझते हुए झटपट उसका वाक्य पूरा कर दिया कि वह इतना धीमे-धीमे बोल रहा है, जबकि वह पहले से ही यह जानती है कि वह क्या कहने जा रहा है।

"हां," उसने पुष्टि की, "और प्रिंसेस त्वेरस्काया अत्यधिक कठिन पारिवारिक मामलों में बिल्कुल अनुचित दखल दे रही है। खास तौर पर जबकि उसके बारे में..."

"उसके बारे में लोग जो कुछ भी कहते हैं, मैं उनमें से किसी भी बात पर विश्वास नहीं करती," आन्ना ने जल्दी से कहा, "मैं जानती हूं कि वह सच्चे दिल से मुझे चाहती है।"

कारेनिन ने गहरी सांस ली और खामोश हो गया। आन्ना उसके प्रति शारीरिक घृणा की उस यातनापूर्ण भावना के साथ देखती हुई, जिसके लिये अपनी भर्त्सना करती थी, मगर जिस पर काबू नहीं पा

उदारता की उपलब्धि को नष्ट करती थी। वह ऐसा मानता था कि आन्ना के लिये व्रोन्स्की से सम्बन्ध तोड लेना उचित होगा, किन्तु यदि वे ऐसा करना असम्भव समझते हैं, तो वह केवल इसलिये कि बच्चों को शर्म का सामना न करना पडे, उसे उनसे वचित न होना पडे और अपनी स्थिति मे परिवर्तन करने की जरूरत न हो, इन सम्बन्धो को फिर से स्वीकार करने को तैयार था। बहुत बुरा होने पर भी वह उस सम्बन्ध-विच्छेद से तो अच्छा ही था, जिसके परिणामस्वरूप आन्ना की असहाय और लज्जाजनक स्थिति हो जायेगी और वह खुद उस सबसे वचित हो जायेगा, जो उसे प्यारा था। किन्तु वह अपने को विवशता की स्थिति मे अनुभव करता था, पहले से ही यह जानता था कि सब कुछ उसके विरुद्ध है और उसे वह नही करने दिया जायेगा, जो उसे स्वाभाविक और अच्छा प्रतीत होता था तथा वह करने को मज किया जायेगा, जो बुरा है, किन्तु जो उनको उचित लगता है।

(२१)

बेत्सी हॉल से बाहर निकल ही रही थी कि दरवाजे के कर ओब्लोन्स्की से उसकी मुलाकात हुई, जो येलिसेयेव के प्रसिद्ध स्टोर से जहा ताजा ओयेस्टर आये थे, सीधा यहा पहुचा था।

"अरे! प्रिंसेस! खूब मुलाकात हुई यह तो!" वह कह उठा "मैं आपके यहा होकर आया हू।"

"एक मिनट की मुलाकात, क्योंकि मैं जा रही हू," बेत्सी मुस्कराते और दस्ताना पहनते हुए कहा।

"प्रिंसेस, दस्ताना पहनने की जल्दी न कीजिये, अपना प्यारा-स हाथ तो चूमने दीजिये। पुराने रिवाजों के लौट आने के मामले मे और किसी चीज के लिये इतना आभारी नही हू, जितना कि हाथ चूमने के बारे मे।" उसने बेत्सी का हाथ चूमा। "कब मुलाकात होगी?"

"आप इसके लायक नही हैं," बेत्सी ने जवाब दिया।

"नही, मैं इसके बहुत लायक हू, क्योंकि सबसे ज्यादा सजीदा आदमी हो गया हू। मैं सिर्फ अपने ही नही, बल्कि पराये पारिवा

"बुरी, बहुत ही बुरी। दिन, सुबह, अतीत और भविष्य के दिन भी," आन्ना ने जवाब दिया।

"मुझे लगता है कि तुमने रज के सामने घुटने टेक दिये हैं। तुम्हे इससे मुक्त होना चाहिये, जिन्दगी की हकीकत का सामना करना चाहिये। मैं जानता हू कि ऐसा करना मुश्किल है, लेकिन .."

"मैंने सुना है कि औरते लोगो को उनकी बुराइयों के लिये भी प्यार करती हैं," आन्ना ने अचानक कहना शुरू किया, "मगर मैं उसकी खूबियो के लिये उससे नफरत करती हू। मैं उसके साथ नही रह सकती। तुम इस चीज को समझो, उसकी सूरत देखते ही मेरा रोम-रोम जलने लगता है, मैं आपे से बाहर हो जाती हू। मैं उसके साथ नहीं रह सकती, नही रह सकती। मैं क्या करू? मैं दुखी थी और समझती थी कि मुझसे अधिक दुखी कोई नही हो सकता, किन्तु मुझे जिस भयानक स्थिति की अब अनुभूति हो रही है, उसकी तो मैं कल्पना भी नही कर सकती थी। तुम यकीन करोगे, मैं यह जानते हुए कि वह दयालु और बहुत अच्छा आदमी है तथा मैं उसकी जूती की नोक के बराबर भी नही हू, उससे नफरत करती हू। मैं उसकी उदारता के लिये उससे घृणा करती हू। मेरे लिये और कोई चारा नही है, सिवा इसके कि "

आन्ना ने "मर जाऊ" कहना चाहा, किन्तु ओब्लोन्स्की ने उसे यह कहने नही दिया।

"तुम बीमार और झल्लायी हुई हो," उसने कहा, "सच मानो कि तुम मामले को बहुत बढा-चढाकर पेश कर रही हो। ऐसी कोई भयानक बात नही है।"

और ओब्लोन्स्की मुस्करा दिया। ओब्लोन्स्की की जगह कोई भी अन्य व्यक्ति हताशा की ऐसी स्थिति मे कभी न मुस्कराता (मुस्कराना बडा कठोर प्रतीत होता), किन्तु उसकी मुस्कान मे इतनी दयालुता और लगभग नारी सुलभ ऐसा स्नेह था कि उसकी मुस्कान ने ठेस लगाने के बजाय शान्ति और चैन दिया। उसके चैन देनेवाले धीमे-धीमे शब्दों और मुस्कान ने बादाम रोगन जैसी शान्ति तथा चैन देने का प्रभाव पैदा किया। आन्ना ने शीघ्र ही इसे अनुभव किया।

"नहीं स्तीवा " वह बोली। "मैं बरबाद हो गयी, बरबाद हो

गयी! इससे भी बुरा हाल है मेरा। अभी बरबाद नहीं हुई, म
कह सकती कि सब कुछ खत्म हो चुका है। इसके विपरीत,
अनुभव करती हूं कि सब कुछ खत्म नहीं हुआ। मैं बहुत कसे हुए
समान हू, जो टूटकर रहेगा। लेकिन अभी सब कुछ खत्म नहीं
और भयानक अन्त होगा।"

"कोई बात नहीं, तार को धीरे-से ढीला किया जा सकत
ऐसी कोई मुश्किल नहीं, जिसका हल न हो।"

"मैंने सोचा है, बहुत सोचा है। सिर्फ एक ही "

उसकी डरी-सहमी हुई नजर से वह फिर समझ गया कि आ
मतानुसार उसके लिये मौत ही एक रास्ता है और उसने उसे यह
कहने नहीं दिया।

"बिल्कुल नहीं," ओब्लोन्स्की ने कहा। "तुम अपनी स्थिति
तरह नहीं समझ सकती। तुम मुझे साफ-साफ अपनी बात कह
अनुमति दो।" वह फिर से अपनी बादाम रोगन वाली मुलायम
के साथ मुस्कराया। "मैं मामले को शुरू से लेता हू तुमने ऐसे
से शादी की, जो तुमसे बीस साल बड़ा है। तुमने प्यार के बि
प्यार को जाने बिना शादी की। मान लेते हैं कि यह गलती

"बहुत भयानक गलती!" आन्ना ने कहा।

"लेकिन मैं दोहराता हू – यह एक हकीकत है। इसके बाद ह
सकते हैं कि तुम्हे बदकिस्मती से उस आदमी से प्यार हो गया
तुम्हारा पति नहीं है। यह बदकिस्मती है, मगर हकीकत है। तुम्हारे
इसको माना और तुम्हे क्षमा कर दिया।" वह हर वाक्य के बाद
आपत्ति की प्रतीक्षा करते हुए रुकता, किन्तु आन्ना ने कुछ भी नहीं
"बात ऐसी ही है। अब सवाल यह है – तुम अपने पति के सा
सकती हो या नहीं? तुम ऐसा चाहती हो या नहीं? वह ऐसा
है या नहीं?"

"मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं जानती।"

"लेकिन तुमने खुद ही यह कहा था कि तुम उसे बर्दाश्त नहीं
सकती।"

"नहीं, मैंने नहीं कहा। मैं इससे इन्कार करती हू। मैं कु
नहीं जानती और कुछ भी नहीं समझती।"

"बुरी, बहुत ही बुरी। दिन, सुबह, अतीत और भविष्य के दिन भी," आन्ना ने जवाब दिया।

"मुझे लगता है कि तुमने रंज के सामने घुटने टेक दिये हैं। तुम्हें इससे मुक्त होना चाहिये, जिन्दगी की हक़ीक़त का सामना करना चाहिये। मैं जानता हूं कि ऐसा करना मुश्किल है, लेकिन..."

"मैंने सुना है कि औरतें लोगों को उनकी बुराइयों के लिये भी प्यार करती हैं," आन्ना ने अचानक कहना शुरू किया, "मगर मैं उसकी खूबियों के लिये उससे नफ़रत करती हूं। मैं उसके साथ नहीं रह सकती। तुम इस चीज़ को समझो, उसकी सूरत देखते ही मेरा रोम-रोम *जलने लगता है, मैं आपे से बाहर हो जाती हूं। मैं उसके साथ नहीं* रह सकती, नहीं रह सकती। मैं क्या करूं? मैं दुखी थी और समझती थी कि मुझसे अधिक दुखी कोई नहीं हो सकता, किन्तु मुझे जिस भयानक स्थिति की अब अनुभूति हो रही है, उसकी तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी। तुम यक़ीन करोगे, मैं यह जानते हुए कि वह *दयालु और बहुत अच्छा आदमी है तथा मैं उसकी जूती की नोक के* बराबर भी नहीं हूं, उससे नफ़रत करती हूं। मैं उसकी उदारता के लिये उससे घृणा करती हूं। मेरे लिये और कोई चारा नहीं है, सिवा इसके कि "

आन्ना ने "मर जाऊं" कहना चाहा, किन्तु ओब्लोन्स्की ने उसे यह *कहने नहीं दिया।*

"तुम बीमार और झल्लायी हुई हो," उसने कहा, "सच मानो कि तुम मामले को बहुत बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रही हो। ऐसी कोई भयानक बात नहीं है।"

और ओब्लोन्स्की मुस्करा दिया। ओब्लोन्स्की की जगह कोई भी अन्य व्यक्ति हताशा की ऐसी स्थिति में कभी न मुस्कराता (मुस्कराना बड़ा कठोर प्रतीत होता), किन्तु उसकी मुस्कान में इतनी दयालुता और लगभग नारी सुलभ ऐसा स्नेह था, कि उसकी मुस्कान ने ठेस लगाने के बजाय शान्ति और चैन दिया। उसके चैन देनेवाले धीमे-धीमे शब्दों और मुस्कान ने बादाम रोगन जैसी शान्ति तथा चैन देने का प्रभाव पैदा किया। आन्ना ने शीघ्र ही इसे अनुभव किया।

"नहीं, स्तीवा," वह बोली। "मैं बरबाद हो गयी, बरबाद हो

गयी! इससे भी बुरा हाल है मेरा। अभी बरबाद नहीं हुई, यह नहीं कह सकती कि सब कुछ खत्म हो चुका है। इसके विपरीत, मैं यह अनुभव करती हू कि सब कुछ खत्म नहीं हुआ। मैं बहुत कसे हुए तार के समान हू, जो टूटकर रहेगा। लेकिन अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ और भयानक अन्त होगा।"

"कोई बात नहीं, तार को धीरे-से ढीला किया जा सकता है। ऐसी कोई मुश्किल नहीं, जिसका हल न हो।"

"मैंने सोचा है, बहुत सोचा है। सिर्फ एक ही

उसकी डरी-सहमी हुई नजर से वह फिर समझ गया कि आन्ना के मतानुसार उसके लिये मौत ही एक रास्ता है और उसने उसे यह शब्द कहने नहीं दिया।

"बिल्कुल नहीं," ओब्लोन्स्की ने कहा। "तुम अपनी स्थिति को मेरी तरह नहीं समझ सकती। तुम मुझे साफ-साफ अपनी बात कहने की अनुमति दो।" वह फिर से अपनी बादाम रोगन वाली मुलायम मुस्कान के साथ मुस्कराया। "मैं मामले को शुरू से लेता हू तुमने ऐसे आदमी से शादी की, जो तुमसे बीस साल बड़ा है। तुमने प्यार के बिना या प्यार को जाने बिना शादी की। मान लेते हैं कि यह गलती थी।"

"बहुत भयानक गलती।" आन्ना ने कहा।

"लेकिन मैं दोहराता हू – यह एक हकीकत है। इसके बाद हम कह सकते हैं कि तुम्हें बदकिस्मती से उस आदमी से प्यार हो गया, जो तुम्हारा पति नहीं है। यह बदकिस्मती है, मगर हकीकत है। तुम्हारे पति ने इसको माना और तुम्हें क्षमा कर दिया।" वह हर वाक्य के बाद उसकी आपत्ति की प्रतीक्षा करते हुए रुकता, किन्तु आन्ना ने कुछ भी नहीं कहा। "बात ऐसी ही है। अब सवाल यह है – तुम अपने पति के साथ रह सकती हो या नहीं? तुम ऐसा चाहती हो या नहीं? वह ऐसा चाहता है या नहीं?"

"मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं जानती।"

"लेकिन तुमने खुद ही यह कहा था कि तुम उसे बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

"नहीं, मैंने नहीं कहा। मैं इससे इन्कार करती हू। मैं कुछ भी नहीं जानती और कुछ भी नहीं समझती।"

"लेकिन मुझ से

तुम नहीं समझ सकते। मुझे ऐसा लगता है कि मैं सिर के बल नीचे की किसी खाई में गिरती जा रही हूँ, लेकिन मुझे बचना नहीं चाहिये। और बच भी नहीं सकती।"

"कोई बात नहीं, हम किसी तरह तुम्हें खाई में गिरने से बचा लेंगे। मैं तुम्हारी स्थिति को समझता हूँ, समझता हूँ कि तुम अपनी इच्छा, अपनी भावना को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाती हो।"

"मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं चाहती हूँ, सिर्फ इतना ही कि सब कुछ खत्म हो जाये।"

"किन्तु वह यह देखता और जानता है। क्या तुम यह समझती हो कि उसे इससे कम परेशानी हो रही है? तुम यातना सह रही हो, वह यातना सह रहा है। लेकिन इससे नतीजा क्या निकल सकता है? जबकि तलाक इस सारी मुसीबत का अन्त कर देगा," स्तीवा ने किसी तरह अपना यह मुख्य विचार व्यक्त कर दिया और अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा।

आन्ना ने कोई जवाब नहीं दिया और केवल अपने कटे हुए छोटे-छोटे बालोंवाला सिर हिला दिया। किन्तु सहसा पहले जैसे सौन्दर्य से चमक उठनेवाले चेहरे के भाव से ओब्लोन्स्की ने यह समझ लिया कि आन्ना ने केवल इसी लिये ऐसा नहीं चाहा था कि उसे यह असम्भव सुख प्रतीत हुआ था।

"मुझे तुम दोनों के लिये बेहद दुख है। अगर मुझे इस मामले को निपटाने में सफलता मिल गयी तो तुम्हें बता नहीं सकता कि मुझे कितनी खुशी होगी!" ओब्लोन्स्की ने अब साहस से मुस्कराते हुए कहा। "तुम कुछ भी, कुछ भी नहीं कहो! काश, भगवान मुझे वैसे ही कहने की शक्ति दे, जैसे मैं अनुभव करता हूँ। मैं उसके पास जाता हूँ।"

आन्ना ने सोच में डूबी, चमकती आंखों से भाई की तरफ देखा और कुछ नहीं कहा।

ओब्लोन्स्की कुछ वैसी ही गम्भीर मुद्रा बनाये हुए, जिस मुद्रा में वह अपने कार्यालय में अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठता था, कारेनिन के कमरे में दाखिल हुआ। कारेनिन पीठ पीछे हाथ बांधे और कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाते हुए उसी विषय के बारे में सोच रहा था जिसकी स्तीवा उसकी पत्नी के साथ चर्चा कर रहा था।

"मैं कोई खलल तो नहीं डाल रहा हूं?" ओब्लोन्स्की ने बहनोई को देखकर अचानक घबराहट-सी महसूस करते हुए पूछा जो उसके स्वभाव के अनुरूप नहीं था। अपनी इस घबराहट को छिपाने के लिये उसने कुछ देर पहले खरीदा गया नये ढंग से खुलनेवाला सिगरेट-केस निकाला और चमड़े को सूंघकर सिगरेट निकाली।

"नहीं। तुम्हें मुझसे कोई काम है क्या?" कारेनिन ने बुझे मन से जवाब दिया।

"हां, मैं चाहता था मुझे बात बात करनी है," ओब्लोन्स्की ने हैरानी से भीरुता अनुभव करते हुए, जिसका वह अभ्यस्त नहीं था, जवाब दिया।

यह अनुभूति इतनी अप्रत्याशित और अजीब-सी थी कि ओब्लोन्स्की को इस बात का विश्वास नहीं हुआ कि यह उसकी आत्मा की आवाज थी, जो कह रही थी—तुम जो करना चाहते हो, वह बुरा है। ओब्लोन्स्की ने अपनी इस भीरुता पर सप्रयास काबू पा लिया।

"उम्मीद करता हूं कि तुम बहन के प्रति मेरे प्यार और तुम्हारे प्रति मेरे हार्दिक लगाव और आदर पर विश्वास करते हो" उसने घबराहट से लाल होते हुए कहा।

कारेनिन रुका और उसने कोई उत्तर नहीं दिया किन्तु उसके चेहरे के इस भाव ने कि मैंने अपने को किस्मत के हाल पर छोड़ दिया है, उसे चकित कर दिया।

"मेरा ऐसा इरादा है, मैं चाहता हूं कि बहन और तुम दोनों की आपसी स्थिति की चर्चा करूं," ओब्लोन्स्की ने अपनी झिझक-झेंप में, जो उसके स्वभाव में नहीं थी, जूझना जारी रखते हुए कहा।

लेकिन, सुनो तो

तुम नहीं समझ सकते। मुझे ऐसा लगता है कि मैं सिर के बल नीचे से किसी खाई में गिरती जा रही हूं, लेकिन मुझे बचना नहीं चाहिये। और बच भी नहीं सकती।"

कोई बात नहीं हम किसी तरह तुम्हें खाई में गिरने से बचा लेंगे। मैं तुम्हारी स्थिति को समझता हूं, समझता हूं कि तुम अपनी इच्छा अपनी भावना को व्यक्त करने का साहस नहीं कर पाती हो।

मैं कुछ भी कुछ भी नहीं चाहती हूं सिर्फ इतना ही कि सब कुछ खत्म हो जाये।

किन्तु यह वह देखता और जानता है। क्या तुम यह समझती हो कि उसे इससे कम परेशानी हो रही है? तुम यातना सह रही हो, वह यातना सह रहा है। लेकिन इससे नतीजा क्या निकल सकता है? जबकि तलाक इस सारी मुसीबत का अन्त कर देगा," स्तीवा ने किसी तरह अपना यह मुख्य विचार व्यक्त कर दिया और अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखा।

आन्ना ने कोई जवाब नहीं दिया और केवल अपने कटे हुए छोटे-छोटे बालोंवाला सिर हिला दिया। किन्तु सहसा पहले जैसे सौन्दर्य से चमक उठनेवाले चेहरे के भाव से ओब्लोन्स्की ने यह समझ लिया कि आन्ना ने केवल इसी लिये ऐसा नहीं चाहा था कि उसे यह असम्भव सुख प्रतीत हुआ था।

"मुझे तुम दोनों के लिये बेहद दुख है। अगर मुझे इस मामले को निपटाने में सफलता मिल गयी तो तुम्हें बता नहीं सकता कि मुझे कितनी खुशी होगी!" ओब्लोन्स्की ने अब साहस से मुस्कराते हुए कहा। "तुम कुछ भी, कुछ भी नहीं कहो! काश, भगवान मुझे वैसे ही कहने की शक्ति दे, जैसे मैं अनुभव करता हूं। मैं उसके पास जाता हूं।"

आन्ना ने सोच में डूबी, चमकती आंखों से भाई की तरफ देखा और कुछ नहीं कहा।

ओब्लोन्स्की कुछ वैसी ही गम्भीर मुद्रा बनाये हुए, जिस मुद्रा मे वह अपने कार्यालय में अध्यक्ष की कुर्मी पर बैठता था, कारेनिन के कमरे में दाखिल हुआ। कारेनिन पीठ पीछे हाथ बाधे और कमरे मे इधर-उधर चक्कर लगाते हुए उसी विषय के बारे में सोच रहा था जिसकी स्तीवा उसकी पत्नी के साथ चर्चा कर रहा था।

"मैं कोई खलल तो नही डाल रहा हू ? ओब्लोन्स्की ने बहनोई को देखकर अचानक घबराहट-सी महसूस करते हुए पूछा जो उसके स्वभाव के अनुरूप नही था। अपनी इस घबराहट को छिपाने के लिये उसने कुछ देर पहले खरीदा गया नये ढग से खुलनेवाला सिगरेट-केस निकाला और चमडे को सूघकर सिगरेट निकाली।

"नही। तुम्हे मुझसे कोई काम है क्या ?" कारेनिन ने बुझे मन से जवाब दिया।

"हा, मैं चाहता था मुझे बात बात करनी है,' ओब्लोन्स्की ने हैरानी से भीरुता अनुभव करते हुए, जिसका वह अभ्यस्त नही था जवाब दिया।

यह अनुभूति इतनी अप्रत्याशित और अजीब-सी थी कि ओब्लोन्स्की को इस बात का विश्वास नही हुआ कि यह उसकी आत्मा की आवाज़ थी, जो कह रही थी–तुम जो करना चाहते हो, वह बुरा है। ओब्लोन्स्की ने अपनी इस भीरुता पर सप्रयास काबू पा लिया।

"उम्मीद करता हू कि तुम बहन के प्रति मेरे प्यार और तुम्हारे प्रति मेरे हार्दिक लगाव और आदर पर विश्वास करते हो ' उसने घबराहट से लाल होते हुए कहा।

कारेनिन रुका और उसने कोई उत्तर नही दिया, किन्तु उसके चेहरे के इस भाव ने कि मैंने अपने को किस्मत के हाल पर छोड दिया है, उसे चकित कर दिया।

"मेरा ऐसा इरादा है, मैं चाहता हू कि बहन और तुम दोनो की आपसी स्थिति की चर्चा करू," ओब्लोन्स्की ने अपनी झिझक-भेप मे, जो उसके स्वभाव मे नही थी, जूझना जारी रखते हुए कहा।

कारेनिन उदासी से मुस्कराया, उसने साले की तरफ देखा, मेज़ के करीब गया और वह पत्र उठाकर साले को दे दिया, जिसे लिखना शुरू किया था।

'मैं लगातार इसी बारे में सोचता रहता हू। यह है वह पत्र, जो मैंने ऐसा मानते हुए लिखना शुरू किया था कि मेरे लिये लिखित रूप में उसके सामने अपने विचार व्यक्त करना बेहतर रहेगा, क्योंकि मेरी उपस्थिति से उसे झल्लाहट होती है," उसने पत्र देते हुए कहा।

ओब्लोन्स्की ने पत्र ले लिया, सकपकाकर अपने ऊपर जमी हुई आखो को आश्चर्य से देखा और पत्र पढ़ने लगा।

"मैं देखता हू कि मेरी उपस्थिति से आपको परेशानी होती है। मेरे लिये इस बात का विश्वास करना बेशक कितना ही दुखद क्यों न था, मैं देखता हू कि स्थिति ऐसी ही है और इसमे भिन्न नही हो सकती। मैं आपको दोष नही देता और भगवान इस बात का साक्षी है कि आपकी बीमारी के समय आपको देखने पर मैंने सच्चे दिल से वह सब भूल जाना चाहा, जो हमारे बीच हुआ था, और नई जिन्दगी शुरू करनी चाही। मैंने जो कुछ किया, मुझे उसका पश्चाताप नही है और कभी नही होगा। किन्तु मैं केवल एक ही चीज चाहता था, आपकी भलाई, आपकी आत्मा की भलाई और अब मैं यह देख रहा हू कि मुझे इसमे सफलता नही मिली। आप स्वय ही मुझे बता दीजिये कि कैसे आपको सच्चा सुख और अपनी आत्मा की शान्ति मिल सकती है। मैं अपने को आपकी इच्छा और न्याय भावना पर छोडता हू।"

ओब्लोन्स्की ने पत्र वापस दे दिया और यह न जानते हुए कि क्या कहे, पहले जैसी परेशानी मे बहनोई की तरफ देखता रहा। यह खामोशी इन दोनो के लिये इतनी बोझिल थी कि कारेनिन के चेहरे पर नजर जमाये हुए खामोशी के इन लम्बे क्षणो मे उसे अपने होठो मे पीडायुक्त फडकन अनुभव होने लगी।

"तो मैं यह बताना चाहता था उसे," कारेनिन ने दूसरी ओर मुह करते हुए कहा।

"हा, हा " गला रुध जाने के कारण कुछ भी कह पाने मे असमर्थ ओब्लोन्स्की ने कहा। "हा, हा। मैं आपके दिल की हालत को समझता हू," आखिर उसने कहा।

उससे बढ़ी हुई स्थितियों का पता। मेरे ख्याल में आप दोनों की स्थिति में नये सम्बन्धों का स्पष्टीकरण आवश्यक है। और ये नये सम्बन्ध दोनों पक्षों के स्वतन्त्र होने पर ही कायम हो सकते हैं।"

"तलाक," कारेनिन ने घृणा से उसे टोका।

"हां, मैं समझता हूं कि तलाक ही एक रास्ता है, तलाक ही," ओब्लोन्स्की ने लाल होते हुए दोहराया। "तुम दोनों की स्थिति जैसी सभी दम्पतियों के लिये सभी दृष्टियों से यही सबसे अधिक सूझ-बूझ का रास्ता है। पति-पत्नी को अगर यह पता चल गया है कि उनका एकसाथ जिन्दगी बिताना मुमकिन नहीं, तब बाकी ही क्या रह जाता है? ऐसा तो हमेशा ही हो सकता है।" कारेनिन ने गहरी सांस लेकर आंखें मूंद लीं। "इस मामले में सिर्फ एक ही बात को ध्यान में रखना जरूरी है— पति-पत्नी में से कोई किसी अन्य से शादी करना चाहता है या नहीं? अगर नहीं, तो मामला बड़ा सीधा-सादा हो जाता है," ओब्लोन्स्की ने अपनी घबराहट पर अधिकाधिक काबू पाते हुए कहा।

उत्तेजना से माथे पर बल डालते हुए कारेनिन ने अपने आपमें कुछ कहा और कोई उत्तर नहीं दिया। ओब्लोन्स्की को जो कुछ बहुत ही सीधा-साधारण प्रतीत हो रहा था, कारेनिन उस पर हजारों बार सोच-विचार कर चुका था। उसे यह सब कुछ न केवल बहुत सीधा-साधारण ही नहीं, बल्कि बिल्कुल असम्भव प्रतीत हुआ। तलाक, वह अब जिसकी सभी तफ़सीलें जानता था, उसे इसलिये असम्भव प्रतीत होता था कि आत्मसम्मान की भावना और धर्म के प्रति आदर भाव उसे व्यभिचार का झूठा अपराध अपने ऊपर नहीं लेने देते थे और इससे भी अधिक इसलिये ऐसा करने से रोकते थे कि उसकी पत्नी, जिसे वह क्षमा कर चुका था तथा प्यार करता था, बेनकाब और बेइज्जत हो। कुछ अन्य और अधिक महत्त्वपूर्ण कारणों से भी उसे तलाक नामुमकिन लगा।

तलाक हो जाने पर बेटे का क्या होगा? उसे मां के पास छोड़ना सम्भव नहीं था। तलाक दी गयी मां का अपना गैरकानूनी परिवार होगा, जिसमें सौतेले बेटे की स्थिति और उसका पालन-शिक्षण सम्भवतः बुरा होगा। उसे अपने पास रखूं? वह जानता था कि उसके लिये ऐसा करना तो बदला लेना होगा और वह ऐसा नहीं करना चाहता था।

लेकिन इसके अलावा कारेनिन को तलाक सबसे अधिक इसलिये असम्भव प्रतीत हुआ कि तलाक के लिये राज़ी होने से वह आन्ना को बरबाद कर डालेगा। मास्को में डौली द्वारा कहे गये ये शब्द उसके दिल में घर कर गये थे कि तलाक देने की बात सोचकर वह अपना ही ख्याल कर रहा है और यह नही सोचता कि ऐसा करके वह आन्ना को सदा के लिये बरबाद कर देगा। इन शब्दों को अपने क्षमादान और बच्चों के प्रति लगाव से जोड़कर अब वह अपने ही ढंग से इनका अर्थ निकालता था। तलाक के लिये राज़ी होने, आन्ना को आज़ादी देने का अब उसके लिये यही मतलब था कि बच्चों से, जिन्हे वह प्यार करता था, अपना अन्तिम सम्बन्ध-सूत्र तोड़ लेना, नेकी के रास्ते पर आन्ना का आखिरी सहारा छीन लेना और उसे बरबादी के गड्ढे में धकेल देना। वह जानता था कि अगर आन्ना को तलाक मिल जायेगा तो वह व्रोन्स्की से अपना नाता जोड़ लेगी और यह सम्बन्ध गैरकानूनी तथा अपराधपूर्ण होगा, क्योंकि ईसाई धर्म के कानून-कायदे के मुताबिक पति के जिन्दा रहने तक पत्नी का दूसरा विवाह नही हो सकता। "वह उसके साथ नाता जोड़ लेगी और एक-दो साल के बाद वह उसे छोड़ देगा या फिर वह किसी अन्य से अपना सम्बन्ध जोड़ लेगी," कारेनिन सोच रहा था, "और इस गैरकानूनी तलाक के लिये राज़ी होकर मैं उसकी तबाही के लिये जिम्मेदार होऊंगा।" उसने सैकड़ों बार इस पर विचार किया था और उसे इस बात का यकीन हो गया था कि तलाक का मामला जैसा कि उसका साला कह रहा था, बहुत सीधा सरल ही नही, बल्कि बिल्कुल असम्भव था। वह ओब्लोन्स्की के एक भी शब्द पर विश्वास नही कर रहा था उसके हर शब्द के जवाब में वह हज़ारों बातें कह सकता था मगर वह ऐसा अनुभव करता हुआ उसे सुन रहा था कि उसके शब्दों में वह प्रबल कठोर शक्ति अपने को अभिव्यक्ति प्रदान कर रही है, जो उसके जीवन का संचालन करती है और जिसके सामने उसे घुटने टेकने होंगे।

"सवाल सिर्फ यह है कि कैसे, किन शर्तों पर तुम तलाक देने को तैयार होगे। वह कुछ नही चाहती, तुमसे कोई अनुरोध करने की हिम्मत नही कर सकती, सब कुछ तुम्हारी दरियादिली पर छोड़ती है।"

"हे भगवान! हे भगवान! किसलिये?" कारेनिन ने उस तलाक की तफ़सीलें याद आने पर सोचा, जिसमें पति ने सारा दोष अपने ऊपर

ने लिया था और व्रोन्स्की के अन्दाज़ में ही लज्जा से अपना मुंह ढक लिया था।

"तुम बहुत परेशान हो, मैं यह समझ सकता हूं, लेकिन अगर तुम गम्भीरता से सोच-विचार करो ..."

'दायें गाल पर तमाचा मारनेवाले के सामने बायां गाल कर दो और कोट उतारनेवाले को कमीज़ दे दो," कारेनिन ने सोचा।

"हां, हां," वह चिचियाती-सी आवाज़ में चिल्ला उठा। "मैं सारी बदनामी को अपने सिर पर लेता हूं, बेटे को भी दे दूंगा, लेकिन... लेकिन क्या यह बेहतर नहीं होगा कि सब कुछ ऐसे ही रहने दिया जाये? ख़ैर, जैसा चाहते हो, वैसा करो ..."

और वह दूसरी तरफ़ मुंह करके, ताकि साला उसे देख न सके, खिड़की के पास कुर्सी पर जा बैठा। उसे कटुता और लज्जा अनुभव हो रही थी, किन्तु इस कटुता और लज्जा के साथ उसे अपनी विनम्रता की ऊंचाई से ख़ुशी और भावविह्वलता भी अनुभव हो रही थी।

ओब्लोन्स्की द्रवित हो उठा। वह कुछ क्षण चुप रहा।

"अलेक्सेई अलेक्सान्द्रोविच, मुझ पर यक़ीन करो कि वह तुम्हारी दरियादिली की बहुत ऊंचा आंकेगी," उसने कहा। "लेकिन ऐसा लगता है कि भगवान की ऐसी ही मर्ज़ी है," उसने इतना और जोड़ दिया और इतना कहने के बाद यह महसूस किया कि उसने बेतुकी-सी बात कह दी है और इस बेवकूफ़ी की बात पर वह अपनी मुस्कान को बड़ी मुश्किल से वश में कर पाया।

कारेनिन ने कुछ कहना चाहा, मगर आंसुओं ने उसे ऐसा नहीं करने दिया।

"यह दुर्भाग्य अनिवार्य है और उसे स्वीकार करना चाहिये। मैं इस दुर्भाग्य को अस्तित्व में आ चुका तथ्य मानता हूं और तुम्हारी तथा आन्ना की सहायता करने की कोशिश कर रहा हूं," ओब्लोन्स्की ने कहा।

ओब्लोन्स्की जब बहनोई के कमरे से बाहर निकला, तो द्रवित था, किन्तु इस चेतना ने उसकी इस ख़ुशी में बाधा नहीं डाली कि उसने इस काम को कामयाबी से सिरे चढ़ा लिया है, क्योंकि उसे इस बात का यक़ीन था कि कारेनिन अपने शब्दों पर अटल रहेगा। इस ख़ुशी में उसके

दिमाग मे आनेवाले इस विचार की खुशी भी शामिल हो गयी कि जब यह मामला तय हो जायेगा, तो वह अपनी बीवी और नजदीकी यार-दोस्तो से यह सवाल करेगा: "मेरे और सम्राट के बीच क्या अन्तर है? सम्राट तलाक की व्यवस्था करता है और इससे किसी को भी सुख नही मिलता। किन्तु मैंने तलाक दिलवाया और तीन व्यक्तियो का जीवन सुखी हो गया ... या फिर यह कि मेरे और सम्राट के बीच क्या समानता है? जब .. खैर, कोई अधिक मजेदार बात सोच लूगा," उसने मुस्कराते हुए अपने आपसे कहा।

(२३)

व्रोन्स्की का घाव काफी खतरनाक था, यद्यपि गोली दिल मे नही लगी थी। कई दिनो तक वह जिन्दगी और मौत के बीच लटकता रहा। जब वह पहली बार बातचीत करने के लायक हुआ, तो केवल उसकी भाभी वार्या ही कमरे मे थी।

"वार्या!" उसने कडी नजर से उसे एकटक देखते हुए कहा, "मैं भूल से अपने पर गोली चला बैठा था। कृपया कभी इस बात की चर्चा नही करना और दूसरो से भी ऐसा कह देना। नही तो यह बहुत ही बडी मूर्खता प्रतीत होगी।"

व्रोन्स्की के शब्दो का उत्तर दिये बिना वार्या उसके ऊपर झुक गयी और खुशी भरी मुस्कान के साथ उसने उसके चेहरे को देखा। उसकी आखे शान्त थीं, ज्वरग्रस्त नही थी, किन्तु उनमे कडाई थी।

"शुक्र है भगवान का!" वार्या ने कहा। "तुम्हे दर्द नही महसूस हो रहा?"

"थोडा-सा इस जगह," उसने छाती की ओर इशारा किया।

"तो लाओ, मैं पट्टी बाध दू।"

वार्या जब तक पट्टी बाधती रही, व्रोन्स्की अपने चौडे जबडो को भीचे हुए चुपचाप उसकी ओर देखता रहा। पट्टी बध जाने पर उसने कहा:

"मैं सरसाम मे बहक नहीं रहा हू। कृपया ऐसा करो कि यह चर्चा न होने पाये कि मैंने जान-बूझकर अपने को गोली मारी थी।"

"कोई भी ऐसा नही कह रहा है। हा, यह उम्मीद जरूर करती हू कि तुम अब कभी भूल से अपने पर गोली नही चलाओगे," उसने प्रश्नसूचक मुस्कान के साथ कहा।

"सोचता हू कि ऐसा नही करूगा, लेकिन बेहतर होना अगर ..."
और वह उदासी से मुस्करा दिया।

इन शब्दों और इस मुस्कान के बावजूद, जिनसे वार्या बहुत डर गयी थी, जब घाव की सूजन जाती रही और उसकी तबीयत सुधरने लगी, तो उसने महसूस किया कि अपने दुख के एक भाग से पूरी तरह मुक्त हो गया है। अपने को गोली मारकर उसने मानो लज्जा और अपमान का वह धब्बा धो डाला था, जिसे पहले अनुभव करता रहता था। अब वह शान्त भाव से कारेनिन के बारे में सोच सकता था। वह उसकी सारी उदारता को स्वीकार करता था और अपने को अपमानित नही अनुभव करता था। इसके अलावा वह फिर से अपने जीवन की पहलेवाली लीक पर चलने लगा। उसके लिये अब लज्जा के बिना लोगों से आखे मिलाना और अपनी आदतों के मुताबिक जीना सम्भव था। पर लगातार कोशिश करने के बावजूद वह अफसोस की इस भावना को, जो कभी-कभी हताशा की सीमा तक पहुच जाती थी, दिल से नही निकाल पाता था कि आन्ना को सदा के लिये खो बैठा है। अब, जब उसने आन्ना के पति के सामने अपने अपराध का प्रायश्चित्त कर लिया था, उसे आन्ना से इन्कार करना चाहिये और कभी आन्ना तथा उसके पश्चात्ताप और उसके पति के बीच नही खड़े होना चाहिये, इस बात का उसने अपने दिल में पक्का इरादा बना लिया था। लेकिन वह आन्ना का प्यार खो देने के दुख को हृदय से नही निकाल सकता था, सुख के उन क्षणों को स्मृति-पट से नही मिटा सकता था, जिनकी उसे उसके साथ अनुभूति हुई थी, जिनका उसने तब बहुत कम मूल्यांकन किया था और जो अपने समूचे अनूठे सौन्दर्य के साथ अब उसका पीछा करते रहते थे।

सेर्पुखोव्स्कोई ने ताशकन्द में व्रोन्स्की की नियुक्ति की व्यवस्था कर दी और व्रोन्स्की ने किसी तरह की दुविधा में पड़े बिना उसे फौरन स्वीकार कर लिया। किन्तु वहा जाने का वक्त जैसे-जैसे नजदीक आता गया, वैसे-वैसे उसके लिये वह बलिदान अधिकाधिक बोझिल होता गया, जो वह अपना कर्तव्य मानते हुए कर रहा था।

व्रोन्स्की का घाव भर गया और वह ताशकन्द जाने की तैयारी करने के लिये बग्घी मे इधर-उधर आने-जाने लगा।

"एक बार उससे मिल लू और उसके बाद दफन हो जाऊ, मर जाऊ," वह सोचता और विदाई-भेट के लिये बेत्सी के यहा जाने पर उसने यही भाव व्यक्त किया। बेत्सी यही सन्देश लेकर आन्ना के यहा गयी और उसका इन्कारी जवाब लेकर लौटी।

"यह और भी अच्छा हुआ," व्रोन्स्की ने यह जवाब मिलने पर सोचा। "यह दुर्बलता थी, जो मेरी बची-बचायी शक्ति का अन्त कर देती।"

अगले दिन बेत्सी सुबह ही खुद उसके पास आई और उसे बताया कि उसे ओब्लोन्स्की से यह अच्छी खबर मिली है कि कारेनिन तलाक देने को राजी हो गया है और इसलिये वह उससे मिल सकता है।

बेत्सी को विदा करने की चिन्ता किये बिना, अपने सभी निर्णयो को भूलकर तथा यह पूछे बिना कि कब उसके यहा जा सकता है, कि पति कहा है, व्रोन्स्की उसी क्षण बग्घी मे बैठकर कारेनिन के घर की ओर रवाना हो गया। वह किसी चीज और किसी व्यक्ति की ओर ध्यान न देकर भागता हुआ सीढिया चढ गया और मुश्किल से अपने को भागने से रोकता हुआ तेज कदमो से उसके कमरे मे दाखिल हो गया। यह सोचे और यह देखे बिना कि कमरे मे कोई है अथवा नही, उसने आन्ना को बाहो मे भर लिया और उसके चेहरे, बाहो और गर्दन पर चुम्बनो की बौछार करने लगा।

आन्ना इस मिलन के लिये अपने को तैयार करती और यह सोचती रही थी कि उससे क्या कहेगी। किन्तु वह कुछ भी नही कह पायी। व्रोन्स्की के भावावेश ने आन्ना को भी अपने वश मे कर लिया। आन्ना ने व्रोन्स्की को, अपने को सम्भालना चाहा पर देर हो चुकी थी। व्रोन्स्की की भावना आन्ना पर हावी हो गयी थी। उसके होंठ ऐसे काप रहे थे कि वह देर तक कुछ नही कह सकी।

"हा, तुमने पूरी तरह मुझे अपने वश मे कर लिया है और मैं तुम्हारी हू," व्रोन्स्की के हाथ को अपनी छाती पर दबाते हुए उसने आखिर कहा।

"ऐसा ही होना चाहिये था!" व्रोन्स्की बोला। "जब तक हम जीवित है, ऐसा ही होगा। मैं अब यह जानता हू।"

"यह सच है," आन्ना ने अधिकाधिक पीली पड़ते और व्रोन्स्की के सिर के गिर्द बांह डालते हुए कहा। "फिर भी उस सब के बाद, जो हो चुका है, इसमें कुछ भयानक चीज़ है।"

"सब ठीक हो जायेगा, सब ठीक हो जायेगा, बहुत ही सौभाग्यशाली होंगे हम! हमारा प्यार, अगर वह और तीव्र हो सकता था, तो इसलिये कि उसमें कुछ भयानक है," व्रोन्स्की ने सिर ऊपर करते और मुस्कराकर अपने मज़बूत दांतों की झलक देते हुए उत्तर दिया।

आन्ना उसके शब्दों के नहीं, बल्कि प्यार भरी आंखों के जवाब में मुस्कराये बिना नहीं रह सकती थी। उसने व्रोन्स्की का हाथ थाम लिया और उससे अपने ठण्डे गालों तथा सिर के कटे हुए बालों को सहलाने लगी।

"इन छोटे-छोटे बालों के साथ मैं तुम्हें पहचान नहीं सकता। तुम बहुत ही सुन्दर लगती हो। लड़के जैसी। मगर कितनी पीली हो तुम!"

"हां, मैं बहुत कमज़ोर हूं," उसने मुस्कराकर जवाब दिया। उसके होंठ फिर से कांप उठे।

"हम इटली जायेंगे और वहां तुम्हारी सेहत अच्छी हो जायेगी," व्रोन्स्की ने कहा।

"क्या यह सम्भव है कि पति-पत्नी की तरह केवल हम दोनों ही हों, हमारा अपना परिवार हो?" निकट से उसकी आंखों में ग़ौर से झांकते हुए उसने पूछा।

"मुझे केवल इसी बात की हैरानी है कि कैसे कभी इससे भिन्न कुछ हो सकता था।"

"स्तीवा का कहना है कि 'वह' हर बात के लिये राज़ी है, मगर मैं 'उसकी' दरियादिली को स्वीकार नहीं कर सकती," आन्ना ने सोचते और व्रोन्स्की के चेहरे से कहीं दूर देखते हुए कहा। "मैं तलाक नहीं चाहती, मुझे अब कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं सिर्फ़ यह नहीं जानती कि सेर्योझा के बारे में वह क्या निर्णय करेगा।"

व्रोन्स्की किसी प्रकार यह नहीं समझ पा रहा था कि मिलन के इस क्षण में उसे कैसे बेटे और तलाक का ध्यान आ सकता था, वह उनकी चर्चा कर सकती थी। क्या सब महत्त्वहीन नहीं था?

"इसकी चर्चा नहीं करो, इसके बारे में नहीं सोचो," उसने आन्ना

के हाथ को अपने हाथ मे उलटते-पलटते और अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश करते हुए कहा। किन्तु आन्ना ने उसकी ओर नही देखा।

"ओह, मैं मर क्यों नही गयी, यह बेहतर होता!" उसने कहा और सिसकियो के बिना उसके दोनो गालो पर आसू बह आये। किन्तु उसने मुस्कराने का प्रयास किया, ताकि व्रोन्स्की को ठेस न लगे।

व्रोन्स्की की भूतपूर्व धारणाओ के अनुसार ताशकन्द मे अत्यधिक प्रशसनीय और खतरनाक नियुक्ति से इन्कार करना बड़े अपमान की तथा असम्भव बात होती। मगर अब क्षण भर को भी सोचे विचारे बिना उसने इससे इन्कार कर दिया और इस कारण ऊचे अधिकारियो मे नाराजगी का भाव देखकर फौरन त्यागपत्र दे दिया।

एक महीने बाद कारेनिन बेटे के साथ ही अपने घर मे रह गया। आन्ना तलाक लिये बिना और दृढतापूर्वक उससे इन्कार करके व्रोन्स्की के साथ विदेश चली गयी।

— — ० —